हृदन्तरज्ञान-तमो-वितान-निवारणं पण्डित-मण्डलीड्यम्। 卐 त्रिकालदर्शी प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्ड पञ्चांग' मिदं चकास्तु।।

श्री शंकरः शं करोतु।

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते।।

भारतीय एवं पाश्चात्त्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

शोधनिबन्ध विशेषांक

अखिल भारतोपयोगी

विक्रम संवत् २०६६, शक संवत् १९३१
सन् २००९-२०१०, जय हिन्द संवत् ६२-६३

पंचांग-प्रवर्तकः

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व० पं० श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

राजा शुक्र

मंत्री चन्द्र

पञ्चांगप्रवर्तक

अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व० पं० श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल

श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त

दृक्सिद्धान्तभास्कर डॉ० शक्तिधर शर्मा M.Sc, Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A.), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त

ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

प्रकाशक : रुचिका पब्लिकेशन्स

टाइटल पर होलोग्राम लगा हुआ देखकर ही पंचांग खरीदें।

मूल्य ७०.००

इस पञ्चाङ्ग में प्रयुक्त ज्ञातव्य सांकेतिक शब्द

अ.- अस्त, अश्विनी, अनुराधा (नक्षत्र), अतिगण्ड (योग), अग्नि (बाण)।
अं. अंग्रेजी (तारीख, मास), अंश।
आव.- आवश्यकता में।
उ.- उपरान्त, उदित, उत्तर।
उ. गो.- उत्तर गोल।
क.- करण, कर्क, कला।
कृ.- कृष्णपक्ष, कृत्तिका (नक्षत्र)
क्रां. सा.-क्रान्तिसाम्य (महापात)
गोधू.- गोधूलि (लग्न)
घ.- घड़ी।
घं. घण्टा।
चौ.- चौर (बाण)
ति.- तिथि।
द.- दक्षिण।
द. गो.- दक्षिण गोल।
दा.- दान पूजन।
दि.- दिन।
दि. मा.- दिनमान।
दि. ल.- दिन का लग्न।
न.- नक्षत्र।
निं.- निम्बार्कों के लिए।
ने.- नेप्च्यून।
नृ.- नृप (बाण)।
प.- पल, परिघ (योग), पश्चिम।
प्र.- प्रविष्टा (पंजाबी तारीख)।
प्रा.- प्रारम्भ।
भ.- भद्रा, भरणी (नक्षत्र)।
भा.- भाद्रपद।
मा.- मार्गी।
मि.- मिनट, मिथुन।
मृ.- मृगशिरा, मृत्यु (बाण)।
या.- यावत् (=तक)।
रा.- रात्रि, राशि।
रो.- रोग (बाण), रोहिणी।
ल.- लग्न।
व.- वक्री, वक्रगति से, वणिक्, वज्र, वरीयान् (योग)
वा.- वार
वि.- विकला, विष्टि (करण), विष्कम्भ, विशाखा।
वि. मु.- विवाह मुहूर्त।
वै.- वैष्णवों के लिए, वैधृति (योग), वैशाख।
व्र. स.- व्रत सबके लिए।
शु.- शुक्लपक्ष, शुक्रवार, शुक्र (ग्रह), शुभ, शुक्ल (योग)।
श.- भारत सरकार द्वारा संचलित शक संवत्, तारीख-मास।
स.- समाप्त।
सं.- संक्रान्ति, संवत्।
सां. का.-साम्पातिक काल।
सा.- सायन।
स्मा.- स्मार्तों के लिए।
ल.- लग्न

इस पंचाग के तिथि, नक्षत्र, योग, ग्रह भोगांश और ग्रहों के क्रान्ति-शर की गणित डा. शक्तिधर शर्मा द्वारा विकसित Computer Program से की जाती है।

इस पञ्चाङ्ग के लिए आवश्यक निर्देशन

(1) इस पञ्चाङ्ग का निर्माण ग्रीन्विच से पूर्व रेखांश ७६° ।५२' एवं उत्तर अक्षांश ३०° ।४४' के आधार पर किया गया है, अतः यहां जहां विशेष निर्देश न किया गया हो वहां 'सूर्योदय' से हमारा अभिप्राय इसी स्थल के सूर्योदय से रहता है।

(2) यहां सर्वत्र निरयणपद्धति को अपनाया गया है। जहां सायनगणना की गई है, वहां निर्देश कर दिया गया है। चित्रापक्षीय अयनांश प्रामाणिक माने हैं। इस पञ्चाङ्ग में दिए गए अयनांश धूनन-संस्कार-संस्कृत (स्पष्ट) हैं।

(3) तिथि, नक्षत्र एवं करणों के सम्मुख दिए गए घटी.पल उनका सूर्योदय से समाप्तिकाल बतलाते हैं।

(4) इस पंचाग में केवल सूर्योदयव्यापी ही करण लिखे गए हैं, दूसरे नहीं।

(5) चन्द्रसञ्चार वाले कालम में राशियों के साथ दिए गए घड़ी-पल चन्द्रमा के राशिप्रवेश का काल बतलाते हैं।

(6) चन्द्रसंचार के आगे वाले कालमों में सूर्य के उदयास्त, जोकि भा.स्टै.टा में हैं, उपरोक्त स्थल के ही हैं।इनका सम्बन्ध सूर्यकेन्द्र से है। ये सूर्योदयास्तकाल किरण-वक्री-भवन संस्कार रहित हैं। प्रत्यक्ष देखने के लिए दो मिनट सूर्योदय में घटाएं एवं सूर्यास्त में जोड़ें।

(7) घड़ी-पलों वाले २४ पक्षों के लस्टर में पंचक-भद्रा की प्रारम्भ-समाप्ति, ग्रहों के उदयास्त, वक्र-मार्ग तथा राशि-नक्षत्र-प्रवेश आदि के सभी काल भी घड़ीपलों में ही हैं। यह घड़ीपल उपरोक्त स्थल के सूर्योदय से बीता काल बतलाते हैं।

(8) पंक्तियों (अष्टमी, पूर्णिमा, अमावस्या) के स्पष्टग्रहों के नीचे दैनिक-गति, उसके नीचे मार्गी या वक्री, उसके नीचे उदित या अस्त, फिर चरण सहित नक्षत्र का (जिस में ग्रह है उसका) निर्देश किया गया है।

(9) पंक्तियों की सभी कुण्डलियां सूर्योदय-कालिक हैं।

(10) पञ्चाङ्ग की गणित, आचार्यों एवं ऋषियों द्वारा अनुमोदित सूक्ष्म दृक्तुल्य पद्धति द्वारा की गई है।

(11) यहां दिए गए ग्रह एवं शर भूमध्य दृक् हैं।

(12) जिस घटीपलात्मक तिथि, योग नक्षत्र के आगे (६०/०) लिखा है, उस तिथि योग नक्षत्र की वृद्धि समझें। घण्टामिनटात्मक तिथि, नक्षत्र योग के आगे (............) ऐसा चिह्न उस तिथि, नक्षत्र योग की वृद्धि बतलाता है।

(13) यहां दिया गया भा. स्टै. टा ८२° /३०' पूर्व-रेखांश के स्थल का स्थानीयमध्यमकाल है।

(14) दैनिक लग्न सारणियां चण्डीगढ़ के लिए हैं, ये सारणियां चित्रा-पक्षीय निरयणलग्नों का समाप्तिकाल बतलाती है।

(15) पञ्चाङ्ग में क्षीणतिथि, नक्षत्र, योग के समाप्तिक्षण ही दिए गए हैं, पूर्ण भोग नहीं।

श्री शंकरः शं करोतु।

भारतीय एवं पाश्चात्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व॰ पं॰ श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

शोधनिबन्ध विशेषांक

विक्रम संवत् २०६६, शक संवत् १९३१
सन् २००९-२०१०, जय हिन्द संवत् ६२-६३

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते॥

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

राजा शुक्र

पञ्चागप्रवतक
अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व॰ पं॰ श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल
श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त
दृक्सिद्धान्तभास्कर डॉ॰ शक्तिधर शर्मा M.Sc, Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A.), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त
ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

मूल्य
७०.००

प्रकाशक : रुचिका पब्लिकेशन्स
459 ... 36116

विशेष नोट : टाइ... कर ही खरीदें।

संक्षिप्त विषयसूची (सं. २०६६ वि.)

इसवर्ष की विशेष सामग्री

'अभिजित् प्रकाशन',
Kothi No. 59, Sector 6,
Panchkula(HARYANA)
की अब तक प्रकाशित पुस्तकों के विस्तृत विज्ञापन अन्तिम पृष्ठों पर देखें।

अनन्त श्रीविभूषित श्रीकांचीकामकोटि- पीठाधिपति, जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जी का शुभाशीर्वाद

(मुद्रा)

श्रीमत्परमहंस – परिव्राजकाचार्यवर्य्य – श्रीमच्छंकर– भगवत्पाद – प्रतिष्ठित – श्रीकांचीकामकोटिपीठाधिप – जगद्गुरु – श्रीमच्चन्द्रशेखरेन्द्र – सरस्वती – श्रीपादैः क्रियते नारायणस्मृतिः।

श्रीसदाशिव आप्टे- महोदयस्य शिष्यैः श्रीमुकुन्दवल्लभशर्मभिः प्रवर्तितम् अधुना श्रीप्रियव्रतशर्म– श्रीशक्तिधरशर्म– श्रीमदिन्दुशेखर– शास्त्रिभिः तन्त्रद्वारा शुद्ध–स्फुट– गणितरीत्या परिशोध्य स्वीकृतया दृग्गणितपद्धत्या सम्पाद्यते। एतत्पञ्चांगं धर्मशास्त्रसम्मतैकमात्र– दृग्गणितपद्धत्यनुसारि–व्रत–पर्वादि – धार्मिक – कृत्यानुष्ठाने धार्मिकैः प्रयोज्यम्–इति सम्मन्यामहे। एतस्य सम्पादकः डॉ.शक्तिधरशर्मा ज्योतिष– गणितादि–विषयेषु महत्प्रागल्भ्यं भजते, इति अस्माभिः सः सप्रसादं "दृक्सिद्धान्तभास्करः" इति विरुदेन पूर्वमेव सभाजितः। अधुना श्रीमार्तण्ड– पंचांगमेतत् स्वर्णजयन्ती–महोत्सवमनुभवत्, अशेषास्तिक–लोकोपकारकं सत् श्रीचन्द्रमौलीश – कृपया प्रचुरं प्रचारं प्राप्नुयादित्याशास्महे।

काञ्चीक्षेत्रम् नारायणस्मृतिः
'अनल' चैत्रामावस्या (सन् १९७६ ई.)

आगामी वर्ष (सं. 2067 वि.) में प्रकाशित होने जा रही विशेष सामग्री के लिए पृष्ठ 260 देखें।

कुम्भमहापर्व हरिद्वार– आगामी वर्ष (सं. 2067 वि.) में 14 अप्रैल, 2010 ई. को हरिद्वार में कुम्भमहापर्व घटित होने जा रहा है, जिसकी स्नान–दान– जप आदि के लिए तिथियों का निर्देश अगले वर्ष (सं. 2067 वि.) के पंचांग में विस्तार–पूर्वक किया जाएगा।– *सम्पादक*

प्रमुख–प्रमुख व्रत–पर्व (1 जनवरी, सन् 2009 ई. से 15 मार्च, सन् 2010 ई. तक)

जनवरी (सन् 2009 ई.)

व्रत–पर्व	तिथि	वार
इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	1 जन.	गु.
माघस्नान प्रारम्भ	11 जन.	र.
लोहड़ी (पं.)	12 जन.	चं.
मकर–संक्रान्ति	13 जन.	मं.
संकष्ट(गणेश) चतुर्थी	14 जन.	बु.
मौनी अमावस	26 जन.	चं.
गौरी तृतीया (गौंतरी)	29 जन.	गु.
तिल–वरद–कुन्द चतुर्थी	30 जन.	शु.
श्रीपंचमी	31 जन.	श.
वसन्तपंचमी	31 जन.	श.

फरवरी (सन् 2009 ई.

व्रत–पर्व	तिथि	वार
रथसप्तमी (पूर्वारुणोदयवाली)	2 फर.	चं.
आरोग्य सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली)	2 फर.	चं.
भीष्माष्टमी	3 फर.	मं.
भीष्म द्वादशी	6 फर.	शु.
माघस्नान समाप्त	9 फर.	चं.
माघी पूर्णिमा	9 फर	चं.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	23 फर.	चं.

मार्च (सन् 2009 ई.)

व्रत–पर्व	तिथि	वार
होलाष्टक प्रारम्भ	4 मार्च	बु.
गोविन्द द्वादशी	8 मार्च	र.
होलिका दहन	10 मार्च	मं.
वसन्तोत्सव	11 मार्च	बु.
होलाष्टक समाप्त	11 मार्च	बु.
महाविषुवदिन	20 मार्च	शु.
वारुणीपर्व	24 मार्च	मं.
चान्द्र–संवत् 2065 वि. पूर्ण	26 मार्च	गु.
चान्द्र संवत् 2066 वि. प्रा.	27 मार्च	शु.
वासन्त नवरात्र प्रारम्भ	27 मार्च	शु.
गौरी तृतीया (गणगौर)	29 मार्च	र.
श्री (लक्ष्मी) पंचमी	30 मार्च	चं.
नाग पंचमी,	31 मार्च	मं.
स्कन्द षष्ठी (पंचमी–विद्धा)	31 मार्च	मं.

अप्रैल (सन् 2009 ई.)

व्रत–पर्व	तिथि	वार
श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी	2 अप्रै.	गु.
श्रीराम नवमी	3 अप्रै.	शु.
वासन्त नवरात्र समाप्त	3 अप्रै.	शु.
अनंग त्रयोदशी	7 अप्रै.	मं.
वैशाख स्नान प्रारम्भ	9 अप्रै.	गु.
वैशाखी (पजाब)	13 अप्रै.	चं.
श्रीपरशुराम जयन्ती	27 अप्रै.	चं.
अक्षय तृतीया	27 अप्रै.	चं.

मई (सन् 2009 ई.)

व्रत–पर्व	तिथि	वार
श्रीगंगा जन्म	1 मई	शु.
श्रीजानकी जयन्ती	2 मई	श.
श्रीकूर्मजयन्ती	8 मई	शु.
श्रीबुद्ध पूर्णिमा,	9 मई	श.
वैशाखी पूर्णिमा	9 मई	श.
वैशाख स्नान समाप्त	9 मई	श.
भद्रकाली एकादशी (पं.)	20 मई	बु.
वट सावित्री व्रत (अमापक्ष)	24 मई	र.
भावुका अमावस	24 मई	र.
रम्भा तृतीया	26 मई	मं.
अरण्य षष्ठी	29 मई	शु.

जून (सन् 2009 ई.

व्रत–पर्व	तिथि	वार
श्रीगंगा दशहरा	2 जून	मं.
निर्जला एकादशी व्रत	3 जून	बु.
वट सावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष)	7 जून	र.
रथयात्रा (पुरी)	24 जून	बु.
कुमार षष्ठी	27 जून	श.
विवस्वत् सप्तमी	28 जून	र.

जुलाई (सन् 2009 ई.

व्रत–पर्व	तिथि	वार
कोकिला व्रत	6 जुला.	चं.
गुरु पूर्णिमा (व्यास पूजा)	7 जुला.	मं.
चातुर्मास्य व्रत–नियमादि प्रा.	7 जुला.	मं.
हरियाली अमावस	22 जुला.	बु.
सूर्यग्रहण (भारत में दृश्य)	22 जुला.	बु.
मधुश्रवा तृतीया, संधारा तीज	24 जुला.	शु.
नागपंचमी	26 जुला.	र.
श्रीदुर्गाष्टमी,	29 जुला.	बु.

अगस्त (सन् 2009 ई.)

व्रत–पर्व	तिथि	वार
रक्षाबन्धन (राखी)	5 अग.	बु.
शुक्ल-कृष्ण-यजु उपाकर्म	5 अग.	बु.
ऋक् उपाकर्म	6 अग.	गु.
बहुला चतुर्थी, संकष्ट चतुर्थी	9 अग.	र.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त=गृहस्थियों के लिए)	13 अग.	गु.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वैष्णव=संन्यासियों के लिए)	14 अग.	शु.
गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव)	14 अग.	शु.
श्रीगुग्गा नवमी	15 अग.	श.
पिठोरी अमावस	20 अग.	गु.
कुशोत्पाटिनी अमावस	20 अग.	गु.
साम उपाकर्म	23 अग.	र.
हरितालिका तृतीया	23 अग.	र.
गौरी तृतीया	23 अग.	र.
कलंक चतुर्थी	23 अग.	र.
सिद्धिविनायक व्रत	23 अग.	र.
हरितालिका चतुर्थी	23 अग.	र.
ऋषि पंचमी	24 अग.	चं.
सूर्य षष्ठी व्रत	25 अग.	मं.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ	27 अग.	गु.
श्रीराधाष्टमी	27 अग.	गु.
श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय)	29 अग.	श.

सितंबर (सन् 2009 ई.)

व्रत–पर्व	तिथि	वार
श्रीवामन जयन्ती	1 सितं.	मं.
अनन्त चतुर्दशी	3 सितं.	गु.
प्रोष्ठपदी श्राद्ध,	4 सितं.	शु.
पूर्णिमा श्राद्ध	4 सितं.	शु.
महालय श्राद्ध, श्राद्ध प्रारम्भ	5 सितं.	श.
चन्द्रषष्ठी व्रत	10 सितं.	गु.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त	11 सितं.	शु.
महालय श्राद्ध समाप्त	18 सितं.	शु.
शारद नवरात्र प्रारम्भ	19 सितं.	श.
उपागललिता व्रत	23 सितं.	बु.
श्रीदुर्गाष्टमी	26 सितं.	श.
महाष्टमी	26 सितं.	श.
सरस्वती आवाहन	26 सितं.	श.
सरस्वती पूजन	27 सितं.	र.
महानवमी	27 सितं.	र.
नवरात्र समाप्त	27 सितं.	र.
सरस्वती बलिदान	28 सितं.	चं.

प्रमुख–प्रमुख व्रत–पर्व

(1 जनवरी, सन् 2009 ई. से 15 मार्च, सन् 2010 ई. तक)

व्रत–पर्व	तारीख	वार
विजयादशमी (दशहरा)	28 सितं.	चं.
सरस्वती विसर्जन	29 सितं.	मं.
भरत मिलाप	29 सितं.	मं.
अक्तूबर (सन् 2009 ई.)		
कोजागर व्रत	3 अक्तू.	श.
शरत्पूर्णिमा	3 अक्तू.	श.
महर्षि वाल्मीकि जयन्ती	4 अक्तू.	र.
कार्त्तिकस्नान प्रारम्भ	4 अक्तू.	र.
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	7 अक्तू.	बु.
अहोई अष्टमी (पं.)	11 अक्तू.	र.
गोवत्स द्वादशी	14 अक्तू.	बु.
धन त्रयोदशी	16 अक्तू.	शु.
श्रीहनुमान् जयन्ती (उ. भा.)	16 अक्तू.	शु.
नरक चतुर्दशी (पूर्वारुणोदय वाली)	17 अक्तू.	श.
दीपावली	17 अक्तू.	श.
अन्नकूट, गोवर्धनपूजा	18 अक्तू.	र.
बलिपूजा	18 अक्तू.	र.
यमद्वितीया, भाई दूज	19 अक्तू.	चं.
श्रीविश्वकर्मा पूजा	20 अक्तू.	मं.
सूर्यषष्ठी (बिहार)	24 अक्तू.	श.
गोपाष्टमी	26 अक्तू.	चं.
अक्षय नवमी	27 अक्तू.	मं.
कूष्माण्ड नवमी	27 अक्तू.	मं.
भीष्म पंचक प्रारम्भ	29 अक्तू.	गु.
हरिप्रबोधोत्सव	30 अक्तू.	शु.
तुलसी विवाह	30 अक्तू.	शु.
चातुर्मास्य व्रत–नियमादि समाप्त	30 अक्तू.	शु.
नवंबर (सन् 2009 ई.)		
वैकुण्ठ चतुर्दशी	1 नवं.	र.
कार्त्तिक पूर्णिमा	2 नवं.	चं.
श्री गुरुनानक जयन्ती	2 नवं.	चं.
कार्त्तिकस्नान समाप्त	2 नवं.	चं.
भीष्म पंचक समाप्त	2 नवं.	चं.
श्रीकालाष्टमी (भैरवाष्टमी)	9 नवं.	चं.
स्कन्द–गुह षष्ठी	23 नवं.	चं.
चम्पा षष्ठी	23 नवं.	चं.
मित्र सप्तमी	23 नवं.	चं.
श्रीगीता जयन्ती	28 नवं.	श.
दिसंबर (सन् 2009 ई.)		
श्रीदत्त जयन्ती	1 दिसं.	मं.
माघस्नान प्रारम्भ	31 दिसं.	गु.
खण्डग्रास चन्द्रग्रहण	31 दिसं.	गु.
जनवरी (सन् 2010 ई.)		
इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	1 जन.	शु.
संकष्ट(गणेश) चतुर्थी	3 जन.	र.
लोहड़ी (पं.)	13 जन.	बु.
मकर–संक्रान्ति	14 जन.	गु.
मौनी अमावस	15 जन.	शु.
कंकण सूर्यग्रहण (भारत में दृश्य)	15 जन.	शु.
गौरी तृतीया (गोंतरी)	18 जन.	चं.
वरद–तिल–कुन्द चतुर्थी	19 जन.	मं.
श्रीपंचमी	20 जन.	बु.
वसन्तपंचमी	20 जन.	बु.
रथसप्तमी (पूर्वारुणोदयवाली)	22 जन.	शु.
आरोग्य सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली)	22 जन.	शु.
भीष्माष्टमी	23 जन.	श.
भीष्म द्वादशी	27 जन.	बु.
माघस्नान समाप्त	30 जन.	श.
माघी पूर्णिमा	30 जन.	श.
फरवरी (सन् 2010 ई.)		
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	12 फर.	शु.
पहला शाही स्नान– कुम्भ महापर्व, हरिद्वार	12 फर.	शु.
होलाष्टक प्रारम्भ	22 फर.	चं.
गोविन्द द्वादशी	25 फर.	गु.
होलिका दहन (प्रदोष में)	28 फर.	र.
होलाष्टक समाप्त	28 फर.	र.
मार्च (सन् 2010 ई.)		
वसन्तोत्सव	1 मार्च	चं.
द्वितीय शाही स्नान– कुम्भ महापर्व, हरिद्वार	15 मार्च	चं.
चान्द्र–संवत् 2066 वि. पूर्ण	15 मार्च	चं.

कुम्भमहापर्व हरिद्वार

आगामी वर्ष (सं. 2067 वि.) में 14 अप्रैल, 2010 ई. को हरिद्वार में कुम्भमहापर्व घटित होने जा रहा है, जिसकी स्नान–दान–जप आदि के लिए तिथियों का निर्देश अगले वर्ष (सं. 2067 वि.) के पंचांग में विस्तार पूर्वक किया जाएगा।

—सम्पादक

प्रमुख–प्रमुख व्रत–पर्व

आगामी वर्ष (वि. सं. 2067) के लिए

नाम मेला/पर्व	तारीख
(सन् 2010 ई.)	
वासन्त नवरात्र प्रारम्भ	16 मार्च
श्रीदुर्गाष्टमी	23 मार्च
श्री रामनवमी व्रत	24 मार्च
श्री महावीर जयन्ती (जैन)	28 मार्च
मेष संक्रान्ति (वैशाखी)	14 अप्रै.
श्री परशुराम जयन्ती	16 मई
श्री बुद्ध जयन्ती	27 मई
श्री गंगा दशहरा	21 जून
गुरु पूर्णिमा	25 जुला.
रक्षाबन्धन	24 अग.
संकष्ट चतुर्थी	28 अग.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (स्मा.)	1 सितं.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	2 सितं.
श्राद्ध प्रारम्भ	22 सितं.
शारद नवरात्र प्रारम्भ	8 अक्तू.
श्री दुर्गाष्टमी	15 अक्तू.
दशहरा (विजया दशमी)	17 अक्तू.
शरत् पूर्णिमा	22 अक्तू.
श्री वाल्मीकि जयन्ती	22 अक्तू.
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	26 अक्तू.
दीपावली	5 नवं.
भाई दूज	7 नवं.
श्री गुरु नानक जयन्ती	21 नवं.
श्री भैरवाष्टमी	28 नवं.
(सन् 2011 ई.)	
मकर संक्रान्ति	14 जन.
वसन्त पंचमी	8 फर.
श्री गुरु रविदास जयन्ती	18 फर.
श्री महाशिवरात्रि व्रत	2 मार्च

चातुर्मास्य व्रत–नियमादि समाप्त 30 अक्तू. शु. रथसप्तमी (पूर्वारुणोदयवाली) 22 जन. शु. पूर्वक किया जाएगा। —सम्पादक श्री गुरु रविदास जयन्ती 18 फर. श्री महाशिवरात्रि व्रत 2 मार्च

वर्गीकृत व्रत–पर्व (1 जनवरी, सन् 2009 ई. से 15 मार्च, सन् 2010 ई. तक)

एकादशी व्रत

(सन् 2009–10 ई.)	
पौष शुक्ल	7 जन.
माघ कृष्ण	21 जन.
माघ शुक्ल (स्मा.)	5 फर.
फाल्गुन कृष्ण	20 फर.
फाल्गुन शुक्ल	7 मार्च
चैत्र कृष्ण	22 मार्च
चैत्र शुक्ल	5 अप्रै.
वैशाख कृष्ण	21 अप्रै.
वैशाख शुक्ल	5 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	20 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	3 जून
आषाढ़ कृष्ण	19 जून
आषाढ़ शुक्ल	3 जुला.
श्रावण कृष्ण	18 जुला.
श्रावण शुक्ल	1 अग.
भाद्रपद कृष्ण (स्मा.)	16 अग.
भाद्रपद शुक्ल	31 अग.
आश्विन कृष्ण	15 सितं.
आश्विन शुक्ल	30 सितं.
कार्तिक कृष्ण	14 अक्तू.
कार्तिक शुक्ल	29 अक्तू.
मार्गशीर्ष कृष्ण	12 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	28 नवं.
पौष कृष्ण	12 दिसं.
पौष शुक्ल	28 दिसं.
(सन् 2010 ई.)	
माघ कृष्ण	10 जन.
माघ शुक्ल	26 जन.
फाल्गुन कृष्ण	9 फर.
फाल्गुन शुक्ल	25 फर.
चैत्र कृष्ण	11 मार्च

(स्मा = स्मार्तों का व्रत)
वैष्णवों का व्रत स्मार्तों के व्रत के दिन से दूसरे दिन होता है। जिसके आगे "स्मा." नहीं लिखा है, वह व्रततिथि स्मार्त और वैष्णवों दोनों के लिए है।

पक्षों का प्रारम्भ

(सन् 2009–10 ई.)	
माघ कृष्ण	11 जन.
माघ शुक्ल	27 जन.
फाल्गुन कृष्ण	10 फर.
फाल्गुन शुक्ल	26 फर.
चैत्र कृष्ण	11 मार्च
चैत्र शुक्ल	27 मार्च
वैशाख कृष्ण	10 अप्रै.
वैशाख शुक्ल	26 अप्रै.
ज्येष्ठ कृष्ण	10 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	25 मई
आषाढ़ कृष्ण	8 जून
आषाढ़ शुक्ल	23 जून
श्रावण कृष्ण	8 जुला.
श्रावण शुक्ल	22 जुला.
भाद्रपद कृष्ण	7 अग.
भाद्रपद शुक्ल	21 अग.
आश्विन कृष्ण	5 सितं.
आश्विन शुक्ल	19 सितं.
कार्तिक कृष्ण	5 अक्तू.
कार्तिक शुक्ल	19 अक्तू.
मार्गशीर्ष कृष्ण	3 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	17 नवं.
पौष कृष्ण	3 दिसं.
पौष शुक्ल	17 दिसं.
(सन् 2010 ई.)	
माघ कृष्ण	1 जन.
माघ शुक्ल	16 जन.
फाल्गुन कृष्ण	31 जन.
फाल्गुन शुक्ल	15 फर.
चैत्र कृष्ण	1 मार्च

उत्तरी भारत में कृष्णादि एवं दक्षिणी भारत में शुक्लादि मासों का प्रचार है। ऊपर दिए गए पक्ष कृष्णादि हैं।

श्रीसत्यनारायण व्रत

(सन् 2009–10 ई.)	
पौष	10 जन.
माघ	9 फर.
फाल्गुन	10 मार्च
चैत्र	9 अप्रै.
वैशाख	8 मई
ज्येष्ठ	7 जून
आषाढ़	6 जुला.
श्रावण	5 अग.
भाद्रपद	4 सितं.
आश्विन	3 अक्तू.
कार्तिक	2 नवं.
मार्गशीर्ष	1 दिसं.
पौष	31 दिसं.
(सन् 2010 ई.)	
माघ	29 जन.
फाल्गुन	28 फर.

अमावस्याएं (स्नान–दानार्थ) (2009 ई.)

माघ (सोम)	26 जन.
फाल्गुन (भौम)	24 फर.
चैत्र	26 मार्च
वैशाख (शनैश्चरी)	25 अप्रै.
ज्येष्ठ	24 मई
आषाढ़ (सोम)	22 जून
श्रावण	22 जुला.
भाद्रपद	20 अग.
आश्विन	18 सितं.
कार्तिक	18 अक्तू.
मार्गशीर्ष	16 नवं.
पौष	16 दिसं.
(सन् 2010 ई.)	
माघ	15 जन.
फाल्गुन (शनैश्चरी)	13 फर.
चैत्र (सोम)	15 मार्च

श्रीगणेशचतुर्थी व्रत

(सन् 2009 ई.)	
माघ (संकष्ट चतुर्थी)	14 जन.
फाल्गुन	12 फर.
चैत्र	14 मार्च
वैशाख	12 अप्रै.
ज्येष्ठ	12 मई
आषाढ़	11 जून
श्रावण	11 जुला.
भाद्रपद (संकष्ट चतुर्थी)	9 अग.
आश्विन	8 सितं.
कार्तिक	7 अक्तू.
मार्गशीर्ष	5 नवं.
पौष	5 दिसं.
(सन् 2010 ई.)	
माघ (संकष्ट चतुर्थी)	3 जन.
फाल्गुन	2 फर.
चैत्र	3 मार्च

संक्रान्तियां (सन् 2009 ई.)

माघ	13 जन.
फाल्गुन	12 फर.
चैत्र	14 मार्च
वैशाख	13 अप्रै.
ज्येष्ठ	14 मई
आषाढ़	14 जून
श्रावण	16 जुला.
भाद्रपद	16 अग.
आश्विन	16 सितं.
कार्तिक	17 अक्तू.
मार्गशीर्ष	16 नवं.
पौष	15 दिसं.
(सन् 2010 ई.)	
माघ	14 जन.
फाल्गुन	12 फर.
चैत्र	14 मार्च

दशावतार जयन्तियां

(सन् 2009 ई.)	
श्रीमत्स्य जयन्ती	29 मार्च
श्रीरामनवमी	3 अप्रै.
श्रीपरशुराम जयन्ती	27 अप्रै.
श्रीनृसिंह जयन्ती	7 मई
श्रीकूर्म जयन्ती	8 मई
श्रीबुद्ध जयन्ती	9 मई
श्रीकल्कि जयन्ती	26 जुला.
*श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	13 अग.
श्रीवराह जयन्ती	22 अग.
श्रीवामन जयन्ती	1 सितं.

* अर्धरात्रि व्यापिनी अष्टमी के दिन ही श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का व्रत करना चाहिए। श्रीमद् भागवत एवं स्कन्द – विष्णु पुराण आदि इसी का समर्थन करते हैं।

आश्विन कृष्णपक्ष के श्राद्ध

(सन् 2009 ई.)	
पूर्णिमा	4 सितं.
प्रतिपदा	5 सितं.
द्वितीया	6 सितं.
तृतीया	7 सितं.
चतुर्थी	8 सितं.
पंचमी / भरणी श्राद्ध	9 सितं.
षष्ठी	10 सितं.
सप्तमी	11 सितं.
अष्टमी	12 सितं.
नवमी / सौभाग्यवती श्राद्ध	13 सितं.
दशमी	14 सितं.
एकादशी	14 सितं.
द्वादशी / संन्यासियों का श्राद्ध	15 सितं.
त्रयोदशी	16 सितं.
चतुर्दशी✿ / मघा श्राद्ध	17 सितं.
अमावस, पूर्णिमा एवं अज्ञात मृत्युतिथि वालों का महालय श्राद्ध	18 सितं.

✿शस्त्र–विष आदि से मृतों (अर्थात् अपमृत्यु वालों) का श्राद्ध चतुर्दशी के दिन होता है, भले ही उनकी मृत्यु किसी भी तिथि में हुई हो। चतुर्दशी तिथि में सामान्य मृत्यु वालों का महालय श्राद्ध अमावस्या में करना चाहिए।

प्रदोष व्रत

(सन् 2009 ई.)	
पौष शुक्ल	8 जन.
माघ कृष्ण	23 जन.
माघ शुक्ल (शनि)	7 फर.
फाल्गुन कृष्ण	22 फर.
फाल्गुन शुक्ल	8 मार्च
चैत्र कृष्ण (भौम)	24 मार्च
चैत्र शुक्ल (भौम)	7 अप्रै.
वैशाख कृष्ण	22 अप्रै.
वैशाख शुक्ल	6 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	22 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	5 जून
आषाढ़ कृष्ण (शनि)	20 जून
आषाढ़ शुक्ल (शनि)	4 जुला.
श्रावण कृष्ण	19 जुला.
श्रावण शुक्ल (सोम)	3 अग.
भाद्रपद कृष्ण (भौम)	18 अग.
भाद्रपद शुक्ल (भौम)	1 सितं.
आश्विन कृष्ण	16 सितं.
आश्विन शुक्ल	1 अक्तू.
कार्तिक कृष्ण	15 अक्तू.
कार्तिक शुक्ल (शनि)	31 अक्तू.
मार्गशीर्ष कृष्ण (शनि)	14 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	29 नवं.
पौष कृष्ण	13 दिसं.
पौष शुक्ल (भौम)	29 दिसं.
(सन् 2010 ई.)	
माघ कृष्ण (भौम)	12 जन.
माघ शुक्ल	28 जन.
फाल्गुन कृष्ण	11 फर.
फाल्गुन शुक्ल	26 फर.
चैत्र कृष्ण (शनि)	13 मार्च

सोम = सोम प्रदोष व्रत
भौम = भौम प्रदोष व्रत
शनि = शनि प्रदोष व्रत

वर्गीकृत व्रत–पर्व (1 जनवरी, सन् 2009 ई. से 15 मार्च, सन् 2010 ई. तक)

मासिक शिवरात्रिव्रत (सन् 2009 ई.)

मास	तिथि
माघ	24 जन.
फाल्गुन	23 फर.
चैत्र	24 मार्च
वैशाख	23 अप्रै.
ज्येष्ठ	22 मई
आषाढ़	21 जून
श्रावण	20 जुला.
भाद्रपद	18 अग.
आश्विन	17 सितं.
कार्तिक	16 अक्तू.
मार्गशीर्ष	15 नवं.
पौष	14 दिसं.
(सन् 2010 ई.)	
माघ	13 जन.
फाल्गुन	12 फर.
चैत्र	14 मार्च

मासिक कालाष्टमी व्रत (2009 ई.)

मास	तिथि
माघ	18 जन.
फाल्गुन	16 फर.
चैत्र	18 मार्च
वैशाख	17 अप्रै.
ज्येष्ठ	17 मई
आषाढ़	15 जून
श्रावण	15 जुला.
भाद्रपद	13 अग.
आश्विन	12 सितं.
कार्तिक	11 अक्तू.
मार्गशीर्ष	9 नवं.
पौष	8 दिसं.
(सन् 2010 ई.)	
माघ	7 जन.
फाल्गुन	5 फर.
चैत्र	7 मार्च

पूर्णिमा व्रत (सन् 2009ई.)
(स्नान.दानार्थ, उदयव्यापिनी पूर्णिमा में)

मास	तिथि
पौष	11 जन.
माघ	9 फर.
फाल्गुन	11 मार्च
चैत्र	9 अप्रै.
वैशाख	9 मई
ज्येष्ठ	7 जून
आषाढ़	7 जुला.
श्रावण	5 अग.
भाद्रपद	4 सितं.
आश्विन	4 अक्तू.
कार्तिक	2 नवं.
मार्गशीर्ष	2 दिसं.
पौष	31 दिसं.
(सन् 2010 ई.)	
माघ	30 जन.
फाल्गुन	28 फर.

अरुणाय त्रयोदशी (2009 ई.)
(श्रीसंगमेश्वर महादेव अरुणाय (पिहोवा) के शिवत्रयोदशी पर्व) (उदयव्यापिनी कृष्ण त्रयोदशी)

मास	तिथि
माघ	23 जन.
फाल्गुन	22 फर.
चैत्र	24 मार्च
वैशाख	23 अप्रै.
ज्येष्ठ	22 मई
आषाढ़	21 जून
श्रावण	20 जुला.
भाद्रपद	18 अग.
आश्विन	16 सितं.
कार्तिक	16 अक्तू.
मार्गशीर्ष	14 नवं.
पौष	14 दिसं.
(सन् 2010 ई.)	
माघ	12 जन.
फाल्गुन	11 फर.
चैत्र	13 मार्च

जैन व्रतपर्व (सन् 2009 ई.)

पर्व	तिथि
श्रीमेरुत्रयोदशी	23 जन.
मर्यादा महोत्सव	2 फर.
आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण	3 अप्रै.
श्रीजैन महावीर जयन्ती	7 अप्रै.
श्रीमहावीर केवलज्ञान दिवस	4 मई
श्रीमहावीर च्यवन दिवस	28 जून
तेरापन्थ स्थापना दिवस	7 जुला.
चातुर्मास्य प्रारम्भ	7 जुला.
श्रीजयाचार्य निर्वाण	17 अग.
पर्युषण पर्व प्रारम्भ	18 अग.
संवत्सरी महापर्व	24 अग.
श्रीकालू निर्वाण दिवस	25 अग.
श्रीतुलसी पट्टारोहण	28 अग.
आचार्य भिक्षु निर्वाण दिवस	2 सितं.
श्रीमहावीर निर्वाण दिवस	18 अक्तू.
आचार्य श्रीतुलसी जन्म	20 अक्तू.
ज्ञानपंचमी	23 अक्तू.
चातुर्मास्य समाप्त	30 अक्तू.
श्रीमहावीर दीक्षा दिवस	11 नवं.
आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा दिवस	6 दिसं.
जन्म श्रीपार्श्वनाथ जी	11 दिसं.
(सन् 2010 ई.)	
श्रीमेरुत्रयोदशी	12 जन.
मर्यादा महोत्सव	22 जन.

क्रिश्चियन त्योहार (सन् 2009 ई.)

त्योहार	तिथि
नया साल प्रारम्भ	1 जन.
गुड फ्राई डे	10 अप्रै.
ईस्टर सण्डे	12 अप्रै.
क्रिसमस डे	25 दिसं.
(सन् 2010 ई.)	
नया साल प्रारम्भ	1 जन.

महापुरुषों के जन्मदिन (सन् 2009 ई.)

महापुरुष	तिथि
स्वामी विवेकानन्द	17 जन.
श्रीरामानन्दाचार्य	17 जन.
श्रीनेता जी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन.
योगिराज बा. श्रीलालदयाल	28 जन.
श्रीगुरु रविदास जी	9 फर.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	19 फर.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	27 फर.
श्रीचैतन्य महाप्रभु	11 मार्च
डॉ. अम्बेडकर	14 अप्रै.
श्रीवल्लभाचार्य	21 अप्रै.
श्रीछत्रपति शिवाजी	26 अप्रै.
आद्य जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य	29 अप्रै.
श्रीरामानुजाचार्य (उ.भा.)	30 अप्रै.
श्रीरवीन्द्रनाथ टैगोर	9 मई
श्रीमहाराणाप्रताप	27 मई
लो. मा. बालगंगाधर तिलक	23 जुला.
गोस्वामी तुलसीदास जी	28 जुला.
स्वामी शिवानन्द जी	8 सितं.
महाराज अग्रसेन जी	19 सितं.
श्रीमाध्वाचार्य	28 सितं.
श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्तू.
श्रीलालबहादुर शास्त्री	2 अक्तू.
स्वामी रामतीर्थ	22 अक्तू.
श्रीवीर वैरागी	31 अक्तू.
श्रीजवाहर लाल नेहरु	14 नवं.
भगवान् श्रीसत्यसाईं बाबा	23 नवं.
(सन् 2010 ई.)	
स्वामी विवेकानन्द	6 जन.
श्रीरामानन्दाचार्य	6 जन.
योगिराज बा. श्रीलालदयाल	17 जन.
श्रीनेता जी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन.
श्रीगुरु रविदास जी	30 जन.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	8 फर.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	16 फर.
श्रीचैतन्य महाप्रभु	28 फर.

मुस्लिम त्योहार (सन् 2009 ई.)

त्योहार	तिथि
मुहर्रम (ताज़िया)	8 जन.
चेहल्म	16 फर.
शहादत–ए–इमाम हसन	24 फर.
आखिरी चहार शम्बा	25 फर.
ईद–ए–मिलाद	10 मार्च
ईद–ए–मौलाद	15 मार्च
फतिहायज़दहुम	7 अप्रै.
जन्म श्री हज़रत अली	7 जुला.
शब–ए–मिराज	21 जुला.
शब–ए–बरात	7 अग.
रमज़ान का पहला दिन	23 अग.
शहादत–ए–हज़रत अली	12 सितं.
जमतुल विदा	18 सितं.
शब–ए–कद्र	18 सितं.
ईद–उल–फित्र	21 सितं.
इदुलज्जुहा	28 नवं.
मुहर्रम (ताज़िया)	28 दिसं.
(सन् 2010 ई.)	
चेहल्म	5 फर.
आखिरी चहार शम्बा	10 फर.
शहादत–ए–इमाम हसन	13 फर.
ईद–ए–मिलाद	27 फर.
ईद–ए–मौलाद	4 मार्च

सूचना

सभी मुस्लिम त्योहार चन्द्र- दर्शन (नया चाँद दिखाई देने) पर ही निर्भर करते हैं। कई बार स्थानभेद या आकाशीय वातावरण के कारण चन्द्रदर्शन की तारीख़ आगे-पीछे हो जाने पर, इन मुस्लिम त्योहारों के दिन में एक दिन का अन्तर संभव है।

सिक्ख पर्व (2009–10 ई.)

नाम श्रीगुरु साहिबान	पुरातन परम्परा अनुसार तारीख			नानकशाही कैलेण्डर अनुसार		
	ता. प्रकाश दिवस	ता. गुरयाई मिली	ता. जोतीजोत समाए	ता. प्रकाश दिवस	ता. गुरयाई मिली	ता. जोतीजोत समाए
श्री गुरु नानकदेव जी	2 नवम्बर	अवतार दिन से	14 सितम्बर	2 नवम्बर	अवतार दिन से	22 सितम्बर
श्री गुरु अंगददेव जी	26 अप्रैल	9 सितम्बर	30 मार्च	18 अप्रैल	18 सितम्बर	16 अप्रैल
श्री गुरु अमरदास जी	8 मई	27 मार्च	4 सितम्बर	23 मई	16 अप्रैल	16 सितम्बर
श्री गुरु रामदास जी	6 अक्तूबर	2 सितम्बर	23 अगस्त	9 अक्तूबर	16 सितम्बर	16 सितम्बर
श्री गुरु अर्जुनदेव जी	16 अप्रैल	22 अगस्त	27 मई	2 मई	16 सितम्बर	16 जून
श्री गुरु हरगोबिन्द जी	8 जून	17 मई	31 मार्च	5 जुलाई	11 जून	19 मार्च
श्री गुरु हरिराय जी	28 जनवरी '10	13 मार्च, '10	12 अक्तूबर	31 जनवरी	14 मार्च	20 अक्तूबर
श्री गुरु हरकिशन जी	16 जुलाई	12 अक्तूबर	8 अप्रैल	23 जुलाई	20 अक्तूबर	16 अप्रैल
श्री गुरु तेग़बहादुर जी	14 अप्रैल	8 अप्रैल	21 नवंबर	18 अप्रैल	16 अप्रैल	24 नवम्बर
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	24 दिसं.	19 नवम्बर	23 अक्तूबर	5 जनवरी	24 नवम्बर	21 अक्तूबर
खालसापंथ साजना दिवस	वैशाख 1, मुताबिक 13 अप्रैल, 2009 ई.			1 वैशाख/14 अप्रैल, 2009 ई.		
प्रथम प्रकाश गुरुग्रन्थ साहिब जी	भाद्र. शुक्ल 1, मुताबिक 21 अगस्त, 2009 ई.			17 भाद्रपद/1 सितंबर, 2009 ई.		
गुरुग्रन्थ साहिब जी को गुरयाई मिली	कार्तिक शुक्ल 2, मुताबिक 20 अक्तूबर, 2009 ई.			6 कार्तिक/20 अक्तूबर, 2009 ई.		

संक्रान्ति	
महीना	अंग्रेज़ी ता.
चैत्र	14 मार्च
वैशाख	14 अप्रै.
ज्येष्ठ	15 मई
आषाढ़	15 जून
श्रावण	16 जुला.
भाद्रपद	16 अग.
आश्विन	15 सितं.
कार्तिक	15 अक्तू.
मार्गशीर्ष	14 नवं.
पौष	14 दिसं.
माघ	13 जन.
फाल्गुन	12 फर.

भारत सरकार के अवकाश (1 जनवरी, सन् 2009 ई. से 15 मार्च, सन् 2010 ई. तक)

(सूचना :– अवकाश की इस सूची को भारत सरकार के गज़ट की सूची से मिला लेना चाहिए।)

						(सन् 2010 ई.)	
इंग्लिश नववर्ष (2009 ई.) प्रारम्भ	1 जन.	गुड फ्राई डे	10 अप्रै.	इदुल–फित्र	21 सितं.	इंग्लिश नववर्ष (2010ई.) प्रारम्भ	1 जन.
अ. दि. श्री गुरु गोबिन्दसिंह जी	5 जन.	वैशाखी (पंजाब)	13 अप्रै.	श्रीदुर्गाष्टमी	26 सितं.	अ. दि. श्री गुरु गोबिन्दसिंह जी	5 जन.
मुहर्रम (ताज़िया)	8 जन.	विशु (केरल)	13 अप्रै.	दशहरा	28 सितं.	मकर संक्रान्ति (बंगाल)	14 जन.
मकर संक्रान्ति (बंगाल)	13 जन.	श्रीबुद्ध जयन्ती	9 मई	जन्म श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्तू.	पोंगल	14 जन.
पोंगल	13 जन.	रथयात्रा (पुरी)	24 जून	श्रीवाल्मीकि जयन्ती	4 अक्तू.	भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन.
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन.	जन्म श्रीहजरत अली	7 जुला.	दीपावली	17 अक्तू.	जन्मदिन श्री गुरु रविदास जी	30 जन.
जन्मदिन श्री गुरु रविदास जी	9 फर.	रक्षाबन्धन (राखी)	5 अग.	भाई दूज	19 अक्तू.	श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	12 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	23 फर.	श्रीगणेश चतुर्थी	9 अग.	श्रीगुरुनानक जयन्ती	2 नवं.	ईद–ए–मिलाद	27 फर.
ईद–ए–मिलाद	10 मार्च	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	14 अग.	बलि. दि. श्रीगुरु तेग़बहादुर जी	24 नवं.		
गुड़ी पड़वा	27 मार्च	भारत स्वतन्त्रता दिवस	15 अग.	इदुलज्जुहा	28 नवं.		
श्रीराम नवमी	3 अप्रै.	ओणम (केरल)	2 सितं.	क्रिसमस डे	25 दिसं.		
श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)	7 अप्रै.	जमतुलविदा	18 सितं.	मुहर्रम (ताज़िया)	28 दिसं.		

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू–काश्मीर व उ.प्र. के मेले (1 जन., सन् 2009 ई. से 15 मार्च, 2010 ई. तक)

नाम मेला/पर्व (सन् 2009 ई.)	ता.
जनवरी	
लोहड़ी दांऊ, (मोहाली)/बिंदरख(रोपड़,)(पं.)	13 जन.
मुक्तसर (पंजाब)	13 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी (रेरु साहिब) प्रा.	19 जन.
ब. सं. बा. बख्शीश सिंह जी	25 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी,(मस्तुआणा)(पं.) प्रा.	29 जन.
वसन्त पंचमी	31 जन.
फरवरी	
ज.दि.गु. हरिराय जी, सिंहपुरा–कुराली (पं.)	7 फर
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	23 फर
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी–गढ़वाल)	23 फर
मार्च	
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	11 मार्च
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	15 मार्च
ज. दि. सं. बा. अतर सिंह जी, (नानकसर चीमा) प्रा.	15 मार्च
श्री वीरमदास, बघौछी (पटियाला)	17 मार्च
शीतला माता (कुराली) पं.	19 मार्च
ज. दि. सं. बा. निधानसिंह जी, ढींडसा (लुधि.)	25 मार्च
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	25 मार्च
अप्रैल	
माईसर खाना (पं.)	1 अप्रै.
श्री मनसादेवी (हरि.)	2 अप्रै.
बहुफोर्ट (जम्मू–काश्मीर)	2 अप्रै.
ज्वालामुखी (हरचोवाल, गुरदासपुर) पं.	2 अप्रै.
नरीसैंमरी, मथुरा (उ.प्र.)	2 अप्रै.
माता कांसादेवी (कांसल, मोहाली) प्रारम्भ	7 अप्रै.
देवी मेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	8 अप्रै.
मेला माता नैनादेवी, दाचर (करनाल)	8 अप्रै.
कशाध्या, नहयाणी सह (कुल्लू) प्रा.	15 अप्रै.
पिंजौर (हरि.)	25 अप्रै.
पीपल जातर (कुल्लू) प्रा.	28 अप्रै.
मई	
समागम (8 दिन) हरिहरघाट, मणिकर्ण, प्रा.	3 मई

नाम मेला/पर्व (सन् 2009 ई.)	ता.
आनी आऊटर सिराज (कुल्लू) प्रा.	7 मई
ढूंगरी जातर (मनाली) प्रा.	14 मई
बंजार (कुल्लू) प्रा.	14 मई
ज.दि.सं.बा. तेजा सिंह जी, बदरीपुर पांवटा सा. प्रा.	14 मई
साढ़ी जातर, नगर (हि.प्र.) प्रा.	18 मई
क्षीर भवानी (जम्मू–काश्मीर)	31 मई
जून	
श्रीगंगा दशहरा	2 जून
सपोर यात्रा– धारलदा (उधमपुर)	2 जून
नमाणी एकादशी, नौवें गुरु, बरहे (बठि.) पं.	3 जून
पीपलू', ऊना (हि.प्र.)	3 जून
शुद्ध महादेव यात्रा (उधमपुर)	7 जून
पाण्डवों का बाड़ी मेला (सरयांझ) सोलन,	14 जून
भुन्तर (कुल्लू) प्रा.	14 जून
यादगारी दिवस बी. शरण कौर जी, गु. श्रीअमर गढ़ साहिब, श्रीचमकौर साहिब	28 जून
शरीक भवानी (जम्मू–काश्मीर)	30 जून
जुलाई	
ब. सं. बा. तेजा सिंह जी,नानकसर चीमा (पं.)/ बड़ू साहिब (हि. प्र.)	1-3 जुला.
गुरु पूर्णिमा, नदीपार आश्रम (कुराली)	7 जुला.
मुड़िया पूनौ, (गोवर्धन), मथुरा (उ.प्र.)	7 जुला.
ब.बा. सन्तोख सिंह जी/भा. दर्शन सिंह जी गुरुद्वारा जन्मस्थान नानकसर, चीमा	9-11 जुला.
नागपंचमी (जैत), मथुरा (उ.प्र.)	26 जुला.
श्रीनैना देवी/ श्री चिन्तपूर्णी (हि. प्र.)	29 जुला.
अगस्त	
मेला पीरमीखनशाह (घड़ाम, पटियाला) प्रा.	3 अग.
ब.सं.बा. निधान सिंह जी, ढींडसा (लुधि.)	4 अग.
ज.दि. सं. बा. ईशर सिंह जी (राड़ा सा. वाले)	5 अग.
श्री अमरनाथ यात्रा (काश्मीर)	5 अग.
बरसी सं. बाबा प्यारा सिंह जी, (झाड़ साहिब वाले) चमकौर साहिब	5-7 अग.

नाम मेला/पर्व (सन् 2009 ई.)	ता.
श्रीकृष्णजन्माष्टमी, मथुरा (उ.प्र.),	14 अग.
कैलाशयात्रा (काश्मीर) प्रा.	18 अग.
ब. सं. बा. हरचन्द सिंह लौंगोवाल	20 अग.
श्रीगोसाईआणां, कुराली (पंजाब)	22 अग.
श्रीगणेशोत्सव (मण्डी) हि.प्र. प्रारम्भ	23 अग.
ब.सं.बा. ईशर सिंह जी (राड़ा सा. वाले) प्रा.	24 अग.
मेला पट्ट (काश्मीर) प्रारम्भ	24 अग.
मेला श्रीबलदेव छठ, पलवल, हरियाणा	25 अग.
गरुणगोविन्द (छटीकरा, मथुरा) (उ.प्र.)	27 अग.
सितंबर	
श्रीवामन द्वादशी (अम्बाला, पटियाला)	1 सितं.
बाबा सोढल (जालन्धर)	3 सितं.
छपार (पं.)	3 सितं.
श्रीगोईंदवाल साहिब, (तरनतारन) पं.	4 सितं.
श्री आशापति यात्रा (काश्मीर) प्रा.	17 सितं.
श्रीज्वालामुखी/ श्रीतारादेवी (हि.प्र.)	26 सितं.
ज्वालामुखी (हरचोवाल,गुरदासपुर) पं.	26 सितं.
दशहरा (कुल्लू) प्रा.	28 सितं.
अक्तूबर	
मेला माता नैनादेवी, दाचर (करनाल)	3 अक्तू.
श्रीशाकम्भरी देवी (उ.प्र.)	3 अक्तू.
देवीमेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	3 अक्तू.
भण्डारा श्री हरिओम् जी (माणकपुर शरीफ)	13 अक्तू.
दीपावली (अमृतसर)	17 अक्तू.
बाबा रुद्रानन्द, नारी (ऊना, हि.प्र.) प्रा.	29 अक्तू.
रेणुका (नाहन) हि.प्र.	29 अक्तू.
ज. दि. श्रीवीर वैरागी (नकोदर) (पं.)	31 अक्तू.
नवंबर	
श्रीरामतीर्थ (अमृतसर, पं.)	2 नवं.
कपालमोचन (हरि.)	2 नवं.
श्रीपुष्करराज (राज.)	2 नवं.
उर्स माणकपुर शरीफ (मोहाली) प्रारम्भ	3 नवं.
बाल मेला,	14 नवं.
पुरमण्डल, देविका स्नान (जम्मू)	15 नवं.
ब.सं.बा. राम सिंह/ बूटा सिंह,नानकसरचीमा	27 नवं.

नाम मेला/पर्व (सन् 2009–10 ई.)	ता.
दिसंबर	
ब. बा. वैशाखा सिंह, दुदेहर सा. (तरनतारन)	5 दिसं.
ब. बीबी तेज कौर जी, मानपुर, फतेहगढ़ सा.	23 दिसं.
ज. दि. सं. बा. किशन सिंह जी, (राड़ा सा. वाले) मसीतां, जि. सिरसा–हरि.	24 दिसं.
जोड़मेला, फतेहगढ़ साहिब (पं.) प्रा.	26 दिसं.
संगीत मेला बाबा हरबल्लभ (जालन्धर) प्रा.	27 दिसं.
ब. सं. बा. किशन सिंह जी, गु. कर्मसर साहिब, राड़ा साहिब (लुधि.) प्रा.	30 दिसं.
जनवरी, सन् 2010 ई.	
लोहड़ी दांऊ, (मोहाली)/बिंदरख(रोपड़,)(पं.)	14 जन.
मुक्तसर (पंजाब)	14 जन.
वसन्त पंचमी	20 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी (रेरु साहिब) प्रा.	20 जन.
ब. सं. बा. बख्शीश सिंह जी	26 जन.
ज.दि.गु. हरिराय जी, सिंहपुरा–कुराली (पं.)	28 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी,(मस्तुआणा) (पं.) प्रा.	30 जन.
फरवरी	
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	12 फर.
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी–गढ़वाल)	12 फर.
नगर कीर्तन होला महल्ला, चमकौर साहिब	24 फर.
मार्च	
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	1 मार्च
श्री वीरमदास, बघौछी (पटियाला)	2 मार्च
शीतला माता (कुराली) पं.	4 मार्च
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	5 मार्च
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	14 मार्च
ज. दि. सं. बा. अतर सिंह जी, (नानकसर चीमा) प्रा.	15 मार्च

यदि आप चाहते हैं कि आपके नगर/ग्राम में होने वाले मेलों आदि को इस पृष्ठ पर प्रकाशित सूची में प्रविष्ट किया जाए, तो तिथि, प्रविष्टा या अंग्रेजी तारीख जिसके अनुसार उसे मनाया जाता हो, पूर्ण विवरणसहित लिख भेजें– धन्यवाद। —सम्पादक

गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ एवम् समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2009 ई. से 15 मार्च सन् 2010 ई. तक)

प्रारम्भ		समाप्त	
2009 ई.	घं. मि.	2009 ई.	घं. मि.
4 जन.	10 54	6 जन.	9 52
12 जन.	16 16	14 जन.	12 23
21 जन.	20 30	24 जन.	2 40
31 जन.	16 39	2 फर.	16 36
9 फर.	3 28	10 फर.	23 19
18 फर.	3 43	20 फर.	9 48
27 फर.	22 22	1 मार्च	21 59
8 मार्च	12 41	10 मार्च	9 25
17 मार्च	11 53	19 मार्च	17 41
27 मार्च	5 41	29 मार्च	4 19
4 अप्रै.	19 16	6 अप्रै.	17 12
14 अप्रै.	22 51	17 अप्रै.	4 52
23 अप्रै.	14 42	25 अप्रै.	12 41

प्रारम्भ		समाप्त	
2009 ई.	घं. मि.	2009 ई.	घं. मि.
2 मई	0 37	3 मई	22 58
11 मई	4 08	12 मई	6 36
21 मई	0 21	22 मई	22 35
29 मई	6 57	31 मई	4 30
7 जून	10 52	9 जून	16 17
17 जून	9 11	19 जून	8 32
25 जून	15 29	27 जून	11 36
4 जुला.	16 48	6 जुला.	22 27
14 जुला.	16 24	16 जुला.	17 04
23 जुला.	1 51	24 जुला.	20 50
31 जुला.	22 45	3 अग.	4 31
10 अग.	22 15	12 अग.	23 41
19 अग.	12 31	21 अग.	7 21

प्रारम्भ		समाप्त	
2009 ई.	घं. मि.	2009 ई.	घं. मि.
28 अग.	5 35	30 अग.	11 05
7 सितं.	3 55	9 सितं.	5 10
15 सितं.	21 44	17 सितं.	17 27
24 सितं.	13 39	26 सितं.	18 33
4 अक्तू.	10 45	6 अक्तू.	11 12
13 अक्तू.	4 37	15 अक्तू.	1 37
21 अक्तू.	22 29	24 अक्तू.	2 45
31 अक्तू.	19 18	2 नवं.	19 11
9 नवं.	9 59	11 नवं.	7 36
18 नवं.	7 02	20 नवं.	11 01
28 नवं.	4 49	30 नवं.	5 01
6 दिसं.	16 13	8 दिसं.	13 03
15 दिसं.	14 19	17 दिसं.	18 34

प्रारम्भ		समाप्त	
2009 ई.	घं. मि.	2009 ई.	घं. मि.
25 दिसं.	13 47	27 दिसं.	15 12
(सन् 2010 ई.)			
3 जन.	1 12	4 जन.	20 23
11 जन.	20 18	14 जन.	1 02
21 जन.	21 05	23 जन.	23 50
30 जन.	12 28	1 फर.	6 31
8 फर.	2 05	10 फर.	6 57
18 फर.	3 01	20 फर.	6 21
26 फर.	23 45	28 फर.	17 57
7 मार्च	9 08	9 मार्च	13 20
		— — —	

पंचकों का प्रारम्भ एवम् समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2009 ई. से 15 मार्च सन् 2010 ई. तक)

प्रारम्भ		समाप्त	
2009 ई.	घं. मि.	2009 ई.	घं. मि.
27 जन.	23 58	1 फर.	16 53
24 फर.	6 53	28 फर.	22 21
23 मार्च	15 02	28 मार्च	5 11
19 अप्रै.	23 42	24 अप्रै.	13 58
17 मई	7 53	21 मई	23 49

प्रारम्भ		समाप्त	
2009 ई.	घं. मि.	2009 ई.	घं. मि.
13 जून	15 00	18 जून	9 15
10 जुला.	21 10	15 जुला.	17 06
7 अग.	3 04	11 अग.	23 15
3 सितं.	9 32	8 सितं.	4 45

प्रारम्भ		समाप्त	
2009 ई.	घं. मि.	2009 ई.	घं. मि.
30 सितं.	17 00	5 अक्तू.	11 11
28 अक्तू.	1 15	1 नवं.	19 31
24 नवं.	9 30	29 नवं.	5 18
21 दिसं.	17 00	26 दिसं.	14 54

प्रारम्भ		समाप्त	
2010 ई.	घं. मि.	2010 ई.	घं. मि.
17 जन.	23 35	22 जन.	22 48
14 फर.	5 43	19 फर.	4 55
13 मार्च	12 05	— — —	— — —

रविवार कैलेण्डर (1 जनवरी, सन् 2009 ई. से 31 मार्च सन् 2010 तक)

2009 ई.	रविवार की तारीखें				
जनवरी	4	11	18	25	—
फरवरी	1	8	15	22	—
मार्च	1	8	15	22	29
अप्रैल	5	12	19	26	—

2009 ई.	रविवार की तारीखें				
मई	3	10	17	24	31
जून	7	14	21	28	—
जुलाई	5	12	19	26	—
अगस्त	2·	9	16	23	30

2009 ई.	रविवार की तारीखें				
सितंबर	6	13	20	27	—
अक्तूबर	4	11	18	25	—
नवंबर	1	8	15	22	29
दिसंबर	6	13	20	27	—

2010 ई.	रविवार की तारीखें				
जनवरी	3	10	17	24	31
फरवरी	7	14	21	28	—
मार्च	7	14	21	28	—

ग्रहण-विवरण (सं. 2066 वि.)

प्रियव्रत शर्मा

इस वर्ष (27 मार्च, 2009 ई. से 15 मार्च, सन् 2010 ई. तक की अवधि में) भूगोल पर निम्नांकित तीन ग्रहण होंगे।

(i) खग्रास सूर्यग्रहण (22 जुलाई, 2009 ई.)

(ii) खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (31 दिसंबर, 2009 ई./ 1 जनवरी, 2010 ई.)

(iii) कंकण सूर्यग्रहण (15 जनवरी, 2010 ई.)

ये तीनों ग्रहण भारत में दिखाई पड़ेंगे। इनका विस्तृत विवरण नीचे दिया जा रहा है–
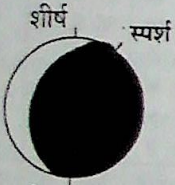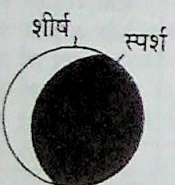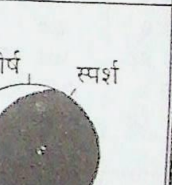
(i) खग्रास सूर्यग्रहण (22 जुलाई, 2009 ई., श्रावण अमा, बुधवार)– इस ग्रहण की खग्रास आकृति गुजरात, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, झारखण्ड, बिहार, अरुणाचल, सिक्किम, मेघालय व आसाम में दिखाई पड़ेगी। भारत के शेष प्रान्तों में यह खण्डग्रास के रूप में ही दिखाई देगा। भारत में यह ग्रहण प्रातः सूर्योदय के आसन्न दिखाई पड़ेगा। पूर्वी भारत के मिजोरम, मेघालय, आसाम, प. बंगाल, बिहार, उ.प्र. प्रान्तों तथा हिमाचल प्रदेश एवं जम्मू–काश्मीर के अधिकतर भागों को छोड़कर भारत के शेष भाग में यह ग्रहण ग्रस्तोदय होगा, यानी वहां सूर्योदय से पूर्व ही यह ग्रहण प्रारम्भ हो जाएगा।

पृष्ठ 16 पर ग्रहण चित्र (1) में भारत के विभिन्न नगरों में इस ग्रहण का परम ग्रासमान (प्रतिशत) रेखाओं द्वारा दर्शाया गया है। इसी चित्र में 'क–ख' और 'च–छ' रेखाओं के मध्य एक धुंधली पट्टी दी गई है। यह पट्टी खग्रासग्रहण का मार्ग है, अर्थात् इस पट्टी में बसे नगर, ग्रामों में ही इस ग्रहण की खग्रास आकृति दिखाई पड़ेगी। भारत के शेष नगरों में तो यह खण्डग्रास के रूप में ही दिखाई पड़ेगा। इस चित्र में अंकित की

खग्रास सूर्यग्रहण (22 जुलाई, 2009 ई.)

कुछ नगरों में ग्रहणमध्यकालीन (भा. स्टैं. टा.), परमग्रास

कुरुक्षेत्र	चण्डीगढ़	दिल्ली	जयपुर	वाराणसी	हरिद्वार
शीर्ष, स्पर्श, मोक्ष	शीर्ष, स्पर्श, मोक्ष	शीर्ष, स्पर्श, मोक्ष	शीर्ष, स्पर्श, मोक्ष	उन्मीलन, शीर्ष, स्पर्श, सम्मीलन, मोक्ष	शीर्ष, स्पर्श, मोक्ष
ग्रहणमध्य 6 घं. 27 मि. 27 से. (परमग्रास 81)	ग्रहणमध्य 6 घं. 27 मि. 56 से. (परमग्रास 79)	ग्रहणमध्य 6 घं. 26 मि. 39 से. (परमग्रास 86)	ग्रहणमध्य 6 घं. 25 मि. 34 से. (परमग्रास 90)	ग्रहणमध्य 6 घं. 25 मि. 53 से. (परमग्रास 102)	ग्रहणमध्य 6 घं. 27 मि. 35 से. (परमग्रास 83)

(परमग्रास 81)	(परमग्रास [illegible])	6 घं. 26 मि. 39 से. (परमग्रास 88)	6 घं. 25 मि. 34 से. (परमग्रास 90)	6 घं. 25 मि. 53 से. (परमग्रास 102)	ग्रहणमध्य 6 घं. 27 मि. 35 से. (परमग्रास 83)

गई परमग्रास ज्ञापक रेखाओं को देखने से स्पष्ट है कि– जो नगर खग्रासपट्टी से जितना उत्तर या दक्षिण में अधिक दूर हटा हुआ होगा, वहां ग्रहण का परमग्रासमान उतना ही कम होगा। इस पट्टी के उत्तर में स्थित नगरों में सूर्यबिम्ब का दक्षिण भाग और पट्टी के दक्षिण में उत्तर भाग ग्रस्त दीखेगा।

इसी चित्र में 'त–थ' रेखा अंकित है। इस रेखा से बाईं ओर स्थित नगरों में यह ग्रहण सूर्योदय से पूर्व ही शुरु हो जाएगा। जिससे यहां सूर्य ग्रस्त ही उदय होगा। इस रेखा से दाईं ओर वाले नगरों में तो ग्रहण सूर्योदय के बाद ही शुरु होगा।

पृष्ठ **16** पर **ग्रहण चित्र (2)** में मोक्षरेखाएं अंकित की गई हैं, अपने नगर के अक्षांश, रेखांश के आधार पर इस चित्र द्वारा अभीष्ट नगर का मोक्षकाल (भा.स्टैं.टा.) आसानी से जाना जा सकता है। इस ग्रहण की स्पर्श ज्ञापक रेखाएं चित्र द्वारा दर्शाना सम्भव नहीं हो सका, क्योंकि ये रेखाएं अत्यन्त परस्पर सटी मिलती हैं, जिससे स्पष्टतया उनसे स्पर्शकालज्ञान कठिन है। **ध्यान रहे–** ग्रस्तोदय एवं ग्रस्तास्त सूर्यग्रहण की स्थिति में ऐसी समस्या अनेक बार उपस्थित होती है। अतः इसके लिए आगे पृष्ठ **24** पर एक कोष्ठक दिया जा रहा है, जिसकी मदद से आप अपने नगर के अक्षांश–रेखांश अनुसार वहां इस ग्रहण का सूक्ष्म र्स्पशकाल (भा. स्टैं. टा.) जान सकते हैं। जिस अक्षांश–रेखांश का स्पर्शकाल इस कोष्ठक में नहीं दिया गया है, समझना चाहिए कि– उस अक्षांश–रेखांश वाले स्थल पर ग्रहण सूर्योदय से पहले ही प्रारम्भ हो चुका होगा। **अपरञ्च–** भारत के विभिन्न नगरों में इस ग्रहण के मोक्ष आदि काल के साथ इसका स्पर्शकाल भी आगे पृष्ठ **21** पर कोष्ठक में पाठकों की सुविधार्थ दिया गया है।

पृष्ठ **17** पर **ग्रहण चित्र (3)** देखें, इसमें इस ग्रहण के खग्रासमार्ग को स्पष्टता के लिए बड़ा बना कर दर्शाया गया है। इस पट्टी में बसे प्रसिद्ध नगर भी यहां अंकित किए गए हैं। पट्टी के मध्य से गुजरती एक **'A-B'** रेखा अंकित की गई है, इस रेखा पर बसे नगर, ग्रामों में खग्रास का काल अधिकतम (3 से $4\frac{1}{2}$ मिनट तक) होगा। ड्यू, सूरत, मांडू, बरवानी (म.प्र.), पटना, सहरसा (बिहार), मधिपुरा (बिहार), अरारिया (बिहार), जलपाईगुडी (प.बंगाल)– ये नगर लगभग इस मध्यरेखा पर स्थित हैं। पटना, मधिपुरा (बिहार), सहरसा (बिहार) और जलपाईगुडी (प.बंगाल) तो बिल्कुल इस रेखा पर बसे हैं। अतः खग्रासकाल इन नगरों में परम(अधिक) होगा। जो लोग खग्रासग्रहण का अद्भुत दृश्य देखने में रुचि रखते हैं, उन्हें इस मध्यरेखा पर अथवा इसके आस–पास बसे स्थलों पर अवश्य जाना चाहिए। इस पट्टी में स्थित जो नगर इस मध्यरेखा **(A-B)** से उत्तर या दक्षिण की ओर (**'क–ख'** या **'च–छ'** रेखा की ओर) जितना अधिक हटा होगा, उस नगर में इस ग्रहण का खग्रासकाल उतना ही कम होगा।

इसी चित्र में खग्रासपट्टी की मध्यरेखा (**A-B**) पर कुछ–कुछ दूरी पर खग्रास–प्रारम्भ का काल (भा.स्टैं.टा.) लगभग एक–एक मिनटान्तर पर दिया गया है। इस काल के साथ ही कोष्ठक में खग्रास का पूर्णकाल भी दर्शाया गया है। जैसे– यहां अक्षांश 20°, रेखांश 70° पर '6 घं. 21 मि. 16 से.' तथा ($3^{मि}$–$09^{से}$) लिखा है, इसका अर्थ है, पट्टी की मध्यरेखा के इस बिन्दु पर खग्रास **'6 घं. 21 मि. 16 से.'** (भा.स्टैं.टा.) से प्रारम्भ होकर 3 मि. 09 से. तक [यानी **6 घं. 24 मि. 25 से.** (भा.स्टैं.टा.) तक] रहेगा।

पृष्ठ **21** पर भारत के लगभग सवा दो सौ प्रसिद्ध नगरों में इस ग्रहण का स्पर्श(प्रारम्भ)काल, मध्यकाल(परमग्रासकाल), मोक्ष(समाप्तिकाल) तथा परम ग्रासमान प्रतिशत में दिया गया है। क्योंकि यह ग्रहण भारत के कुछ भाग में ग्रस्तोदय होगा, इसलिए इस कोष्ठक में उन नगरों के स्पर्शकाल वाले कॉलम में स्पर्शकाल की जगह कोष्ठक में सूर्योदयकाल दिया गया है। क्योंकि धर्मकृत्य के लिए ग्रस्तोदय ग्रहण में सूर्योदयकाल को ही ग्रहण का स्पर्शकाल मानकर स्नानादि किया जाता है। स्पष्टता के लिए देखें– इस कोष्ठक में अकोला नगर के आगे स्पर्श वाले कॉलम में (5 घं. 51 मि. 59 से.) लिखा है। इसका अर्थ है– अकोला में सूर्योदय से पूर्व ही ग्रहण प्रारम्भ हो जाएगा। अतः यहां अकोला के सूर्योदयकाल (5 घं. 51 मि. 59 से.) को ही ग्रहण का स्पर्शकाल मानना होगा। **किंच–** इसी कोष्ठक में अगरतला नगर के आगे स्पर्श वाले कॉलम में '5 घं. 29 मि. 33 से.' लिखा है। यहां ये घं. मि. से. कोष्ठक (Bracket)में नहीं दिए गए हैं, अतः समझ लेना चाहिए कि अगरतला नगर में ग्रहण का स्पर्श (प्रारम्भ) सूर्योदय के बाद '5 घं. 29 मि. 33 से.' (भा.स्टैं.टा.) पर होगा।

पृष्ठ **23** पर **खग्रासपट्टी पर पड़ने वाले कुछ विशेष नगरों में खग्रास का प्रारम्भ और समाप्तिकाल तथा खग्रास की अवधि भी दी गई है।**

महावेग से दौड़ती आ रही चन्द्रमा की विशालकाय छाया देखिए

सूर्य की संरचना आदि के बारे में अनेक ज्ञातव्य विषयों का ज्ञापक होने के कारण खग्रास (पूर्ण) सूर्यग्रहण वैज्ञानिकों के लिए तो महत्त्वपूर्ण है ही,

सर्वसाधारण के लिए भी यह एक अत्यन्त विलक्षण दृश्य होने के कारण आकर्षण का विषय है। यदि एक ऊंचे मकान, मीनार, पर्वत या टीले पर, जहां से दूर पश्चिम क्षितिज तक बिना किसी रुकावट के देखा जा सकता हो, बैठकर पश्चिम की ओर देखा जाए तो खग्रास प्रारम्भ होने से 3–4 सेकण्ड पूर्व ही पश्चिम क्षितिज की ओर से एक विशालकाय (उत्तर से दक्षिण तक फैली) भीषण, काली छाया अत्यन्त तीव्र गति से तूफ़ान की भान्ति आपकी ओर भागती आ रही नज़र आएगी। आप तक यह छाया पहुंचते ही खग्रास प्रारम्भ (सूर्य पूर्णग्रस्त) हो जाएगा और चारों ओर अच्छा अन्धकार छा जाएगा। ऐसा लगेगा जैसे कि अचानक रात हो गई हो। 22 जुलाई, सन् 2009 ई. वाले इस खग्रास सूर्यग्रहण के समय **ग्रहण चित्र (3)** में दी गई 'क–ख' और **'च–छ'** रेखाओं के मध्य (विशेष रूप से 'A-B' रेखा पर और इसके समीप स्थित नगर–ग्रामों में) शान्त तूफ़ान की भान्ति दौड़ी आती इस छाया का दिल दहलाने वाला, लेकिन रोचक रूप देखा जा सकेगा। जहां से आप यह महाछाया आती देख रहे हैं, यदि वहां से पूर्व क्षितिज तक भी बिना किसी रुकावट के देखा जा सकता हो तो खग्रास समाप्त होने के तुरन्त बाद पूर्व क्षितिज की ओर से महावेग से भागती जा रही यह छाया दिखाई देगी और 3–4 सेकण्डों में ही पूर्व क्षितिज में विलीन हो जाएगी।

'A-B' रेखा पर इस महाछाया का विस्तार अलग–अलग स्थलों पर **अलग**–अलग (205 से 231 कि. मी. तक) होगा। इस (22 जुलाई, 2009 वाले) **सूर्यग्रहण** में यह महाछाया गुजरात से अरुणाचल तक लगभग 2940 कि.मी. का **मार्ग** लगभग 13 मि. में तय कर जाएगी। इस प्रकार भारतभूमि पर इसकी गति **मध्यम** मान से 13,560 कि. मी. प्रति घण्टा (226 कि. मी. प्रति मिनट अथवा 3¾ कि. मी. प्रति सेकण्ड) होगी। **यह महाछाया उस चन्द्रमा की ही होगी जो ग्रहण के समय अपने बिम्ब से सूर्य के बिम्ब को ढक रहा होगा।**

खग्रास के समय अद्भुत वातावरण

खग्रास प्रारम्भ होने से कुछ मिनट पूर्व ही ग्रहण से (ग्रस्त होने से) बची सूर्यबिम्ब की पूर्वी कोर अत्यन्त तेजस्विता से हीरे की लड़ी की भान्ति चमकती दीखेगी। ऐसा लगेगा जैसे कि अत्यन्त चमकदार कुछ हीरों से जड़ा छोटा सा मुकुट सूर्यबिम्ब के पूर्वी कोर पर किसी ने रख दिया हो। हीरे की भान्ति चमकते इन मनकों को Baily's beads कहा जाता है। कुछ ही क्षणों के लिए सूर्य चमकते हीरे की अंगूठी की शक्ल में भी दीखेगा और क्षणों में ही यह दृश्य भी समाप्त हो जाएगा। पूर्ण ग्रहण प्रारम्भ होने से सात–आठ मिनट पहले ही सूर्य की धूप काफी धूमिल पड़ जाएगी, आकाश और पृथ्वी पर चारों ओर विलक्षण से रंगों की तरंगें तैरती सी नज़र आएंगी। खग्रास प्रारम्भ होते ही दृष्टि सहसा निष्क्रिय हो जाएगी और कुछ सेकण्ड बाद अनुभव होगा कि अन्धकार इतना घना नहीं है। इस समय सभी पक्षी चहचहाते सायंकाल की भान्ति अपने–अपने घोंसलों की ओर दौड़ेंगे, कुत्ते और दूसरे पशु भी अचानक भयाक्रान्त से दीख पड़ेंगे। फूलों की पंखुड़ियां बन्द हो जाएंगी, पर्याप्त ठण्ड महसूस होने लगेगी।

दिन में ग्रह व तारे देखिए

खग्रास सूर्यग्रहण के समय ऊर्ध्वाकाश में (क्षितिज से ऊपर) स्थित सभी ग्रह एवं चमकदार नक्षत्र दिन में दीखने लगते हैं। 22 जुलाई, 2009 ई. वाले इस खग्रास सूर्यग्रहण के समय **ग्रहण चित्र (3)** में दी गई 'क–ख' और **'च–छ'** रेखाओं के मध्य बसे नगर–ग्रामों में (A-B) रेखा पर और इसके समीप बसे नगर–ग्रामों में तो विशेषरूप से) यह दृश्य देखा जा सकेगा। इस खग्रास सूर्यग्रहण के समय सूर्य से लगभग 40 अंश पश्चिम की ओर **शुक्र** और लगभग 10 अंश पूर्व की ओर **बुध ग्रह** भी दिखाई देगा। इस समय मंगल पूर्वकपाल में शुक्र से लगभग 12 अंश ऊपर और **गुरु** पश्चिम मे दिखाई पड़ेगा। शनि इस समय क्षितिज से नीचे होने के कारण दिखाई नहीं दे सकेगा। कुम्भ, मीन, मेष, वृष, मिथुन और कर्क राशियों के तारामण्डल पश्चिम से पूर्व क्षितिज पर्यन्त क्रमशः स्थित देखे जा सकेंगे। ऊर्ध्वाकाश में स्थित अन्य मृगशिरा आदि दीप्तिमान् नक्षत्र भी टिमटिमाते नज़र आएंगे। खग्रास के समय मंगल, बुध एवं शुक्र ग्रह तथा मृगशिरा तारामण्डल एवं खगोल के सबसे चमकदार तारे लुब्धक (Sirius) की स्थिति पृष्ठ 18 पर दिए चित्र में देखिए।

ग्रहण का सूतक (वेध)– इस ग्रहण का सूतक 21 जुलाई, सन् 2009 ई. को सूर्यास्तकाल से ही प्रारम्भ हो जाएगा।

ग्रहण में वर्ज्य कर्म–ग्रहण के सूतक और ग्रहण के काल में खाना–पीना और मैथुन वर्जित है। ग्रहणकाल में सोना, मूत्र–पुरीषोत्सर्ग और तैलाभ्यंग भी निषिद्ध है। ग्रहण के सूतक में बाल, वृद्ध और रोगी व्यक्तियों के लिए खाने–पीने, सोने का निषेध नहीं है।

पका हुआ अन्न, कटी हुई सब्जी व फल ग्रहणकाल में दूषित हो जाते

... Bally's Beads कहा जाता है। कुछ ही क्षणों के लिए सूर्य चमकते हीरे की अंगूठी की शक्ल में भी दिखेगा और क्षणों में

लिए खाने–पीने सोने का निषेध नहीं है।

पका हुआ अन्न, कटी हुई सब्जी व फल ग्रहणकाल में दूषित हो जाते

हैं। उन्हें खाना नहीं चाहिए। लेकिन तेल या घी में पका (तला हुआ) अन्न, घी, **तेल, दूध, दही,** लस्सी, मक्खन, पनीर, अचार, चटनी, मुरब्बा में तिल या कुशा रख देने से ग्रहणकाल में ये दूषित नहीं होते। सूखे खाद्य पदार्थों (गेहूं, चना, दाल, आटा आदि) में तिल या कुशा डालने की ज़रूरत नहीं है।

ग्रहण का राशिफल– यह ग्रहण कर्क राशि एवं पुष्य नक्षत्र में होगा। अतः यह कर्क राशि एवं पुष्य नक्षत्र में उत्पन्न जातकों के लिए ज़्यादा नेष्ट होगा। मेषादि 12 राशियों में उत्पन्न जातकों के लिए इसका अलग–अलग फल नीचे कोष्ठक में दिया गया है–

जन्म/नाम राशि→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	कष्ट	धनलाभ	हानि	दुर्घटना (घात)	हानि	लाभ	सुख	अपमान	मृत्यु	स्त्री/पति कष्ट	सुख	चिन्ता

ग्रहण का अन्य फल– भारत के जिन क्षेत्रों में यह ग्रहण ग्रस्तोदय होगा वहां शरद–ऋतु में होने वाली फसलों को हानि पहुंचेगी एवं राजनीतिज्ञों को अनेकविध समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।

क्योंकि यह ग्रहण कर्कराशि में घटित हो रहा है, अतः आदिवासी, शबर, अहीर आदि दलितवर्गों को प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़े। मत्स्य, कुरु–पांचाल आदि में भी (समुद्री तूफान, भूकम्पादि) प्राकृतिक आपदाओं से भारी हानि होगी। खाद्यपदार्थ विशेषतः अनाजों में विशेष तेजी बने।

"आमीरान्–शबरान् सपल्लवान् मल्लान् मत्स्य–कुरुन् शकानपि।
पांचालान् विकलांश्च पीड़यन् चापि निहन्ति कर्कटे।।"

व्यापारिक फल– क्योंकि यह ग्रहण पुष्य नक्षत्र, श्रावण मास एवं बुधवार को घटित होगा, अतः रूई, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी, तांबा एवं शेयरों में तेजी बनेगी। ज्वार, बाजरा, मोठ, चना आदि के स्टॉक से भी भारी लाभ मिलेगा।

ग्रहण के समय सूर्य को मत देखिए

ग्रहण के समय सूर्य को देखना आँखों के लिए बहुत हानिप्रद है। जब खग्रास प्रारम्भ (सूर्य को पूरा ग्रस्त) होने में कुछ ही मिनट बाकी हों, अर्थात् सूर्य का थोड़ा–सा भाग ही ग्रस्त होने से शेष बच रहा हो, अथवा खग्रास ग्रहण समाप्त होने जा रहा हो और सूर्य का थोड़ा–सा भाग चमकने लगा हो तब उसे देखने से अन्धापन हो सकता है, जिसकी कोई चिकित्सा भी नहीं है।

(ii) खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (31 दिसं. '09/1 जन., 2010 ई., पौष पूर्णिमा, गुरुवार)–

यह ग्रहण पौष पूर्णिमा गुरुवार के दिन 31 दिसम्बर, 2009 ई. और 1 जनवरी, 2010 ई. की मध्यगतरात्रि में खण्डग्रास के रूप में सारे भारत में दिखाई देगा।

इस ग्रहण के स्पर्श आदि काल (भा.स्टैं.टा.) इस प्रकार हैं–

ग्रहणस्पर्श (प्रारम्भ)–	00 घं. 21 मि. 52 से.	31 दिसम्बर, '09 एवं 1 जन.'10 ई. की मध्यगतरात्रि
ग्रहणमध्य –	00 घं. 53 मि. 07 से.	
ग्रहणमोक्ष (समाप्त)–	1 घं. 23 मि. 55 से.	
पर्वकाल →	1 घं. 2 मि. 3 से.	
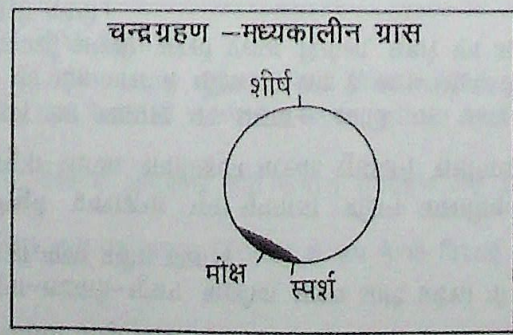
ग्रहणवेध (सूतक) – इस ग्रहण का सूतक 31 दिसम्बर, 2009 ई. को दिन के 3 बजकर 21 मिनट पर प्रारम्भ हो जाएगा।

ग्रहण का राशिफल– यह ग्रहण आर्द्रा नक्षत्र एवं मिथुन राशि में घटित हो रहा है। अतः आर्द्रा नक्षत्र एवं **मिथुन** राशि वाले व्यक्तियों के लिए विशेष कष्ट कारक बनता है। सभी राशियों वाले व्यक्तियों के लिए इस का शुभाशुभ फल निम्नप्रकार है–

जन्म/नाम राशि→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	धनलाभ	हानि	दुर्घटना (घात)	हानि	लाभ	सुख	अपमान	मृत्यु	स्त्री/पति कष्ट	सुख	चिन्ता	कष्ट

ग्रहण का अन्य फल– यह चन्द्रग्रहण मिथुन राशि में घटित होगा। गण्यमान्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों, राजनीतिज्ञों एवं वरिष्ठ–स्त्रियों के लिए कठिन परिस्थितियों वाला सिद्ध ह.गा।

यमुना–तटवर्ती–भूभाग, वाल्हीक, मत्स्य आदि प्रदेशों के लिए भी यह ग्रहण आपदाओं वाला प्रतीत होता है;–

> "मिथुने प्रवराङ्गना नृपा नृपमात्रा बलिनः कलाविदः।
> यमुना–तटजाः सवाल्हिका मत्स्याः सुह्मजनैः समन्विताः।।"

ग्रहण का व्यापार पर प्रभाव– क्योंकि यह ग्रहण आर्द्रा नक्षत्र, मिथुन राशि एवं पौष मास में घटित हो रहा है, अतः लोहा, तेल, घी, गुड़, चना, रुई, कपास, अलसी, सरसों एरण्ड, बिनौला, छुहारे एवं अन्य व्यापारिक वस्तुओं में तेजी बनेगी।

(iii) कंकण सूर्यग्रहण (15 जनवरी, 2010 ई., माघी अमा, शुक्रवार)–

यह ग्रहण दिन के 11 बजे से लगभग $3\frac{1}{2}$ बजे दोपहर बाद तक भारत में सर्वत्र दिखाई देगा। केरल एवं तामिलनाडू के दक्षिण भाग में इस की कंकण आकृति दिखाई देगी। भारत के शेष भाग में तो यह खण्डग्रास के रूप में ही दिखाई देगा। ग्रहण चित्र (4) में भारत के विभिन्न स्थलों पर इस ग्रहण के परमग्रासमान (प्रतिशत)बतलाने वाली रेखाएं दी गई

ग्रहणमध्य	ग्रहणमध्य	ग्रहणमध्य	ग्रहणमध्य	ग्रहणमध्य	ग्रहणमध्य
13 घं. 38 मि. 53 से. (परमग्रास 50)	13 घं. 39 मि. 2[illegible] से. (परमग्रास 49)	13 घं. 39 मि. 06 से. (परमग्रास 53)	13 घं. 34 मि. 45 से. (परमग्रास 54)	13 घं. 49 मि. 41 से. (परमग्रास 69)	13 घं. 42 मि. 07 से. (परमग्रास 52)

हैं। इससे आप अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश, रेखांश द्वारा उस नगर में इस ग्रहण का मध्यकालीन परमग्राससमान जान सकते हैं। इसी चित्र में **'क–ख'** और **'च–छ'** रेखाओं के मध्य एक धुंधली पट्टी दर्शाई गई है। इस पट्टी में स्थित केरल एवं तामिलनाडू के दक्षिणी भाग तथा श्रीलंका के उत्तरी भाग अपिच–बंगाल की खाड़ी में इस ग्रहण की कंकण आकृति दिखाई पड़ेगी। **ग्रहण चित्र (7)** में कंकण ग्रहण वाली इस धुंधली पट्टी को स्पष्टता के लिए बड़ा बना कर दिखाया गया है। इस पट्टी के मध्य से गुजरने वाली 'A-B' रेखा पर स्थित नगरों में ग्रहण की कंकण आकृति अधिक देर तक रहेगी और वहां ग्रहणमध्य के समय चन्द्रबिम्ब का केन्द्र सूर्यबिम्ब के ठीक केन्द्र पर होगा। जिससे उस समय सूर्यबिम्ब का दृश्य चमकदार भाग चारों ओर से समान दीखेगा। **ग्रहण चित्र (5)** में इस ग्रहण की स्पर्शरेखाएं तथा **ग्रहण चित्र (6)** में मोक्षरेखाएं अंकित हैं। इन चित्रों से आप अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश, रेखांशों द्वारा उस नगर में इस ग्रहण के स्पर्श, मोक्ष का काल(भा.स्टैं.टा.) जान सकते हैं। पृष्ठ 25 पर भारत के प्रसिद्ध लगभग सवा दो सौ नगरों में इस ग्रहण का स्पर्श, मोक्षकाल तथा ग्रहण मध्यकालीन परमग्रास (प्रतिशत) दिया गया है। केरल एवं तामिलनाडू के दक्षिणी भाग से गुज़रने वाली कंकणमार्ग–पट्टी में स्थित प्रसिद्ध नगरों में कंकणग्रहण का प्रारम्भ–समाप्तिकाल भी पृष्ठ 27 पर दिया गया है। क्योंकि यह ग्रहण माघी अमापर्व पर घटित हो रहा है, इसलिए स्नान–दानादि के निमित्त इसका माहात्म्य कहीं अधिक होगा।

ग्रहणवेध (सूतक) – इस ग्रहण का सूतक 14 एवं 15 जनवरी, 2010 ई. की मध्यगत रात्रि में 11 बजे (भा.स्टैं.टा.) प्रारम्भ हो जाएगा।

ग्रहण का राशिफल– यह ग्रहण उ.षा. नक्षत्र एवं मकर राशि में घटित हो रहा है। अतः उ.षा. नक्षत्र एवं मकर राशि वाले व्यक्तियों के लिए यह ग्रहण विशेष कष्टप्रद रहेगा। विभिन्न राशि वाले व्यक्तियों के लिए इस ग्रहण का फल नीचे कॉलम में दिया जा रहा है–

जन्म / नाम राशि→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	सुख	अपमान	मृत्यु	स्त्री / पति कष्ट	सुख	चिन्ता	कष्ट	धनलाभ	हानि	दुर्घटना (घात)	हानि	लाभ

ग्रहण का अन्य फल– यह ग्रहण माघकृष्ण अमावस, शुक्रवार, उ.षा. नक्षत्र, मकर राशि में घटित हो रहा है। अतः जलीय जन्तुओं को विशेष कष्ट हो। राजनीतिज्ञों, वरिष्ठ व्यक्तियों एवं मन्त्रिमण्डल–पार्षदों के लिए यह ग्रहण विशेषरूप से कष्टप्रद रहेगा।

व्यापारिक वर्ग, औषध–निर्माताओं, विशेषज्ञों, सेनानियों एवं वृद्धजनों के लिए यह ग्रहण विशेष उलझनपूर्ण एवं कष्टप्रद है–

"हन्यान्मृगे तु झष–मन्त्रि–कुलानि नीचान्।
मन्त्रौषधीषु कुशलान् स्थविरायुधीयान्।।"

ग्रहण का व्यापार पर प्रभाव– सोना, चान्दी, सुपारी, रूई, कपास, तेल एवं गुड़,खाण्ड में तेजी से लाभ मिलेगा।

खग्रास सूर्यग्रहण के बारे में ज्ञातव्य कुछ बातें

(i) खग्रास चन्द्रग्रहण तो सामान्यतः दो–तीन वर्षों में एक बार घटित हो ही जाता है, लेकिन खग्रास सूर्यग्रहण किसी विशेष स्थल पर (नगर–ग्राम में) मध्यममानेन 375 वर्षों में एक बार ही घटित होता है। गणना बतलाती है कि– पृथ्वी के किसी नगर, ग्राम में यह भी सम्भव है– खग्रास सूर्यग्रहण कदाचित् 4500 वर्षों तक भी दिखाई न पड़े।

(ii) खग्रास सूर्यग्रहण की घटना के सातत्य (Frequency) की विरलता के कारण विश्व के अधिकतर लोग खग्रास सूर्यग्रहण जैसे अत्यन्त लुभावने खगोलीय दृश्य को उम्रभर नहीं देख पाते।

(iii) कभी–कभी एक ही सूर्यग्रहण पृथ्वी के कुछ भाग पर कंकण (Annular) और कुछ भाग पर खग्रास (Total) के रूप में भी दिखाई पड़ता है। ऐसे ग्रहण को "संकर सूर्यग्रहण" कहा जाता है। यह ग्रहण बहुत विरल है।

(iv) खग्रास सूर्यग्रहण का परमस्थिति– काल 7 मि.–30 से. है।

खग्रास सूर्यग्रहण – 22 जुलाई, 2009 ई.
खग्रासमार्ग (भा.स्टैं.टा.)
ग्रहणचित्र(3)
64°
68°
72°
76°
80°
84°
88°
92°
28°
24°
20°
दिल्ली
जयपुर
लखनऊ
जोधपुर
कराची
काठ.
दार्जिलिंग
दरभंगा
मुजफ्फरपुर
किशनगंज
इलाहबाद
बलिया
पटना
वारा.
आरा
गया
मिर्जापुर
पन्ना
विदिशा
सागर
कटनी
अहमदा.
भोपाल
दमोह
शहडोल
उज्जैन
जबलपुर
कोलकाता
राजको.
बड़ोदा
धार
देवास
होशंगाबाद
भावनगर
भरुच
खरगोन
खण्डवा
सूरत
नन्दुरबार
बल्साद
नागपुर
कट.
अकोला
पुणे
मुंबई
क
ख
छ
च
A
B
6h -25m -53s (3m -55s)
6h -26m -50s (4m -00s)
6h -24m -56s (3m -50s)
6h -22m -06s (3m -28s)
6h -23m -59s (3m -44s)
6h -23m -02s (3m -37s)
6h -21m -16s (3m -09s)
परिलेख-प्रियव्रत शर्मा
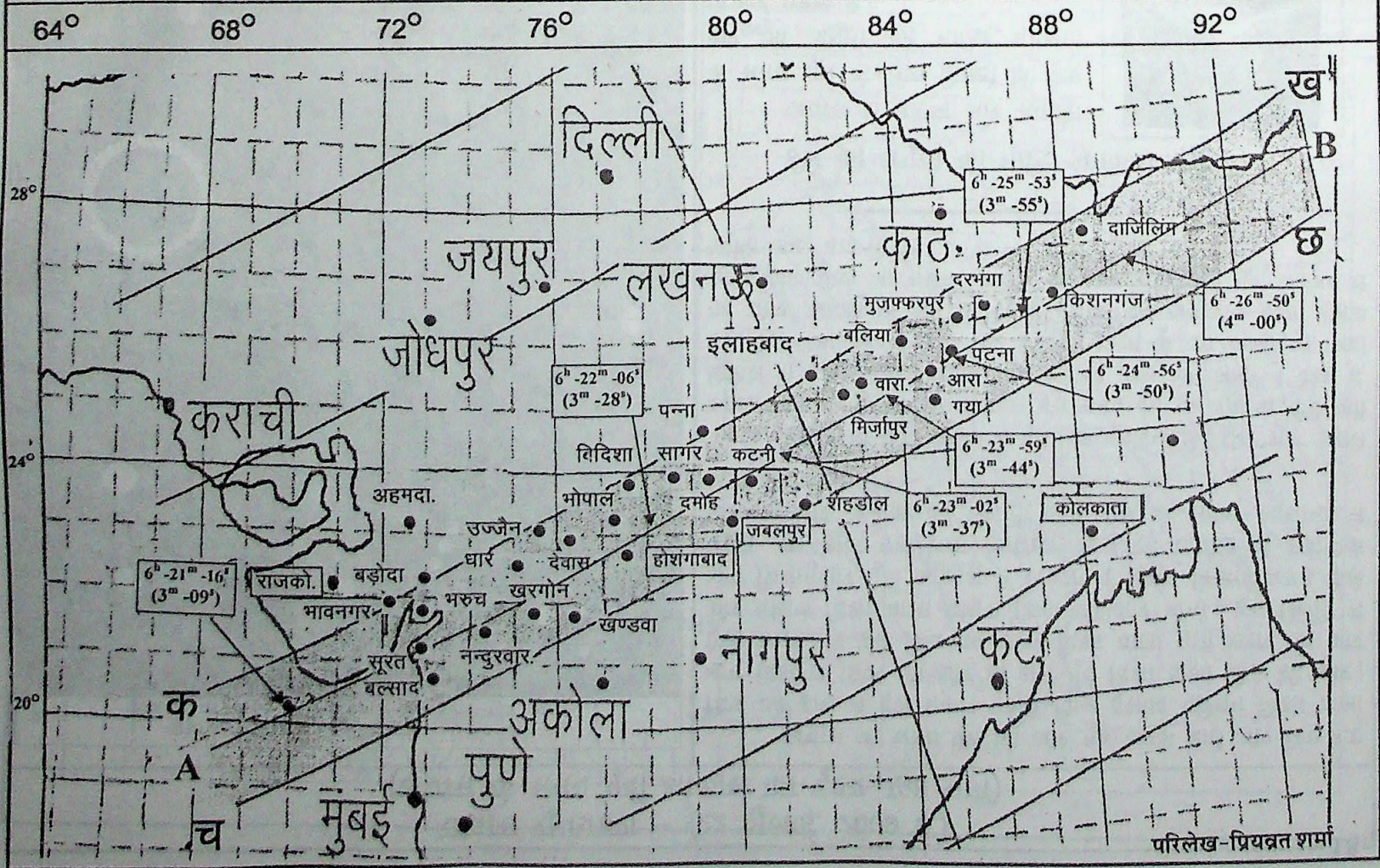
खग्रास सूर्यग्रहण – (22 जुलाई, 2009 ई.)
(खग्रास के समय पूर्वी आकाश का दृश्य–एक भाग)

खग्रास सूर्यग्रहण (22 जुलाई, 2009 ई.)
खग्रास के समय पूर्वी आकाश का दृश्य एक भाग

मंगल
शुक्र
मृगशिरा
लुब्धक
क्रान्तिवृत्त
सूर्य
नाड़ीवृत्त
बुध
परिलेख–
प्रियव्रत शर्मा
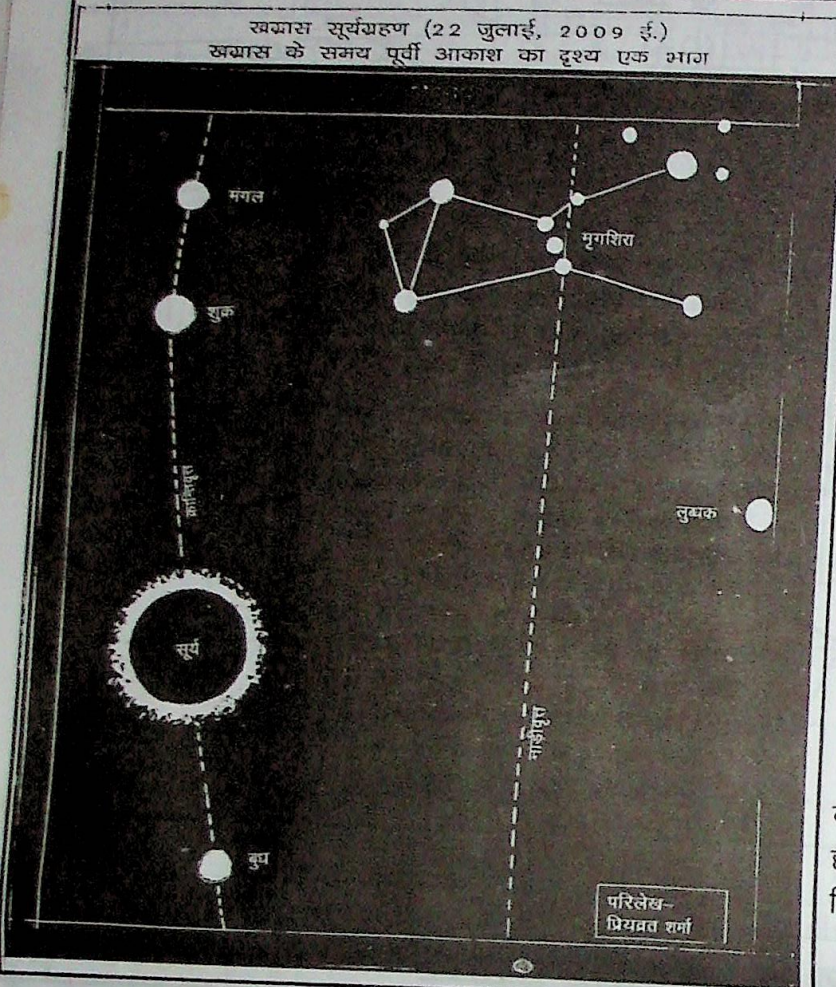
खग्रास के समय पूर्व की ओर मुंह करके बाईं ओर दिए गए चित्र को हाथ में इस प्रकार पकड़ें कि– इसका पश्चिम दिशा वाला भाग बिल्कुल ऊपर की ओर हो और पूर्व दिशा वाला नीचे की ओर। ऐसा करने पर इस चित्र का उत्तर दिशा वाला भाग उत्तर की ओर और दक्षिण दिशा वाला दक्षिण दिशा की ओर होगा। इस स्थिति में आप चित्रानुसार पूर्वी आकाश में खग्रास के समय दिखाई पड़ने वाले मंगल, बुध, शुक्र ग्रहों तथा मृगशिरा नक्षत्र एवं खगोल के सर्वाधिक उज्ज्वल तारे लुब्धक की स्थिति ग्रस्त सूर्य के सापेक्ष आसानी से जान लेंगे।

इस समय पूर्वी क्षितिज में पूर्णग्रस्त सूर्यबिम्ब के ऊपर शुक्र, इससे काफी ऊपर मंगल चमकता दीखेगा। इस समय बुध ग्रह सूर्य से नीचे पूर्वी क्षितिज से ऊपर दिखाई पड़ेगा। बुध ग्रह को बहुत कम लोगों ने देखा है, उसे देखने का यह सुन्दर अवसर है। पूर्वी भारत के उन स्थलों पर, जहां यह ग्रहण खग्रास के रूप में दिखाई पड़ेगा, यह खगोलीय–दृश्य अधिक सुविधापूर्वक देखा जा सकेगा, क्योंकि वहां उस समय सूर्य पूर्वी क्षितिज से पर्याप्त ऊपर उठा होगा।

हीरे की अंगूठी की भान्ति चमकता सूर्य

खग्रास के प्रारम्भ और समाप्ति के समय सूर्य दो–तीन मिनटों के लिए हीरे की अंगूठी की भान्ति चमकता दिखाई पड़ता है।
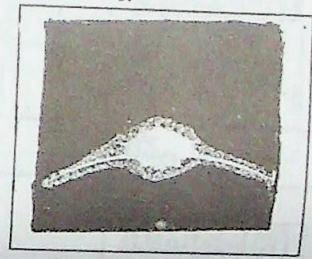
19
कंकण सूर्यग्रहण – 15 जनवरी, 2010 ई.
(कंकण ग्रहणमार्ग एवं परमग्रास–रेखाएं)
64° 68° 72° 76° 80° 84° 88° 92° 96°
36° 32° 28° 24° 20° 16° 12° 8°
ग्रहणचित्र(4)
इस्लामा
श्रीन
लाहोर
दिल्ली
जयपुर
जोधपुर
लखनऊ
इलाहाबाद
काठ
पटना
ढाका
कराची
अहमदा
जबल
कलकत्ता
उज्जैन
राजको
नागपुर
कट
अकोला
पुणे
मुंबई
सोला
विशाखा
हैदराबाद
पणजी
मंगलो
बंगलो
मद्रास
कोचिन
रामे
तिरुअ
उत्तर
कंकण सूर्यग्रहण – 15 जनवरी, 2010 ई.
स्पर्श–रेखाएं (भा. स्टैं. टा.)
64° 68° 72° 76° 80° 84° 88° 92° 96°
36° 32° 28° 24° 20° 16° 12° 8°
ग्रहणचित्र(5)
इस्लामा
श्रीन
लाहोर
दिल्ली
जयपुर
जोधपुर
लखनऊ
इलाहाबाद
काठ
पटना
ढाका
कराची
अहमदा
जबल
कलकत्ता
उज्जैन
राजको
नागपुर
कट
अकोला
पुणे
मुंबई
सोला
विशाखा
हैदराबाद
पणजी
मंगलो
बंगलो
मद्रास
कोचिन
रामे
तिरुअ
उत्तर
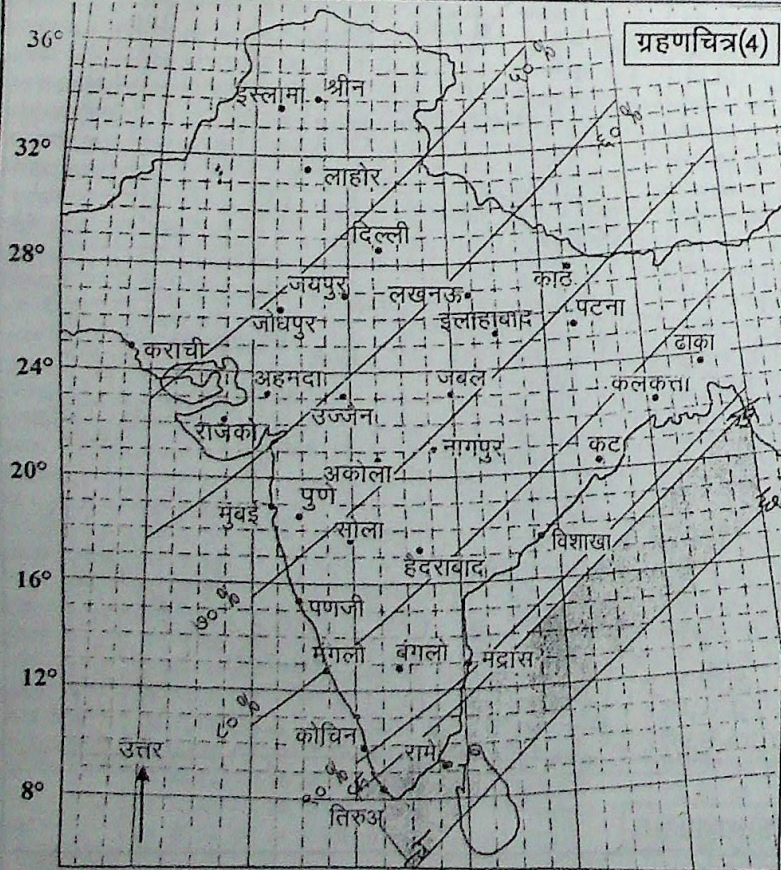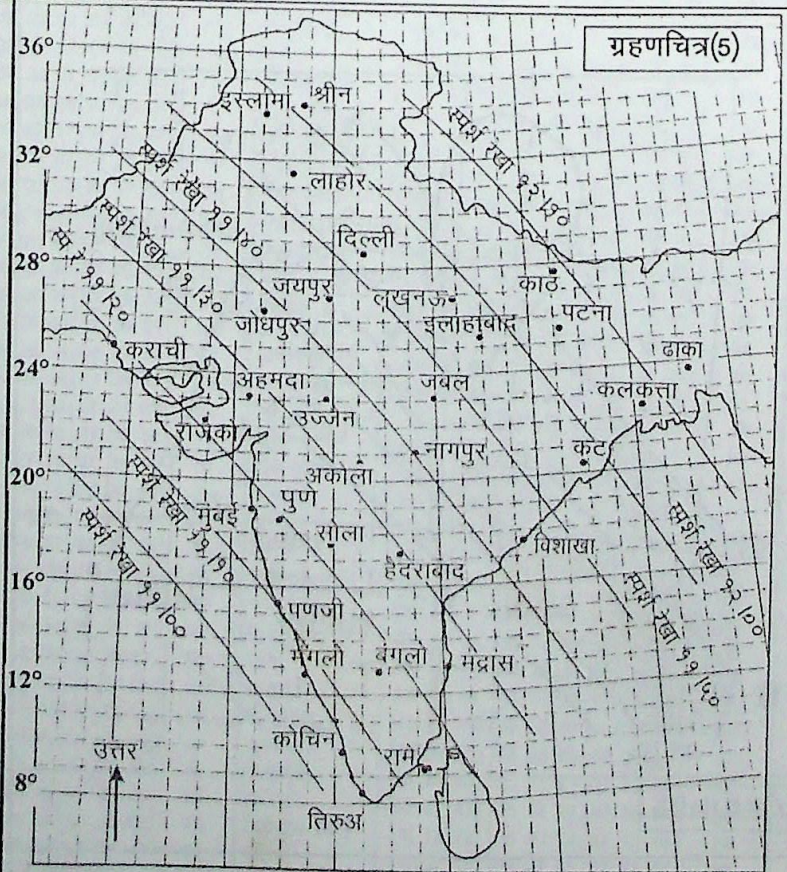
कंकण सूर्यग्रहण – 15 जनवरी, 2010 ई.

मोक्ष–रेखाए (भा. स्टैं. टा.)

ग्रहणचित्र(6)
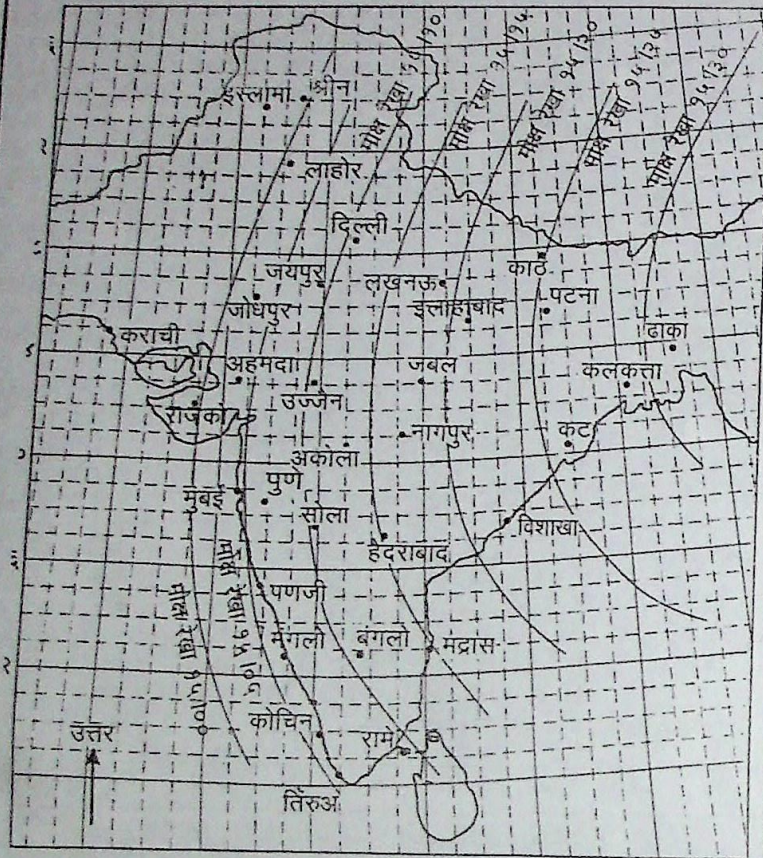
कंकण सूर्यग्रहण – 15 जनवरी, 2010 ई.

कंकण ग्रहणमार्ग

ग्रहणचित्र(7)

परिलेख-प्रियव्रत शर्मा

खग्रास सूर्यग्रहण (22 जुलाई, 2009 ई.)

[भारत के विभिन्न नगरों में ग्रहण का स्पर्श (प्रारम्भ), मध्य (परमग्रास) एवं मोक्ष (समाप्ति) काल (भा.स्टैं.टा.)]

स्थान	स्पर्श ⊗ घं. मि. से.	मध्य घं. मि. से.	मोक्ष घं. मि. से.	परमग्रास (प्रतिशत) *	स्थान	स्पर्श ⊗ घं. मि. से.	मध्य घं. मि. से.	मोक्ष घं. मि. से.	परमग्रास (प्रतिशत) *	स्थान	स्पर्श ⊗ घं. मि. से.	मध्य घं. मि. से.	मोक्ष घं. मि. से.	परमग्रास (प्रतिशत) *
अकोला	(05 51 59)	06 22 44	07 21 46	96	कटनी	(05 32 56)	06 24 32	07 25 20	103	चण्डीगढ़	(05 33 22)	06 27 56	07 25 15	79
अगरतला	05 29 33	06 28 51	07 35 33	92	कटुआ (का.)	(05 35 04)	06 28 52	07 24 43	73	चम्बा	05 37 34	06 29 03	07 25 06	73
अजमेर	(05 50 43)	06 25 17	07 22 50	90	कन्नौज	05 31 34	06 26 07	07 26 21	94	चित्तौड़गढ़	(05 53 41)	06 24 29	07 22 20	95
अनन्तनाग(का.)	05 39 19	06 29 51	07 24 42	69	कपूरथला	(05 37 46)	06 28 15	07 24 27	76	चूरु	(05 45 46)	06 26 20	07 23 32	85
अनूपशहर(उ.प्र.)	(05 32 42)	06 26 36	07 25 34	88	करनाल	(05 34 52)	06 27 17	07 25 07	82	चीरापूंजी	05 30 07	06 29 50	07 36 56	96
अमरावती (म.)	(05 48 30)	06 22 54	07 22 18	96	कांगड़ा	05 37 05	06 28 47	07 25 08	75	चेन्नई	(05 51 43)	06 21 05	07 18 25	69
अमरोहा (उ.प्र.)	05 33 20	06 26 58	07 25 54	86	कांचीपुरम्	(05 54 13)	06 20 57	07 17 58	69	छतरपुर	(05 33 57)	06 24 55	07 25 17	100
अमृतसर	(05 39 16)	06 28 23	07 24 11	75	काठियावाड़	(06 13 49)	06 23 21	07 19 43	99	छपरा	05 30 03	06 26 39	07 29 40	102
अमेठी (उ.प्र.)	05 30 36	06 26 00	07 27 25	98	कानपुर	05 31 05	06 25 52	07 26 27	96	जब्बलपुर	(05 35 46)	06 24 09	07 24 45	101
अम्बाला	(05 34 10)	06 27 41	07 25 10	80	कारगिल	05 39 53	06 30 29	07 25 23	67	जम्मू	(05 36 52)	06 29 09	07 24 20	71
अयोध्या	05 30 56	06 26 28	07 28 00	97	कालका	05 35 33	06 28 00	07 25 22	79	जयपुर	(05 45 09)	06 25 34	07 23 38	90
अर्की (हि.प्र.)	05 35 53	06 28 13	07 25 24	78	काशी	05 29 59	06 25 53	07 28 01	102	जामनगर	(06 16 32)	06 23 38	07 19 34	97
अलवर	(05 40 48)	06 25 59	07 24 17	88	किशनगढ़(रा.)	(06 04 15)	06 26 14	07 21 14	81	जालन्धर	(05 37 19)	06 28 13	07 24 32	76
अलीगढ़	(05 34 16)	06 26 19	07 25 20	89	कुराली (पं.)	(05 34 17)	06 27 58	07 25 05	79	जालौर	(06 01 10)	06 24 45	07 21 28	91
अल्मोड़ा	05 33 37	06 27 35	07 26 56	85	कुरुक्षेत्र	(05 35 10)	06 27 27	07 25 02	81	जोरहाट	05 31 15	06 32 13	07 40 44	99
अहमदाबाद	(06 05 25)	06 23 40	07 20 42	98	कुल्लू	05 36 40	06 28 46	07 25 39	76	जींद	(05 38 16)	06 27 00	07 24 37	83
आगरा	(05 35 47)	06 25 54	07 25 05	91	कैथल	(05 37 04)	06 27 18	07 24 45	82	जैसलमेर	(06 04 49)	06 25 40	07 21 10	84
आजमगढ़	05 30 22	06 26 20	07 28 30	100	कोटखाई	05 35 39	06 28 16	07 25 49	79	जोधपुर	(05 57 33)	06 25 13	07 21 58	89
आबू	(06 01 56)	06 24 24	07 21 19	93	कोटा	(05 48 31)	06 24 39	07 23 03	95	झरिया	05 29 07	06 26 24	07 30 27	96
आरा (बि.)	05 29 56	06 26 30	07 29 28	103	कोलकाता	05 28 51	06 26 41	07 31 35	91	झांसी	(05 36 58)	06 25 03	07 24 49	97
इटारसी	(05 45 42)	06 23 35	07 23 05	101	कोहिमा	05 30 47	06 31 38	07 40 08	96	झालरापाटन	(05 48 22)	06 24 21	07 23 00	97
इटावा	(05 32 44)	06 25 49	07 25 35	93	खन्ना	(05 36 02)	06 27 51	07 24 49	79	झालावाड़	(05 56 27)	06 24 20	07 21 57	95
इन्दौर	(05 53 09)	06 23 30	07 22 05	102	खुर्जा	(05 34 38)	06 26 30	07 25 15	88	झुंझुनु	(05 44 36)	06 26 13	07 23 43	86
इम्फाल	05 30 25	06 31 05	07 39 27	93	गंगटोक	05 30 49	06 29 09	07 34 17	101	टोंक	(05 46 42)	06 25 11	07 23 22	92
उज्जैन	(05 52 52)	06 23 41	07 22 11	101	गया	05 29 33	06 26 16	07 29 31	101	डिब्रूगढ़	05 31 48	06 33 08	07 42 03	101
उदयपुर (रा.)	(05 58 17)	06 24 20	07 21 43	94	गाजियाबाद	(05 35 15)	06 26 42	07 25 08	86	डीडवाना	(05 49 24)	06 25 48	07 23 02	87
उन्नाव	05 31 08	06 25 57	07 26 34	96	गुडगांव	(05 37 18)	06 26 32	07 24 49	86	डूंगरपुर	(05 59 37)	06 23 59	07 21 28	97
ऊधमपुर (का.)	05 38 28	06 29 17	07 24 30	71	गुरदासपुर	(05 36 13)	06 28 41	07 24 35	74	तिरुपति	(05 54 33)	06 21 01	07 18 27	72
ऊना	(05 33 54)	06 28 25	07 25 02	76	गुआहाटी	05 30 30	06 30 16	07 37 20	99	थानेसर	(05 34 43)	06 27 27	07 25 07	82
एटा	(05 32 38)	06 26 13	07 25 37	91	गोरखपुर	05 30 44	06 26 46	07 28 57	98	त्रिवेन्द्रम् (के.)	(06 12 22)	06 20 14	07 13 14	58
कटक	05 28 22	06 24 43	07 27 50	86	ग्वालियर	(05 37 16)	06 25 24	07 24 49	94	दतिया	(05 37 15)	06 25 08	07 24 47	96

⊗ जिस नगर में सूर्य ग्रस्त ही उदय होगा, उस नगर के 'स्पर्श' वाले इस कॉलम में उस नगर का सूर्योदयकाल कोष्ठक (Bracket) में दिया गया है। ध्यान रहे– ग्रस्तोदय वाले नगर में सूर्योदयकाल ही ग्रहण का स्पर्श (प्रारम्भ) माना जाता है।   * सूर्यबिम्ब= 100

खग्रास सूर्यग्रहण (22 जुलाई, 2009 ई.)

[भारत के विभिन्न नगरों में ग्रहण का स्पर्श (प्रारम्भ), मध्य (परमग्रास) एवं मोक्ष (समाप्ति) काल (भा.स्टैं.टा.)]

स्थान	स्पर्श ⊗ घं. मि. से.	मध्य घं. मि. से.	मोक्ष घं. मि. से.	परमग्रास (प्रतिशत) *	स्थान	स्पर्श ⊗ घं. मि. से.	मध्य घं. मि. से.	मोक्ष घं. मि. से.	परमग्रास (प्रतिशत) *	स्थान	स्पर्श ⊗ घं. मि. से.	मध्य घं. मि. से.	मोक्ष घं. मि. से.	परमग्रास (प्रतिशत) *
दरभंगा	05 30 10	06 27 19	07 31 01	102	पालमपुर	05 37 02	06 28 49	07 25 17	75	भागलपुर	05 29 41	06 27 16	07 31 35	101
दार्जिलिंग	05 30 38	06 28 49	07 33 46	102	पाली	(05 57 11)	06 24 56	07 21 58	90	भिवानी	(05 39 43)	06 26 40	07 24 25	85
दिल्ली	(05 36 23)	06 26 39	07 24 57	86	पिलानी	(05 43 32)	06 26 23	07 23 52	85	भीनमाल	(06 03 02)	06 24 35	07 21 14	92
देवबन्द	(05 32 08)	06 27 21	07 25 34	83	पुंछ	(05 37 24)	06 29 54	07 24 00	67	भुज (गु.)	(06 16 35)	06 24 02	07 19 42	94
देवरिया	05 30 34	06 26 45	07 29 10	99	पुणे	(06 08 23)	06 21 53	07 19 15	93	भुवनेश्वर	05 28 21	06 24 37	07 27 40	86
देवास (म.प्र.)	(05 51 38)	06 23 38	07 22 19	102	पुरनिया	05 29 58	06 27 48	07 32 24	102	भोपाल	(05 45 59)	06 23 51	07 23 09	102
देवप्रयाग	05 34 23	06 27 45	07 26 18	83	पुरी	05 28 19	06 24 28	07 27 21	84	मण्डी (हि.प्र.)	05 36 27	06 28 35	07 25 30	76
देहरादून	05 34 43	06 27 47	07 25 58	82	पोरबन्दर	(06 19 14)	06 23 20	07 19 12	99	मथुरा	(05 36 48)	06 26 01	07 24 55	90
द्वारिका	(06 21 32)	06 23 42	07 19 09	96	पोर्टब्लेअर	05 33 46	06 26 45	07 26 17	51	मदुरै	(06 05 04)	06 20 25	07 14 54	61
धनबाद	05 29 06	06 26 21	07 30 22	96	प्रतापगढ़ (उ.प्र.)	05 30 27	06 25 55	07 27 26	99	मन्दसोर	(05 53 47)	06 24 05	07 22 13	97
धर्मशाला	05 37 15	06 28 55	07 25 13	74	प्रयाग	05 30 13	06 25 40	07 27 11	100	मसूरी	05 34 49	06 27 53	07 26 01	81
धूरी	(05 38 08)	06 27 37	07 24 32	79	फरीदकोट	(05 42 18)	06 27 46	07 23 52	77	महेन्द्रगढ़	(05 40 58)	06 26 22	07 24 15	86
नरैना	(05 52 03)	06 25 29	07 22 40	88	फरीदाबाद	(05 36 10)	06 26 32	07 25 00	87	मारवाड़ जं.	(05 56 16)	06 24 54	07 22 05	91
नवलगढ़	(05 45 34)	06 26 04	07 23 34	86	फाज़िल्का	(05 45 22)	06 27 36	07 23 27	77	मालेरकोटला	(05 37 21)	06 27 43	07 24 38	79
नागपुर	(05 42 43)	06 23 09	07 23 12	95	फिरोज़पुर	(05 41 46)	06 27 55	07 23 55	76	मिर्ज़ापुर	05 29 58	06 25 41	07 27 34	102
नागौर	(05 53 26)	06 25 41	07 22 30	87	फुलेरा	(05 47 37)	06 25 32	07 23 17	89	मुंगेर	05 29 45	06 27 08	07 31 11	101
नाथद्वारा	(05 57 05)	06 24 30	07 21 54	93	बंगलोर	(06 02 29)	06 20 41	07 17 12	71	मुज़फ्फर नगर	(05 32 33)	06 27 13	07 25 31	84
नाभा	(05 36 54)	06 27 40	07 24 43	79	बदायूं	05 32 29	06 26 33	07 26 06	90	मुम्बई	(06 11 28)	06 22 05	07 19 08	96
नारनौल	(05 41 28)	06 26 13	07 24 11	87	बलिया	05 30 04	06 26 27	07 29 11	102	मुरादाबाद	05 33 13	06 26 59	07 26 06	87
नालागढ़	(05 33 21)	06 28 07	07 25 12	78	बाड़मेर	(06 05 13)	06 25 02	07 21 04	88	मेरठ	(05 33 24)	06 26 56	07 25 25	85
नाहन	05 35 10	06 27 51	07 25 32	80	बांसवाड़ा	(05 57 29)	06 23 49	07 21 40	98	मैसूर	(06 07 28)	06 20 31	07 16 22	70
नासिक	(06 05 57)	06 22 25	07 19 58	98	बिजनौर	05 33 51	06 27 13	07 25 49	85	मोगा	(05 40 01)	06 27 52	07 24 11	77
नीमच	(05 53 52)	06 24 16	07 22 15	96	बिलासपुर(म.प्र.)	(05 28 47)	06 24 09	07 25 47	95	रतनगढ़	(05 47 42)	06 26 11	07 23 16	85
नैनीताल	05 33 27	06 27 24	07 26 45	86	बिलासपुर(हि.प्र.)	05 36 06	06 28 18	07 25 21	77	रतलाम	(05 54 56)	06 23 45	07 21 57	100
पंचकूला	(05 33 01)	06 27 57	07 25 18	79	बीकानेर	(05 52 58)	06 26 09	07 22 34	84	राजकोट	(06 13 56	06 23 29	07 19 46	98
पंजिम	(06 13 41)	06 21 04	07 17 36	84	बीजापुर	(06 03 35)	06 21 24	07 19 05	86	रांची	05 28 58	06 25 41	07 29 03	96
पटना	05 29 55	06 26 45	07 30 04	103	बुलन्दशहर	(05 34 04)	06 26 35	07 25 21	87	रामपुर बुशहर	05 35 56	06 28 28	07 25 54	78
पटियाला	(05 36 00)	06 27 38	07 24 52	80	बून्दी	(05 48 43)	06 24 47	07 23 03	94	रामेश्वरम्	(06 01 20)	06 20 33	07 14 38	58
पठानकोट	05 37 32	06 28 52	07 24 47	73	वृन्दावन	(05 36 26)	06 26 05	07 24 59	90	रायपुर (म.प्र.)	(05 32 24)	06 23 41	07 24 56	93
पाण्डिचेरी	(05 55 07)	06 20 51	07 17 16	65	बठिण्डा	(05 42 00)	06 27 28	07 23 58	79	रिवाड़ी	(05 39 24)	06 26 21	07 24 29	87
पानीपत	(05 35 27)	06 27 07	07 25 03	83	भरतपुर	(05 37 57)	06 25 53	07 24 44	90	रीवां	(05 27 56)	06 25 03	07 26 19	103

⊗ जिस नगर में सूर्य ग्रस्त ही उदय होगा, उस नगर के 'स्पर्श' वाले इस कॉलम में उस नगर का सूर्योदयकाल कोष्ठक (Bracket) में दिया गया है। ध्यान रहे— ग्रस्तोदय वाले नगर में सूर्योदयकाल ही ग्रहण का स्पर्श [illegible]

(05 37 57) 06 25 53 07 24 44 90 रीवां (05 27 56) 06 25 03 07 26 19 103

⊗ जिस नगर में सूर्य ग्रस्त ही उदय होगा, उस नगर के 'स्पर्श' वाले इस कॉलम में उस नगर का सूर्योदयकाल कोष्ठक (Bracket) में दिया गया है। ध्यान रहे--
ग्रस्तोदय वाले नगर में सूर्योदयकाल ही ग्रहण का स्पर्श (प्रारम्भ) माना जाता है। * सूर्यबिम्ब= 100

खग्रास सूर्यग्रहण (22 जुलाई, 2009 ई.)

[भारत के विभिन्न नगरों में ग्रहण का स्पर्श (प्रारम्भ), मध्य (परमग्रास) एवं मोक्ष (समाप्ति) काल (भा.स्टैं.टा.)]

स्थान	स्पर्श ⊗ घं. मि. से.	मध्य घं. मि. से.	मोक्ष घं. मि. से.	परमग्रास (प्रतिशत) *	स्थान	स्पर्श ⊗ घं. मि. से.	मध्य घं. मि. से.	मोक्ष घं. मि. से.	परमग्रास (प्रतिशत) *	स्थान	स्पर्श ⊗ घं. मि. से.	मध्य घं. मि. से.	मोक्ष घं. मि. से.	परमग्रास (प्रतिशत) *
रोपड़	(05 34 22)	06 28 02	07 25 03	78	संगरूर	(05 38 25)	06 27 31	07 24 30	80	हमीरपुर (उ.प्र.)	(05 29 39)	06 25 34	07 26 07	97
रोहतक	(05 38 07)	06 26 46	07 24 40	84	सरहिन्द	(05 35 22)	06 27 50	07 24 56	79	हमीरपुर (हि.प्र.)	05 36 35	06 28 32	07 25 12	76
लखनऊ	05 31 15	06 26 14	07 27 03	95	सहारनपुर	(05 32 15)	06 27 30	07 25 32	82	हरिद्वार	05 34 21	06 27 35	07 25 59	83
लुधियाना	(05 36 50)	06 27 59	07 24 40	78	सागर	(05 39 28)	06 24 16	07 24 14	102	हाथरस	(05 34 52)	06 26 09	07 25 14	90
वड़ोदरा (गु.)	(06 04 12)	06 23 19	07 20 42	101	सांगानेर	(05 45 32)	06 25 31	07 23 34	90	हापुड़	(05 33 41)	06 26 46	07 25 23	86
विजयवाड़ा	(05 44 49)	06 21 52	07 21 14	79	सिरसा	(05 43 05)	06 27 04	07 23 52	81	हांसी	(05 40 14)	06 26 51	07 24 19	83
विशाखापत्तनम्	(05 31 58)	06 22 53	07 23 51	80	सीकर	(05 46 28)	06 25 56	07 23 27	87	हिसार	(05 41 02)	06 26 52	07 24 12	83
शाहदरा	(05 35 47)	06 26 41	07 25 03	86	सूरत	(06 07 46)	06 22 53	07 20 06	102	हैदराबाद	(05 51 53)	06 21 45	07 20 38	84
शिमला	05 35 45	06 28 12	07 25 33	78	सूरतगढ़	(05 48 00)	06 26 55	07 23 11	80	होशंगाबाद	(05 45 25)	06 23 39	07 23 09	102
शिलांग	05 30 15	06 30 03	07 37 13	97	सोलन	05 35 35	06 28 04	07 25 28	79	होशियारपुर	(05 35 19)	06 28 23	07 24 49	76
श्रीनगर (का.)	05 39 58	06 30 07	07 24 28	67										

⊗ जिस नगर में सूर्य ग्रस्त ही उदय होगा, उस नगर के 'स्पर्श' वाले इस कॉलम में उस नगर का सूर्योदयकाल कोष्ठक (Bracket) में दिया गया है। ध्यान रहे--
ग्रस्तोदय वाले नगर में सूर्योदयकाल ही ग्रहण का स्पर्श (प्रारम्भ) माना जाता है। * सूर्यबिम्ब= 100

खग्रास सूर्यग्रहण (22 जुलाई, 2009 ई.)

[भारत के कुछेक प्रसिद्ध नगरों में खग्रास का प्रारम्भ--समाप्ति (भा.स्टैं.टा.) एवं खग्रास-अवधि]

नगर	खग्रास आरम्भ घं. मि. से.	खग्रास समाप्त घं. मि. से.	खग्रास अवधि मि. से.	नगर	खग्रास आरम्भ घं. मि. से.	खग्रास समाप्त घं. मि. से.	खग्रास अवधि मि. से.	नगर	खग्रास आरम्भ घं. मि. से.	खग्रास समाप्त घं. मि. से.	खग्रास अवधि मि. से.
आरा (बि.)	6 24 38	6 28 22	3 44	डिब्रूगढ़	6 31 32	6 34 45	3 13	भोपाल	6 22 10	6 25 32	3 22
इटारसी	6 22 07	6 25 04	2 57	ड्यू	6 21 11	6 24 20	3 09	माण्डू (म.प्र.)	6 21 46	6 25 07	3 21
इन्दौर	6 21 52	6 25 10	3 18	दरभंगा	6 25 31	6 29 08	3 37	मिर्ज़ापुर	6 23 59	6 27 23	3 24
उज्जैन	6 22 27	6 24 55	2 28	दार्जिलिंग	6 27 08	6 30 31	3 23	मुंगेर	6 25 31	6 28 45	3 14
कटनी	6 22 47	6 26 18	3 31	देवास	6 22 04	6 25 12	3 08	रीवां	6 23 16	6 26 51	3 35
काशी	6 24 12	6 27 35	3 23	पटना	6 24 51	6 28 40	3 49	सहरसा (बि.)	6 25 24	6 29 16	3 52
गंगटोक	6 27 44	6 30 35	2 51	पूरनिया	6 26 01	6 29 35	3 34	सागर	6 22 36	6 25 56	3 20
गया	6 24 54	6 27 39	2 55	प्रयाग	6 24 49	6 26 32	1 43	सिलिगुड़ी	6 26 30	6 30 18	3 48
छपरा	6 24 52	6 28 26	3 34	बरवानी (म.प्र.)	6 21 48	6 25 09	3 21	सूरत	6 21 18	6 24 29	3 11
जब्बलपुर	6 22 56	6 25 23	2 27	बलिया	6 24 46	6 28 09	3 23	होशंगाबाद	6 22 04	6 25 16	3 12
जलपाईगुड़ी (बं.)	6 26 50	6 30 51	4 01	भागलपुर	6 26 12	6 28 20	2 08	वडोदरा	6 22 11	6 24 28	2 17

खग्रास सूर्यग्रहण (22 जुलाई, 2009 ई.) (भा.स्टैं.टा.)

[भारत के विभिन्न नगरों में ग्रहण का स्पर्श (प्रारम्भ) काल जानने के लिए अक्षांश—रेखांश कोष्ठक]

22 जुलाई, 2009 ई. वाला यह सूर्यग्रहण भारत के कुछ भाग में ग्रस्तोदय होगा। इसकी मोक्षरेखाओं वाला ग्रहण चित्र नं. (2) पृष्ठ 16 पर दिया गया है। इसकी स्पर्शरेखाओं वाला चित्र अंकित करना सम्भव नहीं हो सका, क्योंकि चित्र में ये रेखाएं आपस में बहुत ज्यादा सटी आ रही हैं। इसका स्पर्शकाल जानने के लिए यह कोष्ठक दिया जा रहा है। अपने अक्षांश—रेखांश के अनुसार इस कोष्ठक से अपने स्थल का इस ग्रहण का सूक्ष्मतम स्पर्शकाल (भा. स्टैं. टा.) आप आसानी से जान सकते हैं।

जिन अक्षांश—रेखांशों का स्पर्शकाल इस कोष्ठक में नहीं है, समझना चाहिए कि– वहां ग्रहण ग्रस्तोदय होगा।

अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)													
	72	74	76	78	80	82	84	86	88	90	92	94	96	98
	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.
8	— — —	— — —	— — —	— — —	— — —	— — —	— — —	— — —	5 34 57	5 35 59	5 37 14	5 38 41	5 40 21	5 42 15
10	— — —	— — —	— — —	— — —	— — —	— — —	— — —	— — —	5 32 49	5 33 41	5 34 44	5 35 59	5 37 27	5 39 07
12	— — —	— — —	— — —	— — —	— — —	— — —	— — —	— — —	5 31 09	5 31 52	5 32 46	5 33 50	5 35 07	5 36 35
14	— — —	— — —	— — —	— — —	— — —	— — —	— — —	— — —	5 29 54	5 30 29	5 31 15	5 32 11	5 33 18	5 34 37
16	— — —	— — —	— — —	— — —	— — —	— — —	— — —	5 28 44	5 29 03	5 29 32	5 30 10	5 30 58	5 31 58	5 33 08
18	— — —	— — —	— — —	— — —	— — —	— — —	— — —	5 28 21	5 28 35	5 28 57	5 29 29	5 30 11	5 31 03	5 32 06
20	— — —	— — —	— — —	— — —	— — —	— — —	— — —	5 28 19	5 28 27	5 28 44	5 29 11	5 29 47	5 30 33	5 31 29
22	— — —	— — —	— — —	— — —	— — —	— — —	5 28 40	5 28 36	5 28 40	5 28 52	5 29 14	5 29 45	5 30 25	5 31 16
24	— — —	— — —	— — —	— — —	— — —	— — —	5 29 19	5 29 12	5 29 12	5 29 21	5 29 38	5 30 04	5 30 40	5 31 25
26	— — —	— — —	— — —	— — —	— — —	5 30 36	5 30 17	5 30 06	5 30 03	5 30 08	5 30 22	5 30 44	5 31 16	5 31 57
28	— — —	— — —	— — —	— — —	5 32 22	5 31 54	5 31 33	5 31 19	5 31 13	5 31 15	5 31 26	5 31 45	5 32 12	5 32 49
30	— — —	— — —	— — —	— — —	5 34 00	5 33 30	5 33 06	5 32 50	5 32 42	5 32 41	5 32 49	5 33 05	5 33 29	5 34 03
32	— — —	— — —	— — —	5 36 34	5 35 55	5 35 23	5 34 58	5 34 39	5 34 29	5 34 26	5 34 31	5 34 44	5 35 06	5 35 36
34	— — —	— — —	5 39 35	5 38 48	5 38 08	5 37 34	5 37 07	5 36 47	5 36 34	5 36 29	5 36 32	5 36 43	5 37 02	5 37 29
36	— — —	5 43 02	5 42 08	5 41 19	5 40 37	5 40 02	5 39 33	5 39 12	5 38 58	5 38 51	5 38 52	5 39 00	5 39 17	5 39 43

36	---	5 43 02	5 42 08	5 41 19	5 40 37	5 40 02	5 39 33	5 39 12	5 38 58	5 38 51	5 38 52	5 39 00	5 39 17	5 39 43

कंकण सूर्यग्रहण (15 जनवरी, 2010 ई.)

[भारत के विभिन्न नगरों में ग्रहण का स्पर्श (प्रारम्भ), मध्य (परमग्रास) एवं मोक्ष(समाप्ति)काल (भा.स्टैं.टा.)]

स्थान	स्पर्श घं. मि. से.	मध्य घं. मि. से.	मोक्ष घं. मि. से.	परमग्रास (प्रतिशत) *
अकोला	11 33 10	13 32 08	15 13 26	68
अगरतला	12 16 21	14 02 59	15 31 39	86
अजमेर	11 41 51	13 31 22	15 06 56	53
अनन्तनाग(का.)	12 01 36	13 36 45	15 01 31	41
अनूपशहर(उ.प्र.)	11 54 51	13 41 25	15 13 19	55
अमरावती (म.)	11 35 53	13 34 21	15 14 52	69
अमरोहा (उ.प्र.)	11 56 41	13 42 17	15 13 25	55
अमृतसर	11 55 42	13 35 05	15 03 06	44
अमेठी (उ.प्र.)	11 58 04	13 47 50	15 20 43	65
अम्बाला	11 56 35	13 39 12	15 08 50	49
अयोध्या	12 00 23	13 49 02	15 21 04	65
अर्की (हि.प्र.)	11 58 42	13 39 47	15 08 17	48
अलवर	11 49 16	13 37 06	15 10 30	54
अलीगढ़	11 53 25	13 40 47	15 13 17	56
अल्मोड़ा	12 00 46	13 45 08	15 15 03	55
अहमदाबाद	11 27 19	13 22 24	15 03 33	56
आगरा	11 51 39	13 40 18	15 13 42	57
आजमगढ़	12 01 10	13 50 32	15 22 45	68
आबू	11 32 10	13 24 24	15 03 12	54
आरा (बि.)	12 03 21	13 52 49	15 24 45	71
इटारसी	11 39 50	13 35 54	15 14 41	65
इटावा	11 52 57	13 42 13	15 15 42	59
इन्दौर	11 35 02	13 31 06	15 10 54	62
इम्फाल	12 23 38	14 07 10	15 33 30	88
उज्जैन	11 35 48	13 31 12	15 10 33	61
उदयपुर (रा.)	11 34 22	13 27 02	15 05 33	55
उन्नाव	11 55 53	13 45 19	15 18 23	62
ऊधमपुर (का.)	11 59 20	13 36 06	15 02 06	43
ऊना	11 58 16	13 38 23	15 06 25	47
एटा	11 53 58	13 41 53	15 14 34	57
कटक	11 57 13	13 51 34	15 26 14	84

स्थान	स्पर्श घं. मि. से.	मध्य घं. मि. से.	मोक्ष घं. मि. से.	परमग्रास (प्रतिशत) *
कटनी	11 49 32	13 43 08	15 19 04	67
कठुआ (का.)	11 58 43	13 37 01	15 03 59	44
कन्नौज	11 55 44	13 44 27	15 17 14	60
कपूरथला	11 56 07	13 36 13	15 04 32	46
करनाल	11 55 22	13 39 17	15 09 45	51
कांगड़ा	11 59 36	13 38 36	15 05 50	46
कांचीपुरम्	11 23 16	13 28 57	15 14 15	89
काठियावाड़	11 20 01	13 16 12	14 59 40	56
कानपुर	11 55 24	13 45 01	15 18 16	62
कारगिल	12 05 10	13 39 08	15 02 45	41
कालका	11 58 03	13 39 46	15 08 42	49
काशी	11 59 11	13 49 41	15 22 42	69
किशनगढ़(रा.)	11 36 07	13 20 57	14 55 21	45
कुराली (पं.)	11 57 09	13 38 45	15 07 45	48
कुरुक्षेत्र	11 55 36	13 38 53	15 09 00	50
कुल्लू	12 00 53	13 40 24	15 07 45	47
कैथल	11 54 20	13 37 54	15 08 22	50
कोटखाई	11 59 56	13 41 13	15 09 39	49
कोटा	11 41 22	13 33 24	15 10 11	57
कोलकाता	12 07 24	13 57 39	15 29 07	83
कोहिमा	12 25 04	14 07 46	15 33 36	86
खन्ना	11 56 05	13 37 50	15 07 04	48
खुर्जा	11 53 39	13 40 22	15 12 31	55
गंगटोक	12 15 37	14 00 40	15 28 57	74
गया	12 02 59	13 53 12	15 25 29	73
गाजियाबाद	11 53 50	13 39 45	15 11 29	53
गुड़गांव	11 52 25	13 38 41	15 10 49	53
गुरदासपुर	11 57 48	13 36 34	15 03 55	44
गुआहाटी	12 20 36	14 04 47	15 31 56	81
गोरखपुर	12 02 57	13 51 17	15 22 48	67
ग्वालियर	11 49 37	13 39 52	15 14 21	59

स्थान	स्पर्श घं. मि. से.	मध्य घं. मि. से.	मोक्ष घं. मि. से.	परमग्रास (प्रतिशत) *
चण्डीगढ़	11 57 30	13 39 23	15 08 28	49
चम्बा	12 00 18	13 38 26	15 05 05	45
चित्तौड़गढ़	11 37 45	13 30 05	15 07 44	56
चूरू	11 47 28	13 33 32	15 06 23	50
चीरापूंजी	12 19 28	14 04 26	15 32 02	83
चेन्नई	11 25 30	13 30 38	15 15 12	89
छतरपुर	11 50 04	13 42 17	15 17 33	64
छपरा	12 04 02	13 53 10	15 24 51	71
जबलपुर	11 47 00	13 41 41	15 18 31	68
जम्मू	11 58 28	13 35 30	15 01 47	43
जयपुर	11 45 51	13 34 45	15 09 16	54
जामनगर	11 18 56	13 13 53	14 57 08	54
जालन्धर	11 56 16	13 36 33	15 04 57	46
जालोर	11 33 44	13 24 39	15 02 31	52
जोरहाट	12 26 29	14 08 16	15 33 34	84
जींद	11 53 02	13 37 32	15 08 40	51
जैसलमेर	11 34 06	13 21 07	14 57 04	47
जोधपुर	11 37 29	13 26 46	15 03 05	51
झरिया	12 04 57	13 55 20	15 27 20	78
झांसी	11 48 51	13 40 21	15 15 32	61
झालरापाटन	11 40 35	13 33 43	15 11 09	59
झालावाड़	11 35 33	13 28 18	15 06 36	56
झुंझुनु	11 47 49	13 34 25	15 07 28	51
टोंक	11 43 54	13 34 07	15 09 37	56
डिब्रूगढ़	12 28 47	14 09 24	15 33 55	83
डीडवाना	11 44 02	13 31 44	15 06 00	51
डूंगरपुर	11 32 22	13 26 22	15 05 54	57
तिरुपति	11 23 41	13 29 07	15 14 21	86
थानेसर	11 55 48	13 39 11	15 09 19	50
त्रिवेन्द्रम् (के.)	11 04 47	13 14 11	15 05 20	93
दतिया	11 48 55	13 40 07	15 15 09	61

* सूर्यबिम्ब= 100

कंकण सूर्यग्रहण (15 जनवरी, 2010 ई.)

[भारत के विभिन्न नगरों में ग्रहण का स्पर्श (प्रारम्भ), मध्य (परमग्रास) एवं मोक्ष(समाप्ति)काल (भा.स्टैं.टा.)]

स्थान	स्पर्श घं. मि. से.	मध्य घं. मि. से.	मोक्ष घं. मि. से.	परमग्रास (प्रतिशत) *	स्थान	स्पर्श घं. मि. से.	मध्य घं. मि. से.	मोक्ष घं. मि. से.	परमग्रास (प्रतिशत) *	स्थान	स्पर्श घं. मि. से.	मध्य घं. मि. से.	मोक्ष घं. मि. से.	परमग्रास (प्रतिशत) *
दरभंगा	12 07 40	13 55 39	15 26 19	72	पालमपुर	12 00 08	13 39 09	15 06 20	46	भागलपुर	12 08 25	13 56 56	15 27 41	75
दार्जिलिंग	12 14 23	13 59 59	15 28 40	74	पाली	11 36 53	13 27 18	15 04 16	53	भिवानी	11 51 29	13 37 01	15 08 56	51
दिल्ली	11 53 10	13 39 06	15 10 57	53	पिलानी	11 48 48	13 34 55	15 07 34	51	भीनमाल	11 32 00	13 23 27	15 01 56	52
देवबन्द	11 56 50	13 40 52	15 11 11	52	पुंछ	11 59 48	13 34 01	14 58 28	40	भुज(गु.)	11 20 19	13 13 35	14 55 45	52
देवरिया	12 03 21	13 51 51	15 23 22	67	पुणे	11 18 32	13 20 44	15 06 47	67	भुवनेश्वर	11 56 44	13 51 18	15 26 08	84
देवास (न.प्र.)	11 36 23	13 32 03	15 11 23	62	पुरनिया	12 10 38	13 58 08	15 28 09	75	भोपाल	11 40 28	13 35 36	15 13 53	64
देवप्रयाग	11 59 46	13 43 05	15 12 37	52	पुरी	11 55 54	13 50 54	15 25 59	85	मण्डी (हि.प्र.)	12 00 02	13 40 00	15 07 43	47
देहरादून	11 59 00	13 41 56	15 11 23	51	पोरबन्दर	11 15 42	13 11 52	14 56 33	55	मथुरा	11 51 26	13 39 33	15 12 44	56
द्वारिका	11 15 12	13 09 47	14 53 56	52	पोर्टब्लेअर	12 04 39	13 54 10	15 24 05	76	मदुरै	11 12 01	13 20 15	15 09 03	92
धनबाद	12 04 44	13 55 13	15 27 17	78	प्रतापगढ (उ.प्र.)	11 57 56	13 48 00	15 21 02	66	मन्दसोर	11 36 29	13 30 19	15 08 53	58
धर्मशाला	12 00 12	13 38 52	15 05 49	45	प्रयाग	11 56 50	13 47 33	15 21 03	67	मसूरी	11 59 23	13 42 04	15 11 20	51
धूरी	11 54 32	13 36 50	15 06 35	48	फरीदकोट	11 52 46	13 34 00	15 03 28	46	महेन्द्रगढ़	11 50 08	13 36 34	15 09 09	52
नरैना	11 41 38	13 30 17	15 05 29	52	फरीदाबाद	11 53 00	13 39 22	15 11 27	54	मारवाड़ जं.	11 37 22	13 27 58	15 04 54	53
नवलगढ़	11 46 55	13 33 57	15 07 23	52	फाज़िल्का	11 50 47	13 32 15	15 02 10	45	मालेरकोटला	11 55 09	13 37 11	15 06 43	48
नागपुर	11 40 07	13 37 53	15 17 13	71	फिरोज़पुर	11 53 24	13 34 08	15 03 13	45	मिर्ज़ापुर	11 57 46	13 48 40	15 22 06	68
नागौर	11 41 20	13 29 09	15 03 59	50	फुलेरा	11 44 20	13 33 11	15 07 57	53	मुंगेर	12 07 33	13 56 11	15 27 07	74
नाथद्वारा	11 35 39	13 27 44	15 05 43	55	बंगलोर	11 16 39	13 23 35	15 11 09	85	मुज़फ्फर नगर	11 56 19	13 40 47	15 11 25	52
नाभा	11 55 15	13 37 32	15 07 11	48	बदायूं	11 56 08	13 43 16	15 15 14	57	मुम्बई	11 17 01	13 18 25	15 04 38	65
नारनौल	11 49 31	13 36 25	15 09 20	53	बलिया	12 02 44	13 52 10	15 24 11	70	मुरादाबाद	11 57 13	13 42 55	15 14 02	55
नालागढ़	11 57 55	13 39 07	15 07 48	48	बाड़मेर	11 31 52	13 21 28	14 59 08	50	मेरठ	11 55 17	13 40 36	15 11 48	53
नाहन	11 58 04	13 40 25	15 09 41	50	बांसवाड़ा	11 33 15	13 27 57	15 07 35	58	मैसूर	11 11 58	13 19 48	15 08 57	83
नासिक	11 22 27	13 22 31	15 06 50	64	बिजनौर	11 57 05	13 41 46	15 12 23	53	मोगा	11 54 09	13 35 19	15 04 32	46
नीमच	11 36 59	13 30 08	15 08 18	57	बिलासपुर(म.प्र.)	11 50 29	13 45 39	15 21 58	74	रतनगढ़	11 46 02	13 32 26	15 05 42	50
नैनीताल	11 59 54	13 44 40	15 14 55	55	बिलासपुर(हि.प्र.)	11 58 50	13 39 33	15 07 50	48	रतलाम	11 34 42	13 29 46	15 09 14	60
पंचकूला	11 57 43	13 39 33	15 08 35	49	बीकानेर	11 42 54	13 28 57	15 02 38	48	राजकोट	11 20 26	13 16 01	14 59 09	55
पंजिम	11 10 35	13 16 19	15 05 40	73	बीजापुर	11 19 56	13 24 02	15 10 14	74	रांची	12 01 01	13 52 48	15 25 59	77
पटना	12 04 58	13 54 03	15 25 34	72	बुलन्दशहर	11 54 09	13 40 36	15 12 33	55	रामपुर बुशहर	12 00 42	13 41 25	15 09 26	49
पटियाला	11 55 36	13 38 08	15 07 51	49	बून्दी	11 41 39	13 33 09	15 09 40	57	रामेश्वरम्	11 14 46	13 22 20	15 09 57	96
पठानकोट	11 58 54	13 37 16	15 04 14	44	वृन्दावन	11 51 45	13 39 43	15 12 47	56	रायपुर (म.प्र.)	11 47 17	13 43 45	15 21 10	75
पाण्डिचेरी	11 21 50	13 27 56	15 13 36	91	बठिण्डा	11 52 14	13 34 36	15 04 45	47	रिवाड़ी	11 50 55	13 37 34	15 10 09	53
पानीपत	11 54 41	13 39 08	15 10 00	51	भरतपुर	11 50 30	13 38 59	15 12 30	56	रीवां	11 53 23	13 45 40	15 20 24	68

* सूर्यबिम्ब= 100

कंकण सूर्यग्रहण (15 जनवरी, 2010 ई.)

[भारत के विभिन्न नगरों में ग्रहण का स्पर्श (प्रारम्भ), मध्य (परमग्रास) एवं मोक्ष (समाप्ति) काल (भा.स्टैं.टा.)]

स्थान	स्पर्श घं. मि. से.	मध्य घं. मि. से.	मोक्ष घं. मि. से.	परमग्रास (प्रतिशत) *
रोपड़	11 57 16	13 38 37	15 07 27	48
रोहतक	11 52 33	13 37 54	15 09 33	52
लखनऊ	11 57 46	13 46 32	15 19 02	62
लुधियाना	11 55 57	13 37 10	15 06 08	47
वड़ोदरा (गु.)	11 27 00	13 23 29	15 05 17	59
विजयवाड़ा	11 33 54	13 36 08	15 18 06	83
विशाखापत्तनम्	11 44 35	13 43 39	15 22 16	85
शाहदरा	11 53 32	13 39 26	15 11 12	53
शिमला	11 59 05	13 40 20	15 08 52	49
शिलांग	12 20 06	14 04 44	15 32 07	83
श्रीनगर (का.)	12 01 44	13 35 50	14 59 58	40
संगरूर	11 54 09	13 36 47	15 06 47	48
सरहिन्द	11 56 20	13 38 16	15 07 35	48
सहारनपुर	11 57 06	13 40 36	15 10 37	51
सागर	11 45 22	13 39 24	15 16 17	65
सांगानेर	11 45 28	13 34 33	15 09 13	54
सिरसा	11 50 43	13 34 24	15 05 30	48
सीकर	11 46 02	13 33 31	15 07 20	52
सूरत	11 22 54	13 21 03	15 04 32	60
सूरतगढ़	11 47 42	13 31 24	15 03 00	47
सोलन	11 58 31	13 40 07	15 08 55	49
हमीरपुर (उ.प्र.)	11 53 51	13 44 17	15 18 08	63
हमीरपुर (हि.प्र.)	11 59 04	13 38 57	15 06 45	47
हरिद्वार	11 58 30	13 42 07	15 11 59	52
हाथरस	11 52 43	13 40 36	15 13 28	56
हापुड़	11 54 45	13 40 38	15 12 11	54
हांसी	11 51 40	13 36 29	15 08 00	50
हिसार	11 51 19	13 35 57	15 07 25	50
हैदराबाद	11 29 20	13 31 58	15 15 16	77
होशंगाबाद	11 40 12	13 36 03	15 14 40	65
होशियारपुर	11 57 34	13 37 33	15 05 37	46

* सूर्यबिम्ब= 100

कंकण सूर्यग्रहण

(15 जनवरी, 2010 ई.)

[कुछेक प्रसिद्ध नगरों में कंकणग्रहण की प्रारम्भ—समाप्ति (भा.स्टैं.टा.) एवं कंकण—अवधि]

नगर	कंकण आरम्भ घं. मि. से.	कंकण समाप्त घं. मि. से.	कंकण अवधि मि. से.	परमग्रास (प्रतिशत)
कन्याकुमारी	13 10 12	13 20 24	10 12	95
टूटिकोरिन	13 13 18	13 23 00	09 42	94
तंजाबुर	13 22 18	13 25 48	03 30	92
त्रिवेन्द्रम्	13 10 35	13 17 46	07 11	93
मदुरै	13 18 38	13 21 51	03 13	92
रामेश्वरम्	13 17 13	13 27 26	10 13	96

शनि की साढेसाती (बृहत्कल्याणी), ढैय्या (लघुकल्याणी) और गुरु–राहु का गोचरफल (सं. 2066 वि.)

जन्मकुण्डली में शनैश्चर का शुभग्रह से सम्बन्ध हो अथवा महादशा का अंतर शुभ चल रहा हो, तो ढैय्या और साढेसाती का अशुभफल कम होता है। यदि चन्द्र, शनि जन्म में अशुभ ग्रहों से युक्त हो तो साढेसाती व ढैय्या महान् अशुभ, चिंता, अवनति, धनहानि, झगड़ा, कार्य में विघ्न, रोजगार में कमी, व्यर्थ कलह एवं रोग, पशु–पीड़ा आदि का कारण बनती है। यदि जन्मकुण्डली में शनि अष्टमेश या मारकेश हो तो भी ढैय्या, साढेसाती विशेष अनिष्ट फलप्रद होती है। **यदि जन्म में शनि लग्नेश, पंचमेश, नवमेश होकर 3, 6, 11 में स्थित हो तो सुख–सम्पत्ति मिलती है, व्यापारादि में लाभ होता है।** शनि के अष्टकवर्ग में अधिक रेखाएं हों तो शुभ, कम रेखाएं हो तो अशुभ फल निश्चित होता है। शनिग्रहजन्य नेष्टफल **शान्त्यर्थ**–सतनाजा को तेल का हाथ लगाकर पक्षियों को डालना चाहिए या शनिवार को तेल में मुख देखकर उसमें मिष्ठान्न, गुलगुले आदि बनाकर गरीबों को, भैंसे या कुत्ते को दें या बन्दरों को गुड़–चने डालते रहें। अष्टगंध से शुभमुहूर्त्त में बना हुआ शनियंत्र धारण करना विशेष शांतिप्रद है।

साढेसाती में प्रत्येक राशि के लिए शनि का अशुभ फल इस प्रकार है–

मेष राशि वालों को बीच के अढाई वर्ष खराब हैं। वृष को पहिले अढाई वर्ष, मिथुन को अंत के अढाई वर्ष, कर्क को बीच के अढाई वर्ष, सिंह को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष खराब हैं। कन्या को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। तुला को आखिर के अढाई वर्ष, वृश्चिक को अंतिम 5 वर्ष नेष्ट हैं, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। धनु को प्रारंभ के अढाई वर्ष, मकर को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी पहिले अढाई वर्ष विशेष खराब हैं। कुंभ को आदि एवं अन्त के पांच वर्ष, विशेषतः अन्त के अढाई वर्ष अधिक अशुभ है। मीन को पूरे साढेसात वर्ष नेष्ट हैं, उनमें भी अन्त के अढाई वर्ष विशेष अशुभफल देने वाले होते हैं। नोटः– नीचे दिए गए कोष्ठकों में जिन राशियों का निर्देश नहीं किया गया है, उन राशि वाले जातकों के लिए सिंह/कन्याराशिस्थ शनि की कालावधि में साढ़ेसाती या ढैय्या नहीं है,– यह समझ लें।

16 जुलाई, सन् 2007 ई. को आश्लेषा नक्षत्र एवम् कर्क राशिस्थ चन्द्र के समय 4 घं. 45 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर शनिदेव सिंह राशि में प्रविष्ट होकर सं. 2066 वि. में 9 सितंबर, 2009 ई. तक सिंह राशि में ही विचरण करेंगे।

सिंह–राशिस्थ शनि की साढ़ेसाती एवं ढैय्या का फल

(सं. 2066 वि. के प्रारम्भ से 8 सितंबर, 2009 ई. तक के लिए)

राशि	ढैय्या या साढेसाती	पाद	साढेसाती		फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
कर्क	साढेसाती	सुवर्ण	पाद	उतरती	पारिवारिक कलह-क्लेश, अनेकविध रोगों से कष्ट, प्रतिदिन उलझनें बढ़ें, मन अशान्त, भारी धनहानि, निजीजन विरोध।
सिंह	साढेसाती	लौह	हृदय	– –	शारीरिक कष्ट, रक्तपित्त विकार, स्त्रीकष्ट, पशु एवं सन्तान को कष्ट, व्यापार में हानि, राजभय।
कन्या	साढेसाती	सुवर्ण	मस्तक	चढ़ती	निजीजन विरोध, शत्रु बढ़ें, गृहक्लेश, अनेकविध रोगों से परेशानी, वृथा व्यय, धननाश।
मकर	ढैय्या	ताम्र	– –	– –	धन-धान्य समृद्धि, स्त्री-पुत्र सुख,सुख-सम्पत्ति लाभ, व्यवसाय में प्रगति,शारीरिक सुख।
वृष	ढैय्या	ताम्र	– –	– –	धन-धान्य समृद्धि, स्त्री-पुत्र सुख, सम्पति लाभ, कारोबार में प्रगति,शारीरिक सुख।

9 सितंबर, सन् 2009 ई. को भरणी नक्षत्र एवं मेष राशिस्थ चन्द के समय 23 घं. 57 मि. (भा.स्टैं. टा.) पर शनिदेव कन्या राशि में प्रविष्ट होकर संवत् 2066 वि. के अन्त तक कन्या राशि में ही विचरण करेंगे।

कन्या राशिस्थ शनि की साढ़ेसाती एवं ढैय्या का फल

(9 सितंबर, 2009 ई से सं. 2066 वि. के अन्त तक के लिए।)

राशि	ढैय्या या साढेसाती	पाद	साढेसाती		फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
सिंह	साढेसाती	रजत	पाद	– –	व्यापार मे प्रगति, धनधान्य समृद्धि, प्रभावक्षेत्र बढ़े, सम्मान प्राप्त हो, सुखसम्पदा लाभ, घर में मांगलिक कृत्य हों।
कन्या	साढेसाती	लौह	हृदय	चढ़ती	शारीरिक कष्ट, रक्तपित्त विकार, स्त्रीकष्ट, पशु एवं सन्तान को कष्ट, व्यापार में हानि, राजभय।
तुला	साढेसाती	ताम्र	मस्तक	– –	धन-धान्य समृद्धि, स्त्री-पुत्र सुख,सुख-सम्पत्ति लाभ, व्यवसाय में प्रगति,शारीरिक सुख।
कुम्भ	ढैय्या	ताम्र	– –	– –	धन-धान्य समृद्धि, स्त्री-पुत्र सुख, सम्पत्ति लाभ, कारोबार में प्रगति,शारीरिक सुख।
मिथुन	ढैय्या	सुवर्ण	– –	– –	निजीजन विरोध, शत्रु बढ़ें, गृहक्लेश, अनेकविध [illegible]

सं. 2066 वि. में 1 मई सन् 2009 ई. को 18 घं. 44 मि. (भा. स्टैं

वृष	ढैय्या	ताम्र	— —	— —	धन-धान्य समृद्धि, स्त्री-पुत्र सुख, सम्पत्ति लाभ, कारोबार में प्रगति,शारीरिक सुख।	मिथुन	[illegible]	सुवर्ण	— —	— —	निजीजन विरोध, शत्रु बढ़ें, गृहक्लेश, अनेक [illegible]

शनि–शान्त्यर्थ शास्त्रीय उपाय

शनि की साढ़ेसाती/ढैय्या के नेष्टफल की शान्ति के लिए शनि के बीज मन्त्र या वैदिक मन्त्र का 23,000 की संख्या में विधिपूर्वक जाप करें। तदुपरान्त दशांश हवनादि करें। शनिवार के दिन सतनाजा दान, लौहपात्र में तैलदान, शनिस्तोत्र का पाठ करना/कराना भी श्रेयस्कर रहता है। इसके अतिरिक्त शुभवेला में 'नीलम' रत्न एवं 'शनियन्त्र' धारण करना भी आश्चर्यजनक रूप से लाभप्रद रहता है। परन्तु रत्नधारण करने से पूर्व शनि के अंशादि का अध्ययन करवाकर किसी दैवज्ञ का परामर्श ले लेना श्रेयस्कर रहेगा।

शनि का बीज मन्त्र– "ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः"।

शनि का वैदिक मन्त्र– "ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये,
शंय्योरभिस्रवन्तु नः,शं ॐ"।

शनिजन्य नेष्टफल शान्त्यर्थ शनैश्चर स्तोत्र

पिप्पलाद उवाच–

"ॐ नमस्ते कोण–संस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तु ते। नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तु ते।।
नमस्ते रौद्र – देहाय नमस्ते चांतकाय च। नमस्ते यम–संज्ञाय नमस्ते सौरये विभो ।।
नमस्ते मन्द – संज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च।।"

इस स्तोत्र को प्रातः पढ़ने से साढेसाती व ढैया की दुःखद पीड़ा नहीं होती– अनुभूत है।

सं. 2066 वि. में गुरु के संचार का शुभाशुभ फल

गत सं. 2065 वि. में 9 दिसंबर, 2008 ई. को 23 घं. 42 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर अश्विनी नक्षत्र एवं मेषस्थ –चन्द्र के समय गुरुदेव मकर राशि में प्रविष्ट होकर 1 मई, सन् 2009 ई. तक मकर राशि में ही संचरण करेंगे।

मकर राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल
(9 दिसंबर सन् 2008 ई. से 1 मई, 2009 ई. तक के लिए)

राशि→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	धनहानि	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि	शरीर–कष्ट	धनलाभ	भय	आधि–व्याधि	प्रगति

सं. 2066 वि. में 1 मई, सन् 2009 ई. को 18 घं. 44 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर पुष्य नक्षत्र एवं कर्कस्थ –चन्द्र के समय गुरुदेव कुम्भराशि में प्रविष्ट होकर 30 जुलाई, 2009 ई. तक कुम्भराशि में ही संचरण करेंगे।

कुम्भ–राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल
(1 मई, सन् 2009 ई. से 30 जुलाई, 2009 ई. तक के लिए)

राशि→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	प्रगति	धनहानि	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि	शरीरकष्ट	धनलाभ	भय	आधि–व्याधि

सं. 2066 वि. में 15 जून, सन् 2009 ई. को गुरु वक्री होकर 30 जुलाई, सन् 2009 ई को 19 घं. 53 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर विशाखा नक्षत्र एवं वृश्चिकस्थ चन्द्र के समय गुरु पुनः मकर राशि में प्रवेश करके 20 दिसम्बर, सन् 2009 ई. तक मकर राशि में ही रहेंगे।

मकर–राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल
(30 जुलाई, सन् 2009 ई. से 20 दिसंबर, सन् 2009 ई. तक के लिए)

राशि→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	धनहानि	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि	शरीर–कष्ट	धनलाभ	भय	आधि–व्याधि	प्रगति

सं. 2066 वि. में 13 अक्तूबर को गुरु मार्गी होकर 20 दिसम्बर, सन् 2009 ई. को 0 घं. 12 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर उ.षा. नक्षत्र एवं मकरस्थ चन्द्र के समय गुरुदेव पुनः कुम्भ राशि में प्रविष्ट होकर संवत् 2066 वि. के अन्त तक कुम्भ राशि में ही विचरण करेंगे।

कुम्भ–राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल
(20 दिसम्बर, सन् 2009 ई. से वि. सं. 2066 के अन्त तक के लिए)

राशि→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	प्रगति	धनहानि	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि	शरीरकष्ट	धनलाभ	भय	आधि–व्याधि

राहु के संचार का शुभाशुभ फल

गत सं. 2065 वि. में 30 अप्रैल, 2008 ई को 9 घं. 36 मि. (भा. स्टैं.टा.) पर धनिष्ठा नक्षत्र एवं कुम्भस्थ चन्द्र के समय राहु मकर राशि में प्रविष्ट होकर सं. 2066 वि. में 17 नवंबर, 2009 ई. तक मकर राशि में ही रहेगा।

मकर–राशिस्थ राहु का शुभाशुभ फल

(30 अप्रैल, सन् 2008 ई. से वि. सं. 2066 वि. में 17 नवंबर, 2009 ई. तक के लिए)

राशि→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	कलह	दुःख	धननाश	राजभय	महासुख	धनहानि	अपमान	सौभाग्य	कलह	भय	विनाश	धनलाभ

सं. 2066 वि. में 17 नवम्बर, सन् 2009 ई. को 12 घं. 09 मि. पर अनुराधा नक्षत्र एवं वृश्चिकस्थ चन्द्र के समय राहु धनु राशि में प्रविष्ट होकर संवत् 2066 वि. के अन्त (किंवा आगे 6 जून, सन् 2011 ई.) तक धनु राशि में ही संचरण करेगा।

धनु–राशिस्थ राहु का शुभाशुभ फल

(17 नवंबर, सन् 2009 ई. से संवत् 2066 वि. के अन्त तक के लिए।)

राशि→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	दुःख	धननाश	राजभय	महासुख	धनहानि	अपमान	सौभाग्य	कलह	भय	विनाश	धनलाभ	कलह

अथ नवग्रह स्तोत्रम्

जपाकुसुम–संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णव–संभवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।
धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम्।।
प्रियङ्गु कलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।
देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचन–सन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।
हिमकुन्द–मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्त्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।
इति व्यासमुखोद्गीतं यःपठेत्सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशांतिर्भविष्यति।।
नर –नारी–नृपाणां च भवेद् दुःस्वप्ननाशनम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।

आकाशी कौंसिल का विचार(सं. 2066 वि.)

(ग्रहपरिषद् एवं ग्रहगोचर के आधार पर विश्व की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति का सर्वेक्षण)

- संवत् का राजा शुक्र एवं मन्त्री चन्द्र होने से राजनीतिज्ञों में परस्पर ऐकमत्त्य न रहे– सत्तापरीक्षण (निर्वाचन) में क्षेत्रीय पार्टियों को विशेष अधिमान।
- संवत् के प्रारम्भिक मास राजनैतिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण। भाजपा–कांग्रेस के लिए परीक्षा की घड़ी।
- 'शुभकृत्' संवत् (2066 वि.) में भयंकर आतंकवादी घटनाओं एवं उग्रवाद से भारी जनधनहानि।
- संवत् के आरम्भिक मास, 23 मई से 16 अगस्त तक, 9 सितंबर से संवत् के अन्त तक की समयावधि में भारत के महानगरों एवं आसाम, त्रिपुरा, नागालैण्ड तथा काश्मीर आदि में उग्रवादजन्य अशान्ति रहे, विस्फोट, हत्याकाण्ड एवं प्राकृतिक आपदा से हानि के संकेत।
- भारत का एक महाशक्ति एवं अणुशक्ति के रूप में उदय।
- देश–विदेश के घटनाचक्र का चित्रण एवं भारत के अन्य देशों से राजनैतिक सम्बन्ध।
- भारत की शासनपद्धति एवं घटनाचक्र का चित्रण।
- अमेरिकी राजनीति में परिवर्तन, अमेरिकी राष्ट्रपतिचयन का विश्लेषण।
- भारत की राजनैतिक पार्टियों का भविष्य। भाजपा–कांग्रेस–बसपा आदि की कार्यशैली का ग्रहदृष्ट्या विश्लेषण।

ग्रहगतिजन्य प्रभाव से प्रताड़ित समस्त–समाज, व्यक्ति किंवा देश की स्थिति ठीक उस तिनके की भान्ति ही अनुभव की गई है, जो वायुवेग से प्रताड़ित होकर अपने अस्तित्व को खोकर इधर–उधर भागता फिरता है। नैषधचरित में स्पष्ट लिखा है–

"अवश्य भव्येष्वनवग्रह ग्रहा यया दिशा धावति वेधसः स्पृहा।
तृणेन वात्येव तयानुगम्यते लोकस्य चित्तेन भृशाऽवशात्मनः।।"

स्पष्ट है कि– उस परोक्ष–अज्ञात–अलौकिक–शक्ति के परिचायक अनन्तकोटि तारों एवं ग्रहों के अदृश्य संकेत से संचालित ब्रह्माण्ड में कभी भूकम्प, समुद्री–बर्फानी तूफान, ज्वालामुखी विस्फोट एवं जनजीवन में उग्र–विनाशक घटनाएं स्पष्ट अनुभव की गई हैं।

ये घटनाएं क्यों घटित होती हैं, इनके पीछे कौन सी अदृश्य शक्ति है, जो ग्रहों एवं नक्षत्रों को प्रभावित करती है ? स्पष्ट है– इस रहस्य के ज्ञान का श्रेय भारत के महान् खगोलवेत्ता–गणितज्ञ–भास्कराचार्य को ही जाता है–जिन्होंने न्यूटन से भी सैंकड़ों वर्ष पहले 'गुरुत्वाकर्षण' की चर्चा इस प्रकार की है– " आकृष्टशक्तिश्च महीतया यत् खस्थं गुरुः स्वाभिमुखं स्वशक्त्या।" इसप्रकार जगत्पिता की अदृश्य अलौकिक शक्ति ही ब्रह्माण्ड को प्रभावित एवं संचालित करती है। सत्यता तो यह है, कि–परस्पर आकर्षण–विकर्षण से प्रभावित ये अनन्तकोटि खगोलीय पिण्ड अपनी वक्र–मार्गगति द्वारा इस पृथ्वी किंवा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के क्रिया–कलाप को प्रभावित करते हुए, प्रतिपल ग्रहगतिजन्य प्रभावों से पृथ्वी के अन्तर्गत परिवर्तनों से ज्योतिषशास्त्र की वैज्ञानिकता का साक्षित्त्व अनन्तकाल से प्रस्तुत करते आ रहे हैं। भूगर्भशास्त्री, वनस्पति–प्राणीशास्त्र–विज्ञानी एवं खगोलशास्त्री भारतीय तथा विदेशीय वैज्ञानिक भी पृथ्वी एवं प्रत्येक पिण्ड की आकर्षण–विकर्षण शक्ति को नकार नहीं सकते।

इस प्रकार जगत्पिता की अदृश्य अलौकिक शक्ति ही ब्रह्माण्ड को प्रभावित करती है, संचालित करती है। ग्रहगतिजन्य इस परिणाम को हम ''भवितव्यता'' किंवा ''ईश्वरेच्छा'' कहकर स्वीकार करते हैं।

ज्योतिषशास्त्र को 'कालविधानशास्त्र' कहकर वैदिककाल से ही सम्मानित किया गया है। पुरातनतम विश्व–धरोहर के रूप में स्वीकृत वेदों के प्रायोगिक क्रिया–कलाप

कोसमयानुसार सम्पादित करने की अनुमति प्रदान करने का श्रेय ज्योतिषशास्त्र को आदिकाल से ही प्राप्त है–

"वेदा हि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ताः कालानुपूर्वा विहिताश्च यज्ञाः।
तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं यो ज्योतिषं वेद स वेद वेदम्।।"

यथार्थ बात तो यह है कि ज्योतिष शायद सबसे पुराना विषय है और एक अर्थ में सबसे ज्यादा उपेक्षित भी। उपेक्षित इसलिए कि फलितशास्त्र में शोध के लिए शासन उपेक्षा भाव लिए है। मनुष्यजाति के इतिहास की जितनी भी खोज हो सकी है, उसमें ऐसा कोई भी समय नहीं था जबकि, ज्योतिष मौजूद न रहा हो। इसलिए इसे पुरातनतम भी माना गया है।

ऋग्वेद में पचानवें हजार वर्ष पूर्व ग्रहनक्षत्रों का वर्णन उपलब्ध है। महर्षियों द्वारा प्रस्फुरित इस शास्त्र पर गुरु–शिष्य परम्परया चिंतन व संशोधन–संवर्धन होते रहे हैं। प्रत्येक ग्रह जब अपनी गति–स्थिति में अंतर लाता है, तभी विश्व का घटनाचक्र प्रभावित होता देखा गया है। इस पृथ्वी पर जो कुछ भी घटित होता अनुभव करते हैं, वह सब ग्रहों के वक्र–मार्ग आदि के ही परिणाम हैं। इस ग्रहगतिजन्य संकेत के आधार पर ही अपनी मति के अनुसार विश्व में जो भी प्रतिवर्ष घटित होता है, " श्रीमार्त्तण्डपंचांग " के माध्यम से प्रिय पाठकों के समक्ष उपस्थित करते हैं और यह इस प्रकाशन का 82वां गौरवपूर्ण वर्ष प्रारम्भ हो रहा है।

श्री वि. संवत् 2066 की ग्रहस्थिति के अनुसार विश्वजनीन घटनाओं की भविष्यवाणी प्रस्तुत करने से पहिले हम अपने विद्वान् प्रबुद्ध पाठकों का आभार व्यक्त कर देना उचित समझते हैं, जिन्होंने लगातार 81 वर्षों तक हमारी भविष्यवाणियों का सही मूल्यांकन करके हमें आज 82वें वर्षप्रवेश पर भी इस बारे में कुछ लिखने को प्रोत्साहित किया है। पाठको ! आपका यह पंचांग अपनी सर्वांगशुद्ध गणित एवं आश्चर्यजनक भविष्यवाणियों के लिए भारत में ही नहीं, विदेशों में भी विश्रुत हो चुका है।

आपके इस लोकप्रिय पंचांग में प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली आश्चर्यजनक अव्यभिचरित भविष्यवाणियों में साधारणवर्ग के व्यक्ति से लेकर भारतरत्न श्री जवाहरलाल नेहरु, श्रीमती इन्दिरा गांधी, प्रथम राष्ट्रपति डॉ.राजेन्द्र प्रसाद एवं अन्य गण्यमान्य प्रतिष्ठित–ऐतिहासिक महापुरुषों की अभिरुचि रही है। आज भी यह पंचांग अपनी सफल आश्चर्यचकित कर देने वाली भविष्यवाणियों के कारण तथा ग्रहण आदि पंचांग–गणित की सूक्ष्मता एवं शुद्धि के कारण भारत में ही नहीं, विदेशों में भी लोकप्रिय है और भारत में अग्रणी स्थान प्राप्त कर चुका है।

यह बात भी नितांत सत्य है, कि ग्रहों की प्राकृतिक व्यवस्था में तनिक भी रुपान्तरण होने से दिग्दाह, उल्कापात, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, युद्ध, महामारी, अराजकता आदि उपद्रवों से संसार त्रस्त हो जाता है। अतः स्पष्ट है, कि– आकाशीय पिण्डों (ग्रहों) का विश्वजनीन घटनाचक्र से कुछ सम्बन्ध अवश्य है;– इस तथ्य को वैज्ञानिक, विचारक एवं बुद्धिजीवियों का एक बड़ा वर्ग स्पष्ट स्वीकार करता है।

इस पृथ्वी पर जो कुछ भी घटित होता अनुभव करते हैं, वह सब ग्रहों के वक्र–मार्ग आदि का ही परिणाम है। इस ग्रहगतिजन्य संकेत के आधार पर ही अपनी मति के अनुसार विश्व में जो भी प्रतिवर्ष घटित होता है, " श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " के माध्यम से प्रिय पाठकों के समक्ष उपस्थित करते रहते हैं और यह इस प्रकाशन का 82वां गौरवपूर्ण वर्ष प्रारम्भ हो रहा है।

भारत–पाक विभाजन; बंगलादेश का अस्तित्व में आना; श्री जवाहरलाल नेहरु, श्रीलालबहादुर शास्त्री, श्रीमती इन्दिरागांधी के शासन का अंत एवं मृत्यु की सूचना; भारत–पाक युद्ध; भारत–चीन युद्ध; विदेशों में घटित होने वाले महत्त्वपूर्ण घटनाचक्र; समय–समय पर भारत की राजनीति में विशेष परिवर्तनों एवं अन्य घटनाचक्र की सूचना किंवा ऐतिहासिक भूकम्प; गुजराल सरकार का अपदस्थ होना, भाजपा सरकार के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पारित होना; पाक में श्री नवाज़शरीफ की सरकार का तख्तापलट; अमेरीका में वर्ल्डट्रेड सेंटर एवं पेंटागन पर उग्रवादियों का हमला, अमेरीका की कोलम्बिया आन्तरिक शटलयान दुर्घटना; इराक पर अमरकी हमला और सद्दाम हुस्सैन शासन का अन्त; नेपाल में माओवाद से अशान्ति एवं राजशाही का अन्त; अमेरीका के भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री रीगन की मृत्यु; संवत् 2061 वि. में भाजपा एवम् N.D.A. शासन का तख्तापलट एवम् भारत के लोकसभा निर्वाचनों में त्रिशंकु शासनसत्ता की भविष्यवाणी के अतिरिक्त 26 दिसंबर 2004 ई. को तामिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश एवं अण्डेमान–निकोबार में समुद्री सुनामी लहरों से प्रलयंकारी तबाही की सटीक भविष्यवाणी, 30 अगस्त, 2004ई. को अमरीका में भूकम्प एवं सं. 2065 वि. में नेपाल में राजाशाही के समाप्ति की भविष्यवाणी एवं अन्य अनेकों अवाक् कर देने वाली सफल भविष्यवाणियां कर देने का शीर्षस्थ स्थान केवल 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' को ही प्राप्त हुआ है। इस प्रकार अव्यभिचरित भविष्यवाणियों के लिए यह पंचांग सम्पूर्ण भारत किंवा विदेशों में भी ख्यातनामा हो चुका है।

सं. 2066 वि. की ग्रहस्थिति के आधार पर भावी घटनाओं पर विचार करने से पूर्व सभी स्तब्ध कर देने वाली भविष्यवाणियों की चर्चा करना तो स्थानाभाव के कारण यहां सम्भव नहीं है, लेकिन गत एक–दो वर्षो की कुछ भविष्यवाणियों की चर्चा करना प्रासंगिक समझते हैं, ताकि फलितशास्त्र की प्रामाणिकता को स्थापित किया जा सके।

(1) संवत् 2063 वि. के 'श्रीमार्त्तण्डपञ्चांग', में पृ. 27 पर कॉलम नं. 1 में लिखा गया थाः– "संवत् 2063 वि. में शनि–मंगल का राशिसम्बन्ध एवम् समसप्तकयोग ईरान...... एवम् कुछ अन्य मुस्लिम राष्ट्रों के लिए विशेष खतरनाक सिद्ध होंगे।............11 अक्तूबर, 2006 ई. से 16 फरवरी, सन् 2007 ई. तक का समय प्रधानशासक के लिए बहुत ही संकटपूर्ण और जीवन के लिए खतरों से भरा दिखाई पड़ता है। "

इस भविष्यवाणी के अनुसार ईराक के सर्वोच्च शासक तानाशाह को ईराक में ही 30 दिसंबर, 2006 ई. को फांसी के तख्ते पर लटका दिया गया।

'श्रीमार्त्तण्डपञ्चांग', सं. 2063 वि. पृ. 26, कॉलम 1 पर पढ़ें–

"11 अक्तूबर सन् 2006 ई. से 9 जनवरी, सन् 2007 ई. तक शनि–राहु का समसप्तकयोग चलेगा। इसके बाद शनि वक्र अवस्था में कर्क राशि में दाखिल होकर 11 फरवरी तक सूर्य के साथ समसप्तकयोग बनाएगा एवम् मंगल के साथ षडष्टकयोग भी बना लेगा। यह षडष्टकयोग 16 फरवरी तक चलेगा। इसके बाद मंगल मकर राशि में आकर वक्र शनि के साथ संवत् के अन्त तक समसप्तकयोग बनाए रखेगा। इस प्रकार संवत् के अन्तिम मास विश्व के भारी राजनैतिक अघटित घटनाओं को जन्म देने वाले होंगे। विशेषतः मुस्लिम राष्ट्र, नेपाल एवम् कुछ समृद्ध राष्ट्र भी आन्तरिक उलझनों से परेशान होंगे। (कही) भूकम्प, समुद्री तूफान, यानदुर्घटना, आतंकवाद एवम् हत्याकाण्ड से संवत् का अन्तिम चरण भयावह ही मालूम देता है।"

प्रिय पाठकों के समक्ष उपस्थित करते रहते हैं और यह इस प्रकाशन का 82वां गौरवपूर्ण वर्ष प्रारम्भ हो रहा है।

...यानदुर्घटना, आतंकवाद एवम् हत्याकाण्ड से संयत का अन्तिम चरण भयावह ही मालूम देता है।"

इस भविष्यवाणी के अनुसार 30 दिसंबर, 2006 ई. को समुद्री तूफान से इण्डोनेशिया का समुद्री जहाज डूबा एवं 855 यात्री समुद्र में डूब गए।

सं. 2064 वि. के 'श्रीमार्त्तण्डपञ्चांग' में से भी कुछ अव्यभिचरित भविष्यवाणियों का निर्देश नीचे कर रहे है–

(1)"श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" सं. 2064 वि. में पृ. 26, कॉलम 1 पर पढ़ें–

"स्वतन्त्र भारत के 61वें वर्ष 15 अगस्त, 2007 ई. की ग्रहस्थिति के अनुसार अष्टमेश मंगल नवम भाव में, दशमेश बुध एकादश भाव में, एकादशेश चन्द्र व्यय भाव में एवं मुखेश शुक्र भी व्यय भाव में हैं। चतुर्थेश गुरु भी अपनी (धनु) राशि में व्ययस्थानगत है;– यह ग्रहस्थिति राजनैतिक दृष्टि से भारी उथल–पुथल करने वाली है। सरकार के घटकदल सत्तासीन प्रधान नेता को स्वतन्त्र प्रगतिप्रद निर्णय लेने में बाधक रहें। भारत की प्रभावराशि मकर पर सूर्य, बुध की दृष्टि है, जो कि प्रधान नेता को स्वतन्त्र पग उठाने में अशक्त बनाएगी। राहु का शनि–शुक्र के साथ समसप्तक घटकदलों को बिखरने का भय पैदा कर सकता है।"

उल्लिखित भविष्यवाणी की सत्यता पर हजारों प्रशंसकों के पत्र हमें प्राप्त हुए हैं। अगस्त तक सरकार के घटक वामदल अमरीका के साथ बहुचर्चित परमाणु–करार पर प्रधानमन्त्री श्री मनमोहन सिंह जी का स्वतन्त्र प्रगतिपद निर्णय लेने पर बाधक ही रहे हैं। इस विषय पर राहु का शनि–शुक्र के साथ समसप्तक योग शासकदल के घटक दलों में बिखराव का कारण स्पष्टरूप से बन चुका है।

(2) 'भारत–सरकार' की चर्चा में की गई भविष्यवाणी अवाक् कर देने वाली है। पढ़ें– 'श्रीमार्त्तण्डपञ्चांग', सं. 2064, पृ. 28 कॉलम 1, स्टैंजा 3 पर–

"इसवर्ष की ग्रहस्थिति पर विहंगम दृष्टिपात करने से संकेत मिलता है कि– मंहगाई के ज़ोर पकड़ने एवं कुछ विवादित बिल उपस्थित होने पर वामपन्थियों के तीखे तेवर केन्द्रीय शासन को अस्थिर कर सकते हैं। इसके अलावा बृहस्पति का धनुराशि में संक्रमण, शनि का मंगल के साथ दशम–चतुर्थसम्बन्ध होने से लगता है कि–कहीं वामपन्थी कोई राजनैतिक धमाका न कर दें, जिससे मध्यावधि चुनाव कराने पर केन्द्र को विवश होना पड़े। भारत विभाजनकारी शक्तियों के जाल से बचे और देशव्यापी उज्ज्वल भविष्य के लिए राजनेता अपनी रणनीति एवं दृष्किोण पर पुनर्विचार करें।"

वामपन्थी राजनैतिक दलों द्वारा 'परमाणु–करार' पर पुनर्विचार होने पर भी भारतीय केन्द्रीय राजनीति में अविश्वसनीय किसी धमाके की आशंका बन गई है। इस प्रकार इन पंक्तियों की भी सत्यता शतप्रतिशत प्रमाणित हो चुकी है।

पृ. 28, कॉलम 2 पर भी इसी धारणा को पुष्ट करते हुए लिखा था–

"जुलाई से सितंबर, 2007 ई. तक की ग्रहस्थिति सत्तारूढ़दल में दरार से प्रधान पार्टी–नेता को कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। मध्यावधि चुनाव की आवाज से सभी पार्टियों की नींद हराम हो सकती है, परन्तु समय पर समस्या का हल निकल भी सकता है।"

ठीक, इस भविष्यवाणी के अनुसार मध्यावधि चुनावों का अप्रत्याशित भय राजनैतिक पार्टियों एवं जनता के सामने सितम्बर, 2007 ई. तक उपस्थित हो चुका है–इस समस्या का हल अपेक्षित है। यह सर्वविदित है।

(3) 'मुस्लिमराष्ट्र' शीर्षक के अन्तर्गत 'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2064 वि. में पृ. 24 पर कॉलम 2 में स्पष्ट घोषणा की थी–

"मुस्लिम देशों की वर्षगत ग्रहस्थिति के अनुसार शनि–मंगल का षडष्टकयोग बना हुआ है। इस समय बुध अस्त है, शनि वक्री है। शनि–सूर्य का समसप्तकयोग भी बना हुआ है। लेकिन शनि गुरुदृष्ट भी है। कुछ यावनराष्ट्रों में 15 जुलाई से पूर्व .... आन्तरिक कलह, उग्रवादजन्य अशान्ति किंवा अग्निकाण्ड............आदि प्राकृतिक प्रकोप से जन–धनहानि के योग हैं। सिंह का शनि 15 जुलाई, 2007 ई. के बाद मुस्लिम देश–विशेष में अघटित घटनाचक्र चलाएगा। उग्रवादजन्य हिंसक घटनाओं से अफगानिस्तान, इराक, पाक का बलोचिस्तान एवम् अरब गणराज्य देशों में जनता त्रस्त रहेगी। कहीं सत्तापरिवर्तन भी संभव है।"

इस भविष्यवाणी के अनुसार–

(i) 12 मई, 2007 ई. को पाकिस्तान में आन्तरिक फसादात में 30 व्यक्तियों की मृत्यु हुई। यह आन्तरिक अशान्ति पाक में 15 जुलाई तक विकटरूप से चली।

(ii) 29 जून, 2007 ई. से 1 जुलाई तक पाक में जोरदार वर्षा से 250 से भी अधिक व्यक्ति मारे गए। लाखों व्यक्ति बेघर हो गए। पाक में सत्तापरिवर्तन की संभावना भी सन् 2007 ई. के अन्त के लगभग की ग्रहस्थिति से स्पष्ट दिखाई दे रही है।

(4) "पाकिस्तान की कुण्डली में स्थित ग्रहस्थिति के अनुसार कर्कराशि का शनिकाल (लगभग मध्यजुलाई तक) इसवर्ष प्रधान–शासक के लिए बहुत नेष्टफलप्रद रहेगा। पाक– कुण्डली में कर्कराशि में बुध, सूर्य, शनि, प्लूटो हैं। यह भारत के साथ कुटिलचाल से सम्बन्ध ठीक न रख पाएगा। इस समय केतु की महादशा में बुधान्तर 29 दिसम्बर, 2006 ई. से प्रारम्भ हुआ था। यहां निर्वाचन सैनिकशासन के प्रभाव में ही होंगे, परिणाम जनता के लिए हितकर न होगा।"

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2064 वि., पृ. 25, कॉलम 1, पहला स्टैंजा)

इन पंक्तियों की सत्यता दैनिक समाचारों से स्पष्ट है कि– जनाब मुशर्रफ साहिब अपने तानाशाही रवैय्ये को न छोडकर जो निर्वाचन करा रहे हैं। सत्ता में परिवर्तन या सत्ता दुबारा पाकर भी परिणाम सुखद नहीं रहेंगे।

(5) "27 जुलाई को शुक्र वक्री हो रहा है; गुरु पहले ही वक्री चल रहा है। 29 जुलाई को मंगल वृषराशि में आकर फिर से शनि के साथ दशम–चतुर्थसम्बन्ध बनाएगा। शनि–मंगल का यह सम्बन्ध 16 सितम्बर तक चलेगा। ध्यान दें– इसी मध्य श्रावण कृष्ण पक्ष त्रयोदश दिन का पक्ष भी आ गया है। श्रावण चान्द्रमास में पांच मंगलवार एवम् बुध, शुक्र, शनि– ये तीन ग्रह इसी चान्द्रमास में अस्त हो रहे हैं। शनि, शुक्र, केतु पर मंगल की दृष्टि भी है। बुध अतिचारी है। पूर्वी–दक्षिणी प्रान्तों एवम् देशों में भयंकर

अग्निकाण्ड, रेल व वायुयानदुर्घटना, दुर्भिक्ष, भयंकर समुद्रीतूफान, भूकम्प, यान–दुर्घटना आदि से भारी जनधनहानि के योग हैं।"

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2064 वि., पृ. 23, कॉलम 1, स्टैंजा 3)

उल्लिखित भविष्यवाणी की सत्यता को निम्नांकित घटनाएं प्रमाणित करती हैं–

(i) पीरू में 16 अगस्त, 2007 ई. को भूकम्प से 500 से अधिक व्यक्ति मरे; 2 लाख से अधिक लोग प्रभावित हुए।

(ii) 'मैक्सिको में भयंकर तूफान' से 21 अगस्त, 2007 ई. को भारी हानि हुई।

(iii) 11 अगस्त, 2007 ई. को अनन्तनाग (काश्मीर) में सेना के शस्त्रागार में अग्निकाण्ड से भारत सरकार को भारी हानि उठानी पड़ी।

(iv) सुमात्रा–इण्डोनेशिया में 12 सितंबर, 2007 ई. को 7.9 स्केल के ऐतिहासिक भूकम्प से भारी हानि हुई। मीडिया के अनुसार यह भूकम्प सन् 2004 ई. के बाद सबसे बड़ा भूकम्प था।

(6) **"16 जून को मंगल अपनी राशि मेष में आकर 15 जुलाई, 2007 ई. तक शनि–शुक्र के साथ दशम–चतुर्थसम्बन्ध बनाएगा। इस प्रकार शनि की मंगल पर एवं मंगल की शनि पर विशेष दृष्टि होगी। अमरीका–पाक की गहरी दोस्ती से पूरे दक्षिण–पूर्वी एशिया को भारी कठोर कीमत चुकानी पड़ेगी। पाकिस्तान ने तालिबान एवं लादेन की पीठ पर जो हाथ रखा है, उसका भयंकर परिणाम पाक–जनता को आगामी दो वर्षों में जल्दी ही भोगना पड़ेगा। आने वाले दिनों में पाक की हकूमत अमरीका की कठपुतली बन कर रह जाएगी और पाकिस्तान में उग्रवादी कभी भी रक्तपात की प्रक्रिया शुरु कर सकते हैं; प्रधान नेता को भारी चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहना होगा।"**

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2064 वि., पृ. 23, कॉलम 1, स्टैंजा 1)

उल्लिखित भविष्यवाणी की सत्यता स्पष्ट है– जनाब मुशर्रफ जी की अमरीका पीठ थपथपा रहा है। आगामी समय में यहां रक्तपात, रक्तक्रान्ति के योग भी उग्रवादी बनाएंगे–ऐसा ग्रहस्थिति से संकेत प्राप्त हो रहा है।

(7) **"द्वि.(अधिक) ज्येष्ठ कृष्णपक्ष, द्वि. (शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्लपक्ष (2 जून से 30 जून तक)– इस चान्द्रमास में पांच शनिवार होने एवं द्वि. (अधि.) ज्येष्ठ कृ. पक्ष प्रतिपदा (2 जून) को शनिवार होने से किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति (नेता) की मृत्यु का योग बनता है"**

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2064 वि., पृ. 22, कॉलम 2, अन्तिम पंक्तिया)

ठीक– 30 जून, सन् 2007 ई. को श्री साहिब सिंह वर्मा (भू.पू. मुख्यमन्त्री देहली प्रान्त) के सड़कदुर्घटना में आकस्मिक–निधन से राजनैतिक जगत् में शोक व्याप्त हो गया। उल्लिखित पंक्तियों की सत्यता के लिए अधिक कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं है।

(8) **मई–जून में मोहाली(पंजाब) में आगजनी से हानि, हरियाणा–पंजाब में सच्चा सौदा डेरा विवाद एवं पाकिस्तान में जस्टिस चौधरी को अपदस्थ किये जाने से होने वाले उपद्रवों की भविष्यवाणी के लिए निम्नांकित पंक्तियां पढ़ें–**

" 7 मई को मंगल मीनराशि में आकर शनि के साथ नवपंचमयोग बनाएगा। 15 मई को मंगलवारी वृषसंक्रान्ति है। ज्येष्ठ अधिकमास होने से कहीं युद्ध का वातावरण बने– "द्विज्येष्ठे नृप–विग्रहः"। बुध अतिचारी होने के कारण प्राकृतिक आपदा से 7 से 24 मई तक **भारी जनधनहानि के योग बनते हैं।"**

" 30 मई को शुक्र कर्कराशि में आकर शनि के साथ दृष्टिसम्बन्ध बनाएगा। यह दृष्टिसम्बन्ध 3 जुलाई, सन् 2007 ई. तक बना रहेगा। इन (शु. श.) पर वक्री बृहस्पति की विशेष दृष्टि भी है। इस समयावधि में इस वर्ष बलोचिस्तान में पाकराष्ट्राध्यक्ष के खिलाफ बग़ावत का रुख बने। मुस्लिमराष्ट्र जन–आन्दोलन को सुलझाने में निष्क्रिय रहेंगे। पाकिस्तान की विरूपता उसकी जमीन पर पल रहे आतंकी संगठनों द्वारा और विकृत हो जाएगी। साऊदीअरब घृणा और नफरत की पौधशाला के रूप में पनपेगा। अलकायदा गल्फ देशों के लिए भयंकर खतरा सिद्ध होंगे।"

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2064 वि., पृ. 22, कॉलम 2, स्टैंजा 4/5)

इस भविष्यवाणी के अनुसार पाक में जनान्दोलन से जनाब मुशर्रफ साहिब को अपना निर्णय बदलना पड़ा। मोहाली में इन्हीं दिनों अग्निकाण्ड से भारी हानि हुई।

(9) पंजाब में भाजपा–अकाली गठबन्धन सरकार बनने की भविष्यवाणी भी अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई। पढ़ें–

"पंजाब की प्रभावराशि मीन है। 6 दिसंबर, सन् 2006 ई. को शनि वक्री होकर 10 जनवरी, 2007 ई. से फिर कर्कराशि में पदार्पण करेगा। 17 फरवरी, 2007 ई. से 29 मार्च, 2007 ई. तक शनि, मंगल का समसप्तकयोग यहां की रूलिंग– 'कांग्रेस पार्टी' के लिए काफी परेशानियों वाला है। कांग्रेस–पार्टी की कुण्डली में कर्कराशि अष्टम भाव की है एवं मकरराशि द्वितीय भाव की है, ये दोनों मारकभाव हैं, अतः सत्तारूढ़ दल को पुनः सत्ता हथियाने के लिए भारी प्रयत्न करने पड़ेंगे, वरना भाजपा–अकाली गठबन्धन के भारी पड़ जाने का योग है।

"('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2064 वि., पृ. 29 पर कॉलम 1)

(10) उत्तर प्रदेश में बसपा के बहुमत प्राप्त करने की भविष्यवाणी की सत्यता सं. 2064 वि. के पंचांग में पृ. 29, कॉलम 2 में उत्तरप्रदेश शीर्षक के अन्तर्गत निम्नांकित शब्दों में की गई थी, जिसकी सफलता पर हजारों पत्र, फोन हमें प्राप्त हुए है।

"संवत् 2064 वि. से पहिले ही राजनैतिक शक्तिपरीक्षण में वर्तमान सत्तारूढ़दल को विपक्षी पार्टियों से भारी टक्कर लेनी पड़ेगी। परिणामस्वरूप, यहां कांग्रेस अपना वर्चस्व बढ़ाने में सफल तो होगी, लेकिन प्रमुख पार्टी का स्थान न पा सकेगी। समाजवादी पार्टी को भी झटका लगेगा। बसपा को अधिक लाभ मिलेगा।"

(क) गत सं. 2064 वि. की भविष्यवाणी अवाक् कर देने वाली सिद्ध हुई है। **श्रीमती बेनजीर भुट्टो की मृत्यु एवं जनाब मुशर्रफ साहिब के अपदस्थ होने की भविष्यवाणी एवं सत्तापरिवर्तन की भविष्यवाणी पढ़ें –**

"इस वर्ष मुस्लिम राष्ट्रविशेष के शासनाध्यक्ष के अपदस्थ होने किंवा मृत्यु का योग है। इराक आदि में रक्तक्रान्ति जैसा वातावरण रहे, गृहयुद्ध जैसी स्थिति से अमेरिका हतोत्साहित होगा। सिंह का शनि 15 जुलाई, 2007 ई. के बाद मुस्लिम देश–विशेष में अघटित घटनाचक्र चलाएगा। उग्रवादजन्य हिंसक घटनाओं से अफगानिस्तान, इराक, पाक का बलोचिस्तान एवम् अरब गणराज्य देशों में जनता त्रस्त रहेगी। कहीं सत्तापरिवर्तन भी संभव है।"

"('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2064 वि., पृ. 29 पर कॉलम 1)

इस भविष्यवाणी के अनुसार उग्रवादजन्य हिंसक घटनाओं में श्रीमती बेनज़ीर भुट्टो की 27 दिसम्बर, 2007 ई. को हत्या कर दी गई।

यद्यपि सभी भविष्यवाणियों की सफलता स्थानाभाव के कारण संभव नहीं है, पुनरपि– संवत् 2065 की अव्यभिचरित कुछ भविष्यवाणियों की चर्चा कर देना भी प्रासंगिक समझते है।

(1) भविष्यवाणी– " अप्रैल से जून के मध्य भूकम्प से हानि के योग बनते हैं"

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2065 वि., पृ. 24, कॉलम 2, स्टैंज़ा 2)

तदनुसार 12 मई, सन् 2008 ई. को चीन में भयंकर भूकम्प से 50 हजार व्यक्तियों की मृत्यु हुई एवं लाखों बेघर हो गए।

(2) भविष्यवाणी– " अप्रैल से जून के मध्य म्यांमार (बर्मा) में ....फौजी सरकार के लोकतन्त्र विरोधी दमनात्मक रवैय्ये से जनधनहानि के योग हैं। इन दिनों भूकम्प..... से कहीं हानि के भी योग हैं।

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2065 वि., पृ. 24, कॉलम 2, स्टैंज़ा 2)

ठीक, इस भविष्यवाणी के अनुसार फौजी शासन ने यहां भारी दमनात्मक रवैय्या अपनाया हुआ है और खास म्यांमार में 3 मई, 2008 ई. को भीषण भूकम्प से लाखों नागरिक मारे गए।

(3) भविष्यवाणी– "21 जून को मंगल सिंहराशि में आकर शनि के साथ एकराशि–सम्बन्ध बनाएगा। इस प्रकार शनि–मंगल 9/10 अगस्त, 2008 ई. तक एक–साथ चलेंगे। ग्रहस्थिति से स्पष्ट संकेत मिलता है कि– नेपाल में राजशाही के लिए सन् 2008 ई. का समय बहुत ही चिन्ताजनक परिस्थिति बना देगा। यहां जन असन्तोष से अराजकता की स्थिति को संभालना कठिन होगा। माओवादियों में बढ़ रहे असन्तोष से नेपाल की तराई में स्थित मधेशियों के विरुद्ध हिंसा एवं जनधनहानि के योग संवत्–मध्य में स्पष्ट दिखाई देते हैं। सं. 2008 ई. की ग्रहस्थिति नेपाल में गणतन्त्र के पक्ष में जाती है।"

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2065 वि., पृ. 24, कॉलम 2, स्टैंज़ा 3)

इस भविष्यवाणी की सत्यता सर्वविदित है। ठीक 21 जून से 10 अगस्त के मध्य नेपाल में ऐतिहासिक राजतन्त्र समाप्त हुआ और गणतन्त्र की स्थापना का श्रीगणेश हो गया। इसी बारे पृ. 29 पर की गई भविष्यवाणी भी कम आश्चर्यजनक नहीं। पढ़ें–

(4) भविष्यवाणी– "सरकार और माओवादियों के बीच राजशाही और चुनावप्रणाली पर सहमति में कठिनाई आएगी। यहां माओवाद फिर देश को कठिन परिस्थितियों में लाकर खड़ा कर देगा। माओवादियों के हिंसक काण्ड भारत सरकार के लिए चिन्ता का कारण बनेंगे। *इसवर्ष सन् 2008 ई. की प्रारम्भिक ग्रहस्थिति के अनुसार नेपाल में राजशाही की समाप्ति और एक स्वतन्त्र लोकतन्त्र की स्थापना सुनिश्चित है। लेकिन माओवाद यहां की शासनसत्ता पर किसी न किसी तरह काब्ज़ रहेगा।* "

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2065 वि., पृ. 24, कॉलम 2, स्टैंज़ा 2)

आज भी नेपाल में लोकतन्त्र के नाम पर शासन–सूत्र माओवादियों के अधीन है। इन उल्लिखि दो भविष्यवाणियों की सत्यता पर हमें नेपाल से भी अनेकों पत्र प्राप्त हुए हैं।

(5) भविष्यवाणी– "जुलाई–अगस्त सन् 2008 ई. में ....आतंकवादियों की गतिविधि से किसी विशिष्टव्यक्ति की मृत्यु किंवा पदच्युति का योग है।"

(i) इस भविष्यवाणी के अनुसार अफगानिस्तान में भारतीय दूतावास पर आत्मघाती हमला हुआ और राजदूत की मृत्यु हुई। इस हमले में एक भारतीय रक्षा–अधिकारी सहित 44 व्यक्ति मारे गए।

(ii) 9 जुलाई को टर्की में अमेरिकी दूतावास पर आक्रमण में तीन अधिकारियों की मृत्यु भी इस भविष्यवाणी की सत्यता की पुष्टि करती है।

(6) भविष्यवाणी– "अप्रैल, 2008 ई. से 20 जून, 2008 ई. तक मंगल–राहु का समसप्तक एवं 21 जून से 9 अगस्त, 2008 ई. तक सिंह राशि में शनि का मंगल के साथ एकराशि–सम्बन्ध यूरोप के किसी देशविशेष में भूकम्प, समुद्री तूफान आदि आपदाओं से भारी जनधनहानि का संकेत देता है। समुद्रतटवर्ती देश किंवा भूभाग को विशेष हानि पहुंचेगी।"

"('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2065 वि., पृ. 25 पर कॉलम 2)

(i) ठीक, इस भविष्यवाणी के अनुसार फिलिपीन्स में 22 जून को भयंकर तूफान से शिप दुर्घटनाग्रस्त हुआ, जिसमें 800 व्यक्ति एवं चालकदल मारे गए। 5 जुलाई, 2008 ई. को एक भयंकर समुद्री तूफान फ्रैंक से फिलिपीन्स में भयंकर विनाश को प्राप्त हुआ, जिसमें 119 के लगभग नौकाएं एवं लगभग 1500 व्यक्ति लापता हो गए।

(ii) 16 जून को यूरोप जा रही एक नौका लीबिया की समुद्री सीमा में डूब गई, 150 यात्री लापता हो गए।

जनाब मुशर्रफ साहिब के अपदस्थ होने की भविष्यवाणी– सं. 2065 वि. पृ. 26 "मुस्लिमराष्ट्र" शीर्षक के अन्तर्गत–

(7) भविष्यवाणी– "मुशर्रफ महाभाग के लिए यह वर्ष (2008 ई.) भयंकर परिणामों वाला रहेगा। मुस्लिम नववर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार सिंह राशि का तृतीयभावस्थ शनि सं. 2065 वि. के पूर्वार्ध में यहां ऐतिहासिक राजनैतिक हत्याकाण्ड से देश को असुरक्षित करेगा एवं शासनसत्ता चरमरा जाएगी। तालिबानी–उग्रवादी देश में भारी अशान्ति का कारण बनेंगे। पाकिस्तान में लोकतन्त्र बहाली के लिए जन–आन्दोलन

जनाब मुशर्रफ साहिब की कठिनाइयों को बढ़ा देगा।"

"('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2065 वि., पृ. 26 पर कॉलम 1)

जनाब मुशर्रफसाहिब को मजबूरन राष्ट्रपति पद छोड़ना पड़ा। आगे 25 सितंबर से 7 नवंबर एवं 7 मार्च से संवत् के अन्त तक और दुःखद घटनाएं संभावित हैं।

(7) भविष्यवाणी– "मुस्लिम नववर्ष ग्रहस्थिति के अनुसार आयेश–षष्ठेश मंगल सप्तमभाव में सूर्य के साथ है। मंगल हिजरी सन् का बादशाह भी है, जोकि "पतयस्त्रिषडायानां यदि पापफलप्रदा"– प्रमाणानुसार वर्ष कुण्डली में शुभ नहीं। संकेत मिलता है– अमरीका मुस्लिमराष्ट्रों पर अपना दबदबा बनाए रखेगा। मेष, बृष नामराशि वाले अफग़ानिस्तान, इराक एवम सिंह प्रभावराशि वाले फ्रांस, काबुल तथा कन्या प्रभावराशि वाले राष्ट्र टर्की, बगदाद (इराक), पाकिस्तान आदि राष्ट्रों में इसवर्ष भयंकर प्राकृतिक आपदा–भूकम्प, समुद्री तूफान आदि से जनधनहानि के भयंकर योग बनते हैं।

30 अप्रैल से 8 अगस्त, 2008 ई. तक; 25 सितम्बर से 7 नवंबर तक एवं 7 मार्च से संवत् के अन्त तक की ग्रहस्थिति मुस्लिम राष्ट्रों के लिए भयावह है एवम् किसी मुस्लिमराष्ट्र–विशेष में अघटित दुःखद घटनाचक्र का संकेत देती है।"

"('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2065 वि., पृ. 26 पर कॉलम 1)

ठीक, इस भविष्यवाणी के अनुसार 30 अप्रैल से 8 अगस्त तक पाक के जनाब मुशर्रफ साहिब को लाकतन्त्र बहाली के लिए जनान्दोलन का सामना करना पड़ा, विस्फोट, राजनैतिक हत्याकाण्ड भयंकर रूप धारण कर गए एवं शासनसत्ता चरमरा गई।

(8) 'जम्मू–काश्मीर में भयंकर हिंसात्मक घटनाचक्र की भविष्यवाणी' पढ़ें–

भविष्यवाणी– जम्मू–काश्मीर की नामराशि 'मकर' पर राहु की वर्षकुण्डलीगत स्थिति यहां के शासक वर्ग के लिए भयावह योग बनाती है। संवेदनशील क्षेत्रों में आतंकवाद में वृद्धि होगी। 30 अप्रैल से 20 जून तक मंगल–राहु का समसप्तकयोग एवं 21 जून से 18 अगस्त तक शनि–मंगल की पोजीशन, 27 जनवरी से संवत् के अन्त तक मंगल का सिंहस्थ शनि के साथ षडष्टक एवं समसप्तकयोग भारी हिंसात्मक घटनाओं वाला मालूम देता है। इस अवधि में सीमाप्रान्तों पर शत्रुदेश की गतिविधियां भारी अशान्ति का कारण बन सकती हैं। भारतविरोधी तत्त्व यहां उल्लिखित समयावधियों में अधिक सक्रिय हो सकते हैं। शासनतन्त्र को गहराई से इस पर दृष्टि रखनी होगी।

सर्वविदत है कि– उल्लिखित समयावधि में भयंकर हिंसाकाण्डों से केन्द्रीय शासन को हस्ताक्षेप करना पड़ा। आतंकवाद एवं धार्मिक समस्या को लेकर भारी जनधनहानि से केन्द्रीय नेतृत्व भी चिन्ताग्रस्त रहा है।

(9) अगस्त मास में बिहार में जलप्रलय की भविष्यवाणी–

(i) "1 अगस्त से 24 सितम्बर तक किसी प्राकृतिक दुर्घटना से जानी–माली नुक्सान होने का योग भी है।

"('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2065 वि., पृ. 24 पर कॉलम 2 अन्तिम पंक्तियां)

(ii) महाराष्ट्र, बिहार, गुजरात, उड़ीसा आदि प्रान्तों में कहीं भयंकर वर्षा से भारी जनधनहानि का संकेत मिलता है।

"('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2065 वि., पृ. 29 पर कॉलम 1, पंक्ति 4, 5)

ठीक, इस भविष्यवाणी के अनुसार बिहार में कोसी नदी ने प्रलयकारी दृश्य उपस्थित कर दिया। करोड़ों की संख्या में लोग बेघर हो गए। हजारों गांव खत्म हो गए। इस घटना को प्रधानमन्त्री जी को राष्ट्रीय आपदा घोषित करना पड़ा। पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र, उड़ीसा आदि में भी भारी वर्षा से जो हानि हुई है, वह भी सर्वविदित है।

पाठको ! श्रीमार्त्तण्ड पंचांग के माध्यम से की गईं या की जा रही भविष्यवाणियों की सफलता का श्रेय जो आप हमें दे रहे हैं, वह सब पूर्वाचार्यों एवं ज्योतिष शास्त्र के मर्मज्ञ गुरुचरणों की कृपा ही है या जनताजनार्दन के सौहार्द का परिणाम। हम उन पाठकों के भी आभारी हैं, जो विभिन्न प्रान्तों से पत्राचार द्वारा भविष्यवाणियों की सफलता पर बधाई भेजकर हमें भावी वर्षों में ग्रहगतिजन्य संकेतों के आधार पर कुछ न कुछ लिखने के लिए प्रेरित करते रहते हैं।

संवत् 2066 वि. की ग्रहपरिषद् के अधिकारियों का विश्व पर प्रभाव

विज्ञान 'कार्य–कारण के सिद्धान्त' पर आधारित है। परन्तु असंख्य घटनाएं ऐसी हैं, जिनका कारण समझने एवं समझाने में चोटी के वैज्ञानिक अपने आपको सर्वथा असमर्थ पा रहे हैं। सिद्धांतों के व्यभिचारमात्र से ज्योतिष शास्त्र की वैज्ञानिकता का प्रतिवाद नहीं किया जा सकता। ज्योतिष चिरन्तन सत्य–सिद्धांतों पर आधारित एक विज्ञान है, जिसमें अभी अत्यधिक अनुसंधान की आवश्यकता है।

जिस तरह पृथ्वी पर लोकतांत्रिक राज्य की स्थापना के लिए प्रधानमंत्री आदि के चुनाव होते हैं और उन निर्वाचित व्यक्तियों के गुण–कर्म–स्वभाव–योग्यता का प्रभाव उनके अधिकृत क्षेत्रों एवम् शासनतंत्र पर पड़ता है, इसी प्रकार अखिलेश्वर प्रभु की इच्छा से निर्मित आकाशीय शिशुमार चक्रस्थ ग्रहों की परिषद् में संसारचक्र को चलाने के लिए प्रतिवर्ष दिव्य एवं अद्भुत शक्तिमती 'आकाशी कौंसिल' का निर्माण होता है। इस आकाशीय कौंसिल में ग्रहों की शुभाशुभ प्रकृति के अनुकूल संसार में जो उलट–फेर एवं अघटित घटनाएं होती हैं, इस घटनाचक्र को त्रिकालज्ञ दैवज्ञों द्वारा लिखित ग्रन्थों के आधार पर वि. सं. 2066 की ग्रहस्थिति के अनुसार कुछ लिखने की चेष्टा कर रहे हैं।

संवत् 2066 वि. शुक्र द्वारा शासित वर्ष है एवं इसवर्ष की आकाशी कौंसिल में क्रूरग्रहों को 6 पद प्राप्त हुए हैं। ग्रहपरिषद् में क्रूर एवं सौम्य ग्रहों को ध्यान में रखते हुए यह ग्रहपरिषद् सन्तुलित सत्ता वाली प्रतीत नहीं होती।

संवत् 2066 वि. का राजा शुक्र (दैत्यगुरु) है। मन्त्री पद चन्द्र को प्राप्त है। लेकिन शुक्र एवं चन्द्र दोनों में परस्पर ऐकमत्य नहीं है, क्योंकि ये परस्पर सम+शत्रु भाव व्यक्त करते हैं। इस ग्रहपरिषद में संवत् के प्रधान दैत्यगुरु शुक्र के 7 ग्रह शत्रु हैं। लेकिन ग्रहपरिषद् में

6 पद क्रूर ग्रहों और 4 पद शुभ ग्रहों को प्राप्त हैं। इसवर्ष सूर्य को तीन (पद) प्राप्त हैं, जो

6 पद क्रूर ग्रहों और 4 पद शुभ ग्रहों को प्राप्त हैं। इसवर्ष सूर्य को तीन (पद) प्राप्त हैं, जो कि सबसे महत्वपूर्ण हैं। सूर्य को मेघेश, फलेश एवम् सब से महत्वपूर्ण पद दुर्गेश भी प्राप्त है। ग्रह–परिषद् के विचार से यहवर्ष प्रधान शासकों के लिए काफी प्रतिकूल मालूम देता है। इसवर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार न्यायपालिका और शासन प्रचालक पद्धति में काफी मतभेद उजागर हो सकते हैं। इस प्रकार कार्यपालिका और न्यायालिका में मतभेद से देश की स्थिति का सुधार करने के लिए विशेष कानून बनाने पड़ेंगे।

सेनाध्यक्ष सूर्य होने से सीमाप्रान्तों पर शत्रुकृत् कुचाल से वातावरण अशान्त हो सकता है। मुस्लिम देशों में अघटित घटनाचक्र चलेगा। पाक आदि देशों में कहीं राष्ट्राध्यक्ष की हत्या से अशान्ति व्याप्त हो सकती है। निश्चय ही यह वर्ष प्रमुख नेताओं के लिए संकटापन्न स्थितियों को लेकर आ रहा है।

किसी महत्वपूर्ण देश के नेतृत्व में परिवर्तन होने से भारत की प्रगति को बल मिलेगा। क्योंकि राजा शुक्र का इस ग्रहपरिषद् में एकमात्र शनि ही मित्र है, इसलिए महंगाई से (व्यवस्थापिका) जनता को परेशानी का सामना करना होगा। लेकिन नीरसेश और सस्येश गुरु होने से खाद्यपदार्थों की आपूर्ति के लिए शासन प्रयास करेगा।

जैसाकि गतवर्ष के पंचाङ्ग में पृष्ठ 23 पर स्पष्ट घोषणा की गई थी– **"संवत् 2065 वि. में ग्रह परिषद् की स्थिति और भी अधिक असन्तुलित हो जाने से विश्व के बड़े एवं मुस्लिम देशों में अघटित–घटनाचक्र चलेगा। इसवर्ष देश–विशेष में प्रमुख शासक–नेता व राष्ट्राध्यक्ष की हत्या व निधन से शोक की लहर दौड़ेगी। यह वर्ष कुछ देशों व प्रान्तों के प्रमुख नेताओं के लिए विशेष संकटापन्न स्थितियों को लेकर उपस्थित हो रहा है। कहीं वर्षेश चन्द्र होने पर अनेक प्रान्तों में चावल आदि बहुजलीय अन्न काफी होंगे। नए नेतृत्व के उदय से किसी देश–विशेष में राष्ट्रीय पार्टी को विशेष बल मिलेगा।"– ठीक, इस घोषणा के अनुसार परमाणु–करार पर प्रधानमन्त्री जी के संकटापन्न स्थितियों का सामना करना पड़ा था। इसी वर्ष पाक में नए नेतृत्व का उदय होने से प्रजातंत्र को बल मिला है।** मुस्लिम राष्ट्रों में अघटित घटनाचक्र चला है, वह सर्वविदित ही है।

संवत् 2066 वि. की ग्रहपरिषद् में सूर्य को अधिक महत्त्व प्राप्त है। सेनाध्यक्ष पद पर एवम् मेघेश होने पर सूर्यस्थिति अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। क्योंकि शुक्र सूर्य का शत्रु है। इसलिए शासन–सत्ता में तालमेल नज़र नहीं आता। कहीं नीतिसम्बन्धी मतभेद उजागर होंगे। कहीं मन्त्रिमण्डल में मतभेद होने से मन्त्रिमण्डल भंग होने के भी योग बन सकते हैं। कुछ राष्ट्रों में नीतिसम्बन्धी मतभेद से सीमासम्बन्धी विवाद खड़े होंगे। शुक्र वामपन्थी दलों का प्रतिनिधित्व करता है, जोकि फरवरी से मई, सन् 2009 ई. तक की अवधि में विभिन्न दलों में सिद्धान्त मतभेद होने पर भी राजनैतिक स्वार्थपरकता के कारण शासनसत्ता में भागीदार बनाने के लिए मजबूर कर सकता है। इसवर्ष मंगल और शनि की स्थिति मुस्लिमराष्ट्र–विशेष में कहीं उग्रवादजन्य राजनैतिक हत्याकाण्ड, कहीं युद्धपरक नीति से अशान्ति का कारण बनेगी। पाक आदि मुस्लिम– राष्ट्रों में उग्रवादजन्य परेशानी **बढ़ेगी, जिसका समाधान सहज प्रतीत नहीं होता।**

संवत् 2066 वि. की गोचर ग्रहस्थिति एवं जगत् लग्न कुण्डली के अनुसार विश्वजनीन घटनाओं पर एक नज़र

जगत्लग्न कुण्डली पर विचार करने से ज्ञात **होता है कि– नीच गुरु जगत्लग्न कुण्डली में लग्नेश होकर द्वितीय भाव** में राहु **की सन्निधि में है।**

तृतीयभाव में कुम्भराशिस्थ मंगल **सिंहराशिस्थ शनि के साथ समसप्तक**योग बना रहा है। **इसलिए विश्व के प्रमुख राष्ट्रों** की राजनीति में विशेष **परिवर्तन** संभव है। विरोधी किंवा शक्तिसम्पन्न राष्ट्र अपनी प्रभुसत्ता को स्थापित करने के लिए भरपूर प्रयास करेंगे। अमेरिका की राजनीति में कहीं विशेष परिवर्तन के योग बनते हैं एवम् मुस्लिमराष्ट्रों के साथ अमेरिका का किसी विशेष देश के साथ राजनैतिक बदलाव दिखाई देगा।

यहां अमेरिका के राजनैतिक चक्र में ऐतिहासिक परिवर्तन संभव है, लेकिन शनि–मंगल का समसप्तकयोग आषाढ, श्रावण, भाद्रपद एवम् मार्गशीर्ष किंवा पौष मास में किसी प्रधान नेता पर भारी संकट ला सकता है। पाक, इराक, इरान, अफग़ानिस्तान में विशेष समस्याएं सामने आएंगी। जगत् कुण्डली में शनि–मंगल की स्थिति के अनुसार कहीं राजनैतिक हत्याकाण्ड, सैन्यशासन, उग्रवादन्य परेशानी से अनेकत्र वातावरण अशान्त रहेगा। प्रभावराशि मकर वाले भारत के लिए बृहस्पति शुभ है। प्रभावराशि कन्या वाले मुस्लिमराष्ट्र पाकिस्तान एवम् अन्य मुस्लिमराष्ट्र अफगानिस्तान, बंगलादेश, सीरिया, इराक, इज़राइल, श्रीलंका किंवा पश्चिम एशिया के कुछ देशों में इसवर्ष रक्तपात की सम्भवना को गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार नकारा नहीं जा सकता।

जगत्कुण्डली में शनि–मंगल का समसप्तक भारत एवम् मुस्लिमराष्ट्रों के लिए भयावह स्थिति को जन्म दे सकता है। उग्रवादी भारत के प्रमुख महानगरों एवम् धार्मिकस्थलों को लक्ष्य बनाकर भारी जनधनहानि का कारण बन सकते हैं। प्रधान नेता एवम् प्रमुख व्यक्तियों के लिए यह वर्ष कठिन प्रतीत होता है।

यह वर्ष 'शुभकृत्' नामक संवत्सर के रूप में जाना जाता है। संवत् शुरू होने से पूर्व ही शासकवर्ग में शक्तिपरीक्षण की भावना प्रबल होगी। अनेक प्रकार के प्रलोभन–घोषणापत्र प्रसारित होंगे। अनेक प्रकार के उत्सव समायोजित होंगे। आतंकवाद एवम् चौरादि से हत्याकाण्डों में वृद्धि होगी–

"शुभकृद्वत्सरे पृथ्वी राजते विविधोत्सवैः।
आतंकचौरभयदा राजानः समरोत्सुकाः।।"

ज्येष्ठ, आषाढ़, भाद्रपद, मार्गशीर्ष और विशेषतः पौष मास विश्व के राजनैतिज्ञों के लिए विशेष कष्टप्रद सिद्ध हो सकते हैं।

संवत् 2066 वि. में सूर्य को सेनापतित्व प्राप्त है। सूर्य सिंह राशि का मालिक है, जिसमें वर्षेश कुण्डली में शनि स्थित है। शनि की दृष्टि दक्षिण दिशा की तरफ ही रहेगी। कन्या, मकर, मेष एवम् तुला राशि वाले देश इसवर्ष शनि की नज़र में ही रहेंगे। स्पष्ट है कि– भारत, अमेरिका, पाक, अफगानिस्तान एवम् इराक, इरान में विशेष हत्याकाण्ड एवम् उग्रवादजन्य परेशानी दिखाई देगी। दक्षिणी–गोलार्ध के देशों में राजनैतिक एवम धार्मिक उलझनें विकटरूप धारण करेंगी। किसी देशविशेष में भयंकर प्राकृतिक आपदा, समुद्री तूफान, भयंकर भूकम्प और बाढ़ आदि से भारी हानि होने का संकेत मिलता है।

संवत् 2066 में मुस्लिम (हिजरी) सन् 1431 का बादशाह शनि ही है। कुछ मुस्लिम राष्ट्रों में युद्धमय वातावरण या आन्तरिक क्रान्ति से विश्व के प्रमुख राष्ट्रों में चिन्ता रहे। जनधनहानि किंवा प्राकृतिक प्रकोप से भारी हानि भी हो। विश्व के कुछ देशों में भूकम्प, समुद्री तूफान किंवा राजनैतिक हत्याकाण्ड से हानि की सम्भावना है। देश में नानाप्रकार के रोग फैलेंगे। शनि–मंगल–इतवार एवम् गुरुवार वाले दिन किसी विशिष्ट व्यक्ति की मृत्यु से शोक व्याप्त हो।

23 मई को मंगल मेषराशि में दाखिल होगा। 14 जून तक की ग्रहस्थिति के अनुसार कहीं वायुवेग से हानि हो एवम् अमेरिका, इराक, इरान, पाक आदि में दुःखद घटना घटित हो।

15 जून को कुम्भ राशि का बृहस्पति वक्री हो जाएगा। 21 जून को सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में दाखिल होगा। 22 जून को मृगशिर नक्षत्र में सोमवती अमावस का होना सुभिक्षकारक है, लेकिन 29 जून तक कहीं जोरदार वर्षा या प्राकृतिक प्रकोप से हानि के योग बनते हैं।

29 जून को शुक्र वृषराशि में प्रवेश करेगा एवम् 3 जुलाई को मंगल भी वृष राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। इस समय शुक्र–मंगल पर शनि की पूरी नज़र है। इस समय बुध का अतिचार भी शुरु हो चुका है, जोकि 22 जुलाई तक चलेगा। इस समयावधि में यानदुर्घटना, किसी महान् व्यक्ति की मृत्यु, भूकंप, समुद्री तूफानादि से जनधनहानि के योग बनते हैं।

26 जुलाई को शुक्र मिथुन में आएगा एवम् बुध पश्चिम में उदित होगा। 30 जुलाई को बुध सिंह राशि में आकर शनि के साथ मेल करेगा और वक्री गुरु फिर से मकर राशि में दाखिल होकर राहु के साथ मेल करेगा। 21 अगस्त को शुक्र कर्क राशि में आकर गुरु एवम् राहु के साथ समसप्तकयोग बना लेगा। इस प्रकार 30 जुलाई से लेकर 9 सितम्बर तक की ग्रहस्थिति के अनुसार विश्व में बहुत अघटित घटनाचक्र चलेगा। अनेकत्र उग्रवादजन्य हत्याकाण्ड, बम्बविस्फोट, भूकम्प एवम् अन्य आपदाओं से भारी जनधनहानि के योग बनते हैं। इस अवधि में किसी यावनदेश में सत्तापरिवर्तन भी संभव है।

9 सितम्बर (सन् 2009 ई.) की रात्रि में शनि कन्याराशि में आकर गुरु की दृष्टि में आ जाता है। इस समय मंगल और शनि का दशम–चतुर्थसम्बन्ध शुरु हो जाता है, जो कि–3 अक्तूबर तक बना रहेगा। इस समय अमेरिका, ब्रिटेन, पाक, अफगानिस्तान में प्रधान नेता को कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। इस अवधि में विश्व को स्तब्ध कर देने वाली कोई घटना घटित हो जाए, तो कोई आश्चर्य नहीं।

5 अक्तूबर को मंगल कर्क(नीच) राशि में आकर नीच गुरु एवम् राहु के साथ समसप्तकयोग बनाएगा। 17 नवं. को राहु मकर राशि से निकलकर धनु राशि में आ जाएगा। इस ग्रहस्थिति के अनुसार उग्रवाद को शान्त करने के लिए अनेक योजनाएं बनाई जाएंगी। सीमाप्रान्तों पर सैन्यवृद्धि चिन्ताजनक होगी और विश्व के प्रमुख व्यक्तियों के सामने कठिन स्थिति बन सकती है।

7 दिसम्बर को नेप्च्यून कुम्भ राशि में प्रवेश करेगा और 19 दिसं. को गुरु भी कुम्भ राशि में दाखिल होगा। 20 दिसम्बर, 2009 ई. से 14 जनवरी, 2010 तक मंगल एवम् बुध वक्री चलेंगे। इससे पहले 13 जनवरी को शनि भी वक्री हो जाता है। ध्यान दें– 13 जनवरी, 2010 से 9 मार्च, 2010 ई. तक शनि, मंगल– दोनों वक्री रहेंगे। यह समय विश्वव्यापी घटनाचक्र में अमूतपूर्व कठिन परिस्थियों वाला सिद्ध होगा। कुछ धार्मिक व राजनैतिक समस्याएं हल होती ज़रूर नज़र आएंगी, लेकिन मानवबम्ब या आतंकवादजन्य दुःखद घटनाओं से वातावरण अशान्त हो उठेगा। इस समय आतंकवाद दुनिया की प्रमुख समस्या अनुभव होगी, समाधानार्थ नई–नई योजनाएं बनेंगी, तदर्थ सम्मेलन भी होंगे। क्रूरग्रहों की चाल के अनुसार यावनराष्ट्रों के लिए समय बहुत भयावह है। कहने का तात्पर्य यह है कि– समय अघटित घटनाचक्र को लेकर उपस्थित होगा। कहीं दो देशों में किसी प्रभावशाली देश के निर्देश पर युद्धाग्नि से विनाशलीला देखने को मिलेगी। कहीं प्रमुख व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त होगा।

यूरोप के देश

कुण्डली नं. (1)– यूरोपीय देशों की कुण्डली नं. (1) की ग्रहस्थिति के अनुसार यूरोप के मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, धनु, मकर, प्रभावराशि वाले देशों में कहीं भारी समुद्री–तूफान, विनाशकारी भूकम्प किंवा उग्रवादजन्य उपद्रवों से भारी जनधनहानि के योग बनते हैं। मकरस्थ गुरु और राहु एकसाथ हैं और 13 जनवरी को सूर्य मकर राशि में

आकर गुरु व राहु के साथ मेल करेगा। 27 जनवरी मंगलवार को मंगल भी मकर राशि में आकर शनि पर दृष्टिपात करेगा। यह ग्रहस्थिति यूरोप के किसी देशविशेष में भूकम्प, समुद्री तूफान आदि आपदाओं से भारी जनधनहानि का संकेत देती है। इस समय समुद्रतटवर्ती देश किंवा समुद्रतटवर्ती भूभाग को विशेष हानि पहुंचेगी।

10 फरवरी को गुरु उदय होगा एवम् 13 फरवरी को नेप्च्यून कुम्भ राशि में दाखिल होगा। विशेषतः 7 मार्च को मंगल कुम्भ राशि में आकर शनि के साथ 13 अप्रैल तक समसप्तकयोग बनाता रहेगा। ब्रिटेन की शासनसत्ता एवम् अमेरिका की हकूमत में उच्चपद पर परिवर्तन के योग बनते हैं। कुछ देशों में युद्ध व किसी देश में प्राकृतिक आपदा या आतंकवाद से अशान्ति एवम् जनधनहानि के योग भी हैं। शनि के समसप्तकयोग की अवधि में यूरोपीय देशों के शासक आतंकवाद पर नुकेल डालने की विवशता अनुभव करेंगे।

13 अप्रैल से 22 मई तक शनि–मंगल का षडष्टकयोग बनता है। आगे 3 जुलाई से 15 अगस्त तक शनि–मंगल का दशम–चतुर्थसम्बन्ध यूरोपीय देशों के लिए विशेष भयावह प्रतीत होता है। इस अवधि में आगज़नी, विस्फोट, भूचाल, बाढ़, समुद्री लहरों, तूफान आदि से यूरोपीय देशों को भारी हानि झेलनी पड़ सकती है। 9 सितम्बर से शनि कन्या राशि में आकर 4 अक्तूबर तक मंगल के साथ दृष्टिसम्बन्ध बनाए रखेगा।

यूरोपीय देशों में इस 3 जुलाई से 15 अगस्त तक की समयावधि में किसी विशेष व्यक्ति की हत्या का अंदेशा है। इस अवधि में उग्रवादियों की कुनीति का शिकार कोई विशेष राजनीतिज्ञ बन सकता है। यानदुर्घटना किंवा भयंकर प्राकृतिक प्रकोप से भारी जनधनहानि भी संभव है। अक्तूबर से दिसम्बर, 2009 ई. तक की ग्रहस्थिति कर्क, कन्या, तुला, मकर, राशि वाले देशों के लिए विशेष कष्टप्रद रहेगी।

कुण्डली नं. (2) के अनुसार यूरोपीय देशों का नववर्ष चन्द्रग्रहण की छाया में शुरु हुआ है। लग्नेश बुध और धनेश एवम् नवमेश शुक्र– दोनों अस्त हैं। तृतीयेश और अष्टमेश मंगल आमदन भाव में नीच है। यह ग्रह स्थिति इन देशों में व्यापारिक क्षेत्रों की दृष्टि से विशेष प्रगतिप्रद मालूम देती है। क्योंकि धनस्थान पर गुरु की विशेष दृष्टि है और कर्मस्थान पर भी गुरु की दृष्टि है, संघर्षमय स्थिति में भी ये देश अग्रेसर होते नजर आएंगे। जर्मनी, नौर्वे, फ्रांस, डेनमार्क, स्पेन, हॉलैण्ड, यूक्रेन आदि यूरोपीय देश ग्रहस्थिति के अनुसार अच्छी प्रगति करेंगे। लेकिन उग्रवाद से कहीं भारी अशान्ति संभव है।

13 जनवरी से 28 अगस्त तक की ग्रहस्थिति–अनुसार यूरोपीय देश काफी अग्रेसर होंगे। यूरो की कीमत में बढ़ोतरी होगी। 6 फरवरी से लेकर संवत् के अन्त तक गुरु, शुक्र का अतिचारी होना एवम् शनि का वक्री होना यूरोपीय देशों में कहीं संघर्ष की स्थिति पैदा करेगा।

मुस्लिम राष्ट्र

कुण्डली नं. (1) के अनुसार– 29 दिसम्बर, सन् 2008 ई. वाले दिन से अगले दिन (अर्थात् चन्द्रदर्शन से अगले दिन) 30 दिसम्बर, 2008 ई. मंगलवार को मुस्लिम नववर्ष (हिजरी सन् 1430) का प्रारम्भ सायं 17 घं. 26 मि. पर होगा। अतः इस्लामी मतानुसार हिजरी सन् 1430 का बादशाह मंगल है।

इस वर्ष पाक, ईरान, इराक, कुवैत, मालदीव आदि मुस्लिम देशों में उग्रवाद द्वारा भारी जानमाल की हानि का योग बनता है। आतंकवाद मुस्लिम राष्ट्र विशेषतः पाक में विशेषरूप से खतरा पैदा कर सकता है। I.S.I. के एजेंट यहां की रक्षात्मक पंक्ति को भी खराब कर सकते हैं और पाक के अन्दर विस्फोट एवम् हिंसा खतरनाक सिद्ध हो सकती है। यहां के प्रधान जनाब ज़रदारी साहिब और दूसरे किसी वृश्चिक राशि के नेता के जीवन को खतरा पैदा हो सकता है। पाक में सरकार अल्पमत में आने से जल्दी ही सत्तापरिवर्तन या फौजी शासन की सम्भावना भी बन सकती है। प्रधानमन्त्री जनाब गिलानी साहिब एवम् पूर्व राष्ट्रपति जनाब मुशर्रफ साहिब के जीवन को भी खतरा बन सकता है। आतंकवादी हिंसा के विरुद्ध पाक को सन्नद्ध होना पड़ेगा, अन्यथा देश की स्थिति बड़ी चिन्तनीय हो सकती हैं।

कुण्डली नं. (2) के अनुसार– हिजरी सन् 1431 का राजा शनि है। शनि कन्या राशि में स्थित है। कन्या राशि पाक की नाम राशि है। मंगल और गुरु नीच हैं। इस स्थिति में 19 दिसम्बर के बाद संवत् के आखिर तक अमेरिका मुस्लिम राष्ट्रों पर अपना दबदबा बनाए रखेगा। आतंकवाद को समाप्त करने के लिए सख्त कार्यवाई सम्भव है। मेष, वृष राशि वाले देश अफग़ानिस्तान, इराक एवम सिंह राशि वाले देश एवं प्रदेशों फ्रांस, काबुल तथा कन्या प्रभाव राशि वाले प्रदेश/राष्ट्र टर्की, बग़दाद, पाक आदि राष्ट्रों में इसवर्ष भयंकर प्राकृतिक आपदा, भूकम्प, समुद्रीतूफान आदि से जनधनहानि के योग भी बन रहे हैं।

दोनों कुण्डलियों के चिन्तन से ज्ञात होता है कि–मार्च, सन् 2009 ई. से 13 अप्रैल

तक; 3 जुलाई से 15 अगस्त तक एवं 9 सितंबर से 4 अक्तूबर तक यहां उपरोक्त राष्ट्रों एवं प्रदेशों में विशेष राजनैतिक परिवर्तन एवम् उग्रवादजन्य अशान्ति पैदा होने के योग हैं।

संवत् के अन्त का समय कुछ मुस्लिम राष्ट्रीय नेताओं एवं उनके जनजीवन के लिए ग्रहगोचर के अनुसार भारी प्राकृतिक आपदा, यानदुर्घटना किंवा विशिष्ट राजनीतिज्ञों के लिए विशेष कष्टप्रद व हत्याकाण्डों वाला प्रतीत होता है।

अमेरिका की राजनैतिक गतिविधियां

अमेरिकी जन्मकुण्डली में जन्मलग्नेश गुरु की लग्न पर पूर्ण दृष्टि है, मिथुनराशि के शुक्र मंगल भी लग्न को देख रहे हैं। 3 मार्च, 2009 ई. से मंगल की महादशा चलेगी, जोकि सैनिक गतिविधियों से इस देश को हुई क्षति एवं बिगड़ी इमेज को सुधारने की आवश्यकता की अनिवार्यता अनुभव कराएगी।

20 जनवरी, 2009 ई. के लगभग अमेरिका के नए राष्ट्रपति का चयन होने जा रहा है। इस पद के प्रबल दावेदार श्री बराक ओबामा एवं श्री जॉन मैक्केन– ये दो व्यक्ति हैं। इनके यथालब्ध जन्माङ्गों के आधार पर विचार करना अनिवार्य है।

श्री जॉन मैक्केन के जन्माङ्ग में भाग्येश शुक्र सूर्य के साथ व्ययभाव में नीच की तरफ जा रहा है। लेकिन नवांश में शुक्र धनुराशि में केतु–मंगल के साथ है। श्री जॉन मैक्केन का कर्मेश बुध जन्मलग्न में उच्च है, लेकिन नवांश में नीच। इनकी दशानुसार इस समय शनि में गुरु का अन्तर एवं राहु का प्रत्यन्तर मार्च 2009 ई. तक चलेगा। यह ग्रहस्थिति उच्च पदाप्तियोग बनाती अवश्य है, लेकिन प्रतिद्वन्द्वी प्रत्याशी के जन्माङ्ग पर विचार के बाद ही निर्णय देना उचित होगा।

श्री बराक ओबामा की जन्मकुण्डली में भाग्येश बुध कर्मस्थान में अपने मित्र सूर्य के साथ स्थित है, इस पर गुरु–शनि की दृष्टि भी है। गुरु की कर्मस्थान पर उच्चदृष्टि महत्त्वपूर्ण है। ध्यान दें– जनवरी 2009 ई. में जब अमेरिका में राष्ट्रपतिपद का निर्वाचन होगा, उस समय गुरु मकर राशि में स्थित होकर उच्चदृष्टि से श्री बराक ओबामा के कर्मस्थान को देखेगा और कर्मेश चन्द्र (जोकि इनके जन्माङ्ग में उच्च होकर अष्टम भाव में स्थित है) पर भी गुरु की विशेष दृष्टि पड़ेगी। शनि में गुरु का अन्तर मई 2009 ई. के लगभग तक प्रभावित करेगा। आगे बुध (श्रीबराक ओबामा के भाग्येश) की दशा निश्चितरूप से कुछ कर दिखलाने की क्षमता देगी एवं यशप्रद रहेगी।

उल्लिखित यथालब्ध दोनों प्रतिद्वन्दियों की कुण्डलियों के विश्लेषण से श्री बराक ओबामा राष्ट्रपतिपद के समर्थ दावेदार सिद्ध होंगे–ऐसा विचार है। सर्वज्ञ तो प्रभु ही है।

श्री बराक ओबामा महाभाग के जन्माङ्ग में मंगल सप्तमेश एवं द्वितीयेश (मारकेश) होकर, गोचर में शनि के साथ सिंह राशि में चलता रहेगा, जोकि 9 सितं. 2009 ई. तक एक साथ चलेंगे। इस अवधि में इनके जीवन के लिए भयप्रद ग्रहस्थिति बन रही है। इनको अपनी सुरक्षाव्यवस्था पर विशेष ध्यान देना होगा।

संवत् 2066 वि. की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत एवं भारत सरकार में घटित होने वाले घटनाचक्र का आकलन

"संसार का प्रत्येक परमाणु एक निर्धारित नियम से विलग नहीं हो सकता। एक सूक्ष्मतम परमाणु में यदि तनिक अव्यवस्था किंवा अनुशासनहीनता आ जाए, तो विराट् ब्रह्माण्ड एक क्षण के लिए भी न टिक सके। एक क्षणिक विस्फोट से अनन्त प्रकृति अग्नि–ज्वालाओं से अतिरिक्त कुछ न रहे।" इस प्रकार समस्त घटनाचक्र एवं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को संचालित करने वाला ग्रहपुञ्ज प्रकृति किंवा ईश्वर के अनुशासित कार्यक्रम का एक निदर्शन है, जोकि– गोचर ग्रहगति के संकेतानुसार हमें प्रतिवर्ष कुछ लिखने को प्रेरित करता है।

स्वतन्त्र भारत का 62 वां वर्ष

इसवर्ष स्वतन्त्र भारत का 62वां वर्ष 14 अगस्त, 2008 ई., गुरुवार को $15^{h.}$ $19^{m.}$ पर प्रारम्भ हो रहा है। स्वतन्त्र भारत के 62वें वर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार धनस्थानेश गुरु धनस्थान में भाग्येश चन्द्र के साथ मिलकर 'गजकेसरीयोग' बना रहा है, जोकि भारत की आर्थिक सम्पन्नता में भारी अभ्युदय का संकेत देता है। बृहस्पति की कर्मस्थान पर दृष्टि एवं कर्मेश सूर्य की भाग्यस्थान में स्थिति भी केन्द्रीय शासनसत्ता में नए समीकरणों के साथ फरवरी–मार्च, 2009 ई. के लगभग नए किंवा आश्चर्यजनक परिवर्तन का संकेत देती है।

वर्षाङ्ग में कर्मक्षेत्र में शनि, शुक्र, बुध की स्थिति इसवर्ष भारतीय शासनतन्त्र के लिए कुछ नए विवादों को आमन्त्रण देगी। मुस्लिम

बहुल क्षेत्रों में मुस्लमानों को ज्यादा आरक्षण आदि की समस्या (अपने वोट बैंक की रक्षार्थ) कई पार्टियों के सामने अनेक कठिनाइयों को पेश करेगी। अनुसूचितजाति, जनजाति एवं पिछड़े– वर्गों को निजीक्षेत्रों की नौकरियों में आरक्षण का मुद्दा भी गर्माएगा। आगामी ग्रहस्थिति के अनुसार सुश्री मायावती का आरक्षण से सम्बन्धित फैसलों तथा कूटनीतिक चालों से सन् 2008–09 ई. के लोकसभा चुनाव में केन्द्रीय सत्ता की वैकल्पिक दावेदारी का भय बड़ी पार्टियों के सामने उपस्थित होगा। लेकिन बसपा को लाभ होने पर भी आगे बढ़ने के लिए अभी समय लगेगा।

संवत् 2065 वि. में अगस्त, 2008 ई. की वर्षकुण्डली के अनुसार 21 जून से 10 अगस्त, 2008 ई. तक, 24 अगस्त से 15 सितंबर तक तथा 25 सितंबर से 16 अक्तूबर, 2008 ई. तक भारतीय राजनीति में विशेष चिन्तनीय समस्याएं उपस्थित होंगी। प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प, समुद्रीतूफान किंवा विस्फोट आदि से भारी जनधनहानि के योग बनेंगे। किसी विशिष्ट व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त होगा। 12 फरवरी, 2009 ई. से संवत् 2065 वि. के अन्त तक सरकार व गृहमन्त्रालय मंहगाई से त्रस्त जनसाधारण का विश्वास जीतने में असफल रहेगा। महानगरों में हो रहे विस्फोट केन्द्रीय शासन की असफलता का संकेत देंगे। राज्यों में पोलिसतन्त्र एवं सुरक्षा–सूत्रों को मज़बूत करने के लिए विशेष पग उठाने होंगे।

स्वतन्त्र भारत का 63 वां वर्ष

स्वतन्त्र भारत के 63वें वर्ष का उदय 14 अगस्त, 2009 ई. को रात्रि में 21घं. 28मि.(भा.स्टैं.टा.) पर हो रहा है।

63वें वर्ष की कुण्डली में शनि–मंगल का दशम–चतुर्थसम्बन्ध आतंकवाद को विभिन्नरूपों में उजागर करेगा। महाराष्ट्र, उड़ीसा, उत्तरप्रदेश, आसाम, दिल्ली, केरल में कहीं धार्मिक उन्मार्ग, कहीं टाईमबम्ब, कहीं विद्वेषमूलक प्रवृत्ति कहीं जातीय संघर्ष से यह वर्ष कठिन परिस्थितियों वाला रहेगा।

9 सितंबर से 18 दिसंबर तक कहीं भूकम्प, समुद्री तूफान, यानदुर्घटना एवं उग्रवादियों के आतंक आदि से भारी जनधनहानि आदि का योग बनता है। 13 जनवरी, 2010 ई. से 9 मार्च, 2010 तक शनि–मंगल दोनों वक्रगति से चलते हैं, जोकि सीमाप्रान्तों पर चीन–पाक की फौजी हलचल से परेशानी पैदा करेंगे।

भारतीय गणतन्त्र का 60वां वर्ष

भारतीय गणतन्त्र के 60वें गणतन्त्र की ग्रहस्थिति के अनुसार अष्टमभावेश गुरु अपनी नीचराशि मकर में सू., चं., रा. एवं बु. के साथ स्थित है। गुरु–मंगल अस्त हैं। भाग्येश–कर्मेश एवं मुंथेश शनि वक्र स्थिति में हैं।

संकेत मिलता है कि– जनवरी, सन् 2009 ई. से आगे 10 फरवरी के लगभग तक एवं 7 मार्च, 2009 ई. से 13 अप्रैल तक किसी विशेष घटना से किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त होगा। किसी प्राकृतिक आपदा, भूकम्प आदि से भारी जनधनहानि का योग भी बनता है। मई से 15 जून, 2009 ई. तक एवं 3 जुलाई से 5 अक्तूबर तक की ग्रहस्थिति भी भारतीय गणतन्त्र के लिए राजनैतिक दृष्टि से कठिन परिस्थितियों वाली है। लेकिन मुन्थेश शनि की मुन्था पर दृष्टि एवं शनि–शुक्र का समसप्तकयोग भारत की महिमा एवं वर्चस्व को अहर्निश प्रगतिपथ पर रखेगा। भारतीय गणतन्त्र की राष्ट्रपति महाभागा की छत्रच्छाया में देश हरेक समस्या को हल करने में समर्थ रहेगा।

17 नवंबर, 2009 ई. से संवत् के अन्त तक की ग्रहस्थिति के अनुसार विश्व के प्रमुख राष्ट्रविशेष में दुःखद घटना से भारत का राजनीतिक परिदृश्य प्रभावित हो सकता है।

संवत् 2066 वि. की गोचर–ग्रहस्थिति का भारत पर प्रभाव

सम्पूर्ण विश्व 'कार्य–कारण सिद्धान्त' पर अपनी गतिमत्ता बनाए हुए है। ज्योतिषशास्त्र 'ग्रहस्थिति' को कारण मानकर सम्पूर्ण विश्व में संचालित घटनाचक्र का आकलन करता है।

'श्रीमद् भागवत् पुराण' के चतुर्थ स्कन्ध के श्लोक नं. 17 में स्पष्टरूप से घोषित किया है कि–निर्गुण परामात्मा तो संसारचक्र को संचालित करने में केवल निमित्तमात्र है। उसी के आश्रय से कार्य–कारणात्मक जगत् उसी प्रकार भ्रमण करता है, जिस प्रकार चुम्बक के प्रभावक्षेत्र में रहता हुआ लौहखण्ड चुम्बक के अनुरूप इधर–उधर संचलित होने पर विवश होता है–

" निमित्तमात्रं तत्रासीन्निर्गुणः पुरुषर्षभः।
व्यक्ताव्यक्त मिदं विश्वं यत्र भ्रमति लौहवत्।।"

अब इस संवत् (2066 वि.) की नववर्षगत ग्रहगति के संकेतानुसार इस वर्ष के बारे में कुछ लिखने का प्रयास कर रहे हैं।

संवत् 2066 वि. की नववर्ष प्रवेशकुण्डली

8 | 6 | 9 | 7 | 5श. | 10 गु. रा. | 4 के. | मं.11 | 1 | 3 | 12 | चं.बु.शु.सू. | 2

सं. 2066 वि. की वर्षप्रवेश–कुण्डली में कुम्भ राशिस्थ मंगल पर सिंहस्थ शनि की पूर्ण दृष्टि है। शनि, भारत की प्रभावराशि मकर का मालिक है। मंगल क्रान्तिकारी राजनीतिज्ञों का प्रतिनिधि ग्रह है, जोकि सप्तमेश एवं द्वितीयेश होकर पंचम (योजना) स्थान में स्थित हैं। शनि इस समय वक्री है। शनि–मंगल का समसप्तकयोग इसवर्ष के प्रारम्भ में केन्द्रीय शासनसत्ता के घटकदलों में बिखराव पैदा करेगा। संवत् 2066 वि. में किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के अपदस्थ होने किंवा निधन से शासनसत्ता में सन् 2009 ई. के प्रारम्भिक मासों में केन्द्रीय शासन में विशेष परिवर्तन ग्रहस्थिति के अनुसार संभावित है। उत्तर में कहीं दुर्भिक्ष किंवा अतिवर्षण से भारी हानि संभव है।

नववर्षकालीन ग्रहस्थिति के अनुसार पश्चिम में किसी मुस्लिम राष्ट्र में किसी समृद्ध देश के साथ उग्रवादजन्य अशान्ति के कारण सैन्यबल का प्रयोग अनिवार्य होगा। ऐसा वर्षप्रवेश कुण्डली में शनि–मंगल के समसप्तकयोग से प्रतीत होता है। पश्चिमी भूभाग पर प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि के योग भी वर्षमध्य में बन रहे हैं।

वर्षप्रवेश (सं. 2066 वि. का शुभारम्भ) तुला लग्न में हुआ है,– इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है–

"तुला लग्ने मध्यदेशे छत्रमंगश्च विग्रहः।
धान्यस्य विक्रयः प्राच्यां छत्रमंग उपद्रवः।।
दुर्भिक्षं बहुलो वायुः स्वल्पमेघः प्रवर्षणम्।
पश्चिमायां महायुद्धः दंष्ट्रामीतिर्महर्घता।।
दक्षिणस्यां सुखं लोके दुर्भिक्षं चोत्तरापथि।
मासद्वयं पश्चिमायां किञ्चिदुत्पात संमवः।।"

नववर्ष प्रवेशकालीन कुण्डली में लग्नेश शुक्र शत्रुभाव में अपनी उच्चराशि में सूर्य–बुध–चन्द्र के साथ बैठा है। शनि की स्थिति के अनुसार सिंह एवं कुम्भ वाले नेताओं के लिए इस संवत् के प्रारम्भिक मास विशेष उलझनपूर्ण रहेंगे। आसाम, बिहार, मणिपुर, नागालैण्ड, गुजरात, उड़ीसा एवं राजस्थान में कहीं भारी प्राकृतिक आपदा किंवा उग्रवादजन्य अशान्ति से शासन चिन्तित रहेगा। लेकिन नववर्ष कुण्डली में नवमेश बुध एवं कर्मेश चन्द्र के एकराशिस्थ होने से देश की सम्प्रभुता अस्मित एवं दृढ़ रहेगी एवं केन्द्रीय शासनतन्त्र प्रत्येक परिस्थिति में देश की गरिमा को बनाए रखेगा। नववर्ष कुण्डली में चतुर्थभावस्थ- नीच गुरु के साथ राहु की सन्निधि सं 2066 वि. में कहीं–कहीं धार्मिक उन्माद से एवं कहीं प्राकृतिक आपदाओं से भारी संकट का संकेत देती है।

संवत् 2066 वि. में पूर्वकालीन कुछ मासों की ग्रहस्थिति पर चिन्तन करना आवश्यक समझते हैं।

सं. 2065 वि. में 27 जनवरी, 2009 ई. को मंगल मकर राशि में आकर शनि के साथ षडष्टकयोग बनाएगा। ठीक, यहीं से राजनैतिक दल सत्ताप्राप्ति के लिए सन्नद्ध हो जाएंगे एवं निर्वाचनसंग्राम में कूदने की तैयारी में जुट जाएंगे। 27 जनवरी से केन्द्रीयसत्ता के घटकदलों में बिखराव एवं प्रमुख पार्टियों में ध्रुवीकरण की प्रक्रिया तीव्र होगी। परिणाम एवं परिदृश्य आश्चर्यजनक प्रतीत होगा।

7 मार्च, 2009 ई. को मंगल कुम्भराशि में आकर शनि के साथ समसप्तक योग बनाएगा। यह ग्रहस्थिति 7 मार्च से 13 अप्रैल तक प्रभावी रहेगी। इस समयावधि में भारत के शासनतन्त्र में आश्चर्यजनक परिवर्तन होने की संभावना से इन्कार नहीं किया जा सकता। ध्यान दें– मंगल एवम् बुध मार्च में अतिचारी हैं। इस समय शनि वक्री है–

" यदा क्रूरग्रहो वक्री शुमश्चैवातिचारगः।
तदा भवति दुर्भिक्षं राज्ञां युद्धं परस्परम्।।"

इस प्रमाणानुसार राजनीतिज्ञों में शक्तिपरीक्षण (निर्वाचन) का समय 27 जनवरी से मार्च, 2009 ई. तक प्रतीत होता है। शुभ बुध ग्रह का अतिचार भी इस समयावधि में पाक–इराक एवं अन्य देशविशेष में कहीं प्राकृतिक आपदा से परेशानी एवं इराक में से अमेरिकी सेना के हट जाने का भी संकेत देता है–

"यदा शुभग्रहः कश्चिदतिचारं करोति च।
तदा नृपाः क्षयं यान्ति दुर्भिक्षं तत्र दारुणम्।।"

14 अप्रैल, 2009 ई. को मंगल मीन राशि में आकर शनि के साथ षडष्टकयोग बनाएगा। 25 अप्रैल को शनैश्चरी अमावस एवं वैशाख शुक्ल पूर्णिमा भी शनिवारी है, जोकि खप्परयोग बनाते हैं। शनि वक्र है। शनि–मंगल का षडष्टकयोग 23 मई, 2009 ई. तक बना रहेगा। इस अवधि में देश में वित्तीय सेवाओं के कुप्रबन्धन एवं परस्पर उन्नतिकारक योजनाओं के लागू करने में राजनैतिक पार्टियों की खींचातानी से उत्पन्न संकट बना रहेगा। अमरीका एवं यूरोप के देशों में व्यावसायिक गतिविधियों में शिथिलता से भारत प्रभावित होगा। ग्रहस्थिति के अनुसार आगामी समय में यदि शीघ्र ही आर्थिक सुधार और प्रगति की ओर ध्यान न दिया गया तो हमारी उत्पादकता घटेगी, देश पर आर्थिक संकट बन सकता है।

वैशाख शुक्ल अष्टमी (2 मई) को शनिवार होने से किसी प्रान्त में दुर्भिक्ष की स्थिति बने, कहीं मुस्लिमराष्ट्र किंवा भारत के किसी प्रान्तविशेष में प्राकृतिक प्रकोप से भारी हानि का संकेत मिलता है एवं किसी विशिष्ट व्यक्ति का पद रिक्त होगा–

"वैशाख धवलाष्टम्यां शनिवारो भवेद्यदि।
जलशोषं प्रजानाशं छत्रमंगं समादिशेत्।।"

जून मध्य में कुम्भराशिस्थ गुरु वक्र होकर 12 अक्तूबर, 2009 ई. तक वक्रगति से ही चलता रहेगा। इसी दौरान 30 जुलाई को गुरु पुनः मकर राशि में आकर राहु के साथ मेल करेगा एवं शनि के साथ रा. गु. का 8 सितंबर तक षडष्टकयोग चलता रहेगा।

3 जुलाई को मंगल वृषराशि में आकर शनि के साथ दशम–चतुर्थसम्बन्ध बनाएगा और ये विशेष दृष्टि से परस्पर देखेंगे। मंहगाई उत्तरोत्तर बढ़ेगी। भारतीय उद्योग प्रभावित होंगे।

सरकार की मंहगाई पर अंकुश न लगाने की प्रवृत्ति जनता में असन्तोष का कारण बनेगी।

3 जुलाई से 15 अगस्त तक शनि–मंगल का दृष्टिसंबन्ध भारत में कहीं भीषण आपदा को जन्म दे सकता है। कहीं भीषण बाढ़ या भूकम्प, समुद्री तूफान किंवा यान–दुर्घटना से पश्चिमी एवं दक्षिणी भूभाग पर भारी जनधनहानि संभव है।

16 अगस्त से 8 सितंबर तक सूर्य–शनि (परम शत्रुग्रह) सिंह राशि में ही चलते रहेंगे। भूकम्प, तूफान से हानि, लोकसभा में विरोधी पार्टियों में परस्पर तकरार बढ़ेगी। जुलाई से सितंबर तक की समयावधि में शत्रुकृत् गतिविधि से सीमाप्रान्तों पर एवं उग्रवादजन्य विस्फोट आदि गतिविधियों से महानगरों में नए–नए स्थानों पर भारी जनधनहानि के संकेत ग्रहगोचर से प्राप्त होते हैं– शासन को सुरक्षाव्यवस्था में भारी सावधानी की ज़रूरत है।

9 सितंबर को शनि कन्याराशि में दाखिल होगा एवं 16 सितंबर को शनि, सूर्य–दोनों कन्याराशि में एकसाथ 15 अक्तूबर तक चलते रहेंगे। इसी बीच 5 अक्तूबर को मंगल कर्कराशि में आकर मकरस्थ गुरु–राहु के साथ समसप्तकयोग बना लेगा। इस अवधि में अफ़ग़ानिस्तान एवं अन्य किसी यावन (मुस्लिम) देश–विशेष में उग्रवाद भयंकर रूप धारण कर सकता है। कहीं भयंकर उग्रवाद के कारण प्रतिष्ठित व्यक्ति को आघात पहुंचेगा एवं जनजीवन सैन्य ऑपरेशन से अस्त–व्यस्त हो सकता है। ध्यान दें– 9 सितंबर से 15 नवबर, 2009 ई. तक की ग्रहस्थिति के अनुसार देश में भयंकर उग्रवाद के कारण आसाम, त्रिपुरा, मेघालय, बिहार आदि में देशविरोधी शक्तियां सक्रिय रहेंगी। सिक्किम, अरुणाचल एवं तिब्बती सीमाओं पर चीन की कुनीति से सीमाप्रान्तों में स्थिति उग्ररूप धारण कर सकती है। म्यांमार के निकट बंगाल की खाड़ी में बनाए जा रहे नौसैनिक अड्डे से भारत के लिए खतरे की घण्टी बन जाने के योग ग्रहस्थिति अनुसार सं. 2066 वि. में स्पष्ट बन रहे हैं।

17 नवंबर को राहु धनुराशि में आ रहा है, 6 दिसंबर तक कहीं अग्निकाण्ड से हानि होगी। 7 दिसंबर को नेप्च्यून कुम्भराशि में आएगा। 19 दिसंबर को गुरु पुनः कुम्भ राशि में आकर नेप्च्यून से एकराशिसम्बन्ध बना लेगा। इन पर मंगल की दृष्टि भी है। भारत में नई–नई योजनाएं बनेंगी। प्रगति के मार्ग में अनेक बाधाओं के बावजूद भी देशहित में नए आयाम उपस्थित होंगे।

लेकिन 17 दिसंबर को शुक्र पूर्व में अस्त होगा। पौष शुक्ल पक्ष में शुक्रास्त का फल इसप्रकार लिखा है–

"शुक्ल पक्षे यदा शुक्रः समुदेत्यस्तमेति वा।
राजपुत्रसहस्राणां मही पिबति शोणितम्।।"

परिणामतः कहीं सीमाप्रान्तों पर सैनिक हलचल हो, राष्ट्रों में कहीं भयंकर युद्ध का प्रसार हो। कहीं नेपाल, चीन आदि देशों एवं आसाम–त्रिपुरा आदि भारतीय प्रदेशों में प्राकृतिक प्रकोप से भारी जनधनहानि के यौग हैं।

31 दिसंबर, 2009 ई. को खण्डग्रास चन्द्रग्रहण एवं 15 जनवरी, 2010 ई. को कंकण सूर्यग्रहण घटित होंगे। इस प्रकार 15 दिनों के अन्तर पर दो ग्रहण विश्व के प्रमुख राष्ट्रों, विशेषतः मकर एवं कन्या प्रभावराशि वाले देशों भारत, पाक आदि में राजनैतिक संकट का कारण बनेंगे। कहीं भयंकर प्राकृतिक प्रकोप से भारी हानि संभव है; भूकम्प, विस्फोट एवं नानाविध रोगों से भारी हानि का योग है।

13 जनवरी, 2010 ई. से संवत् के अन्त तक शनि–मंगल वक्री रहेंगे। यह समय अघटित घटनाओं वाला सिद्ध होगा। भारत परमाणुशक्तिसम्पन्न देश के तौर पर पहचान बनाने में अग्रेसर होने लगेगा। लेकिन धार्मिक सांप्रदायिक झगडे, हत्याकाण्ड, कहीं भूकम्प, समुद्री तूफान आदि प्राकृतिक आपदाओं का सामना इस देश को जनवरी, 2010 से मार्च, 2010 तक करना पड़ेगा।

सारे संवत् की ग्रहस्थिति का सर्वेक्षण करने से ज्ञात होता है कि– भारत को विश्व की महाशक्तियों द्वारा की जाने वाली पाखण्डपूर्ण आलोचनाओं का सामना भले ही करना पड़े, लेकिन यह देश महाशक्तियों में से एक होने की तरफ बढ़ता रहेगा।

भारत में लोकसभा–निर्वाचन

जनवरी, 2009 ई. से आगे मई तक की ग्रहस्थिति के अनुसार भारतीय राजनीति में नाटकीय मोड़ आना स्वाभाविक है। विभिन्न राज्यों में राजनैतिक पार्टियां इस समय **U.P.A., N.D.A, N.P.D.A.** से जुड़ी हैं। लेकिन निर्वाचिनों में खाद्यपदार्थों में मंहगाई, सुरक्षा के मुद्दे एवं बिगड़ रही कानूनव्यवस्था आदि के मुद्दे उभरेंगे। लोकसभानिर्वाचनों में क्षेत्रीय दलों की संख्या बढ़ेगी एवं केन्द्रीय सरकार नए ढांचे में दिखाई देगी।

भाजपा एवं कांग्रेस तो प्रमुख पार्टियां रहेंगी, लेकिन क्षेत्रीय दल आगामी निर्वाचनों की दिशा तय करेंगे। ग्रहचाल के अनुसार आन्ध्र, छत्तीसगढ, हरियाणा, राजस्थान, म.प्र. एवं केन्द्रशासित क्षेत्रों में कांग्रेस का प्रभाव रहेगा। दिल्ली, गुजरात, हि.प्र. झारखण्ड, कर्णाटक, महाराष्ट्र, उत्तराखण्ड में भाजपा का प्रभाव अधिक रहेगा। उ.प्र. में बसपा का ज़ोर रहेगा। सुश्री मायावती के बसपा के आधारक्षेत्र बढा लेने के कारण कांग्रेस कुछ समाजवादी एवं अन्य पार्टियों से तालमेल करेगी, जिससे बसपा के प्रभाव को क्षीण किया जा सके। कांग्रेस युवानेता को आगे करके एवं भाजपा वयोवृद्ध नेता के नेतृत्व में लाभान्वित होगी।

भारत के प्रमुख राजनैतिक दल

कांग्रेस– संवत् 2065 वि. के अन्तिम मासों की ग्रहस्थिति के अनुसार समय राजनैतिक पार्टियों के लिए गहन अग्निपरीक्षा का है, विशेषतः सत्तारूढ दल की प्रमुख घटक पार्टी– कांग्रेस को इस संवत् का शुभारम्भ काफी कठिनाइयों वाला प्रतीत होता है। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार 27 जनवरी को मंगल मकर राशि में आकर गोचर में सिंहस्थ शनि पर दृष्टिपात करेगा। इस अवधि में 27 जनवरी, 2009 ई. से लगभग 7 मार्च तक यू. पी. ए. के घटक दलों में काफी हलचल होगी, राजनैतिक दलों में सत्ता–संघर्ष तीव्र होगा और कांग्रेस पार्टी को राजनैतिक हानि का भय बनेगा। लेकिन कांग्रेस पार्टी की

कुण्डली में द्वितीयेश शनि नीच है, अतः शुभ नहीं, फिर भी मंगल धनस्थान में उच्च होने से स्थिति संभल जाएगी। युवानेता एवं श्रीमती सोनिया गांधी के कारण कांग्रेस लोकसभा–निर्वाचनों में एक बड़ी पार्टी एवं दल के रूप में उभरेगी। लेकिन विरोधी भाजपा भी इसको भारी पड़ेगी, क्योंकि भाजपा के अन्य घटकदल सहयोगी बनकर सत्ता में आना चाहेंगे।

कांग्रेस की कुण्डली में मंगल की महादशा में शुक्र का अन्तर विशेष शुभ नहीं है। यदि निर्वाचन 7 मार्च से 13 अप्रैल, 2009 ई. के मध्य होते हैं तो कांग्रेस को भारी हानि एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। आगे की समयावधि में भी जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में मूल्यवृद्धि, उत्पादनवृद्धिदर में ह्रास आदि अनेकों उलझनों में से प्रधानमन्त्री को निकलना पड़ेगा। कहने का तात्पर्य यह है– कि कांग्रेसदल एवं नेतृत्व के लिए यह वर्ष काफी विषम परिस्थितियों वाला है।

यू.पी.ए. की कुण्डली का चिन्तन करने से स्पष्ट ज्ञात होता है, कि–राहु की महादशा में शुक्रान्तर चल रहा है। इस पार्टी के प्रधान श्री मनमोहन सिंह जी की कुण्डली के अनुसार राहु की महादशा में केत्वन्तर राजनैतिक दृष्टि से कठिन परिस्थितियों वाला ही रहेगा। सत्ता में रहने के लिए भारी प्रयास करने होंगे। लेकिन अन्ततः गोचर में मकरस्थ गुरु की कर्मस्थान पर दृष्टि इन्हें पुनः सफलता प्रदान करने वाली होगी, सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।

श्रीमती सोनिया गांधी की जन्माङ्गगत ग्रहस्थिति के अनुसार भारत की प्रभावराशि मकर इनके लिए यशस्वी सिद्ध होगी। लेकिन सिंहस्थ शनि का मंगल के साथ गोचर में 7 मार्च, 2009 ई. से आगे समसप्तकयोग, 3 जुलाई, से 15 अगस्त 2009 ई. तक एवं 9 सितंबर, 2009 ई. से मार्च 2010 ई. तक की ग्रहस्थिति इनके लिए किंवा इनके सुपुत्र श्री राहुल गांधी के लिए भारी आपदापूर्ण सिद्ध हो सकती है। ऐसा ग्रहस्थिति से मालूम होता हैं। इन्हें अपनी सुरक्षाव्यवस्था को और सुदृढ बनाना होगा।

राजनैतिक दृष्टि से 4 मार्च, 2010 ई. तक की ग्रहस्थिति इनके लिए एवं श्रीराहुल गांधी जी के लिए भारी प्रगतिप्रद होगी। सबल–सशक्त राजनीतिज्ञ एवं पार्टी–सुप्रीमो की दृष्टि से इन्हें भारी मान्यता प्राप्त होगी। श्री राहुल गांधी को आगे सम्मान्य–पद उपलब्ध होने का योग भी है। लेकिन इन्हें अपनी सुरक्षा को सबल रखना ही होगा, अन्यथा देश एवं पार्टी को भारी कष्टप्रद समय का सामना करना पड सकता है।

भारतीय जनता पार्टी–

भारतीय जनता पार्टी की जन्माङ्गगत ग्रहस्थिति के अनुसार नवमेश शनि, 9 सितंबर, 2009 ई. तक सिंहराशि में ही रहेगा, जोकि इस पार्टी के लिए गठन एवं राजनैतिक दृष्टि से काफी प्रगतिप्रद योग को बनाता है। 9 दिसंबर, 2008 ई के बाद गुरु (भाजपा का कर्मेश) मकर राशि में आकर जन्मकालिक शुक्र पर दृष्टिपात करेगा। शुक्र जन्माङ्ग में योजना स्थानेश भी है। अतः नए संगठन, नई योजनाएं, नए परिप्रेक्ष्य में भाजपा अपने आपको सशक्त अनुभव करेगी।

इस समय यह पार्टी शुक्र की महादशा के प्रभाव में चल रही है। अगर यह पार्टी निर्वाचनसंग्राम में स्त्रियों को ठीक अनुपात में टिकट देती है तो पार्टी–बल में वृद्धि होगी। देश में अराजकता किंवा हिंसा का वातावरण, उग्रवाद में वृद्धि, मंहगाई, महानगरों में विस्फोट एवं रामसेतु–काश्मीर में धर्मिक उन्माद आदि विषयों को लेकर जनमत को आकर्षित करने में यह पार्टी काफी हद तक सफल होगी। अन्यदलों के एकत्रीकरण से सत्ता में आने के प्रयास कठिन मालूम देते है। हां, लोकसभा के चुनावों में दिल्लीप्रान्त में भाजपा कांग्रेस को पीछे छोड़ सकती है। लोकसभानिर्वाचनों से पूर्व भाजपा के साथ अन्य दल मिलने का योग भी है।

श्रीलालकृष्ण आडवानी की जन्मकालिक ग्रहस्थिति के अनुसार कर्मेश सूर्य का भाग्येश चन्द्र के साथ समसप्तकयोग बनना इन्हें पार्टी के प्रमुख पद पर स्थापित करता है, लेकिन कर्मेश सूर्य नीच होकर द्वादशस्थ होकर षष्ठेश मंगल एवं आयेश बुध के साथ एकराशिसम्बन्ध बनाता है। यह ग्रहस्थिति देश के प्रधानपदप्राप्ति में बाधक है।

तीसरा मोर्चा एवं बसपा– आगामी ग्रहस्थिति के अनुसार माकपा, अन्नाद्रमुक, राकांपा आदि पार्टियां बसपा सुप्रीमो सुश्री मायावती के साथ गुप्तरूप से समझौता कर सकती हैं। साथ ही वामपन्थी दल भी बसपा का साथ देकर मायावती के दल को मजबूत बना सकते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि– तीसरा मोर्चा भंग न समझें। लेकिन सुश्री मायावती जी का दिल्ली पहुंचना/पहुंचाना अभी संभव नहीं है।

भारत के कुछ प्रान्त

पंजाब–पंजाब की प्रभाव राशि मीन है। नववर्ष प्रवेश कुण्डली में उच्च शुक्र, सूर्य, बुध एवं चन्द्रमा एकसाथ हैं। अतः भाजपा–अकालीदल गठबन्धन का प्रभावक्षेत्र बढ़ेगा। लेकिन नववर्ष कुण्डली में शनि–मंगल का समसप्तकयोग होने से यहां के महानगरों में कहीं उग्रवाद–जन्य अशान्ति, विस्फोट आदि से हानि के योग भी बनते हैं। लोकसभा निर्वाचनों में भाजपा–अकाली गठबन्धन लाभान्वित रहेगा।

संवत् 2066 वि. में 15 जून से अगस्त तक, 9 सितंबर से 12 अक्तूबर तक, 17 नवंबर से संवत् 2066 वि. के अन्त तक की ग्रहस्थिति के अनुसार ये समय यहां के शासकवर्ग के लिए कठिन परिस्थितियों वाला है। उल्लिखित समयावधि में यहां कहीं भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप किंवा उग्रवाद से जनधनहानि के योग भी बनते हैं। इस संवत में

पंजाब की राजनैतिक शासनसत्ता में सशक्त युवानेता का प्रवेश अकालीदल का प्रभावक्षेत्र बढ़ाएगा।

कांग्रेस पार्टी की प्रमुख नेता श्रीमती राजिन्द्र कौर भट्ठल की ग्रहस्थिति के अनुसार चन्द्रमा की महादशा में गुरु का अन्तर दिसंबर, 2009 ई. तक इन्हें पार्टी का प्राणपण प्रदान करने में समर्थ रहगा।

पंजाब में इसवर्ष तकनीकी शिक्षा, चिकित्सा क्षेत्र, कृषिविकास एवं नए शिक्षण संस्थानों के प्रगतिपथ पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

हिमाचल प्रदेश—इस प्रदेश की नामराशि कर्क एवं प्रभावराशि मीन है। प्रारम्भिक ग्रहस्थिति यहां के प्रमुख शासक श्रीप्रेम कुमार धूमल के शासनकाल में इस प्रान्त को ऐतिहासिक कार्यकलापों एवं चीन आदि से सुरक्षा की दृष्टि से अपनाए गए नए आयामों, रेलमार्ग आदि के परोग्रामों से भारी यश एवं सकलता प्रदान करने वाली है। 'कुछ कर दिखाने की क्षमता'— इनको श्रेय एवं जनता को प्रेय प्रदान करेगी। वर्षप्रवेश कुण्डली में सप्तमस्थ उच्चशुक्र एवं गोचरस्थ मकर का गुरु, राहुयुत होकर धूमल जी की नामराशि से पंचमभाव में होने से मई, 2009 ई. तक इनकी यश—प्रतिष्ठा एवं विरोधी ग्रुप को हतप्रभ कर देने वाली ग्रहस्थिति बनाता है। लोकसभा निर्वाचनों में भाजपा की प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

मेदिनी ग्रहस्थिति पर विचार करने से 13 अप्रैल, 2009 ई. से पहले एवं 23 मई से 13 अक्तूबर तक की ग्रहस्थिति से यहां किसी क्षेत्र में भारी भूकम्प—भूस्खलन, यानदुर्घटना आदि से भारी जनधनहानि की सूचना मिलती है। 9 सितंबर को शनि कन्या राशि में आकर विशेषतः जनवरी—फरवरी—मार्च, 2010 में गुरु के अतिचारी होने की स्थिति में श्री धूमल जी को कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। अचानक परेशानी बन सकती है।

हि. प्र. की प्रगति के लिए इस प्रान्त में सुरम्यपर्यटन स्थलों का विकास, हॉर्टिकल्चर में प्रगति एवं विद्युत् उत्पादन, यातायात में दुर्गम स्थानों को साधन सम्पन्नबनाने की योजनाएं कार्यान्वित होंगी। शासनतन्त्र को इसवर्ष सफलता एवं यश मिलेगा।

हरियाणा—इस प्रान्त की नामराशि मिथुन एवं प्रभावराशि मीन है। सं. 2066 वि. की प्रारम्भिक ग्रहस्थिति यहां के प्रधान नेता के समक्ष विषम परिस्थितियों वाली रहेगी। हमने गतवर्ष के पंचांग में लिखा था कि— यहां "एक प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञ की दक्ष चाल से किसी नई पार्टी का उदय हो सकता है।"— इसवर्ष श्री भजनलाल जी के पुत्र ने ह.ज.कां. के नाम से पार्टी बनाकर इस भविष्यवाणी की सत्यापित कर दिया है।

श्री ओमप्रकाश चौटाला साहब की जन्मकालिक ग्रहस्थितिके अनुसार यहां कांग्रेसपार्टी का प्रभावक्षेत्र क्षीण होगा एवं आगे इनेलो पार्टी सत्ता हथियाने की तरफ बढ़ सकती हैं। 17 नवंबर, 2009 ई. से मार्च, 2010 तक की ग्रहस्थिति में कुछ राजनैतिक परिवर्तन संभव है। इससे पहले 30 जुलाई से सितंबर तक की समयावधि में किसी विशिष्ट व्यक्ति के लिए समय नेष्टघटनापूर्ण है। इस संवत् में कहीं प्राकृतिक प्रकोप से भारी जनधनहानि के योग भी हैं।

प्रधान नेता एवं रूलिंग पार्टी गरीब वर्ग को विशेष सुविधा प्रदान करेगी। शिक्षा, कृषि में विशेष प्रगति होगी। सामाजिक क्षेत्रों में प्रगति,बिजली, पेयजल आपूर्ति एवं बेरोज़गारी आदि के मसले हल करने पर विशेष बल दिया जाएगा।

जम्मू—काश्मीर—प्रभावराशि तुला है। इसवर्ष ग्रहपरिषद् का प्रधान तुलाराशीश शुक्र ही है। गणतन्त्र कुण्डली में शुक्र—शनि का समसप्तकयोग चल रहा है। शनि—शुक्र मित्र हैं, लेकिन शनि शत्रुक्षेत्र में होने से जम्मू की नामराशि का शुक्र यहां संवत् 2066 वि. में शनि—मंगल दृष्टि—संबन्ध के समय 27 जनवरी, 2009 ई. से 14 अप्रैल के मध्य, 3 जुलाई से 16 अगस्त, 2009 ई. तक, 9 सितंबर से 5 अक्तूबर तक एवं 17 नवंबर, 2009 ई. से 20 जनवरी, 2010 की ग्रहस्थिति के अनुसार यहां भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदा से एवं इस प्रान्त में उल्लिखित समयावधि में उग्रवादजन्य भयंकर विनाश से भारी जनधनहानि होगी। राजनीतिज्ञ अल्पसंख्यक तुष्टिकरण से लाभ की स्थिति से यहां की स्थिति के प्रति उदासीन रहेंगे। यहां निहित स्वार्थों के कारण राष्ट्रनेतृत्व की उदासीनता धर्म एवं राजनीति के मेल से साम्प्रदायिक राजनीति को बल मिलेगा।

पाक—काश्मीर सीमा पर विरोधीतत्व सक्रिय रहेंगे। कहीं सैन्यगतिविधि एवं कहीं घुसपैठ, क्षेत्रीय स्वायता की आवाज खतरनाक होगी।

यहां निर्वाचन समय से पूर्व संभव हैं। यहां राजनैतिक ध्रुवीकरण, राजनैतिक दलों एवं समीकरणों में परिवर्तन दिखाई देगा। दलों के प्रधान नेता एवं प्रतिष्ठित राजनेताओं को शनि—मंगल एवं राहु की गोचर स्थिति के अनुसार जीवन को खतरों का संकेत मिलता है।

भारतवर्ष की जलवायु एवं वर्षा

वि. सं. 2066 में वर्षा—पानी का स्वामी (मेघेश) सूर्य है, संवत् का राजा शुक्र है। परस्पर ये दोनों शत्रु किंवा क्रूर ग्रह हैं। जलवायुविचार से अनेकत्र सूखा रहेगा। कुछ प्रान्तों में भारी वर्षा से भारी हानि होने के योग बनते हैं। इस संवत् में चतुर्मेघों में 'संवर्तक' नामक मेघ होने से पूर्व दिशा में वायुवेग से फसलों—वृक्षों को भारी हानि पहुंचेगी— "संवर्तो वायुपीड़नम्।" लेकिन 'नवमेघों' में 'द्रोण' नामक मेघ होने से बिहार, बम्बई, गुजरात, उड़ीसा, झारखण्ड एवं आसाम में वर्षा अधिक होने से कहीं भारी हानि हो एवं जनता संकटग्रस्त हो। 'वायुसप्तक' में 'वायु' नामक वायु से समुद्रीभूभाग पर विशेष तूफान, समुद्री सैलाब से भयंकर जनधनहानि के योग बनते हैं। सरकार को इस वर्ष इस प्रकार के प्राकृतिक प्रकोप का सामना करने के लिए सावधान रहना चाहिए।

इसवर्ष रोहिणी का वास समुद्र में होने से वर्षा कुछ प्रान्तों में अत्यधिक होगी। कुछ क्षेत्र बाढ़ग्रस्त होंगे। चावल आदि जलबहुल अन्न अधिक होंगे। न्यूनवर्षा वाले बागड़—राजस्थान आदि क्षेत्रों में भी वर्षा से कृषकवर्ग समृद्ध होगा।

21/22 जून, सन् 2009 ई. को 27 घं. 51 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर वृषराशिस्थ चन्द्र के समय 'सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र' में प्रविष्ट होंगे। लग्न में उच्चस्थ चन्द्र कुछ प्रान्तों में अच्छी वर्षा करेगा। चतुर्थभावस्थ शनि कहीं भयंकर सूखा भी देगा। लेकिन कुछ क्षेत्रों में बाढ़ की स्थिति चिन्ताकारक रहेगी। 1 से 30 मई तक, 15 जून से 4 जुलाई तक एवं 25 जुलाई से अगस्त अन्त तक अनेकत्र भारी वर्षा के योग हैं।

अब हम गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार वर्षाविचार लिख रहे हैं; जिन तारीखों में हमने वर्षा का निर्देश किया है, उन तारीखों मे वर्षा यत्र–तत्र होगी। स्थानविशेष के लिए वर्षा का विचार करने हेतु सूक्ष्मविचार की आवश्यकता होती है, जोकि– समयाभाव के कारण संभव नहीं है।

मार्च– 28, 31 मार्च को उत्तर–पश्चिमी भागों में बादलचाल एवं खण्डवृष्टि के योग हैं।

अप्रैल– 1, 4, 6, 9, 12, 13, 14, 17, 19, 21, 23, 24, 25 अप्रैल को भूटान, सिक्किम, बंगलादेश एवं हि. प्र. में खण्डवृष्टि के योग हैं। उत्तर–पश्चिमी भागों में यत्र–तत्र बादलचाल रहे।

मई– 1, 2, 7, 8, 11, 12, 14, 17, 20, 23, 25, 27, 29, 30 एवं 31 मई को गुजरात, महाराष्ट्र (मुम्बई), भूटान, शिलांग, आसाम, बंगाल एवं नेपाल में वर्षा, बादल के योग हैं। 8, 17, 23 मई को भारत के उत्तरपूर्वी भागों में तेज हवाएं चलेंगी।

जून– 5, 10, 13, 14, 15, 17, 21, 26, 29 एवं 30 जून को मुम्बई, म. प्र., हि.प्र., भूटान, शिलांग में अनेकत्र वर्षा के योग हैं। उ. भा. के कुछ भागों में बादलचाल व बूंदाबांदी के योग हैं। उत्तरी भारत में तापमान बढ़ेगा। गर्मी ज़ोर पकड़ेगी।

जुलाई– 2, 3, 4, 5 एवं 8 से 16 जुलाई, 19, 20, 26 से 31 जुलाई तक पंजाब, हि.प्र., उत्तर प्रदेश, आसाम, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, बिहार, उड़ीसा, महाराष्ट्र में अच्छी वर्षा के योग बनते हैं।

अगस्त– 1, 2, 7, 12, 13, 14, 16, 19, 21, 25, 26, 30 एवं 31 अगस्त को कोलकाता, सूरत, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, हि.प्र. एवं दिल्ली में कहीं वर्षा, कहीं बादलचाल व बूंदाबांदी के योग हैं। दक्षिण भारत में कहीं बाढ़ एवं भारी वर्षा से हानि के योग भी हैं।

सितम्बर– 3, 4, 7, 9, 10, 11, 15 से 19 सितम्बर के मध्य मैसूर, मद्रास, लंका एवं प. राजस्थान में बादलचाल व बूंदाबांदी के योग हैं। उ. भारत में आसमान साफ रहे एवं मौसम में बदलाव अनुभव होगा। 24, 26, 27 एवं 29 सितम्बर को हवा का ज़ोर रहे।

अक्तूबर– 1, 3, 4, 5, 6, 7, 9, 10, 13, 16, 17, 18, 23, 24 एवं 28 अक्तूबर को म.प्र. तामिलनाडु, कर्णाटक के कुछ भागों में सामान्यतया वर्षा के योग हैं। पर्वतीय भूभाग को छोड़कर उत्तरी भारत में इस समय वर्षा के योग नहीं। उ. भारत में शीत का प्रभाव बढ़ने लगेगा।

नवम्बर– 3, 4, 5, 6, 8, 9, 12, 14, 16, 17, 19, 22, 27, 28 एवं 29 नवम्बर को काश्मीर, भूटान, शिलांग, हि. प्र., उ. प्र. एवं उ.भारत में अनेकत्र वायुवेग के साथ वर्षा व बूंदाबांदी के योग हैं। शरद् ऋतु का प्रभाव बढ़ेगा। काश्मीर एवं हि. प्र. के उन्नतशृंगों पर अच्छी हिमपात के योग हैं। उ.भारत में शीतलहर अनुभव होगी।

दिसम्बर– 1, 7, 10, 15, 17, 19, 20, 21, 22, 26, 29 एवं 31 दिसं. को भारत में अनेकत्र बादलचाल व बूंदाबांदी से भयंकर शीतलहर चलेगी। अनेकत्र धुन्ध के कारण यातायात अवरुद्ध होगा।

जनवरी(सन् 2010 ई.)– 5, 10, 11, 13, 14, 15, 19, 20, 21, 24 एवं 27 जनवरी को प्रबल शीतलहर चलेगी, धुन्ध का वातावरण रहेगा। उल्लिखित तारीखों में कहीं खण्डवृष्टि भी संभव है।

फरवरी– 1, 3, 4, 5, 6, 9, 11, 12, 13, 18,19, 21, 22, 25 एवं 26 फरवरी को हि. प्र., शिलांग, आसाम, अरुणाचल में वर्षा के योग हैं। मौसम बदलाव अनुभव होगा।

मार्च– 1, 2, 4, 5, 9 से 11 मार्च को वायुवेग के साथ बंगलादेश एवं दक्षिणी प्रान्तों में बादलचाल, खण्डवृष्टि संभव है। उत्तरी भारत में तापमान बढ़ेगा।

पाठकों ! प्रभुकृपा से भूत–भविष्य में जो कुछ (ग्रहगोचरवश) अनुभव किया, आपके सामने रख दिया है। जो घटित हो चुका, वह आपने देख लिया। जो भविष्य है, उस पर आप भूतानुसन्धान के आधार पर विश्वास करें–

"समस्तमेतद् गतमागतं तथा भविष्यमप्यक्षरशो यथोत्तरम्।
निबोधितं शास्त्र–परम्परावशाद् भवादृशां भारत–वासिनां पुरः।।"

लेख पूर्ण होने की तिथि–
सितं. 19, सन् 2008 ई.

शुभचिन्तक–

इन्दुशेखर शर्मा, संयमी शर्मा,
श्रीमार्त्तण्ड भवन, मु.पो. कुराली,
अजीत नगर (मोहाली), (पंजाब)। PIN - 140 103

PHONE – 0160-2641277 FAX-2641577

व्यापार–विमर्श

(संवत् 2066 वि. की ग्रहस्थिति के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं में आने वाली तेज़ी एवम् मन्दी का मासिक विवरण)

लेखक :– इन्दुशेखर शर्मा–संयमी शर्मा,

संसार के सभी पदार्थों पर ग्रहों का नियंत्रण है, सभी पदार्थों का समावेश बारह राशियों में है। जब ग्रह भ्रमण करता हुआ राशिभोग करता है, तो उस राशि में समाहित सभी व्यापारिक वस्तुएं ग्रह की प्रकृति के अनुसार प्रभावित होती रहती हैं। प्रभावित वस्तुओं में परिवर्तन आते हैं और इन्हीं परिवर्तनों से बाज़ारों में घटाबढ़ी होती है, जिसे हम ' तेज़ी–मंदी ' कहते हैं। व्यापारी 'तेज़ी–मन्दी'– इन दो शब्दों से अपने भाग्य को आजमाता है। परन्तु मनुष्य का भाग्य कर्मफल किंवा ग्रहचाल के मुताबिक आर्थिक स्थिति को कभी बिगाड़ता है तो कभी सुधारता है। रथ के पहिए में लगे आरों की भांति मनुष्य को समाज में कभी ऊपर उठाता है तो कभी नीचे गिराता है – "चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः"। कहने का तात्पर्य यह है कि, जो व्यक्ति आज व्यापार में घाटा खा चुका है, वह सदा के लिए डूबा ही रहेगा–यह धारणा भ्रामक है। व्यापार में बहुत ही आश्चर्यजनक उतार–चढ़ाव आते हैं, न जाने आपको कब शीघ्र उत्तम धनलाभ हो जाए। जो व्यक्ति धनाढ्य होकर सट्टे का काम विचारपूर्वक नहीं करते, वे शीघ्र ही डूब सकते हैं । व्यापार तो किस्मत के सिकन्दर का ही प्रत्यक्ष साथ देता है। अतः किसी भी तरह का व्यापार करने से पहिले आप पत्राचार द्वारा या प्रत्यक्ष मिलकर ग्रहस्थिति पर विचार करा लें। विश्वास रखें, ग्रहस्थिति के आधार पर किए गए व्यापार से आप हानि में न रहेंगे। आप भारी हानि से भी बच सकते हैं।

जीवन में ग्रहस्थिति के प्रभाव का अध्ययन करने से यह निःसन्देह सत्य सिद्ध हो चुका है, जितना लाभ आपको होना है, उतना ही होगा, अधिक नहीं– "यदस्मदीयं नहि तत्परेषाम्" अर्थात् जो मेरा है, वह मिलेगा ही, उसे और कोई नहीं ले सकता। अतः जीवन पर ग्रहों का संकेत समझकर ही व्यापार करना बुद्धिमत्ता है।

खुलकर व्यापार करने से पहिले अप्रत्याशित हानि से बचने के लिए अपनी व्यक्तिगत ग्रहचाल को ध्यान में रखना सतर्कता है । हानिप्रद ग्रह से सम्बन्धित वस्तु का व्यापार न करें। वर्ष में जो ग्रह लाभप्रद हैं, उन ग्रहों के अधिकारक्षेत्र में आने वाली वस्तुओं का ही व्यापार करें, तभी आप लाभ ले सकेंगे। हाज़र एवम् वायदा व्यापारी जो अपने व्यापारिक जीवन से निराश हो चुके हैं, उनके लिए हम यहां व्यापार–विमर्श में ग्रहों का पूर्ण अध्ययन करके तेज़ी–मन्दी का मशवरा देते हैं। **व्यापारियो !** निराश न हों। हमसे प्रत्यक्ष मिलें, आपकी उलझी हुई व्यापारिक समस्या का समाधान हम करेंगे ।

संवत् 2066 में गुरु, शनि, राहु, मंगल, यूरेनस, नेप्च्यून और प्लूटो आदि के चार एवम् युति–प्रतियुति के आधार पर यह स्पष्ट घोषणा की जाती है कि, इस साल जगत् में विशेष लम्बे तेज़ी एवम् मन्दे के रिएक्शन्ज़ आएंगे। इस वर्ष गुड़, खाण्ड, घी, तेल, तिलहन एवम् रुई में विशेष लाभ के चांस हैं, तुरन्त फीस भेजकर टेलीफोन से सम्पर्क स्थापित करें । विदेशी व्यापारी पत्र द्वारा या टेलीफोन द्वारा सम्पर्क स्थापित करें, उत्तर मिलेगा।

इसवर्ष व्यापारिक क्षेत्र में रंक से राजा एवम् राजा से रंक बना देने वाले विशेष योग हैं । अतः प्रत्यक्ष मिलकर या वर्षभर की फीस भेजकर टेलीफोन के जरिये समय–समय पर ताजा परामर्श प्राप्त करके उत्तम लाभ प्राप्त करें। व्यापार–विमर्श लेख में जिस जगह हम ताजा मशवरा हासिल करने की बात लिखते हैं, वहां व्यापारी अगर प्रत्यक्ष मिलकर मशवरा लें, तो अच्छा रहेगा । 'व्यापार–विमर्श 'लेख में हम ग्रहचाल के मुताबिक सभी व्यापारियों को प्रतिवर्ष बाज़ारों के उतार–चढ़ाव से सावधान करते रहे हैं।

संवत् 2065 में वायदा व्यापारी एवम् हाजर का काम करने वाले व्यापारी दालवाना, सरसों, ग्वार, सोना, चान्दी एवम् तांबा में पहले भयंकर तेज़ी से और बाद में आश्चर्यजनक लगातार मन्दे से भरपूर लाभ हमारे ताजा मशवरे से उठा चुके हैं। आगे भी व्यापारियों से अनुरोध है, कि– व्यक्तिगतरूप से आकर व्यापारिक जानकारी लेने में भारी लाभ ले सकेंगे। दूर–दराज से आने वाले व्यापारी टेलीफोन से समय निश्चित करके आएं या एक मास की फीस एक जिन्स (चना, ग्वार, सरसों, सोया, रुई आदि) के लिए 2500 + 50 रु. डाकव्ययसहित एवम् प्रत्येक मैटल सोना, चांदी, कॉपर आदि की फीस Rs. 5000/– (पांच हज़ार रुपये) प्रतिधातु, प्रतिमास के हिसाब से भेजकर आगामी मास की दैनिक तेज़ी–मन्दी की लिखित रिपोर्ट प्राप्त करें।

व्यापारियों से निवेदन है, कि वे अपनी ग्रहचाल के अनुकूल होने पर ही व्यापार करें। व्यापार में किसी प्रकार की हानि के लिए सम्पादक/लेखक जिम्मेदार न होंगे।

नोटः– वायदा व्यापार या हाजर सौदा के व्यापार की लाईन अगर लिखे या बताए गए विचार के विपरीत चले तो तुरन्त सौदा काटकर नुक्सान से बचें, तुरन्त प्रत्यक्ष मिलकर या टेलीफोन से ताजा मशवरा हासिल करें। किसी प्रकार के नुक्सान (हानि) की जिम्मेदारी हम नहीं लेते

अर्थात्– व्यापार में हानि होने पर हम जिम्मेदार न होंगे ।

संवत् 2066 वि. में ग्रहस्थिति के अनुसार तेज़ी–मन्दी का आकलन

संवत् 2066 वि. में तेज़ी–मन्दी का विस्तृत विवरण देने से पहिले हम इस संवत् के नाम, वर्ष के राजा, मन्त्री, सस्येश, धान्येश, मेघेश आदि ग्रहपरिषद् का व्यापार पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? – इसका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर देना प्रासंगिक समझते हैं, जोकि निम्नांकित है;–

संवत् 2066 वि. को " शुभकृत्" संवत्सर का नाम दिया गया है। इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है:–

"शुभकृद्वत्सरे पृथ्वी राजते विविधोत्सवैः।
आतंकः भयदाः चौराः राजानः समरोत्सुकाः।।"

अर्थात्– विश्व में अनेक प्रकार के उत्सव हों, प्रगतिपद आयाम स्थापित हों। आतंकवाद–चोरी आदि की घटनाएं अधिक होंगी, शासकवर्ग किंवा राजनीतिज्ञों में शक्ति–परीक्षण की भावना प्रबल होगी।

संवत् 2066 वि. में वर्ष का राजा शुक्र होने से फल–फूल काफी मात्रा में उपलब्ध होंगे। बाजरा, चावल आदि बहुजलीय अनाजों की फसल काफी अच्छी होगी। कुछ प्रान्तों में बाढ़ एवं कहीं उत्तर में सूखे से फसलों को हानि पहुंचेगी, व्यापार प्रभावित होगा।

इस संवत् का मन्त्री चन्द्र होने से वर्षा अधिक हो। चीनी, गुड़, घी, तेल, तिलहन के व्यापारी इसवर्ष अधिक लाभ प्राप्त करेंगे।

इस संवत् का सस्येश गुरु होने से वर्षा पर्याप्त होगी। दूध, घी, चना, चावल आदि की फसल उत्तम होगी। कुछ चीज़ों का निर्यात् (Export) होने से व्यापारी लाभ में रहेंगे।

संवत् 2066 वि. का धान्येश मंगल होने से ईख (गुड़), घी, चावल, चना, एरण्ड, तिल, सरसों आदि तिलहनों की फसल को नुक्सान पहुंचने से तेल, तिलहन, घी, गुड़ आदि में अच्छी तेज़ी की संभावना बनती है।

इसवर्ष मेघेश सूर्य होने से जौ, चना, चावल आदि अनाज पर्याप्त मात्रा में हों, वर्षा आवश्यकतानुसार पर्याप्त हो। रसेश एवं नीरसेश के विचार से हल्दी, जीरा, मेथे आदि भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होंगे।

इस वर्ष 'संवर्तक' नामक मेघ है, राजनीतिज्ञों की व्यापारिक नीति से व्यापार प्रभावित होगा। पूर्वदिशा में वायुवेग व वर्षा आदि प्राकृतिक प्रकोप से खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी, जिससे व्यापारी तेजी में रहकर लाभ लेने के प्रयास में रहेंगे।

'शरत्सस्य जातक' कुण्डलीगत ग्रहस्थिति के अनुसार मूंग, मोठ, चावल, जीरी, गन्ना, ज्वार, बाजरा, अरहर, कपास एवं तिल आदि की फसलें कमज़ोर रहेंगी, मंहगाई से जनता परेशान रहे।

'ग्रीष्मसस्य जातक' कुण्डली की ग्रहस्थिति के अनुसार कपास, नरमा, गेहूं, जौ, चना आदि की फसल अच्छी होने पर भी मंहगाई पर शासन कन्ट्रोल न पा सकेगा, ऐसा ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है।

ग्रहों के व्रकमार्ग, युति–प्रतियुति के अनुसार इस वर्ष चावल, गेहूं, चना, गुड़, ग्वार, दालवाना, रुई, नरमा, मैंथा, तेल एवम् सरसों आदि तिलहनो में तेज़ी–मन्दी के भयंकर रिएक्शन्ज़ आएंगे। दूर–दराज से आने वाले व्यापारी टेलीफोन से समय निश्चित करके आएं या एक मास की फीस एक जिन्स (चना, ग्वार, सरसों, सोया, रुई आदि) के लिए 2500 + 50 रु. डाकव्ययसहित एवम् प्रत्येक मैटल सोना, चांदी, कॉपर आदि की फीस Rs. 5000/– (पांच हज़ार रुपये) प्रतिधातु, प्रतिमास के हिसाब से भेजकर आगामी मास की दैनिक तेज़ी–मन्दी की लिखित रिपोर्ट प्राप्त करें।

अप्रैल (सन् 2009 ई.)

[मासारम्भ से पूर्वकालीन ग्रहस्थिति पर विहंगम दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि–28 मार्च, 2009 ई. को शनिवार के दिन चन्द्रदर्शन होगा एवं शुक्र पूर्व में उदय होगा। रुई, सूत, सोना, चान्दी, सरसों, तेल, मूंगफली आदि तिलहन एवं चावल व घी में जोरदार तेजी के रिएक्शन्ज़ आएंगे।

31 मार्च, सन् 2009 ई. को सूर्य एवं बुध–ये दोनों ग्रह रेवती नक्षत्र में प्रविष्ट होंगे। परिणामस्वरूप, आगामी 14 दिनों में अलसी, एरण्ड, सरसों, मूंगफली, लहसुन, मोती, लाख, सज्जी, रुई, गेहूं, जौ, चना, केसर, मजीठ, लालमिर्च, गुड, खाण्ड एवं चावलों में तेजी रहने की संभावना है।]

1 अप्रैल को मंगल पू.भा. नक्षत्र में आता है। इस समय कुम्भ राशिस्थ मंगल की सिंहराशिस्थ शनि पर पूर्ण दृष्टि है। व्यापारिक एवं आर्थिक सरकारी घोषणा का व्यापार पर अचानक प्रभाव पड़ेगा। कुम्भ राशि का मंगल तेजी कारक रहेगा। घटाबढ़ी से बाजार तेजी की तरफ बढ़ेंगे। तिलहन, मूंगफली, अलसी, एरण्ड, सरसों, कपास एवं तेलों के बाजार, शेयर बाजार, सोना, चान्दी, तांबा आदि में अच्छी तेजी बन सकती है; सावधानी से काम करें, उत्तम लाभ मिलेगा।

4 अप्रैल को प्लूटो वक्री होगा। जल–वायु–विचार से व्यापार पर प्रभाव पड़ेगा। अचानक तेजी–मन्दी के रिएक्शन्ज़ आएंगे।

21 अप्रैल को बुध कृतिका नक्षत्र में आकर चान्दी और अफीम में खास घटाबढ़ी

[1 से 5 अप्रैल तक वायदा एवं हाज़र बाज़ार तेज़ रहेंगे।]

6 अप्रैल को बुध ग्रह अश्विनी नक्षत्र एवं मेषराशि में प्रविष्ट होगा; इसी दिन यूरेनस (मेदिनी ग्रह) पू.भा. के चतुर्थ चरण एवं मीन राशि में प्रवेश करके सूर्य एवं वक्री शुक्र के साथ एकराशिसम्बन्ध बनाएगा। गेहूं, ज्वार, बाजरा, जौ, चना, अलसी, मूंग, मोठ में तेज़ी बनेगी। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सरसों आदि तिलहन, रुई, कपास, सोना, चान्दी में मन्दे के झटके आने के योग हैं। यदि इस समय मन्दी आए तो स्टॉक करें, 15 दिन में ही लाभ मिलेगा।

9 अप्रैल को गुरु धनिष्ठा नक्षत्र के दूसरे चरण में प्रवेश करेगा। गुरु मकरराशि (नीच राशि) में स्थित है। गुरु राहु के साथ एक राशि में तेजीकारक ही है। रुई, कपास, तेलवाना, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, अनाज आदि के बाज़ारों में सामान्यतः तेज़ी बनेगी। गेहूं का बाज़ार मन्दा रह सकता है।

12 अप्रैल को बुध पश्चिम में उदित होगा एवं 13 अप्रैल को सूर्य मेष राशि में प्रविष्ट होकर बुध के साथ एकराशिसम्बन्ध बना लेगा। इसदिन बुध भरणी नक्षत्र में प्रवेश करेगा। अलसी, एरण्ड, तिल, तेल, सोना, चान्दी, लोहा, तांबा, लालचन्दन, लालमिर्च, नारियल, सुपारी, सूत, मेथी, लौंग, इलायची एवं अनाजों में 8 दिन में तेज़ी बनेगी। रुई व कपास में कुछ मन्दा बने।

नोट– बुध–सूर्य जब एक राशि में आते हैं तो बाज़ार में जोरदार तेज़ी या मन्दा बनाते हैं; यदि बाज़ार का रुख पहले मन्दा हो तो ज़ोरदार मन्दा कर देते हैं, यदि तेज़ी हो तो ज़ोरदार तेज़ी बना देते हैं; समझ से काम करें।

[6 से 13 अप्रैल तक बाज़ारों में तेज़ी का रुख रहेगा, ऐसा विचार है।]

14 अप्रैल को मंगल मीनराशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। शुक्र वस्तुतः बाज़ारों में मन्दी लाता है। लेकिन जब क्रूरग्रह के साथ मेल करता है तो अफवाहें फैलाकर बाज़ारों को तेज़ी की तरफ ले जाता है। तिलहन, रुई, कपास, जूट, चान्दी, सोना तथा शेयर बाज़ारों में अच्छी तेज़ी के झटके आएंगे।

17 अप्रैल को मीन राशिस्थ शुक्र मार्गी हो रहा है। 4 दिन बाद रुई मन्दी एवं सोना, चान्दी तेज़ रहेंगे। इस समय अनाज, घी, गुड़ के संग्रह से लाभ मिलेगा। इस समय गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, पाट, बारदाना, तिलहन, सोना–चान्दी आदि में जोरदार मन्दी बन सकती है, सावधानी से काम करें।

19 अप्रैल को मीनस्थ मंगल उ.भा. नक्षत्र में दाखिल होगा, शुक्र भी इस समय उ.भा. नक्षत्र में ही मौजूद है। मीनराशि का मंगल मूलरूप से मन्दीकारक है, फिर भी यहां सोना–चान्दी, रुई, गेहूं, जौ, चना में अच्छी तेज़ी बन सकती है। समझ से काम करें।

[17 से 20 अप्रैल तक ज़ोरदार तेज़ी और मन्दी के रिएक्शन्ज़ आएंगे; मन्दी में खरीदें और तेज़ी में बेचकर लाभ लेते रहें।]

21 अप्रैल को बुध कृतिका नक्षत्र में आकर चान्दी और अफीम में खास घटाबढ़ी के बाद मन्दा बनाएगा। अनाज एवं रुई में तेज़ी रहे। 23 अप्रैल को बुध वृष राशि में आकर शनि एवं गुरु की दृष्टि में आ जाता है। गुरु नीचराशिस्थ होकर शत्रु–राशिस्थ बुध को देखता है, अतः गुरु का बल क्षीण है, शनि शत्रुक्षेत्र में बैठकर मित्रक्षेत्रस्थ बुध को देख रहा है, अतः इसका बल अधिक है। गेहूं, जौ, चना, चावल, मटर, कपास, सूत, तिल, तेल आदि में तेज़ी से लाभ मिलेगा। रुई में पहले मन्दी आकर बाद में तेज़ी बनेगी। वायदा बाज़ार में अफवाहों से तेज़ी–मन्दी के रिएक्शन्ज़ भी आ सकते हैं, सावधानी से काम करें।

25 अप्रैल को शनिवारी अमावस बाज़ारों में तेज़ी का ही संकेत देती है। 26 अप्रैल को रविवारी चन्द्रदर्शन एवं 27 अप्रैल को सूर्य का भरणी नक्षत्र में प्रवेश होने पर रुई, अलसी में घटाबढ़ी, सोना, चान्दी, तांबा, पीतल, लोहा, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, सरसों, गुड़, खाण्ड एवं घी में तेज़ी बनेगी।

[21 से 30 अप्रैल तक बाज़ारों में उत्तम–मध्यमरूप से तेज़ी का बोलबाला रहेगा।]

मई (2009 ई.)

मासारम्भ में ही (1 मई को) गुरु ग्रह शनि की राशि कुम्भ में प्रवेश करेगा। कुम्भ राशि का गुरु सभी प्रमुख बाज़ारों में एकबार ज़ोरदार मन्दे का रिएक्शन लाएगा–ऐसा विचार है। श्रवण–धनिष्ठा एवं शतभिषा नक्षत्र का गुरु सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्य एवं धनधान्यसमृद्धि का सूचक है;–

" श्रवणे वा धनिष्ठायां वारुणे गुरु–संगमे।
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं बहुसस्या च मेदिनी।।"

अतः कुम्भराशि का गुरु मन्दे की लम्बी लाईन बना सकता है;– सावधानी से काम करें। रुई, कपास, तिलहन, चान्दी, सोना, शेयर बाज़ारों पर गुरुग्रह का प्रभाव विशेषरूप से अनुभव किया गया है। हमारे विचार से गेहूं, चावल, जौ, चना आदि में मन्दी का संचार होगा। रुई व सफेद चीज़ों में पहले मन्दा आकर बाद में तेज़ी बनेगी। सोना, चान्दी, तांबा में भी पहले मन्दी और बाद में तेज़ी बनेगी। क्योंकि गुरु पर शनि की पूर्ण दृष्टि है, अतः सावधानी से काम करें।

[1 से 5 मई तक बाज़ारों में मन्दा रहे तो स्टॉक करें, आगे अच्छा लाभ मिलेगा।]

6 मई को मंगल रेवती नक्षत्र में प्रविष्ट होगा। मंगल इस समय मीन राशि में शुक्र के साथ मेल कर रहा है। गेहूं, चना, मूंग, मोठ, जौ, ज्वार, बाजरा में मन्दी का झटका आने की तीव्र संभावना है। रुई एवं चान्दी में खास घटाबढ़ी होकर अच्छी तेज़ी का झटका आ सकता है। सोने में कुछ मन्दे की चाल रहे।

7 मई को वृषराशिस्थ बुध वक्री होगा। शनि की बुध पर दशम दृष्टि है। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज़ी पकड़ेंगे। गेहूं, जौ, चना आदि अनाज मन्दे रह सकते हैं।

8 मई को वक्री किंवा शनिदृष्ट बुध पश्चिम में अस्त हो जाएगा। यद्यपि पश्चिम में बुध के अस्त होने पर रुई में ज़ोरदार मन्दी आती है, पाट–हैसियन और शेयरों में भी मन्दे के बाज़ार बनते हैं, लेकिन यहां बुध के वक्री होने की स्थिति में बाज़ार अचानक तेज़ी की तरफ बढ़ सकते हैं;– सावधानी से बाज़ार का रुख देखकर काम करें। 9 मई को शनिवारी पूर्णिमा भी तेज़ी करेगी।

[6 से 10 मई तक बाज़ारों में उठापटक चलेगी, मन्दे में खरीदें और तेज़ी में सौदा सैटल करके लाभ लें।]

सूर्य मंगल की राशि में बैठा है और 11 मई को यह कृत्तिका नक्षत्र में दाखिल होगा। सूर्य एवं मंगल का प्रभाव बाज़ारों पर एक जैसा ही है। सर्य ग्रह का हाज़र एवं वायदा व्यापार पर प्रभाव प्रत्यक्ष है। विशेषतः रुई, एरण्ड, अलसी, मूंगफली, तेल, सरसों, कपास, जौ, चना, मूंग, मोठ, चावल आदि अनाजों, सोना, चान्दी, घी, शेयर, हल्दी एवं कालीमिर्च पर तेज़ी अनुभव होगी।

12 मई को राहु उ.षा. 4 एवं केतु पुष्य 2 में दाखिल होगा। राहु भारत की प्रभावराशि मकर में है। कहीं राजनैतिक, आर्थिक नीति में परिवर्तन से व्यापार प्रभावित होता प्रतीत होता है। कहीं प्राकृतिक प्रकोप से भी व्यापार में उठापटक हो। प्राकृतिक कारणों से कहीं फसल खराब होने का मय है। लेकिन उ.षा. नक्षत्र का राहु दो मास में सरसों, तिल आदि तिलहन में मन्दा करेगा। नमक, घी में कुछ तेज़ी रहे।

14 मई को सूर्य वृषराशि में आकर वक्री बुध के साथ मेल करेगा। इस समय इन पर वक्री शनि की दृष्टि भी है। इस समय बाज़ारों में ज़ोरदार घटाबढ़ी चलेगी। बुध अफवाहों (पब्लिसिटी) को प्रोत्साहन देता है, बाज़ारों में वायदा व्यापारियों को घटाबढ़ी फेस करनी पड़ती है। हमारे विचार से इस समय सोना, चान्दी, तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई, अनाज, घी में ज़ोरदार तेज़ी आने की उम्मीद लेकर चलें। विशेषतः तिलहन के व्यापारी ज़ोरदार तेज़ी से लाभ ले सकेंगे।

15/16 मई को रेवती नक्षत्र का शुक्र बाज़ारों में अचानक कुछ मन्दा भी कर सकता है, सावधानी से काम करें।

17 मई को शनि वक्री होगा। अचानक बाज़ारों का रुख बदल सकता है। रुई में मन्दी आकर फिर तेज़ी हो। दो मास में तिल, तेल, सरसों, हींग, कालीमिर्च में तेज़ी से लाभ मिलेगा।

[14 से 22 मई तक तेल, तिलहन में ज़ोरदार तेज़ी के रिएक्शन्ज़ आएंगे, सूझ–बूझ से काम करके लाभ लें।]

23 मई को मंगल अपनी राशि मेष में दाखिल होगा। कपास, जूट, सोना, चान्दी, तिलहन, तेल पर मंगल का प्रभाव विशेषरूप से तेज़ी का अनुभव किया गया है। ज्वार, बाजरा, चना, मूंग, मोठ, गेहूं, गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी, तांबा, रुई, कपास, बारदाना, तेल, तिलहन में तेज़ी से लाभ मिले।

25 मई को सूर्य रोहिणी नक्षत्र एवं वक्री बुध मेष राशि में प्रवेश करेगा। बुध–मंगल का एकराशि–सम्बन्ध तिल, तेल, एरण्ड, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, ऊन, सण, सुपारी, मिर्च, सोना, चान्दी, तांबा, रुई, कपास में सामान्यतः तेज़ीकारक मालूम देता है।

27 मई को वक्री बुध पूर्व में उदित होगा। रुई में पहले मन्दी, बाद में तेज़ी बने। गेहूं, जौ, चना आदि में 40 दिन के अन्दर तेज़ी से लाभ मिले। तिल, घी, पाट, हैसियन एवं लालमिर्च में भी तेज़ी संभव है।

30 मई को शुक्र अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में आकर मंगल एवं बुध के साथ एकराशि–सम्बन्ध बनाएगा। जौ, चना, चावल, गेहं आदि अनाज तथा घी में तेजी बने। इस समय सोने, चान्दी में खास तेजी बन सकती है। गुड़, शक्कर, बारदाना, पाट आदि में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी रहे। ऊन, तिल, तेल, सरसों, अलसी एवं एरण्ड में कुछ मन्दा रह सकता है।

31 मई को बुध मार्गी होकर रुई में पहले मन्दी एवं बाद में तेज़ी करेगा। गेहूं आदि अनाज तेज़ रहें। तेल–तिलहन में भी नर्मी का रुख रहे। सोना–चान्दी–तांबा में ज़ोरदार तेज़ी रहे। गुड़, शक्कर, बारदाना, पाट आदि में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी हो।

जून (2009 ई.)

मासारम्भ में सभी ग्रह मार्गी एवं उदित हैं। इस समय बाज़ारों में अच्छा मन्दा बन सकता है। यदि तेल–तिलहन के बाज़ारों में कुछ मन्दा बने तो तुरन्त स्टॉक करें; अच्छा लाभ मिलने की जल्दी उम्मीद बनेगी।

5 जून (शुक्रवार) को बुध वृषराशि में आकर सूर्य के साथ एकराशि– सम्बन्ध बनाएगा। इन पर शनि की दृष्टि भी है। सूर्य ग्रह का असर सोना, चान्दी, हल्दी, कालीमिर्च, रुई, एरण्ड, अलसी, मूंगफली तेल एवं अनाजों पर पड़ता है। बुध का जब सूर्य के साथ मेल होता है, तो ज़ोरदार तेज़ी–मन्दी के रिएक्शन्ज़ आते हैं। हमारे विचार से रुई में 15 दिन में मन्दी आकर पीछे तेज़ी बने। प्रायः सभी बाज़ारों में तेज़ी–मन्दी चलेगी। लेकिन गेहूं, जौ, चना, चावल, मटर, कपास, सूत, अफीम, तिल आदि के भाव में तेज़ी बनेगी।

7 जून को सूर्य मृगशिर नक्षत्र में आ जाता है। 10 जून को मंगल भरणी नक्षत्र में प्रवेश करेगा; 13 जून को शुक्र भी भरणी नक्षत्र में आ जाता है। मंगल सोना, चान्दी, रुई, कपास, तिलहन एवं शेयर बाज़ारों को प्रभावित करता है। शुक्र विशेषतः रुई, गुड़, खाण्ड एवं चान्दी के बाजारों पर अपना प्रभुत्व रखता है। जब शुक्र, मंगल के

साथ एकराशि-एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाता है तो रुई, चान्दी एवं सोना व तांबा के व्यापार में ज़ोरदार तेज़ी बनती है- ऐसा अनुभव किया गया है। हमारे विचार से इस समय गेहूं, चावल, जौ, चना आदि अनाजों; रुई, सोना-चान्दी में अच्छी मन्दी या तेज़ी संभव है। मूंग, मोठ, ज्वार, उड़द, तूअर में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बनेगी। सावधानी से काम करें, ताज़ा मशवरा प्राप्त करें।

14 जून को सूर्य मिथुन राशि में आकर गुरु की दृष्टि में आ जाता है। यहां तेज़ी की जगह मन्दा आ सकता है। बाज़ार का रुख देखकर काम करें। सूरज ग्रह का वायदा बाज़ार एवं हाज़र के बाज़ारों पर ज़ोरदार असर होता है।

पाट, बारदाना, सूत, सोना, चान्दी, तिल, तेल, सरसों, चावल, गुड़, खाण्ड में तेज़ी की उम्मीद होने पर मामूली तेज़ी आकर मन्दा आ सकता है। रुई में कुछ तेज़ी के बाद मन्दी बने।

15 जून को कुम्भराशि में गुरु वक्री होगा। इस समय गुरु-शनि का समसप्तकयोग चल रहा है। बाज़ारों में ज़ोरदार मन्दी एवं तेज़ी का रुख बनेगा। वक्र गुरु का फल इस प्रकार लिखा है;-

"कुम्भराशिगतो जीवः करोति यदि वक्रताम्।
आरोग्यं सर्वस्वस्थत्वं राज्ञां श्रीर्जय-संभवः।।
सर्वधान्यस्य निष्पत्तिः सर्वधान्यस्य विक्रयः।।
घृत-तैल-तुलाभाण्डं मासाष्टके च संग्रहः।।
पश्चाद् विक्रयतो लाभः सुभिक्षं निर्भया जनाः।।"

अर्थात् कुम्भ राशि में यदि गुरु वक्री हो तो जनता में आरोग्य, राजा(राजनीतिज्ञ) विजयी-यशस्वी रहें। सभी अनाज भरपूर मात्रा में हों, घी, तेल, तिलहन आदि का संग्रह आठवें मास में करके आगे बेचने से पर्याप्त लाभ होगा। लेकिन यहां शनि के साथ गुरु का दृष्टिसम्बन्ध ज़ोरदार मन्दे की जगह ज़ोरदार तेज़ी भी कर सकता है। अतः समय आने पर ताज़ा मशविरा प्राप्त करें।

हमारे विचार से गेहूं, जौ, चना, चावल, अलसी व घी में मन्दी हो और सोना-चान्दी आदि धातु व ऊनी वस्त्र तेज़ होंगे।

17 जून को बुध रोहिणी नक्षत्र में आता है। 8 दिन में रुई, चान्दी, तिल, तेल, सरसों, कपास, सूत, सोना, चान्दी, चावल, गुड़, खाण्ड में तेज़ी बने। तूअर, सण, ऊनी वस्त्र मन्दे हों। रुई में पहले तेज़ी आकर फिर मन्दी बने।

21 जून रविवार को सूर्य आर्दा नक्षत्र में पदार्पण करेगा। बृहस्पति की दृष्टि सूर्य पर है, अतः यह रुई, सूत, कपास, खल, अलसी, एरण्ड, मोती, चावल, चना, जौ, चान्दी में सामान्य तेज़ी दे सकता है। गुरु की दृष्टि में सूर्य होने से विशेष तेज़ी की उम्मीद न रखें। सोने में घटाबढ़ी चलेगी। गुड़, खाण्ड, तेल, तिलहन में अचानक मन्दा बन सकता है।

22 जून को मृगशिरा नक्षत्र की सोमवती अमावस बाज़ारों में मन्दा रहने का संकेत देती है-

"आषाढ़स्याप्यमावस्या यदि सोमवती भवेत्।
सुभिक्षं कुरुतेऽवश्यं नक्षत्र मृग सप्तमे।।"

24 जून को चन्द्रदर्शन बाज़ारों में साधारण मन्दी करेगा। 26 जून को शुक्र कृत्तिका नक्षत्र एवं बुध मृगशिर नक्षत्र में प्रवेश करेगा- यह ग्रहस्थिति मन्दा देने वाली है। जौ, चावल, गेहूं, उड़द, हींग, तिल, तेल, सरसों, रुई, सूत, चान्दी, सोना, हीरा, मणि, मोती आदि जवाहरात में मन्दे का काम करें।

29 जून को शुक्र अपनी राशि वृष में आकर शनि की दृष्टि में आ जाता है। 20 दिन में गेहूं, मूंग, मोठ, चावल, राई, मसूर, तिल, तेल, सरसों, घी एवं सूत में तेज़ी आए। रुई में तेज़ी आकर मन्दी एवं चान्दी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बने।

30 जून को बुध मिथुन राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। सरसों, तारामीरा में घटाबढ़ी; रुई, सोना, चान्दी में ज़ोरदार मन्दा आने की संभावना है।

जुलाई (2009 ई.)

1 जुलाई को यूरेनस मीन राशि में वक्री हो रहा है। पैदावार को कम एवं फसल को खराब करने में इस ग्रह की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। सोने-चान्दी के बाज़ारों पर इसका प्रभाव विशेष होता है। इस समय सावधानी से काम करें। हमारा विचार तेल-तिलहन एवं सोने-चान्दी में अच्छी तेज़ी का है।

2 जुलाई को बुध पूर्व में अस्त हो रहा है। इस समय बुध अपनी राशि मिथुन में सूर्य के साथ है। मिथुन राशि रुई, कपास एवं तिलहन बाज़ारों से सम्बन्ध रखती है। धनुराशिस्थ प्लूटो बुध-सूर्य से सप्तम है। अनाज, घी, तेल-तिलहन में मन्दा बने। रुई में पहले तेज़ी, बीच में मन्दी, अन्त में फिर तेजी बनेगी। सोने में भी घटाबढ़ी के बाद तेजी रहे।

3 जुलाई को मंगल वृष राशि में आकर शनि के साथ दशम-चतुर्थ- सम्बन्ध बनाएगा। बाज़ार का रुख देखकर काम को बढ़ावें। हमारे विचार से लालमिर्च, चन्दन, गुड़, शक्कर, गेहूं, मक्का, चना, रुई, कपास, सूत, कपूर, केसर, सोना, चान्दी, तांबा एवम् जस्ता आदि धातुओं में तेजी बनेगी। इस समय शेयर बाजार भी तेज रह सकते हैं।

4 जुलाई को बुध आर्द्रा नक्षत्र में दाखिल होगा। बुध इस समय सूर्य के साथ मिथुन राशि में है एवम् गुरु की इस पर विशेष दृष्टि है। वर्षा-पानी के मौसम से व्यापार में मन्दे का रुख रहे। गेहूं, तिल, उड़द, जौ, चना, मूंग, मोठ में मन्दा रहे।

5 जुलाई को सूर्य पुन. में दाखिल होगा। रुई , सोना, चान्दी, बिनौला, अलसी, सरसों, तिल, ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द, चावल, नमक, सज्जी, हरड़, सुपारी, नारियल, केसर, मंजीठ, नील, सौंठ एवम् गुग्गुल आदि पदार्थ तथा अन्य किरयाणा की

चीज़ों में सामान्य तेज़ी का माहौल बने।

7 जुलाई को मंगलवारी पूर्णिमा भी कई चीज़ों में तेज़ी बना सकती है। 8 जुलाई को शुक्र रोहिणी नक्षत्र में आएगा। इस समय शुक्र वृष राशि में मंगल के साथ मेल कर रहा है एवम् इन पर शनि की दशम दृष्टि भी है। इस लिए 12 दिन में चान्दी, सोना आदि धातुओं, अलसी, सरसों, घी, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, दाख, छुहारा, सुपारी, नारियल एवम् ऊनी कपड़ों में मन्दे की उम्मीद होने के बावजूद भी तेज़ी बन सकती है। सावधानी से काम करें।

10 जुलाई को बुध पुन. में एवम् शनि पू.फा. के चतुर्थ चरण में दाखिल होगा। गेहूं, चना आदि अनाज, अलसी, तिल, तेल, सरसों, मूंग, मोठ, उड़द में तेज़ी का माहौल रहे। लेकिन 8 दिन में चान्दी, रुई, कपास, सूत, सण में ज़ोरदार मन्दा आने का योग है।

14 जुलाई को राहु उ.षा. नक्षत्र के तीसरे चरण में एवम् केतु पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में दाखिल होगा। राहु मकर राशि में चल रहा है। मकर राशि शनि की अपनी राशि है। शनि और राहु दोनों क्रूर और अशुभ ग्रह हैं, इनका बाज़ारों में प्रभाव तेज़ीकारक माना गया है। कांसी, सूत, चान्दी, सरसों, तिल, नमक, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेज़ी बनती दिखाई देती है।

[1 से 14 जुलाई तक बाज़ार में ज़ोरदार तेज़ी एवम् मन्दी के रिएक्शन्ज़ आएंगे। मन्दे में खरीदें और तेज़ी में बेचकर लाभ लेते रहें।]

15 जुलाई को बुध कर्क राशि में आकर राहु के साथ समसप्तकयोग बनाएगा। बुध अफवाहों का ग्रह है। इसके प्रभाव से ठीक और गलत बातों से बाज़ार में तेज़ी एवम् मन्दी के रिएक्शन्ज़ आते हैं। क्योंकि बुध राहु से समसप्तक में है, इसलिए रुई में ज़ोरदार मन्दा और चान्दी में भी ज़ोरदार मन्दी के रिएक्शन्ज़ आ सकते हैं। गुड़, तेल, मूंगफली और सोने में पहले तेज़ी बनकर बाद में मन्दी बने।

16 जुलाई को सूर्य भी कर्क राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। जब बुध सूर्य के साथ मेल करता है तो यह क्रूर बन जाता है और तेज़ी की सम्भावना ज़्यादा रहती है। तेल, तिलहन के बाज़ारों में अच्छी तेज़ी–मन्दी के रिएक्शन्ज़ बन सकते हैं। रुई, सूत, बादाम, सुपारी, फल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, नारियल, सरसों एवं सोना आहदि में तेज़ी बने। गेहूं, जौ, चना, मटर, मूंग, चावल में मन्दी का रुख रह सकता है।

नोट करें– 16 जुलाई को बुध भी पुष्य नक्षत्र में दाखिल होगा। इस समय 10 दिन के अन्दर सोना, चान्दी में मन्दी के अच्छे झटके आएंगे। रुई में घटाबढ़ी के बाद अचानक मन्दा भी बन सकता है–होशियारी से काम करें।

17 जुलाई को मंगल रोहिणी में आकर रुई, कपास, सूत, रेशम, सरसों, तिल, तेल, लालमिर्च, हींग और शेयर बाज़ार में तेज़ी बनाएगा। 19 जुलाई को सूर्य पुष्य नक्षत्र में आकर बुध के साथ एकनक्षत्रसम्बन्ध भी बनाता है। यह ग्रहस्थिति बाज़ारों में पहले तेज़ी, बाद में मन्दा करेगी। सरसों, मघ, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, सुपारी, गुग्गुल, हींग, हल्दी, सोना, चान्दी में तेजी से लाभ मिलेगा। यह तेज़ी ठहरेगी नहीं, इसलिए जल्दी लाभ लें।

22 जुलाई को खग्रास सूर्यग्रहण का प्रभाव व्यापार पर तेज़ी वाला ही दिखाई देता है। 23 जुलाई, श्रावण शुक्ल पक्ष गुरुवार को चन्द्रदर्शन होगा। चावल, गुड़, तेल, घी, गर्म मसाले तेज़ रहेंगे। हींग, ज़ीरा, धनिया और कत्था में मन्दा रहे। 23 जुलाई को (इसी दिन) बुध आश्लेषा नक्षत्र में दाखिल होगा। 15 दिन में तिल, तेल, सरसों आदि तिलहन, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूंग, मोठ आदि अनाजों में तेज़ी बनेगी।

26 जुलाई को बुध पश्चिम में उदय होगा और शुक्र मिथुन राशि में प्रवेश करेगा। शुक्र कमी–कभी अकेला ज़ोरदार मन्दी ला देता है। मिथुन राशि का शुक्र मन्दीकारक ही माना गया है। इसलिए इस समय वायदा व्यापारियों को बड़ी सावधानी से काम करना चाहिए। रुई, कपास, सूत, पाट, बारदाना, एरण्ड, तिल, तेल, सरसों आदि तिलहन, अरहर, ग्वार आदि में काफी मन्दी आ जाने का योग है। अलसी, गुड़, घी में काफी अच्छी घटाबढ़ी चलेगी। गेहूं, चना, जौ, चावलों में तेज़ी रहने की उम्मीद है। रुई और कपास के व्यापारी ध्यान दें– आगे 15 दिनों में रुई और कपास में मन्दा बनेगा।

30 जुलाई को बुध सिंह राशि में आकर शनि के साथ एकराशि–सम्बन्ध बनाएगा। बुधग्रह न शुभ है और न अशुभ। जब कभी शुभ ग्रह के साथ मेल करता है तो मन्दा लाता है और जब सूर्य–शनि आदि क्रूर ग्रहों के साथ मेल करता है तो तेज़ीकारक हो जाता है। यहां बुध का शनि के साथ मेल है एवं मंगल की इन पर दृष्टि भी है। इसी दिन गुरु वक्री पोज़ीशन में मकर राशि में आकर राहु के साथ मेल करेगा;– यह बहुत बड़ी तेज़ी का चान्स है। गेहूं, चावल, जौ, चना, सूत, रुई, ऊन, तेल, तिलहन में ज़ोरदार तेज़ी बनेगी। सोने, चान्दी में भी ज़ोरदार तेज़ी संभव है। 30 जुलाई को ताज़ा मशवरा प्राप्त करके उत्तम लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

अगस्त (2009 ई.)

1 अगस्त को गेहूं, चना, जौ, ज्वार, बाजरा आदि अनाजों के भाव में अचानक मन्दे का वातावरण बन सकता है, लेकिन 2 अगस्त को सूर्य आश्लेषा नक्षत्र में दाखिल होकर 14 दिन के अन्दर सोना, चान्दी, रुई, बिनौला, गेहूं, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तिल, तेल, सरसों, तोड़िया, एरण्ड, अलसी आदि तिलहन एवं मिर्च में तेज़ी जरूर बना सकता है।

6 अगस्त को मृग. नक्षत्र का मंगल तिल और चान्दी व अन्य व्यापारिक वस्तुओं में तेज़ी करेगा। रुई में मन्दी आकर बाद में तेज़ी बनेगी, लेकिन 7 अगस्त को गुड़, खाण्ड तथा गेहूं आदि अनाजों में अचानक मन्दा भी बन सकता है, क्योंकि इस दिन बुध पू.फा. के प्रथम चरण में प्रवेश करेगा। ध्यान दें– बुध शनि के साथ है और इन पर मंगल की दृष्टि भी है, अतः सम्भव है कि– इस दिन मन्दे की जगह तेज़ी बन जाए।

[1 से 11 अगस्त तक बाज़ारों में तेज़ी–मन्दी के अच्छे रिएक्शन्ज़ आएंगे। खासकर 2 और 6 अगस्त को तेज़ी बनेगी। समझ से काम करें।]

12 अगस्त को शनि उ.फा. नक्षत्र में दाखिल होगा। क्योंकि शनि सूर्य के साथ एक राशि में है, शनि ग्रह का असर खासतौर से तिलहन बाज़ारों पर देखा गया है; रुई में ज़ोरदार घटाबढ़ी चलेगी। घी, शक्कर, सरसों, मूंगफली, अलसी, एरण्ड, कपास और खाने वाले सभी तेलों के बाज़ारों में तेज़ी नज़र आएगी। सोना, चान्दी, लोहा, तांबा और लोकोमोटिव आदि शेयरों में भी तेज़ी बन जाने का योग है। वर्षा आदि के कारण फसल का नुक्सान व पैदावार कम होने से बाज़ार तेज़ी की तरफ बढ़ेंगे।

13 अगस्त को शुक्र पुनर्वसु में आकर अनाज, बिनौला में तेज़ी करेगा। सोना, चान्दी, रुई, कपास व सूत में मन्दा बन सकता है। 16 अगस्त को सूर्य मघा नक्षत्र और सिंह राशि में दाखिल होकर शनि के साथ मेल करेगा। इसी दिन मंगल मिथुन राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। यह योग बड़ी तेज़ी का मालूम देता है। कुछ इलाकों में बहुत ज़्यादा प्राकृतिक प्रकोप से फसलें खराब होंगी, जिसका असर व्यापार पर तेज़ी का रहेगा। रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अलसी, अफीम, तांबा, कुसुम्भ, मजीठ और लाल रंग की वस्तुओं में ज़ोरदार तेज़ी आने की उम्मीद है। लालमिर्च, सोना, चान्दी एवं तिल, तेल, एरण्ड, सरसों आदि तिलहन में अच्छी तेज़ी से लाभ मिलेगा।

17 अगस्त को उ.फा. नक्षत्र का बुध 7 दिन में उड़द, मूंग, मोठ, मसूर, अरहर में कुछ तेज़ी करेगा। रुई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बन सकती है।

19 अगस्त को बुध अपनी उच्चराशि कन्या में दाखिल होगा। कन्याराशि रुई, कपास, तेलवाना आदि जिन्सों की पैदावार व फसल की राशि मानी गई है। बुधग्रह बाज़ारों में ज़ोरदार घटाबढ़ी लाने की ताकत रखता है। कन्याराशि के बुध पर मंगल व गुरु की नज़र है। गेहूं, जौ, चना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, हल्दी और तेल व तिलहन में तेज़ी के योग हैं।

21 अगस्त को शुक्र कर्कराशि में आकर केतु के साथ मेल करेगा। इस समय शुक्र पर बृहस्पति की पूर्ण नज़र है; रुई में पहले अच्छी मन्दी का झटका आएगा और बाद में कुछ तेज़ी बनेगी। शुक्र पर बृहस्पति की नज़र होने से फसल व पैदावार के अच्छी होने की अफवाहों से बाज़ार मन्दे की तरफ जा सकते हैं। अलसी, एरण्ड, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में पहले तेज़ी बाद में मन्दा बन सकता है। चान्दी, गेहूं, जौ, चना, मटर व अरहर में मन्दा बनेगा।

22 अगस्त शनिवार को चन्द्रदर्शन होगा। मुहूर्ती 45 है। अनाज, घी, गुड़, शक्कर, बाजरा, कुल्थी में तेज़ी बने। 24 अगस्त को शुक्र पुष्य नक्षत्र में आकर रुई, सूत, सण, रेशम, ऊन में तेज़ी करे। लाख, चमड़ा, कपूर, पारा, शिंगरफ, हींग, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दा बने।

25 अगस्त को गुरु वक्री पोज़ीशन में धनिष्ठा नक्षत्र में दाखिल होगा। गुरु ग्रह मन्दीप्रधान है किंवा सुख–समृद्धि का प्रतीक है, लेकन जब शनि के नक्षत्र व राशि में इसका संचार होता है तो कुछ तेज़ी की तरफ बाज़ार बढ़ते हैं और बाज़ारों में अच्छी घटाबढ़ी चलती है। हमारे विचार से गेहूं, चावल, जौ, चना और तिलहन में मन्दी व रुई में घटाबढ़ी चलती रहेगी।

26 अगस्त को मंगल आर्द्रा नक्षत्र में दाखिल होगा। रुई, सूत, अलसी, एरण्ड, कपास, गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, नमक में तेज़ी तथा चान्दी में घटाबढ़ी रहे। 30 अगस्त को सूर्य पू. फा. नक्षत्र में आकर 14 दिन में ज़ीरा, सोना, गुड़, खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, घी, गेहूं, ज्वार, चावल, रुई और सूत में तेज़ी करेगा। चान्दी में घटाबढ़ी चले। 31 अगस्त को बुध हस्त में प्रवेश करेगा और इसी दिन शनि अस्त होगा, जोकि गेहूं आदि अनाजों में मन्दा; रुई, शेयर, सोने में भी मन्दे का रुख बनाएगा।

सितम्बर (2009 ई.)

सितम्बर के प्रारम्भ में बाज़ार अस्थिर रहेंगे। 3 सितम्बर को वक्री प्लूटो मूल नक्षत्र के द्वितीय चरण में दाखिल होगा। प्लूटो ग्रह वृश्चिक राशि का मालिक है। यह राजनैतिक परिवर्तन व व्यापारिक परेशानियों को पैदा करता है, जिससे व्यापार प्रभावित होता है। तिलहन, पाट, बारदाना, रुई, कपास के बाज़ारों में अच्छी घटाबढ़ी का योग बनाता है।

4 सितम्बर को शुक्र आश्लेषा नक्षत्र में आकर रुई में मन्दी; अरहर, चावल में भी मन्दा करेगा। 7 सितम्बर को कन्या राशि में स्थित बुध वक्री हो रहा है। इस समय बुध पर मंगल और बृहस्पति की खास नज़र है, जोकि बाज़ारों में मन्दे की तरफ इशारा करती है। 24 दिन में घी, गुड़, खाण्ड और शक्कर में तेज़ी; गेहूं, जौ, चना आदि अनाज मन्दे होंगे।

9 सितम्बर को शनि कन्या राशि में आकर बुध के साथ राशिसम्बन्ध बना लेगा। जब भी कन्याराशि में शनि ने प्रवेश किया है, तभी राजनैतिक व प्राकृतिक कारणों से बाज़ारों में तेज़ी देखी गई है। शनिग्रह का सीधा प्रभाव कच्ची फसलों व पैदावार पर पड़ता है। इसका असर शेयर बाज़ार में लोहे की मशीनरी, पैट्रोल, डीज़ल पर भी देखा गया है। अलसी, एरण्ड, कपास, सरसों आदि की फसल खराब होने की खबरों से बाज़ार ऊँचे होते देखे गए हैं। लेकिन शनि और बुध पर मंगल और बृहस्पति की खास नजर है; बृहस्पति वक्री है। गुड़, खाण्ड, नमक व अनाजों में तेज़ी बनेगी। सोना और रुई भी तेज़ रहेंगे। चान्दी में घटाबढ़ी चलेगी।

13 सितम्बर को सूर्य उ.फा. नक्षत्र में आएगा और बुध इसी दिन वक्री एवं पश्चिम में अस्त हो जाएगा। रुई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चान्दी, लोहा, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, बाजरा, सुपारी, नारियल, मुंज, बांस और नील में तेज़ी बनेगी। क्योंकि यहां पर बुध वक्री होकर अस्त हो रहा है, अतः अनाजों के व्यापारी तेज़ी से लाभ लेंगे। रुई में ज़ोरदार मन्दा बने; चान्दी तेज़ रहे।

15 सितम्बर को शुक्र मघा नक्षत्र व सिंह राशि में दाखिल होगा। राहु उ.षा. के द्वितीय चरण में और केतु पुनर्वसु के चतुर्थ चरण में प्रवेश करेगा। इस समय

सिंहराशि में सूर्य भी है। अतः सोना, तांबा, जौ, चना, गेहूं, लालचन्दन, लालमिर्च, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में अच्छी तेज़ी आ सकती है। चान्दी में पहले 4 दिन में झटके की मन्दी आए फिर तेज़ी बनेगी। तेल और तिलहन में सावधानी से काम करें, क्योंकि अचानक मन्दे का योग है।

16 सितम्बर को सूर्य कन्या राशि में आकर शनि और बुध के साथ राशिसम्बन्ध बना लेगा। जब भी शनि, सूर्य व बुध एक साथ चलते हैं, तो तेज़ी कारक होते हैं। इस समय सूर्य, शनि, बुध– ये तीनों ग्रह उ.फा. नक्षत्र में भी एकसाथ चल रहे हैं। सोना, कालीमिर्च, रुई, एरण्ड, अलसी, मूंगफली, सरसों, बिनौला, सूरजमुखी, हल्दी एवम् शेयर बाजारों में ज़ोरदार तेज़ी व मन्दी के रिएक्शन्ज़ आएंगे। हमारे विचार से यह अच्छी तेज़ी का चान्स है। चान्दी व शेयर बाजार में अच्छा मन्दा भी आ सकता है– समझ से काम करें।

17 सितम्बर को मंगल पुनर्वसु नक्षत्र में दाखिल होगा, जोकि रुई, चान्दी, नमक, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों में तेज़ी से लाभ देगा।

19 सितम्बर को वक्री प्लूटो मूल नक्षत्र के तीसरे चरण में दाखिल होगा। इस प्रकार धनुराशि में स्थित प्लूटो की मंगल पर नज़र है, जोकि कालीमिर्च, ज़ीरा, नमक, गुड़, सोना, चान्दी में तेज़ी करेगी।

20 सितम्बर को इतवारी चन्द्रदर्शन भी अनाजों में तेज़ी का संकेत देता है। 24 सितम्बर को बुध वक्री पोज़ीशन में फिर से सिंहराशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। चान्दी, सोना, सूत, रुई व ऊनी वस्त्रों में तेज़ी बनेगी। गुड, खाण्ड, शक्कर और रसपदार्थों में मन्दा रहेगा।

26 सितम्बर को सूर्य हस्त में और शुक्र पू.फा. में आएगा। एक सप्ताह के अन्दर गेहू, जौ, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंग, चना मे कुछ मन्दा आकर तेज़ी आए। गुड, खाण्ड, कपास, रुई, सूत, जूट, घास, लकडी, नमक, हरड, हीग, धनिया और जीरे में तेज़ी बनेगी।

27 सितम्बर को बुध पूर्व में उदित होगा। इस समय बुध वक्री चल रहा है। इस लिए बाज़ारों का रुख अचानक बदल सकता है– सावधानी से काम करें।

29 सितम्बर को बुध मार्गी हो जाएगा। जो बाज़ार तेज़ी में हैं, वे मन्दे हो सकते हैं और जो चीज़ें मन्दी हैं वे तेज़ हो जाएंगी। समझ से काम करें। हमारे विचार से रुई में पहले मन्दी, बाद में तेजी बनेगी। चान्दी में घटाबढी के बाद तेजी बने। 8 दिन में गेहू, जौ, चना, रेशम, तेल एवं सुगन्धित चीजों में तेजी बनेगी।

30 सितम्बर को मेदिनीग्रह वक्री यूरेनस पू.भा. के तीसरे चरण में और कुम्भराशि में दाखिल होगा। कुम्भराशि का स्वामी शनि कन्या राशि में है और मंगल से दृष्ट है। सोना, चान्दी, रुई, कपास, तिलहन, गुड़, खाण्ड, पाट, बारदाना और शेयर बाजार तेज़ी की तरफ बढ सकते हैं।

अक्तूबर (2009 ई.)

मासारम्भ में ही 3 अक्तूबर को मेदिनी ग्रह वक्री नेप्च्यून धनिष्ठा नक्षत्र के दूसरे चरण एवं मकर राशि में प्रविष्ट होगा। मकर राशि में वक्री नेप्च्यून धनिष्ठा नक्षत्रस्थ वक्री गुरु एवम् वक्री राहु के साथ है अर्थात् यहां तीनों वक्री ग्रहों का मेल हो रहा है। यह योग ज़ोरदार तेज़ी ला सकता है। यद्यपि नेप्च्यून मीन राशि का मालिक होकर ज़ोरदार मन्दा बनाता है, लेकिन जब यह राहु एवं वक्री गुरु के साथ शनि की राशि में आकर मंगल की नज़र में आ जाता है तो ज़ोरदार तेज़ी बना देता है। इस समय यही पोज़ीशन है– सावधानी से काम करें। हमारे विचार से रुई, कपास, तेल, तिलहन एवं मोटे अनाजों व खल, बिनौला में भी भारी तेजी बन सकती है। बाज़ार के रुख को देखकर ही काम करें।

3 अक्तूबर को ही वक्री बृहस्पति श्रवण नक्षत्र के चतुर्थ चरण में आता है। अचानक सोना–चान्दी एवं अनाजों में मन्दा आने का योग है।

4 अक्तूबर को बुध फिर से कन्या राशि में आकर शनि एवं सूर्य के साथ एकराशि–सम्बन्ध बना लेगा। शनि अस्त है। रुई, चान्दी में मन्दी, गेहूं, जौ, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड एवं हल्दी में तेज़ी बनेगी।

5 अक्तूबर को मंगल कर्कराशि में आकर राहु एवं गुरु के साथ समसप्तकयोग बनाएगा। रुई में मन्दी एव तेल–तिलहन में भी मन्दा रहे। चान्दी में घटाबढी और सब तरह के अनाजों में तेज़ी के योग हैं।

6 अक्तूबर को शनिग्रह उ.फा. नक्षत्र के तीसरे चरण में प्रवेश करेगा एवं इसी दिन शनि उदित भी हो रहा है। इस समय शनि कन्याराशि में सूर्य, शुक्र, बुध के साथ है। इन पर बृहस्पति की दृष्टि भी है। शेयर बाजारों, रुई, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली, सूरजमुखी, तिल में ज़ोरदार मन्दा या तेजी बनेगी, बाजार के रुख को देखकर काम करें। लोहा, चावल, गुड, खाण्ड में तेजी बनेगी।

7 अक्तूबर को शुक्र उ.फा. में प्रवेश करेगा। इस समय ध्यान दें; कि– बुध, शुक्र एवं शनि–तीनों कन्याराशि एवं उ.फा. नक्षत्र में संचार कर रहे हैं। इन पर गुरुग्रह की दृष्टि भी है। हमें भयंकर मन्दी एवं तेज़ी के आसार मालूम देते हैं– इस समय बहुत समझकर काम करें। हमारे विचार से गेहूं आदि अनाज व रुई में तेज़ी से लाभ मिलेगा और सोने व चान्दी में घटाबढी चलेगी। चीनी, घी, तेल, तिलहन में भी अच्छी तेज़ी संभव है।

10 अक्तूबर को सूर्य चित्रा में एवं शुक्र कन्या राशि में दाखिल होकर शनि, बुध के साथ राशिसम्बन्ध बनाएगा। जब बुध, शुक्र, सूर्य एकसाथ होते हैं, तब लोगों की खरीदशक्ति को बढावा मिलता है। सरकार फॉरेन कोटा (Export) ऐलान कर सकती है। रुई में तेजी को बढावा मिलेगा। सूर्य–शुक्र पर बृहस्पति की नजर होने से बाजारों

में फसल की पैदावार अच्छी होने की अफवाह से बाजार कमज़ोर भी हो सकते हैं। ...

में फसल की पैदावार अच्छी होने की अफवाह से बाजार कमजोर भी हो सकते हैं। गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, पाट, बारदाना, तिलहन और चान्दी में अच्छी घटाबढ़ी चलेगी। सोना, चना, तिल, नारियल, केसर, कपूर में तेज़ी आए। इस समय चावलों में विशेष तेज़ी का झटका आ सकता है।

11 अक्तूबर को मंगल पुष्य नक्षत्र में आकर चान्दी व रुई में घटाबढ़ी करे और सोने में अच्छी तेज़ी बना सकता है। **13 अक्तूबर को मकर राशि का बृहस्पति मार्गी हो रहा है। इस समय गुरु के साथ राहु है। नीच मंगल का नीच बृहस्पति के साथ समसप्तकयोग बन रहा है।** सोना, चान्दी, तांबा में अच्छी तेज़ी बनेगी। रुई में मन्दी होकर तेज़ी बने। राहु व मंगल का दृष्टिसम्बन्ध यहां रुई, तेल, तिलहन में अच्छी तेज़ी बना सकता है।

16 अक्तूबर को बुध पूर्व में अस्त होगा। घी में मन्दा बने। रुई में पहले तेज़ी, बीच में मन्दी और फिर तेज़ी होगी। सोने में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

17 अक्तूबर, शनिवार को सूर्य तुलाराशि में प्रवेश करेगा। इस समय सूर्य मंगल की दृष्टि में आ जाता है। सूर्य और मंगल का असर बाज़ारों पर विशेषकर घटाबढ़ी का माना जाता है। विशेषतः वायदा बाज़ारों में ज़ोरदार घटाबढ़ी चलती है। रुई और चान्दी में ज़ोरदार उठापटक होगी। गेहूं, जौ, चना, अलसी, सोना, तांबा में अच्छी तेज़ी आएगी और लाल चन्दन, मजीठ व सुपारी में भी कुछ तेजी बनेगी। तेल, तिलहन, कालीमिर्च व शैयर बाजार भी तेज़ रहेंगे।

18 अक्तूबर को शुक्र हस्त में आकर रुई, चावल और अनाजों में मन्दा करेगा। इस समय स्टॉक करें। गुड़, खाण्ड, शक्कर में घटाबढ़ी चले। सोना और चान्दी तेज़ रहे।

20 अक्तूबर मंगल को चन्द्रदर्शन होगा और बुध चित्रा नक्षत्र में दाखिल होगा। रुई व चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बनेगी। अनाज, घी, तेल, तिलहन, गुड़, शक्कर में भी तेज़ी का रुख रहेगा।

23 अक्तूबर को सूर्य स्वाती में और बृहस्पति धनिष्ठा के प्रथम चरण में आएगा। कपड़ा सोना, चान्दी, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, राई, हींग और गुग्गुल में तेज़ी बनेगी। **क्योंकि इसी दिन गुरु धनिष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण में** दाखिल होगा, गेहूं, जौ, चावल, चना आदि अनाज मन्दे होंगे।

24 अक्तूबर को बुध तुला राशि में आकर नीचराशि में स्थित सूर्य के साथ मेल करेगा। बुध जब सूर्य के साथ मेल करता है तो बाज़ारों में चल रही तेज़ी को और बल दे देता है। यह चान्स अच्छी तेज़ी का मालूम देता है। रुई, गुड़, खाण्ड, सोने में अच्छी तेजी बनेगी। तेल–तिलहन में अचानक मन्दा आ सकता है।

[इस मास में 6, 10, 13, 16, 17, 24 अक्तूबर को अच्छी तेज़ी से लाभ मिल सकता है। शेष दिनों में मन्दा आने पर खरीदें और तेज़ी आने पर बेच कर लाभ लेते रहें।]

28 अक्तूबर को बुध स्वाती में और शुक्र चित्रा नक्षत्र में दाखिल होगा। बुध व सूर्य दोनों स्वाती नक्षत्र में ही चल रहे हैं। स्वाती नक्षत्र का सम्बन्ध रुई, कपास, बिनौला, सोना, चान्दी से है। सोना, चान्दी और अनाजों के भाव कुछ मन्दे रहें। रुई में मन्दे का झटका आकर कुछ तेज़ी बने। 31 अक्तूबर तक बाज़ार अनिश्चित चलेंगे। मन्दा आने पर खरीदें और तेज़ी में बेचकर लाभ लेते रहें।

नवम्बर (2009 ई.)

मासारम्भ में बाजार कुछ मन्दे रहकर शनैः शनैः उठने लगेंगे। 3 नवम्बर को **शुक्र तुला राशि में आकर सूर्य और बुध के साथ मेल करेगा। इन पर मंगल की खास नज़र भी है। जब शुक्र बुध के साथ मेल करता है तो तेज़ी का कारण बनता है।** शुक्र का विशेष प्रभाव गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, पाट, बारदाना, तिलहन आदि पर अनुभव किया गया है। जब शुक्र–सूर्य पर मंगल की नज़र भी होती है तो रुई, चान्दी व सोने के बाज़ारों में तेजी आया करती है। रुई, चान्दी अफीम में पहले तेज़ी, बाद में मन्दा रहे। सोना, गुड़, खाण्ड, तांबा में भी अच्छी तेज़ी बनेगी।

4 नवम्बर को शनि उ.फा. के चतुर्थ चरण में दाखिल होगा और इसी दिन नेप्च्यून मार्गी हो जाएगा। रुई में ज़ोरदार घटाबढ़ी चलेगी; सभी बाज़ारों में उठापटक से व्यापारी परेशान रहेंगे। अनाजों में तेजी बनेगी।

5 नवम्बर को सूर्य विशाखा नक्षत्र में आकर रुई में पहले मन्दा लाकर बाद में तेज़ी करे। अनाजों में मन्दा रहेगा। 6 नवम्बर को सूर्य भी विशाखा नक्षत्र में आ जाता है। 15 दिन में जौ, चावल, गेहूं, मसूर, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, सरसों, तिल, एरण्ड, अफीम में तेजी बनेगी। अलसी व चान्दी में घटाबढ़ी के साथ तेजी बनेगी।

8 नवम्बर को शुक्र स्वाती नक्षत्र में आकर गुड़, खाण्ड में तेज़ी और अनाज के भावों में मन्दे का रुख बनाएगा। 9 नवम्बर को मंगल आश्लेषा नक्षत्र में आकर चान्दी व रुई में मन्दा करे और अनाजों में तेजी बनाए।

[11 नवम्बर तक बाज़ार में तेज़ी–मन्दी के साधारण रिएक्शन्ज़ आएंगे। मन्दे में खरीदकर तेज़ी में बेचकर लाभ लेते रहें।]

12 नवम्बर को बुध वृश्चिक राशि में दाखिल होगा। मंगल की राशि में बुध का संचार घी, तेल, सरसों आदि तिलहन, रुई, सोना, चान्दी में तेजी का वातावरण बनाएगा। कभी–कभी अकेला बुध तेल, तिलहन में मन्दा भी बनाता है, इसलिए सोच–समझकर काम करें।

14 नवम्बर का बुध अनुराधा नक्षत्र में आकर अचानक सोना, चान्दी, रुई, सूत व अनाजों में मन्दा बना सकता है।

16 नवम्बर को सूर्य वृश्चिक राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा और इस समय इस पर शनि की विशेष दृष्टि है। रुई, तांबा, चान्दी, सोना व ऊनी वस्तुओं में विशेष तेज़ी का योग है। घी, तेल, सरसों में भी अच्छी तेज़ी बन सकती है।

17 नवम्बर को राहु उ.षा. के प्रथम चरण और धनु राशि में दाखिल होगा। केतु पुनर्वसु के तीसरे चरण और मिथुन राशि में प्रवेश करेगा। रुई में विशेष मन्दे का झटका आएगा। चान्दी में भी झटके के साथ मन्दा आने का योग है। घी, अनाज के भाव पहले तेज़, बाद में मन्दे होंगे। *नोट करें*– यदि इस समय घी, तेल, सोना, चान्दी मन्दे हों तो स्टॉक करने से अच्छा लाभ मिल सकता है। इस समय धनुराशि में राहु के साथ प्लूटो भी चल रहा है। धनुराशि का राहु तेज़ी प्रधान माना गया है। रुई, कपास, तेल, तिलहन, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड और शेयर बाज़ारों में अच्छी तेज़ी का योग बन सकता है।

18 नवम्बर बुधवार को चन्द्रदर्शन एवं 19 नवम्बर को सूर्य अनु. में तथा शुक्र विशाखा में दाखिल होगा। जौ, चना आदि अनाजों एवम् ऊन, सोना, चान्दी में बाज़ार कमज़ोर रहेंगे।

22 नवम्बर को बुध ज्येष्ठा में आकर घी, गुड़, खाण्ड, चावल में मन्दा बनाए।

27 नवम्बर को शुक्र वृश्चिक में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। इस समय शनि की इन पर विशेष दृष्टि है। रुई, शेयर, चान्दी व अफीम में पहले मन्दी होकर बाद में तेज़ी बने। गेहूं, जौ, उड़द, मूंग, मोठ, बाजरा आदि अनाजों में भी तेज़ी से लाभ मिलेगा। सोना तेज़ रहे। घी, तेल में भी तेज़ी रहेगी।

28 नवम्बर को बुध पश्चिम में उदित होगा। बुध धनुराशि में राहु के साथ बैठा है। रुई में मन्दा आने की उम्मीद होने पर भी तेज़ी बनेगी। तेल, तिलहन में भी तेज़ी का रुख रहेगा।

29 नवम्बर को बृहस्पति धनिष्ठा 2 में और शुक्र अनु. में दाखिल होगा। गेहूं, चावल, जौ, चना आदि में मन्दी और रुई में घटाबढ़ी चलती रहे। गुड़, खाण्ड, चावल व नमक में अच्छी मन्दी का झटका आ सकता है। 30 नवम्बर को भी मन्दे की चाल रहेगी।

दिसम्बर (2009 ई.)

1 दिसम्बर को बुध मूल नक्षत्र और धनु राशि में प्रविष्ट होकर राहु के साथ मेल करेगा। बुध बालग्रह है, जोकि क्रूर ग्रह के साथ मिलकर तेज़ी का कारण बनता है और शुभ ग्रह के साथ मिलकर मन्दा करता है। इस समय शुक्र अतिचारी है और बुध भी अतिचार की तरफ बढ़ रहा है। यद्यपि धनुराशि का बुध अकेला हो तो बाज़ारों में मन्दा करता है, लेकिन यहां पर बुध राहु के साथ होने से अफवाहों के साथ वायदा बाज़ार में ज़ोरदार तेज़ी–मन्दी बना सकता है, लेकिन हमारे विचार से रुई, कपास, सूत, सोना, चान्दी, पाट, बारदाना, हल्दी, बिनौला एवं अन्य तिलहनों में अच्छी घटाबढ़ी के बाद तेज़ी करेगा। इसी दिन मेदिनीग्रह यूरेनस मार्गी होकर बाज़ारों में अगले दिन तेज़ी बना सकता है।

2 दिसम्बर को सूर्य ज्येष्ठा नक्षत्र में आकर 15 दिन के अन्दर सोना, चान्दी, चावल, गेहूं, जौ, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुग्गुल, पारा, गुड़, खाण्ड में तेज़ी करेगा। रुई में पहले मन्दी, बाद में तेज़ी आएगी। क्योंकि सूर्य–शुक्र वृश्चिक राशि में शनि द्वारा विशेषरूप से दृष्ट हैं। इसलिए यह तेज़ी वायदा व्यापारियों के लिए महत्त्वपूर्ण है।

[1 से 6 दिसम्बर तक बाज़ार स्थिर नहीं रहेंगे। इसलिए मन्दे में खरीदकर तेज़ी में माल निकालते रहें।]

7 दिसम्बर को नेप्च्यून धनिष्ठा–3 कुम्भ में आकर यूरेनस के साथ एकराशि सम्बन्ध बना लेगा। जब भी यूरेनस–नेप्च्यून ने एकराशिसम्बन्ध बनाया है तो खड़ी फसलों को नुक्सान पहुंचा है। शेयर बाज़ार, एरण्ड, सरसों, तारामीरा, सूरजमुखी, बिनौला आदि तिलहन एवं तेलों में ज़ोरदार तेज़ी व मन्दे के रिएक्शन्ज़ आएंगे। बाज़ार का रुख देखकर काम करें। हमारे विचार से अच्छी तेज़ी आ सकती है, क्योंकि इस समय यूरेनस–नेप्च्यून पर कर्कस्थ मंगल की विशेष नज़र है। यह तेज़ी 9 दिसम्बर तक लाभ दे सकती है।

10 दिसम्बर को बुध पूषा. में और शुक्र ज्येष्ठा नक्षत्र में दाखिल होगा। इसलिए बिनौला, तेल व अनाजों में तेज़ी के बाद मन्दी आ सकती है। सोना, चान्दी, चावल, सरसों, तिल, तेल में इस समय ज़ोरदार मन्दा आएगा। वायदा व्यापारी होशियारी से काम करें।

[नोटः– 10 दिसम्बर से 14 दिसम्बर तक बाज़ारों में अगर अच्छा मन्दा आए तो माल पकडें, आगे अच्छा लाभ मिलेगा।]

15 दिसम्बर को सूर्य मूल नक्षत्र व धनु राशि में आकर राहु व बुध के साथ एकराशिसम्बन्ध बनाएगा। सूर्य ग्रह का विशेष प्रभाव रुई, एरण्ड, मूंगफली, तेल, अनाज, सोना, चान्दी, हल्दी व लालमिर्च पर विशेषरूप से अनुभव किया गया है। धनुराशि में इस समय प्लूटो ग्रह भी चल रहा है। इसलिए यहां पर सूर्य अच्छी तेज़ी बना सकता है। यद्यपि मूल नक्षत्र में सूर्य तेजी के बाद बाजारों में मन्दा लाता है, लेकिन हमें रुई, कपास, सूत, सोना, चान्दी में अच्छी तेजी मालूम देती है।

17 दिसम्बर को वृश्चिक राशि में स्थित शुक्र अस्त हो जाता है और इसी दिन शनि हस्त नक्षत्र के प्रथम चरण में प्रवेश करेगा। इसलिए रुई में मन्दी व चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बनेगी। अनाजों में अच्छी तेज़ी का झटका आकर मन्दा आएगा। सोना, तांबा, पीतल, जस्ता, हींग और सोनामक्खी में अच्छी तेज़ी बन सकती है। हस्त नक्षत्र का शनि दालवाना में अच्छी तेज़ी बनाएगा।

18 दिसम्बर शुक्रवार को चन्द्रदर्शन होगा, जोकि चान्दी व छोटे–मोटे अनाजों में तेज़ी का ही संकेत देता है।

19 दिसम्बर को बृहस्पति धनिष्ठा नक्षत्र के तीसरे चरण और कुम्भ राशि में दाखिल होगा। कुम्भ राशि का गुरु सभी प्रमुख बाज़ारों में एक बार ज़ोरदार मन्दा बना सकता है। ध्यान दें– इस समय कुम्भ राशि में यूरेनस व नेप्च्यून भी मौजूद हैं। इसलिए बहुत ही सोच–समझकर काम करें। क्योंकि गुरु शनि की राशि में है। यूरेनस, नेप्च्यून भी शनि की राशि में हैं और मंगल की इन पर खास नज़र है। कुम्भ राशि में गुरु के आने पर वर्षा कम होने से खड़ी फसलों को हानि पहुंचती है एवम् तेज़ी से लाभ मिलता है–

"कुम्भराशिगते जीवे मेघः स्वल्पाम्बु वर्षति।
कृषिनाशः च दुर्भिक्षं पूर्वदेशे समर्घता।।"

कुछ राजनैतिक कारणों से वायदा व हाज़र बाज़ार विशेषरूप से प्रभावित हो सकते हैं। हमारे विचार से धनिष्ठा नक्षत्र का गुरु गेहूं, जौ, चना में मन्दी बनाएगा। रुई में बहुत जबर्दस्त घटाबढ़ी चलेगी। 6 मास के अन्दर बहुत अच्छी तेज़ी से लाभ भी मिलेगा। रुई, सोना, तांबा आदि धातुओं में अगर मन्दा आता है तो स्टॉक करें, तीन मास के अन्दर अच्छा लाभ मिलेगा।

20 दिसम्बर को मंगल वक्री होगा और इसी दिन शुक्र मूल नक्षत्र और धनु राशि में दाखिल होगा। धनुराशि का शुक्र कुछ बाज़ारों में ज़ोरदार मन्दा बनाता है। शुक्र की वक्री गति 75´–30´´ है, जोकि संकेत देती है कि– शुक्र अतिचार की ओर बढ़ रहा है। धनु राशि में सूर्य, बुध, राहु पहले ही मौजूद हैं। सोना, चान्दी, तांबा, पीतल, शेयर बाजार, गेहूं, चना, जौ, बाजरा आदि और लाल मिर्च में ज़ोरदार तेज़ी से लाभ मिलेगा। रुई, सूत, कपास में पहले मन्दी होकर बाद में तेज़ी बने।

22 दिसम्बर को बुध उ.षा. में आकर अनाजों में कुछ मन्दा बना सकता है। 26दिसम्बर को बुध वक्री होकर 24 दिन के अन्दर घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में अच्छी तेज़ी बनाएगा, लेकिन गेहूं, जौ, चना आदि में मन्दे का वातावरण रहेगा।

28 दिसम्बर को सूर्य व 29 दिसम्बर को बुध पू.षा. नक्षत्र में दाखिल होंगे। बुध वक्री है। तिल, तेल, सरसों, बिनौला, गुड़, खाण्ड, हल्दी, गुग्गुल, चमड़ा, कपूर, ऊनी वस्त्र, सण व चान्दी में तेज़ी रहे। अनाज मन्दे व सोना–चान्दी में ज़ोरदार मन्दे का झटका आ सकता है।

29 दिसम्बर को बुध पश्चिम में अस्त हो जाएगा। इस समय रुई में अचानक मन्दा आ सकता है। चान्दी तेज़ होगी। पाट, हैसियन और शेयर बाज़ारों में भी मन्दे का रुख रहे।

31 दिसम्बर को शुक्र पू.षा. नक्षत्र में दाखिल होगा। ध्यान दें– इस समय सूर्य, बुध व शुक्र–तीनों पू.षा. नक्षत्र में चल रहे हैं, जोकि 2 सप्ताह के अन्दर मूंग, मोठ, उड़द, तिल, तेल, सरसों और नमक में मन्दा करेंगे।

जनवरी (सन् 2010 ई.)

जनवरी के प्रारम्भ से 9 जनवरी तक बाज़ारों में अस्थिरता नज़र आएगी। 5 जनवरी को बृहस्पति धनिष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में दाखिल होगा। धनिष्ठा नक्षत्र शनि का नक्षत्र है। इस समय बृहस्पति पर मंगल की विशेष नज़र होने से गेहूं, चावल, जौ, चना आदि में मन्दे का झटका आएगा और बाद में तेज़ी की उम्मीद रखें। रुई में अच्छी घटाबढ़ी चलेगी।

10 जनवरी को वक्री बुध मूल नक्षत्र में दाखिल होगा और सूर्य उ.षा. में प्रवेश करेगा तथा इसी दिन बुध पूर्व दिशा में उदित होगा। अनाज, सोना, चान्दी में मन्दी बनेगी। उड़द, चावल, चना, गेहूं, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, चमड़ा, सरसों, मूंग एवं पाट में तेज़ी बनेगी। इस समय घी एवं लालमिर्च भी तेज़ रहेंगे। ध्यान दें– बुध के पूर्व में उदित होने पर रुई में पहले मन्दी एवं बाद में अच्छी तेज़ी बनेगी। तेज़ी का यह चान्स लम्बा चल सकता है।

11 जनवरी को शुक्र उ.षा. में आकर गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी, अलसी, एरण्ड में अचानक मन्दा बना सकता है। अनाज तेज़ रहेंगे। रुई में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बनेगी।

13 जनवरी को शुक्र मकर राशि में दाखिल होकर मंगल के साथ समसप्तकयोग बनाएगा और इसी दिन (13 जनवरी को ही) शनि भी वक्री हो रहा है। शनि कन्या राशि में है। इस समय शनि, बुध और मंगल वक्री है। शेयर, अफीम, गुड़, खाण्ड, घी तथा गेहूं, चना आदि अनाज; तिल, तेल, सरसों आदि तिलहन में अच्छी तेज़ी बनेगी। रुई और चान्दी में पहले घटाबढ़ी और बाद में अच्छी तेज़ी बनेगी।

14 जनवरी को सूर्य मकर राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। शुक्र–सूर्य पर मंगल की पूरी नज़र है। घी, तेल, अलसी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई में तेज़ी से लाभ मिलेगा। गेहूं आदि अनाज व बारदाना में मामूली मन्दी के बाद बाज़ार तेज़ी की तरफ बढ़ेंगे।

15 जनवरी को कंकण सूर्यग्रहण घटित हो रहा है और इसी दिन बुध मार्गी हो जाएगा। रुई में मन्दी आकर तेज़ी बने। चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी हो। गेहूं,

जौ, चना, चावल भी तेज़ रहेंगे। तेल व तिलहन में ज़ोरदार मन्दे या तेज़ी का झटका आएगा। होशियारी से काम करें।

16 जनवरी, शनिवार को चन्द्रदर्शन होने से अनाज, चान्दी, सोना तेज़ रहेंगे। 19 जनवरी को राहु पू.षा. के चौथे चरण में और केतु पुनर्वसु के दूसरे चरण में दाखिल होगा। चना, सरसों, बिनौला, एरण्ड आदि में तेज़ी से लाभ मिलेगा।

20 जनवरी को प्लूटो मूल नक्षत्र के चौथे और बृहस्पति शतभिषा नक्षत्र के प्रथम चरण में दाखिल होगा। शतभिषा नक्षत्र शनि का नक्षत्र है। गहराई में जाने से हम कह सकते हैं कि–शतभिषा नक्षत्र राहु का भी नक्षत्र है। इसलिए तेल, तिलहन, रुई, कपास, पाट, बारदाना, सोना, चान्दी में भयंकर तेज़ी या मन्दे की आग लग सकती है। इस समय ताज़ा मशवरा हासिल करना उचित रहेगा। हमारे विचार से गेहूं, चना, चावल आदि अनाज तथा हल्दी, सुपारी, केसर, मजीठ, सोना, चान्दी में अच्छी तेजी के झटके आएंगे।

21 जनवरी को बुध पू. षा. में और शुक्र श्रवण नक्षत्र में दाखिल होगा। ध्यान रहे– इस समय बुध व राहु–दोनों पू.षा. नक्षत्र में ही हैं। बिनौला, सरसों, एरण्ड आदि तिलहन में तेजी बनेगी। अनाजों में मन्दा और सोने व चान्दी में ज़ोरदार तेज़ी बनने का योग है।

24 जनवरी को सूर्य श्रवण में आकर शुक्र के साथ एकनक्षत्रसम्बन्ध बना लेगा, जोकि गेहूं, जौ, चावल, रुई, सूत, सण, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, अलसी, सुपारी, लौंग में तेजी करेगा।

27 जनवरी को वक्री मंगल पुष्य नक्षत्र में आ जाता है, इसी दिन यूरेनस पू.भा. के चौथे चरण में आकर मीन राशि में दाखिल होगा। मीनराशि के यूरेनस पर शनि की नज़र है, जोकि तेल, तिलहन, हल्दी, ज़ीरा, सोना व चान्दी में मास के अन्त तक ज़ोरदार मन्दी व तेज़ी के रिएक्शन्ज़ लाएगी।

फरवरी (सन् 2010 ई.)

1 फरवरी को शुक्र धनिष्ठा के प्रथम चरण में दाखिल होगा। इस समय शनि–मंगल दोनों ग्रह वक्र गति से चल रहे हैं–

"यदा वक्रगतौ स्यातां शनि–भौमौ तपस्यके।
माघे चाद्यासु तिथिषु त्रिषु सस्यस्य संग्रहः।
कार्यो विपश्चिता तत्र पक्षान्ते स्याच्चतुर्गुणम्।।"

इस समय चावल, मूंग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा, चान्दी, सोना, रुई, कपास में तेजी और गेहूं में मन्दा आए।

3 फरवरी को शुक्र पश्चिम में उदित होगा। घी, खाण्ड मन्दे; रुई, सूत, सण, सोना, चान्दी एवं चावल में तेज़ी रहे। इसी दिन बुध उ.षा. में दाखिल होगा। दालवाना में मन्दे का रुख रहे।

4 फरवरी को गुरु शतभिषा नक्षत्र के दूसरे चरण में आकर गेहूं आदि अनाजों, हल्दी, सुपारी, केसर, मजीठ व सोने में मन्दी बनाए।

5 फरवरी को बुध मकर राशि में आकर रुई, सोना, चान्दी और सब प्रकार के अनाजों में तेज़ी करेगा, क्योंकि बुध का मेल शुक्र व सूर्य के साथ होगा और इन पर मंगल की पूरी नज़र भी रहेगी।

6 फरवरी को सूर्य धनिष्ठा में और शुक्र कुम्भ में दाखिल होगा। रुई, चान्दी, गुड़, खाण्ड, गेहूं, चना, जौ, मूंग, ज्वार, बाजरा, चीनी आदि में अच्छी मन्दी बन सकती है। बाद में कुछ तेज़ी भी बन सकती है।

[नोटः– 1 से 8 फरवरी तक बाज़ारों में उत्तम–मध्यमरूप से तेज़ी और मन्दी के रिएक्शन्ज़ आएंगे। मन्दे में खरीदकर तेज़ी में बेचें, लाभ मिलेगा।]

9 फरवरी को वक्री शनि उ.फा. के चौथे चरण में दाखिल होगा। कपास, सूत, सण, लोहा, सोना, चान्दी व तांबा में तेज़ी बनेगी।

11 फरवरी को शुक्र शतभिषा में आकर गेहूं, गुड़, खाण्ड, चावल, घी, सरसों, रुई, सोना, चान्दी में तेजी बनाएगा।

12 फरवरी को सूर्य कुम्भ में आकर बृहस्पति और शुक्र के साथ एकराशिसम्बन्ध बना लेगा। घी, तेल, नमक, सरसों, मूंगफली और राई में तेजी बनेगी। रुई, पाट, अलसी, एरण्ड एव गेहूं आदि अनाज, गुड़, शक्कर, खाण्ड में मन्दा बनने का योग है।

13 फरवरी को बुध श्रवण नक्षत्र में दाखिल होगा और इस दिन शनैश्चरी अमावस्या भी है। 10 दिन में गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी तथा अनाजों में ज़ोरदार मन्दी व तेज़ी के झटके आएंगे।

15 फरवरी, सोमवार को चन्द्रदर्शन होगा, जोकि बाज़ारों में मन्दे का रुख बना सकता है। 18 फरवरी को गुरु शतभिषा के तीसरे चरण में दाखिल होगा। गेहूं आदि अनाज, हल्दी, सुपारी, केसर, मजीठ व सोने में मन्दे का रुख रहेगा।

नोटः–13 से 18 फरवरी तक बाज़ारों में मन्दे का रुख रह सकता है।
18 फरवरी को बृहस्पति अस्त हो जाएगा। रुई व शेयर बाजारों में तेजी बन

सकती है। सोना, चान्दी और अनाजों में भी तेजी रहे–

"फाल्गुने गुरोरस्तं वक्रं वा यदि जायते।
तदा सस्य–महर्घत्वं शनिर्वा वक्रतां व्रजेत्।।
धन–धान्यादि-सस्यानां तदा वाच्या महर्घता।।"

19 फरवरी को सूर्य शतभिषा में और 21 फरवरी को बुध धनिष्ठा में आकर सोना, चान्दी, सूत, सण, कपड़ा, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, हींग, जायफल, दाख, छुहारा, सौंठ, हल्दी, गेहूं, गुड़ आदि में तेजी करेंगे।

22 फरवरी को शुक्र पूभा में आकर रुई में तेजी; सोने, चान्दी आदि धातुओं एवं अनाजों में मन्दा कर सकता है।

25 फरवरी को बुध कुम्भ राशि में आकर सूर्य, शुक्र और गुरु के साथ मेल करेगा। इस समय इन पर मंगल की नज़र भी है। अलसी, रुई और चान्दी में मन्दा आकर तेजी बने। घी, तेल और गुड़, खाण्ड में तेज़ी का रुख रहे।

26 फरवरी को बुध के पूर्व में अस्त होने पर अनाज एवम् घी मन्दे होंगे। रुई में पहले तेज़ी, बीच में मन्दी एवम् अन्त में फिर तेज़ी बनेगी। सोने में घटाबढ़ी होकर फिर तेज़ी बनेगी। इस प्रकार मास के अन्त तक बाज़ार डावांडोल रहेंगे।

मार्च (सन् 2010 ई.)

1 मार्च को बुध शतभिषा में दाखिल होगा। इस समय बृहस्पति भी शतभिषा में चल रहा है। बुध व बृहस्पति–दोनों अस्त भी हैं। चान्दी, दालवाना, तेल, तिलहन में कुछ तेज़ी आकर मन्दा बनेगा।

2 मार्च को शुक्र मीन राशि में दाखिल होगा और मीन राशि के शुक्र पर शनि की पूर्ण दृष्टि है। इसलिए रुई, चान्दी, अनाज, सरसों, तेल, मूंगफली, अलसी, एरण्ड, गुड़, खाण्ड में मन्दे की उम्मीद होने पर भी तेज़ी बन सकती है। सावधानी से काम करें।

4 मार्च को सूर्य पूभा. में और बृहस्पति शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में दाखिल होगा। गेहूं आदि अनाज, हल्दी, सुपारी, केसर, मजीठ, सोना, चान्दी, तेल, तिलहन में कुछ दिनों के लिए अच्छा मन्दा आ सकता है। यदि यहां अच्छा मन्दा बने तो माल पकड़ें, जल्दी लाभ मिलेगा।

5 मार्च को उ.भा. में शुक्र और 9 मार्च को पू.भा. नक्षत्र में बुध का दाखिल होना सोना, चान्दी, लोहा, तांबा, चावल, नमक, खाण्ड, रुई, कपास आदि में मन्दीकारक रहेगा। रुई में घटाबढ़ी चलेगी।

10 मार्च को कर्कराशि का मंगल मार्गी हो जाएगा। 3 दिन के बाद रुई में बहुत बड़ी मन्दी आने का योग है।

नोटः– मंगल के मार्गी होने पर जो चीजें मन्दी होती हैं, वे तेज़ हो जाती हैं और जो चीजें तेज़ होती हैं, उनमें मन्दा आ जाता है।

14 मार्च को सूर्य व बुध– दोनों मीन राशि में दाखिल होकर शुक्र के साथ मेल करेंगे। इस समय इन पर शनि की पूर्ण दृष्टि है। तिल, तेल, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई, सोना, चान्दी में तेजी बनेगी। हर तरह के अनाजों में तेज़ी के बाद मन्दा बनेगा। बिनौला में तेजी बने।

नोटः– सोना, चान्दी के व्यापारी इस समय बहुत सोच–समझकर काम करें। क्योंकि, अच्छी तेज़ी आकर उतना ही मन्दा बन जाने का योग भी है।

16 मार्च, मंगलवार को चैत्र शुक्ल पक्ष का प्रारम्भ होगा, जोकि सोना, चान्दी में अच्छी तेज़ी कर सकता है।

17 मार्च को सूर्य उ.भा. में और गुरु पू.भा. के प्रथम चरण में दाखिल होगा। चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, तेल, तिलहन, अनाज, सोना, चान्दी, सूत, सण में तेज़ी बनेगी। 20 मार्च के लगभग बृहस्पति के उदय होने पर चान्दी, अनाज तेज व सोने में मन्दा आ सकता है।

22 मार्च को पूषा. नक्षत्र के तीसरे चरण में राहु और पुनर्वसु के प्रथम चरण में केतु दाखिल होगा। रुई, कपास, चान्दी, सोना, पाट, बारदाना, तिलहन, बिनौला में अच्छी तेज़ी आ सकती है।

26 मार्च को शुक्र अश्विनी नक्षत्र व मेष राशि में दाखिल होगा। जौ, चना, गेहूं आदि अनाजों और घी में तेजी बनेगी। सोने व चान्दी में विशेष तेजी से लाभ मिल सकता है। गुड़, शक्कर, पाट, बारदाना में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी, तिल, तेल, सरसों, अलसी, एरण्ड में कुछ मन्दा रहे।

27 मार्च के लगभग बुध पश्चिम में उदित होकर बाजारों के रुख को बदल सकता है। होशियारी से काम करें।

29 मार्च को बुध अश्विनी नक्षत्र व मेष राशि में दाखिल होकर शनि की नज़र में आ जाएगा। सोना, चान्दी आदि धातु, गेहूं, चना, जौ आदि अनाजों, तिल, तेल, सरसों, रुई, कपास, घी, गुड़, खाण्ड में जोरदार मन्दा या तेज़ी बनेगी। 31 मार्च को सूर्य रेवती नक्षत्र में आकर 14 दिन के अन्दर अलसी, सरसों, एरण्ड, मूंगफली आदि तिलहन, लहसुन, रुई, गेहूं, जौ, चना और चावल में तेज़ी बनाएगा।

सज्जनों ! हमने ग्रहचाल को पूरी तरह जांचकर तेजी–मन्दी के रुख का बेरवा इस पंचांग में दिया है, फिर भी ग्रहचालवश यदि किसी प्रकार से आपको व्यापार में हानि होती है तो हम उसके लिए उत्तरदायी न होंगे। वैसे, हमारी प्रभु से प्रार्थना है, कि– आपको व्यापार में हमेशा उत्तम लाभ प्राप्त होता रहे।

–: व्यापारियों के लिए विशेष सुविधा :–

तेजी–मन्दी की प्रतिमास लिखित Advance Report

(अर्थात् अगामी माह की दैनिक तेज़ी–मन्दी की लिखित रिपोर्ट)

व्यापारी सज्जनो ! 1 जनवरी, सन् 2009 ई. से यदि आप प्रतिमास किसी भी जिन्स की दैनिक तेजी–मन्दी या वायदा–हाजर बाजार का चांस चाहते हैं, तो चना, ग्वार, सरसों, सोया, कपास, मिर्च आदि की एकमास की फीस 2500/– (दो हज़ार पांच सौ) + 50/– रु. डाकव्ययसहित रु. एवम् सोना, चान्दी, कॉपर आदि मैटल्ज़ की 5,000/– (पांच हज़ार) + 50/– रु. डाकव्ययसहित भेजकर आगामी माह की लिखित रुप में **Advance report** प्राप्त कर सकते हैं।

वर्षभर के लिए गेहूं, ग्वार, चना आदि अनाजों एवम् गुड़, खाण्ड, शक्कर, तेल, तिलहन की दैनिक तेज़ी–मन्दी की लिखित **Advance Report** की एक जिन्स की फीस 25,000/– + 500/– रु. डाकखर्चसहित भेजें एवम् चान्दी, कॉपर आदि की वर्षभर की फीस 50,000/– (पचास हज़ार) रु. + 500/–रु. डाकव्ययसहित भेजने होंगे।

नोट– पहली बार यदि प्रत्यक्ष मिलें तो अधिक सन्तोषजनक जानकारी मिल सकेगी। दूर से आने वाले व्यक्ति आने से पहले टेलिफोन करके आने का समय निश्चित कर लें।

पत्र या **M.O.** फार्म पर अपना पता एवम् फोन नं. साफ–साफ लिखें एवम् धनादेश, किस जिन्स की तेज़ी–मन्दी जानने के लिए भेज रहे हैं,– यह अवश्य लिखें। **M.O.** या **D.D.** भेजने के बाद आप अपना रजिस्ट्रेशन नंबर टेलिफोन से अवश्य प्राप्त करें।

Payment Advance आने पर ही अगले माह की रिपोर्ट भेजी जाएगी। **D.D.** या **M.O.** नीचे लिखे पते पर भेजें–

PHON: 0160-2641277
FAX- 0160-2641577

नोटः– गुरुवार को कार्यालय में अवकाश रहता है।

संयमी शर्मा , **M.A.**, ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,
सुपुत्र पं. इन्दुशेखर शर्मा, शास्त्री, **M.A.**, ज्योतिषाचार्य,
श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय ,कुराली – **PIN** 140 103
(मोहाली) पंजाब।

यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र–साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल

(1 जनवरी, सन् 2009 ई. से 15 मार्च, सन् 2010 ई. तक)

जप एवं यन्त्र–मन्त्र आदि की साधना के लिए शास्त्रों द्वारा बारह सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा सूर्य–चन्द्र के क्रान्तिसाम्य (महापात) के काल को ठीक सूर्य–चन्द्रग्रहण के समान ही महत्त्वपूर्ण माना गया है। संहिता और ज्योतिष ग्रन्थों में इस विषय के अनेक वचन उपलब्ध हैं। क्रान्तिसाम्य को तन्त्रादि की सिद्धि के लिए ऋषियों ने स्पष्ट रूप से फलप्रद माना है। आचार्य भास्कर ने भी 'सिद्धान्तशिरोमणि' में कहा है, कि–क्रांतिसाम्य के काल में विवाहादि मंगलकृत्य करना तो निषिद्ध है, लेकिन यदि इस समय जप, अनुष्ठानादि किया जाए तो उसकी वृद्धि होती है–*"पातस्थितिकालान्तर्गतमंगलकृत्यं न शस्यते तज्ज्ञैः। स्नान–जप–होमदानादिकमत्रोपैति खलु वृद्धिम्।।"* यन्त्र–मन्त्र–तन्त्रों की साधना में विशेष रुचि रखने वाले पाठकों के लिए हम नीचे 1 जनवरी, 2009 ई. से 15 मार्च, सन् 2010 ई. तक की सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा क्रान्तिसाम्य के प्रारंभ और समाप्तिकाल (मा.स्टैं.टा.) दे रहे हैं। इन कालों में यंत्र–तंत्रों के निर्माण से एवम् मंत्रजाप से वे अभीष्ट सिद्धि प्राप्त कर सकेंगे।

सूर्य और चन्द्रमा के ग्रहण के पर्वकाल को भी मन्त्रादि–साधना के लिए साधकों को उपयोग में लाना चाहिए। सायन संक्रान्तिपुण्यकाल, क्रान्तिसाम्य और सूर्य–चन्द्रग्रहण के पर्वकाल के अलावा मन्त्रादि–साधना के लिए अर्धोदय, महोदय, महामहावारुणीपर्व, महावारुणीपर्व और वारुणीपर्व भी महत्त्वपूर्ण माने गए हैं। ये अर्धोदय आदि योग कभी–कभी आते हैं।

सावधान–यंत्र–मंत्र–तंत्रों के प्रयोग को प्रभावशाली रूप में सद्यः फलप्रद बनाने के लिए शास्त्रविहित काल में साधना कीजिए, अन्यथा आगमशास्त्र पर साधक की निराधार अनास्था होने की पूर्ण आशंका है।

सायनसंक्रान्ति–पुण्यकाल (मा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ तारीख	घं. मि.	समाप्त तारीख	घं. मि.
सन् 2009 ई.			
18 जन.	22 10	19 जन.	10 10
18 फर.	12 16	19 फर.	0 16
20 मार्च	11 14	20 मार्च	23 14
19 अप्रै.	22 14	20 अप्रै.	10 14
20 मई	21 21	21 मई	9 21
21 जून	5 16	21 जून	17 16
22 जुला.	16 05	23 जुला.	4 05
22 अग.	23 08	23 अग.	11 08
22 सितं.	20 48	23 सितं.	8 48
23 अक्तू.	6 13	23 अक्तू.	18 13
22 नवं.	3 53	22 नवं.	15 53
21 दिसं.	17 16	22 दिसं	5 16
सन् 2010 ई.			
20 जन.	3 58	20 जन.	15 58
18 फर.	18 05	19 फर.	6 05
20 मार्च	17 02	21 मार्च	5 02

निरयण संक्रान्तियों के पुण्यकाल

सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल की भान्ति निरयण संक्रान्तियों के पुण्यकाल में भी यंत्र–मंत्रादि की साधना की जा सकती है, लेकिन सायन संक्रान्तियों का पुण्यकाल इसके लिए विशेष महत्त्व रखता है।

क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ और समाप्तिकाल (मा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ तारीख	घं. मि.	समाप्त तारीख	घं. मि.
सन् 2009 ई.			
7 जन.	2 03	7 जन.	8 28
19 जन.	7 09	19 जन.	13 03
2 फर.	3 30	2 फर.	8 24
14 फर.	2 25	14 फर.	6 58
27 फर.	19 00	27 फर.	23 11
11 मार्च	21 20	12 मार्च	1 16
25 मार्च	9 50	25 मार्च	13 56
6 अप्रै.	14 35	6 अप्रै.	18 33
20 अप्रै.	00 00	20 अप्रै.	4 44
2 मई	5 54	2 मई	10 32
15 मई	13 33	15 मई	19 50
28 मई	3 26	28 मई	9 34
10 जून	12 05	10 जून	21 14
2 जुला.	23 42	3 जुला.	8 24
17 जुला.	3 16	17 जुला.	9 39
29 जुला.	2 21	29 जुला.	8 11
12 अग.	0 58	12 अग.	5 56
23 अग.	22 51	24 अग.	3 09
6 सितं.	15 04	6 सितं.	19 27
2 अक्तू.	3 21	2 अक्तू.	7 46
3 अक्तू.	12 18	3 अक्तू.	17 16
14 अक्तू.	13 37	14 अक्तू.	17 39
27 अक्तू.	13 56	27 अक्तू.	19 07
9 नवं.	3 54	9 नवं.	8 55
22 नवं.	0 43	22 नवं.	7 50
5 दिसं.	0 36	5 दिसं.	7 57
18 दिसं.	1 47	18 दिसं.	12 43
28 दिसं.	17 40	29 दिसं.	2 45
(सन् 2010 ई.)			
9 जन.	23 11	10 जन.	7 16
24 जन.	0 10	24 जन.	6 22
4 फर.	18 53	5 फर.	0 01
18 फर.	13 39	18 फर.	18 36
2 मार्च	14 36	2 मार्च	18 32

सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य

सूर्य–चन्द्र की राशियों के अनुसार निर्धारित किए जाने वाले क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ– समाप्तिकाल नितान्त स्थूल होता है। यहां दिया गया क्रान्ति–साम्य का प्रारम्भ– समाप्तिकाल महापात गणित द्वारा स्पष्ट किया गया है। यह सर्वथा सूक्ष्म है। विवाहादि मुहूर्तों में इसी सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य के काल को ही वर्जित किया गया है।

वारुणी पर्व (सन् 2009 ई.) (मा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ तारीख	घं. मि.	समाप्त तारीख	घं. मि.
24 मार्च	3 53	24 मार्च	21 56

संवत् 2066 वि. में अर्धोदय, महोदययोग तथा वारुणी, महावारुणी, महा–महावारुणी पर्व घटित नहीं हुए हैं।

सूर्य–चन्द्रग्रहण

जैसा कि ऊपर लिखा है– यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र–साधना के लिए सूर्य एवम् चन्द्र ग्रहणों का पर्वकाल विशेष महत्त्व रखता है। पर्वकालों के लिए पृ. 10 देखिए।

ध्यान रहे– मन्त्रसाधना में उच्चारणादि की शुद्धि परमावश्यक है। इस बारे शास्त्रवचन इस प्रकार है–

"मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा
मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह।
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति
यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्।।"

यन्त्र-मन्त्र एवम् तन्त्रों का चमत्कार

इस स्तम्भ के अन्तर्गत अनुभूत यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र गतवर्षों से देते आ रहे हैं। इस स्तम्भ के अन्तर्गत दिए गए मन्त्रों को शुभमुहूर्त में गुरुमुख से प्राप्त करके ग्रहणवेला, क्रान्तिसाम्य या सायन–संक्रान्तियों के पुण्यकाल में दृढ़–निश्चयपूर्वक अनुष्ठान करके सिद्ध कर लेना चाहिए। **ध्यान रहे–** दीपमाला के समय एवं महाशिवरात्रि की महत्त्वपूर्ण रात्रियों में किंवा **'यन्त्र–मन्त्र–तन्त्रों के लिए साधनाकाल'** में उल्लिखित समयावधियों में इन मन्त्र–तन्त्रों को सिद्ध करके, इनका चमत्कार आप अविलम्ब देख सकेंगे। यन्त्र–मन्त्रों के बल पर ही दैवज्ञ अपने वैदुष्य से अक्षुण्ण यश प्राप्त कर सकता है,–**"सिद्धिर्भूषयते विद्याम्।"**

मन्त्र ऐसे दिव्यशब्दों का समूह है, जिसे दृढ़ इच्छाशक्तिपूर्वक उच्चारण एवं मनन से ही हम अलौकिक काम कर सकते हैं। चुने हुए गुप्त शब्द ही मन्त्र हैं। इनमें शब्दों को ऐसा क्रम दिया जाता है, कि उनके मौन या अमौन अवस्था में उच्चारणमात्र से शून्य–महाकाश में एक विचित्र कम्पन उत्पन्न होती है, जिसमें अभीप्सित कार्यसिद्धि एवं रचनात्मक प्रबल–प्रछन्न शक्ति होती है–

" मननात् त्रायते यस्मात्तस्मात् मन्त्रः प्रकीर्तितः। जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्न संशयः।।"

मन्त्रशास्त्र के अनुसार वेदमन्त्रों को ब्रह्मा ने शक्ति प्रदान की थी। तान्त्रिक प्रयोगों को भगवान् शिव ने शक्तिसम्पन्न किया। इसी प्रकार कलियुग में शिवावतार श्री शाबरनाथ जी ने शाबरमन्त्रों को अद्भुत् शक्ति प्रदान की। शाबरमन्त्र अनमिल बेजोड़ शब्दों का एक समूह होता है, जो कि अर्थहीन मालूम देते हैं, परन्तु भगवान् शंकर जी के प्रताप से ये मन्त्र अवन्ध्य प्रभाव रखते हैं– **" अनमिल आखर अर्थ न जापू। प्रकट प्रभाव महेश प्रतापू।।"** अतः शाबरमन्त्रों को यथावत् उच्चारण करें, किसी प्रकार से इनमें न्यूनाधिकता न करें। **नोटः–** मन्त्र का पुरश्चरण गुरु की देखरेख में गुप्तरूप से करें। प्रकट होने पर पुरश्चरण अर्थहीन हो जाता है– **" गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः।"**

शत्रुकृत् पीड़ा से मुक्ति हेतु मन्त्र

यदि विरोधी (शत्रु) अत्यधिक परेशान करे, भय बना रहे तो निम्नांकित दुर्गामन्त्र को रात्रि में अथवा प्रातःकाल 41 दिन तक पाठ करें। 5 माला प्रतिदिन भगवती का ध्यान करके कम्बलासन पर बैठकर मन्त्रजाप करें। शत्रु शान्त रहेगा। मुकद्दमे में आपकी विजय होगी।

मन्त्रः– '' ॐ क्लीम् सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति–समन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तुते क्लीम् ॐ।।''

ग्रहण में या दीवाली की रात्रि में इस मन्त्र का जाप करें तो समय पर तुरन्त फलप्रद रहता है–यह अनुभव है।

सर्वविध संकट से मुक्ति पाने के लिए भगवान् शिवद्वारा प्रतिपादित सिद्ध मन्त्र

इस निम्नांकित मन्त्र को ग्रहण, महाशिवरात्रि किंवा दीपावली की रात्रि में त्र्यम्बक भगवान् शंकर जी का ध्यान करके सिद्ध करें। संकटग्रस्त व्यक्ति प्रतिदिन एकमाला मन्त्रजाप करके भगवान् शंकर पर चढ़ाए हुए पुष्प या बिल्वपत्र को लाल कपड़े में बांधकर अपने पास रखे– सर्वविध संकटों से सद्यः मुक्ति प्राप्त हो जाएगी।

मन्त्र :– ''ॐ सर्वेश्वराय सर्वविघ्नविनाशिने मधुसूदनाय स्वाहा।''

प्रज्ञावर्धन–स्तोत्र

आजकल के प्रगतिशील युग में विज्ञानक्षेत्र किंवा अन्य क्षेत्रों में विद्यार्थियों की भारी दौड़ में हतोत्साह कई युवक आत्महत्या तक कर लेते है। उनके मनोबल एवं बुद्धिबल को प्रगति प्रदान करने के लिए हम यहां **'प्रज्ञावर्धन स्तोत्र'** का विधिपूर्वक उल्लेख कर रहे है। इस स्तोत्र के पाठ से निश्चय ही विद्यार्थियों को आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त होगी, अनुभव करें। इस स्तोत्रपाठ का प्रारम्भ **'गुरुपुष्यामृत'** किंवा **'रविपुष्यामृत'** योग से करें।

विनियोगः – (हाथ में जल लेकर) ॐ अथास्य प्रज्ञावर्धन–स्तोत्रस्य भगवान् शिव–ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, स्कन्द–कुमारो देवता, प्रज्ञासिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

–(यहां जल का त्याग करें।)

स्तोत्र

ॐ योगेश्वरो महासेनः कार्तिकेयोऽग्निनन्दनः। स्कन्दः कुमार : सेनानीः स्वामी शंकरसंभव :।।१।।

गाङ्गेयस्ताम्रचूडश्च ब्रह्मचारी शिखिध्वजः। तारकारिरुमापुत्रः क्रौंचारिश्च षडाननः ।।२।।

शब्दब्रह्मसमूहश्च सिद्धः सारस्वतो गुह :। सनत्कुमारो भगवान् भोग–मोक्षप्रदः प्रभुः ।। ३।।

शरजन्मा गणाधीशः पूर्वजो मुक्तिमार्गकृत्। सर्वागम–प्रणेता च वांछितार्थप्रदर्शकः ।। ४।।

अष्टाविंशति नामानि मदीयानीति यः पठेत्। प्रत्यूषे श्रद्धया युक्तो मूको वाचस्पतिर्भवेत्।। ५।।

महामन्त्रमयानीति मम नामानि कीर्तयेत् । महाप्रज्ञामवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा।। ६।।

पुष्यनक्षत्रमारभ्य पुनः पुष्ये समाप्य च । अश्वत्थमूले प्रतिदिनं दशवारं तु सम्पठेत्।। ७।।

।। सप्तविंश–दिनैरेकं पुरश्चरणकं भवेत् ।।

।। प्रज्ञावर्धनस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

सम्पुटमन्त्र :– पाठ के प्रारम्भ और समाप्ति पर इस मन्त्र की एक माला जपें–

'' ॐ या देवी स्तूयते नित्यं विबुधैः वेद–पारगैः।

सा मे वसतु जिह्वाग्रे ब्रह्मरूपा सरस्वती।।''

प्रतिदिन उषाकाल में, शौच–स्नानादि के अनन्तर मयूरवाहिनी श्रीसरस्वती अथवा मयूरवाहन श्रीस्कंद (अथवा दोनों की) मूर्ति या चित्र का पंचोपचारपूजन करके ससम्पुट इस स्तोत्र के प्रतिदिन 10 पाठ करें। सम्पुट उभयथा संभव है, प्रतिपाठ सम्पुट अथवा प्रथम माला जप, फिर 10 स्तोत्र पाठ, ततः सम्पुटमन्त्र जाप। अनुष्ठानप्रारम्भ पुष्य नक्षत्र से करें और दशांश हवनादि भी पुष्य पर ही सम्पन्न करें। इस प्रकार 27 दिन के जपपाठ तथा हवन से पुरश्चरण पूर्ण होगा। जपकाल में ब्रह्मचर्य, भूशयन, हविष्यान्न ग्रहण या सात्विक एकाशन सहित पीपल वृक्ष के नीचे बैठकर साधना करने से शीघ्र सिद्धिलाभ होगा। हवन में अश्वत्थसमिधा लें। ब्रह्मी का सेवन चमत्कारी होगा।

व्यवसाय में प्रगति एवं आर्थिक समृद्धि के लिए दो तान्त्रिक प्रयोग

(1) जब किसी पूर्णिमा को सोमवार हो तो उस दिन यह प्रयोग करें– कहीं से नागकेसर के फूल प्राप्त करें। किसी भी शिवमन्दिर में शिवलिंग पर पांच विल्वपत्रों के साथ ये फूल भी श्रद्धा से चढ़ा दें। इससे पूर्व शिवलिंग को कच्चे दूध, गंगाजल, शहद, दही से धोकर पवित्र कर लें। यह क्रिया अर्थात् पांच विल्वपत्र तथा नागकेसर के फूल (संख्या प्रत्येक बार एक सी ही हो) अगली पूर्णिमा (लगभग एक माह) तक निरन्तर चढ़ाते रहें। इस पूजा में एक दिन का भी नागा नहीं होना चाहिए। ऐसा होने पर पूजा खण्डित हो जाएगी। आपको यह फिर किसी पूर्णिमा के दिन पड़ने वाले सोमवार को प्रारम्भ करने तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। इस एक माह के लगभग जैसी भी श्रद्धाभाव से पूजा–अर्चना बन पड़े, करते रहें। भगवान् को चढ़ाए प्रसाद के ग्रहण करने के उपरान्त ही कुछ खाएं। अन्तिम दिन चढ़ाए हुए फूल तथा बिल्वपत्रों में से एक अपने साथ श्रद्धाभाव से घर ले आएं। इसे घर, दुकान, फैक्ट्री अथवा कहीं भी पवित्र जगह अथवा पैसा रखने के स्थान में शुद्धता से रख लें। धन–सम्पदा अर्जित करने में नागकेसर के पुष्प चमत्कारी प्रभाव दिखलाते हैं।

(2) व्यापार में यदि निरन्तर घाटा हो रहा हो तो किसी भी बुधवार के दिन यह प्रयोग करें। एकबार के प्रयोग से यदि फ़ायदा न दिखाई दे तो नियमित रूप से पांच बुधवार तक यह दोहराते रहें। आपको आशातीत लाभ दिखाई देने लगेगा।

प्रयोग– एक पीली बड़ी सी कौड़ी बाज़ार से खरीद लाएं। बुध के ही दिन एक–एक जोड़ा लौंग तथा इलायची और एक चुटकी, दुकान, फैक्ट्री आदि की मिट्टी के साथ कौड़ी को जलाकर सबकी राख बना लें। इस राख को एक पान के पत्ते पर एक छेद वाले तांबे के सिक्के के साथ रखकर कहीं बहते हुए पानी, तालाब अथवा कुएं में छोड़ दें। यदि छेद वाला पैसा न मिल सके तो तांबे की चादर में से पैसे के आकार का टुकड़ा काट कर उसमें स्वयं ही छेद करके कार्य चला लें।

जिस बुधवार को प्रयोग करें, उस दिन प्रयोग पूर्ण होने तक निराहार व्रत कर सकें तो अधिक शुभ है। प्रयोगकाल में **'ॐ नमो नारायणाय'** मन्त्र निरन्तर जपते रहें। प्रयोग पूर्ण होने के पश्चात् किसी भूखे व्यक्ति को कुछ खिलाकर ही स्वयं कुछ ग्रहण करें। अन्तिम अर्थात् पांचवें बुधवार को अपने इष्ट देवता को यथाशक्ति फल, फूल, नैवेद्य आदि से प्रसन्न करें। तदनंतर प्रसाद स्वयं ग्रहण करें और फिर घर–बाहर के अन्य लोगों को बांट दें।

इस प्रकार लक्ष्मी माता की अपार कृपा आप पर बनी रहेगी। घर में सुख–समृद्धि रहेगी। ये प्रयोग अज्ञात तान्त्रिक द्वारा अनुभूत हैं।

कुछ चमत्कारी यन्त्रप्रयोग

पुत्रदाता यन्त्र

विधि– इस यन्त्र को भोजपत्र पर शुभ मुहूर्त में कुंकुम, कस्तूरी, कपूर, गोरोचन की स्याही बनाकर लिखें। इसका विधिवत् सन्तानगोपाल मन्त्र या दुर्गामन्त्र से पूजन करके चान्दी के ताबीज़ में मढ़ाकर स्वर्ण–चान्दी की चेन या लाल धागे में स्त्री के गले में डाल दें। श्रीभगवान् जी की कृपा से स्त्री के गर्भ से पुत्रप्राप्ति ही होगी।

पुत्रदाता यन्त्र
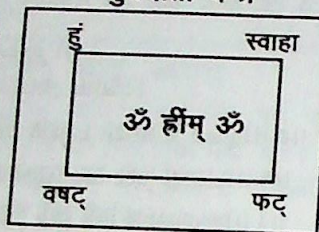
मनोकामनापूर्ण यन्त्र

विधि– इस यन्त्र को सन्ध्या–वन्दन करने के बाद भोजपत्र पर शुभ मुहूर्त में अष्टगन्ध से लिखें। हर समय शुद्धिपूर्वक इसे अपने पास रखें। मनोकामना पूर्ण होगी।

मनोकामना पूर्ण यन्त्र			
९६	१०	२	८
७	३	९७	९०
५०	४५	९	१
४	६	९५	९८

व्यापारवृद्धि–यन्त्र

विधि :– इस यन्त्र को बड़े भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखकर यथाविधि पूजन कर यन्त्र को शीशे में जड़वाकर अपनी दुकान पर पूजास्थल में रखें। व्यापार में खूब वृद्धि होगी।

व्यापारवृद्धि यन्त्र			
९६	८२	८१	८६
८१	७५	७६	८१
७४	७८	७५	७१
८४	७२	७२	७६

विद्या–बुद्धि–प्राप्ति के लिए यन्त्र

विधि :– गायत्री मन्त्रजाप करके महासरस्वती का निम्नांकित मन्त्रजाप करें–

"ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ वाग्देव्यै नमः।"

मन्त्रजाप करके इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर पूजास्थल में रखें। विद्या–बुद्धि में प्रखरता अनुभव करेंगे।

विद्या–बुद्धि प्राप्तियन्त्र			
८	११	१२	१७
१३	२	७	६
११	१६	९	१४
१०	५	४	५

व्यापारवर्धक यन्त्र

विधि :–रविपुष्यामृत योग में इस यन्त्र को लिखना शुरु करें। 2100 यन्त्र लिखें। यन्त्रों का धूप–दीप से लक्ष्मीमन्त्र से पूजन करके शुद्ध जलयुक्त नदी में प्रवाहित करें। पूजन के समय लाल या पीत वस्त्र पहिनें। लाल कम्बल का आसन प्रयोग में लाएं। 31 दिन में निम्नांकित मन्त्र का सवा लाख जाप करें–

व्यापारवर्धक यन्त्र			
१६	९	४	५
३	६	१५	१०
१३	१२	१	८
२	७	१४	११

मन्त्र :–"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सौं जगत्प्रसूत्यै नमः।"

सवालाख जाप के बाद घृत, खीर एवं कमलगट्टा से दशांश हवन करें। अनुष्ठान पूर्ण होने तक एक समय भोजन करें एवं यति–सती रहें।

तत्पश्चात् उल्लिखित यन्त्र को अष्टगन्ध से दो बार भोजपत्र पर लिखें। इनमें से एक यन्त्र का पूजन करके अपनी दुकान के गल्ले में रखें

धोकर सोने-चान्दी की चेनी या लाल धागे में गले में डालें। व्यापार में आश्चर्यजनक वृद्धि होगी और लक्ष्मी का वास आपके घर में हमेशा रहेगा। इस यन्त्र को विधिपूर्वक किसी कर्मकाण्डी विद्वान् पण्डित से तैयार कराएं।

विवाहकारक यन्त्र

विधि :- इस यन्त्र की सिद्धि हेतु पुष्य, शतभिषा, अश्विनी तथा रोहिणी नक्षत्र में अनुष्ठान प्रारम्भ करें। रात्रि में पूर्व की तरफ मुंह करके मां भगवती का पंचोपचारपूजन करें। सफेद कागज़ पर अनार की कलम द्वारा केसर की स्याही से इस यन्त्र को लिखें। तत्पश्चात् 5 हल्दी की गांठें पीले वस्त्र में लपेटकर माता जगदम्बा की प्रतिमा या फोटो के सामने एवं लिखे गए यन्त्र पर रख दें। फिर **"ॐ क्लीम् वं पं क्षं डं लं नं क्षौं क्लीम्"** – इस मन्त्र की 11 माला जाप करें। यह जाप प्रतिदिन 11 माला 21 दिन तक करें। जाप के समय पीत या लाल वस्त्र पहिनें; घी का दीपक जलाएं। अनुष्ठान पूरा होने पर यन्त्र एवं मन्त्र को कागज़ पर लाल स्याही से लिखकर जलप्रवाह करें। जो यन्त्र अनुष्ठान प्रारम्भ करने से पहिले मां जगदम्बा की मूर्ति के सामने रखा था, उसे चान्दी के ताबीज़ में मढ़ाकर विवाहयोग्य लड़का/लड़की को पहिना दें; शीघ्र ही विवाह सम्पन्न होगा।– **[ये यन्त्र बीकानेर के पं. गिरवर प्रसाद विस्सा शास्त्री जी द्वारा अनुभूत हैं।]**

विवाहकारक यन्त्र			
९	२१	११	८
२३	१	९	१९
३७	५	३	२७
४	३४	३५	७

अखण्ड भण्डार हेतु तान्त्रिक प्रयोग

दीपावली के दिन या कृष्ण पक्ष की अष्टमी, चतुर्दशी या पुष्यनक्षत्र में मयूरशिखा (जंगलीजड़ी) लाकर **"ॐ ह्रीं मयूरशिखामहासुखसर्वकाय साधय साधय स्वाहा।"** – मन्त्र 108 बार पढ़कर जड़ी पर सिन्दूर, कपूर, कस्तूरी का तिलक लगाएं। धूप देकर सिद्धजड़ी को तिजोरी में रखे तो भण्डार अखण्ड रहे। देश के बड़े-बड़े उद्योगपतियों, सेठों, व्यापारियों के यहां इस प्रकार की सिद्धजड़ी तिजोरी में स्थापित रहती है।

प्रत्येक कार्य में सफलता मिले

व्यापार, विवाह या किसी कार्य में यदि बारम्बार असफलता मिले तो निम्नांकित टोटका प्रयोग में लाएं;–

सरसों के तेल में सिके हुए गेहूं के आटे से बने या पुराने गुड़ से तैयार सात पूये (पूड़े), सात आक (मंदार) के फूल, सिन्दूर, आटे से तैयार सरसों के तेल में रुई की बत्ती से जलता दीपक– ये सब पत्तल या एरण्डी के पत्ते पर रखकर शनिवार की रात्रि में किसी चौराहे पर रख दें। रखते समय यह कहें;– **" हे मेरे दुर्भाग्य तुझे यहीं छोड़े जा रहा हूं, कृपा करके मेरा पीछा न करना।"**– इस प्रकार उच्चारण करके वापिस घर चले आएं, पीछे मुड़कर न देखें, किसी से चर्चा न करें। सभी बाधाएं दूर होकर शीघ्र ही सफलता मिलेगी।

मिर्गी रोग से मुक्ति मिले

मिर्गी के रोगी को एक तोला असली हींग ताबीज़ की भान्ति नए सफेद कपड़े में सीकर धागे में बांधकर गले में पहिना देने से मिर्गी का दौरा रुक जाता है।

गाय के बाएं सींग की अंगूठी बनवाकर रोगी व्यक्ति के बाएं हाथ की कनिष्ठका अंगूली में धारण करने से मिर्गी का दौरा नहीं पड़ता।

आधसीसी रोग से मुक्ति मिले

रविवार के दिन सूर्योदय से पूर्व ही पानी वाले कच्चे नारियल का पानी निकालकर खड़े-खड़े ही चार घूंट पीवें, थोड़ा सा अपने सिर पर डालें तथा नासिका के दोनों छिद्रों (नथुनों) के द्वारा चार-चार बार थोड़ा-सा पानी ऊपर को खींचकर (सुड़ककर) एक घण्टे तक टहलें। यह क्रिया पूर्व दिशा की ओर मुख करके करनी चाहिए; अवश्य लाभ होगा।

सर्ववशीकरण तिलक

प्रयोग–शुद्ध सिन्दूर, शुद्ध केसर, शुद्ध गोलोचन (गोरोचन)–सब बराबर मात्रा में पीसकर डिबिया में रखें। इसका तिलक लगाने से सब मोहित हों।

श्रीमहाकाली स्तोत्र

यह स्तोत्र बहुत गुह्य एवं आश्चर्यजनक प्रभावयुक्त है। इस स्तोत्र का पाठ करने से भक्तजनों को सर्वविध संकट व घर में दुख–दारिद्य से मुक्ति मिलती है। इस स्तोत्र का पाठ करने से सुख–समृद्धि प्राप्त होती है। भूत–प्रेतजन्य कष्ट उस घर में नहीं रहता जहां इस स्तोत्र का पाठ होता है– *सम्पादक।*

स्तोत्र

ॐ प्राग्देहस्थो यदाहं तव चरणयुगं नाश्रितो नार्चितोऽहम्
तेनाद्धा कीर्तिवर्ज जठरज–दहनैर्बाध्यमानो बलिष्ठैः।
क्षिप्त्वा जन्मान्तरान्नः पुनरिह भविता क्वाश्रयः क्वापि सेवा
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटित – वदने कामरूपे कराले।।१।।

बाल्ये बालाभिलापैर्जड़ित–जड़मतिर्बाललीला प्रसक्तो
न त्वां जानामि मातः कलिकलुषहरां भोग–मोक्ष प्रदात्रीम्।
नाचारो नैव पूजा न च यजनकथा न स्मृतिर्नैव सेवा
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटित – वदने कामरूपे कराले।। २।।

प्राप्तोऽहं यौवनं चेद् विषधर–सदृशैरिन्द्रियैर्नष्टगात्रो
नष्टप्रज्ञः परस्त्री–परधरहरणे सर्वदा साभिलाषः।
त्वत्पादाम्भोजयुग्मं क्षणमपि मनसा न स्मृतं तत्कदापि
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटित–वदने कामरूपे कराले।। ३।।

प्रौढे शिक्षाभिलाषी सुत–दुहितृ–कलत्रार्थमन्नादिचेष्टः
क्व प्राश्ये कुत्र यामीत्यनुदिनमनिशं चिन्तया मग्नदेहः।
नो ते ध्यानं न चास्था न च भजनविधिर्नामसंकीर्तनं वा
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटित–वदने कामरूपे कराले।। ४।।

वृद्धत्वे बुद्धिहीनः कृश–विवश–तनुः श्वास–कासातिसारैः
कर्मानर्होऽक्षिहीनः प्रगलितदशनः क्षुत–पिपासाऽभिमग्नः।

पश्चात्तापेन दग्धो मरणमनुदिनं ध्येयमात्रं न चान्यत्
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटित–वदने कामरूपे कराले।। ५।।

कृत्वा स्नानं दिनादौ क्वचिदपि सलिलं नाहतं नैव पुष्पम्
नो नैवेद्यादिकं ते क्वचिदपि विहितं नापि भावो न भक्तिः।
न न्यासो वै न चैवं तव गुणकथनं नापि चर्चा कृता ते
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटित – वदने कामरूपे कराले।।६।।

जानामि त्वां न चाहं भवभयहरणे सर्वसिद्धिप्रदात्रीम्
नित्यानन्दोदयाढ्यां त्रितयगुणमयीं नित्यशुद्धोदयाढ़्याम्।
मिथ्या कर्माभिलाषैरनुदिनमभितः पीड़ितो दुःखसंघैः
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटित –वदने कामरूपे कराले।।७।।

कालाभ्र–श्यामलांगीं विगलितचिकुरां खड्ग–मुण्डाभिरामाम्
त्रास–त्राणेष्टदात्रीं कुणपगणशिरो मालिनीं दीर्घनेत्राम्।
संसारस्यैकसारां भवजननहरां भावितो भावनाभिः
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटित –वदने कामरूपे कराले।।८।।

ब्रह्मा–विष्णुस्तथेशः परिणमति सदा त्वत्पदाम्भोजयुग्मम्
भाग्याभावान्न चाहं भव–जननि–भवत्पादयुग्मं भजामि।
नित्यं लोभ–प्रलोभैः कृत–विवशमतिः कामुकस्त्वां प्रयाचे
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटित – वदने कामरूपे कराले।।९।।

रागद्वेषैः प्रमत्तः कलुषयुत–तनुः कामना भोग–लुब्धः
कार्याकार्यविचारी कुलमतिरहितः कौलसंघैर्विहीनः।
क्व ध्यानं ते क्व चर्चा क्व च मनुजपनं नैव किञ्चित् कृतं हि
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटित–वदने कामरूपे कराले।।१०।।

रोगी दुःखी दरिद्रः परवश–कृपणः पांशुलः पापचेता
निद्रालस्य– प्रसक्तः सुजठरभरणे व्याकुलः कल्पितात्मा।
किं ते पूजा–विधानं त्वयि क्व च नु मतिः क्वानुरागः क्व चास्था

मिथ्या व्यामोहरागैः परिवृत- मनसः क्लेशसंघान्वितस्य
क्षुन्निद्रौघान्वितस्य स्मरसुविहरिणः पापकर्मप्रवृत्तः।
दारिद्र्यस्य क्व धर्मः क्व च जननरुचिः क्व स्थितिः साधुसंघैः
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटित-वदने कामरूपे कराले।।१२।।

मातस्तातस्य देहाज्जननि-जठरगः संस्थितस्त्वद्वशेऽहम्
त्वं हर्त्री कारयित्री करणगुणमयी कर्महेतु- स्वरूपा।
त्वं बुद्धिश्चित्तसंस्थाप्यहमति भवती सर्वमेतत् क्षमस्व
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटित-वदने कामरूपे कराले।। १३।।

त्वं भूमिस्त्वं जलं च त्वमसि हुतवहस्त्वं जगद्वायुरूपा
त्वं चाकाशं मनश्च प्रकृतिरसि महत्-पूर्विका-पूर्वपूर्वा।
आत्मा त्वं चासि मातः परमसि भवती त्वत्परं नैव किञ्चित्
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटित -वदने कामरूपे कराले।। १४।।

त्वं काली त्वं च तारा त्वमसि गिरिसुता सुन्दरी भैरवी त्वम्
त्वं दुर्गा छिन्नमस्ता त्वमसि च भुवना त्वं हि लक्ष्मीः शिवा त्वम्।
धूमा मातङ्गिनी त्वं त्वमसि च बगला मंगलादि स्तवाख्या
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटित- वदने कामरूपे कराले।। १३।।

स्तोत्रमहिमा-

स्तोत्रेणानेन देवीं परिणमति जनो यः सदा भक्तियुक्तो
दुष्कृत्या दुर्गसंघं परितरति शतं विघ्नतानाशेमेति।
नाधि-व्याधी कदाचिद् भवति यदि पुनः सर्वदा सापराधः
सर्वं तत्कामरूपे त्रिभुवनजननि क्षम्यतां पुत्रबुद्ध्या।। १६।।

ज्ञाता वक्ता कवीशो भवति धनपतिर्दानशीलो दयात्मा
निष्पापी निष्कलंकी कुलपतिकुशलः सत्यवाग् धार्मिकश्च।
नित्यानन्दो दयाढ्यः पशुगण-विमुखः सत्पथाचारशीलः
संसाराब्धिं सुखेन प्रतरति गिरिजा-पादयुग्मावलम्बात्।। १७।।

।।श्रीकालिका स्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

यात्रासिद्धि के लिए तान्त्रिक प्रयोग

आज की भागदौड़ की ज़िन्दगी में यात्रा में अनेक प्रकार के कष्ट होते हैं। जब तक सकुशल घर लौटकर वापिस न आ जाएं तब तक घर में चिन्ता बनी रहती है। नीचे लिखे मन्त्र को पढ़ने मात्र से यात्रा मंगलमय होती है।

मन्त्रः-" ॐ गच्छ गौतम शीघ्रं त्वं ग्रामेषु नगरेषु च।
आसनं भोजनं शय्यां कल्पयस्व ममाग्रतः।।"

विधिः- यात्रा में जब नगर/ग्राम से चलने लगें, तब सात बार यह मन्त्र पढ़ें और कहें कि **" गौतम ऋषि का न्योता है।"**

फिर घास-दूब (दूर्वा) को जेब में रखकर नगर में अथवा ग्राम में प्रवेश करे तो सर्वसुख उपलब्ध हों एवं मार्ग में बाधा न आए।

समाज में प्रतिष्ठा बढ़े।

मयूरशिखा (मोरपंख का चन्दोवा) यदि रवि-पुष्यामृत योग के समय उपलब्ध हो जाए तो शुद्धिपूर्वक अपने पास रखें। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा।

दुकान में बिक्री बढ़ाने के लिए अनुभूत प्रयोग

अनेक बार ऐसा होता है कि भली प्रकर से चलती दुकान में रुकावट आ जाती है। दुकान पर ग्राहकों की भीड़ को देखकर किसी की कुदृष्टि लग जाने से होती हुई बिक्री मन्द पड़ जाती है। इसका प्रभाव दूर करने के लिए इस मन्त्र का प्रयोग हम पहले भी पंचांगों में दे चुके हैं, लेकिन जनता के अनुरोध पर पुनः लिख रहे हैं।

मन्त्र-"भंवर वीर तू चेला मेरा, खोल दुकान कहाकर मेरा।
उठै जो डंडी बिकै जो माल, भंवरवीर सोखे नहीं जाए।।"

विधि- इस मन्त्र को दिवाली की रात को पढ़कर सिद्ध कर लें। फिर आवश्यकता पड़ने पर रविवार के दिन काले उड़द लेकर 21 बार इन उड़दों पर इस मन्त्र को पढ़कर अभिमन्त्रित कर लें एवम् दुकान में इधर-उधर उक्त मन्त्र पढ़ते हुए डाल दें। दूसरे दिन इन्हें बुहार कर काले कपड़े में एकत्र करके काले धागे से उस कपड़े का मुख बांधकर किसी चौराहे पर डाल दें। यह प्रक्रिया स्वयं करें, किसी से मत कराएं। आगामी तीन-चार रविवारों में ही बिक्री आश्चर्यजनक रूप से बढ़ेगी।

*****

श्लोकशतक

(लघुपाराशरी का सरलीकृत सुन्दर, श्लोकबद्ध विवेचन)

अनुवादक– संयमी शर्मा, M.A., ज्योतिषाचार्य,

फलित ग्रन्थों में लघुपाराशरी गूढ़ार्थक एवम् गम्भीर चिन्तनगम्य ग्रन्थ है, जिसके लेखक अज्ञात हैं। इसी ग्रन्थ को सुबोध बनाने का प्रयास अनेक विद्वानों ने किया है, जोकि विभिन्न भाष्य–टीकाओं के रूप में उपलब्ध है। लेकिन लघुपाराशरी के इन 42 श्लोकों को सुबोध श्लोकबद्ध शैली में प्रस्तुत करने का श्रेय **पं. श्री मिठ्ठनलाल जी शुक्ल** को जाता है। उन्होंने 110 वर्ष पूर्व **'श्लोकशतक'** लिखकर लघुपाराशरी के गूढ़ रहस्यों का सरलीकरण करके दैवज्ञों पर भारी उपकार किया है। यह ग्रन्थ जीर्ण–शीर्ण अवस्था में हमें प्राप्त हुआ है। इस महत्त्वपूर्ण फलित पुस्तिका को सुरक्षित रखते हुए बालबोध शैली में हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत करने का प्रयास क्रमशः किया जा रहा है। **अब मारकाध्याय के शेष श्लोकों का हिन्दी–अनुवाद इसवर्ष प्रस्तुत है। – सम्पादक**

अथ मारकाध्यायः (शेषभाग)

(17) **''केन्द्रत्रिकोणगो राहुरसम्बंधी सतोऽसतः।**
सदा चान्तर्दशा तस्य राज्यकीर्तिप्रदा नृणाम्।।''

अर्थ– केन्द्र (लग्न–चतुर्थ–सप्तम–दशम–भाव) एवम् त्रिकोण (पंचम–नवम) में स्थित राहु यदि शुभ या पापी ग्रह से सम्बन्ध न भी करें तो वह अपनी अन्तर्दशा में जातक को राज्य–कीर्ति देने वाला होता है।

(18) **''सर्वे ग्रहाः स्वकीयासु दशास्वन्तर्दशासु च।**
स्वं फलं नैव यच्छंति स्वसम्बन्धिफलप्रदाः ।।''

अर्थ– सभी शुभग्रह किंवा पापग्रह अपनी–अपनी दशा और अन्तर्दशा में स्वतन्त्ररूप से अपने फल को देने वाले नहीं होते, अपितु जिस ग्रह से वे सम्बन्ध बना रहे होते हैं, उससे सम्बन्धित फल को देने वाले होते हैं।

(19) **''असम्बंधे तु ते सर्वे स्थानानुगुणिनः सदा।**
फलमेतन्मनुष्याणां पशूनां स्वदशाफलम्।।''

अर्थ– सभी शुभग्रह और पापग्रह अपनी दशा और अन्तर्दशा में फल करते हुए जिस ग्रह से सम्बन्ध बनाते हैं वैसा ही फल करते हैं। यदि यह ग्रह किसी भी प्रकार से किसी ग्रह से सम्बन्ध न करते हों तो यह सभी ग्रह हमेशा अपने स्थान (भाव) के अनुसार फल देते हैं।

(20) **''दशानाथस्य सम्बंधी यः कश्चिन्न खगो भवेत्।**
तदीयान्तर्दशामध्ये स्वं फलं यच्छतीह सः।।''

अर्थ– दशेश के साथ कोई भी ग्रह सम्बन्ध न करे तो वह ग्रह अपनी ही अन्तर्दशा में अपना फल देता है।

(21) **''यादृशस्स्याद्दशानाथस्तादृशो यो हि खेचरः।**
दशेशस्य सधर्मी सः शुभो वा मलिनोऽथवा।।''

(22) **''स्वीयायां तद्दशायां वा दशानाथः सधर्मिणः।**
फलं यच्छंति निःशेषं निश्चितं कविसम्मतम्।।''

अर्थ– दशेश (पापी हो या शुभ हो) जैसा भी हो, वैसा ही ग्रह दूसरा दशेश का सधर्मी (शुभाशुभ) हो तो दशेश एवं सधर्मी ग्रह की अन्तर्दशा में निश्चय ही सम्पूर्ण फल देता है।

(23) **''दशानाथो यदा पापः शुभोप्यन्तर्दशापतिः।**
व्यत्ययेऽपि विरुद्धः स्यात्तयोरन्तर्दशाफलम्।।''

अर्थ– जब दशेश पापीग्रह हो और अन्तर्दशा का स्वामी शुभग्रह हो

अथवा दशेश शुभग्रह हो या अन्तर्दशेश पापी ग्रह हो तो इन दोनों स्थितियों में अन्तर्दशा का फल अशुभ (विपरीत) ही होगा।

(24) ''केन्द्रनाथः स्वसम्बंधिकोणेशान्तर्दशासु वै।
शुभं दत्ते विलोमेऽप्यन्यतः सम्बंधतोऽशुभम्।।''

अर्थ— केन्द्रेश की दशा में एवम् उससे सम्बन्ध करने वाले त्रिकोणेश की अन्तर्दशा मे शुभफल ही प्राप्त होता है। इससे विपरीत स्थिति में अर्थात् त्रिकोणेश की दशा में एवं त्रिकोणेश से सम्बन्ध बनाने वाले केन्द्रेश की अन्तर्दशा में भी शुभ फल ही प्राप्त होता है। परन्तु केन्द्रेश और त्रिकोणेश के अतिरिक्त ग्रहों से सम्बन्ध हो तो अशुभ फल ही प्राप्त होता है।

(25) ''शुभग्रहस्य सम्बंधी योगकर्ता हि यो ग्रहः।
अस्याप्यन्यन्तर्दशामध्ये राज्यसौख्यं भवेद्ध्रुवम्।।''

अर्थ— राजयोग करने वाले ग्रह पहले कहे हुए (केन्द्रेश–त्रिकोणेश) से सम्बन्ध करते हों तो सम्बन्धी–ग्रह की अन्तर्दशा में निश्चय ही राजयोग को प्रदान करने वाले होते हैं।

(26) ''अत्यन्ताशुभदः पापः पापमध्ये यदा भवेत्।
सम्बन्धी तु शुभो मिश्रोऽसम्बधी त्वशुभप्रदः।।''

अर्थ— पापीग्रह की दशा में पापीग्रह की ही अन्तर्दशा हो तो बहुत ही अशुभफल होता है और पापीग्रह की दशा में शुभग्रह की अन्तर्दशा हो तो मिश्रफल होता है और किसी भी शुभाशुभ ग्रह से सम्बन्ध न करता हो तो अशुभ फल ही करता है।

(27) ''मारकस्य दशायान्तु शुभसम्बंधिनो भवेत्।
अन्तर्दशा तदा नैव मृत्युः पाराशरं मतम्।।''

अर्थ— मारकग्रह की दशा में (मारकेश की दशा में) शुभग्रह की अन्तर्दशा हो तो उसमें पाराशर ऋषि के अनुसार मृत्यु नहीं होगी।

(28) ''असम्बन्धिखलस्येहान्तर्दशा मरणप्रदा।
सम्बंधिनः पुनः किं स्यादिति निश्चयमीरितम्।।''

अर्थ—मारकग्रह की दशा में मारकग्रह के साथ सम्बन्ध न करने वाले पापग्रह की अन्तर्दशा में मृत्युयोग बनता है। यदि मारकग्रह के साथ सम्बन्ध करने वाले पापग्रह की अन्तर्दशा हो तो निश्चय ही मृत्युयोग कहना चाहिए।

(29) ''शुक्रमध्यगतो मंदः शौक्रं शुक्रोपि मन्दगः।
मांदः शुभाशुभं दत्ते विशेषेण न संशयः।।''

अर्थ—शुक्र की महादशा में शनि के अन्तर में शुक्र के फल की प्रधानता रहती है और शनि की महादशा में शुक्र के अन्तर में शनि का ही शुभाशुभ फल प्राप्त होता है।

(30) ''इत्थं तातादिभावानां लग्नं तत्तत्प्रकल्प्य वै।
सर्व फलं वदेद्धीमान् मारकादि सुखादि च।।''

अर्थ—इसप्रकार पिता, माता, भ्राता, पुत्र, स्त्री आदि के भावों को भी लग्न मान कर उनके मारक और सुखादि का फल बुद्धिमान् कहें।

(31) ''कामाधिपति सम्बन्धि भुक्तौ परिणयं वदेत्।
शुक्रेन्दुलग्नतः कामनाथस्य च दशासु वा।।''

अर्थ—सप्तमभाव के स्वामी से सम्बन्ध करने वाले ग्रह की अन्तर्दशा में विवाह होता है, अथवा शुक्र, चन्द्र और लग्न, इनसे सप्तम भाव के स्वामी की दशा में भी विवाह योग बनता है।

(32) ''कोणनाथस्य सम्बन्धिदशास्वन्तर्दशासु च।
पुत्रादीनां वदेज्जन्म धीमान् मत्यनुसारतः।।''

अर्थ— त्रिकोण के स्वामी से सम्बंध करने वाले ग्रह की दशा या अन्तर्दशा में बुद्धिमान् ज्योतिषी बुद्धि से पुत्र या कन्या का जन्म कहें।

****

प्रसूति-लग्न विचार

मेष—जन्मसमय मेष लग्न हो, तो माता का पूर्व या पश्चिम में सिर, उपसूतिका दो या तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवम् मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल, मलिन थे। ४। ११। १६। ४४। ५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे; इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप कराना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो १०० वर्ष जीवे।

वृष— माता का दक्षिण में सिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आई, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर से पूर्व में सूतिका-स्थान, श्वेत स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया। १। २८। ३३। ४४। ६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय का जाप और ब्राह्मणभोजन करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन— माता का सिर पश्चिम में, उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, सिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया, दूध कम उतरे। ४। १०। १४। ३८। ५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवाएं। यदि इन वर्षों से बचे, तो ८६ वर्ष जीवे।

कर्क—माता का उत्तर में सिर, उपसूतिका ५ या ४, बालक जन्मते ही छींका, नाल छूटा, भूमि पर जन्म, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र श्वेत व लाल, माता ने प्रसव से पहले मधुर व शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया, बालक के वामांग में लहसुन आदि का चिह्न, देर से रोया। ५। २५। ४०। ५८। ६२— इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश के समय तुलादान, छायादान और मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना कल्याणप्रद है।

सिंह— माता का पश्चिम या पूर्व में सिर, मलिन या लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या खट्टा भोजन किया था, जन्मसमय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान। ५। १३। २८। ३६। ४८— इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो ६७ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्यनारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और ब्राह्मणों को मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा।

कन्या—माता का दक्षिण में सिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्ठान्न बासी चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्मसमय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही अर्द्ध शब्द किया, घर के नैर्ऋत्यकोण में सूतिका-स्थान। ४। १६। २३। ३६। ५५— ये वर्ष कष्टकारक हैं। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला— माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, ठंडा जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई थी। जन्मसमय स्त्री ३ या ६, वहां एक कन्या भी हो, दीपक उठाया गया, बालक जन्मसमय कुछ ठहरकर अर्धशब्द करके रोया, घर के पश्चिमभाग में सूतिकास्थान। ८। १५। ३१। ३५। ६२। ६४— इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रहों का दान, हवन, जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे।

वृश्चिक—माता का दक्षिण या उत्तर में सिर, रक्त या दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक, अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ३, पीछे से भी २ आईं, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया। छींक भी किया, दीर्घ केश, घर के पश्चिमभाग में प्रसवस्थान। ११। २८। ३८। ५२। ६२— इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु—माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, पीत या रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्मसमय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्यकोण में सूतिकास्थान। २। १०। १८। ३१। ३८। ४२। ६७— इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मणभोजन श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर— माता का सिर दक्षिण में, ऊपर काला व जीर्ण कमजोर वस्त्र; गुड़, दुग्ध, कसैला भोजन, ठण्डा जलपान किया था। जन्मसमय स्त्रियां २, पीछे से एक आई। दीपक हाथ में उठाया गया। बालक जन्मोत्तर अर्धशब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तरभाग में पुराना सूतिकास्थान। ५। १३। २७। ३६। ५७। ६३। ८७— इन कष्टकारक वर्षों से बचे, तो ९५ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के शुरु में शिवार्चन, मृतसंजीवनी आदि का जाप रखे।

कुम्भ—माता का सिर पश्चिम को; जीर्ण, धुम्रवर्ण वा कुरूप वस्त्र, मधुर-शीत शाकादि का भोजन, कष्ट अधिक, जन्मसमय पास स्त्रियां ४, दो स्त्री पीछे से आईं, उन में एक स्त्री गर्भिणी भी हो, दीपक स्वास्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्धशब्द से रोया, वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तरभाग में सूतिका-गृह। २। २८। ३३। ४८। ६४— इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जयजप हितकारक है। इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन— माता का सिर उत्तर में, पीत या मलिन वस्त्र, विचित्र अल्प भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ में उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका-स्थान। १। ८। १३। ३६। ४८— इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रह-शान्ति-हवन, मृतसञ्जीवनीमन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे। **स्मरण रहे**—अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें – वही बालक का जन्मलग्न जानना चाहिए, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

पितृपरोक्ष जन्मज्ञान— (१) जन्मलग्न को चन्द्रमा न देखे, (२) बुध-शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, (३) लग्न में शनि चन्द्रमा से अदृष्ट हो, (४) भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो– इन चारों योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना चाहिए।

जन्मकुण्डली में दिशाज्ञान— प्रथम भाव पूर्व, द्वितीय-तृतीय ईशान, चतुर्थ उत्तर, पञ्चम-षष्ठ वायव्य, सप्तम पश्चिम, अष्टम-नवम नैर्ऋत्य, दशम दक्षिण, एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना चाहिए।

रोया, घर के पश्चिमभाग में सूतिकास्थान। ८ ...
कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रहों का दान, हवन, जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि

जन्मकुण्डली में दिशाज्ञान– प्रथम भाव पूर्व, द्वितीय–तृतीय ईशान, चतुर्थ ... अष्टम–नवम नैर्ऋत्य, दशम दक्षिण, एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना चाहिए।

प्रसूतिस्थान से पाकशालादि का विचार

जन्मकुण्डली में सूर्य, मंगल जिस दिशा में हों, वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना चाहिए। इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और शनि से अशुभ मैला स्थान जानना चाहिए। दोहा– लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। वा लग्न दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार।। केन्द्र (१। ४। ७। १०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें, जो बली (स्वराशि, मित्रोच्च, व मूलत्रिकोण राशि का) केन्द्रस्थान में स्वमित्र, शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो, उसकी दिशा में अथवा लग्नपति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है।

ग्रहों की दिशा–सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनि की पश्चिम और राहु, केतु की नैर्ऋत्य।

चन्द्रात्तैलज्ञानम्– चन्द्रमा से दीप के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं, तो दीपक में तैल ज़्यादा कहना। यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो, तो दीपक में आधा तैल कहें। यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तैल कहना।

सो०– **तनुस्थान शशि जाई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशुजन्म तब आई, तब कही दीपकतैल नहीं। सित–शनि दशमें धाम, पंचम तनुपै चन्द्रमा, शिशुजन्म में तब वाम, दीपकतैल सौं युक्त कहि।**

लग्नादीपवर्तिज्ञानम्– जन्मलग्न के कम अंश हों तो बडी बत्ती कहें, अधिक अंश हों तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतर्गतैर्ग्रहैःस्युरुपसूतिकाः– यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्न से चन्द्रपर्यन्त जितने ग्रह हों, उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों तो उसकी गणना करें, अन्यथा उसे नहीं जोड़ें। इस प्रकार जो ग्रह लग्न में हो और उसके अंश लग्न से अधिक हों तब ही उसकी संख्या जोड़ें, अन्यथा नहीं जोड़ें। लग्न–चन्द्रांतर्गत कोई ग्रह वक्र या उच्च का हो तो तीन गुणा करें और स्वराशि, स्वनवमांश, स्वद्रेष्काण में हो तो द्विगुण करें, इसी प्रकार जितने ग्रह नीच राशि के, अस्त होवें, उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इसमें भी विशेष यह ध्यान रखने योग्य है, कि– वह लग्न, चन्द्रांतर्गत ग्रह लग्न के भोगांश से सप्तमभावपर्यन्त होवे तो सूतिकागृह से बाहर समीप में, और सप्तमभाव से लग्न के भुक्तांशपर्यन्त हों तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना चाहिए। उन ग्रहों में जो शुभ ग्रह वहां हों तो, धर्मशील, सौभाग्यवती स्त्रियां कहें, अशुभ ग्रहों से विधवा, दुश्चरित्रा कहें।

शय्या–शिर व पादविचार

"लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषट्क्रान्त्येषु पादाः।" लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहें। अर्थात् १। २ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण, ४। ५ में दक्षिण, ६ में नैर्ऋत्य, ७। ८ में पश्चिम, ९ में वायव्यकोण, १०। ११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशान कोण की तरफ जानें। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाये जानना चाहिए। इन स्थानों में से जिन स्थानों में पाप ग्रह हों, वहां सूतिका के पलंग का पावा फटा, टूटा समझना चाहिए।

दो०– मीन–मिथुन–सिंह–तुला–मेष होय तत्काल।
अन्तरिक्ष भयो बालक, शेषे भूमि विशाल।।

अथचिह्नज्ञानम्– दोहा–षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान। वामे कुछ लहसन अहै गर्गवचन परमाण।। भानु तथा सौरी तनधन कुंज कण्टक चन्द। बालक के षट् अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राहु। वामकर्ण वा मस्तके अवश चिह्न दरशाह।। सुह्रद भाव में कवि तव भौम वा सौरी लग्न। वामपाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न।। नौमे पांचे भृगु बसे तनु व चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिह्न भणंद।"

प्रसवकष्ट दूर हो– प्रसवकाल से पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकण्डा) की जड़ें लाकर, घृतयुक्त गुग्गुल की धूनी देकर कटि में बांधे और साथ ही "ॐ मुक्ताः आशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद् गर्भमेहि माचिर–माचिर स्वाहा।।"– इस मन्त्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र ही प्रसव होगा। अगर तीस का यंत्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख, धोकर पिला देवें तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। स्मरण रहे कि– पहले उपरोक्त मंत्र तथा यन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात्रि को मन्त्र का जाप करके तथा यन्त्र को लिखकर सिद्ध कर लें, तब कष्ट को मिटाता है।

बालक के लिए अरिष्ट

दो०:– "द्यूनाष्टमतनु पाप खग, बरहै शशि जो खीन। कण्टक शुभ खग ना बसै, वेगि ताहियमलीन।। बसैचन्द्रा द्वादसे अष्टभवन दो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु–पिता संताप।। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्मसमय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु–पिता संताप।। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्मसमय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव।।"

अथकाणयोगः– "तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसै त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुक्त भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अन्ध यह योग है भाषत बुध समुदाय।। तात मात भ्राता तनय मातुल त्रिकघर नाथ।। चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान।। भानु राहु दहनों नयन, बुधजन कहत बखान।।"

मूक योगः– "पञ्चमेश गुरुयुक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौ न भौमपतियुक्त गुरु त्रिकहि मूक कहि सोय।। शुक्र त्रिके गुरु सिंह अज दशम भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश।।"

दुःखदयोग–रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पापयुक्त लग्नेश। जन्मसमय जाके परे ताको अंग कलेश।। पापयुक्त तनुभवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परे तनु मुख विश्वाबीस।। पापग्रहयुत लग्नपति परै लग्न में आय। वीर्यहीन नर होय तो अधिक व्याधि रुजताय।।

बन्धनयोग– क्रूर रहै धन नवम व्यय और पञ्चम आगार। सो नर सूर कसूर करि निवसै कारागार।।

सर्पवेष्टितयोग– यदि अष्टमेश लग्न में राहुसहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित पैदा होता है।

यमल जन्मयोग–चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्द्ध और धनु के

उत्तरार्द्ध) का सूर्य होवे, शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभावराशि के लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहें। अथवा आधानलग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे– शनि, मंगल से ५/७/९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु–समय–विचार – जिन अरिष्ट योगों में मरणकाल नहीं कहा गया, उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो, वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है, तब मृत्यु कहें। अथवा– जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो, जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है, तब मृत्यु होनी बताएं। अथवा चन्द्रमा जब लग्नराशि में आता है, तब मृत्यु का होना कहें। अथवा वर्ष के भीतर जब जिस योगयुक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पापग्रहों द्वारा देखा जाता हो, तब मृत्यु कहनी चाहिए। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके, तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इसलिए आयु का प्रथम विचार करें, फिर मृत्यु कहें।

सुखदयोग – अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गृह दो परे तो जानो सुख संग।। जन्मलग्न में उच्च ग्रह जो काहु के होय। मित्रदृष्टि ता पर परे सर्वसुखी नर होय।।

क्लीब (नपुंसक) योगः – दशम भवन भृगृ मन्द दोउ क्लीब योग तब जान। शुक्रभवन से रिष्फ षट् मन्द बसे क्लिब भान।।

कुष्ठयोग :– लग्नप बुध कुज शशियुते राहुयुक्त या केतु। श्वेतकुष्ठ को योग यह वरणत गुणी सचेतु।। भौम भास्कर मन्दयुक्त रक्तकृष्ण कह कुष्ठ। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अतिरुष्ट।। जलजगंडयुत, चन्द जो ग्रन्थिगंड कुजसाथ। पित्त रोग तब जानियो बुध त्रिकयुत तनुनाथ। आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयोरोग भगसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून।।

केमद्रुम योग :– आगे–पीछे चन्द्र के जो ना परै ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन डारे खोय।। उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग् केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय।।

स्त्रीजातक

क्रूरलग्नयुक्त क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहीं होय। सो कन्या कुल गरल है भूलि न व्याहेउ कोय।। जाके कुज दशम बसै ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं जासु। क्रूरयुक्त लग्नेश जो पापग्रहों के बीच। सो कन्या व्यभिचारिणी बुधवर कहै कुज नीच। राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पापदृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर। लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज राण्ड कहै पति को तजि तमारि। छटे आठवें चन्द्र जो क्रूर पर निज अङ्ग। भौम आठवें भवन में सो पति करै है भंग।। राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सो हीन। ताको पति जीवित रहे वर्ष दो या तीन।। द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसै त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम।। पापग्रहों के बीच में लग्न होय वा चन्द। सो त्रिय नासे कुलो दुवो माषत कविकुलवृन्द।। सप्तम भृगु जाके बसै सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु भृग बसै बुधजन कहत विचारि।

वैधव्य–विषकन्यायोग :– [illegible]

मंगलवार। कहो द्वादशी तिथि निर्धार।। ३।। इन योगन में कन्या होय। निश्चय विधवा जाने सोय।।४।। जन्मलग्न द्वै शुभग्रह होय। एक पाप ग्रह नम (१०) में जोय ।।५।। शत्रु क्षेत्र में द्वै ग्रैह मानो। ता कन्या को विधवा जानो।। ६।। अश्लेषा द्वितीया को होय। मंदवारयुत लीजो जोय।।७।। परे शतभिषा मंगलवार। साते तिथि लीजो निर्धार ।। ८।। रविवार द्वादशी जो होय। नक्षत्र विशाखा जानो होय ।। ९।। ऐसो योग लखी जो परै। तो कन्या को विधवा करै ।। १०।। दो०– धर्मसदन में भूमिसुत जन्मसदन शनि जान। सूर्य होत सुतसदन में कन्या विधवा मान।। ११।।

वैधव्य–विषकन्याभंगयोग :– जन्मलग्न या चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्नपति सुभगा कन्या होय।।

काकवन्ध्यादि योग :– ज्ञे अष्टमे काकबन्ध्यामन्दार्कावष्टमे बन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या।।

स्त्रीणां राजयोगाः – चौपाई– केन्द्रधाम नभगा शुम होई नरतनु पाय कलत्र समोई। रानी होय बहुत धन ताके मन प्रसन्न होई है सुत वाके–चन्द्रज तुग बसे तनु जाई लाम धन गुरु आवे धाई। सो तिय होय नृपति की नारी जन विख्यात होय सुकुमारी। जो षड्वर्ग शुद्ध गुरु होई शशि दृग् केन्द्र में भवन में होई।। ऐसे योग जन्म सुकुमारी रानी होय सदन धनमारी।। **दोहा–** कर्क चन्द्रमा सातवें जीवदृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरयुत ताकौ पति नृप शूर।। लाभभवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौम। सुरगुर परिपूर्ण लखे रानी होई है तौन।।

स्त्रीणां पुत्रभावविचार :– पञ्चमे शुभदृष्टे च पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत्।।

अशुभ प्रसवमास :– कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथनी, श्रावण में गधी व घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊँटनी, पौष में बकरी, चैत्र में कुतिया के बच्चे जन्में तो 6 मास में पिता व घरवाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन के समय घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र हो। स्मरण रहे कि– यहां सर्वत्र सौरमासग्रहण है। प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर, व्याहृतिमन्त्रों से घृतयुक्त श्वेत सरसों का हवन करें, बच्चा जन्मे तो कार्तिकशान्ति करने से शुभ होता है।

त्रिखलजन्मफल :– यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण कन्या माता को, लडका पिता को भय, धनहानि आदि कष्टप्रद होते हैं। कृपणता छोडकर, त्रिखलशान्ति करें तो शुभ होता है। तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (सोना, चान्दी, तांबा) दान करें।

बालक की दन्तोत्पत्ति का फल

बालक के जन्मते ही दान्त निकले हों तो माता–पिता को अरिष्ट, ऊपर की पंक्ति में दांत से युक्त जन्म ले तो अधिक अरिष्ट, प्रथम–बार ऊपर की पंक्ति में दांत निकले तो मातृपक्ष को भय हो, मामा शान्ति करे। पहले मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ में भाई नष्ट, पाचवें में ज्येष्ठबन्धु नष्ट, छठे में बहुभोग, सातवें में पितृसुख, आठवें में पुष्टि, ९वें में धनी, १०वें में सुख, ११वें में सुख, १२वें में निकले तो धनी हो।

अथैकनक्षत्रजनन–फलम् :– वृद्धगर्ग कहते हैं, कि यदि भ्राताओं व [illegible]

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र का छः मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना

जन्मकुण्डली से विशेष विचार

लघुभ्राता का जन्मसमय जानना :– (१) जन्मलग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़ें, जो राशि हो उस पर जब गोचर में गुरु आए तो भाई या बहन का जन्म होता है। (२) यदि भ्रातृ–प्रतिबन्धक योग न हो तो तृतीयेश, तृतयस्थ ग्रह की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना

(१) जन्मलग्न के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटाएं, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है, तब भाई या बहन को कष्ट होता है।

(२) लग्नेशस्पष्ट में से तृतीयेशस्पष्ट घटाएं, शेष में से दशमेशस्पष्ट और मंगल स्पष्ट घटाएं– शेष राशि में जब गोचर का शनि आता है तब, भ्रातृकष्ट होता है।

(३) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, भौम– इन चारों स्पष्टों को जोड़कर, जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर का शनि होता है, उस काल में भ्रातृकष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर, जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काणराशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब भ्रातृकष्ट जानिए।

माता की मृत्यु का समय जानना :– जन्म के सूर्य में से चन्द्रस्पष्ट को घटाएं, शेष की राशि में या त्रिकोणराशि में या उस शेष राशि के नवांशराशि में जब गोचर का शनि व गुरु होगा, तब माता की मृत्यु का समय जानें।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

स्थानम	शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वोः	हस्ते	गुह्योः	जंघाः	जान्वोः	पादे
घटी	४	६	५	५	५	४	९	४	४	१०
फलम्	पशुना.	धनना.	धनला.	कुटिला	धनला.	दयावती	कामिनी	मातृना.	भ्रातृना.	वैधव्य.

अथ कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल (१/२/३ च.)	आश्लेषा (२/३/४ च.)	ज्येष्ठा	विशाखा (४ च.)
फलम्	ससुरहानिः	सासनाशः	ज्येष्ठनाशः	देवरनाशः

सुतः सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथाश्लेषाद्यपादजः।।

तिथिगण्डान्त– पूर्णा तिथियों के अन्त की ७ घड़ी, नन्दा तिथियों की शुरू की दो–दो घड़ी तिथिगण्डान्त होता है। यह गण्डान्त जन्म, यात्रा, विवाह में भयप्रद होता है।

अथ गण्डमूलनक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

कोष्ठकोक्त ये छः नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक अथवा बालिका माता, पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाए, तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र का छः मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिए; तत्पश्चात् शान्ति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरणों में जन्मफल

मूल पाद	फल	आश्लेषा पाद	फल
१	पितृनाश	४	पितृनाश
२	मातृनाश	३	मातृनाश
३	धननाश	२	धननाश
४	शान्ति से सुख	१	शान्ति से सुख

अथ मूल पुरुषचक्रम्

स्थानं	मूर्ध्नि	मुखे	स्कन्धे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्योः	जान्वोः	पादयोः
घटी	५	७	४	८	४	९	२	१०	६	६
फलम्	राजा	पि. मृ.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा.	मतिमा.

मूलजनने वृक्षविभागफलम्

विभाग	मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फल	शिखा
घटी	७	८	१०	११	१२	५	४	३
फल	मूलनाश	वंशनाश	मातृ–क्लेश	मातुल–नाश	मन्त्री–पद	मन्त्री–पद	विपुल–लाभ	अल्प–जीवन

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र, श्रा. का. पौ.	आषा. आश्वि. मा. भा.
जन्मलग्नानुसारेण	२/५/८/११	३/६/९/१२	१/४/७/१०
मूलनिवासस्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार– दोनों प्रकार से भूमि पर आए तो महाभयप्रद होता है। यहां अन्य एक प्रकार से स्वल्पभय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी–शनि–भौम–समन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातःसंहरते कुलम्।। यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत्।। दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गण्डातिगंडे च परिघे यमघण्टके।। ब्रह्मदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम्।। यथा सर्पविषं चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते।। रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूर्यते। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निसृतेन जलेन हि।। बालकस्यापि तत्स्नाने विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम्।। विरुद्धावयवे मूले विधिरेव स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेममीप्सुभिः।।

अथाभुक्तमूलविचारः– ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी (किसी के मत से एक घटी) एवं मूल नक्षत्र की आदि की चार घटी विशेष आधी, अभुक्तमूल कहलाता है।

इस समय जो बच्चा जन्म ले, उसका परित्याग कर दें या आठ वर्ष; असमर्थ हों तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे।

धनगंडे दरिद्रोऽपि शांतिं कुर्यात्स्वशक्तितः। अंन्यथा नाशमाप्नोति चामुक्तर्क्षे विशेषतः।।

गण्डमूलोत्पन्न बालक का जन्मकाल फल

समय	प्रातः	दिन में	रात्रि में	सन्ध्या में
नक्षत्र	सभी गण्डमूल नक्षत्र	मूल, ज्ये.	मघा, आश्ले.	रे. अश्वि.
फल	पशु हानि	पिता को भय	माता को भय	शरीर को भय

अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थ–ग्रह फलानि

भाव		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	1	अंगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुःखी	रोगी	सकाम
धन	2	धननाश	सम्पत्तिवान्	ऋणी	धनी,गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज	3	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत्	4	दुःखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुःखी	मातृहानि	दुःखी
सुत	5	सुतहानि	धनी,पुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान्	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु	6	शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित्	सबल	सबल
स्त्री	7	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगी	स्त्रीहानि
मृत्यु	8	अल्पायु	योगी	शरीरपीड़ा	गुणी	नीचस्व	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुक्त
धर्म	9	दुष्टमति	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म	10	शूर	तेजयुक्त	तेजस्वी	कीर्तिमान्	सम्पत्तिवान्	संपत्ति	पराक्रमी	मानी	पितृहीन
लाभ	11	धनी	धनी	धनी	धनी	सुलाभ	सुमति	धनवान्	सुख्यात	धनी
व्यय	12	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदार	दरिद्र	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां भावस्थ–ग्रहफलानि

भाव		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	1	क्रोधिनी	गतायु	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	बन्ध्या	पुत्रहीना	दुःखिनी
धन	2	दरिद्रा	बहुधना	बन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्ता
सहज	3	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत्	4	सपीड़ा	दुर्भगा	दुःखार्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहानि
सुत	5	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकांतियुता	सुगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु	6	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति	7	दुःखार्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु	8	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कृतघ्ना	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म	9	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	बन्ध्या	बन्ध्या	शोकयुक्ता
कर्म	10	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साध्वी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ	11	सधना	गुणज्ञा	सुलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुपुत्रा	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय	12	क्रोधिनी	हीनांगी	खला	कृशांगी	सुव्यया	सुव्यया	मूढा	दुष्टा	रोगिणी

अश्विनीजातस्य फलम्–अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखैश्वर्य, तृतीय में मन्त्रीतुल्य, चतुर्थ में नृपतिसमान होता है।

मघाफलम्– मघा के प्रथमचरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धन, विद्यालाभ होंगे।

ज्येष्ठापादफलम्– प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश, तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने बाप का नाश होता है। " ज्येष्ठाद्यपाद जो ज्येष्ठं हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलक्षै मातरं पितरं तथा।"

रेवतीपादफलम् –रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृपसमान, दूसरे में मंत्री या मुख्तार, तीसरे में सुख–सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हों।

अथ मातृसुखनाश–योग– (१) पाप ग्रहयुक्त चन्द्रमा सातवें भाव में हो, (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र हो, (३) पापग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे–सातवें पापग्रह हो, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य और लग्न में मंगल हो, (५) चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो– इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप–दान करना चाहिए।

पितृनाशयोग– (१) सूर्य, मंगल दसवें वा नवम में गए हों, (२) दशमेश रवि, मंगल से युक्त हो, (३) शत्रुराशि का मंगल १०वें हो, (४) पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें हो– इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो।

भ्रातृनाशयोग– भ्रातृ गृह को ईश जो भौम संग त्रिक होय। जाके ऐसे योग है भ्रातृहीन नर होय।।

सन्तानसुखनाशयोग– गुरु ते पंचम गेहपति, जाय परे त्रिकभाव। ऐसा योग जो लखि परे ताकि पुत्र अभाव। पुत्र धर्म अरु लग्नपति जाय परे त्रिकधाम। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान।

रोगिणी स्त्रीयोग– शुक्र और सूर्य सप्तम, पंचम और नवम में हों तो स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है।

नीचयोग – सहज सप्तम धनसदन में क्रूर बसे खग आई। भवन पांचवें गुरु बसै नीच जाति मनसाई।। सिंहलग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल। म्लेच्छ होय कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल। जिनके बुध भग राहुसंग सप्तमभाव विराज। लहे सर्वदा राजसुख होवे वेश्याबाज।।

गोचरग्रहाणां द्वादशभाव–फलबोध–चक्रम्

भाव→ ग्रह↓	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	स्थाननाश	भय	श्रीप्राप्ति	मानभंग	दैन्य	विजय	यात्रा	पीड़ा	सुकृतिनाश	सिद्धि	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्र	अन्नलाभ	धननाश	सुख	रोग	कार्यनाश	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग	धर्मलाभ	सुख	धनलाभ	धननाश
मंगल	शत्रुभीति	धननाश	धनलाभ	शत्रुभय	धननाश	धनलाभ	द्रव्यनाश	शत्रुभय	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	धननाश
बुध	बन्धन	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुख	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सुख	धनलाभ	धननाश
गुरु	भय	धनलाभ	क्लेश	धननाश	सुख	शोक	राजमान	पीड़ा	सुख	दैन्य	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र	शत्रुनाश	धनलाभ	सुख	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुःख	धनलाभ	धनलाभ
शनि	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभय	पुत्रनाश	धनलाभ	दोष	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मनस्य	धनलाभ	धननाश
राहु	हानि	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक	श्रीप्राप्ति	कलह	मृत्यु	दुःख	वैर	सुख	शोक
केतु	रोग	वैर	सुख	भय	सुख	धनलाभ	कलह	रोग	पाप	शोक	कीर्ति	शत्रुभय

अथग्रहाणामेक भोगफल–समयादि ज्ञानम्

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा. के.
एकार्थभोग	मास 1	दिन 2¼	मास 1½	मास 1	मास 12	मास 1	मास 30	मास 18
फलसमयः	आदौ	अन्ते	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्ते	अन्ते
गंतव्यराशेः प्राक्फलम्	मास 5	घटी 3	दिन 8	दिन 7	मास 2	दिन 7	मास 6	मास 3

अथ ग्रहतुष्ट्यर्थ धारणाय मणयः

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यम्	मुक्ताफलम्	प्रवालम्	पन्ना	पुष्परागः	हीरा	नीलमः	गोमेदम्	रौप्यम्
विद्रुमम्	रौप्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	लोहम्	वैडूर्यम्	लाजवर्तः	लाजवर्तः

जारजयोग – भानुचन्द्रतनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न। सो शिशु है पर पुरुष को भाषत ज्योतिषमग्न।। रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार। तीन उत्तर जन्म में तब शिशु कहो परार।।

पूतनाग्रस्तलक्षण एवं शान्ति– बहुत मैले बिछौने पर अकेली जगह में छोटे बच्चे को सुला देने से पूतना नाम राक्षसी का उसमें प्रवेश होने से बच्चा बीमार हो जाता है। तब पूतना की बलि निकालने से अच्छा होता है। जब कभी बच्चा बैठे–बैठे गिर पड़े, या यूं मालूम हो कि–किसी के पीटने से गिरा है और मूर्छा आ गई है अथवा एकाएक कोई रोग हो गया है तब जानो, कि– उसे महा पूतना ने ग्रसा है। यदि कोई लाभादि के वश में आकर वनदेवता या नागदेवता का तिरस्कार कर दे तो उसके बालक में ऊर्ध्वपूतना प्रवेश कर लेती है। यदि कोई मनुष्य अपनी ऋतुस्नाता स्त्री का गमन करने के पश्चात् स्नान न करे या बिना ऋतु के संगम करके हाथ मुंह न धोवे और माता अपवित्र अवस्था में ही बालक के साथ सो जावे तो बालक्रांता नाम की राक्षसी का दोष होगा। बच्चे को इतर फुलेल और फूलमाला पहिनाकर बाहिर जाने से रेवती ग्रही का दोष होता है। सिर खुले, जूठे बाल को संध्या के समय सोने से भी रेवती का आवेश हो जाता है। संध्या के समय जमीन पर सोने से अथवा खेलने से बालक को पुष्प रेवती का दोष होता है। कदाचित् बालक खेलता–खेलता गिर जाए अथवा उसे उल्टी हो या हाथ–पांव नहीं धुले हों तब उसे शुष्क रेवती का आवेश होता है। जूठा खाने और देवता के स्थान पर मल–मूत्र करने से शकुनी ग्रही बालक को पकड़ लेती है। जो नित्यकर्म संध्या–वंदनादि नहीं करते या जो लोग पक्षियों को पालते हैं, जन्मान्तर में उनके बालकों पर शिशुमुण्डिका राक्षसी का दोष हो जाता है। फिर उसका पूजन और बलि, धूपादि दान करने से शान्ति होती है।

उद्वर्तनम्– दूर्वा, कुटकी, नीम के पत्ते, तज–इनका उबटना बालक के शरीर में मलकर पीछे पीपल के पत्ते, मुलही, लसूड़े के पत्ते– इनका काढ़ा बनाकर स्नान कराए, तो यह रोग दूर होगा।

चेष्टाः– जिस बालक के नखों और दांतों में विकार हो, नींद नहीं आए, डर लगे, मन में उद्वेग रहे, शरीर में दुर्गन्ध उठे, अनेक प्रकार की चेष्टा करे, बल अधिक हो जाए–उसे ग्रहाविष्ट जानना चाहिए

सर्वबालग्रह–शान्त्यर्थं देवालये ज्योतिदर्शनं निवासश्च तत्ररात्रौ – ''ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव।।''– इत्यस्य जापः, ततोऽनेनैव मन्त्रेण सदीप दधिमाषान्नबलिदाने घण्टाबन्धने च सर्वबालग्रहशान्तिः।।

अथ बालरक्षाविधि (प्रयोगसारे)– यदि दुष्टदृष्टि (नज़रादि दोषों) के कारण बालक के शरीर में कोई रोग, कष्ट हो जाए तो– ''ॐ वासुदेवो जगन्नाथः पूतनातर्जनो हरिः। रक्षतु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।। १।। कृष्ण रक्ष शिशुं शंख–मधुकैटभ–मर्दन। प्रातः–सङ्गव–मध्याह्न–सायाह्नेषु च सन्ध्ययोः।। २।। महानिशि सदा रक्ष कंसाराति निषूदन। यद्गोरजः पिशाचांश्च ग्रहान् मातृग्रहानपि।। ३।। बालग्रहान्विशेषेण छिन्धि छिन्धि महाभयान्। त्राहि त्राहि हरे नित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम्।। ४।। – इन चारों मंत्रों से अभिमंत्रित की गई गौ के गोबर की शुद्ध भस्म को बालक के मस्तक, कण्ठ, हृदयादि अंगों में लगाने से बालक का कष्ट दूर होगा।

बाल कष्टावली चक्रम्

किस समय कौन पूतना ग्रस्त करती है	मूर्ति-निर्माणार्थ द्रव्य	पूजनद्रव्य	बलि-विधान व समय	स्नान, पूजा, मार्जनमंत्र	धूप
प्रथम दिन-मास-वर्ष में योगिनी	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेतचन्दन, तिलक, श्वेतपुष्प, 5 रंग की झंडी 5, दीपक 5, आटे के सतिए 5, कपूर, लोहवान,	श्वेतभात, 5 पूर्ण पोली (सुहाली) 1 प्रहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखें,	ॐ ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै श्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।	राई, खस, आक के फूल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्बपत्र, गोघृत
द्वितीय दिन-मास-वर्ष में सुनन्दना	एक सेर चावलों का आटा	10 दीपक, 10 झण्डी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिए 10,	भात एक सेर, आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस, संध्यासमय, पश्चिम दिशा में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चे ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्थानाद्राज्ञया स्वाहा।	
तृतीय दिन-मास-वर्ष में पूतना	एक सेर चावलों का आटा	रक्तचन्दन, रक्तपुष्प, श्वेत-ध्वजा, दीपक 10, गेहूं के आटे के सतिए 10,	एक सेर लालभात, आधा सेर पूर्ण पौली, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखें,	सुनन्दना विधानोक्त	लहसुन, गोश्रृंग, सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, गोघृत।
चतुर्थ दिन-मास-वर्ष में मुख मंडिका	तिल-चूर्ण एक सेर	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा 5, दीपक, मिल सके तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प,	भात, सेर आटे के पूड़े, आधा सेर पूर्ण पौली, साय, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखें,	सुनन्दना विधानोक्त	
पंचम दिन-मास-वर्ष में विडालिका	एक सेर चावलों का आटा	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेत ध्वजा 5, गेहूं के आटे के सतिए,	श्वेत भात, 7 पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखें,	ॐ भगवती ह्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं मुञ्च रक्षां कुरु कुरु बलिं गृहाण अस्त्र ठः ठः चामुंडे सर्वारि चण्डिके ठः ठः स्वाहा।	
षष्ठ दिन-मास-वर्ष में षट्कारिका	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेतध्वजा 5,	भात, 5 मिठाई, 5 सुहाली, 7 पूड़ियां, 1 प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर रखें,	योगिनी विधानोक्त	
सप्तम दिन-मास-वर्ष में कालिका	चावल का आटा एक सेर	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेतध्वजा 5,	भात, 7 पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर रखें,	विडालिका विधानोक्त	कूठ, गुग्गुल, राई, हाथीदांत, घृत।
अष्टम दिन-मास-वर्ष में कामिनी	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्तचन्दन, 5 रंग की झंडी 5, दीपक 5,	गेहूँ की रोटी, मसूर की दाल, हरासाग, छागमांस, संध्या में चौरास्ते पर रखें,	विडालिका विधानोक्त	
नवम दिन-मास-वर्ष में मदना	एक सेर गेहूं का आटा	चन्दन, पुष्प, 5 दीपक, 5 रंग की झंडी 5,	भात, मत्स्यमांस, पापड़ी, सुहाली, उत्तर में प्रातः चौरास्ते पर रखें	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हन् हन् हुं फट् स्वाहा।	
दशम दिन-मास-वर्ष में रेवती	एक सेर गेहूं का आटा	रक्तपुष्प, 25 झण्डी, 25 दीपक, 25 सतिए,	गुड़ के घी भुने चावल, गोघृत, सायं, दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो भगवते वैश्वदेवाय हन् हुं फट् स्वाहा।	गोश्रृंग, लहसुन, सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, राई, गोघृत।
एकादश दिन-मास-वर्ष में सुदर्शना	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेतपुष्प, 25 दीपक, 25 सफेद झण्डी, 25 आटे के सतिए,	श्वेतभात, 7 पूड़े, सुहाली 7, सायं व प्रातः दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्रहास, वज्रहस्ताय ज्वल ज्वल दुष्ट ग्रहादीन् ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।	
द्वादश दिन-मास-वर्ष में अद्भुता	चावलों का आटा एक सेर	13 दीपक, 13 झण्डी, 13 सतिए आटे के,	सुहाली, पूडे 7, पूड़ियां 7, मत्स्य मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन् हन् शोषय शोषय मर्दय मर्दय तापय तापय हुँ हुँ हुँ हन् हन् दुष्टानां ह्रा ह्रां स्वाहा।	

अथ बालपूतना-विधान

यहां लिखे बाल-कष्टावली चक्रोक्त हर एक बलिदान के पीछे मार्जन शिखास्थान- स्पर्श निम्न-लिखित मन्त्रों द्वारा एक ही प्रकार से होता है, बलिदान-विधि तीन दिन निरंतर करें। चौथे दिन पलाश, अश्वत्थ, बिल्व, गूलर, मिल सके तो कपित्थ- इनके पत्रों को उबालकर बालक को मंत्र-पाठपूर्वक स्नान करावें। तदनन्तर कल्याणार्थ यथाशक्ति भिक्षुकों को तथा कुत्ते आदि जीवों को मिष्ठान भोजन कराएं। तदनन्तर "ओं द्यौः शांतिरन्तरिक्ष............" इत्यादि शांतिमंत्रों व मार्जनमंत्रों से कुशा से छींटे देने के अनन्तर बालक की शिखा या शिखास्थान स्पर्शपूर्वक यह मंत्र पढ़ें- " ओं रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर। ग्रहैस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।
"ओं सर्वमातर इमं ग्रहं संहरंतु हुं रोदय-रोदय, स्फोटय -स्फोटय स्वाहा। गर्ज-गर्ज सः गृहाण-गृहाण आमर्दय- आमर्दय ह्लीम्-ह्लीम् हन् हन् एवं सिद्धिरुद्रो ज्ञापय स्वाहा।।"

अथ नक्षत्र-कष्टावली

ज्वालामुखी योग

अथ नक्षत्र–कष्टावली

रोग–नक्षत्र	रोगशान्त्यर्थ दान	नक्षत्रपादवशाद् रोगदिन–संख्या				रोगशान्त्यर्थ जपनीय मन्त्र	रोगनिवृत्त्यर्थ बलि
		1	2	3	3		
अश्विनी	भोजनदान	9	11	1	20	मृत्युञ्जयमंत्र	घोड़ी के मुख में सात व्रीही धान्य दें।
भरणी	गो–अन्नादि दान	0	80	40	11	यमायतवेति मंत्रः	हाथी के मुख में तिल चावल दें।
कृत्तिका	स्वर्णदान	9	11	16	28	अग्निर्मूर्धेति	कछुए के मुख में घी दें।
रोहिणी	घृतदान	3	9	18	30	ब्रह्माययेति	सर्प को दूध–दही खिलाएं।
मृगशिरा	तिलदान	9	5	7	10	इमं देवेति मंत्र	खरगोश को दूध पिलाएं।
आर्द्रा	गोदान	0	18	0	0	नमस्ते रुद्र इति मंत्र	बकरे के मुख में रक्त डालें।
पुनर्वसु	पीतलदान	7	14	2	21	अदितिर्द्यौरिति मन्त्रः	सूअर को धान्य खिलाएं।
पुष्य	तैलान्नदान	6	7	10	21	बृहस्पतेति मन्त्रः	बकरे के मुख में दही डालें।
आश्लेषा	गो–अजादि दान	0	0	41	0	नमोस्तुसर्पेति मन्त्रः	बिलाब को दूध पिलाएं।
मघा	वस्त्राज्यदान	15	7	17	20	पितृभ्य इति मन्त्रः	बन्दर को तिल उड़द खिलाएं।
पू.फा.	भोजनदान	0	15	0	30	भगम्प्रणेति मन्त्रः	ऊंट के मुख में शहद दें।
उ.फा.	अन्नदान	7	14	7	60	दध्यावद्धेति मन्त्रः	गाय को शाक खिलाएं।
हस्त	तैलदान	15	17	15	0	उदत्यं जातवेदेति मन्त्रः	भैंसे को कमल के फूल खिलाएं।
चित्रा	दुग्धदान	11	9	9	16	त्वष्टा तुरगेति मन्त्रः	बाघ के लिए तगर-धतूरे के फूल वन में रखें।
स्वाती	गौघृतदान	60	17	30	0	वायोरग्नेति मन्त्रः	भैंसे को गुड़, चावल खिलाएं।
विशाखा	गौ–स्वर्णदान	15	0	4	13	इंद्राग्नी इति मन्त्रः	बाघ के मुख में गुड़, भात की बलि दें।
अनुराधा	गौघृतदान	60	12	36	30	नमो मित्रेति मन्त्रः	बकरे को कुल्थीसहित भात, गुड़ दें।
ज्येष्ठा	तिलदान	69	9	6	4	त्रातारमिन्द्रमिति मन्त्रः	बंदरों को गुड़, तिल डालें।
मूल	रौप्यपात्रदान	0	9	15	6	माता पुत्रेति मन्त्रः	बिलाब को दूध पिलाएं।
पू.षा.	गोमुक्तादान	0	15	24	10	आपोधर्मेति मन्त्रः	कछुए के मुख में नागरमोथे की बलि दें।
उ.षा.	भोजनदान	30	24	26	16	विश्वेदेवेति मन्त्रः	गौ को धान्य डालें।
श्रवण	श्रीफलदान	60	24	6	9	विष्णोरराटेति मन्त्रः	भैंसे के मुख में रक्त, मीठा की बलि दें।
धनिष्ठा	अश्वान्नदान	15	4	20	21	वसोः पवित्रेति मन्त्रः	मनुष्य के मुख में दहीं, अन्न की बलि दें।
शतभिषा	भोजनान्नदान	4	45	3	22	वरुणस्तम्भेति मन्त्रः	गौ को चावल खिलाएं।
पू.भा.	भोजनदान	0	12	21	19	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	कौए के मुख में फल की बलि छोड़ें।
उ.भा.	अन्नदान	10	3	9	15	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	गाय को चावल खिलाएं।
रेवती	फलदान, कन्यापूजन	18	10	9	20	पूषन्नयेति मन्त्रः	हाथी के मुख में पूरी–पूओं की बलि छोड़ें।

नोट– इस कष्टावली में प्रत्येक नक्षत्र का जपनीय मंत्र पृथक्–पृथक् लिखा है, उसे न जप सकें तो महामृत्युंजय मन्त्र ही जपें। जिस नक्षत्र के जिस चरण में पहले रोग उत्पन्न हुआ है, उस चरणानुसार कष्ट व दिन जानें, शून्य से विशेष भय जानें। दान, जप करें। जिस नक्षत्र में रोग पैदा हुआ है, उसे यहां कष्टावली में रोगनक्षत्र का नाम दिया गया है। रोगनक्षत्र को जानकर, इन कोष्ठकों में लिखा उपाय एवं यथाशक्ति दान करने से रोग शान्त होगा। 'रोग निवृत्त्यर्थ बलिदान' वाले कॉलम में घोड़ी, हाथी आदि के मुख में बलि देने के लिए लिखा है, वह गेहूं के आटे की वैसी ही आकृति बनाकर (मन में हाथी आदि की धारणा करके) उसके मुख में बलिद्रव्य देकर धूप–दीपादि करके आटे की आकृति को जल में प्रवाहित कर दें– ऐसा तीन दिन करें। साथ ही दान और जप भी करें।

ज्वालामुखी योग

तिथि	१	५	६	९	१०
नक्षत्र	मूल	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	आश्लेषा

जन्मे सो जीवे नहीं बसै जो उजड़ जाय। चूड़ा पहिरे कामिनी चटपट विधवा होय। गऐ गए ना बुहरे कूए नीर सुकाय।

पुत्रोत्पत्ति का समय

(1) जन्मलग्नेश व पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़ें। योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों की त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब पुत्र–संतान उत्पन्न होती है।

(2) चंद्र, लग्न, गुरु– इन तीनों से पंचमस्थानेश या नवमस्थानेश की दशान्तर्दशा में पुत्रसंतानोत्पत्ति होती है।

विवाह (स्त्रीसुख) होने का समय

(1) जन्मलग्नेश, सप्तमेश को जोड़कर जो राशि हो, उस राशि में जब गोचर का गुरु हो, तब विवाह होता है।

(2) चन्द्रराशीश और अष्टमेश को जोड़ने पर प्राप्त राशि में जब गोचर का गुरु आए, तब विवाह होता है।

(3) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो, उस राशि से द्वितीयभाव मे जब गोचर में गुरु–चन्द्र होते हैं, तब विवाह होता है।

(4) शुक्र–चन्द्र व सप्तमेश की दशान्तर्दशा मे विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय

(1) गुलिक स्पष्ट से सूर्य स्पष्ट घटाएं, शेष राशि के त्रिकोण में जब गोचर का शनि हो, तब पिता की मृत्यु होती है।

(2) सूर्य से 1/2/7/12 भाव में जो पापग्रह हो, उस की दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(1) रोग के शुरुआती दिन में जन्मराशि, नक्षत्र, लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र या यमघंट कुयोग हो।

(2) सूर्यवार को मघा, द्वादशी या भरणी, अनुराधा नक्षत्र हो।

(3) सोमवार को आर्द्रा या उ. षा. नक्षत्र हो।

(4) मंगलवार को कृत्तिका, मघा व शतभिषा या नन्दा (1/6/11) तिथि हो।

(5) बुधवार को अश्विनी, विशाखा या भद्रा (2/7/12) तिथि, आश्लेषा हो।

(6) गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया (3/8/13) तिथि व मघा, हस्त हो।

(7) शुक्रवार-अष्टमी व अश्विनी या आश्ले., श्रवण या रिक्ता (4/9/14) तिथि, आर्द्रा या धनिष्ठा हो।

(8) शनिवार को नवमी व पू. षा. या हस्त व पू. भा. या पूर्णा (5/10/15) तिथि व भरणी हो।

(9) सूर्य, मंगल, शनि वारों को 4। 6। 9। 12/14/30 तिथि, भरणी, कृत्ति. आर्द्रा, आश्लेषा, पूर्वा. 3, विशा., ज्ये., धनि., शत. नक्षत्र हों तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परञ्च– जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना चाहिए। क्योंकि– बिना मारकेश आए मृत्यु तो होती ही नहीं। हां– ऐसे योग में कष्ट ज़रूर मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुलादान, गोदान तथा मृत्युञ्जयजप करना कल्याणप्रद है।

बाल–रक्षार्थ धूप

राई, लाख, नीम के पत्ते, बांस का छिल्का, लहसुन, शिवजी पर चढ़े हुए फूल, अगर, गाय का घी–इन सब को मिलाकर धूप देने से सब पूतना तथा अन्य बालग्रह दूर हो जाते हैं। धूप देते समय "खं खुर्दनं हूं फट् स्वाहा–" इस मन्त्र का उच्चारण करें।

अथ रोगत्रिनाड़ी चक्रम्

प्रथमा	आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.
मध्या	पुन.	मघा	हस्त	विशा.	मूल	श्रवण	पू.भा.	अश्वि.	रो.
अन्त्या	पुष्य	आश्ले.	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	रेव.	मृ.

सूर्यनक्षत्र, दिन, जन्म और नाम नक्षत्र रोगत्रिनाड़ीचक्र में एक ही नाड़ी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है। मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले, उसी दिन निःसन्देह रोगी की मृत्यु कहनी चाहिए। यह रोगत्रिनाड़ी चक्र यात्रा तथा रण के समय वर्जित करना चाहिए।

कालस्य मुखदंष्ट्रा ज्ञानम्

दिननक्षत्र से नामनक्षत्र 5/13/23 संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार 10/18वां नक्षत्र दंष्ट्रा (दाढ़) होती है। काल के मुख में दाढ़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो, उस दिन अत्यन्त रोगग्रस्त पुरुष की हालत मृत्युपर्यन्त होती है। रोग पर, सर्पादि दर्शन पर, विग्रह–युद्ध में जाने पर काल के मुख–दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है।

कालांगचक्र से शुभाशुभ फलज्ञान

यदि किसी व्यक्ति के अंङ्गविशेष में पीड़ा, कष्ट, घाव, फोड़ा आदि चर्मविकार किंवा वायु–विकारादिजन्य कोई कष्ट हो तो तात्कालिक प्रश्नकुण्डली लगाकर, निम्नलिखित कालांगचक्र में दिए भावों के अनुसार उस पीड़ित भाव को देखें। यदि उस भाव में कोई अशुभ ग्रह हो, किंवा वह भाव खलदृष्ट, अस्त, नीच तथा शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो तो समझें, कि उस अवयव में और विशेष कष्ट की संभावना है। शान्ति के लिए उस ग्रह की शान्ति कराएं। यदि प्रश्नकुण्डली में पीड़ित भाव शुभग्रह से युक्त किंवा शुभग्रहदृष्ट हो तो रोग (कष्ट) शीघ्र निवृत्त हो जाएगा।

कालांगचक्र

भाव	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
अंङ्ग	सिर	मुख	भुजाएं	हृदय	उदर	कटिभाग	बस्ति/मूत्राशय	लिंग/गुदा	जंघाएं	घुटने	पिण्डलियां	पाद–युगल

तिथिकष्टावली यन्त्रम्

तिथि	तिथीश	कष्ट–दिन	बलि	दान
1	अग्नि	12	शर्कराज्यबलि	घृतदान
2	ब्रह्मा	5	पायसबलि	भोजनदान
3	काम	7	घृतान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
4	गणेश	16	मोदकान्नबलि	मूंगादान
5	सर्प	21	पायसबलि	दुग्धदान
6	स्कन्द	12	मोदकान्नबलि	चित्रवस्त्रदान
7	सूर्य	8	पायसबलि	ताम्रपात्रदान
8	ईश्वर	13	नानाभक्ष्यबलि	पीतवस्त्रदान
9	दुर्गा	18	मिष्ठान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
10	यम	25	कृशरान्नबलि	नीलवस्त्रदान
11	विश्वेदेव	7	मोदकान्नबलि	पीतवस्त्रदान
12	विष्णु	7	मोदकान्नबलि	श्वेतवस्त्रदान
13	काम	10	दधिशर्कराबलि	सुवर्णदान
14	शिव	60	मिष्ठान्नबलि	क्षौद्रशाकभोजन
15	चन्द्र	3	दध्योदनबलि	रौप्यदान
30	पितर	18	अपूपकान्नबलि	उत्तमान्नभोजन

वारकष्टावली–यन्त्रम्

वार	वारेश	क.दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	5	पायसबलि, सूर्यदान
चं.	गौरी	8	नानाभक्ष्यबलि, चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	5	दुग्धबलि, भौमदान
बु.	विष्णु	7	मुद्गान्नबलि, बुधदान
बृ.	ब्रह्मा	5	घृतपक्वबलि, गुरुदान
शु.	इन्द्र	7	तिलयवाज्यमधुबलि, शुक्रदान
श.	यम	15	माषान्नबलि, शनिदान

79

ग्रहगोचराद्यैर्दशा-क्रमाद्यैर्ग्रह-कृतानिष्ट-फल-शमनार्थं प्रत्येक-ग्रहाणां दान-पदार्थाः												जपसंख्या	जपनीयमन्त्राः	दानसमय	हवनसमिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	केसर	रक्तपुष्प	मूंग, रक्तगाय	रक्तचन्दन	7000	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	उदय	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	शंख	श्वेतपुष्प	कर्पूर, श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	11000	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	सन्ध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	केसर	रक्तकनेर	कस्तूरी, रक्तबैल	रक्तचन्दन	10000	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घटी 2 शेषदिन	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	हाथीदांत	सर्वपुष्प	कर्पूर, शस्त्र	फल	19000	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घटी 5 शेषदिन	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	हल्दी	पीतपुष्प	पुस्तक, घोड़ा	पीतफल	19000	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	सन्ध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	सुगंध	श्वेतपुष्प	दधि, श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	16000	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सूर्योदय	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुल्थी	तेल	कृष्णवस्त्र	कस्तूरी	कृष्णपुष्प	कृष्णांग भैंस	उपानह	23000	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	मध्याह्न	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तिल	नीलवस्त्र	खड्ग	कृष्णपुष्प	कंबल, घोड़ा	शूर्प	18000	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्रि	दूर्वा
केतु	लहसुनिया	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	नारियल	धूम्रपुष्प	कंबल, बकरा	शस्त्र	17000	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्रि	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	कपूर	श्वेतपुष्प	मसरी, श्वेतचन्दन	हाथीदांत	मुन्थेशवत्	मुन्थेशमन्त्रः	मुन्थेशकाल	मुन्थेशवत्

नवग्रहों के व्रत की विधि

यदि किसी व्यक्ति का कोई ग्रह गोचर से या दशा–अन्तर्दशा से खराब चल रहा हो तो निम्नलिखित प्रकार से उस ग्रह का शास्त्रोक्त व्रत–विधान ब्रह्मचर्यपूर्वक करने से अशुभ फल की निवृत्ति होती है।

रविवार के व्रत की विधि–सूर्य का व्रत रविवार को करें। यह व्रत शुक्लपक्ष के पहले (जेठे) रविवार से आरम्भ करके वर्षपर्यन्त तीस या कम से कम 12 व्रत करें। उस रोज़ केवल गेहूं की रोटी, घी और लालखाण्ड के साथ या गेहूं का गुड़ से बना दलिया या हलवा इलायची डालकर दान करके शेष का दिन में ही सूर्यास्त से पहले भोजन करें। नमक बिल्कुल न खाएं। भोजन से पूर्व हो सके तो लालवस्त्र पहनकर ऊपर चक्रोक्त बीज–मन्त्र की माला का जप करें। तदनन्तर सूर्य को गन्धाक्षत, रक्तपुष्प दूर्वायुक्त अर्घ्य प्रदान करें। अपने मस्तक में लालचन्दन का तिलक करें। जब व्रत का अन्तिम रविवार हो तो हवन–पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण को भोजन कराएं। ऐसा करने से सूर्य का अशुभ फल शुभ फल में परिणत हो जाएगा। तेजस्विता बढ़ेगी। नेत्ररोग, चर्मरोग एवम् अन्य शारीरक रोग भी शान्त होंगे।

सूर्यशान्ति का सरल उपचार :–लाल वस्तुओं का विशेष उपयोग करें– जैसे– लालचादर, परना तथा तांबे की अंगूठी का पहनना।

सोमवार के व्रत की विधि– चन्द्रमा का व्रत शुक्ल–पक्ष के प्रथम (जेठे) सोमवार को प्रारम्भ करके 54 या 10 व्रत करें। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण करके ऊपर चक्रलिखित बीज–मन्त्र की 11 या 3 माला जप करें। सफेद फूलों से पूजन करके सफेद चन्दन का तिलक करें। मध्याह्न के समय नमक के बिना दही–चावल, घी, खाण्ड का यथाशक्ति दान करके स्वयं भोजन करें। जब व्रत का अन्तिम सोमवार हो, उस दिन हवन–पूर्णाहुति करके खीर–खाण्ड से ब्राह्मण व बटुकों को भोजन कराएं। इस व्रत के करने से व्यापार में लाभ, मानसिक कष्टों से शान्ति होती है। विशेष कार्यसिद्ध्यर्थ भी यह पूर्ण फलदायक होता है।

चन्द्रशान्ति का सरल उपचार :– सफेद जुराब, रुमाल, सफेद वस्त्र, दूध, दहीं का उपयोग, चान्दी की अंगूठी पहनना।

मंगलवार के व्रत की विधि :– यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) मंगलवार से प्रारम्भ करके 21 या 45 व्रत करने चाहिएं। हो सके तो यह व्रत आजीवन रखें। बिना सिला हुआ लालवस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 1, 5, या 7 माला जप करें। नमक सेवन न करें, यह ज़रूरी है। उस दिन गुड़ से बने हलवे का या लड्डुओं का दान करें और स्वयं भी खाएं। गुड़ से बना कुछ हलवा आदि बैल को भी खिलाएं। मंगलवार का व्रत ऋण–हर्ता तथा सन्तति–सुखप्रद है। जब व्रत का अन्तिम मंगलवार हो, उस दिन हवन–पूर्णाहुति करके लालवस्त्र, तांबा, मसूर, गुड़, गेहूं तथा नारियल का दान करें। ब्राह्मणों तथा बच्चों को मीठा भोजन कराएं।

मंगलशान्ति का सरल उपचार :– लालरंग की वस्तुओं का उपयोग, रात को लालवस्त्र पहनें, तांबे के बर्तनों का प्रयोग, तांबे की अंगूठी पहनना।

बुधवार का व्रत :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) बुधवार से प्रारम्भ कर 21 या 45 व्रत करें। हरा वस्त्र धारण करके बीज–मन्त्र की 17 या 3 माला जप करना चाहिए। उस दिन भोजन में नमकरहित, खाण्ड–घी से बने पदार्थ, जैसे– मूंगी का बना हुआ हलवा, मूंगी की बनी मीठी पंजीरी या मूंगी के लड्डुओं का दान करें। फिर तीन तुलसीपत्र, गंगाजल या चरणामृत के साथ लेकर स्वयं भी उपरोक्त पदार्थ खाएं। व्रत के अन्तिम बुधवार को हवन–पूर्णाहुति करके छोटे बच्चों या अङ्गहीन भिक्षुक को मूंगीयुक्त भोजन कराकर हरा वस्त्र, मूंगी आदि का दान भी करें। इस व्रत से विद्या, धन–लाभ, व्यापार में तरक्की तथा स्वास्थ्यलाभ होता है। अमावस का व्रत करने से भी बुध ग्रहजन्य नेष्टफल से मुक्ति मिलती है।

बुधशान्ति का सरल उपचार :– हरा रंग, हरे वस्त्र तथा शृंगार की अन्य वस्तुएं, हरा रुमाल आदि रखना, कांसी के बर्तन में भोजन, बुधाष्टमी का व्रत।

बृहस्पति के व्रत की विधि :– यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) गुरुवार से आरम्भ करें। तीन वर्षपर्यन्त या 16 व्रत करें। उस दिन पीतवस्त्र धारण करके बीज–मन्त्र की 11 या तीन माला जप करें। पीतपुष्पों से पूजन–अर्घ्य दानादि के बाद भोजन में चने के बेसन की घी–खाण्ड से बनी मिठाई, लड्डू या हल्दी से पीले या केसरी चावल आदि ही खाएं और इन्हीं का दान करें। जब व्रत का अन्तिम गुरुवार हो तो हवन–पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण व बटुकों को लड्डूभोजन कराएं। स्वर्ण, पीत–वस्त्र, चने की दाल आदि का दान करें। यह व्रत विद्यार्थियों के लिए बुद्धि तथा विद्याप्रद है। धन की स्थिरता तथा यशवृद्धि करता है। अविवाहितों के लिए स्त्री प्राप्तिप्रद सिद्ध होता है।

बृहस्पतिशान्ति का सरल उपचार :– पीले वस्त्र, रुमाल आदि, पीले फूल धारण करना, सोने की अंगूठी पहनना।

शुक्र के व्रत की विधि :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से प्रारम्भ कर, 31 या 21 व्रत करें। श्वेत वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 3 या 21 माला जपें। भोजन में चावल, खाण्ड या दूध से बने पदार्थ ही सेवन करें। यही पदार्थ यथाशक्ति सम्भव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दें। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो, तब हवन–पूर्णाहुति के बाद खीर–खाण्ड से बने पदार्थ ब्राह्मणबटुकों को खिलाएं। चांदी, श्वेतवस्त्र, खाण्ड, चावल का दान करें। इस व्रत से स्त्रीसुख एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

शुक्रशान्ति का सरल उपचार :–सफेद वस्त्र, सफेद रुमाल, सफेद फूल धारण करना आदि, गाय को हरा घास या पेड़ा देना, शिवपूजन।

शनि के व्रत की विधि :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से आरम्भ करे। व्रत 51 या 31 करने चाहिएं। व्रत के दिन काला वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 19 या तीन माला का जप करें। फिर एक बर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, काले फूल या लवंग (लौंग), गङ्गाजल तथा शक्कर, थोड़ा दूध डालकर पश्चिम की ओर मुंह करके पीपल–वृक्ष की जड़ में डाल दें। भोजन में उड़द के आटे का बना पदार्थ, पंजीरी, कुछ तेल से पका हुआ पदार्थ कुत्ते व गरीब को दें तथा तेलपक्व वस्तु के साथ केला व अन्य फल स्वयं प्रयोग में लाना चाहिए। यही पदार्थ दान भी करें। व्रत के अन्तिम शनिवार को हवन–पूर्णाहुति के बाद तेल में पकी हुई वस्तुओं को देने के बाद काला वस्त्र, केवल उडद तथा देसी (चमड़े का) जूता तेल लगाकर दान करें। इस व्रत से सब प्रकार की सांसारिक परेशानी दूर हो जाती है। झगड़े में विजय होती है। लोह–मशीनरी, कारखाने वालों के व्यापार में उन्नति होती है।

शनिशान्ति का सरल उपचार :– घर के परदे, जूते, जुराब, घड़ी का पट्टा, रुमाल आदि काले रंग के धारण करें।

राहु–केतु के व्रत की विधि :– शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से ही यह व्रत भी शुरु करना चाहिए। व्रत 18 करें। काला वस्त्र धारण करके 18 या 3 बीजमन्त्र की माला जपें। तदनन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुशा लेकर, पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी, समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें। इस व्रत से शत्रुभय दूर होता है तथा राजपक्ष से विजय मिलती है।

राहु–केतुशान्ति का सरल उपचार :– नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी पहनें।

ग्रहों के अरिष्ट–निवृत्त्यर्थ स्नानविधि

यथा सिद्धौषधैः रोगाः नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्।।
तथा स्नान–विधानेन ग्रह–दोषः प्रणश्यति।।

रवि ग्रह के दोष की शान्ति के लिए कभी–कभी व्रत के दिन बिल्ववृक्ष की जड़, देवदारू, मुलट्ठी, लाल फूल, केसर पानी में उबालकर स्नान करें। चन्द्र शान्त्यर्थ सोमवार के व्रत के दिन खिरनी की जड़, श्वेत चन्दन, सिप्पी, पञ्चगव्य उबालकर स्नान करें। ऐसे ही **मंगलव्रत के दिन** अनन्तमूल, रक्त चन्दन, मौलश्री, लाल फूल–ये सब उबालकर; **बुधव्रत के दिन** गोबर, मधु, चावल, विधारा; **गुरुव्रत के दिन** भारंगी, मुलट्ठी, श्वेत सरसों, मालती पुष्प; **शुक्रव्रत के दिन** इलायची, मजीठ तथा **शनिव्रत के दिन** काले तिल, सौंफ, सुरमा, अमरवेल, सफेद बिनौला– उबालकर स्नान करें। ऐसे ही राहु–केतु की शान्ति के लिए शनिवार के दिन देवदारु, सरसों तथा लोहबान उबालकर स्नान करें, तो ग्रहशान्ति मिलती है।

नोटः– स्नानोक्त कोई वस्तु उपलब्ध न हो, तो जो वस्तु मिले उससे ही स्नान करें।

सर्वग्रह किंवा सर्वविधशान्ति के लिए सामान्य औषधस्नान

लाजवन्ती (छुई–मुई), कूट, खिलां, कांगनी, जौ, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि, लोध– इन औषधियों के जल एवं सतीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नष्ट होती है तथा पूर्व जो दान कह चुके हैं, उनके करने से शान्ति मिलती है। गुरुवचन, देवता, ब्राह्मणों की वंदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते।– (श्रीपतिः)।

शनिविचार-अथ लघुकल्याणी (ढैया) फलम्:-

कल्याणी प्रददाति वा रविसुते राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधिः
बन्धुविरोधं देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्।
मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि–वह्नेर्भयं
लोहशस्त्रभयं सदैव–असुखं कुर्यादसौ सर्वदा।। १।।

वृहत्कल्याणी साढेसाती फलम् :–........राशौ द्वादश (12) मूर्ध्नि जन्म (1) हृदये पादौ द्वितीये (2) शनिः। नानाक्लेशकरोऽति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत्।। हानिः स्यान्मरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम् , रामात्रद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाऽथवा।। २।।

सप्तधान्य– उड़द, मूंगी, गेहूं, चने, जौ, धान्य (तंडुल), कंगनी।

अष्टगंध-स्याही :-अगर, कस्तूरी, कुंकुम, कर्पूर, चन्दन, टोपीदार लौंग, गोरोचन, देवदारु।

अष्टगंध-धूप– अगर, छरीला, जटामासी, कर्पूर–कचरी, गुग्गुल, देवदारु, गोघृत, सफेद चन्दन।

नक्षत्र–राशिज्ञान–चक्र

राशि→	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्र→ चरण ↓	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा
थम चरण	चू	ली	अ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी	मा	मो	टे	०	पू	पे
द्वितीय चरण	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू	मी	टा	०	टो	ष	पो
तृतीय चरण	चो	ले	०	उ	वी	०	क	ङ	ह	०	हो	डे	मू	टी	०	पा	ण	०
चतुर्थ चरण	ला	लो	०	ए	वू	०	की	छ	०	हि	डा	डो	मे	टू	०	पी	ठ	०

राशि→	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्र→ चरण ↓	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	अभिजित्	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
थम चरण	०	रू	ती	०	ना	नो	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय चरण	०	रे	तू	०	नी	या	यो	धा	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय चरण	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ चरण	री	ता	०	तो	ने	यू	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

राशिज्ञाने विशेषः– नक्षत्र व राशि में 'श' और 'स' तथा 'व' और 'ब' में कोई भेद नहीं होता। जिसके नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो, वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें– **संयोगजाक्षरे नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्षरम्।**

ध्यान दें – नामों का प्रारम्भ ङ, ञ, ण अक्षरों से नहीं होता। यदि नक्षत्र के आधार पर इन अक्षरों से नाम प्रारम्भ हो रहा हो तो 'ङ' की जगह 'घ', 'ञ' की जगह 'दु', तथा 'ण' की जगह 'पू' से प्रारम्भ करें। ऐसा करने से भेद नहीं होता।

"बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्चन। ततः पश्चादमवं नाम ग्राह्यं स्वर–विशारदैः।। प्रसुप्तो भाषते येन येनागच्छति शाब्दितः। तस्य नामाद्यवर्णे या मात्रा स स्वर एव हि।।

अथ जन्मराशि–नामराश्योः प्रधानता निर्णीयते–

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे। जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्।। देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके।। नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत्।। काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे च नामराशेः प्रधानता।। कुर्यात्षोडशकर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते।। विवाह घटनं चैवं लग्नजं ग्रहजं बलम्। कामभाक्चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा।।

अभिजित्निर्णय :– वैश्यप्रान्त्यांघ्रिः श्रुति–तिथि–भागतोऽभिजित्स्यात्।।

"उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण और श्रवण का पहला १५वां भाग जोड़कर उसके चार भाग करे। उसको अभिजित् का एक चरण मानकर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करें। उत्तराषाढ़ा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक–एक चरण मानो। श्रवण का १५वां भाग छोड़कर जो शेष रहे, उसके चार भाग करें; उसको श्रवण के १–१ चरण मानें। सामान्य गणक के ज्ञानार्थ ही यह यहां लिखा गया है।

राशिज्ञानम्– चू ल अ मेषः, इ वो वृषः, क घ ङ छ ह मिथुनम्।।
हीडो कर्कः, माटे सिंहः, टो ष ण ठ पो कन्या।।
राते तुला, तो ना यू वृश्चिकः, ये घफढभे धनुः।।
भोजा खागी मकरः, गुशद : कुम्भः दीथझञची मीनः।।

इस राशिज्ञान में प्रत्येक राशि के आदि और अन्त का अक्षर है और जहां जो अक्षर बदलता है, वहां वह अक्षर भी ले लिया गया है। जैसे–मेष में पहला अक्षर 'चू' लेने से अश्विनी के तीन चरण (चू चे चो) का ग्रहण होता है और 'ल' से (ला ली लू ले लो) पांचों का ग्रहण हुआ अर्थात् एक चरण (चौथा) अश्विनी का और चतुर्थ चरण पर्यन्त भरणी का ग्रहण हुआ और 'अ' से कृत्तिका का प्रथम चरण– इन नौ चरणों की एक राशि मेष हुई। इसी तरह अन्य राशियों का ज्ञान करें।

विशेष– जहां 'ज्ञ' का उच्चारण 'ज्ञ' होता है वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र उ.षा. और जहां इसका उच्चारण 'ग्य' होता है, वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र धनिष्ठा माना जाएगा। क्योंकि 'ज' और 'ग' वर्ण क्रमशः उ.षा. और धनिष्ठा नक्षत्र में पड़ते हैं।

नोटः–चन्द्रमा की राशि एवम् नक्षत्र के अनुसार जातक का नाम रखने में फलितज्ञ को काफी आसानी रहती है। नाम जानने से ही ज्योतिषी जातक के जन्मसमय चन्द्रमा की राशि एवम् नक्षत्र जान लेता है तथा फलितशास्त्र में काफी महत्त्वपूर्ण फलादेश चन्द्रमा की स्थिति पर ही निर्भर है। इसका एक वैज्ञानिक रहस्य भी है। निकटतम होने से चन्द्रमा का प्रभाव भूस्थित वनस्पति एवम् प्राणियों पर अन्य सभी ग्रहों की अपेक्षा अधिक होता है। ज्वारभाटा लाने में भी चन्द्रमा की देन सूर्य की देन से दुगुनी है। चन्द्रमा का ज्वार–भाटांक सूर्य के ज्वार–भाटांक से दुगुना है। चन्द्रमा के भगणकाल का स्त्री के मासिक धर्म से साक्षात् सम्बन्ध है। आजकल वैज्ञानिकों ने कुछ प्रयोग भी किए हैं, जिससे अचर जगत् (वनस्पति आदि) पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है। अतः जन्मपत्र आदि के अभाव में चन्द्रमा की स्थिति से ही फलादेश करने की परिपाटी फलितज्ञों में है।

नवीन फलितवेत्ता जन्मपत्र की अंग्रेज़ी तारीखों के हिसाब से भी फलादेश करने लग गए हैं। इस पद्धति में सायन सूर्य की राशि के आधार पर ही फलादेश होता है, जबकि चन्द्रमा की राशि के आधार पर फलादेश करना अधिक उपयुक्त है। अतः प्राचीन फलित–शास्त्रियों ने जन्मकालीन चन्द्रमा की स्थिति को जन्मराशि का नाम दिया है। हमारे ज्योतिष के अनुसार इसका विशेष महत्त्व भी है।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् 2066 वि.)

राशि	वैशाख (13 अप्रै. से 13 मई तक, सन् 2009 ई.)	राशि	ज्येष्ठ (14 मई से 13 जून तक सन्. '09 ई.)	राशि	आषाढ़ (14 जून से 15 जुला. तक, सन् '09 ई.)
मेष	स्थानान्तर व कार्यान्तर का विचार, राजभय, मित्र–बन्धुकष्ट, सन्ततिकष्ट, गुप्त चिन्ता, कारोबार ठीक। अप्रैल 13, 14, 22, 23, 24; मई 1, 2, 10, 11 अशुभ।	मेष	सेहत ठीक, अर्थलाभ हो, निजीलोगों से अनबन, बन्धुकष्ट, स्त्रीसुख, कार्यान्तर का विचार। मई 20, 21, 28, 29; जून 6, 7, 8 अशुभ।	मेष	वायुविकार, वृथाविवाद से बचें, भ्रातृकष्ट, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक, आमदन हो। जून 16, 17, 24, 25, 26; जुलाई 3, 4, 5, 13, 14, 15 अशुभ।
वृष	सेहत ठीक, निजीलोगों से अनबन, सम्पत्तिविवाद, स्त्रीकष्ट, कारोबार कमजोर, खर्च अधिक। अप्रैल 15, 16, 17, 24, 25, 26; मई 3, 4, 12, 13 अशुभ,	वृष	सेहत ठीक, वृथाव्यय, हिम्मत बढ़े, सन्तानपक्ष से खुशी, स्त्रीसुख, कारोबार गड़बड़, यात्रा में कष्ट। मई 14, 22, 23, 30, 31; जून 1, 8, 9, 10 अशुभ।	वृष	शरीरकष्ट, वृथा व्यय, बन्धु से मदद, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार ठीक। जून 18, 19, 20, 26, 27, 28; जुलाई 5, 6, 7, 15 अशुभ।
मिथुन	अर्थलाभ, खर्च अधिक, भ्रातृकष्ट, बन्धु से मदद, सन्तानपक्ष शुभ, मन चिन्तित रहे, स्त्रीकष्ट। अप्रैल 17, 18, 19, 26, 27, 28; मई 5, 6, 7 अशुभ।	मिथुन	उदरविकार, अर्थहानि, भ्रातृसुख, बन्धुकष्ट, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, मासान्त में खर्च विशेष। मई 14, 15, 16, 24, 25; जून 1, 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।	मिथुन	क्रोध बढ़े, रोगभय, बन्धुसुख, नई योजना, सुदूर यात्रा, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। जून 20, 21, 22, 28, 29, 30; जुलाई 8, 9, 10 अशुभ।
कर्क	उदरविकार, राजपक्ष से भय, वृथा कलह से बचें, मित्रों से मदद, सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्रीसुख। अप्रैल 20, 21, 22, 28, 29, 30; मई 7, 8, 9 अशुभ।	कर्क	सिर व नेत्रकष्ट, धनलाभ, भाई–बन्धु से मदद, सन्तानपक्ष से चिन्ता, वृथाविवाद से बचें। मई 17, 18, 19, 26, 27, 28; जून 3, 4, 5, 13 अशुभ।	कर्क	सेहत ठीक, धनलाभ, निजीजनों से अनबन, सन्तानपक्ष से चिन्ता, शत्रु कमजोर, चोटभय। जून 14, 15, 22, 23, 24; जुलाई 1, 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।
सिंह	शरीरकष्ट, वृथा कलह, मित्रों से अनबन, शत्रु प्रबल, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार कमजोर। अप्रैल 13, 14, 22, 23, 24; मई 1, 2, 10, 11 अशुभ।	सिंह	सेहत ठीक, धनलाभ, मित्रों से अनबन, असफल योजना, शत्रु बढ़ें, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार ठीक। मई 20, 21, 28, 29; जून 6, 7, 8 अशुभ।	सिंह	सेहत गड़बड़, अर्थलाभ होकर हानि हो, बन्धुकष्ट, असफल योजना, स्त्री सुख, कार्यान्तर से लाभ। जून 16, 17, 24, 25, 26; जुलाई 3, 4, 5, 13, 14, 15 अशुभ।
कन्या	सेहत ठीक, भ्रातृपक्ष से चिन्ता, असफल योजना, शत्रु बढ़ें, स्त्रीसुख, कारोबार में रद्दोबदल। अप्रैल 15, 16, 17, 24, 25, 26; मई 3, 4, 12, 13 अशुभ।	कन्या	सेहत ठीक, धनलाभ, भ्रातृसुख, मित्रों से अनबन, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीकष्ट। मई 14, 22, 23, 30, 31; जून 1, 8, 9, 10 अशुभ।	कन्या	सेहत ठीक, अर्थलाभ, निजीजनों से विरोध, शत्रु बढ़ें, स्त्रीपक्ष से मदद, कारोबार गड़बड़। जून 18, 19, 20, 26, 27, 28; जुलाई 5, 6, 7, 15 अशुभ।
तुला	वायुविकार, वृथाव्यय, मित्र–बन्धुकष्ट, स्त्री से अनबन, व्यय अधिक, कारोबार कमजोर। अप्रैल 17, 18, 19, 26, 27, 28; मई 5, 6, 7 अशुभ।	तुला	धनलाभ, निजीजनों से अनबन, सन्तानपक्ष से खुशी, नीच से अपमानभय, कारोबार में रद्दोबदल। मई 14, 15, 16, 24, 25; जून 1, 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।	तुला	कफ–वायुविकार, अर्थहानि, सम्पत्तिविवाद, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, भागीदारी में हानि। जून 20, 21, 22, 28, 29, 30; जुलाई 8, 9, 10 अशुभ।
वृश्चिक	कफ–वायुविकार, मन परेशान, आर्थिक परेशानी बढ़े, निजीजनों से सहयोग, सम्पत्तिविवाद, सन्तानपक्ष शुभ। अप्रैल 20, 21, 22, 28, 29, 30; मई 7, 8, 9 अशुभ।	वृश्चिक	सेहत ठीक, अर्थहानि का योग, मित्रों से अनबन, स्त्रीसुख, कारोबार कुछ ठीक, सफल योजना। मई 17, 18, 19, 26, 27, 28; जून 3, 4, 5, 13 अशुभ।	वृश्चिक	सेहत गड़बड़, अर्थलाभ होकर हानि, बन्धुसुख, स्त्रीकष्ट, राजभय, कारोबार कुछ ठीक। जून 14, 15, 22, 23, 24; जुलाई 1, 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।
धनु	सेहत ठीक, अर्थलाभ होकर हानि हो, बन्धुकष्ट, शत्रु प्रबल, स्त्रीसुख, कारोबार गड़बड़, वाहनसुख। अप्रैल 13, 14, 22, 23, 24; मई 1, 2, 10, 11 अशुभ।	धनु	उदरविकार, अर्थहानि, भ्रातृकष्ट, सन्तानपक्ष से चिन्ता, आय से व्यय अधिक, बन्धु सुख। मई 20, 21, 28, 29; जून 6, 7, 8 अशुभ।	धनु	कफ–वायुविकार, भ्रातृपक्ष शुभ, सम्पत्तिलाभ, नई योजना से हालि, स्त्रीकष्ट, कारोबार पहले से ठीक। जून 16, 17, 24, 25, 26; जुलाई 3, 4, 5, 13, 14, 15 अशुभ।
मकर	उदरविकार, नेत्रकष्ट, बन्धुपक्ष से मदद, स्त्रीकष्ट, आय से व्यय अधिक, राजपक्ष से भय। अप्रैल 15, 16, 17, 24, 25, 26; मई 3, 4, 12, 13 अशुभ।	मकर	सेहत ठीक, अर्थलाभ, बन्धुसुख, शत्रु कमजोर, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार ठीक, मासान्त में खर्च अधिक। मई 14, 22, 23, 30, 31; जून 1, 8, 9, 10 अशुभ।	मकर	सेहत ठीक, अर्थलाभ, मित्रों से हानि, शत्रु प्रबल, कारोबार कमजोर, कार्यान्तर का विचार। जून 18, 19, 20, 26, 27,28; जुलाई 5, 6, 7, 15 अशुभ।
कुम्भ	वृथाविवाद से बचें, मन चिन्तित रहे, मित्रों से मदद, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कष्टप्रद यात्रा। अप्रैल 17, 18, 19, 26, 27, 28; मई 5, 6, 7 अशुभ।	कुम्भ	मन प्रसन्न रहे, सेहत ठीक, अर्थलाभ, बन्धुसुख, सन्ततिकष्ट, नया झंझट खड़ा हो। मई 14, 15, 16, 24, 25; जून 1, 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।	कुम्भ	सेहत ठीक, अच्छा लाभ हो, मित्रों से विरोष, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीसुख। जून 20, 21, 22, 28, 29, 30; जुलाई 8, 9, 10 अशुभ।
मीन	सेहत ठीक, धनलाभ, सन्तानपक्ष से कुछ चिन्ता, रोग व शत्रुभय, स्त्रीसुख, आय से व्यय अधिक। अप्रैल 20, 21, 22, 28, 29, 30; मई 7, 8, 9 अशुभ।	मीन	क्रोध बढ़े, नेत्रकष्ट, निजीजनों से अनबन, कारोबार में उलझनें, मासान्त कष्टप्रद। मई 17, 18, 19, 26, 27, 28; जून 3, 4, 5, 13 अशुभ।	मीन	पित्तविकार, सम्पत्तिविवाद, वृथा कलह, कारेबार ठप्प, उधार चढ़े, असफल योजना। जून 14, 15, 22, 23, 24; जुलाई 1, 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् 2066 वि.)

राशि	श्रावण (16 जुला. से 15 अग. तक, सन् '09 ई.)	राशि	भाद्रपद (16 अग. से 15 सितं. तक, सन् '09 ई.)	राशि	आश्विन (16 सितं. से 16 अक्तू. तक, सन् '09 ई.)
मेष	सिर व नेत्रकष्ट, अर्थलाभ होकर हानि, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार कमजोर, मासान्त में लाभ। जुलाई 22, 23, 30, 31; अगस्त 1, 9, 10, 11 अशुभ।	मेष	सेहत ठीक, धनलाभ, भ्रातृसुख, सम्पत्तिविवाद, सन्तानपक्ष से चिन्ता, शत्रु प्रबल, आय से व्यय अधिक। अगस्त 18, 19, 27, 28; सितम्बर 6, 7, 14, 15 अशुभ।	मेष	मन परेशान, आर्थिक संकट,निजी लोगों से अनबन, नई योजना, घरेलू झंझट, स्त्रीसुख। सितम्बर 16, 23, 24, 25; अक्तूबर 3, 4, 5, 12, 13 अशुभ।
वृष	सेहत गड़बड़, अर्थलाभ हो, भ्रातृसुख, अच्छे लोगों से मेल, स्त्री सुख, कारोबार ठीक। जुलाई 16, 17, 24, 25; अगस्त 2, 3, 4, 12, 13 अशुभ।	वृष	वायुविकार, धनलाभ, भाई व बन्धुसुख, सन्तानपक्ष ठीक, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, आय से व्यय अधिक। अगस्त 20, 21, 22, 29, 30, 31; सितम्बर 8, 9, 10 अशुभ।	वृष	सेहत गड़बड़, निजी लोगों से मदद, सम्पत्तिविवाद, स्त्रीसुख,अपमानभय, कारोबार कमजोर। सितम्बर 16, 17, 18, 25, 26, 27; अक्तूबर 5, 6, 7, 14, 15 अशुभ।
मिथुन	सेहत ठीक, अर्थलाभ, भाई–बन्धुसुख, असफल योजना, स्त्रीकष्ट, कारोबार पहले से ठीक। जुलाई 18, 19, 26, 27; अगस्त 4, 5, 6, 14, 15 अशुभ।	मिथुन	सेहत ठीक, अर्थलाभ, सम्पत्तिलाभ, स्त्रीकष्ट, आय से व्यय अधिक, कारोबार कमजोर। अगस्त 16, 22, 23, 24; सितम्बर 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।	मिथुन	पित्तविकार, भ्रातृकष्ट, निजीजनों से अनबन, गुप्त चिन्ता, कारोबार में बाधा। सितम्बर 19, 20, 28, 29, 30; अक्तूबर 7, 8, 9, 16 अशुभ।
कर्क	सेहत ठीक, अर्थलाभ, निजी लोगों से अनबन, सम्पत्ति–विवाद, सन्ततिसुख, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार ठीक। जुलाई 20, 21, 28, 29, 30; अगस्त 7, 8, 9 अशुभ।	कर्क	पित्त–वायुविकार, धनलाभ होकर हानि हो, भाई–बन्धु से मदद, असफल योजना, गुप्त चिन्ता। अगस्त 16, 17, 18, 24, 25, 26; सितम्बर 3, 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ।	कर्क	पित्त–वायुविकार, अर्थलाभ होकर हानि हो, बन्धु द्वारा मदद, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीकष्ट। सितम्बर 21, 22, 30; अक्तूबर 1, 2, 7, 8, 9, 16 अशुभ।
सिंह	सेहत ठीक, धनलाभ होकर हानि हो, बन्धुकष्ट, मित्रों से अनबन, शत्रु बढ़ें, स्त्रीसुख, कारोबार गड़बड़। जुलाई 22, 23, 30, 31; अगस्त 1, 9, 10, 11 अशुभ।	सिंह	सेहत ठीक, धनलाभ, यात्रा में कष्ट, वृथाविवाद से बचें, कारोबार गड़बड़। अगस्त 18, 19, 27, 28; सितम्बर 6, 7, 14, 15 अशुभ।	सिंह	उदरविकार, धनलाभ, बन्धुसुख, विरोधी पक्ष बढ़े, अपमानभय, कारोबार अपेक्षाकृत ठीक। सितम्बर 16, 23, 24, 25; अक्तूबर 3, 4, 5, 12, 13 अशुभ।
कन्या	सेहत गड़बड़, नेत्रकष्ट, भाई–बन्धुकष्ट, शत्रु कमजोर, कार्यान्तर से लाभ, क्रोध बढ़े। जुलाई 16, 17, 24, 25; अगस्त 2, 3, 4, 12, 13 अशुभ।	कन्या	सेहत ठीक, धनहानि, निजीलोगों को कष्ट, कर्जा चढ़े, वाहन से चोटभय, कारोबार कुछ कमजोर। अगस्त 20, 21, 22, 29, 30, 31; सितम्बर 8, 9, 10 अशुभ।	कन्या	सेहत ठीक, अर्थलाभ, निजीलोगों से अनबन, यात्रा में कष्ट, स्त्रीपक्ष से मदद, कारोबार कुछ ठीक। सितम्बर 16, 17, 18, 25, 26, 27; अक्तूबर 5, 6, 7, 14, 15 अशुभ।
तुला	उदरविकार, नई योजना से लाभ, मित्र–बन्धुसहयोग, स्त्रीकष्ट, कारोबार कमजोर। जुलाई 18, 19, 26, 27; अगस्त 4, 5, 6, 14, 15 अशुभ।	तुला	सेहत ठीक, निजीलोगों से अनबन, सम्पत्तिलाभयोग, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्री हेतु व्यय। अगस्त 16, 22, 23, 24; सितम्बर 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।	तुला	वयुविकार, अर्थहानि, कर्जा बढ़े, बन्धुकष्ट, गुप्तचिन्ता, राजपक्ष से भय, कारोबार कुछ ठीक। सितम्बर 19, 20, 28, 29, 30; अक्तूबर 7, 8, 9, 16 अशुभ।
वृश्चिक	कफ–वायुविकार, सम्पत्तिविवाद, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, आय से व्यय अधिक,गुप्तशत्रु से सावधान। जुलाई 20, 21, 28, 29, 30; अगस्त 7, 8, 9 अशुभ।	वृश्चिक	वायुविकार, अर्थलाभ, बन्धुसुख, सन्तानपक्ष से खुशी, मासान्त में अच्छा लाभ। अगस्त 16, 17, 18, 24, 25, 26; सितम्बर 3, 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ।	वृश्चिक	क्रोध बढ़े, अर्थहानि, निजीलोगों से अनबन, घरेलू झंझट, असफल योजना.। सितम्बर 21, 22, 30; अक्तूबर 1, 2, 7, 8, 9, 16 अशुभ।
धनु	कफ–वायुविकार, अर्थलाभ, बन्धु व मित्रों से सहयोग, सन्तानपक्ष शुभ, शत्रु प्रबल। जुलाई 22, 23, 30, 31; अगस्त 1, 9, 10, 11 अशुभ।	धनु	सेहत गड़बड़, अर्थलाभ होकर हानि, निजीलोगों से अनबन, यात्रा में कष्ट, स्त्री से सहयोग। अगस्त 18, 19, 27, 28; सितम्बर 6, 7, 14, 15 अशुभ।	धनु	रेहत ठीक, कर्जा सिर चढ़े, दोस्तों से मदद, खर्चविशेष, कारोबार कुछ ठीक, घरेलू झंझट बढ़ें। सितम्बर 16, 23, 24, 25; अक्तूबर 3, 4, 5, 12, 13 अशुभ।
मकर	सेहत ठीक, धनलाभ हो, बन्धु सहयोग, स्त्रीसुख, कारोबार में रद्दोबदल, कर्जा चढ़े। जुलाई 16, 17, 24, 25; अगस्त 2, 3, 4, 12, 13 अशुभ।	मकर	सेहत ठीक, अर्थलाभ हो, नई सम्पदालाभ, स्त्रीसुख, कारोबार पहले से अच्छा। अगस्त 20, 21, 22, 29, 30, 31; सितम्बर 8, 9, 10 अशुभ।	मकर	गुप्त चिन्ता, अर्थहानि भय, भाई–बन्धु से मदद, कार्यान्तर से लाभ, नई योजना में खर्च। सितम्बर 16, 17, 18, 25, 26, 27; अक्तूबर 5, 6, 7, 14, 15 अशुभ।
कुम्भ	सेहत ठीक, सम्पत्तिविवाद, धनलाभ, असफल योजना, स्त्रीसुख, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। जुलाई 18, 19, 26, 27; अगस्त 4, 5, 6, 14, 15 अशुभ।	कुम्भ	सिर व नेत्रकष्ट, कर्जा बढ़े, बन्धु से मदद,गुप्त चिन्ता, कारोबार पहले से ठीक। अगस्त 16, 22, 23, 24; सितम्बर 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।	कुम्भ	उदरविकार, नेत्रकष्ट, घरेलू झंझट, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार में सुधार। सितम्बर 19, 20, 28, 29, 30; अक्तूबर 7, 8, 9, 16 अशुभ।
मीन	सेहत ठीक, अर्थलाभ हो, भ्रातृकष्ट, स्त्रीसुख, शत्रु कमजोर, कारोबार ठीक। जुलाई 20, 21, 28, 29, 30; अगस्त 7, 8, 9 अशुभ।	मीन	उदरविकार, अर्थलाभ होकर हानि हो, निजीजन विरोध, कष्टप्रद यात्रा, स्त्रीपक्ष से लाभ। अगस्त 16, 17, 18, 24, 25, 26; सितम्बर 3, 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ।	मीन	कफ–वायुविकार, अर्थलाभ, खर्च अधिक हो, सम्पत्तिविवाद, शत्रु बढ़ें, कार्यान्तर से लाभ। सितम्बर 21, 22, 30; अक्तूबर 1, 2, 7, 8, 9, 16 अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् 2066 वि.)

राशि	कार्तिक (17 अक्तू. से 15 नवं. तक, सन् '09 ई.)	राशि	मार्गशीर्ष (16 नवं. से 14 दिसं. तक, सन् '09 ई.)	राशि	पौष (15 दिसं., '09 से 13 जन. तक सन् 2010 ई.)
मेष	वृथाव्यय, सेहत गड़बड़, सम्पत्तिविवाद, मन अशान्त, कारोबार में हानि, कर्जा बढ़े, मित्र से मदद मिले। अक्तूबर 20, 21, 22, 30, 31; नवम्बर 1, 8, 9 अशुभ।	मेष	कफ–वायुविकार, भ्रातृकष्ट, बन्धु से मदद, सन्तानपक्ष ठीक, स्त्री हेतु खर्च, कारोबार में गड़बड़। नवम्बर 17, 18, 19, 27, 28; दिसम्बर 5, 6, 7, 14 अशुभ।	मेष	उदरविकार, राजभय, गुप्त चिन्ता, वृथाव्यय, स्त्रीसुख, कारोबार कुछ ठीक, वृथाविवाद से बचें। दिसम्बर 15, 16, 24, 25, 26; जनवरी 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।
वृष	कफ–वायुविकार, बन्धुकष्ट, सन्तानपक्ष शुभ, वृथाविवाद से बचें, कारोबार कमजोर। अक्तूबर 23, 24, 25; नवम्बर 1, 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।	वृष	सेहत ठीक, धनलाभ होकर हानि, घरेलू झंझट, सन्तानपक्ष से चिन्ता, नई समस्या बने। नवम्बर 19, 20, 21, 29, 30; दिसम्बर 1, 7, 8, 9 अशुभ।	वृष	धनलाभ होकर हानि, निजीजन विरोध, नई योजना से लाभ, स्त्री से अनबन, कारोबार यथावत्। दिसम्बर 16, 17, 18, 26, 27, 28; जनवरी 4, 5, 13 अशुभ।
मिथुन	सेहत गड़बड़, वृथाव्यय, यात्रा में कष्ट, चोटभय, अशुभ समाचार, कारोबार में कुछ सुधार। अक्तूबर 17, 18, 25, 26, 27; नवम्बर 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ,	मिथुन	गुप्त चिन्ता, उदरविकार, भाई–बन्धु से मदद, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीकष्ट, मासान्त में विशेष हानिभय। नवम्बर 22, 23, 24; दिसम्बर 1, 2, 3, 9, 10, 11 अशुभ।	मिथुन	कफ–वायुविकार, धनलाभ, बन्धुकष्ट, शत्रु बढ़ें, स्त्रीपक्ष से परेशानी, कारोबार की चिन्ता। दिसम्बर 19, 20, 21, 29, 30; जनवरी 6, 7 अशुभ।
कर्क	उदरविकार, कर्जा बढ़े, निजीजन सहयोग, सन्तानपक्ष से खुशी, स्त्रीचिन्ता, आय से व्यय अधिक। अक्तूबर 17, 18, 28, 29, 30; नवम्बर 6, 7, 14, 15 अशुभ।	कर्क	सेहत ठीक, अर्थलाभ, भाई से अनबन, सन्तानपक्ष शुभ, अपमानभय, कारोबार में रद्दोबदल। नवम्बर 16, 24, 25, 26; दिसम्बर 3, 4, 5, 12, 13 अशुभ।	कर्क	सेहत ठीक, अर्थहानि, निजी लोगों से अनबन, सन्तानहेतु विशेष खर्च, नीच से अपमानभय। दिसम्बर 21, 22, 23, 31; जनवरी 1, 8, 9, 10 अशुभ।
सिंह	सेहत गड़बड़, आय से व्यय अधिक, घरेलू झंझट, बन्धुसुख, शत्रु हतप्रभ, कारोबार में हानि। अक्तूबर 20, 21, 22, 30, 31; नवम्बर 1, 8, 9 अशुभ।	सिंह	सेहत ठीक, अर्थहानि, कर्जा बढ़े, नई योजना में हानि, स्त्रीसुख, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। नवम्बर 17, 18, 19, 27, 28; दिसम्बर 5, 6, 7, 14 अशुभ।	सिंह	सेहत गड़बड, अर्थलाभ होकर हानि, घरेलू झंझट, बन्धुकष्ट, कारोबार ठीक। राजपक्ष से भय। दिसम्बर 15, 16, 24, 25, 26; जनवरी 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।
कन्या	सेहत ठीक, अर्थलाभ, सन्तानपक्ष से चिन्ता, अपमानभय कार्यान्तर का विचार। अक्तूबर 23, 24, 25; नवम्बर 1, 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।	कन्या	पित्तविकार, अर्थलाभ होकर हानि, सटटे के व्यापार से विशेष हानि, स्त्रीसुख। नवम्बर 19, 20, 21, 29, 30; दिसम्बर 1, 7, 8, 9 अशुभ।	कन्या	सेहत ठीक, सटटे में हानि, भ्रातृकष्ट, असफल योजना, गुप्त चिन्ता, कारोबार ठीक। दिसम्बर 16, 17, 18, 26, 27, 28; जनवरी 4, 5, 13 अशुभ।
तुला	पित्त–वायुविकार, अर्थलाभ होकर हानि, उत्साह बढ़े, भाई से मदद,मित्रों से अनबन। अक्तूबर 17, 18, 25, 26, 27; नवम्बर 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ,	तुला	निजीजन विरोध, मन परेशान, घरेलू झंझट बढ़ें, कारोबार में सुधार, मासान्त में लाभ। नवम्बर 22, 23, 24; दिसम्बर 1, 2, 3, 9, 10, 11 अशुभ।	तुला	उदरविकार, नेत्रकष्ट, विशेषहानि भय, लड़ाई–झगड़े से बचें, मन अशान्त, कारोबार ठीक। दिसम्बर 19, 20, 21, 29, 30; जनवरी 6, 7 अशुभ।
वृश्चिक	सेहत ठीक, धनलाभ, घरेलू सम्पत्तिविवाद, नई योजना व कारोबार में हानि, मासान्त में लाभ। अक्तूबर 17, 18, 28, 29, 30; नवम्बर 6, 7, 14, 15 अशुभ।	वृश्चिक	अर्थहानि भय, नेत्रकष्ट, वृथाकलह, कारोबार पहले से ठीक, बन्धुकष्ट, पुत्र–स्त्रीसुख। नवम्बर 16, 24, 25, 26; दिसम्बर 3, 4, 5, 12, 13 अशुभ।	वृश्चिक	क्रोध बढ़े, अर्थलाभ होकर हानि, भाई–बन्धु से अनबन, नई योजना असफल, पुराने विवाद विकट हों। दिसम्बर 21, 22, 23, 31; जनवरी 1, 8, 9, 10 अशुभ।
धनु	सेहत ठीक, अशुभ में खर्च, बन्धुजन सहयोग, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीसुख। अक्तूबर 20, 21, 22, 30, 31; नवम्बर 1, 8, 9 अशुभ।	धनु	शरीरपीड़ा, रोगभय, निजीजन विरोध, बन्धु से मदद, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। नवम्बर 17, 18, 19, 27, 28; दिसम्बर 5, 6, 7, 14 अशुभ।	धनु	सेहत ठीक, शोक समाचार, धनहानि भय, मित्रबन्धु से मदद, स्त्रीसुख, आय से व्यय अधिक। दिसम्बर 15, 16, 24, 25, 26; जनवरी 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।
मकर	क्रोध बढ़े, कर्जा सिर चढ़े, भाई से मदद, मित्र धोखा दे, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार पहले से ठीक। अक्तूबर 23, 24, 25; नवम्बर 1, 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।	मकर	सेहत ठीक, वृथाव्यय, सुखअर्थलाभ, सम्पत्तिविवाद, नई योजना, आय से व्यय अधिक। नवम्बर 19, 20, 21, 29, 30; दिसम्बर 1, 7, 8, 9 अशुभ।	मकर	राजपक्ष से भय, अचानक विशेष खर्च हो, बन्धु से अनबन, सम्पत्तिलाभ, की योजना। दिसम्बर 16, 17, 18, 26, 27, 28; जनवरी 4, 5, 13 अशुभ।
कुम्भ	वायुविकार, नेत्रकष्ट, निजीजन विरोध, सम्पत्तिविवाद, मासमध्य मे लाभ, मासान्त में हानि। अक्तूबर 17, 18, 25, 26, 27; नवम्बर 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ,	कुम्भ	हानिभय, धनलाभ, सम्पति हेतु विशेष खर्च, सन्तान से लाभ, स्त्रीसुख, कारोबार में रद्दोबदल। नवम्बर 22, 23, 24; दिसम्बर 1, 2, 3, 9, 10, 11 अशुभ।	कुम्भ	अर्थलाभ, सेहत ठीक, राजपक्ष से भय, बन्धुसुख, स्त्रीसुख, कारोबार बिगड़े। दिसम्बर 19, 20, 21, 29, 30; जनवरी 6, 7 अशुभ।
मीन	कफ–वायुविकार, खराब सेहत हेतु विशेष खर्च, कारोबार में हानि, सन्तानपक्ष ठीक। अक्तूबर 17, 18, 28, 29, 30 [illegible]	मीन	शत्रु से हानि, सेहत ठीक, व्यापार में हानि, अच्छे लोगों से [illegible]	मीन	गुप्त चिन्ता, व्यापार में हानि, भाई–बन्धु से मदद, नई [illegible]

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् 2066वि.)

राशि	माघ (14 जन. से 11 फर. तक, सन् 2010 ई.)	राशि	फाल्गुन (12 फर. से 13 मार्च तक, सन् 2010 ई.)	राशि	चैत्र (14 मार्च से 13 अप्रै. तक, सन् 2010 ई.)
मेष	शत्रु कमजोर, स्थानान्तरण का विचार, धनलाभ, सम्पत्ति-विवाद, स्त्रीकष्ट, मासान्त में कारोबार में अच्छा लाभ। जनवरी 20, 21, 22, 29, 30, 31; फरवरी 6, 7, 8 अशुभ।	मेष	कष्टभय, स्थानान्तरण का विचार, अकस्मात् धनलाभ, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीसुख। फरवरी 16, 17, 18, 26, 27; मार्च 6, 7, 8 अशुभ।	मेष	बन्धनभय, स्थानान्तरण का विचार, निजी लोगों से अनबन, सन्तानपक्ष से कष्ट, अपमानभय। मार्च 16, 17, 18, 25, 26, 27; अप्रैल 2, 3, 4, 12, 13 अशुभ।
वृष	क्ष्टभय, धनलाभ, नई योजना से हानि, शत्रु कमजोर, कार्यान्तर से लाभ, अचानक कष्ट। जनवरी 14, 15, 23, 24, 31; फरवरी 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ।	वृष	सेहत गड़बड़, धनहानि, मित्र से अनबन, सन्ततिकष्ट, गुप्तचिन्ता, कारोबार कुछ ठीक। फरवरी 19, 20, 21, 28 मार्च 1, 8, 9, 10 अशुभ।	वृष	सेहत ठीक, अर्थहानि, भ्रातृकष्ट, सन्तानहेतु विशेष खर्च, स्त्रीसुख, कारोबार कुछ ठीक। मार्च 18, 19, 20, 27, 28; अप्रैल 4, 5, 6 अशुभ।
मिथुन	सेहत गड़बड़, अर्थहानि, निजीलोगों से अनबन, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्री से अनबन, कारोबार में तरक्की। जनवरी 15, 16, 17, 25, 26, 27; फरवरी 2, 3, 4, 11 अशुभ।	मिथुन	मन परेशान, घरेलू झंझट बढ़ें, जमीन-जायदाद सम्बन्धि झगड़े, कार्यान्तर से लाभ। फरवरी 12, 13, 21, 22, 23; मार्च 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।	मिथुन	उदरविकार, आय से व्यय अधिक, घरेलू झंझट, असफल योजना, गुप्त चिन्ता, कारोबार ठीक। मार्च 21, 22, 29, 30; अप्रैल 7, 8, 9 अशुभ।
कर्क	क्रोध बढ़ें, धनलाभ होकर हानि हो, सम्पत्तिविवाद, घरेलू झंझट बढ़ें, स्त्री सुख, कारोबार कुछ ठीक। जनवरी 18, 19, 20, 27, 28, 29; फरवरी 4, 5, 6 अशुभ।	कर्क	कफ-वायुविकार, धनहानि भय, राजपक्ष से चिन्ता, कारोबार कमजोर, सांझेदारी में हानि। फरवरी 14, 15, 16, 23, 24, 25; मार्च 3, 4, 5, 13 अशुभ।	कर्क	सिर व नेत्रकष्ट, अर्थहानि, सम्पत्तिविवाद, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक, मासान्त में लाभयोग। मार्च 14, 15, 23, 24, 31; अप्रैल 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ।
सिंह	सेहत ठीक, धनहानि, भाई-बन्धुकष्ट, कारोबार में हानि, अपमानभय, कर्जा सिर चढ़े। जनवरी 20, 21, 22, 29, 30, 31; फरवरी 6, 7, 8 अशुभ।	सिंह	रोगभय, निजीजनों से अनबन, शत्रु बढ़ें, स्त्रीपक्ष से कष्ट, कारोबार अपेक्षाकृत ठीक। फरवरी 16, 17, 18, 26, 27; मार्च 6, 7, 8 अशुभ।	सिंह	राजभय, शरीरकष्ट, घरेलू उलझनें बढ़ें, होसला बना रहे, कारोबार में तबदीली से लाभ। मार्च 16, 17, 18, 25, 26, 27; अप्रैल 2, 3, 4, 12, 13 अशुभ।
कन्या	उदरविकार, नेत्रकष्ट एवं धनहानि हो, शत्रु बढ़ें, झगड़े से बचें, मासान्त में शारीरक कष्ट से परेशानी। जनवरी 14, 15, 23, 24, 31; फरवरी 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ।	कन्या	कष्टभय, घरेलू झंझट बढ़ें, वृथाविवाद, स्त्रीपक्ष शुभ, कारोबार गड़बड़, मासान्त में खर्च विशेष। फरवरी 19, 20, 21, 28 मार्च 1, 8, 9, 10 अशुभ।	कन्या	अर्थहानि, राजपक्ष से भय, यात्रा मे कष्ट, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार में रद्दोबदल। मार्च 18, 19, 20, 27, 28; अप्रैल 4, 5, 6 अशुभ।
तुला	राजभय, शत्रु बढ़ें, निजीजनों से अनबन, स्त्रीपक्ष से कष्ट, कारोबार ठीक। जनवरी 15, 16, 17, 25, 26, 27; फरवरी 2, 3, 4, 11 अशुभ।	तुला	सेहत ठीक, वृथाव्यय, यात्रा में कष्ट, शत्रु बढ़ें, मासान्त में घरेलू उलझनें बढ़ें, स्त्रीपक्ष से लाभ। फरवरी 12, 13, 21, 22, 23; मार्च 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।	तुला	शारीरिककष्ट, जमीन-जायदाद सम्बन्ध झगड़े, कारोबार कुछ ठीक, मासान्त में विशेष खर्च। मार्च 21, 22, 29, 30; अप्रैल 7, 8, 9 अशुभ।
वृश्चिक	सेहत ठीक, अशुभ समाचार, अकस्मात् धनहानि, सन्ततिसुख, स्त्रीसुख, मासान्त में खर्चविशेष। जनवरी 18, 19, 20, 27, 28, 29; फरवरी 4, 5, 6 अशुभ।	वृश्चिक	रोगपीड़ा, निजीजन विरोध, सन्तानहेतु अधिक खर्च, कारोबार ठप, शत्रु प्रबल, शनिमन्त्र जाप करें। फरवरी 14, 15, 16, 23, 24, 25; मार्च 3, 4, 5, 13 अशुभ।	वृश्चिक	कफ-वायुविकार, शत्रु प्रबल, स्त्रीकष्ट, कारोबार में रुकावट, ऐशो-इश्रत में मन लगे। मार्च 14, 15, 23, 24, 31; अप्रैल 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ।
धनु	राजपक्ष से भय, आर्थिक हानि, धनलाभ होकर विशेष खर्च हो, कार्यान्तर का विचार, वृथाविवाद से बचें। जनवरी 20, 21, 22, 29, 30, 31; फरवरी 6, 7, 8 अशुभ।	धनु	सेहत ठीक, अर्थलाभ, भ्रातृ कष्ट, नई योजना से लाभ, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार कमजोर। फरवरी 16, 17, 18, 26, 27; मार्च 6, 7, 8 अशुभ।	धनु	उदरविकार, वृथाविवाद से बचें, मित्र-बन्धु से सहयोग, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। मार्च 16, 17, 18, 25, 26, 27; अप्रैल 2, 3, 4, 12, 13 अशुभ।
मकर	सेहत ठीक, कारोबार गड़बड़, कर्जा बढ़े, मित्र-बन्धु सहयोग, नई योजा लागू हो, मासान्त कष्टप्रद। जनवरी 14, 15, 23, 24, 31; फरवरी 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ।	मकर	क्रोध बढ़े, वृथा व्यय, निजीजनों से मदद, स्त्रीसुख, आय से व्यय अधिक, घरेलू झंझट। फरवरी 19, 20, 21, 28 मार्च 1, 8, 9, 10 अशुभ।	मकर	वृथाउल्झलनों से बचें, भाई-बन्धु से मदद, स्त्रीकष्ट, कारोबार गड़बड़, कर्जा बढ़े। मार्च 18, 19, 20, 27, 28; अप्रैल 4, 5, 6 अशुभ।
कुम्भ	क्रोध बढ़े, धनलाभ होकर हानि हो, सटटे के व्यापार से दूर रहें, बन्धुसुख, स्त्रीसुख। जनवरी 15, 16, 17, 25, 26, 27; फरवरी 2, 3, 4, 11 अशुभ।	कुम्भ	उदरविकार, धनलाभ होकर हानि हो, निजीजन सहयोग, गुप्त चिन्ता, कारोबार कुछ ठीक रहे। फरवरी 12, 13, 21, 22, 23; मार्च 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।	कुम्भ	धनलाभ होकर हानि हो, निजी लोगों से मदद, स्त्रीकष्ट, मासान्त में आय से व्यय अधिक। मार्च 21, 22, 29, 30; अप्रैल 7, 8, 9 अशुभ।
मीन	बन्धनभय, गुप्तचिन्ता, वृथाव्यय, निजीजन सहयोग, अपमानभय, कारोबार में रद्दोबदल। जनवरी 18, 19, 20, 27, 28, 29; फरवरी 4, 5, 6 अशुभ।	मीन	राजपक्ष से भय, अर्थलाभ, निजीजनों से भय, उत्साह बना रहे, स्त्रीकष्ट, कारोबार कमजोर। फरवरी 14, 15, 16, 23, 24, 25; मार्च 3, 4, 5, 13 अशुभ।	मीन	कष्टभय, फिजूलखर्ची ज्यादा हो, नई योजना से हानि, स्त्रीपक्ष शुभ, कार्यान्तर व स्थानान्तरण का विचार। मार्च 14, 15, 23, 24, 31; अप्रैल 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ।

अथ वर्षराजादि फल विचार (संवत् २०६६ वि.)

(सन् २००९-१० ई. की ग्रहपरिषद् का विवरण)

कल्पादि से गत वर्ष १९७२९४९११०, सृष्टि संवत् १९५५८८५११०, श्रीविक्रम संवत् २०६६, शक संवत् १९३१, श्रीकृष्ण जन्म संवत् ५२४५, कलि-संवत् ५११०, सप्तर्षि-संवत् ५०८५, श्रीजैन महावीर निर्वाण संवत् २५३४-३५, श्रीबुद्ध संवत् २६३२-३३, हिजरी सन् १४३०-३१, फसली सन् १४१६-१७, ईस्वी सन् २००९-१०।

वर्षारम्भ में गुरुमान से विष्णुविंशति का 'शुभकृत्' नामक संवत्सर है। इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है;–

" शुभकृद्वत्सरे पृथ्वी राजते विविधोत्सवैः।
आतंक–भयदाः चौराः राजानः समरोत्सुकाः।।"

अर्थात्- 'शुभकृत्' नामक संवत्सर में शासकवर्ग में शक्ति–परीक्षण की भावना प्रबल हो, भूमण्डल पर अनेकप्रकार के उत्सव हों, चोरों द्वारा परेशानी किंवा आतंकवाद आदि अनैतिक कृत्यों में वृद्धि हो।

इस संवत् का राजा (ग्रहपरिषद् के प्रधान) **शुक्र, मन्त्री चन्द्र, सस्येश** (चौमासी फसलों के स्वामी) **गुरु, धान्येश** (शीतकालीन फसलों के स्वामी) **मंगल, मेघेश** (मौसम, वर्षा–पानी के स्वामी) **सूर्य, रसेश** (गुड़–खाण्ड, रसकस आदि के स्वामी) **शनि, नीरसेश** (सर्वविध धातु आदि व्यापार के स्वामी) **गुरु, फलेश** (फल–फूल आदि के स्वामी) **सूर्य, धनेश** (धन–दौलत एवं खजाना के स्वामी) **बुध** एवं **दुर्गेश** (सुरक्षा एवं प्रतिरक्षा के स्वामी) **सूर्य** हैं।

संवत् २०६६ वि. के उल्लिखित पदाधिकारियों का फल इस प्रकार है;–

(१) राजा शुक्र का फल–

शुक्रस्य राज्ये बहुसस्य–संकुला सुतीव्रवेगाः सरितोऽम्बुराशिभिः।
फलन्ति वृक्षा बहुगोप्रसूतिर्वसुन्धरा–पार्थिवसौख्य–संयुता।।"

अर्थात्– राजा शुक्र हो तो खेतियां बहुत उपजें, नदियां बड़े वेग से बहें, वृक्षों में फल बहुत लगें। गोसंख्या में वृद्धि और पृथ्वी पार्थिव सौख्य से संयुक्त हो।

(२) मन्त्री चन्द्र का फल–

"शशिनि मन्त्रिगते बहुसस्यवत्यपि धरा रमते सुखमण्डिता।
वियति वारिधरा बहुवर्षिणो जनपदाः सुखराशिसुशोभिताः।।"

अर्थात्– चन्द्रमा मन्त्री हो तो वर्षा अधिक हो, अन्न बहुत हों, लोग सुखी रहें और सभी प्रकार के सुखों की वृद्धि हो।

(३) सस्येश गुरु का फल–

"कणपतौ सुरराज–पुरोहिते सकलसौख्यकरः श्रुतिपूर्वकः।
जलधरा जलदा बहुसस्यदा रसपयांसि बहूनि वसूनि वै।।"

अर्थात्– यदि बृहस्पति सस्येश हो तो वेदविहित मार्ग के प्रचार से सौख्य हो। वर्षा बहुत हो, अन्न तथा रस, गोरस–दूध आदि भी बहुत हो।

(४) धान्येश मंगल का फल–

"भूमिजे ग्रीष्मधान्येशे ग्रीष्मधान्यमहर्घकम्।
शालीक्षुघृततैलादि–महर्घाणि भवन्ति च।।"

अर्थात्– मंगल धान्याधिप हो तो ग्रीष्मधान्य मंहगे हों। चावल, ईख, घी और तैलादि भी मंहगे हों।

(५) मेघेश सूर्य का फल–

(१०) दुर्गेश सूर्य का फल–

(५) मेघेश सूर्य का फल--

" जलदपे यदि वासरपे तदा सरसि वै रमते जनतारसम्।
यवचणेक्षु--निवार--सुशालिभिः सुखचयं सुलभं भुवि वर्तते।।"

अर्थात्-- यदि मेघेश सूर्य हो तो जौ, चने, ईख, नीवार और चावल आदि उत्पन्न हों और पृथ्वी पर सुख--संचय वर्तमान रहे।

(६) रसेश शनि का फल--

" रविसुते रसपे रससंक्षयो न जलदा गददाश्च पयोधराः।
अज--गवां गज--वाजि--खरोष्ट्रहा जनपदेषु नरा न रसैर्युताः।।"

अर्थात्-- शनि रसेश हो तो रसों का नाश हो, बादलों से पानी के बदले रोग बरसें। बकरी, गाय, हाथी, घोड़े, गधे और ऊँट आदि का नाश हो, मनुष्यों में नीरसता रहे।

(७) नीरसेश गुरु का फल--

" हरिद्रा--पीतवस्तूनि पीतवस्त्रादिकं च यत्।
नीरसेशो यदा जीवः सर्वेषां प्रीतिरुत्तमा ।।"

अर्थात्-- बृहस्पति नीरसेश हो तो हल्दी आदि पीले रंग की वस्तुएं, पीले कपड़े आदि सब सस्ते हों एवम् जनता में प्रेम रहे।

(८) फलेश सूर्य का फल--

" द्रुमवती वरपुष्पवती धरा प्रमुदिता फलभोगविशेषिता।
बहुजलं जलदो भुवि मुंचति क्वचिदपि प्रमितं फलपो रविः।।"

अर्थात्-- सूर्य फलेश हो तो अनेक प्रकार के फलों, पुष्पों और वृक्षों से पृथ्वी आनन्दित हो और वर्षा अच्छी हो।

(९) धनेश बुध का फल--

" द्रविणपो हिमरश्मिसुतो यदा विविधसंग्रह--वस्तुफलार्थदः।
द्विजवरा जययज्ञ--सुसंयुताः कृषिविशेष--विशेषित मानसा।।"

अर्थात्-- बुध धनेश हो तो कई प्रकार की वस्तुओं का संग्रह लाभदायक हो। पंडितलोग जप, यज्ञादि करें और कृषकलोग खेतीविशेष करें।

(१०) दुर्गेश सूर्य का फल--

" नयविशेषकरस्तरणिस्तदा गतभया-- नरराज-- पुरोगमाः।
समधिको न तदा नृपजोन्यजः स्वपथजं व्रजतां न भयं क्वाचित्।।"

अर्थात्-- सूर्य दुर्गेश हो तो राजा न्याय करे, राजद्वार में जाने वाले निर्भय हो जाएं। राजवर्गी तथा अन्य सब समान रहें और अपने नियत मार्ग में चलने वालों को कुछ भी भय न हो।

सूचना-- यद्यपि वर्ष के इन दशाधिकारियों का फल सर्वत्र होता है। किन्तु विशेषतः राजा का फल काश्मीर, अफगानिस्तान एवं बराड़ देश में; मन्त्री का फल आन्ध्र, वाल्हीक, उज्जैन एवम् मालवा में; **सस्येश** का पौण्ड्र, विदर्भ में; **धान्येश** का गुजरात, नर्मदा के तटवर्ती प्रदेश एवं मध्यप्रदेश में; **मेघेश** का मगध एवं बंगाल में, **रसेश** का कोंकण एवं गोवा में; **नीरसेश** का मालवा व बिहार में, **धनेश** का राजस्थान एवं बाड़मेर में; **फलेश, दुर्गेश** एवं **राजा** का फल सब जगह विशेष होता है।

वर्षादि के विश्वामान

वर्षाविश्वा १३, धान्य ११, तृण १५, शीत १५, तेज ११, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ६, तृषा ७, निद्रा ३, आलस्य १३, उद्यम ५, शांति १५, क्रोध १३, दम्भ ४, लोभ ३, मैथुन ३, रस ७, फल ५, उत्साह ११, उग्रता ६, पाप ७, पुण्य ११, व्याधि ६, व्याधिनाश ५, आचार ३, अनाचार ६, मृत्यु १, जन्म ६, देशोपद्रव ३, देशस्वास्थ्य १, चौर ३, चौरनाश ७, अग्नि ६, अग्निशांति ३, उद्भिज्ज ७, जरायुज ३, अण्डज १३, स्वेदज ६, टिड्डी १६, तोता ११, मूषक १५, सोना ११, तांबा ६, स्वचक्र ७, परचक्र ६, वृष्टि ११, वृष्टिनाश १६ एवं सर्वतृविश्वा १८ हैं।

आवर्तकादि चतुर्मेघों में "संवर्तक" नामक मेघ है।

फलः-- "कामाधिक्यं स्वल्पता धर्मकार्ये पृथ्वीपालास्तत्परा नान्यकार्ये।
संवर्ताख्यो नीरदः स्याद्धि यत्र प्रांचो वायुर्वाति सर्वत्र तत्र।।"

अर्थात्-- जनता निजकार्यों में अत्याधिक व्यस्त रहे, लेकिन धर्म--कर्म में जनता की रुचि कम रहे। शासकवर्ग अन्य कार्यों में व्यस्त न रहकर स्वार्थपरक कार्यों में व्यस्त रहें। वर्षा हो, पूर्व दिशा में वायु का जोर अधिक रहे। किंवा पूर्व में वायुवेग से हानि भी संभव है-- "संवर्ते वायु--पीड़नम्।"

नवमेघविचार-- इसवर्ष नवमेघों में **'द्रोण'** नामक मेघ है।

फल–"महीशा–स्व–सम्पत्तिवृद्धया समेताः समस्ता–मही–भूरि–धान्येन युक्ता।
यदा जायते द्रोणनामा पयोदस्तदा देवराजो भवेत्सत्पयोदः।।"

अर्थात्– 'द्रोण' नामक मेघ होने पर शासकवर्ग की सम्पत्ति में वृद्धि हो। सम्पूर्ण पृथ्वी धन–धान्य से समृद्ध रहे। वर्षाऋतु में वर्षा भरपूर हो–" **द्रोणे वर्षति सर्वदा**"।

अनन्तादि अष्टनागविचार– इस वर्ष अनन्तादि अष्टनागों में **'कर्कट'** नामक नाग है।

फल– उत्तर दिशा में कहीं भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से भारी जनधनहानि होगी। कहीं भारी वर्षा, कहीं भूकम्प, कहीं हिमस्खलन व ज्वालामुखी–विस्फोट से हानि के योग हैं। दक्षिणी प्रान्तों में कहीं समुद्री तूफान से भी विनाश का दृश्य उपस्थित होने का योग बनता है। उत्तरी भारत में कहीं अवर्षण, अतिवर्षण, वायुवेग व अग्निकाण्ड से हानि हो।

सुबुघ्नादि द्वादश नागों का फल– इस संवत् में बारह नागों में 'सुबुघ्न' नामक नाग है।

फल– "सुबुघ्न–नामसहितो भुजंगो जायते तदा।
नृणां सुबुद्धिकर्ता स्यान्मध्यवृष्टिप्रदायकः।।"

अर्थात्– जनमानस सत्कर्मयुक्त, सुबुद्धि वाले रहें, वर्षा मध्यम हो।

आवह आदि "सप्तवायु" विचार– इस वर्ष ' **वायुसप्तक** ' में **'वायु'** नामक वायु है।

फल– 'वायु' का प्रकोप रहे। कहीं विषाक्त–वायु से हानि भी संभव है। वर्षा पर्याप्त हो। कहीं वायुवेग से खडी फसल को हानि पहुंचे।

संवत्सर २०६६ वि. का वाहन– इसवर्ष का राजा 'शुक्र' है, अतः इस संवत्सर का वाहन 'मेंढक' है।

फल– वर्षाऋतु में भारी वर्षा हो। जलोत्पन्न अनाज पर्याप्त मात्रा में हों। बिहार, उडीसा, तामिलनाडु एवं राजस्थान के कुछ भागों में भारी वर्षा व बाढ़ और कहीं भारी सूखा पड़ने से हानि–परेशानी भी बढ़ेगी।

इस वर्ष के चार स्तम्भ

(१) जलस्तम्भ–(चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र) ६३.२४ प्रतिशत है।

(२) वायुस्तम्भ–(ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिरा नक्षत्र) का पूर्ण अभाव है।

(३) तृणस्तम्भ–(वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र) ७६.४३ प्रतिशत है।

(४) अन्नस्तम्भ–(आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र) २.२१ प्रतिशत है।

ये उल्लिखित चार स्तम्भ देश के कुशल–क्षेम–ज्ञानार्थ विशेष महत्त्व रखते हैं। क्योंकि, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की सत्ता जल, वायु, अन्न एवं तृण (जड़ी–बूटियों) आदि पर ही निर्भर है। संवत् के शुभारम्भ पर देश की प्राकृतिक व्यवस्था के नियामक इन चार स्तम्भों का आकलन आवश्यक समझा गया है।

(१) जलस्तम्भ–इस वर्ष के चार स्तम्भों का निरीक्षण करने से स्पष्ट है, कि **जलस्तम्भ** ६३.२४ प्रतिशत है। वर्षा काफी होगी। संवत् का राजा शुक्र होने से जलोत्पन्न अनाज चावल आदि की उत्पत्ति अधिक होगी। इसवर्ष रोहिणी का वास समुद्र में होने से कुछ प्रान्तों में वर्षा अत्यधिक होगी। कम वर्षा वाले क्षेत्र बागड़–राजस्थान आदि में भी वर्षा से राहत मिलेगी।

(२) वायुस्तम्भ– सं. २०६६ वि. में वायुस्तम्भ का पूर्णतया अभाव है। अतः समुद्रतटवर्ती भूभाग पर वायु का दबाव विशेषरूप से नगण्य होने से समुद्रजन्य किंवा अन्यविध प्राकृतिकप्रकोप से भारी जनधनहानि संभव है। कहीं भूस्खलन, कहीं ज्वालामुखी प्रकोप से भी हानि संभव है। पृथ्वी(भूगर्भ)गत वायु का प्रभाव भी कहीं भूकम्प आदि से विनाश का दृश्य उपस्थित करेगा। खेती को हानि पहुंचेगी। वायुस्तम्भ के अभाव से मेघों के संचालन की व्यवस्था भी अनुकूल न रहेगी। अतः कहीं भयंकर सूखा, कहीं बाढ़ से या आकालिक वर्षा से हानि भी संभव है।

(३) तृणस्तम्भ– जलस्तम्भ पर्याप्त जल देने वाला होने से पशुचारा, धान्यादि की फसल अच्छी होगी। वायुस्तम्भ के अभाव से कहीं खड़ी फसलों, तृणों को हानि भी पहुंचेगी। पशुचारा एवं खाद्यपदार्थ तेज रहेंगे। तृणस्तम्भ ७६.४३ प्रतिशत होने से पशुखाद्य एवं अनाज आदि की मात्रा पर्याप्त होने पर भी कमी अनुभव होगी, कृषकवर्ग समृद्धि की ओर बढ़ेगा। शासन की नीति भी तृणस्तम्भ के प्रतिनिधि कृषकवर्ग के लिए सुविधा प्रदान करने वाली ही रहेगी।

(४) अन्नस्तम्भ– इस वर्ष अन्नस्तम्भ अत्यधिक चिन्ताजनक स्थिति का

संकेत देता है। क्योंकि, अन्नस्तम्भ केवल २.२१ प्रतिशत ही है। सरकार को

रोहिणी का वास– इस वर्ष रोहिणी का वास 'समुद्र' में है।

संकेत देता है। क्योंकि, अन्नस्तम्भ केवल २.२१ प्रतिशत ही है। सरकार को पुराने स्टॉक निकाल कर स्थिति को संभालना पड़ेगा। कृषकवर्ग को विशेष सुविधा–सम्पन्न बनाने के लिए प्रयास सरकार के हित में जाएंगे। भू–क्रय–विक्रय पर शासन को अंकुश लगाना होगा, अन्यथा कृषियोग्य भूमि की उपलब्धता के प्रभाव दूरगामी होंगे। क्षीण अन्नस्तम्भ देश की आर्थिक स्थिति को भी प्रभावित करेगा।

आर्षमान विचार (वर्षरक्षा के लिए चार दुर्ग)

(१) प्रथम आर्ष– (अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र) ७२.३६ प्रतिशत है।

(२) द्वितीय आर्ष–(गत संवत् २०६५ वि. में पौष अमा को मूल नक्षत्र) ६१.५ प्रतिशत है।

(३) तृतीय आर्ष– (श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र) ७३.३ प्रतिशत है।

(४) चतुर्थ आर्ष –(कार्तिक पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र) का पूर्ण अभाव है।

इसवर्ष (सं. २०६६ वि. में) संवत्रक्षात्मक प्रथम तीन दुर्ग कुछ ठीक प्रतीत होते हैं। प्रथम आर्ष ७२.३६ प्रतिशत होने से प्राकृतिक–आपदाओं से प्रकृति रक्षात्मक रहेगी। जलवायु अनुकूल रहेगा। समुद्री भूभाग में कहीं तूफान आदि से हानि भी संभव है।

द्वितीय एवं तृतीय आर्ष प्रबल हैं। विश्व के प्रगतिशील एवं विकसित देशों में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ेगी। विज्ञान, कृषि एवं तकनीकिक्षेत्र में भारी यश–प्रगति प्राप्त होगी। प्रतिष्ठित देशों से मधुर राजनैतिक सम्बन्ध बनेंगे। मंहगाई जोर पकड़ेगी। कहीं वर्षा–पानी की कमी व कहीं बाढ़ से अकाल की स्थिति बनेगी।

इसवर्ष चतुर्थ दुर्ग का अभाव होने से दक्षिण–पश्चिमी भूभाग में प्राकृतिक प्रकोप का भय है। उत्तर–दक्षिणी भूभाग पर शत्रुदेशकृत् प्रक्रिया से सावधान रहना चाहिए। चतुर्थ आर्ष के प्रतिनिधि कृत्तिका नक्षत्र का सम्बन्ध दक्षिण दिशा एवं अग्निकोण से है, अतः अग्निकाण्ड, जलाप्लाव से हानिभय प्रतीत होता है। जल–थल–वायुसेना को सशक्त बनाना होगा। प्राकृतिक आपदाओं से भी स्थिति कहीं चिन्तनीय बनेगी।

दोहा : "अखैतीज रोहिणी न होई, पौष अमावस मूल न जोई।
राखी श्रवणो हीन विचारो, कार्तिक पुण्यो कृत्तिका टारो।
महीमाह खलबली प्रकाशै. कहै भड्डली साख विनाशै।।"

रोहिणी का वास– इस वर्ष रोहिणी का वास 'समुद्र' में है।

फल– "यदा पयोधिस्थलगतं विरञ्चिभं तदा।
अतीव वर्षणं भवेत् समस्त–धान्यवर्धनम्।।"

अर्थात्– समुद्र में रोहिणी का वास होने से वर्षा अत्यधिक होती है, समस्त खाद्यान्न प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होते हैं। जलबहुल चावलादि अन्न की उपज अधिक होती है। न्यूनवर्षा वाले बागड़-राजस्थान आदि क्षेत्रों में भी आगे–पीछे वर्षा होने से कृषकवर्ग को सहारा मिलता है।

समय का वास (संवत्सर का वास)–क्योंकि, इसवर्ष रोहिणी का वास समुद्र में है; अतः समय का वास "माली" के घर है।

फल– फल–फूल एवम् कन्दमूल पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हों। वर्षा काफी हो, जनता में आनन्दमंगल रहे।

शनि की दृष्टि– संवत् २०६६ वि. के प्रारम्भ से ६ सितम्बर, २००६ ई. तक शनि सिंहराशि में ही रहेगा। तत्पश्चात् ६ सितम्बर (२००६ ई.) को २३ घं. ५७ मि. (भा. स्टैं. टा.)से संवत् २०६६ वि. के अन्त तक शनि कन्याराशि में भ्रमण करेगा। अतः इस संवत् (२०६६ वि.) में शनि की दृष्टि दक्षिण दिशा की तरफ ही रहेगी।

फल – दक्षिण प्रान्तों एवं दक्षिणी गोलार्ध के देशों पर शनि की क्रूर दृष्टि रहेगी। दक्षिणी प्रान्तों किंवा दक्षिणी देशों में राजनैतिक परेशानियां बढ़ेंगी। इसवर्ष कहीं राजनैतिक हत्याकाण्डों से शान्तिभंग होगी। सत्ता में परिवर्तन आएगा। दक्षिण में कहीं शासनतन्त्र के विरुद्ध आन्दोलन, ज्वालामुखी विस्फोट, भयंकर असाध्यरोग, भारी प्राकृतिक–प्रकोप, भूकम्प, जलाप्लाव, तूफान, अकालजन्य भारी जनधनहानि से शासनतन्त्र आपदाग्रस्त होगा। समुद्र–तटवर्ती भूभाग पर भारी समुद्री तूफान से जनधनहानि के योग भी चिन्ता का कारण बनेंगे। कन्या, मकर, मेष एवं तुला राशि वाले देश इसवर्ष शनि की दृष्टि में रहेंगे।

"शनैश्चरः क्रमात्पश्यन् तत्तद्देशान् प्रपीड़येत्।
दुर्भिक्ष –देशभङ्गाद्यैर्विग्रहो राजविड्वरैः।।"

शरत्सस्य जातक

संवत् २०६६ वि. में ज्येष्ठ कृष्ण पंचमी (तात्कालिक षष्ठी), गुरुवार, तदनुसार १४ मई, सन् २००६ ई. को २१ घंटा ४० मिनट (भा.स्टैं.टा.) पर उ.षा. नक्षत्र, शुभ योग, एवं मकरस्थ चन्द्र के समय सूर्यदेव वृष राशि में प्रविष्ट होंगे।

शरत्सस्य जातक कुण्डली

१० चं. रा. | ८ | ११ गु. | ९ | ७ | मं. १२ शु. | ६ | १ | ३ | ५ श. | सू २ बु. | ४ के.

फल– शरत्–सस्यजातक कुण्डली में सूर्य से चतुर्थ–शनि, सूर्य से दशम भाव में शनि के क्षेत्र में गुरु एवं सप्तमेश–मंगल उच्च शुक्र के साथ है। सूर्य–बुध दोनों शुक्र के क्षेत्र में शनि से दृष्ट हैं। अतः इसवर्ष शरद्–ऋतु के अनाजों (फसलों) को हानि पहुंचेगी। मूंग, मोठ, मक्का, जीरी, गन्ना, ज्वार, बाजरा, अरहर, कपास, तिल आदि की फसलें कमजोर रहेंगी। मंहगाई उत्तरोत्तर बढ़ेगी।

ग्रीष्मसस्य जातक

सं. २०६६ वि. में मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस, चन्द्रवार, तदनुसार १६ नवम्बर, सन् २००६ ई. को ११ घं. ११ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर विशाखा नक्षत्र, सौभाग्य योग एवं तुला–राशिस्थ चन्द्र के समय सूर्यदेव वृश्चिक राशि में प्रविष्ट होंगे।

ग्रीष्मसस्य जातक कुण्डली

१० गु. रा. | बु. ८ सू. | ११ | ९ | ७ चं. शु. | १२ | ६ श. | १ | ३ | ५ | २ | मं. ४ के.

फल– वृश्चिकस्थ सूर्य–बुध पर शनि की विशेष दृष्टि है। सूर्य से तृतीय–भाव में राहु के साथ नीच गुरु है। सूर्य से नवम नीच मंगल एवं एकादशस्थ शनि होने से ग्रीष्मकालीन धान्यों की उत्पत्ति अच्छी होने पर भी मंहगाई बढ़ेगी–

> "लाभाहिबुकार्थ–युक्तैः सूर्यादलिगात् सितेन्दु–शशिपुत्रैः।
> सस्यस्य परा संपत्।"

यहां सूर्य से चन्द्र–शुक्र द्वादशस्थ हैं एवं मंगल–गुरु से दृष्ट है। अतः कपास, नरमा, गेहूं, जौ, चना आदि की फसलें अच्छी होंगी।

सूर्य आर्द्राप्रवेश लग्न

संवत् २०६६ वि. में आषाढ़ कृष्ण त्रयोदशी(तात्कालिकी चतुर्दशी), रविवार, तदनुसार २१/२२ जून, सन् २००६ ई. को २७ घं. ५१ मि. (भा.स्टैं. टा.) पर मृगशिरा नक्षत्र, गण्ड योग एवं वृषराशिस्थ चन्द्र के समय सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेंगे।

सूर्य आर्द्राप्रवेश कुण्डली

सू. ३ | मं. १ शु. | ४ के. | चं. २ बु. | १२ | ५ श. | ११ गु. | ६ | ८ | १० रा. | ७ | ९

फल– मंहगाई बढ़े, कपड़े एवं सब प्रकार के अनाज मंहगे हों–

> "दिवाकरस्य रौद्रर्क्षे प्रवेशे च चतुर्दशी।
> समस्त–धान्य–वासांसि महर्घाणि भवन्ति हि।।"

मृगशिर नक्षत्र में सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश घी एवं गोरस को भी महंगा करता है। गण्ड योग, उच्चस्थ चन्द्र एवं रात्रि में सूर्य के आर्द्रा में प्रविष्ट होने से जनता में आनन्द–मंगल रहे एवं सर्वविध सुख–सम्पदा जनजीवन में रहे;–

> "गण्डयोगे वर्तमाने रौद्रं याति च भास्करः।
> तदा तुष्टानि कर्माणि कुर्वन्ति निखिला जनाः।।"
> " रात्रौ स्थिता सर्वसुखाय लोके।"

लेकिन आर्द्रा प्रवेश रविवार को होने से शुभ नहीं है। सिंह, मेष, मकर राशि वालों को जल, अग्नि एवं प्राकृतिक आपदा से सावधान रहना चाहिए।

संवत् २०६६ वि. का शुभारम्भ

गतसंवत् २०६५ वि. में चैत्र कृष्ण अमावस, गुरुवार, तदनुसार २६ मार्च, सन् २००६ ई. को २१ घं. ३६ मि.(भा.स्टैं.टा.) पर उ.भा. नक्षत्र, ब्रह्म योग एवं मीनस्थ चन्द्र के समय नवसंवत्सर २०६६ वि. का शुभारम्भ तुला लग्न के समय हो रहा है।

नवसंवत् २०६६ वि. की प्रवेशकालीन कुण्डली

फलविचार– तुला लग्न में नववर्ष का शुभारम्भ हो रहा है। मध्यदेश में किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का निधन होगा एवं कहीं शासनसत्ता में परिवर्तन के योग हैं। उत्तर में कहीं दुर्भिक्ष, कहीं अवर्षण किंवा अतिवर्षण से हानि हो।

पश्चिम में कहीं किसी मुस्लिमराष्ट्र में भयंकर युद्ध का सूत्रपात संभव है। कहीं पश्चिमी भूभाग पर प्राकृतिक–प्रकोप से जनधनहानि के योग हैं।

"तुलालग्ने मध्यदेशे छत्रभंगश्च विग्रहः।
धान्यस्य विक्रयः प्राच्यां छत्रभंग उपद्रवः।।
दुर्भिक्षं बहुलो वायुः स्वल्पमेघप्रवर्षणम्।
पश्चिमायां महायुद्धं दंष्ट्रभीतिर्महर्घता।।
दक्षिणस्यां सुखं लोके दुर्भिक्षं चोत्तरापथे।
मासद्वयं पश्चिमायां किञ्चिदुत्पात–संभवः।।"

किञ्च– नववर्ष प्रवेश–कालीन कुण्डली में लग्नेश शुक्र छठे(शत्रु) भाव में मीनराशि में (उच्चस्थ) होकर सूर्य, बुध, चन्द्र के साथ बैठा है। नव वर्षाङ्ग में सिंहस्थ शनि एवं कुम्भस्थ मंगल का समसप्तकयोग भी शुभ नहीं है। सिंह–कुम्भ राशि वाले नेतृत्व के लिए विशेष उलझणपूर्ण स्थिति का संकेत मिलता है।आसाम, बिहार, मणिपुर, नागालैण्ड आदि में भारी प्राकृतिक आपदा से किंवा उग्रवादजन्य अशान्ति से शासन चिन्तित रहे। लेकिन नवमेश बुध एवं कर्मेश चन्द्र के एकराशिस्थ होने से देश की सम्प्रभुता दृढ़ बनी रहेगी एवं शासनतन्त्र प्रत्येक परिस्थिति में देश की गरिमा को बनाए रखेगा। नववर्षकुण्डली में चतुर्थ भावस्थ नीच गुरु के साथ राहु की सन्निधि इस संवत् में कहीं धार्मिक–उन्माद एवं कहीं प्राकृतिक आपदाओं का संकेत देती है। पुनरपि, देश प्रगति पथ पर रहेगा। श्रावण–भादों–आश्विन एवं फाल्गुन मास विशेष घटनापूर्ण रहेंगे।

वर्षेश (जगत्) लग्न

संवत् २०६६ वि. में वैशाख कृष्ण चतुर्थी (तात्कालिकी पंचमी), चन्द्रवार, तदनुसार १३/१४ अप्रैल, सन् २००६ ई. को २४ घं. ४७ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर ज्येष्ठा नक्षत्र, वरीयान योग एवं वृश्चिक– राशिस्थ चन्द्र के समय सूर्यदेव मेष राशि में प्रवेश करेंगे।

वर्षेश (जगत्) लग्न कुण्डली

फल– जगत् लग्न कुण्डली में लग्नेश गुरु शनि के क्षेत्र में नीच होकर द्वितीय भाव में राहु की सन्निधि में है। तृतीय भाव में कुम्भराशिस्थ मंगल का सिंहराशिस्थ शनि के साथ समसप्तकयोग बन रहा है। विश्व के प्रमुख राष्ट्रों की राजनीति में विशेष परिवर्तन संभव हैं। विरोधी किंवा शक्तिसम्पन्न राष्ट्र अपनी प्रभुसत्ता को स्थापित करने का प्रयास करेंगे। अमेरिका की राजनीति में विशेष परिवर्तन के योग हैं, यावन राष्ट्रों के साथ रवैया बदलेगा। यहां (अमेरिका) की राजनीति में ऐतिहासिक परिवर्तन संभव है। लेकिन शनि–मंगल का समसप्तकयोग आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद एवं मार्गशीर्ष किंवा पौष मास में किसी प्रधान नेता पर संकट बना सकता है। पाकिस्तान, इराक, ईरान, अफगानिस्तान में विशेष समस्याएं सामने आएंगी। जगत्लग्न कुण्डली में शनि–मंगल की स्थिति के अनुसार कहीं राजनीतिक हत्याकाण्ड, सैन्यशासन किंवा उग्रवादजन्य परेशानी से अनेकत्र वातावरण अशान्त रहेगा। मकर प्रभावराशि वाले देशों एवं भारत के लिए बृहस्पति शुभ है।

धनुलग्न में जगत्लग्न का उदय हुआ है;– उत्तर–पूर्व में सुख, मध्यप्रदेश में प्रबल वर्षा से दुर्भिक्ष एवं रोगभय व्याप्त हो। पश्चिम में घी–धान्य सस्ते, दक्षिण में सुख किन्तु पशुओं में बीमारी फैले–

"धनुर्लग्ने तूत्तरस्यां पूर्वस्यां च सुखं नृणाम्।
दुर्भिक्षं प्रबला वृष्टिर्मध्यदेशे सरोगता।।
पश्चिमायां घृतं धान्यं समर्घं मासपंचकात्।
दक्षिणस्यां सुखं लोके किञ्चित् पीड़ाचतुष्पदे।।"

जगत्लग्न से व्यक्तिगत फल विचार

जन्मकुण्डली में लग्न बलवान् हो तो जन्मराशि से जगत्लग्न जिस राशि पर आए, वह भाव शुभग्रह या भावेश से दृष्ट या युक्त हो तो उस वर्ष में उस भाव की वृद्धि कहनी चाहिए। यदि पापग्रह की दृष्टि या योग हो तो उस भाव की हानि कहें। जन्मलग्न, जन्मराशि एवं अपने वर्षलग्न से वर्षेश (जगत्) लग्न आठवें या बारहवें हो तो वह वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होगा। इसी प्रकार देश एवं ग्राम के शुभाशुभ विचार के लिए भी समझना चाहिए ।

गुर्रा विचार (सन् २००६-१० ई.)

इस्लामी मतानुसार एक (यकम) मुहर्रम से ही नया हिजरी सन् प्रारम्भ होता है। उस दिन जो वार होता है, वही इस्लामी मतानुसार साल का राजा किंवा "गुर्रा" होता है।

संवत् २०६५ वि. में पौष शुक्ल तृतीया, मंगलवार, तदनुसार ३० दिसंबर, सन् २००८ ई. को १ मुहर्रम (यकम मुहर्रम) हिजरी सन् १४३० का प्रारम्भ होगा। क्योंकि, इसवर्ष यकम मुहर्रम मंगलवार को है, इसलिए हिजरी सन् १४३० का बादशाह मंगल ही होगा।

फलः- संसार के अनेक राष्ट्रों में अकाल की स्थिति बने। वर्षा समय के अनुसार न हो। कृषकवर्ग परेशान रहे। स्टॉकिस्ट व्यापारी भारी लाभ लेकर मंहगाई को बढ़ावा देंगे। जाति–सम्प्रदाय एवं आतंकवादजन्य उपद्रव, रक्तपात, सीमाप्रान्तों पर अशान्ति अधिक रहे। पशुओं में रोग, खड़ी फसल, सेब आदि की फसल को हानि पहुंचे। बाढ़–तूफान से हानि; गुड़, कपास, तिल, गेहूं आदि अन्न मंहगे हों। अनैतिक कार्य अधिक हों। टिड्डी, चूहा आदि से खड़ी फसल को हानि पहुंचे।

संवत् २०६६ वि. में पौष शुक्ल तृतीया, शनिवार, तदनुसार १६ दिसंबर, सन २००६ ई. को १ मुहर्रम (यकम मुहर्रम), हिजरी सन् १४३१ का प्रारम्भ होगा। क्योंकि इसवर्ष यकम मुहर्रम को शनिवार है, अतः हिजरी सन् १४३१ का बादशाह शनि ही होगा।

फल– कुछ मुस्लिम–राष्ट्रों में युद्धमय वातावरण या आन्तरिक क्रान्ति से विश्व के प्रमुख राष्ट्रों में चिन्ता रहे। जन–धनहानि किंवा प्राकृतिक–प्रकोप से भारी हानि भी हो। विश्व के कुछ देशों में भूकम्प, समुद्री तूफान किंवा राजनैतिक हत्याकाण्ड से हानि भी संभव है। देश में नानाप्रकार के रोग फैलेंगे। शनि–मंगल–रवि एवं गुरुवार वाले दिन किसी विशिष्ट व्यक्ति की मृत्यु से शोक व्याप्त हो।

आय–व्यय चक्र (विंशोत्तरी मतानुसार)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	११	५	११	५	८	११	५	११	८	२	२	८
व्यय	५	१४	११	८	५	११	१४	५	११	१४	१४	११

लाभ–व्यय देखने की रीति– अपनी राशि के लाभ-व्यय अंको को जोड़कर, उसमें से १ घटाकर, शेष को ८ से भाग देने पर यदि १, २, ६, ७ बचें तो वर्ष में उत्तम लाभ होगा। ३, ४, ५, ० बचें तो लाभ बहुत कम हो, चिन्ता भी रहे।

"इतीदं वत्सरफलं वत्सरादि-तिथौ शुभम् ।
यः शृणोति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत् ।।"

*****

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन नीम के कोमल पत्ते, कालीमिर्च, हींग, अजवायन, जीरा, तुलसीदल– ये सब कूट–पीसकर इच्छानुसार खाण्ड या शक्कर में मिलाकर शर्बत बनाकर प्रातः सेवन करने से रक्तविकार, वात–पित्त एवं कफजन्य कष्टों से शान्ति मिलती है।

सन्दिग्ध व्रत-पर्व-व्यवस्था (सं. 2066 वि.)

लेखक- प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), पंचकूला-134 109

(यदि इस स्तम्भ में चर्चित या अन्य किसी व्रत-पर्व की तिथि के बारे में किसी को सन्देह/शंका हो तो पत्र देकर मुझसे स्पष्टीकरण मांग लेना चाहिए, - प्रियव्रत शर्मा)
(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

(1) श्री(लक्ष्मी)पंचमी

चतुर्थीविद्धा चैत्र शुक्ल पंचमी को यह व्रत किया जाता है। धर्मशास्त्र का निर्णय है कि-स्कन्दव्रत के अतिरिक्त सभी व्रतों में पंचमी चतुर्थीविद्धा ली जाए। इस बारे पुरुषार्थचिन्तामणि का वाक्य है- " सा (पंचमी) च स्कन्दोपवासातिरिक्तोपवासे पूर्व(चतुर्थी)विद्धा ग्राह्या।।"

इसवर्ष 30 मार्च, 2009 ई. को पंचमी चतुर्थीविद्धा है; अतः यह व्रत इसी दिन होगा।

(2) स्कन्द षष्ठी

पंचमीविद्धा चैत्र शुक्ल षष्ठी को यह व्रत किया जाता है, क्योंकि 31 मार्च, 2009 ई. को षष्ठी पंचमीविद्धा है, अतः यह व्रत इसी दिन किया जाएगा।

(3) श्रीजानकी जयन्ती

मध्याह्नव्यापिनी वैशाख शुक्ल नवमी को यह व्रत करने का शास्त्र-निर्देश है। यदि दोनों दिन नवमी मध्याह्नव्यापिनी हो तो इसे युग्मवाक्यानुसार पहले दिन मनाया जाता है। इस वर्ष नवमी दो दिन 2 और 3 मई को मध्याह्नव्यापिनी है, अतः युग्मवाक्य को ध्यान में रखते हुए यह व्रत 2 मई, 2009 ई. को होगा।

(4) ऋक् उपाकर्म

'ऋक् उपाकर्म' का मुख्यकाल 'श्रवण नक्षत्र' है। श्रवण 5 और 6 अगस्त को दोनों दिन वर्तमान है, लेकिन पहले दिन उ.षा. से विद्ध श्रवण में यह वर्जित है और 'धनिष्ठा योग' इसके लिए प्रशस्त्याधायक है। स्पष्ट है- 6 अगस्त को त्रिमुहूर्ताधिक श्रवण में जहां धनिष्ठा का योग भी है, इस 'उपाकर्म' को किया जाए, अर्थात् ऋग्वेदी लोग इसवर्ष अपना उपाकर्म 6 अगस्त, 2009 ई. को करेंगे।

(5) रक्षाबन्धन

रक्षाबन्धन श्रावण शुक्ल पूर्णिमा के दिन भद्रारहित काल में अपराह्ण के समय किया जाता है। भद्रा में इसका निषेध है। इस वर्ष 5 अगस्त को पूर्णिमा सूर्योदय से परवर्ती सूर्योदय पर्यन्त षष्टिघट्यात्मका है, यानी यहां पूर्णिमा की वृद्धि है। 5 अगस्त को 17 घं. 11 मि. (भा.स्टैं. टा.) तक भद्रा रहेगी, जिससे स्पष्ट है- इस दिन पूर्ण अपराह्ण भद्रादोष से दूषित है। दूसरे दिन (6 अगस्त को) पूर्णिमा त्रिमुहूर्त्तन्यूना है। इस स्थिति में पहले दिन (5 अगस्त, 2009 ई. को) ही प्रदोष के उत्तरार्ध में रक्षाबन्धन होगा। यहां 'पुरुषार्थ चिन्तामणि' का वचन है-

" यदा तूत्तरत्र मुहूर्त्तद्वय (त्रय) मध्ये किञ्चिन्न्यूना पौर्णमासी, तदापराह्णे सर्वथा तदभावात्, प्रदोष-पश्चिमयामौ दिनवत् कर्म चाचरेत्, इति पराशरात् भद्रान्ते प्रदोषयामेऽनुष्ठानम्।"

(6) गौरी तृतीया

चैत्र, भाद्र. और माघ शुक्ल तृतीया में यह व्रत होता है। चतुर्थीयुता तृतीया में इसे करने का निर्देश है। दूसरे दिन यदि तृतीया एक मुहूर्त्तमात्र भी है तो इसे दूसरे दिन, अन्यथा (इससे न्यून होने पर) पहले दिन किया जाए- यह शास्त्रादेश है-

'चैत्र-भाद्रपद-माघ-शुक्लतुतीयासु गौरीव्रतं विहितम्, तत्र मुहूर्त्तमात्राप्युत्तरैव।"- (*पुरुषार्थचिन्तामणि*)

इस वर्ष भाद्र. शुक्ल तृतीया 23 अगस्त, 2009 ई. को एक मुहूर्त से भी अधिक है। अतः इसी दिन यह व्रत किया जाएगा।

(7) आश्विन कृष्ण दशमी/एकादशी के श्राद्ध

आश्विन कृष्ण पक्ष के श्राद्ध 'पार्वण' होते हैं, इन्हें अपराह्ण- व्यापिनी मृत्युतिथि के दिन मनाने का आदेश है।

इस वर्ष दशमी एवम् एकादशी– दोनों तिथियां 14 सितम्बर को ही अपराह्ण– व्यापिनी हैं। अतः स्पष्ट है– इस वर्ष दशमी एवं एकादशी– दोनों का महालय श्राद्ध 14 सितम्बर को ही होगा।

(8) गोवर्धन–पूजा

गोवर्धनपूजा, बलिपूजा और अन्नकूट एवं गोक्रीड़ा– ये चारों पर्व सामान्यतः कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा के दिन मनाए जाते हैं। शास्त्रोक्ति है कि– इन्हें उस दिन मनाया जाए, जिस दिन सायंकाल के समय चन्द्रदर्शन न हो। क्योंकि चन्द्रदर्शन वाले दिन इन्हें मनाना राजा, प्रजा और पशुओं के लिए शुभ नहीं माना जाता। लेकिन उस दिन सायं चन्द्रदर्शन होगा या नहीं– यह निर्णय करना गणित द्वारा भी कई बार कठिन होता है। धर्मशास्त्रियों ने इस समस्या का समाधान स्थूल चन्द्रदर्शन द्वारा किया है। इसके बारे **धर्मसिन्धुकार** ने भी लिखा है कि–यदि प्रतिपदा सूर्योदय के अनन्तर कम से कम 9 मुहूर्त्त पर्यन्त विद्यमान हो तो भले ही उस दिन सूक्ष्म चन्द्रदर्शन सायं हो जाए, लेकिन वहां स्थूल चन्द्रदर्शन का अभाव माना जाए और तदनुसार उपरोक्त ये पर्व इसी दिन मनाए जाएं। प्रतिपदा यदि 9 मुहूर्त्त से अल्प हो तो उस दिन भले ही सूक्ष्म चन्द्रदर्शन न हो, स्थूल चन्द्रदर्शन मानकर इन पर्वों को पहले दिन (अमायुता प्रतिपदा में) ही मनाया जाए।

इस वर्ष कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा 19 अक्तूबर, 2009 ई. को 9 मुहूर्त्त से न्यून है; अतः इस दिन स्थूल चन्द्रदर्शन मानकर पहले दिन यानी 18 अक्तूबर, 2009 ई. को ही, अमायुक्ता प्रतिपदा में ये पर्व मनाए जाएंगे। यहां यह ध्यान देने योग्य है कि– 19 अक्तूबर को वास्तविक चन्द्रदर्शन नहीं हुआ है, लेकिन स्थूल चन्द्रदर्शन–नियमानुसार यहां चन्द्रदर्शन मानते हुए पहले दिन ही ये पर्व लगाए गए हैं।

(9) मित्र सप्तमी

षष्ठीविद्धा मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी को यह पर्व मनाया जाता है।

इस वर्ष 23 नवम्बर, 2009 ई. को यह षष्ठीविद्धा है, अतः यह पर्व इसी दिन मनाया जाएगा।

आभार प्रदर्शन

हमारे परम सहयोगी मित्रवर ज्ञानी श्री करतार सिंह जी 'गढ'

(मालिक, कंवल फोटोस्टेट, चौक माता रानी, कुराली PH. 0160-2641274)

श्री करतार सिंह जी ज्ञानी, सन् 1992 ई. से हमारी 'शिरोमणि तिथपत्रिका' (पंजाबी) और 'श्री मार्त्तण्ड आलम जन्त्री' (उर्दू) के अनुवाद, पाण्डुलिपि–लेखन, प्रूफरीडिंग आदि का श्रमसाध्य पूरा कार्य अत्यन्त आत्मीयभाव, तन्मयता, परिश्रम तथा निःस्वार्थभाव से करते चले आ रहे हैं; जिससे ये दोनों प्रकाशन प्रतिवर्ष उत्तरोत्तर समृद्ध कलेवर में हमारे पाठकों को उपलब्ध होने लगे हैं। अब तक श्रीमार्त्तण्डपंचांग (हिन्दी) की ही संस्कार–समृद्धि की ओर हमारा अधिक झुकाव रहा । अतः एव ज्योतिष से सम्बद्ध विशेश लेखमाला तथा अन्य ज्ञानवर्धक स्तम्भ हम इसी (हिन्दी) पंचांग में प्रकाशित करते रहे हैं। उर्दू एवम् पंजाबी की इन जन्त्रियों में ऐसे लेख एवम् स्तम्भों को समाविष्ट करने से, हम अनुवाद आदि के लिए समय की कमी के कारण, आज तक कतराते रहे हैं । लेकिन अब प्रियमित्र ज्ञानी करतार सिंह जी की हमसे निःस्वार्थ घनिष्ठता एवम् उर्दू–पंजाबी भाषाओं में इनकी प्रशंस्य दक्षता के कारण इन दोनों प्रकाशनों को भी हम ऐसे लेख–स्तम्भों से श्री मार्त्तण्डपंचांग की ही भान्ति अलंकृत करने में अपने आप को समर्थ पा रहे हैं। विगत कुछ वर्षों से दिए जा रहे नए–नए आकर्षक, ज्ञानवर्धक विषयों से वर्धमान कलेवर वाली 'शिरोमणि तिथपत्रिका' का श्रेय आपको ही है। इन उर्दू–पंजाबी जन्त्रियों के अनुवाद आदि के भारी उत्तरदायित्त्व को पूरी तरह निभाते हुए आप जेसै–तैसे समय निकालकर हिन्दी के श्रीमार्त्तण्डपंचांग की प्रूफ–रीडिंग आदि में भी हाथ बंटाने में हर्ष अनुभव करते हैं। अपने प्रति इस निःस्वार्थ सौहार्दातिशय के लिए हम सभी हृदय से ज्ञानी जी के ऋणी है । आप अपने व्यस्त जीवन के क्षणों में भी हमारे लिए प्रचुर पर्याप्त समय सहर्ष निकाल लेते हैं। आपके इस सौहार्दभरे स्पृहणीय सहयोग से हमारा प्रकाशन–कार्यभार काफी कुछ हल्का हुआ है। एतदर्थ हम आपके प्रति विनम्रतापूर्वक आभार प्रकट किए बिना सचमुच नहीं रह सकते।

आपका सहयोग भी हमारे लिए कम महत्त्वपूर्ण नहीं है

श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय कुराली के प्रबन्धक, हमारे पूज्य पिताजी के प्रियशिष्य, हमारे अनुजकल्प *चि. प्रेमचन्द्र शर्मा;* चि. *श्रीकृष्णशर्मा,* M.A. (संस्कृत), वेदाचार्य, साहित्याचार्य, *चि. दिलबाग शर्मा* सुपुत्र श्री रामचन्द शर्मा, ग्राम एवं डा. सिनन्द (कैथल–हरि.) तथा नालाबलोग (पंचकूला) के निवासी *चि. सुरेशानन्द शर्मा,* बी.ए., सुपत्र श्री सुन्दरराम शर्मा भी 'श्रीमार्त्तण्डपंचांग' (हिन्दी) की पाण्डुलिपि लेखन, प्रूफरीडिंग आदि का काम बड़ी तत्परता, सावधानी, अपनापन और आदरभाव से करते हैं। इस पंचांग के प्रकाशनकार्य का हमारा भार इन युवाओं के स्वत्व भरे उत्साहपूर्ण सहयोग से हल्का हुआ है। एतदर्थ इनके निरन्तर प्रगतिमय, परमोज्जवल भविष्य के लिए हमारा इन्हें सस्नेह–आशीर्वाद है।

सम्पादक–मण्डल

श्री वि. सं. २०६६ शाक १९३१ चैत्र शुक्ल पक्ष १ | तारीखें | चण्डीगढ | सायं सूर्य | (२७ मार्च से ९ अप्रैल तक, सन् २००९ ई.)

श्री वि. सं. २०६६, शाक १९३१, चैत्र शुक्ल पक्ष १

(२७ मार्च से ९ अप्रैल तक, सन् २००९ ई.) उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त ऋतु।

बु. अस्त है। २८ मार्च से शु. पूर्व में दिखाई देने लगेगा। प्रातः मं. पूर्व में, गु. पूर्व कपाल में तथा श. सायं पूर्व कपाल में होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र. (चैत्र)	अं. (मार्च)	श. (चैत्र)	मु. (र.उ.ल)	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३०	३१	१	शु	३५	३२	रेव.	५७	३	ब्र.	१५	३६	किं.	६	४७	१४	२७	६	२९	मेष	५७	३	६	२२	१८	३४	११	१२	२८	१०	पंचक समाप्त ५७/०३, चान्द्र संवत्सर २०६६ वि.(A)
३०	३६	२	श.	३१	५९	अश्वि.	५४	५५	ऐं.	१०	१२	बा.	३	४५	१५	२८	७	३०	मेष			६	२०	१८	३५	११	१३	२७	३४	चन्द्र दर्शन, मु. ३०, शुक्र पूर्व में उदित ३७/४५, चन्द्रव्रत,
३०	४१	३	र.	२७	३८	भर.	५२	७	वै.	४	५	ग.	२७	३८	१६	२९	८	३१	मेष			६	१९	१८	३६	११	१४	२६	५६	भ.५५/०६ बाद, गौरी तृतीया (B)
									वि.	५७	२४																			
३०	४५	४	चं.	२२	४६	कृत्ति.	४८	५६	प्री.	५०	२९	वि.	२२	४६	१७	३०	९	२	वृष	६	२३	६	१८	१८	३६	११	१५	२६	१५	भ.२२/४६ तक, श्री(लक्ष्मी)पंचमी, (C)
३०	५०	५	मं.	१७	३७	रोहि.	४५	३३	आ.	४३	२४	बा.	१७	३७	१८	३१	१०	३	वृष			६	१७	१८	३७	११	१६	२५	३२	सूर्य रेव. में १२/४३ , बुध रेव. में ९/३७, (D)
३०	५५	६	बु.	१२	२२	मृग.	४२	८	सौ.	३६	१८	तै.	१२	२२	१९	अ.१	११	४	मिथुन	१३	५२	६	१६	१८	३७	११	१७	२४	४७	मंगल पू.भा. में ५८/४५, अप्रैल प्रारम्भ,
३०	५९	७	गु.	७	९	आर्द्रा	३८	४८	शो.	२९	१६	व.	७	९	२०	२	१२	५	मिथुन			६	१४	१८	३८	११	१८	२३	५९	भ.७/०६ से ३४/३६ तक, अशोकाष्टमी, श्रीदुर्गाष्टमी,
३१	४	८	शु.	१	५९	पुन.	३५	३७	अ.	२२	२०	ब	१	५९	२१	३	१३	६	कर्क	२१	२५	६	१३	१८	३९	११	१९	२३	९	श्रीरामनवमी, नवरात्र समाप्त,
अवम		९	शु.	५७	३	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	नवमी तिथिक्षय,
३१	९	१०	श.	५२	२०	पुष्य	३२	३९	सु.	१५	३५	तै.	२४	४१	२२	४	१४	७	कर्क			६	१२	१८	३९	११	२०	२२	१७	प्लूटो वक्री ४२/०७,
[illegible]	[illegible]	११	र.	४७	५५	आश्ले.	२९	५६	धृ.	९	१	व.	२०	७	२३	५	१५	८	सिंह	२९	५६	६	११	१८	४०	११	२१	२१	२२	भ.२०/०७ से ४७/५५ तक, कामदा एकादशी व्रत(स.),
[illegible]	[illegible]	१२	च.	४२	५३	मघा	२७	३५	शू.	२	४०	ब.	१५	५४	२४	६	१६	९	सिंह			६	१०	१८	४१	११	२२	२०	२५	बुध अश्वि. मेष में ३८/०४, यूरेनस पू.भा. ४ (E)
									गं.	५६	४३																			
[illegible]	[illegible]	१३	मं.	४०	२४	पू.फा.	२५	४३	वृ.	५१	१४	कौ.	१२	८	२५	७	१७	१०	कन्या	४०	२०	६	८	१८	४१	११	२३	१९	२६	अनंग त्रयोदशी, श्रीमहावीर जयन्ती(जैन), भौम प्रदोष व्रत,
[illegible]	[illegible]	१४	बु.	३७	३८	उ.फा.	२४	३२	ध्रु.	४६	२२	ग.	९	१	२६	८	१८	११	कन्या			६	७	१८	४२	११	२४	१८	२५	भ. ३७/३७ बाद,
[illegible]	[illegible]	१५	गु.	३५	४९	हस्त	२४	१३	व्या.	४२	१७	वि.	६	४३	२७	९	१९	१२	तुला	५४	२६	६	६	१८	४२	११	२५	१७	२१	भ. ६/४३ तक, गुरु धनि. २ में ३५/२५, चैत्री (F)

शुक्र पूर्व में उदित २८मार्च

शुभकृद् सम्वत्सर

(A) प्रारम्भ, [illegible]श्रवण, तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण, वासन्त नवरात्र प्रारम्भ, (B) (गणगौर), आन्दोलन तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती, रबि-उस्सानी मु. प्रा., (C) (देखें पृ. 93), हयव्रत, (D)शुक्रबाल्य [illegible] ३७/५२, नागपंचमी, स्कन्द षष्ठी (देखें पृष्ठ 93), (E) मीन में ४३/५७, (F) पूर्णिमा, वैशाखस्नान प्रा., श्रीहनुमान् जयन्ती (द. भारत), श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५घं.३०मि. (I.S.T.), ३ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]	२	१०	११	९	११	४	९	३
[illegible]	[illegible]	२०	[illegible]	२४	९	२२	१२	१२
[illegible]	[illegible]	२६	२५	२९	३२	२६	५	५
[illegible]	[illegible]	२२	[illegible]	०	४१	५२	५०	५०
[illegible]	[illegible]	४६	१२२	११	३२	३	३	३
[illegible]	[illegible]	५३	३	९	१२	५७	११	११
		मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (३ अप्रै.)

१ | ११ मं. | शु. बु. | गु. | २ | १२ सू. | रा.१० | ३ चं. | ९ | के.४ | ६ | ८ | ५ श. | ७

लोक भविष्यः- इस संवत् का राजा शुक्र एवं मन्त्री चन्द्र है। चन्द्र-शुक्र परस्पर सम-शत्रु है। केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल एवं मन्त्रिमण्डल के घटकदलों में सामञ्जस्य नहीं बनेगा। चैत्र चान्द्रमास में पांच गुरुवार हैं। पश्चिमी देशों में युद्धज्वाला से वातावरण अशान्त रहेगा, मुस्लिमराष्ट्रों में विशेषरूप से अशान्ति किंवा हत्याकाण्ड होंगे-"यत्र मासे पञ्चवारा जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्ग-युद्धं च जायते।।" संवत्-आरम्भ शुक्रास्त में होने से एवं शनि-मंगल का समसप्तकयोग इसवर्ष कुछ प्रतिष्ठित व्यक्तियों के उग्रवादियों का शिकार बन जाने का संकेत देता है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में रुई, सूत, चान्दी, चावल, सरसों, एरण्ड, मूंगफली, लहसुन, सब्जी आदि तेज हों। ३१ मार्च के लगभग लालचन्दन, केसर आदि लाल वस्तुओं में तेजी एवम् घी, तिल, तेल, सरसों, चान्दी आदि मन्दे रहें। ६ अप्रैल के लगभग गेहूं, ज्वार, बाजरा आदि तेज; शक्कर, सरसों, तिल, सोना, चान्दी, तैल आदि मन्दे। ९ अप्रैल के लगभग गेहूं, चावल, उड़द, मूंग, ज्वार, सोना, चान्दी आदि मन्दे रहें। आकाश लक्षणः- मार्च २८, ३१; अप्रैल ६, ९ को भारत के उत्तर-पश्चिमी भागों में रुक-रुक कर खण्डवृष्टि हो। भूटान, सिक्किम, बंगलादेश और हि.प्र. में भी खण्डवृष्टि के योग हैं।" चैत्रस्य शुक्ल पंचम्यां वायुर्दक्षिणपूर्वयोः वृष्ट्या सह तदा वर्षे धान्ये त्रिगुणता भवेत्।।"

कुण्डली सूर्योदय (९ अप्रै.)

१ बु. | ११ मं. | गु. | २ | १२ सू. शु. | रा.१० | ३ | ९ | के.४ | चं. ६ | ८ | ५ श. | ७

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५घं.३०मि. (I.S.T.), ९ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	१०	०	९	११	४	९	३
२५	१७	२५	४	२६	६	२२	११	११
१७	३६	२७	४७	३३	४७	७	४६	४६
२१	३६	२०	५२	३५	१२	१०	४५	४५
५८	७६६	४६	१२१	१०	२०	३	३	३
५४	४३	४७	२०	२५	१४	३३	११	११
		मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रेव. ३	हस्त ३	पू.भा. २	अश्वि. २	धनि. १	उ.भा. २	पू.फा. ३	श्रव. १	पुष्य ३

श्री वि. सं. २०६६, शाक १६३१, वैशाख कृष्ण पक्ष २

(१० से २५ अप्रैल तक, सन् २००९ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त–ग्रीष्म ऋतु।

१२ अप्रै. से बु. सायं पश्चिम में दिखाई देने लगेगा। इस समय श. याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में होगा। प्रातः शु. मं. पूर्व क्षितिज से ऊपर परस्पर काफी आसन्न तथा गु. पूर्व कपाल में दिखाई देगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. चैत्र	अं. अप्रैल	श. चैत्र	मु. र.उस्सा.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३१	३६	१	शु.	३५	११	चित्रा	२५	१	ह.	३९	१०	बा.	५	३०	२८	१०	२०	१३	तुला			६	५	१८	४३	११	२६	१६	१६	गुड फ्राईडे,
३१	४०	२	श.	३५	५६	स्वा.	२७	९	व.	३७	८	तै.	५	३३	२९	११	२१	१४	तुला			६	४	१८	४४	११	२७	१५	९	
३१	४५	३	र.	३८	१२	विशा.	३०	४४	सि.	३६	१७	व.	७	४	३०	१२	२२	१५	वृश्चि.	१४	४३	६	२	१८	४४	११	२८	१३	५९	भ. ७/०४ से ३८/१२ तक, बुध पश्चिम में उदित(A)
३१	४९	४	चं.	४१	५७	अनु.	३५	४७	व्य.	३६	३६	ब.	१०	४	वै.१	१३	२३	१६	वृश्चि.			६	१	१८	४५	११	२९	१२	४८	सं. सूर्य अश्वि. मेष में ४६/५४, मु. १५, (B)
३१	५४	५	मं.	४७	४	ज्ये.	४२	९	व.	३७	५८	कौ.	१४	३०	२	१४	२४	१७	धनु	४२	९	६	०	१८	४६	०	०	११	३५	मंगल मीन में ४८/४६,
३१	५८	६	बु.	५३	८	मूल	४९	२८	प.	४०	६	ग.	२०	६	३	१५	२५	१८	धनु			५	५९	१८	४६	०	१	१०	२०	भ.५३/०७ बाद,
३२	२	७	गु.	५९	३९	पू.षा.	५७	१४	शि.	४२	४०	वि.	२६	२३	४	१६	२६	१९	धनु			५	५८	१८	४७	०	२	९	३	भ. २६/२३ तक,
३२	७	८	शु.	६०	०	उ.षा.	६०	०	सि.	४५	१२	बा.	३२	४९	५	१७	२७	२०	मकर	१४	१४	५	५७	१८	४८	०	३	७	४४	शुक्र मार्गी ४७/२२,
३२	११	८	श.	५	५९	उ.षा.	४	५२	सा.	४७	१३	कौ.	५	५९	६	१८	२८	२१	मकर			५	५६	१८	४८	०	४	६	२४	
३२	१५	९	र.	११	२३	श्रव.	११	३७	शु.	४८	१७	ग.	११	२३	७	१९	२९	२२	कुम्भ	४४	३०	५	५५	१८	४९	०	५	५	३	भ.४३/१९ बाद, पंचक प्रारम्भ ४४/३०, मंगल (C)
३२	२०	१०	चं.	१५	२०	धनि.	१६	५९	शु.	४८	५	वि.	१५	२०	८	२०	३०	२३	कुम्भ			५	५४	१८	४९	०	६	३	३९	भ. १५/२० तक,
३२	२४	११	मं.	१७	२९	शत.	२०	३६	ब्र.	४६	२३	बा.	१७	२९	९	२१	वै.१	२४	कुम्भ			५	५३	१८	५०	०	७	२	१४	बुध कृत्ति. में २२/५२, शक वैशाख प्रा., (D)
३२	२८	१२	बु.	१७	४०	पू.भा.	२२	१९	ऐं.	४३	१०	तै.	१७	४०	१०	२२	२	२५	मीन	७	४	५	५१	१८	५१	०	८	०	४८	प्रदोष व्रत,
३२	३२	१३	गु.	१५	५७	उ.भा.	२२	१०	वै.	३८	२९	व.	१५	५७	११	२३	३	२६	मीन			५	५०	१८	५१	०	८	५९	१९	भ. १५/५७ से ४४/१३ तक, बुध वृष में ५९/५२,
३२	३७	१४	शु.	१२	३०	रेव.	२०	२१	वि.	३२	३०	श.	१२	३०	१२	२४	४	२७	मेष	२०	२१	५	४९	१८	५२	०	९	५७	४९	पंचक समाप्त २०/२१,
३२	४१	३०	श.	७	४०	अश्वि.	१७	१२	प्री.	२५	३०	ना.	७	४०	१३	२५	५	२८	मेष			५	४८	१८	५३	०	१०	५६	१६	शनैश्चरी अमा,

(A) ४७/५१, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, (B) पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, बुध भर. में १८/४२ , वैशाखी (पं.), (C) उ.भा. में ६/२०, सूर्य सायन वृष में ५५/४७ , ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ, (D) श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती, वरुथिनी एकादशी व्रत (स.), अगस्त्य अस्त,

ग्रहस्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १८ अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	११	०	९	११	४	९	३
४	८	२	२१	२८	५	२१	११	११
६	४६	२७	३४	३	१२	३८	१८	१८
२४	२१	३६	२६	२२	३५	५	६	६
५८	७७७	४६	६५	९	१	२	३	३
३८	५३	३७	१७	२४	३६	४६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अश्वि.२	[illegible] ४	[illegible] ४	[illegible] ३	[illegible] २	[illegible] १	[illegible] ३	[illegible] १	[illegible] ३

कुण्डली सूर्योदय (१८ अप्रै.)

२ | मं.शु.१२ | ३ | सू.१ बु. | ११ | के.४ | १० चं.गु.रा. | ५ श. | ७ | ९ | ६ | ८

लोकभविष्य:- शनि-मंगल का समसप्तक एवं षडष्टकयोग राष्ट्र में कहीं धार्मिक उन्मादजन्य अशान्ति, कहीं उग्रवादजन्य विस्फोट से जनधनहानि का संकेत देता है। पाकिस्तान आदि मुस्लिम देशों में कहीं भारी अशान्ति एवं प्रधान नेता के लिए समय अग्निपरीक्षा का रहेगा। वैशाख कृष्ण चतुर्दशी को शुक्रवार है, अतः धन-धान्यसमृद्धि रहे-" वैशाखस्य चतुर्दश्यां वारौ चेद् गुरु-भार्गवौ। तदा निष्पद्यते धान्यं विपुलं पृथिवीतले।।" वैशाख कृष्ण पक्ष में शनैश्चरी अमावस होने से कहीं, अप्रैल २४, २५ को प्राकृतिक-प्रकोप से भारी हानि के योग भी बनते हैं।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ मेंअलसी, तिल, तेल, सरसों, सोना, चान्दी, सूत, कपड़ा, शक्कर एवं सब प्रकार के फल तेज हों। तृण, काष्ठ व लकड़ी से निर्मित वस्तुओं में तेजी; चौपाए पशु भी तेज रहें। १७ अप्रैल के लगभग रुई, सरसों मन्दी; सोना, चान्दी आदि तेज रहें। १९ अप्रैल के लगभग सुगन्धित पदार्थ तेज हों। २१ अप्रै. के लगभग अफीम में खास घटाबढ़ी होकर मन्दी हो। प्रायः सभी वस्तुओं में घटाबढ़ी चले।

आकस्मिक लक्षण:- अप्रैल १२, १३, १४, १७, १९, २१, २३ को राजस्थान, हि.प्र. आदि में कहीं बादलचाल, कहीं आन्धी-तूफान एवं मेघगर्जन के [illegible]

कुण्डली सूर्योदय (२५ अप्रै.)

बु.२ | मं.शु.१२ | ३ | सू.१ चं. | ११ | के.४ | १० गु.रा. | ५ श. | ७ | ९ | ६ | ८

ग्रहस्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २५ अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	०	११	१	९	११	४	९	३
१०	९	७	१	२९	६	२१	१०	१०
५६	५	५३	६	६	११	२०	५५	५५
१६	४	२१	४१	३८	७	१२	५३	५३
५८	८५५	४६	६२	८	१६	२	३	३
२६	५७	२५	२६	३१	४५	११	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible] ४	[illegible] ३	[illegible] २	[illegible] २	[illegible] २	[illegible] १	[illegible] ३	[illegible] १	[illegible] ३

श्री वि. सं. २०६६, शाक १९३१, वैशाख शुक्ल पक्ष २ | तारीखें | चन्द्रराशि - | चण्डीगढ़ | स्पष्ट सूर्य (२६ अप्रैल से ९ मई तक, सन् २००९ ई.) उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

श्री वि. सं. २०६६, शाक १९३१, वैशाख शुक्ल पक्ष ३

(२६ अप्रैल से ९ मई तक, सन् २००९ ई.) उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

पक्षान्त तक बु. पश्चिम में दिखाई देना बन्द हो जाएगा। सायं श. को याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में देखें। प्रातः मं. पूर्व क्षितिज से ऊपर तथा इसके ऊपर शु. होगा। इस समय गु. पूर्व कपाल में याम्योत्तरवृत्त की ओर बढ़ता दिखाई देगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
															वैशाख	अप्रैल	वैशाख	र.उस्सा.												
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३२	४५	१	र.	१	४४	भर.	१३	५	आ.	१७	४५	ब.	१	४४	१४	२६	६	२९	वृष	२६	५५	५	४७	१८	५३	०	११	५४	४३	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, श्रीशिवाजी जयन्ती,
अवम		२	र.	५५	१२	००	०	०	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया तिथिक्षय,
३२	४९	३	चं.	४८	२२	कृत्ति.	८	२३	सौ.	९	३३	तै.	२१	४७	१५	२७	७	ज.१	वृष			५	४६	१८	५४	०	१२	५३	७	सूर्य भर. में २६/५७, श्रीपरशुराम जयन्ती, अक्षयतृतीया,(A)
३२	५३	४	मं.	४१	३४	रोहि.	३	२७	शो.	१	९	व.	१४	५८	१६	२८	८	२	मिथुन	३१	१	५	४५	१८	५५	०	१३	५१	२९	भ.१४/५८ से ४१/३४ तक,
						मृग.	५८	३९	अ.	५२	५३																			
३२	५७	५	बु.	३५	३	आर्द्रा	५४	१५	सु.	४४	५४	ब.	८	१९	१७	२९	९	३	मिथुन			५	४५	१८	५५	०	१४	४९	५०	आद्य जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती, श्रीरामानुजाचार्य(B)
३३	१	६	गु.	२९	४	पुन.	५०	२४	धृ.	३७	२२	कौ.	२	४	१८	३०	१०	४	कर्क	३६	१९	५	४४	१८	५६	०	१५	४८	८	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती (उ.भा.),
३३	५	७	शु.	२३	४३	पुष्य	४७	१५	शू.	३०	२३	व.	२३	४३	१९	म.१	११	५	कर्क			५	४३	१८	५७	०	१६	४६	२४	भ.२३/४३ से ५१/२२ तक, गुरु धनि. ३ कुम्भ में (C)
३३	९	८	श.	१९	७	आश्ले.	४४	५०	गं.	२४	०	ब.	१९	७	२०	२	१२	६	सिंह	४४	५०	५	४२	१८	५७	०	१७	४४	३७	श्रीजानकी जयन्ती (देखें पृष्ठ 93),
३३	१३	९	र.	१५	१५	मघा	४३	१२	वृ.	१८	१५	कौ.	१५	१५	२१	३	१३	७	सिंह			५	४१	१८	५८	०	१८	४२	५०	
३३	१७	१०	चं.	१२	११	पू.फा.	४२	२०	ध्रु.	१३	७	ग.	१२	११	२२	४	१४	८	कन्या	५७	१३	५	४०	१८	५९	०	१९	४१	०	भ. ४१/०० बाद,
३३	२०	११	मं.	९	५४	उ.फा.	४२	१५	व्या.	८	३७	वि.	९	५४	२३	५	१५	९	कन्या			५	३९	१८	५९	०	२०	३९	८	भ. ९/५४ तक, मोहिनी एकादशी व्रत (स.),
३३	२४	१२	बु.	८	२६	हस्त	४३	२	ह.	४	४८	बा.	८	२६	२४	६	१६	१०	कन्या			५	३८	१९	०	०	२१	३७	१४	मंगल रेवती में २३/००, प्रदोष व्रत,
३३	२८	१३	गु.	७	५२	चित्रा	४४	४४	व.	१	३८	तै.	७	५२	२५	७	१७	११	तुला	१३	४६	५	३८	१९	१	०	२२	३५	१८	बुध वक्री १२/१०, श्रीनृसिंह जयन्ती,
									सि.	५९	१८																			
३३	३१	१४	शु.	८	१७	स्वा.	४७	२८	व्य.	५७	४८	व.	८	१७	२६	८	१८	१२	तुला			५	३७	१९	१	०	२३	३३	२०	भ. ८/१७ से ३६/०० तक, बुध पश्चिम में अस्त (D)
३३	३५	१५	श.	९	४८	विशा.	५१	२०	व.	५७	१४	ब.	९	४८	२७	९	१९	१३	वृश्चि.	३५	१६	५	३६	१९	२	०	२४	३१	२०	वैशाखी पूर्णिमा, श्रीबुद्ध पूर्णिमा, श्रीबुद्ध जयन्ती, (E)

(A) जमद-उल-अव्वल मु. प्रा., (B) जयन्ती (द.भा.), (C) ३२/१६, श्रीगंगा जन्म, मई प्रारम्भ, (D) ३७/१२, श्रीकूर्म जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत, (E) वैशाख स्नान समाप्त, जन्मदिन श्रीरवीन्द्रनाथ टैगोर,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.), २ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	११	१	१०	११	४	९	३
१७	१६	१३	६	०	८	२१	१०	१०
४४	३०	१७	३३	३	४६	६	३३	३३
३७	४३	३५	१५	२८	१६	५८	३८	३८
५८	८३१	४६	२५	७	२८	१	३	३
१२	२७	११	०६	३४	४८	३०	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भर. २	आश्ले. १	उ.भा. ३	कृत्ति. ३	धनि. ३	उ.भा. २	पू.फा. ३	श्रव. १	पुष्य ३

कुण्डली सूर्योदय (२ मई)

बु. २ | मं. शु.१२
३ | १ सू. | ११ गु.
चं. ४ के. | १० रा.
५ श. | ७ | ९
६ | ८

लोक भविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच शुक्रवार एवं पांच शनिवार हैं। अतः मिला-जुला फल होगा। प्रजा में सुख-समृद्धि, सुभिक्ष रहे। शनि मुस्लिम वर्ष का राजा भी है, अतः पूर्व एवं उत्तर दिशा के मध्यवर्ती (ईशानकोण-स्थित) देशों में भारी अशान्ति, हत्याकाण्ड एवं मुस्लिम राष्ट्रों में सत्ता-परिवर्तन, उग्रवादजन्य विस्फोट, अशान्ति किंवा अग्निकाण्ड से जनधनहानि के योग हैं। कहीं प्राकृतिक प्रकोप से भयंकर हानि भी संभव है- " शनेश्च पंचकं दृष्ट्वा पाताले कम्पते फणी। ईशानदेशभंगश्च वह्निदाहो महर्घता।" जनता में मंहगाई से अशान्ति भी हो।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में सोना, चान्दी, ताम्बा आदि तेज हों। घृत आदि पदार्थ भी तेज रहें। १ मई के करीब गेहूं, चावल, जौ, चना में मन्दी और रुई में घटाबढ़ी चले। ७ मई के करीब गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज; गेहूं, जौ आदि मन्दे रहें। चान्दी तेज; हैसियन और शेयरों में मन्दी हो।

आकाश-लक्षणः- अप्रैल २७, मई १, ६, ७, ८ को भूटान, सिक्किम, आसाम, बिहार में कहीं बादलचाल व खण्डवृष्टि हो। पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, राजस्थान आदि में तापमान ऊंचा रहे एवं आन्धी आदि से वृक्षों को हानि हो।

कुण्डली सूर्योदय (९ मई)

बु. २ | मं. शु.१२
३ | १ सू. | ११ गु.
४ के. | १० रा.
५ श. | चं. ७ | ९
६ | ८

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.), ९ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	११	१	१०	११	४	९	३
२४	२२	१८	७	०	१२	२०	१०	१०
३१	३४	४०	३७	५३	३७	५८	११	११
२०	३३	४	०	२२	११	३६	२३	२३
५७	७४९	४५	११	६	३८	०	३	३
५९	४३	५६	११	३२	७	४७	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भर. ४	विशा. १	रेव. १	कृत्ति. ४	धनि. ३	उ.भा. ३	पू.फा. ३	श्रव. १	पुष्य ३

श्री वि.सं. २०६६, शाक १९३१, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ४

(१० से २४ मई तक, सन् २००९ ई.)
उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु।

बु. अस्त है। सायं श. याम्योत्तरवृत्तासन्न दिखाई देगा। प्रातः पूर्व क्षितिज से ऊपर मं. और इससे ऊपर शु. दिखाई देगा। गु. याम्योत्तरवृत्त से कुछ पूर्व में होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. वैशाख	अं. मई	श. वैशाख	मु.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३३	३८	१	र.	१२	३०	अनु.	५६	२३	प.	५७	३६	कौ.	१२	३०	२८	१०	२०	१४	वृश्चि.			५	३५	१९	३	०	२५	२९	२०	
३३	४२	२	चं.	१६	२५	ज्ये.	६०	०	शि.	५८	५१	ग.	१६	२५	२९	११	२१	१५	वृश्चि.			५	३५	१९	३	०	२६	२७	१८	भ. ४८/५५ बाद, सूर्य कृत्ति. में १२/५८,
३३	४५	३	मं.	२१	२७	ज्ये.	२	३३	सि.	६०	०	वि.	२१	२७	३०	१२	२२	१६	धनु	२	३३	५	३४	१९	४	०	२७	२५	१४	भ.२१/२७ तक, राहु उ.षा. ४, केतु पुष्य २ में (A)
३३	४९	४	बु.	२७	२३	मूल	९	४१	सि.	०	५३	बा.	२७	२३	३१	१३	२३	१७	धनु			५	३३	१९	५	०	२८	२३	८	
३३	५२	५	गु.	३३	५०	पू.षा.	१७	२४	सा.	३	२६	कौ.	०	३६	ज्ये१	१४	२४	१८	मकर	३४	२४	५	३३	१९	५	०	२९	२१	२	सं. सूर्य वृष में ४०/१८, मु. ४५, पुण्यकाल (B)
३३	५५	६	शु.	४०	१६	उ.षा.	२५	१४	शु.	६	१२	ग.	७	३	२	१५	२५	१९	मकर			५	३२	१९	६	१	०	१८	५४	भ.४०/१६ बाद,
३३	५८	७	श.	४६	४	श्रव.	३२	३६	शु.	८	४२	वि.	१३	१०	३	१६	२६	२०	मकर			५	३१	१९	७	१	१	१६	४४	भ.१३/१० तक,
३४	१	८	र.	५०	३८	धनि.	३८	५४	ब्र.	१०	३१	बा.	१८	२१	४	१७	२७	२१	कुम्भ	५	५६	५	३१	१९	७	१	२	१४	३३	पंचक प्रारम्भ ५/५६, शनि मार्गी ५/१५,
३४	४	९	चं.	५३	२९	शत.	४३	३७	ऐं.	११	१४	तै.	२२	३	५	१८	२८	२२	कुम्भ			५	३०	१९	८	१	३	१२	२२	
३४	७	१०	मं.	५४	१९	पू.भा.	४६	२५	वै.	१०	३३	व.	२३	५४	६	१९	२९	२३	मीन	३०	५६	५	३०	१९	८	१	४	१०	१०	भ.२३/५४ से ५४/१९ तक,
३४	१०	११	बु.	५३	२	उ.भा.	४७	९	वि.	८	१५	ब.	२३	४०	७	२०	३०	२४	मीन			५	२९	१९	९	१	५	७	५६	सूर्य सायन मिथुन में ५४/४०, अपरा एकादशी व्रत (C)
३४	१३	१२	गु.	४९	४४	रेव.	४५	५२	प्री. आ.	४ ५८	१५ ४०	कौ.	२१	२३	८	२१	३१	२५	मेष	४५	५२	५	२८	१९	१०	१	६	५	४१	पंचक समाप्त ४५/५२,
३४	१६	१३	शु.	४४	३९	अश्वि.	४२	४८	सौ.	५१	४२	ग.	१७	११	९	२२	ज्ये१	२६	मेष			५	२८	१९	१०	१	७	३	२५	भ.४४/३९ बाद, शक ज्येष्ठ प्रा., प्रदोष व्रत.
३४	१९	१४	श.	३८	८	भर.	३८	१७	शो.	४३	३४	वि.	११	२३	१०	२३	२	२७	वृष	५१	५७	५	२८	१९	११	१	८	१	८	भ. ११/२३ तक , मंगल अश्वि. मेष में ५३/५२,
३४	२१	३०	र.	३०	३४	कृत्ति.	३२	४४	अ.	३४	३७	च.	४	२१	११	२४	३	२८	वृष			५	२७	१९	१२	१	८	५८	४८	वटसावित्री व्रत (अमापक्ष), भावुका अमा,

(A) ३४/ २७, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, (B) मध्याह्न बाद, शुक्र रेवती में ५७/००, (C) (स.), भद्रकाली एकादशी (पं.),

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १७ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	६	११	१	१०	११	४	६	३
२	२८	२४	४	१	१८	२०	६	६
१४	४८	४६	२५	४१	११	५५	४५	४५
३३	२	२२	३४	१५	३७	१२	५६	५६
५७	७३०	४५	३४	५	४६	०	३	३
४८	३	३७	३१	१५	५	२	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (१७ मई)

३ | १ | ४के. | २ सू. बु. | १२मं. शु. | ५ श. | गु. ११ | रा. | ६ चं. | ८ | १०

लोक भविष्यः- सूर्य वृष राशि में आकर वक्र शनि के साथ दशम-चतुर्थ सम्बन्ध बना रहा है। १६ मई तक नाना प्रकार के रोगों से जनता परेशान रहे- "कृष्णे ज्येष्ठे प्रतिपदि भौमार्क-बुधवासराः एवं भवेद्यदा योगो लोकानां व्याधि-पीड़नम्।।" इस चान्द्रमास में पांच रविवार होने से कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बने, कहीं किसी प्रधान नेता की मृत्यु व सत्ताहस्तान्तरण हो, उग्रवादजन्य अशान्ति व्याप्त रहे;- "यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पंच संततम्। दुर्भिक्षं छत्रभंगः स्यात्तदा तत्र महद्भयम्।।" मेष का मंगल एवं सिंहस्थ शनि कहीं समुद्री तूफान, यानदुर्घटना एवं प्राकृतिक आपदा का भी मई में संकेत देता है।

कुण्डली सूर्योदय (२४ मई)

३ | मं. १ | ४के. | २ सू. बु. चं. | १२ शु. | ५ श. | गु. ११ | रा. | ६ | ८ | १० | ७ | ९

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २४ मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	०	१	१०	११	४	६	३
८	१	०	०	२	२३	२०	६	६
५८	५६	४	३४	१४	५०	५७	२३	२३
४८	६	४१	५६	३०	२३	४०	४१	४१
५७	८८७	४५	२५	४	५१	०	३	३
४०	२०	१७	४१	४	१३	४७	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ग्रहचाल और बाजार का रुखः- पक्षारम्भ में घृत, रुई, सोना, चांदी, चना, लवणादि सर्वरस तेज हों। १४ मई के लगभग रुई, कपास, चान्दी, कपूर, खाण्ड, शक्कर तथा जवाहरात मन्दे हों। १९ मई के लगभग रुई मन्दी होकर तेज हो। २२ मई के लगभग ज्वार, बाजरा, चना, मूंग, गेहूं आदि मन्दे हों। रसादि पदार्थ तेज रहें।

आकाश-लक्षणः- मई ११, १२, १४, १७ एवं २३ को उत्तर भारत में गर्मी का जोर रहेगा। मुम्बई, गोआ, सूरत, सिक्किम, भूटान, शिलांग, आसाम, [illegible]

श्री वि.सं. २०६६, शाक १९३१, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ५ तारीखें चन्द्रराशि - चण्डीगढ़ स्पष्ट सूर्य (२५ मई से ७ जून तक, सन् २००९ ई.) 99
उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

श्री वि.सं. २०६६, शाक १९३१, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ५

(२५ मई से ७ जून तक, सन् २००९ ई.) उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

२७ मई से बुध प्रातः पूर्व में दिखाई देना शुरु हो जाएगा। प्रातः पूर्व कपाल में क्षितिज से ऊपर मं. एवम् शु. तथा गु. याम्योत्तरवृत्त में होगा। सायं श. याम्योत्तरवृत्त से कुछ पश्चिम की ओर हटा दिखाई देगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	तारीखें प्र. ज्येष्ठ	तारीखें अं. मई	तारीखें श. ज्येष्ठ	तारीखें मु. ज.उ.लं.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा. रा.	अं.	क.	वि.	
३४	२४	१	चं.	२२	२३	रोहि.	२६	३३	सु.	२५	११	ब.	२२	२३	१२	२५	४	२९	मिथुन	५३	२१	५	२७	१९	१२	१	९	५६	३०	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, सूर्य रोहि. में ३/४८, (A)
३४	२६	२	मं.	१४	०	मृग.	२०	१२	धृ.	१५	३५	कौ.	१४	०	१३	२६	५	ज.१	मिथुन			५	२६	१९	१३	१	१०	५४	८	रम्भा तृतीया, जमद-उस्सानी मु. प्रा.,
३४	२९	३	बु.	५	४७	आर्द्रा	१४	४	शू. गं.	६ ५७	८ ७	ग.	५	४७	१४	२७	६	२	कर्क	५४	४९	५	२६	१९	१३	१	११	५१	४६	भ.३१/५५ से ५८/०३ तक, बुध पूर्व में उदित (B)
अवम		४	बु.	५८	३	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय,
३४	३१	५	गु.	५१	९	पुन.	८	३१	वृ.	४८	४६	ब.	२४	३६	१५	२८	७	३	कर्क			५	२६	१९	१४	१	१२	४९	२२	
३४	३३	६	शु.	४५	१५	पुष्य	३	४७	ध्रु.	४१	१५	कौ.	१८	१२	१६	२९	८	४	कर्क			५	२५	१९	१५	१	१३	४६	५७	नेप्च्यून वक्री ११/३१, अरण्य षष्ठी,
३४	३५	७	श.	४०	३२	आश्ले. मघा	० ५७	९ ४१	व्या.	३४	४२	ग.	१२	५३	१७	३०	९	५	सिंह	०	९	५	२५	१९	१५	१	१४	४४	३१	भ.४०/३२ बाद, शुक्र अश्वि. मेष में ५६/०१,
३४	३७	८	र.	३७	३	पू.फा.	५६	२९	ह.	२९	९	वि.	८	४७	१८	३१	१०	६	सिंह			५	२५	१९	१६	१	१५	४२	२	भ.८/४७ तक, बुध मार्गी ३/३६,
३४	३९	९	चं.	३४	५०	उ.फा.	५६	३१	व.	२४	३८	बा.	५	५६	१९	जू.१	११	७	कन्या	११	२३	५	२४	१९	१६	१	१६	३९	३४	जून प्रारम्भ,
३४	४१	१०	मं.	३३	५१	हस्त	५७	४६	सि.	२१	७	तै.	४	२०	२०	२	१२	८	कन्या			५	२४	१९	१७	१	१७	३७	३	श्रीगंगा दशहरा,
३४	४३	११	बु.	३४	३	चित्रा	६०	०	व्य.	१८	३३	व.	३	५७	२१	३	१३	९	तुला	२८	५०	५	२४	१९	१७	१	१८	३४	३१	भ.३/५७ से ३४/०३ तक, निर्जला एकादशी व्रत (स.),
३४	४५	१२	गु.	३५	२४	चित्रा	०	१०	व.	१६	५४	ब.	४	४३	२२	४	१४	१०	तुला			५	२४	१९	१८	१	१९	३१	५८	चम्पक द्वादशी,
३४	४६	१३	शु.	३७	५०	स्वा.	३	३९	प.	१६	७	कौ.	६	३७	२३	५	१५	११	वृश्चि.	५१	५७	५	२४	१९	१८	१	२०	२९	२४	बुध वृष में ३२/०४, प्रदोष व्रत,
३४	४८	१४	श.	४१	१९	विशा.	८	११	शि.	१६	९	ग.	९	३४	२४	६	१६	१२	वृश्चि.			५	२४	१९	१९	१	२१	२६	४९	भ. ४१/१६ बाद,
३४	४९	१५	र.	४५	४५	अनु.	१३	४१	सि.	१६	५८	वि.	१३	३२	२५	७	१७	१३	वृश्चि.			५	२३	१९	१९	१	२२	२४	१२	भ. १३/३२ तक, सूर्य मृग. में ५८/४०, (C)

(A) वक्री बुध मेष में २४/५७, (B) १७/५२, महाराणा प्रताप जयन्ती (राज.), (C) वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष), श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ३१ मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१ १५ ४२ २	४ १३ ५४ ३५	० ५ २० ३५	० २८ ५२ ३२	१० २ ३९ ९	० ० १ ५	४ २१ ५ १४	९ ९ १ २५	३ ९ १ २५
५७ ३१	८१५ ३९	४४ ५५	१ ५८	२ ४८	५५ ५	१ ३०	३ ११	३ ११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रोहि. २	पू.फा. १	अश्वि. २	कृत्ति. १	धनि. ३	अश्वि. १	पू.फा. ३	उ.षा. ४	पुष्य २

कुण्डली सूर्योदय (३१ मई)

१ मं.बु.शु. | २ सू. | ३ | ४ के. | ५ चं. श. | ६ | ७ | ८ | ९ | १० रा. | ११ गु. | १२

लोक भविष्यः- गुरु-शनि का समसप्तकयोग खड़ी खेती को हानि का संकेत देता है। कहीं अनावृष्टि से परेशानी हो एवं कहीं भारी बाढ़ से विनाश हो। जनता में प्राकृतिक आपदा से परेशानी भी हो-"क्रूराणां सह सौम्यैश्च यदि स्यात् समसप्तकम्। जनावृष्टिस्तदा ज्ञेया लोकपीड़ा महत्यपि।।" मेषराशि का शुक्र मंगल के साथ आकर जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में भारी मंहगाई बना सकता है-"दैत्यगुरुर्यदा मेषे सर्वधान्य-महर्घता।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में तिल, तेल, एरण्ड, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, रुई आदि में घटाबढ़ी रहे। ३० मई के लगभग तिलादि पदार्थ, गुड़, खाण्ड, मूंग, मोठ, उड़द आदि मन्दे रहें। ५ जून के लगभग प्रायः सर्व वस्तुओं में घटाबढ़ी रहे। जलोत्पन्न सभी पदार्थ नारियल आदि में तेजी रहे।

आकाश-लक्षणः- मई २५, २७, ३०, ३१; जून ५, ७ को गुजरात, महाराष्ट्र, भूटान, शिलांग, आसाम में वर्षा व बादलचाल के योग हैं। भारत के उत्तर-पूर्वी भागों में तेज हवाएं चलें।

कुण्डली सूर्योदय (७ जून)

१ मं. शु. | २ सू. बु. | ३ | ४ के. | ५ श. | ६ | ७ | ८ चं. | ९ | १० रा. | ११ गु. | १२

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ७ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१ २२ २४ १२	७ १३ ५७ ६	० १० ३३ ४९	१ ० ३९ ५५	१० २ ५४ ५०	० ६ ३६ २१	४ २१ १७ ४५	९ ८ ३९ ९	३ ८ ३९ ९
५७ २२	७२५ १९	४४ ३२	३२ ४७	१ ३०	५८ १०	२ ११	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रोहि. ४	अनु. ४	अश्वि. ४	कृत्ति. २	धनि. ३	अश्वि. २	पू.फा. ३	उ.षा. ४	पुष्य २

श्री वि. सं. २०६६, शाक १९३१, आषाढ़ कृष्ण पक्ष ६

(८ से २२ जून तक, सन् २००९ ई.)

उत्तर-दक्षिणायन, उत्तर गोल, ग्रीष्म-वर्षा ऋतु।

प्रातः बु. पूर्वक्षितिज के पास तथा इसके ऊपर मं. एवम् शु. परस्पर आसन्न दीखेंगे। इस समय गु. याम्योत्तरवृत्त से कुछ पश्चिम में हटा दिखाई देगा। सायं श.पश्चिम कपाल में होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. ज्येष्ठ	अं. जून	श. ज्येष्ठ	मु. ज.उस्स.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा. रा.	अं.	क.	वि.	
३४	५१	१	चं.	५१	४	ज्ये.	२०	५	सा.	१८	२९	बा.	१८	२५	२६	८	१८	१४	धनु	२०	५	५	२३	१९	२०	१	२३	२१	३६	
३४	५२	२	मं.	५७	४	मूल	२७	१३	शु.	२०	३७	तै.	२४	४	२७	९	१९	१५	धनु			५	२३	१९	२०	१	२४	१८	५८	
३४	५३	३	बु.	६०	०	पू.षा.	३४	५४	शु.	२३	११	व.	३०	१६	२८	१०	२०	१६	मकर	५१	५३	५	२३	१९	२०	१	२५	१६	१९	भ.३०/१६ बाद, मंगल भर. में ४४/३६,
३४	५४	३	गु.	३	२८	उ.षा.	४२	४७	ब्र.	२५	५८	वि.	३	२८	२९	११	२१	१७	मकर			५	२३	१९	२१	१	२६	१३	३९	भ.३/२८ तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
३४	५५	४	शु.	९	५५	श्रव.	५०	२६	ऐं.	२८	४०	बा.	९	५५	३०	१२	२२	१८	मकर			५	२३	१९	२१	१	२७	१०	५९	
३४	५६	५	श.	१५	५६	धनि.	५७	२४	वै.	३०	५६	तै.	१५	५६	३१	१३	२३	१९	कुम्भ	२४	४	५	२३	१९	२२	१	२८	८	१८	पंचक प्रारम्भ २४/०४, शुक्र भर. में ४६/१०,
३४	५७	६	र.	२१	१	शत.	६०	०	वि.	३२	२४	व.	२१	१	आ१	१४	२४	२०	कुम्भ			५	२३	१९	२२	१	२९	५	३७	भ.२१/०१ से ५२/५३ तक, सं. सूर्य मिथुन में (A)
३४	५७	७	चं.	२४	४१	शत.	३	९	प्री.	३२	४३	ब.	२४	४१	२	१५	२५	२१	मीन	५१	२६	५	२३	१९	२२	२	०	२	५६	गुरु वक्री १६/५२,
३४	५८	८	मं.	२६	३४	पू.भा.	७	१६	आ.	३१	३६	कौ.	२६	३४	३	१६	२६	२२	मीन			५	२४	१९	२३	२	१	०	१३	
३४	५८	९	बु.	२६	२६	उ.भा.	९	२९	सौ.	२८	५४	ग.	२६	२६	४	१७	२७	२३	मीन			५	२४	१९	२३	२	१	५७	३२	भ.५५/१८ बाद, बुध रोहि. में ४७/१२,
३४	५९	१०	गु.	२४	१३	रेव.	९	३९	शो.	२४	३१	वि.	२४	१३	५	१८	२८	२४	मेष	९	३९	५	२४	१९	२३	२	२	५४	५०	भ.२४/१३ तक, पंचक समाप्त ६/३६,
३४	५९	११	शु.	२०	०	अश्वि.	७	४९	अ.	१८	३३	बा.	२०	०	६	१९	२९	२५	मेष			५	२४	१९	२३	२	३	५२	७	योगिनी एकादशी व्रत (स.),
३४	५९	१२	श.	१४	३	भर. कृत्ति.	४ ५९	११ २	सु.	११	७	तै.	१४	३	७	२०	३०	२६	वृष	१७	५९	५	२४	१९	२४	२	४	४९	२४	शनि प्रदोष व्रत,
३४	५९	१३	र.	६	४०	रोहि.	५२	४७	धृ. शू.	२ ५२	३० ५८	व.	६	४०	८	२१	३१	२७	वृष			५	२४	१९	२४	२	५	४६	४१	भ.६/४० से ३२/२७ तक, सूर्य आर्द्रा में ५६/०७,(B)
अवम		१४	र.	५८	१५	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
३४	५९	३०	चं.	४९	११	मृग.	४५	५०	गं.	४२	५३	च.	२३	४३	९	२२	आ१	२८	मिथुन	१९	१९	५	२५	१९	२४	२	६	४३	५६	सोमवती अमा, शक आषाढ़ प्रा.,

(A) ५७/१५, मु.१५, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, (B) सूर्य सायन कर्क में १४/४०, दक्षिण अयन एवं वर्षा ऋतु प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १६ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	०	१	१०	०	४	६	३
१	१	१७	७	३	१५	२१	८	८
०	५१	१२	५७	१	३२	४०	१०	१०
१३	२८	३४	२६	२६	४७	४६	३२	३२
५७	७६८	४४	६७	०	६१	३	३	३
१८	१५	१	१३	१४	१४	२	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible] ३	[illegible] ४	[illegible] २	[illegible] ४	[illegible] ३	[illegible] १	[illegible] ३	[illegible] ४	[illegible] २

कुण्डली सूर्योदय (१६ जून)

४ के., २ बु., श., शु.१ मं., ५, ३ सू., ६, १२ चं., ७, ६, ११ गु., ८, १० रा.

लोक भविष्यः- मंगल-शुक्र का एक नक्षत्र एवं एक राशि पर होना उत्तरी भारत में कहीं वर्षा में कमी, महाराष्ट्र-आसाम-बिहार आदि में कहीं भयंकर बाढ़, कहीं भयंकर सूखा करेगा। १५ जून को कुम्भराशि में गुरु का वक्र होना भारत में समृद्धि का संकेत देता है। खाद्य चीज़ों का क्रय-विक्रय सुखद रहेगा;-"कुम्भराशिगतो जीवः करोति यदि वक्रताम् आरोग्यं सर्वस्वस्थत्वं राज्ञां श्रीर्जयसंभवः।।" लेकिन इस चान्द्रमास में पांच सोमवार एवं पांच मंगलवार होने से आसाम, नेपाल, पाक एवं अन्य मुस्लिम राष्ट्रों में कहीं रक्तपात, सत्तापरिवर्तन व कहीं प्राकृतिक आपदा से भयावह स्थिति बने-" यत्र मासे महीसुनोर्जायन्ते पञ्चवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्र-भंगस्तदा भवेत्।।" हां, पांच सोमवार एवं सोमवती अमावस भारत के लिए सुख-समृद्धिप्रद है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में सोना, चान्दी, रुई के भावों में तेजी रहे। १५ जून के लगभग सोना, चान्दी, अफीम, सरसों, तिल, अलसी, घी, उड़द, नारियल में मन्दी; रुई में तेजी हो। कंदमूल, फल, पाट, बारदाना आदि पदार्थ तेज हों। रेशमी वस्त्रों में मन्दी और रुई में पहले तेजी होकर फिर मन्दी हो। २१ जून के लगभग रुई, सूत, कपास, खल, अलसी, [illegible]

कुण्डली सूर्योदय (२२जून)

४ के., २ चं. बु., श., शु.१ मं., ५, ३ सू., ६, १२, ७, ६, ११ गु., ८, १० रा.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २२ जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	१	०	१	१०	०	४	६	३
६	२५	२१	१५	२	२१	२२	७	७
४३	११	३५	३२	५७	४४	०	५१	५१
५६	५७	४४	२	६	१८	२१	२७	२७
५७	६०६	४३	८७	१	६२	३	३	३
१६	२	३८	२७	२३	४६	३४	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible] १	[illegible] १	[illegible] ३	[illegible] २	[illegible] ३	[illegible] ३	[illegible] ३	[illegible] ४	[illegible] २

श्री वि. सं. २०६६, शाक १९३१, आषाढ़ शुक्ल पक्ष ७

(२३ जून से ७ जुलाई तक, सन् २००९ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

२ जुला. से बुध पूर्व में अस्त हो जाएगा। प्रातः मं.शु. पूर्व कपाल में और गुरु याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में होगा। सायं श. पश्चिम कपाल में होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	प.	योग	समाप्ति-काल घ.	प.	करण	समाप्ति-काल घ.	प.	तारीखें प्र. आषाढ़	अं. जून	श. आषाढ़	मु. ज.उस्मा.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३४	५९	१	मं.	३१	५३	आर्द्रा	३८	३८	वृ.	३२	३३	किं.	१४	३२	१०	२३	२	२९	मिथुन			५	२५	१९	२४	२	७	४१	१३	
३४	५९	२	बु.	३०	४७	पुन.	३१	३६	ध्रु.	२२	२०	बा.	५	२०	११	२४	३	३०	कर्क	१८	१८	५	२५	१९	२४	२	८	३८	२९	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, रथयात्रा (श्रीजगदीश रथोत्सव), (A)
३४	५८	३	गु.	२२	१५	पुष्य	२५	१०	व्या.	१२	३२	ग.	२२	१५	१२	२५	४	र १	कर्क			५	२५	१९	२५	२	९	३५	४४	भ. ४८/२७ बाद, रजब मु. प्रा.,
३४	५८	४	शु.	१४	३८	आश्ले.	१९	४०	ह. व.	३ ५५	२८ २१	ति.	१४	३८	१३	२६	५	२	सिंह	१९	४०	५	२६	१९	२५	२	१०	३२	५८	भ. १४/३८ तक, बुध मृग. में ५९/२१, शुक्र कृत्ति.(B)
३४	५७	५	श.	८	१३	मघा	१५	२५	सि.	४८	२४	बा.	८	१३	१४	२७	६	३	सिंह			५	२६	१९	२५	२	११	३०	१३	कुमारषष्ठी,
३४	५७	६	र.	३	१६	पू.फा.	१२	३७	व्य.	४२	४३	तै.	३	१६	१५	२८	७	४	कन्या	२७	११	५	२६	१९	२५	२	१२	२७	२६	भ. ५९/५३ बाद, विवस्वत् सप्तमी.
अवम		७	र.	५९	५३	० ०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी तिथिक्षय,
३४	५६	८	चं.	५८	१०	उ.फा.	११	२७	व.	३८	२२	वि.	२९	१	१६	२९	८	५	कन्या			५	२७	१९	२५	२	१३	२४	३९	भ. २९/०१ तक, मंगल कृत्ति. में ०/२७, शुक्र (C)
३४	५५	९	मं.	५८	७	हस्त	११	५५	प.	३५	२२	बा.	२८	९	१७	३०	९	६	तुला	४२	४६	५	२७	१९	२५	२	१४	२१	५२	बुध मिथुन में ४२/४९,
३४	५४	१०	बु.	५९	३६	चित्रा	१३	५९	शि.	३३	३७	तै.	२८	५२	१८	ज़ु.१	१०	७	तुला			५	२७	१९	२५	२	१५	१९	५	यूरेनस वक्री १९/१२, जुलाई प्रारम्भ,
३४	५३	११	गु.	६०	०	स्वा.	१७	३२	सि.	३३	१	व.	३१	२	१९	२	११	८	तुला			५	२८	१९	२५	२	१६	१६	१७	भ. ३१/०२ बाद, बुध पूर्व में अस्त ३९/५२,
३४	५२	११	शु.	२	२८	विशा.	२२	२२	सा.	३३	२५	वि.	२	२८	२०	३	१२	९	वृश्चि.	६	३	५	२८	१९	२५	२	१७	१३	२८	भ. २/२८ तक, मंगल वृष में ३६/१९, हरिशयनी (D)
३४	५१	१२	श.	६	३०	अनु.	२८	१७	शु.	३४	३८	बा.	६	३०	२१	४	१३	१०	वृश्चि.			५	२९	१९	२५	२	१८	१०	४०	बुध आर्द्रा में ८/००, शनिप्रदोष व्रत,
३४	४९	१३	र.	११	३०	ज्ये.	३५	३	शु.	३६	३०	तै.	११	३०	२२	५	१४	११	धनु	३५	३	५	२९	१९	२५	२	१९	७	५१	सूर्य पुन. में ५४/४८,
३४	४८	१४	चं.	१७	१२	मूल	४२	२४	ब्र.	३८	५१	व.	१७	१२	२३	६	१५	१२	धनु			५	२९	१९	२५	२	२०	५	२	भ. १७/१२ से ५०/२१ तक, कोकिला व्रत, (E)
३४	४६	१५	म.	२३	२३	पू.षा.	५०	७	ऐं.	४१	३०	ब.	२३	२३	२४	७	१६	१३	धनु			५	३०	१९	२४	२	२१	२	१२	चातुर्मास्य व्रत-नियमादि प्रारम्भ, गुरुपूर्णिमा (व्यास पूजा),(F)

(A) पुरी, (B) में ४०/४३, (C) वृष में ४७/५७, (D) एकादशी व्रत(स.), (E) शिवशयनोत्सव, श्रीसत्यनारायण व्रत, (F) आषाढ़ी पूर्णिमा,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २६ जून,

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	०	१	१०	०	४	९	३
१३	७	२६	२६	२	२९	२२	७	७
२४	२७	३९	५१	४३	८	२७	२९	२९
३९	५९	४५	०	२७	४४	७	११	११
५७	७०८	४३	१०९	२	६४	४	३	३
१३	४५	९	१३	४३	१९	९	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय(२६ जून)

४ के. | २ बु. | श.५ | ३ सू. | मं.शु. १ | चं. ६ | १२ | ७ | ९ | ११ गु. | ८ | १० रा.

लोकभविष्य :- इस पक्ष में तिथिवृद्धि एवं तिथिक्षय भी है, अतः शासनतन्त्र मंहगाई को कम करने के लिए प्रयत्न करे एवं जनजीवनोपयोगी वस्तुओं के सहज उपलब्ध होने से जनता सन्तुष्ट रहे। सु. बु. मिथुन राशि में बृहस्पति की नज़र में हैं, अतः देश में सुख-समृद्धि रहे एवं प्रगति के आसार बनें। ३ जुलाई को मंगल वृष राशि में आकर शनि के साथ दशम-चतुर्थ सम्बन्ध बनाएगा। यह ग्रहस्थिति यूरोप के राष्ट्रों एवं मुस्लिम-राष्ट्रों के लिए चिन्ताजनक अवश्य है। कहीं उपद्रव, उग्रवाद, कहीं शासनतन्त्र के विरुद्ध प्रतिवाद, कहीं प्राकृतिक आपदा एवं कहीं अतिवर्षा से हानि संभव है।

कुण्डली सूर्योदय(७ जुला.)

४ के. | २ मं. शु. | श.५ | ३ सू. बु. | १ | ६ | १२ | ७ | चं. ९ | ११ गु. | ८ | १० रा.

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख़:- पक्षारम्भ में जौ, चावल, हींग, तिल आदि एवं जवाहरात में मन्दी हो। ३ जुलाई के लगभग लाल वस्तुएं तथा सर्वप्रकार के अनाजों में तेजी रहे। नारियल, केसर, मजीठ, गुग्गुल आदि सुगंधित पदार्थ एवम् करियाने में तेजी हो।

आकाश लक्षण:- जून २४, २६, २९; जुलाई २, ३, ४, ५ को हि. प्र., हरियाणा, उ.प्र., भूटान, शिलांग आदि में अनेकत्र वर्षा के योग हैं।

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ७ जुला.,

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	१	२	१०	१	४	९	३
२१	१६	२	१२	२	७	२३	७	७
२	४८	२२	३४	१६	४८	२	३	३
१२	१६	५९	५०	४४	३५	३३	४५	४५
५७	७०८	४२	१२६	४	६५	४	३	३
११	१४	३५	५०	७	४७	४६	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०६६, शाक १९३१, श्रावण कृष्ण पक्ष ८ | (८ से २२ जुलाई तक, सन् २००९ ई.)
दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु।

बु. अस्त है। प्रातः पूर्व कपाल में शु., उसके ऊपर मं. तथा पश्चिम कपाल में गु. होगा। सायं श. को पश्चिम कपाल में देखा जा सकता है। २२ जुला. को सूर्यग्रहण का अद्भुत दृश्य होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. (आषाढ़)	तारीखें अं. (जुलाई)	तारीखें श. (आषाढ़)	तारीखें मु. (रजब)	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३४	४५	१	बु.	२९	४६	उ.षा.	५७	५५	वै.	४४	१४	कौ.	२९	४६	२५	८	१७	१४	मकर	७	४	५	३०	१९	२४	२	२१	५९	२४	शुक्र रोहि. में ५६/४२, अशून्यशयन व्रत,
३४	४३	२	गु.	३६	३	श्रव.	६०	०	वि.	४६	५१	तै.	२	५५	२६	९	१८	१५	मकर			५	३१	१९	२४	२	२२	५६	३५	
३४	४१	३	शु.	४१	५६	श्रव.	५	२९	प्री.	४९	६	व.	८	५९	२७	१०	१९	१६	कुम्भ	३९	७	५	३१	१९	२४	२	२३	५३	४६	भद्रा ८/५६ से ४१/५६ तक, पंचक प्रारम्भ (A)
३४	३९	४	श.	४७	५	धनि.	१२	३२	आ.	५०	४६	ब.	१४	३०	२८	११	२०	१७	कुम्भ			५	३२	१९	२४	२	२४	५०	५७	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
३४	३७	५	र.	५१	८	शत.	१८	४२	सौ.	५१	३५	कौ.	१९	६	२९	१२	२१	१८	कुम्भ			५	३२	१९	२३	२	२५	४८	९	खग्रास सूर्यग्रहण-२२ जुलाई
३४	३५	६	चं.	५३	४६	पू.भा.	२३	४०	शो.	५१	१७	ग.	२२	२७	३०	१३	२२	१९	मीन	७	३३	५	३३	१९	२३	२	२६	४५	२२	भ. ५३/४६ बाद,
३४	३३	७	मं.	५४	४४	उ.भा.	२७	७	अ.	४९	४२	वि.	२४	१५	३१	१४	२३	२०	मीन			५	३३	१९	२३	२	२७	४२	३५	भ. २४/१५ तक, राहु उ.षा. ३, केतु पुष्य १ में (B)
३४	३१	८	बु.	५३	५४	रेव.	२८	५१	सु.	४६	४१	बा.	२४	१९	३२	१५	२४	२१	मेष	२८	५१	५	३४	१९	२२	२	२८	३९	४८	पंचक समाप्त २८/५१, बुध कर्क में ७/०७,
३४	२९	९	गु.	५१	११	अश्वि.	२८	४५	धृ.	४२	९	तै.	२२	३२	श्रा.१	१६	२५	२२	मेष			५	३५	१९	२२	२	२९	३७	३	सं. सूर्य कर्क में २३/५२, मु. ३०, पुण्यकाल (C)
३४	२६	१०	शु.	४६	४१	भर.	२६	४९	शू.	३६	१०	व.	१८	५६	२	१७	२६	२३	वृष	४१	४	५	३५	१९	२२	३	०	३४	१७	भ. १८/५६ से ४६/४१ तक, मंगल रोहि. में ४६/०७,
३४	२४	११	श.	४०	३४	कृत्ति.	२३	१३	ग.	२८	४९	ब.	१३	३७	३	१८	२७	२४	वृष			५	३६	१९	२१	३	१	३१	३३	कामिका एकादशी व्रत (स.),
३४	२१	१२	र.	३३	७	रोहि.	१८	१०	वृ.	२०	१८	कौ.	६	५१	४	१९	२८	२५	मिथुन	४५	११	५	३६	१९	२१	३	२	२८	४९	सूर्य पुष्य में ५३/२२, प्रदोष व्रत,
३४	१९	१३	चं.	२४	२८	मृग.	११	५९	ध्रु.	१०	५१	व.	२४	३८	५	२०	२९	२६	मिथुन			५	३७	१९	२०	३	३	२६	६	भ. २४/३८ से ५०/०४ तक, शुक्र मृग. में ५६/३०,
३४	१६	१४	मं.	१५	३०	आर्द्रा पुन.	५ ५७	२ ४६	व्या. ह.	० ५०	४८ २४	श.	१५	३०	६	२१	३०	२७	कर्क	४४	३४	५	३७	१९	२०	३	४	२३	२३	सूर्यग्रहणवेध,
३४	१३	३०	बु.	६	६	पुष्य	५०	३२	व.	४०	०	ना.	६	६	७	२२	३१	२८	कर्क			५	३८	१९	१९	३	५	२०	४०	सूर्य सायन सिंह में ४१/०७, खग्रास सूर्यग्रहण (D)

(A) ३६/०७, बुध पुन. में २८/३१, शनि पू.फा. ४ में ३५/१६, (B) २७/४८, (C) सारा दिन, बुध पुष्य में ४१/१५, (D) (भारत में दृश्य) (देखें पृ. 10), हरियाली अमावस,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १५ जुला.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	१	२	१०	१	४	६	३
२८	२३	८	२६	१	१६	२३	६	६
३६	४१	१	४४	३६	३६	४२	३८	३८
४८	७	४०	३०	८	२२	४२	१८	१८
५७	७८६	४२	१२७	५	६७	५	३	३
१४	२६	०	५०	२४	२	१६	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुनं. ३	पुनं. ३	कृत्ति. ४	पुनं. ३	धनि. ३	रोहि. २	पू.फा. ४	उ.षा. ३	पुष्य १

कुण्डली सूर्योदय (१५ जुला.)

४ के. | २ मं. शु. | ३ सू. बु. | श. ५ | १ | ६ | १२ चं. | ७ | ९ | ११ गु. | ८ | १० रा.

लोकभविष्यः:- इस चान्द्रमास में पांच बुधवार एवं पांच गुरुवार हैं। अतः भारतीय जनजीवन सुख-समृद्धि की ओर अग्रेसर रहे। कृषकवर्ग सुभिक्ष रहने से प्रसन्न रहे। लेकिन पांच गुरुवारों का प्रभाव पश्चिमी देशों पर अनुभव होगा। उग्रवाद भयंकर रूप धारण कर सकता है। आन्तरिक वातावरण बिगड़ेगा। जनता में हत्याकाण्ड हों एवं नीतिज्ञों को भारी कष्ट का सामना करना पड़ेगा- 'यत्र मासे पंचवारा जायंते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धं च जायते।।" कर्कराशिस्थ बुध-सूर्य-केतु का राहु के साथ समसप्तक एवं शनि-मंगल की परस्पर दृष्टि किसी प्राकृतिक आपदा से जनधनहानि का संकेत देती है।

कुण्डली सूर्योदय (२२ जुला.)

५ श. | ३ | ४ सू. चं.बु.के. | ६ | मं. २ शु. | ७ | १ | ८ | १० रा. | १२ | ९ | ११ गु.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २२ जुला.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	१	३	१०	१	४	६	३
५	३	१२	१४	०	२४	२४	६	६
२०	४६	५४	१४	५८	३१	२१	१६	१६
४०	१०	२	६	१८	२७	२०	२	२
५७	६०८	४१	११८	६	६७	५	३	३
१६	२६	२७	२६	२२	५७	४६	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुष्य १	पुष्य १	रोहि. १	पुष्य ४	धनि. ३	मृग. १	पू.फा. ४	उ.षा. ३	पुष्य १

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- पक्षारम्भ में सोना, चान्दी, छुहारा, सुपारी, नारियल, ऊन में मन्दी आए। १४ जुलाई के लगभग तिल, चन्दन, लवणादि सर्वरस तेज हों। श्वेत वस्त्रों में मन्दी और अनाजों के भाव मध्यम रहें। सोना, चान्दी, मोती एवम् ऊनी कपड़ों में घटाबढ़ी रहे। लालमिर्च, हींग और शेयरों में तेजी रहे।

आकाश लक्षण:- जुलाई ८, १०, १४, १५, १६, १७, १९ को पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., उत्तरप्रदेश, राजस्थान, दिल्ली, मध्यप्रदेश, गुजरात आदि में सर्वत्र बादलवाल, बूंदाबांदी, वर्षा व झंझावात के योग हैं।

श्री वि. सं. २०६६, शाक १९३१, श्रावण शुक्ल पक्ष ६ | तारीखें | चण्डीगढ़ | स्पष्ट सूर्य | (२३ जुलाई से ६ अगस्त तक, सन् २००९ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

श्री वि. सं. २०६६, शाक १९३१, श्रावण शुक्ल पक्ष ६

(२३ जुलाई से ६ अगस्त तक, सन् २००९ ई.) दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

२६ जुला. से बु. सायं पश्चिम में दृश्य हो जाएगा। इस समय श. पश्चिम क्षितिज की ओर झुका होगा। प्रातः शु. पूर्व में, मं. पूर्व कपाल में तथा गु. पश्चिम में होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. श्रावण	तारीखें अं. जुलाई	तारीखें श. श्रावण	तारीखें मु. रज्जब	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	बु.	५६	५१	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय,
३४	१०	२	गु.	४८	७	आश्ले.	४३	४८	सि.	२९	५७	बा.	२२	२९	८	२३	श्रा.१	२९	सिंह	४३	४८	५	३९	१९	१९	३	६	१८	०	चन्द्रदर्शन, मु. १५, बुध आश्ले. में १३/४५, शक (A)
३४	७	३	शु.	४०	१८	मघा	३७	५८	व्य.	२०	३३	तै.	१४	१३	९	२४	२	शा.१	सिंह			५	३९	१९	१८	३	७	१५	१९	मधुस्रवा तृतीया (संधारा तीज), शाबान मु. प्रा.,(B)
३४	५	४	श.	३३	४५	पू.फा.	३३	२३	व.	१२	६	व.	७	१	१०	२५	३	२	कन्या	४७	२९	५	४०	१९	१८	३	८	१२	३८	भ. ७/०१ से ३३/४५ तक, सूर्यग्रहणवेध,
३४	२	५	र.	२८	४७	उ.फा.	३०	२३	प. शि.	४ ५९	५२ ३	ब.	१	१६	११	२६	४	३	कन्या			५	४०	१९	१७	३	९	९	५८	शुक्र मिथुन में ४८/४५, बुध पश्चिम में उदित (C)
३३	५८	६	चं.	२५	३७	हस्त	२९	११	सि.	५४	४५	तै.	२५	३७	१२	२७	५	४	तुला	५९	१९	५	४१	१९	१६	३	१०	७	१८	
३३	५५	७	मं.	२४	२२	चित्रा	२९	५३	सा.	५२	०	व.	२४	२२	१३	२८	६	५	तुला			५	४२	१९	१६	३	११	४	३९	भ. २४/२२ से ५४/४५ तक, गोस्वामी तुलसीदास (D)
३३	५२	८	बु.	२५	४	स्वा.	३२	२९	शु.	५०	४४	ब.	२५	४	१४	२९	७	६	तुला			५	४२	१९	१५	३	१२	२	०	श्रीदुर्गाष्टमी,
३३	४९	९	गु.	२७	३३	विशा.	३६	४७	शु.	५०	४७	कौ.	२७	३३	१५	३०	८	७	वृश्चि.	२०	३५	५	४३	१९	१४	३	१२	५९	२२	बुध मघा सिंह में २५/३० , वक्री गुरु धनि. २ (E)
३३	४६	१०	शु.	३१	३४	अनु.	४२	३३	ब्र.	५१	५७	ग.	३१	३४	१६	३१	९	८	वृश्चि.			५	४३	१९	१४	३	१३	५६	४५	
३३	४२	११	श.	३६	४७	ज्ये.	४९	२४	ऐं.	५३	५५	व.	४	१०	१७	अ.१	१०	९	धनु	४९	२४	५	४४	१९	१३	३	१४	५४	८	भ. ४/१० से ३६/४७ तक, शुक्र आर्द्रा (F)
३३	३९	१२	र.	४२	४६	मूल	५६	५४	वै.	५६	२३	ब.	९	४६	१८	२	११	१०	धनु			५	४५	१९	१२	३	१५	५१	३१	सूर्य आश्ले. में ५०/०३ ,
३३	३५	१३	चं.	४९	५	पू.षा.	६०	०	वि.	५९	६	कौ.	१५	५८	१९	३	१२	११	धनु			५	४५	१९	११	३	१६	४८	५५	सोमप्रदोष व्रत,
३३	३२	१४	मं.	५५	३१	पू.षा.	४	४१	प्री.	६०	०	ग.	२२	२०	२०	४	१३	१२	मकर	२१	३९	५	४६	१९	११	३	१७	४६	२०	भ. ५५/३१ बाद,
३३	२८	१५	बु.	६०	०	उ.षा.	१२	२४	प्री.	१	४६	वि.	२८	३३	२१	५	१४	१३	मकर			५	४७	१९	१०	३	१८	४३	४६	भ. २८/३३ तक, रक्षाबन्धन (राखी)(देखें पृष्ठ 93),(G)
३३	२५	१५	गु.	१	३५	श्रव.	१९	४५	आ.	४	१०	ब.	१	३५	२२	६	१५	१४	कुम्भ	५३	१३	५	४७	१९	९	३	१९	४१	१२	पंचक प्रारम्भ ५३/१३, मंगल मृग. में १६/१८, (H)

(A) श्रावण प्रा., सूर्यग्रहणवेध, (B) सूर्यग्रहणवेध, (C) १३/३७, नाग पंचमी, श्रीकल्कि जयन्ती, (D) जयन्ती, (E) मकर में ३५/१६, (F) में ३७/३६, पवित्रा एकादशी व्रत (स.), अगस्त प्रा., (G) श्रावणी पूर्णिमा, शुक्ल-कृष्ण-यजु उपाकर्म, श्रीसत्यनारायण व्रत, (H) ऋक् उपाकर्म (देखें पृ. 93)

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २६ जुला.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	१	३	१०	२	४	६	३
१२	१२	१७	२७	०	२	२५	५	५
२	१	४२	२७	११	२६	२	५३	५३
०	२४	२१	५३	२३	३२	५५	४७	४७
५७	७२६	४०	१०६	७	६८	६	३	३
२२	५१	५०	३५	६	४४	१०	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३ पुष्य	२ स्वा.	३ रोहि.	४ आश्ले.	३ धनि.	३ मृग.	४ पू.फा.	३ उ.षा.	१ पुष्य

कुण्डली सूर्योदय (२६ जुला.)

श. ५ · ३ शु. · ४ · मं. · ६ · सू. बु.के. · २ · चं. ७ · १ · ८ · रा. १० · १२ · ९ · गु. ११

लोकभविष्य:- मंगल-शनि का परस्पर विशेष दृष्टिसम्बन्ध, सू.बु. का राहु के साथ समसप्तकयोग इस मास में कहीं राजनीतिज्ञों में परस्पर वैमनस्य एवं कहीं प्राकृतिक प्रकोप किंवा यानदुर्घटना से जनधनहानि का योग बनाता है। इस पक्ष में प्रतिपदा तिथिक्षय एवं पूर्णिमा तिथिवृद्धि होने से आगे कहीं (कार्तिक मास में) सत्तापरिवर्तन एवं कहीं उग्रवादजन्य हत्याकाण्डों से अशान्ति भी सम्भव है;- " श्रावणे शुक्लपक्षे च क्षीणा क्वापि तिथिर्भवेत्। तदा वै कार्तिके मासे छत्रभंगस्तदा भवेत्।।" इस पक्ष में वक्रगुरु मकर राशि में (वक्र) राहु के साथ राशि-सम्बन्ध बनाएगा, जोकि राजनीतिज्ञों में परस्पर विचार वैमत्य, राजनैतिक अस्थिरता एवं शक्तिपरीक्षण का वातावरण बनाएगा- " मकरे च गुरौ याते दुर्भिक्षं घोरदारुणम्। विग्रहं यान्ति राजानः त्रिमासान्ते शुभं भवेत्।।"

कुण्डली सूर्योदय (६ अग.)

बु. श. ५ · ३ शु. · ४ · मं. · ६ · सू. के. · २ · ७ · १ · १० · ८ · चं. गु. रा. · १२ · ९ · ११

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ६ अग.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	१	४	९	२	४	९	३
१९	१९	२३	१०	२६	११	२५	५	५
४१	१६	६	५३	१२	४२	५३	२८	२८
१२	१८	३६	३३	२६	२५	३४	२०	२०
५७	७१६	४०	६३	७	६६	६	३	३
२८	२४	०८	१३	३६	३५	३२	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१ आश्ले.	३ श्रव.	४ रोहि.	४ मघा	२ धनि.	२ आर्द्रा	४ पू.फा.	३ उ.षा.	१ पुष्य

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में तिल, तैल, सरसों, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूंग, मूंगफली में तेजी ; वस्त्र और कपास में मन्दा रहे। २६ जुला. के लगभग गुड़, घृत में अच्छी घटाबढ़ी हो। ३० जून के लगभग देवदारु, ऊनी वस्त्रों एवं खट्टे पदार्थों में तेजी; अनाजों के भावों में अकस्मात् मन्दी का वातावरण बने। २ अग. के लगभग चान्दी में तेजी, रुई में मन्दी होकर तेजी बने। **आकाश-लक्षण:-** जुलाई २३, २६, ३०; अगस्त १, २, ६ को पंजाब, हि.प्र., हरियाणा, उत्तरप्रदेश, आसाम एवं नेपाल में अच्छी वर्षा के योग बनते हैं। कुछ स्थानों पर बाढ़ आदि से हानि के भी योग हैं।

(७ से २० अगस्त तक, सन् २००९ ई.)

दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु।

प्रातः पूर्व में शु., पूर्व कपाल में मं. तथा पश्चिम क्षितिज में गु. दिखाई देगा। सायं बु. श. पश्चिम क्षितिजासन्न होंगे।

श्री वि. सं. २०६६, शाक १९३१, भाद्रपद कृष्ण पक्ष १०															तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र. श्रावण	अं. अगस्त	श. श्रावण	मु. शाबान				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३३	२१	१	शु.	७	२	धनि.	२६	२९	सौ.	६	६	कौ.	७	२	२३	७	१६	१५	कुम्भ			५	४८	१९	८	३	२०	३८	४०	बुध पू. फा. में ३४/०७,
३३	१७	२	श.	११	४३	शत.	३२	२३	शो.	७	२६	ग.	११	४३	२४	८	१७	१६	कुम्भ			५	४८	१९	७	३	२१	३६	९	भ. ४३/३४ बाद,
३३	१३	३	र.	१५	२६	पू.भा.	३७	१७	अ.	८	२	वि.	१५	२६	२५	९	१८	१७	मीन	२१	१०	५	४९	१९	६	३	२२	३३	३९	भ. १५/२६ तक, बहुला चतुर्थी, श्रीगणेश(संकष्ट) (A)
३३	१०	४	चं.	१८	०	उ.भा.	४१	२	सु.	७	४५	बा.	१८	०	२६	१०	१९	१८	मीन			५	५०	१९	५	३	२३	३१	१०	
३३	६	५	मं.	१९	१८	रेव.	४३	३१	धृ.	६	३०	तै.	१९	१८	२७	११	२०	१९	मेष	४३	३१	५	५०	१९	५	३	२४	२८	४२	पंचक समाप्त ४३/३१,
३३	२	६	बु.	१९	१४	अश्वि.	४४	३६	शू.	४	११	व.	१९	१४	२८	१२	२१	२०	मेष			५	५१	१९	४	३	२५	२६	१६	भ.१६/१४ से ४८/२७ तक, शनि उ.फा. १ में (B)
३२	५८	७	गु.	१७	४२	भर.	४४	१४	गं. वृ.	० ५६	४५ ६	ब.	१७	४२	२९	१३	२२	२१	वृष	५८	५६	५	५१	१९	३	३	२६	२३	५१	शुक्र पुन. में ६/१८, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत(स्मा.) (C)
३२	५४	८	शु.	१४	४२	कृत्ति.	४२	२६	ध्रु.	५०	१७	कौ.	१४	४२	३०	१४	२३	२२	वृष			५	५२	१९	२	३	२७	२१	२८	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत(वै.)(चन्द्रोदय २३ घं.५२ मि.),(D)
३२	५०	९	श.	१०	१६	रोहि.	३९	१४	व्या.	४३	२०	ग.	१०	१६	३१	१५	२४	२३	वृष			५	५३	१९	१	३	२८	१९	६	भ. ३७/२२ बाद, भारत स्वतंत्रता दिवस, श्रीगुग्गा नवमी,
३२	४६	१०	र.	४	३०	मृग.	३४	४८	ह.	३५	२२	वि.	४	३०	भा.१	१६	२५	२४	मिथुन	७	८	५	५३	१९	००	३	२९	१६	४६	भ. ४/३० तक, सं. सूर्य मघा सिंह में ४४/००, (E)
अवम		११	र.	५७	३७	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशी तिथिक्षय,
३२	४२	१२	चं.	४९	४८	आर्द्रा	२९	१९	व.	२६	३३	कौ.	२३	४३	२	१७	२६	२५	मिथुन			५	५४	१८	५९	४	०	१४	२८	बुध उ.फा. में ११/०७, अजा एकादशी व्रत (वै.), (F)
३२	३८	१३	मं.	४१	२१	पुन.	२३	६	सि.	१७	६	ग.	१५	३४	३	१८	२७	२६	कर्क	९	४२	५	५४	१८	५८	४	१	१२	१०	भ.४१/२१ बाद, भौमप्रदोष व्रत,
३२	३४	१४	बु.	३२	३८	पुष्य	१६	२९	व्य. व.	७ ५७	१७ २४	वि.	६	५९	४	१९	२८	२७	कर्क			५	५५	१८	५७	४	२	९	५४	भ. ६/५६ तक, बुध कन्या में ५८/४२,
३२	३०	३०	गु.	२३	५९	आश्ले.	९	४९	प.	४७	४३	ना.	२३	५९	५	२०	२९	२८	सिंह	९	४९	५	५६	१८	५५	४	३	७	४०	कुशोत्पाटिनी अमा, पिठोरी अमा,

(A) चतुर्थी (चन्द्रोदय २० घं. ४६ मि.), (B) ५७/१५ , (C) (चन्द्रोदय २३ घं. ०३ मि.), (D) गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव), (E) मु. १५, पुण्यकाल मध्याह्न बाद, मंगल मिथुन में २३/५१, अजा एकादशी व्रत (स्मा.), (F) पर्युषण पर्व (जैन),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १४ अग.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	१	१	४	९	२	४	९	३
२७	०	२८	२२	२८	२१	२६	५	५
२१	२	२५	३२	१०	१	४७	२	२
२८	२२	७	१२	१६	५२	२	५४	५४
५७ ३८	८३० ३	३६ २३	७६ ३०	७ ५१	७० २३	६ ५२	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदय (१४ अग.)

श. ५ बु. | ४ | ३ शु. | मं. | ६ | सू. के. | चं. २ | ७ | १ | ८ | रा. १० गु. | १२ | ९ | ११

लोकभविष्यः- इस पक्ष में पांच शुक्रवार हैं। सर्वत्र सुभिक्ष एवं प्रजा में सुख-समृद्धि रहे। लेकिन सिंह राशि में सूर्य-शनि का एक राशिसम्बन्ध कहीं भयंकर तूफान, यानदुर्घटना, विशिष्ट व्यक्ति के निधन से परेशानी एवं अन्यविध प्राकृतिक आपदा से जनधनहानि का संकेत देता है। पक्षान्त में मिथुन राशि का मंगल कहीं भारी वर्षा किंवा कहीं सूखे से भी हानि कर सकता है। किसी तीर्थ पर उग्रवादजन्य गतिविधि से अशान्ति भी संभव है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में गुड़, खाण्ड आदि अनाज मन्दे हों। १३ अगस्त के लगभग तृण, अनाज तेज हों। घृत, शक्कर, सरसों, कपास में तेजी। पूर्व भारत में अनाज तेज हों। ज्वार, बाजरा, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, तैल, रक्तवर्ण की वस्तुएं तथा रत्न तेज हों। शेयर बाजार मन्दे रहें। हल्दी आदि मसाले भी तेज रहें।

आकाश लक्षणः- अगस्त ७, १२, १३, १६, १७ और १९ को कोलकाता, सूरत, पंजाब, हरियाणा आदि के कुछ भागों में बादलचाल पवन बिजली के साथ बूंदाबांदी हो।

कुण्डली सूर्योदय (२० अग.)

६ बु. | चं. ४ के. | मं. | ७ | सू. ५ श. | ३शु. | ८ | २ | ९ | ११ | १ | गु.१० रा. | १२

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २० अग.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	३	२	५	९	२	४	९	३
३	२७	२	०	२७	२८	२७	४	४
७	१७	१६	०	२३	५	२८	४३	४३
४०	३	५८	१७	१४	२७	४३	५०	५०
५७ ४७	८६४ ३७	३८ ४७	६७ २८	७ ४६	७० ५४	७ ४	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

(२१ अगस्त से ४ सितम्बर तक, सन् २००९ ई.)

श्री वि. सं. २०६६, शाक १९३१, भाद्रपद शुक्ल पक्ष ११ | तारीखें | चण्डीगढ़

श्री वि. सं. २०६६, शाक १९३१, भाद्रपद शुक्ल पक्ष ११

(२१ अगस्त से ४ सितम्बर तक, सन् २००९ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा—शरद ऋतु।

३१ अग. को श. पश्चिम में दिखाई देना बन्द हो जाएगा। सायं बु. पश्चिम क्षितिज के ऊपर होगा। प्रातः शु. पूर्व में, मं. पूर्व कपाल में तथा गुरु पश्चिम क्षितिजासन्न दीखेगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. भाद्रपद	अं. अगस्त	श. श्रावण	मु. शाबान	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा. रा.	अं.	क.	वि.	
३२	२५	१	शु.	१५	४९	मघा पू.फा.	३ ५८	३२ २	शि.	३८	३५	ब.	१५	४९	६	२१	३०	२९	सिंह			५	५६	१८	५४	४	४	५	२७	शुक्र कर्क में ३५/५१,
३२	२१	२	श.	८	३१	उ.फा.	५३	४२	सि.	३०	१९	कौ.	८	३१	७	२२	३१	३०	कन्या	११	४८	५	५७	१८	५३	४	५	३	१५	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, सूर्य सायन कन्या में ५७/५७, (A)
३२	१७	३	र.	२	३१	हस्त	५०	५६	सा.	२३	१२	ग.	२	३१	८	२३	भा.१	र.१	कन्या			५	५७	१८	५२	४	६	१	५	भ. ३०/१८ से ५८/०४ तक, शक भाद्रपद प्रा., (B)
अवम		४	र.	५८	४	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय,
३२	१३	५	चं.	५५	३१	चित्रा	४९	५९	शु.	१७	२९	ब.	२६	४८	९	२४	२	२	तुला	२०	१२	५	५८	१८	५१	४	६	५८	५६	शुक्र पुष्य में २४/३०, संवत्सरी महापर्व(पंचमी पक्ष)(C)
३२	८	६	मं.	५५	०	स्वा.	५१	२	शु.	१३	१९	कौ.	२५	१६	१०	२५	३	३	तुला			५	५९	१८	५०	४	७	५६	४८	वक्री गुरु धनि. १ में ३७/०३, सूर्य षष्ठी,
३२	४	७	बु.	५६	३२	विशा.	५४	५	ब्र.	१०	४८	ग.	२५	४६	११	२६	४	४	वृश्चि.	३८	९	५	५९	१८	४९	४	८	५४	४२	भ. ५६/३२ बाद, मंगल आर्द्रा में ४४/२२ ,
३२	००	८	गु.	५९	५६	अनु.	५८	५८	ऐं.	९	५२	वि.	२८	१४	१२	२७	५	५	वृश्चि.			६	०	१८	४८	४	९	५२	३७	भ. २८/१४ तक, श्रीराधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ, (D)
३१	५५	९	शु.	६०	०	ज्ये	६०	०	वै.	१०	१९	बा.	३२	२३	१३	२८	६	६	वृश्चि.			६	०	१८	४६	४	१०	५०	३३	
३१	५१	९	श.	४	५०	ज्ये	५	१८	वि.	११	५४	कौ.	४	५०	१४	२९	७	७	धनु	५	१८	६	१	१८	४५	४	११	४८	३०	श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव),
३१	४७	१०	र.	१०	४९	मूल	१२	३९	प्री.	१४	१३	ग.	१०	४९	१५	३०	८	८	धनु			६	१	१८	४४	४	१२	४६	२९	भ.४४/०४ बाद, सूर्य पू. फा. में ३३/२२ ,
३१	४२	११	चं.	१७	१६	पू.षा.	२०	२७	आ.	१६	५३	वि.	१७	१६	१६	३१	९	९	मकर	३७	२६	६	२	१८	४३	४	१३	४४	२९	भ. १७/१६ तक, बुध हस्त में ८/२१, शनि अस्त (E)
३१	३८	१२	मं.	२३	४१	उ.षा.	२८	११	सौ.	१९	३०	बा.	२३	४१	१७	सि.१	१०	१०	मकर			६	३	१८	४२	४	१४	४२	३१	श्रीवामन जयन्ती, भौमप्रदोष व्रत, सितम्बर प्रारम्भ,
३१	३३	१३	बु.	२९	३५	श्रव.	३५	२४	शो.	२१	४६	तै.	२९	३५	१८	२	११	११	मकर			६	३	१८	४१	४	१५	४०	३३	
३१	२९	१४	गु.	३४	३९	धनि.	४१	४७	अ.	२३	२४	ग.	२	७	१९	३	१२	१२	कुम्भ	८	४२	६	४	१८	३९	४	१६	३८	३८	भ.३४/३६ बाद, पंचक प्रारम्भ ८/४२, वक्री प्लूटो (F)
३१	२५	१५	शु.	३८	४०	शत.	४७	८	सु.	२४	१५	वि.	६	४०	२०	४	१३	१३	कुम्भ			६	४	१८	३८	४	१७	३६	४४	भ.६/४० तक, शुक्र आश्ले. में ३४/१२, अगस्त्य (G)

(A) शरद् ऋतु प्रारम्भ, श्रीवराह जयन्ती, मेला बाबा श्रीगोसाईं आणां, कुराली (मोहाली) पं., (B) हरितालिका तृतीया, गौरी तृतीया (देखें पृष्ठ 93), सिद्धिविनायक व्रत, हरितालिका चतुर्थी, कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषिद्ध)(चन्द्रास्त २० घं. ३३ मि.), साम उपाकर्म, रमज़ान मु. प्रा., (C) (जैन), ऋषि पंचमी, (D) श्रीदूर्वाष्टमी व्रत, (E)५/४५, पद्मा एकादशी व्रत (स.), (F) मूल २ में ११/४५, श्रीअनन्त चतुर्दशी व्रत, (G) उदित, श्रीसत्यनारायण व्रत, प्रोष्ठपदी श्राद्ध, पूर्णिमा श्राद्ध,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २७ अगस्त,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	२	५	९	३	४	९	३
९	४	६	७	२६	६	२८	४	४
५२	१८	४९	०	२९	२३	१८	२१	२१
३७	३४	८	२१	४९	२७	४३	३४	३४
५७	७३८	३८	४८	७	७१	७	३	३
५६	५१	१	४५	२४	२८	१५	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मघा ३	आश्ले. १	आर्द्रा १	उ.फा. ४	धनि. १	पुष्य १	उ.फा. १	उ.भा. ३	पू.फा. १

कुण्डली सूर्योदय (२७ अग.)

बु. ६ | शु. ४ के. | सू. | मं. | ७ | ५ श. | ३ | चं. | ८ | २ | ९ | ११ | १ | गु.१० रा. | १२

लोकभविष्य:- मकरस्थ गुरु-राहु का कर्कराशि में स्थित शुक्र-केतु के साथ समसप्तकयोग बन रहा है। देश में राजनीतिक अस्थिरता एवं कहीं सत्ता में भागीदार घटकदल परस्पर विरुद्धमत का प्रदर्शन करें। किसी विशिष्ट देश में उग्रवादजन्य प्रक्रिया से भारी जनधनहानि भी संभव है। ३० अगस्त से सितंबर के प्रथम सप्ताह के मध्य सिंह राशिस्थ शनि के अस्त होने पर दक्षिणी भारत एवं यूरोपीय देशों में विशेष संकटापन्न स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। धनुराशिस्थ प्लूटो का मंगल के साथ समसप्तक किसी प्राकृतिक आपदा को आमन्त्रित करेगा।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में रुई, अलसी, एरण्ड, तैल, घृत, गुड़, खाण्ड, मटर, अरहर आदि के भावों में घटाबढ़ी रहे। रुई, सूत, सण, नमक आदि तेज रहें। १ सितंबर के लगभग तूअर, चावल आदि मन्दे हों। आकाश लक्षण :- अगस्त २१, २२, २४, २५, २६, ३०, ३१; सितम्बर १ को उत्तरी भारत में कहीं-कहीं वर्षा हो। दक्षिण भारत में कहीं बाढ़-वर्षा से हानि के समाचार मिलें।

कुण्डली सूर्योदय (४ सितं.)

बु. ६ | शु. ४ के. | सू. | मं. | ७ | ५ श. | ३ | ८ | २ | ९ | ११ चं. | १ | गु.१० रा. | १२

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ४ सितंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	२	५	९	३	४	९	३
१७	१०	११	११	२५	१५	२९	३	३
३६	४	४९	४४	३३	५७	१७	५६	५६
४४	२७	५९	५	४	१५	१२	९	९
५८	७१६	३७	१५	६	७२	७	३	३
७	४५	५	१७	३८	४	२३	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
पू.फा. २	शत. २	आर्द्रा २	हस्त १	धनि. १	पुष्य ४	उ.फा. १	उ.भा. ३	पू.फा. १

श्री वि. सं. २०६६ शाक १९३१, आश्विन कृष्ण पक्ष १२ — **(५ से १८ सितम्बर तक, सन् २००९ ई.)** दक्षिणायन, उत्तर गोल, शरद ऋतु।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. भाद्रपद	अं. सितंबर	श. भाद्रपद	मु. रमज़ान	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	श. अस्त है। बु. भी १३ सितं. से पश्चिम में लुप्त हो जाएगा। प्रातः शु. पूर्व में, मं. पूर्व कपाल में दिखाई देगा। सायं गु. पूर्व कपाल में होगा।
३१	२०	१	श.	४१	३३	पू.भा.	५१	२४	धृ.	२४	१४	बा.	१०	७	२१	५	१४	१४	मीन	३५	२६	६	५	१८	३७	४	१८	३४	५१	पितृपक्ष (महालय) प्रा., श्राद्ध प्रारम्भ, प्रतिपदा का श्राद्ध,
३१	१६	२	र.	४३	१७	उ.भा.	५४	३३	शू.	२३	२०	तै.	१२	२५	२२	६	१५	१५	मीन			६	५	१८	३६	४	१९	३३	०	द्वितीया का श्राद्ध,
३१	११	३	चं.	४३	५४	रेव.	५६	३६	ग.	२१	३२	व.	१३	३६	२३	७	१६	१६	मेष	५६	३६	६	६	१८	३४	४	२०	३१	११	भ. १३/३६ से ४३/५४ तक, पंचक समाप्त (A)
३१	७	४	मं.	४३	२८	अश्वि.	५७	३८	वृ.	१८	५४	ब.	१३	४१	२४	८	१७	१७	मेष			६	७	१८	३३	४	२१	२९	२४	चतुर्थी का श्राद्ध, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
३१	२	५	बु.	४२	०	भर.	५७	४०	ध्रु.	१५	२५	कौ.	१२	४४	२५	९	१८	१८	मेष			६	७	१८	३२	४	२२	२७	३९	शनि उ.फा. २ कन्या में ४४/४२, भरणीश्राद्ध, (B)
३०	५७	६	गु.	३९	३२	कृत्ति.	५६	४४	व्या.	११	९	ग.	१०	४६	२६	१०	१९	१९	वृष	१२	३०	६	८	१८	३१	४	२३	२५	५६	भ. ३६/३२ बाद, चन्द्रषष्ठी व्रत, षष्ठी का श्राद्ध,
३०	५३	७	शु.	३६	७	रोहि.	५४	५०	ह.	६	५	वि.	७	४९	२७	११	२०	२०	वृष			६	८	१८	२९	४	२४	२४	१५	भ. ७/४६ तक, प्लूटो मार्गी ४०/४३, श्रीमहालक्ष्मी (C)
३०	४८	८	श.	३१	४५	मृग.	५२	१	व. सि.	० ५३	१६ ४१	बा.	३	५६	२८	१२	२१	२१	मिथुन	२३	३१	६	९	१८	२८	४	२५	२२	३६	अष्टमी का श्राद्ध,
३०	४४	९	र.	२६	२९	आर्द्रा	४८	२०	व्य.	४६	२४	ग.	२६	२९	२९	१३	२२	२२	मिथुन			६	९	१८	२७	४	२६	२१	०	भ. ५३/२७ बाद, सूर्य उ. फा. में १७/५२, (D)
३०	३९	१०	चं.	२०	२६	पुन.	४३	५४	व.	३८	२९	वि.	२०	२६	३०	१४	२३	२३	कर्क	३०	३	६	१०	१८	२६	४	२७	१९	२५	भ. २०/२६ तक, दशमी/एकादशी का श्राद्ध(देखें पृ. 93),
३०	३५	११	मं.	१३	४३	पुष्य	३८	५४	प.	३०	४	बा.	१३	४३	३१	१५	२४	२४	कर्क			६	१०	१८	२४	४	२८	१७	५३	शुक्र मघा सिंह में ३६/१२, राहु उ.षा. २, केतु (E)
३०	३०	१२	बु.	६	३२	आश्ले.	३३	३२	शि.	२१	२०	तै.	६	३२	आ.१	१६	२५	२५	सिंह	३३	३२	६	११	१८	२३	४	२९	१६	२२	भ. ५६/१० बाद, सं. सूर्य कन्या में ४३/००, (F)
अवम		१३	बु.	५९	१०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथिक्षय,
३०	२५	१४	गु.	५१	५४	मघा	२८	७	सि.	१२	२९	वि.	२५	३२	२	१७	२६	२६	सिंह			६	१२	१८	२२	५	०	१४	५४	भ. २५/३२ तक, मंगल पुन. में २८/२२, (G)
३०	२१	३०	शु.	४५	५	पू.फा.	२३	०	सा. शु.	३ ५५	४८ ३५	च.	१८	२९	३	१८	२७	२७	कन्या	३६	४८	६	१२	१८	२०	५	१	१३	२८	महालय अमावस, सर्वपितृ अमावस, अमा/सर्वपितृ (H)

(A) ५६/३६, बुध वक्री १०/२२, तृतीया का श्राद्ध. (B) पंचमी का श्राद्ध, (C) व्रत समाप्त, सप्तमी का श्राद्ध, (D) वक्री बुध उ.फा. में ३६/१०, बुध पश्चिम में अस्त २४/३७, नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध, (E) पुन. ४ में २०/२७, इन्दिरा एकादशी व्रत (स.), द्वादशी का श्राद्ध. संन्यासियों का श्राद्ध. (F) मु. ३०, पुण्यकाल मध्याह्न बाद, त्रयोदशी का श्राद्ध, प्रदोष व्रत, (G) मघा श्राद्ध, चतुर्दशी का श्राद्ध, अपमृत्यु वालों का श्राद्ध, (H) श्राद्ध, चतुर्दशी-अमा-पूर्णिमा एवं अज्ञात मृत्युतिथि वालों का श्राद्ध, श्राद्ध समाप्त,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १२ सितंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	२	५	९	३	५	९	३
२५	२४	१६	१०	२४	२५	०	३	३
२२	६	४३	५६	४३	३५	१६	३०	३०
३७	३६	१२	५७	१९	५१	३७	४३	४३
५८	८४०	३६	३४	५	७२	७	३	३
२३	१३	५	२०	३७	३६	२८	११	११
		मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
पू.फा. ४	मृग. १	आर्द्रा ४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (१२ सितं.)

बु. ६ श. | शु. ४ के. | ७ | ५ सू. | ३ मं. | ८ | चं. २ | ९ | ११ | १ | गु. १० रा. | १२

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच शनिवार होने से कहीं भयंकर प्राकृतिक आपदा भूकम्प, विस्फोट, अग्निकाण्ड एवं यानदुर्घटना आदि से हानि संभव है-"शनेश्च पंचकं दृष्ट्वा पाताले कम्पते फणी। ईशान-देशभंगश्च वह्निदाहे महर्घता।।" ९ सितम्बर को शनि कन्याराशि में प्रवेश करेगा। १६ सितंबर को सूर्य के साथ शनि-बुध का एक साथ होना शासकवर्ग के लिए भारी कष्टप्रद स्थिति बना सकता है। राजनीतिज्ञों की स्वार्थपरायणता एवं मतभेद स्पष्ट उभरकर सामने आएंगे। कहीं किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का निधन भी हो - "यदा भास्करतनयः कन्याराशिं प्रविश्यति। जलशोषं भवेद्वायु र्मध्यदेशे जलक्षयम्।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में रुई, घृत, गुड़, खाण्ड, गेहूं, जौ आदि मन्दे हों। नमक, रस, धान्य में कुछ तेजी। नारियल, मुंज, बांस, नील आदि तेज हों। लालचन्दन, रसादि पदार्थों में तेजी। चान्दी एवम् रुई में घटाबढ़ी हो। लवणादि सब रस तेज हों। १६ सितंबर के लगभग नारियल, सुपारी, मजीठ, लाल वस्त्र [illegible]

कुण्डली सूर्योदय (१८ सितं.)

७ | शु. ५ चं. | ८ | सू. ६ बु. श. | ४ के. | ९ | मं. ३ | रा. गु. १० | १२ | २ | ११ | १

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १८ सितंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	४	२	५	९	४	५	९	३
१	२०	२०	६	२४	२	१	३	३
१३	४०	१७	९	११	५२	१	११	११
२८	५	३६	२	५४	४७	२६	३८	३८
५८	८६८	३५	६२	४	७३	७	३	३
३५	३४	१४	५४	४१	२	२६	११	११
		मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०६६, शाक १९३१, आश्विन शुक्ल पक्ष १३

(१९ सितम्बर से ४ अक्तूबर तक, सन् २००९ ई.) दक्षिणायन, उत्तर–दक्षिणगोल, शरद् ऋतु।

२७ सितं. के बाद बु. पूर्व में दिखाई देने लगेगा। श. अस्त है। प्रातः शु. पूर्व क्षितिज से ऊपर, मं. पूर्व कपाल में याम्योत्तरवृत्त की ओर बढ़ता दीखेगा। सायं गु. याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. आश्विन	अं. सितंबर	श. भाद्रपद	मु. रमज़ान	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३०	१६	१	श.	३९	६	उ.फा.	१८	३४	शु.	४८	५	किं.	१२	५	४	१९	२८	२८	कन्या			६	१३	१८	१९	५	२	१२	३	प्लूटो मूल ३ में ५६/५४, मातामह-मातामही (A)
३०	१२	२	र.	३४	२०	हस्त	१५	११	ब्र.	४१	३८	बा.	६	४३	५	२०	२९	२९	तुला	४४	२	६	१३	१८	१८	५	३	१०	४१	चन्द्रदर्शन, मु. ३०,
३०	७	३	चं.	३१	८	चित्रा	१३	१५	ऐं.	३६	२८	तै.	२	४४	६	२१	३०	श.१	तुला			६	१४	१८	१७	५	४	९	२०	शव्वाल मु. प्रा.,
३०	२	४	मं.	२९	४६	स्वा.	१३	४	वै.	३२	४६	व.	०	२७	७	२२	३१	२	वृश्चि.	५९	१२	६	१४	१८	१५	५	५	८	१	भ.०/२७ से २६/४६ तक, सूर्य सायन तुला में (B)
२९	५८	५	बु.	३०	२५	विशा.	१४	४८	वि.	३०	३९	ब.	०	६	८	२३	आ.१	३	वृश्चि.			६	१५	१८	१४	५	६	६	४५	उपाङ्गललिता व्रत, शक आश्विन प्रा.,
२९	५३	६	गु.	३३	२	अनु.	१८	२८	प्री.	३०	४	कौ.	१	४३	९	२४	२	४	वृश्चि.			६	१६	१८	१३	५	७	५	२९	वक्री बुध सिंह में ५/१५,
२९	४८	७	शु.	३७	२४	ज्ये	२३	५५	आ.	३०	५०	ग.	५	१३	१०	२५	३	५	धनु	२३	५५	६	१६	१८	१२	५	८	४	१६	भ.३७/२४ बाद,
२९	४४	८	श.	४३	६	मूल	३०	४२	सौ.	३२	३८	वि.	१०	१५	११	२६	४	६	धनु			६	१७	१८	१०	५	९	३	५	भ. १०/१५ तक, सूर्य हस्त में ५६/०६, शुक्र पू.फा.(C)
२९	३९	९	र.	४९	३२	पू.षा.	३८	१८	शो.	३५	३	बा.	१६	१९	१२	२७	५	७	मकर	५५	१६	६	१७	१८	९	५	१०	१	५४	बुध पूर्व में उदित ३०/३३, महानवमी (पूजा/ (D)
२९	३५	१०	चं.	५६	२	उ.षा.	४६	४	अ.	३७	३८	तै.	२२	४७	१३	२८	६	८	मकर			६	१८	१८	८	५	११	०	४६	विजयादशमी(दशहरा), सरस्वती के लिए बलिदान, (E)
२९	३०	११	मं.	६०	०	श्रव.	५३	२४	सु.	३९	५५	व.	२९	०	१४	२९	७	९	मकर			६	१९	१८	६	५	११	५९	४०	भ. २६/०० बाद, बुध मार्गी ३१/०४ , सरस्वती (F)
२९	२५	११	बु.	१	५८	धनि.	५९	४७	धृ.	४१	३२	वि.	१	५८	१५	३०	८	१०	कुम्भ	२६	४४	६	१९	१८	५	५	१२	५८	३५	भ. १/५८ तक, पंचक प्रारम्भ २६/४४, पापांकुशा (G)
२९	२१	१२	गु.	६	५२	शत.	६०	०	शू.	४२	११	बा.	६	५२	१६	अ.१	९	११	कुम्भ			६	२०	१८	४	५	१३	५७	३२	वक्री नेप्च्यून धनि. २ मकर में (H)
२९	१६	१३	शु.	१०	२६	शत.	४	५४	गं.	४१	४६	तै.	१०	२६	१७	२	१०	१२	मीन	५२	५१	६	२०	१८	३	५	१४	५६	३०	जन्मदिन श्रीमहात्मा गान्धी,
२९	१२	१४	श.	१२	३४	पू.भा.	८	३७	वृ.	४०	१२	व.	१२	३४	१८	३	११	१३	मीन			६	२१	१८	२	५	१५	५५	३१	भ. १२/३४ से ४२/५५ तक, वक्री गुरु श्रव. ४ में (I)
२९	७	१५	र.	१३	१६	उ.भा.	१०	५८	ध्रु.	३७	३४	ब.	१३	१६	१९	४	१२	१४	मीन			६	२२	१८	०	५	१६	५४	३४	बुध कन्या में ५३/१६, महर्षि वाल्मीकि जयन्ती, (J)

(A) (नाना-नानी) का महालय श्राद्ध, शारद नवरात्र प्रारम्भ, कलशस्थापन, (B) ५१/२५, विषुवदिन, दक्षिणगोल प्रारम्भ, (C) में ३१/४३, महाष्टमी, श्रीदुर्गाष्टमी, सरस्वती आवाहन, (D) बलिदानार्थ),सरस्वती पूजन, नवरात्र समाप्त, (E) आयुधपूजा, अपराजितापूजन, सीमोल्लंघन, श्रीमाधवाचार्य जयन्ती, (F) विसर्जन, भरतमिलाप,(G) एकादशी व्रत (स.), (H) ५६/१५, प्रदोषव्रत, अक्तूबर प्रा., (I)१२/२७, वक्री यूरेनस पू.भा. ३ कुम्भ में ४१/१५, शरत् पूर्णिमा, कोजागर व्रत, श्री सत्यनारायण व्रत, (J) कार्त्तिकस्नान प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २६ सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	२	४	९	४	५	९	३
९	६	२४	२८	२३	१२	२	२	२
३	५०	५५	४०	३६	३८	१	४६	४६
५	४९	९	३	१६	४७	१६	१२	१२
५८	७१३	३३	३०	३	७३	७	३	३
५०	३०	५९	१२	१५	३०	२६	११	११
		मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
४ उ.फा.	३ मूल	२ पुन.	१ उ.फा.	१ धनि.	४ मघा	२ उ.फा.	२ उ.षा.	४ पुन.

कुण्डली सूर्योदय (२६ सितं.)

७ | ५ बु. शु. | सू. श. ६ | ४ के. | ८ | ९ चं. | मं. ३ | १० गु. रा. | १२ | २ | ११ | १

लोकभविष्य:- प्रतिपदा शनिवारी है, वक्री बुध सिंहस्थ शुक्र के साथ मेल कर रहा है। शनि-मंगल का दशम-चतुर्थ-सम्बन्ध मुस्लिम राष्ट्रों के लिए भयावह स्थिति बना रहा है। चीन-अफग़ानिस्तान आदि मुस्लिम राष्ट्रविशेष, रूस, जापान एवं पश्चिमी भूभाग पर भयंकर भूकम्प, तूफ़ान, प्राकृतिक प्रकोप से हानि के योग हैं। २७ सितम्बर को बुध के उदित होने पर पक्षान्त तक भी कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि एवं किसी विशिष्ट व्यक्ति का पद रिक्त हो।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में चान्दी, सोना, सूत, रुई, देवदारु, खट्टे पदार्थ एवं कपूर आदि पदार्थों में तेजी। नमक, हरड़, हींग आदि भी तेज रहें। गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, मूंग, चना में मन्दी बने। रुई और चान्दी में घटाबढ़ी हो। सुगन्धित वस्तुएं तेज हों। ४ अक्तूबर के लगभग रुई, चान्दी में मन्दी; शक्कर, हल्दी आदि में तेजी बने। आकाश-लक्षण:- सितंबर २२, २४, २६, २९; अक्तूबर ३, ४ को सिक्किम, शिलांग व आसाम के कुछ भागों में बूंदा-बांदी और बादलचाल के योग हैं।

कुण्डली सूर्योदय (४ अक्तू.)

७ | ५ बु. शु. | सू. श. ६ | ४ के. | ८ | ९ | मं. ३ | १० गु. रा. | चं. १२ | २ | ११ | १

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ४ अक्तूबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	११	२	४	९	४	५	९	३
१६	१३	२९	२९	२३	२२	३	२	२
५४	५०	२२	१६	१८	२८	०	२०	२०
३४	१८	१६	१	३४	१५	२७	४६	४६
५९	७८२	३२	४७	१	७३	७	३	३
५	५	३६	३६	४४	५४	१६	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
३ हस्त	४ उ.भा.	३ पुन.	१ उ.फा.	४ श्रव.	३ पू.फा.	२ उ.फा.	२ उ.षा.	४ पुन.

६ अक्तूबर से श. पूर्व में दृश्य होगा और १६ अक्तूबर को बु. पूर्व में लुप्त हो जाएगा। प्रातः शु. पूर्व क्षितिज पर तथा मं. पूर्व कपाल में एवम् सायं गु. पूर्व कपाल में दिखाई देगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. आश्वि.	अं. अक्टू.	श. आश्वि.	मु. शव्वाल	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२९	२	१	चं.	१२	४१	रेव.	१२	३	व्या.	३३	५९	कौ.	१२	४१	२०	५	१३	१५	मेष	१२	३	६	२२	१७	५९	५	१७	५३	३८	पंचक समाप्त १२/०३, मंगल कर्क में ७/१६,
२८	५८	२	मं.	११	०	अश्वि.	१२	३	ह.	२९	३५	ग.	११	०	२१	६	१४	१६	मेष			६	२३	१७	५८	५	१८	५२	४५	भ. ३६/४३ बाद, शनि उ.फा. ३ में ३८/१५, (A)
२८	५३	३	बु.	८	२६	भर.	११	११	व.	२४	३२	वि.	८	२६	२२	७	१५	१७	वृष	२५	५२	६	२३	१७	५७	५	१९	५१	५४	भ. ८/२६ तक, शुक्र उ.फा. में २२/००, करक (B)
२८	४९	४	गु.	५	१०	कृत्ति.	९	३८	सि.	१८	५७	बा.	५	१०	२३	८	१६	१८	वृष			६	२४	१७	५५	५	२०	५१	५	
२८	४४	५	शु.	१	२२	रोहि.	७	३३	व्य.	१२	५६	तै.	१	२२	२४	९	१७	१९	मिथुन	३६	२१	६	२५	१७	५४	५	२१	५०	१९	भ. ५७/०६ बाद,
अवम		६	शु.	५७	६	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	षष्ठी तिथिक्षय,
२८	३९	७	श.	५२	२७	मृग.	५	२	व. प.	६ ५९	३५ ५७	वि.	२४	४६	२५	१०	१८	२०	मिथुन			६	२५	१७	५३	५	२२	४९	३४	भ. २४/४६ तक, सूर्य चित्रा में २८/३०, शुक्र (C)
२८	३५	८	र.	४७	२८	आर्द्रा पुन.	२ ५८	१० ५६	शि.	५३	०	बा.	१९	५७	२६	११	१९	२१	कर्क	४४	४५	६	२६	१७	५२	५	२३	४८	५३	मंगल पुष्य में २३/२८, अहोई अष्टमी (पं.),
२८	३०	९	चं.	४२	१०	पुष्य	५५	२५	सि.	४५	५०	तै.	१४	४९	२७	१२	२०	२२	कर्क			६	२७	१७	५१	५	२४	४८	१३	बुध हस्त में ४६/४५,
२८	२६	१०	मं.	३६	३९	आश्ले.	५१	४१	सा.	३८	२८	व.	९	२४	२८	१३	२१	२३	सिंह	५१	४१	६	२७	१७	५०	५	२५	४७	३६	भ.६/२४ से ३६/३६ तक, गुरु मार्गी ८/५२,
२८	२१	११	बु.	३१	१	मघा	४७	५२	शु.	३१	०	ब.	३	५०	२९	१४	२२	२४	सिंह			६	२८	१७	४८	५	२६	४७	१	रमा एकादशी व्रत (स.),
२८	१७	१२	गु.	२५	२४	पू.फा.	४४	९	शु.	२३	३३	तै.	२५	२४	३०	१५	२३	२५	कन्या	५८	१६	६	२९	१७	४७	५	२७	४६	२८	यमप्रीत्यर्थ दीपदान, प्रदोष व्रत, गोवत्स द्वादशी,
२८	१२	१३	शु.	२०	४	उ.फा.	४०	४७	ब्र.	१६	१९	व.	२०	४	३१	१६	२४	२६	कन्या			६	२९	१७	४६	५	२८	४५	५७	भ. २०/०४ से ४७/४३ तक, बुध पूर्व में अस्त (D)
२८	८	१४	श.	१५	१७	हस्त	३८	५	ऐं.	९	३०	श.	१५	१७	का.१	१७	२५	२७	कन्या			६	३०	१७	४५	५	२९	४५	२९	सं. सूर्य तुला में १२/०७, मु. ३०, पुण्यकाल २८/०४ (E)
२८	३	३०	र.	११	२०	चित्रा	३६	२०	वै. वि.	३ ५८	२१ ७	ना.	११	२०	२	१८	२६	२८	तुला	७	३	६	३१	१७	४४	६	०	४५	४	शुक्र हस्त में ७/३७, श्रीमहावीर निर्वाण दिवस(जैन), (F)

(A) शनि उदित २२/५२, (B) चतुर्थी (करवा चौथ) (चन्द्रोदय १९ घं./४७ मि.), श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, (C) कन्या में ३/४६, (D)५१/४८, धनत्रयोदशी, श्रीहनुमान् जयन्ती (उ.भा.), (E) तक, नरकचतुर्दशी (पूर्वारुणोदय वाली), दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजा, (F) बलिपूजा, गोवर्धनपूजा (देखें पृष्ठ 94), अन्नकूट, गोक्रीड़ा,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ११ अक्तूबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	३	५	९	५	५	९	३
२३	१८	३	७	२३	१	३	१	१
४८	५७	६	११	१०	६	५१	५८	५८
५३	१६	३२	५६	३७	४१	१९	३१	३१
५९	८४४	३१	८८	०	७४	७	३	३
२१	५३	१५	२८	२०	१५	१०	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
चित्रा १	आर्द्रा ४	पुन. ४	उ.फा. ४	श्रव. ४	उ.फा. २	उ.फा. ३	उ.षा. २	पुन. ४

कुण्डली सूर्योदय (११ अक्तू.)

७ | ५ | सू. बु. शु. ६ श. | ४ मं. के. | ८ | ६ | चं. ३ | १० गु. रा. | १२ | २ | ११ | १

लोकभविष्यः- पक्षारम्भ में ही मंगल अपनी नीच राशि कर्क में आकर गुरु-राहु के साथ समसप्तकयोग बना रहा है। अमावस रविवारी है। ये सब जनजीवन के लिए भयावह स्थिति को बनाते हैं- " कार्तिकस्य त्वमावस्या रविवारेण संयुता। शनि-भौमयुता वापि सर्वलोक-भयावहा।।" यानदुर्घटना, अग्निकाण्ड, उग्रवादजन्य परेशानी से शासन चिन्तित हो। कहीं १७, १८ अक्तूबर को भूकम्प-तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि भी हो।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- पक्षारम्भ में रुई, तेल, सरसों आदि मन्दे हों। लोहा, गुड़, खाण्ड, चान्दी, सभी प्रकार के अनाजों में तेजी बने। १० अक्तूबर के लगभग सोना, चान्दी, अरहर, नारियल, कपूर एवम् लाल कपड़े आदि में तेजी हो। १६ अक्तूबर के लगभग घृत मन्दे हों। रुई एवम् सोने में घटाबढ़ी चले। श्रीफल एवम् सुपारी में तेजी रहे।

आकाश लक्षणः- अक्तूबर ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १६, १७, १८ को दक्षिण-पूर्वी तामिलनाडु एवम् कर्नाटक के कुछ क्षेत्रों में बादलचाल के योग हैं। उत्तरी भारत में इस समय विशेष वर्षा के योग नहीं हैं।

कुण्डली सूर्योदय (१८ अक्तू.)

८ | चं. बु. ६ शु. श. | ६ | सू. ७ | ५ | गु. रा. १० | मं. ४ के. | ११ | १ | ३ | १२ | २

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १८ अक्तूबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	५	३	५	९	५	५	९	३
०	२७	६	१८	२३	९	४	१	१
४५	४८	४०	२०	१२	४७	४०	३६	३६
४	१५	४५	२८	२७	२१	५७	१६	१६
५९	८१७	२९	१०१	१	७४	६	३	३
३६	४०	४१	१०	४	३३	५८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
चित्रा ३	चित्रा २	पुष्य २	हस्त ३	श्रव. ४	उ.फा. ४	उ.फा. ३	उ.षा. २	पुन. ४

बादलचाल के योग हैं। उत्तरी भारत में इस समय विशेष वर्षा के योग नहीं हैं।

श्री वि. सं. २०६६, शाक १९३१, कार्तिक शुक्ल पक्ष १५

(१९ अक्तूबर से २ नवम्बर तक, सन् २००९ ई.) दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद्–हेमन्त ऋतु।

बु. अस्त है। प्रातः शु. पूर्व क्षितिज में उदय होता दीखेगा तथा इससे ऊपर नीलवर्ण श. चमक रहा होगा। इस समय मं. याम्योत्तरवृत्त में होगा। सायं गु. याम्योत्तरवृत्त में होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. कार्त्तिक	अं. अक्तूबर	श. आश्वि.	मु. शव्वाल	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२७	५९	१	चं.	८	३५	स्वा.	३५	५३	प्री.	५४	०	ब.	८	३५	३	१९	२७	२९	तुला			६	३१	१७	४३	६	१	४४	३९	भाई दूज, यम द्वितीया,
२७	५४	२	मं.	७	१८	विशा.	३७	०	आ.	५१	१०	कौ.	७	१८	४	२०	२८	३०	वृश्चि.	२१	३४	६	३२	१७	४२	६	२	४४	१६	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, बुध चित्रा में ५४/१८, (A)
२७	५०	३	बु.	७	४४	अनु.	३९	५०	सौ.	४९	४४	ग.	७	४४	५	२१	२९	जि.१	वृश्चि.			६	३३	१७	४१	६	३	४३	५६	भ. ३८/४९ बाद, जिल्काद मु. प्रा.,
२७	४६	४	गु.	९	५८	ज्ये.	४४	२४	शो.	४९	३८	वि.	९	५८	६	२२	३०	२	धनु	४४	२४	६	३४	१७	४०	६	४	४३	३८	भ. ९/५८ तक, स्वामी रामतीर्थ जयन्ती,
२७	४१	५	शु.	१३	५५	मूल	५०	२७	अ.	५०	४५	बा.	१३	५५	७	२३	का.१	३	धनु			६	३४	१७	३९	६	५	४३	२१	सूर्य स्वाती में ५४/१२, गुरु धनि. १ में ३/४९, (B)
२७	३७	६	श.	१९	१९	पू.षा.	५७	४०	सु.	५२	४४	तै.	१९	१९	८	२४	२	४	धनु			६	३५	१७	३८	६	६	४३	७	बुध तुला में ४९/१८, सूर्य षष्ठी (बिहार),
२७	३३	७	र.	२५	४०	उ.षा.	६०	०	धृ.	५५	११	व.	२५	४०	९	२५	३	५	मकर	१४	३४	६	३६	१७	३७	६	७	४२	५४	भ. २५/४० से ५९/०० तक,
२७	२८	८	चं.	३२	१८	उ.षा.	५	२३	शू.	५७	३६	ब.	३२	१८	१०	२६	४	६	मकर			६	३७	१७	३६	६	८	४२	४३	गोपाष्टमी,
२७	२४	९	मं.	३८	३१	श्रव.	१३	०	गं.	५९	३२	बा.	५	२४	११	२७	५	७	कुम्भ	४६	३५	६	३७	१७	३५	६	९	४२	३३	पंचक प्रारम्भ ४६/३५, अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी,
२७	२०	१०	बु.	४३	४२	धनि.	१९	५१	वृ.	६०	०	तै.	११	६	१२	२८	६	८	कुम्भ			६	३८	१७	३४	६	१०	४२	२४	बुध स्वा. में ४६/२२, शुक्र चित्रा (C)
२७	१६	११	गु.	४७	२३	शत.	२५	२४	वृ.	०	३३	व.	१५	३२	१३	२९	७	९	कुम्भ			६	३९	१७	३३	६	११	४२	१८	भ. १५/३२ से ४७/२३ तक, देवप्रबोधिनी (D)
२७	११	१२	शु.	४९	१९	पू.भा.	२९	२०	ध्रु. व्या.	० ५८	२२ ४९	ब.	१८	२१	१४	३०	८	१०	मीन	१३	३१	६	४०	१७	३२	६	१२	४२	१३	तुलसी विवाह, देवप्रबोधोत्सव, चातुर्मास्य व्रत-नियमादि (E)
२७	७	१३	श.	४९	२९	उ.भा.	३१	३३	ह.	५५	५४	कौ.	१९	२४	१५	३१	९	११	मीन			६	४०	१७	३१	६	१३	४२	१०	शनिप्रदोष व्रत,
२७	३	१४	र.	४७	५९	रेव.	३२	६	व.	५१	४२	ग.	१८	४४	१६	न.१	१०	१२	मेष	३२	६	६	४१	१७	३०	६	१४	४२	९	भ. ४७/५९ बाद, पंचक समाप्त ३२/०६, वैकुण्ठ (F)
२६	५९	१५	चं.	४५	४	अश्वि.	३१	१२	सि.	४६	२३	वि.	१६	३१	१७	२	११	१३	मेष			६	४२	१७	३०	६	१५	४२	११	भ. १६/३१ तक, त्रिपुरोत्सव, श्रीगुरुनानक जयन्ती, (G)

(A) श्रीविश्वकर्मा पूजा, (B) सूर्य सायन वृश्चिक में १४/०७, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, शक कार्त्तिक प्रा., ज्ञान पंचमी, (C) में ४९/५५, (D)एकादशी व्रत(स.), भीष्मपंचक प्रारम्भ, (E) समाप्त, (F) चतुर्दशी, (G) रथयात्रा (जैन), मेला पुष्करराज (राज.), कार्त्तिक पूर्णिमा, कार्त्तिकस्नान समाप्त, भीष्मपंचक समाप्त, श्री सत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २६ अक्तूबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	९	३	६	९	५	५	९	३
८	८	१०	१	२३	१९	५	१	१
४२	२३	३१	५५	२६	४४	३५	१०	१०
४३	५१	१५	१४	३४	३६	३८	५०	५०
५९	७०८	२७	१०१	२	७४	६	३	३
५१	४१	३८	१९	३९	४७	३९	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
स्वाती १	उ.षा. ४	पुष्य ३	चित्रा ३	धनि. १	हस्त ३	उ.फा. ३	उ.षा. २	पुन. ४

कुण्डली सूर्योदय (२६ अक्तू.)

८ | ६ शु. श. | ९ | सू. ७ बु. | ५ | चं. १० गु. रा. | मं. ४ के. | ११ | १ | ३ | १२ | २

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच सोमवार भारत में धन-धान्यसमृद्धिप्रद एवं जनता में सुख-शान्तिकारक हैं। लेकिन मंगल-राहु का समसप्तक किसी प्रान्त में उग्रवादजन्य विभीषिका को जन्म देगा। मकर राशि मुस्लिम राष्ट्रों की प्रतिनिधि है। अतः पाक-इराक-ईरान, अफ़ग़ानिस्तान आदि में विस्फोट आदि से जनधनहानि संभव है। किसी प्रान्त या देशविशेष में सत्ता में गड़बड़ी एवं राजनैतिक हलचल रहे।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में रुई और चान्दी में घटाबढ़ी हो। २३ अक्तूबर के लगभग बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, राई, हींग, गुग्गुल में तेजी बने। चान्दी, मूंगफली में मन्दी रहे। २९ अक्तूबर के लगभग गेहूं, चावल, जौ, चना आदि में मन्दी और रुई में घटाबढ़ी हो।

कुण्डली सूर्योदय (२ नवं.)

८ | ६ शु. श. | ९ | सू. ७ बु. | ५ | १० गु. रा. | मं. ४ के. | ११ | १ चं. | ३ | १२ | २

आकाश लक्षणः- अक्तूबर २०, २३, २४, २८, २९ को पर्वतीय भूभाग पर वर्षा के योग हैं। उत्तरी भारत में शीत का प्रभाव बढ़ने लगेगा।

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २ नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	०	३	६	९	५	५	९	३
१५	५	१३	१३	२३	२८	६	०	०
४२	३५	३८	३६	४९	२८	२१	४८	४८
११	८	४३	४	१०	४१	१३	३५	३५
६०	८१९	२५	९८	३	७४	६	३	३
२	२५	३६	२४	५९	५८	१९	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
स्वाती ३	अश्वि. २	पुष्य ४	स्वाती ३	धनि. १	चित्रा २	उ.फा. ३	उ.षा. २	पुन. ४

श्री वि. सं. २०६६, शाक १९३१, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १६

(३ से १६ नवम्बर तक, सन् २००९ ई.) दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।

बु. अस्त है। प्रातः शु. पूर्व क्षितिजलग्न और इससे काफी ऊपर श. होगा। मं. इस समय याम्योत्तरवृत्त में होगा। सायं गु. याम्योत्तरवृत्त से कुछ पश्चिम की ओर दिखाई देगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. कार्तिक	तारीखें अं. नवम्बर	तारीखें श. कार्तिक	तारीखें मु. जिल्का.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२६	५५	१	मं.	४१	२	भर.	२९	६	व्य.	४०	११	बा.	१३	३	१८	३	१२	१४	वृष	४३	२६	६	४३	१७	२९	६	१६	४२	११	शुक्र तुला में १०/०१,
२६	५१	२	बु.	३६	१२	कृत्ति.	२६	१०	व.	३३	२१	तै.	८	३७	१९	४	१३	१५	वृष			६	४४	१७	२८	६	१७	४२	१५	शनि उ.फा. ४ में ५७/३३, नेप्च्यून मार्गी ४२/२८,
२६	४७	३	गु.	३०	५३	रोहि.	२२	४१	प.	२६	५	व.	३	३२	२०	५	१४	१६	मिथुन	५०	५०	६	४४	१७	२७	६	१८	४२	२२	भ. ३/३२ से ३०/५३ तक, बुध विशा. में (A)
२६	४३	४	शु.	२५	१९	मृग.	१८	५५	शि.	१८	३७	बा.	२५	१९	२१	६	१५	१७	मिथुन			६	४५	१७	२६	६	१९	४२	३०	सूर्य विशा. में १४/१८,
२६	३९	५	श.	१९	४४	आर्द्रा	१५	७	सि.	११	७	तै.	१९	४४	२२	७	१६	१८	कर्क	५७	२२	६	४६	१७	२६	६	२०	४२	४०	
२६	३६	६	र.	१४	१७	पुन.	११	२६	सा. शु.	३ ५६	४२ २८	व.	१४	१७	२३	८	१७	१९	कर्क			६	४७	१७	२५	६	२१	४२	५२	भ.१४/१७ से ४१/४३ तक, शुक्र स्वा. में २६/३७,
२६	३२	७	चं.	९	४	पुष्य	७	५८	शु.	४९	२६	ब.	९	४	२४	९	१८	२०	कर्क			६	४८	१७	२४	६	२२	४३	६	मंगल आश्ले. में १६/४२, श्रीकालाष्टमी(श्रीभैरवाष्टमी),
२६	२८	८	मं.	४	८	आश्ले.	४	४७	ब्र.	४२	४०	कौ.	४	८	२५	१०	१९	२१	सिंह	४	४७	६	४९	१७	२४	६	२३	४३	२४	
अवम		९	मं.	५९	३५	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	नवमी तिथिक्षय,
२६	२४	१०	बु.	५५	२३	मघा पू.फा.	१ ५९	५६ ३१	ऐं.	३६	१२	व.	२७	२९	२६	११	२०	२२	सिंह			६	४९	१७	२३	६	२४	४३	४१	भ.२७/२६ से ५५/२३ तक,
२६	२१	११	गु.	५१	४०	उ.फा.	५७	३३	वै.	३०	४	ब.	२३	३१	२७	१२	२१	२३	कन्या	१३	५७	६	५०	१७	२३	६	२५	४४	१	बुध वृश्चिक में ८/१८, उत्पन्ना एकादशी व्रत (स.),
२६	१७	१२	शु.	४८	३३	हस्त	५६	१०	वि.	२४	२३	कौ.	२०	६	२८	१३	२२	२४	कन्या			६	५१	१७	२२	६	२६	४४	२३	
२६	१४	१३	श.	४६	१२	चित्रा	५५	३४	प्री.	१९	१४	ग.	१७	२२	२९	१४	२३	२५	तुला	२५	४४	६	५२	१७	२१	६	२७	४४	४७	भ. ४६/१२ बाद, बुध अनु. में १५/२२, बालदिवस,(B)
२६	१०	१४	र.	४४	४८	स्वाती	५५	५५	आ.	१४	४६	वि.	१५	३०	३०	१५	२४	२६	तुला			६	५३	१७	२१	६	२८	४५	१३	भ. १५/३० तक,
२६	७	३०	चं.	४४	३४	विशा.	५७	२७	सौ.	११	८	च.	१४	४१	मा.१	१६	२५	२७	वृश्चि.	४१	५६	६	५४	१७	२०	६	२९	४५	४२	सं. सूर्य वृश्चिक में १०/४२, मु. ४५, पुण्यकाल सारा (C)

(A) ५२/३३, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, (B) शनि प्रदोष व्रत, (C) दिन, सोमवती अमा,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १० नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	३	६	६	६	५	६	३
२३	२८	१६	२६	२४	८	७	०	०
४३	६	५४	३१	२६	२६	१०	२३	२३
२४	४८	१८	३५	६	१०	१६	८	८
६०	८२६	२२	६५	५	७५	५	३	३
१८	५७	५३	१३	२५	६	५२	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदय (१० नवं.)

८ | ६ श. | ९ | सू. ७ बु. शु. | ५ | १० गु. रा. | मं. ४ के. चं. | ११ | १ | ३ | १२ | २

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच मंगलवार एवं पांच बुधवार हैं। मंगल कर्क राशि में गुरु, राहु, केतु से सम्बन्ध बना रहा है। अतः मुस्लिम राष्ट्रविशेष, नेपाल एवं उड़ीसा, आसाम, नागालैण्ड, बिहार आदि में कहीं उग्रवाद के कारण भारी जनधनहानि संभव है। कहीं प्रतिष्ठितव्यक्ति का निधन हो, कहीं सत्ता में परिवर्तन के भी योग बनें- "यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्॥" पांच बुधवारों का फल पूर्वोत्तरी भूभाग पर सुख-सुभिक्ष का सूचक है। शनि कन्या राशि में एवं नीच राशि में सूर्य की स्थिति राजनैतिक क्षेत्र में विशेष घटनाचक्र को जन्म देगी।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में चान्दी, सोना, अफीम, गुड़, खाण्ड में घटाबढ़ी रहे। तुष, धान्य तेज। ६ नवंबर के लगभग चावल, गेहूं, मसूर, सरसों, तिल, एरण्ड एवम् अफीम में घटाबढ़ी हो। अन्न के भाव मन्दे हो। ६ नवंबर के करीब चान्दी में झटके से खासी मन्दी बने। १४ नवंबर के लगभग सोना, चान्दी के भावों में मन्दा हो। **आकाश लक्षणः-** नवंबर ३, ४, ५, ६, ८, ९, १२, १४, १६ को काश्मीर, भूटान, शिलांग, हि.प्र. एवम् उत्तर भारत के कुछ भागों में वायुवेग के साथ बादलचाल वर्षा व बूंदाबांदी के योग हैं।

कुण्डली सूर्योदय (१६ नवं.)

८ बु. | ६ श. | ९ | सू. ७ चं. शु. | ५ | १० गु. रा. | मं. ४ के. | ११ | १ | ३ | १२ | २

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १६ नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	३	७	९	६	५	९	३
२९	२०	१९	५	२५	१६	७	०	०
४५	८	५	५८	१	०	४४	४	४
४२	१३	४५	१६	१८	२७	३३	४	४
६०	७७९	२०	९३	६	७५	५	३	३
२९	४८	३०	२९	२७	१७	२९	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

श्री वि. सं. २०६६, शाक १९३१, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १७

(१७ नवम्बर से २ दिसम्बर तक, सन् २००९ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।

बु. २८ नवं. से पश्चिम में दृश्य हो जाएगा। सूर्योदय से पूर्व शु. पूर्व क्षितिज पर और श. पूर्व कपाल में चमकते दीखेंगे; मं. याम्योत्तरवृत्त में होगा। सायं गु. पश्चिम कपाल में दिखाई देगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. मार्गशीर्ष	अं. नवंबर	श. कार्तिक	मु. ज़िल्हिज्जा	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२६	४	१	मं.	४५	४१	अनु.	६०	०	शो.	८	२७	कि.	१५	७	२	१७	२६	२८	वृश्चि.			६	५४	१७	२०	७	०	४६	९	राहु उ.षा. १ धनु, केतु पुन. ३ मिथुन में १३/०७,
२६	०	२	बु.	४८	१६	अनु.	०	१८	अ.	६	५१	बा.	१६	५८	३	१८	२७	२९	वृश्चि.			६	५५	१७	१९	७	१	४६	४०	चन्द्र दर्शन, मु. १५,
२५	५७	३	गु.	५२	१९	ज्ये.	४	३२	सु.	६	२२	तै.	२०	१७	४	१९	२८	जि१	धनु	४	३२	६	५६	१७	१९	७	२	४७	१३	सूर्य अनु. में २८/५२, शुक्र विशा. में ७/२१, (A)
२५	५४	४	शु.	५७	४०	मूल	१०	१०	धृ.	६	५८	व.	२४	५९	५	२०	२९	२	धनु			६	५७	१७	१९	७	३	४७	४६	भ. २४/५६ से ५७/४० तक,
२५	५१	५	श.	६०	०	पू.षा.	१६	५९	शू.	८	३१	ब.	३०	४९	६	२१	३०	३	मकर	३३	५१	६	५८	१७	१८	७	४	४८	२२	
२५	४८	५	र.	३	५७	उ.षा.	२४	३४	ग.	१०	४२	बा.	३	५७	७	२२	मा.१	४	मकर			६	५९	१७	१८	७	५	४८	५८	बुध ज्येष्ठा में ५१/१०, सूर्य सायन धनु में ७/१५, (B)
२५	४५	६	च.	१०	४४	श्रव.	३२	२५	वृ.	१३	११	तै.	१०	४४	८	२३	२	५	मकर			७	०	१७	१८	७	६	४९	३६	स्कन्द-गुह-चम्पा षष्ठी, मित्र सप्तमी(देखें पृ. 94),
२५	४२	७	मं.	१७	१९	धनि.	३९	५३	धु.	१५	३१	व.	१७	१९	९	२४	३	६	कुम्भ	६	१४	७	०	१७	१७	७	७	५०	१५	भ. १७/१६ से ५०/१५ तक, पंचक प्रारम्भ (C)
२५	४०	८	बु.	२३	३	शत.	४६	२०	व्या.	१७	१४	ब.	२३	३	१०	२५	४	७	कुम्भ			७	१	१७	१७	७	८	५०	५६	
२५	३७	९	गु.	२७	२३	पू.भा.	५१	१८	ह.	१७	५५	कौ.	२७	२३	११	२६	५	८	मीन	३५	१४	७	२	१७	१७	७	९	५१	३६	
२५	३४	१०	शु.	२९	५४	उ.भा.	५४	२५	व.	१७	१५	ग.	२९	५४	१२	२७	६	९	मीन			७	३	१७	१७	७	१०	५२	१८	शुक्र वृश्चिक में ४/४८,
२५	३२	११	श.	३०	२४	रेव.	५५	३५	सि.	१५	५	व.	०	९	१३	२८	७	१०	मेष	५५	३५	७	४	१७	१७	७	११	५३	१	भ. ०/०६ से ३०/२४ तक, पंचक समाप्त ५५/३५,(D)
२५	२९	१२	र.	२८	५५	अश्वि.	५४	५२	व्य.	११	२१	बा.	२८	५५	१४	२९	८	११	मेष			७	५	१७	१६	७	१२	५३	४५	गुरु धनि. २ में १३/३०, शुक्र अनु. में ४३/५२, (E)
२५	२७	१३	चं.	२५	३६	भर.	५२	२८	व./प.	६/५९	८/३९	तै.	२५	३६	१५	३०	९	१२	मेष			७	६	१७	१६	७	१३	५४	३०	
२५	२५	१४	मं.	२०	४५	कृत्ति.	४८	४३	शि.	५२	३	व.	२०	४५	१६	दि.१	१०	१३	वृष	६	३६	७	६	१७	१६	७	१४	५५	१६	भ. २०/४५ से ४७/४५ तक, बुध मूल धनु में (F)
२५	२३	१५	बु.	१४	४३	रोहि.	४३	५९	सि.	४३	४१	ब.	१४	४३	१७	२	११	१४	वृष			७	७	१७	१६	७	१५	५६	५	सूर्य ज्येष्ठा में ३६/१६ ,

(A) ज़िल्हिज्ज मु. प्रा., (B) शक मार्गशीर्ष प्रा., (C)६/१४, बलिदान दिवस श्रीगुरु तेग़बहादुर जी (ना.शा.)(D) बुध पश्चिम में उदित ३८/२४, मोक्षदा एकादशी व्रत (स.), श्रीगीता जयन्ती, (E) प्रदोष व्रत, (F)३७/२५, यूरेनस मार्गी ४७/१२, श्रीदत्त जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत, दिसम्बर प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २५ नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	३	७	९	६	५	८	२
८	९	२१	१६	२६	२७	८	२६	२६
५०	५५	५३	५१	५	१८	३१	३५	३५
५६	१७	५३	३७	१०	२२	२१	२६	२६
६०	७२४	१६	९१	७	७५	४	३	३
४१	३८	१७	३६	५३	२३	५०	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अनु. २	श्रव. १	आश्ले. २	ज्ये. १	धनि. १	विशा. ३	उ.फा. ४	उ.षा. १	पुन. ३

कुण्डली सूर्योदय (२५ नवं.)

ग्रह स्थिति: ८ सू. बु.; ९ रा.; ७ शु.; ६ श.; ५; ४ मं.; ३ के.; २; १; १२; ११ चं.; १० गु.

लोकभविष्यः- इस पक्ष में शनि-राहु का दशम-चतुर्थसम्बन्ध, मंगल-राहु का षडष्टक है एवं मार्ग. शुक्ल एकादशी को शनिवार भी है। अतः कहीं खड़ी फसलों को हानि पहुंचे, कहीं भूकम्प, तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप, विस्फोट किंवा उग्रवादी प्रतिक्रिया से जनधनहानि के योग भी हैं। कहीं प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन या हत्याकाण्ड से शोक व्याप्त हो- "मार्गशुक्ल-एकादश्यां शनिवारो यदा भवेत्। जलशोषं प्रजानाशं छत्रभंगं विनिर्दिशेत्॥" राहु के धनुराशि में आने पर इस पक्ष से मंहगाई उत्तरोत्तर जोर पकड़ेगी, जिससे शासन की छवि बिगड़ेगी।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में सोना, चान्दी के भावों में मन्दा रहे। जौ, चना, धान्यों में तेजी बने। गुड़, खाण्ड आदि मन्दे हों। चावल आदि के भावों में घटाबढ़ी हो। नमक, सोना, चान्दी में घटाबढ़ी हो। २ दिसंबर के लगभग सोना, चान्दी, हींग, खाण्ड, चावल, पारा आदि में तेजी हो।

आकाश लक्षणः- नवंबर १७, १६, २२, २७, २६; दिसंबर १ को उत्तरी भारत में बादलचाल व वर्षा हो, शीत लहर जोर पकड़े। हि.प्र. एवम् काश्मीर में जोरदार वर्षा हो व हिमपात से शीत लहर का जोर बढ़े।

कुण्डली सूर्योदय (२ दिसं.)

ग्रह स्थिति: ८ सू. शु.; ९ बु. रा.; ७; ६ श.; ५; ४ मं.; ३ के.; २ चं.; १; १२; ११; १० गु.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१	३	८	९	७	५	८	२
१५	११	२३	०	२७	६	९	२६	२६
५६	४४	३६	२७	३	६	३	१३	१३
५	२५	४६	५४	२१	८	२८	११	११
६०	८७०	१२	८९	८	७५	४	३	३
४६	०	३०	४५	५२	२६	१५	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अनु. ४	रोहि. १	आश्ले. ३	मूल १	धनि. २	अनु. १	उ.फा. ४	उ.षा. १	पुन. ३

श्री वि. सं. २०६६, शाक १९३१, पौष कृष्ण पक्ष १८

(३ से १६ दिसम्बर तक, सन् २००९ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।

प्रातः सूर्योदय से पूर्व शु. पूर्व क्षितिज पर कुछ ही समय के लिए चमकता दिखाई देगा। इस समय श. पूर्व कपाल में और मं. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम की ओर झुका होगा। सायं गु. पश्चिम कपाल के मध्य में और बुध पश्चिम क्षितिज में होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. मार्गशीर्ष	अं. दिसम्बर	श. मार्गशीर्ष	मु. ज़िल्हिज्ज	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा. रा.	अं.	क.	वि.	
२५	२१	१	गु.	७	५२	मृग.	३८	३९	सा.	३४	४९	कौ.	७	५२	१८	३	१२	१५	मिथुन	११	२०	७	८	१७	१६	७	१६	५६	५२	
२५	१९	२	शु.	०	३७	आर्द्रा	३३	६	शु.	२५	४५	ग.	०	३७	१९	४	१३	१६	मिथुन			७	९	१७	१६	७	१७	५७	४२	भ. २६/५२ से ५३/१६ तक,
अवम		३	शु.	५३	१६	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	तृतीया तिथिक्षय,
२५	१७	४	श.	४६	८	पुन.	२७	४०	शु.	१६	४४	ब.	१९	४२	२०	५	१४	१७	कर्क	१३	५८	७	१०	१७	१६	७	१८	५८	३३	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
२५	१५	५	र.	३९	३०	पुष्य	२२	३७	ब्र. / ऐं.	८ / ५९	१ / ४७	कौ.	१२	४९	२१	६	१५	१८	कर्क			७	१०	१७	१६	७	१९	५९	२५	
२५	१३	६	चं.	३३	३४	आश्ले.	१८	१३	वै.	५२	९	ग.	६	३२	२२	७	१६	१९	सिंह	१८	१३	७	११	१७	१६	७	२१	०	१९	भ.३३/३४ बाद, नेप्च्यून धनि. ३ कुम्भ में ४७/१८,
२५	१२	७	मं.	२८	२९	मघा	१४	३७	वि.	४५	१४	वि.	१	१	२३	८	१७	२०	सिंह			७	१२	१७	१७	७	२२	१	१३	भ. १/०१ तक,
२५	११	८	बु.	२४	२१	पू.फा.	११	५७	प्री.	३९	५	कौ.	२४	२१	२४	९	१८	२१	कन्या	२६	२६	७	१३	१७	१७	७	२३	२	११	
२५	९	९	गु.	२१	१५	उ.फा.	१०	१६	आ.	३३	४५	ग.	२१	१५	२५	१०	१९	२२	कन्या			७	१३	१७	१७	७	२४	३	७	भ. ५०/१५ बाद, बुध पू.षा. में ४५/५४, शुक्र (A)
२५	८	१०	शु.	१९	१२	हस्त	९	३६	सौ.	२९	१५	वि.	१९	१२	२६	११	२०	२३	तुला	३९	४०	७	१४	१७	१७	७	२५	४	५	भ. १९/१२ तक, जन्मदिन श्रीपार्श्वनाथ (जैन),
२५	७	११	श.	१८	१४	चित्रा	९	५९	शो.	२५	३६	बा.	१८	१४	२७	१२	२१	२४	तुला			७	१५	१७	१७	७	२६	५	५	सफला एकादशी व्रत (स.),
२५	६	१२	र.	१८	२२	स्वा.	११	२६	अ.	२२	४८	तै.	१८	२२	२८	१३	२२	२५	वृश्चि.	५८	१५	७	१५	१७	१८	७	२७	६	५	प्रदोष व्रत,
२५	५	१३	चं.	१९	३७	विशा.	१३	५८	सु.	२०	५१	व.	१९	३७	२९	१४	२३	२६	वृश्चि.			७	१६	१७	१८	७	२८	७	७	भ. १९/३७ से ५०/५३ तक, शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ (B)
२५	४	१४	मं.	२२	२	अनु.	१७	३७	धृ.	१९	४७	श.	२२	२	पौ.१	१५	२४	२७	वृश्चि.			७	१७	१७	१८	७	२९	८	१०	सं. सूर्य मूल धनु में ४६/२८, मु. १५, पुण्यकाल (C)
२५	३	३०	बु.	२५	३६	ज्ये.	२२	२१	शू.	१९	३६	ना.	२५	३६	२	१६	२५	२८	धनु	२२	२१	७	१७	१७	१९	८	०	९	१५	

(A) ज्ये. में १९/४५, (B) ५/३०, (C) अगले दिन मध्याह्न तक,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ९ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	३	८	९	७	५	८	२
२३	२२	२४	१०	२८	१४	९	२८	२८
२	५५	५१	४४	८	५४	३१	५०	५०
११	४	३१	५०	१४	१७	२७	५५	५५
६०	८२६	८	८५	९	७५	३	३	३
५८	३०	७	१	४७	२९	३९	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ज्ये. २	पू.फा. ३	आश्ले. ३	मूल ४	धनि. २	अनु. ४	उ.फा. ४	उ.षा. १	पुन. ३

कुण्डली सूर्योदय (९ दिसं.)

- ८ — सू. शु.
- ९ — बु. रा.
- १० — गु.
- ११
- १२
- १
- २
- ३ — के.
- ४ — मं.
- ५ — चं.
- ६ — श.
- ७

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच गुरुवार हैं। पक्षमध्य से नेप्च्यून-शनि का षडष्टकयोग शुरु हो जाता है। पश्चिमी-गोलार्ध के देशों में कहीं युद्धाग्नि प्रज्वलित हो, कहीं सीमाप्रान्तों पर सीमोल्लंघन से दो देशों में अशान्ति बने। मंहगाई से साधारण जन परेशान हो-" यत्र मासे पञ्चवारा जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्ग-युद्धं च जायते।।" नीच राशिस्थ मंगल का नीच राशिस्थ गुरु के साथ समसप्तकयोग होने से किसी समर्थ देश के साथ यावनराष्ट्र की राजनैतिक उलझन ज्यादा विषम स्थिति को जन्म देगी।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में बिनौला, तिल, तेल, अनाज तेज रहें; सोना, चान्दी, चावल, सरसों में मन्दी हो। १५ दिसंबर के लगभग कपास, सूत, सोना, चान्दी, अलसी में तेजी होकर मन्दी रहे।

कुण्डली सूर्योदय (१६ दिसं.)

- ९ — सू. बु. रा.
- १० — गु.
- ११
- १२
- १
- २
- ३ — के.
- ४ — मं.
- ५
- ६ — श.
- ७
- ८ — चं. शु.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १६ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	७	३	८	९	७	५	८	२
०	२४	२५	२०	२९	२३	९	२८	२८
९	३०	३३	५	१९	४२	५४	२८	२८
१५	१९	४१	४२	१९	४७	५८	३९	३९
६१	७३४	३	७०	१०	७५	२	३	३
४	२७	७	३८	३७	३१	५८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मूल १	ज्ये. ३	आश्ले. ३	पू.षा. ३	धनि. २	ज्ये. ३	उ.फा. ४	उ.षा. १	पुन. ३

आकाश-लक्षणः- दिसंबर १०, १५ को शीत लहर जोर पकड़े। धुन्ध का वातावरण रहेगा। कुछ स्थानों पर बादलचाल व बूंदाबांदी हो। कहीं वायुवेग के साथ वर्षा हो।

श्री वि. सं. २०६६, शाक १९३१, पौष शुक्ल पक्ष १६															तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(१७ से ३१ दिसम्बर तक, सन् २००९ ई.) दक्षिण—उत्तरायण, दक्षिणगोल, हेमन्त—शिशिर ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र. पौष	अं. दिसम्बर	श. मार्गशीर्ष	मु. जिल्हिज्ज				सूर्योदय		सूर्यास्त						पक्षारम्भ में ही शु. पूर्व में और २९ दिसं. को बु. पश्चिम में अस्त हो जाएगा। प्रातः श. याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में तथा मं. पश्चिम की ओर दीखेगा। सायं गु. पश्चिम क्षितिज से ऊपर उठा दिखाई देगा।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	३	१	गु.	३०	१७	मूल	२८	९	ग.	२०	१४	ब.	३०	१७	३	१७	२६	२९	धनु			७	१८	१७	१९	८	१	१०	१७	शुक्र पूर्व में अस्त ५/२५, शनि हस्त १ में ३८/१८,
२५	२	२	शु.	३५	५७	पू.षा.	३४	५४	वृ.	२१	३८	बा.	३	६	४	१८	२७	३०	मकर	५१	४३	७	१८	१७	१९	८	२	११	२२	चन्द्रदर्शन, मु. ३०,
२५	२	३	श.	४२	२३	उ.षा.	४२	२२	धु.	२३	३९	तै.	९	९	५	१९	२८	मु.१	मकर			७	१९	१७	२०	८	३	१२	२८	गुरु धनि. ३ कुम्भ में ४२/२०, मुहर्रम (A)
२५	२	४	र.	४९	१४	श्रव.	५०	१४	व्या.	२६	३	व.	१५	४८	६	२०	२९	२	मकर			७	२०	१७	२०	८	४	१३	३४	भ.१५/४८ से ४९/१४ तक, मंगल वक्री २९/०::,(B)
२५	२	५	चं.	५६	३	धनि.	५८	२	ह.	२८	३२	ब.	२२	३८	७	२१	३०	३	कुम्भ	२४	११	७	२०	१७	२१	८	५	१४	४०	पंचक प्रारम्भ २४/११, सूर्य सायन मकर में (C)
२५	२	६	मं.	६०	०	शत.	६०	०	व.	३०	४६	कौ.	२९	९	८	२२	पौ.१	४	कुम्भ			७	२१	१७	२१	८	६	१५	४७	बुध उ.षा. में ५३/२०, शक पौष प्रा.,
२५	२	६	बु.	२	१५	शत.	५	१६	सि.	३२	२१	तै.	२	१५	९	२३	२	५	मीन	५५	२	७	२१	१७	२२	८	७	१६	५४	शुक्र पूर्व में अस्त १७ दिसम्बर
२५	२	७	गु.	७	२१	पू.भा.	११	२६	व्य.	३२	५५	व.	७	२१	१०	२४	३	६	मीन			७	२२	१७	२२	८	८	१८	०	भ. ७/२१ से ३९/०७ तक,
२५	३	८	शु.	१०	५१	उ.भा.	१६	३	व.	३२	११	ब.	१०	५१	११	२५	४	७	मीन			७	२२	१७	२३	८	९	१९	९	क्रिसमस डे,
२५	३	९	श.	१२	२६	रेव.	१८	४९	प.	२९	५६	कौ.	१२	२६	१२	२६	५	८	मेष	१८	४९	७	२२	१७	२४	८	१०	२०	१५	पंचक समाप्त १८/४९, बुध वक्री ३१/५४, जोड़मेला(D)
२५	४	१०	र.	११	५६	अश्वि.	१९	३३	शि.	२६	४	ग.	११	५६	१३	२७	६	९	मेष			७	२३	१७	२४	८	११	२१	२२	भ. ४०/३७ बाद,
२५	४	११	चं.	९	२३	भर.	१८	१८	सि.	२०	३६	वि.	९	२३	१४	२८	७	१०	वृष	३२	४१	७	२३	१७	२५	८	१२	२२	२९	भ. ९/२३ तक, सूर्य पू.षा. में ५१/४३, पुत्रदा (E)
२५	५	१२	मं.	४	५५	कृत्ति.	१५	१४	सा.	१३	४०	बा.	४	५५	१५	२९	८	११	वृष			७	२३	१७	२५	८	१३	२३	३६	वक्री बुध पू.षा. में ५[illegible]/३३, बुध पश्चिम में अस्त (F)
अवम		१३	मं.	५८	५१	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथिक्षय
२५	६	१४	बु.	५१	३०	रोहि.	१०	३७	शु. शु.	५ ५६	२८ १८	ग.	२५	१०	१६	३०	९	१२	मिथुन	३७	४९	७	२४	१७	२६	८	१४	२४	४३	भ. ५१/३० बाद, (G) चन्द्रग्रहण (३१ दिसं., २००९ और १ जन., २०१० ई. की मध्यरात्रि में)
२५	७	१५	गु.	४२	१६	मृग. आर्द्रा	४ ५८	४९ १९	ब्र.	४६	२५	वि.	१७	२३	१७	३१	१०	१३	मिथुन			७	२४	१७	२७	८	१५	२५	५३	भ. १७/२३ तक, शुक्र पू.षा. में ३०/४०, पौषी (H)

(A)(हिजरी सन् १४३१) मु. प्रा., (B) शुक्र मूल धनु में ५५/०७, (C) ३९/५१, उत्तर अयन एवं शिशिर ऋतु प्रारम्भ, (D) श्रीफतेहगढ़ साहिब (पं.) प्रारम्भ, (E) एकादशी व्रत (स.), (F) ३२/४८, भौमप्रदोष व्रत, (G) चन्द्रग्रहणवेध, (H) पूर्णिमा, माघस्नान प्रारम्भ, श्रीसत्यनारायण व्रत, खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (भारत में दृष्य) (देखें पृ. 10),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २५ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	३	८	१०	८	५	८	२
९	१२	२५	२७	०	५	१०	२८	२८
१९	२१	३३	३३	५८	२	१८	०	०
९	१५	५१	४७	४१	२६	७	२	२
६१	७९९	३	११	११	७५	२	३	३
७	२६	५८	५२	३३	३०	३	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
मूल ३	उ.भा. ३	आश्ले. ३	उ.षा. १	धनि. ३	मूल २	हस्त १	उ.षा. १	पुन. ३

कुण्डली सूर्योदय (२५ दिसं.)

लोकभविष्य:- पौष शुक्ल पक्षारम्भ में ही शुक्रास्त का होना मुस्लिम राष्ट्रों किंवा उग्रवाद-प्रभावित क्षेत्रों-देशों में कहीं भारी अराजकता, सत्तापरिवर्तन एवं रक्तपात, जनधन-हानि का संकेत देता है;- "शुक्लपक्षे यदा शुक्रः समुदेत्यस्तमेति वा। राजपुत्रसहस्राणां मही पिबति शोणितम्।।" विशेषतः जब शुक्रास्त पौष मास में हो तो कहीं नाटकीय सत्तापरिवर्तन होता है। मंगल-बुध वक्री हैं, मंहगाई जोर पकड़ेगी। पौष शुक्ल त्रयोदशी मंगलवारी होने से जनजीवनोपयोगी चीजें मंहगी होंगी।दिसंबर मास के अन्तिम दिनों में प्राकृतिक प्रकोप से कहीं भारी जनधनहानि के योग बनते हैं।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में रुई और चान्दी में घटाबढ़ी हो। सोना, चान्दी, ताम्बा, जस्ता तेज रहे। १९ दिसंबर के लगभग वस्त्र, सोना, ताम्बा आदि पहले मन्दे, बाद में तेज रहें। अनाजों का भाव मन्दा रहे। २८ दिसंबर के लगभग हल्दी, चमड़ा, कपूर, ऊनी वस्त्र आदि तेज रहें।३१ दिसंबर के करीब सरसों, तिल, तेल आदि व क्षार, नमक मन्दे हों।

आकाश लक्षण:- दिसंबर १७, १९, २०, २२, २६, २८, २९ एवम् ३१ को भारत में अनेकत्र बादलचाल एवम् वर्षा के योग हैं। अनेकत्र धुन्ध के कारण यातायात अवरुद्ध हो। शीत लहर से अनेकत्र हानि के समाचार मिलें।

कुण्डली सूर्योदय (३१ दिसं.)

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ३१ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	३	८	१०	८	५	८	२
१५	४	२४	२५	२	१२	१०	२७	२७
२५	१७	५७	५५	९	३५	२८	४०	४०
५३	४०	५२	३९	२२	२६	५४	५७	५७
६१	८९९	८	५६	१२	७५	.१	३	३
७	५८	५२	१	५	३०	२५	११	११
		व.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
पू.षा. १	मृग. ४	आश्ले. ३	पू.षा. ४	धनि. ३	मूल ४	हस्त १	उ.षा. १	पुन. ३

उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

१० जन. के बाद बु. पूर्व में दिखाई देना आरम्भ होगा। शु. अस्त है। प्रातः श. याम्योत्तर वृत्त में और मं. इससे पश्चिम की ओर होगा। सायं गु. पश्चिम में क्षितिज की ओर जाता दीखेगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. पौष	अं. जनवरी	श. पौष	मु. मुहर्रम	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२५	८	१	शु.	३४	३३	पुन.	५१	२०	ऐं.	३६	१०	बा.	८	५५	१८	१	११	१४	कर्क	३८	२	७	२४	१७	२७	८	१६	२६	५८	जनवरी (इंग्लिश नव-वर्ष सनू २०१० ई.) प्रारम्भ, (A)
२५	९	२	श.	२५	४६	पुष्य	४४	२७	वै.	२५	५२	तै.	०	९	१९	२	१२	१५	कर्क			७	२४	१७	२८	८	१७	२८	६	भ. ५१/३३ बाद, चन्द्रग्रहणवेध,
२५	११	३	र.	१७	१९	आश्ले.	३८	२	वि.	१५	५०	वि.	१७	१९	२०	३	१३	१६	सिंह	३८	२	७	२५	१७	२९	८	१८	२९	१४	भ. १७/१६ तक, श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी व्रत, (B)
२५	१२	४	चं.	९	३२	मघा	३२	२६	प्री. आ.	६ ५७	२१ ४१	बा.	९	३२	२१	४	१४	१७	सिंह			७	२५	१७	३०	८	१९	३०	२२	
२५	१४	५	मं.	२	४६	पू.फा.	२७	५७	सौ.	५०	१	तै.	२	४६	२२	५	१५	१८	कन्या	४२	३	७	२५	१७	३०	८	२०	३१	३०	भ. ५७/१६ बाद, गुरु धनि. ४ में ४०/०६, (C)
अवम		६	मं.	५७	१६	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	षष्ठी तिथिक्षय,
२५	१५	७	बु.	५३	१५	उ.फा.	२४	५०	शो.	४३	३१	वि.	२५	१५	२३	६	१६	१९	कन्या			७	२५	१७	३१	८	२१	३२	३८	भ.२५/१५ तक,
२५	१७	८	गु.	५०	५०	हस्त	२३	१५	अ.	३८	१६	बा.	२२	३	२४	७	१७	२०	तुला	५३	३	७	२५	१७	३२	८	२२	३३	४९	
२५	१९	९	शु.	५०	३	चित्रा	२३	१४	सु.	३४	१८	तै.	२०	२६	२५	८	१८	२१	तुला			७	२५	१७	३३	८	२३	३४	५६	
२५	२१	१०	श.	५०	५१	स्वाती	२४	४८	धृ.	३१	३५	व.	२०	२७	२६	९	१९	२२	तुला			७	२५	१७	३४	८	२४	३६	४	भ. २०/२७ से ५०/५१ तक,
२५	२३	११	र.	५३	८	विशा.	२७	५०	शू.	३०	१	ब.	२१	५९	२७	१०	२०	२३	वृश्चि.	११	५८	७	२५	१७	३४	८	२५	३७	१३	सूर्य उ.षा. में ५६/४६, व. बुध मूल में ४६/३१, (D)
२५	२५	१२	चं.	५६	४२	अनु.	३२	११	ग.	२९	२९	कौ.	२४	५५	२८	११	२१	२४	वृश्चि.			७	२५	१७	३५	८	२६	३८	२२	शुक्र उ.षा. में ६/३०,
२५	२७	१३	मं.	६०	०	ज्ये.	३७	४०	वृ.	२९	५१	ग.	२९	३	२९	१२	२२	२५	धनु	३७	४०	७	२५	१७	३६	८	२७	३९	३१	मेरुत्रयोदशी (जैन), भौमप्रदोष व्रत,
२५	३०	१३	बु.	१	२३	मूल	४४	३	ध्रु.	३०	५७	व.	१	२३	३०	१३	२३	२६	धनु			७	२५	१७	३७	८	२८	४०	४०	भ. १/२३ से ३४/०६ तक, शुक्र मकर में ४५/३०, (E)
२५	३२	१४	गु.	६	५७	पू.षा.	५९	९	व्या.	३२	३८	श.	६	५७	मा१	१४	२४	२७	धनु			७	२५	१७	३८	८	२९	४१	४८	सं. सूर्य मकर में १३/०१ , मु. ३०, पुण्यकाल सारा (F)
२५	३५	३०	शु.	१३	१०	उ.षा.	५८	४३	ह.	३४	४५	ना.	१३	१०	२	१५	२५	२८	मकर	८	१	७	२५	१७	३९	९	०	४२	५८	बुध मार्गी ३७/२२, मौनी अमावस, कंकण सूर्यग्रहण (G)

कंकण सूर्यग्रहण-१५ जनवरी

(A) चन्द्रग्रहणवेध, (B) (चन्द्रोदय २०घं.४०मि.), चन्द्रग्रहणवेध, (C) जन्मदिन श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी (ना.शा.), (D) बुध पूर्व में उदित २८/१६, षट्तिला एकादशी व्रत (स.), (E) शनि वक्री ३५/०७, लोहड़ी (पं.), (F) दिन, मकर संक्रान्ति, पोंगल (द. भारत), सूर्यग्रहणवेध, (G) (भारत में दृश्य) (दिखें पृ. 10),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ७ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	५	३	८	१०	८	५	८	२
२२	१६	२३	१७	३	२१	१०	२७	२७
३३	५८	३८	२३	३५	२३	३६	१८	१८
४६	२६	५०	१४	४३	५२	३८	४१	४१
६१	८१०	१४	७३	१२	७५	०	३	३
८	११	२७	२७	३९	२६	४०	११	११
		व.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
पू.षा. ३	हस्त ३	आश्ले. ३	पू.षा. २	धनि. ४	पू.षा. ३	हस्त १	उ.षा. १	पुन. ३

कुण्डली सूर्योदय (७ जन.)

१० | ८
गु.११ | सू. शु. ९ बु. रा. | ७
१२ | चं. ६ श.
१ | ३ के. | ५
२ | मं. ४

लोकभविष्य:- इस चान्द्रमास में पांच शनिवार एवम् पांच शुक्रवार हैं। भारत के पूर्वोत्तर में सुभिक्ष एवं धनधान्य-समृद्धि रहे। शनिक्षेत्री(कुम्भस्थ) गुरु एवं शनि का गुरु के साथ षडष्टकयोग किंवा इस मास में शनिपंचक होने से कहीं भूकम्प, सत्ताहस्तान्तरण, प्राकृतिक आपदा, भयंकर अग्निकाण्ड, विस्फोट, यानदुर्घटना आदि से भारी जनधनहानि संभव है;- "शनेश्च पंचकं दृष्टवा पाताले कंपते फणिः। ईशानदेशभंगश्च वह्निदाहो महर्घता।।" पक्षान्त में शनि का शुक्र-सूर्य के साथ समसप्तक राजनैतिक परेशानी से शासक वर्ग को चिन्तित करे। इन दिनों उग्रवादी सक्रिय होंगे।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में गेहूं, चावल, जौ, सोना, चान्दी, रुई आदि के भावों में घटाबढ़ी चले। पाट, हैसियन, लालमिर्च में तेजी बने। ११ जनवरी के करीब सोना, चान्दी, अलसी, एरण्ड में मन्दी; अनाज तेज हों। १४ जनवरी के करीब शेयर, अफीम, गुड़, खाण्ड, घृत किंवा गेहूं, चना आदि सब अनाजों में तेजी हो। रेशम, कपूर आदि में मन्दी बने।

आकाश-लक्षण:- जनवरी ५, १०, ११, १३, १४, १५ को पंजाब, हरियाणा, हिमाचल मे शीत लहर चलेगी। बादलचाल व वर्षा से शीतप्रकोप बढ़ेगा। अनेकत्र धुन्ध का वातावरण रहे। हिमाचल मे भारी हिमपात हो।

कुण्डली सूर्योदय (१५ जन.)

गु. ११ | चं. ९ बु. रा.
१० | १२ | सू. शु. | ८
१ | ७
२ | मं. ४ | श. ६
३ के. | ५

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १५ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	८	३	८	१०	९	५	८	२
०	२७	२१	११	५	१	१०	२६	२६
४२	२८	२२	३५	१८	२७	३८	५३	५३
५८	१३	५६	२२	५४	४२	५६	१५	१५
६१	७१०	१६	१	१३	७५	०	३	३
८	२२	५६	४५	१२	२८	१२	११	११
		व.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
उ.षा. २	उ.षा. १	आश्ले. २	मूल ४	धनि. ४	उ.षा. २	हस्त १	उ.षा. १	पुन. ३

(१६ से ३० जनवरी तक, सन् २०१० ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

श्री वि. सं. २०६६, शाक १९३१ माघ शुक्ल पक्ष २१

शु. अस्त है। प्रातः बु. पूर्व क्षितिज पर, श. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में और मं. पश्चिम कपाल में दीखेगा। सायं गु. पश्चिम क्षितिज की ओर झुका होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. माघ	अं. जनवरी	श. पौष	मु. मुहर्रम	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२५	३७	१	श.	१९	५०	श्रव	६०	०	व.	३७	७	ब.	१९	५०	३	१६	२६	२९	मकर			७	२५	१७	४०	९	१	४४	४	चन्द्र दर्शन, मु. ३०, सूर्यग्रहणवेध,
२५	४०	२	र.	२६	३९	श्रव.	६	३२	सि.	३९	३४	कौ.	२६	३९	४	१७	२७	स.१	कुम्भ	४०	२८	७	२४	१७	४१	९	२	४५	१२	पंचक प्रारम्भ ४०/२८, सफर मु. प्रा., सूर्यग्रहणवेध,
२५	४३	३	चं.	३३	२२	धनि.	१४	२०	व्य.	४१	५३	तै.	०	१	५	१८	२८	२	कुम्भ			७	२४	१७	४१	९	३	४६	१९	गौरी तृतीया (गौंतरी), सूर्यग्रहणवेध,
२५	४६	४	मं.	३९	३६	शत.	२१	४७	व.	४३	५०	व.	६	२९	६	१९	२९	३	कुम्भ			७	२४	१७	४२	९	४	४७	२५	भ. ६/२६ से ३६/३६ तक, राहु पू.षा. ४, केतु (A)
२५	४९	५	बु.	४५	०	पू.भा.	२८	३२	प.	४५	८	ब.	१२	१८	७	२०	३०	४	मीन	११	५७	७	२४	१७	४३	९	५	४८	३०	प्लूटो मूल ४ में ५५/००, गुरु शत. १ में ५६/५२, (B)
२५	५२	६	गु.	४९	१२	उ.भा.	३४	१४	शि.	४५	३२	कौ.	१७	६	८	२१	मा.१	५	मीन			७	२३	१७	४४	९	६	४९	३५	बुध पू.षा. में ०/२५, शुक्र श्रव. में ४२/४५, (C)
२५	५५	७	शु.	५१	५१	रेव.	३८	३३	सि.	४४	४८	ग.	२०	३१	९	२२	२	६	मेष	३८	३३	७	२३	१७	४५	९	७	५०	३८	भ. ५१/५१ बाद, पंचक समाप्त ३८/३३, (D)
२५	५८	८	श.	५२	४१	अश्वि.	४१	९	सा.	४२	४२	वि.	२२	१६	१०	२३	३	७	मेष			७	२३	१७	४६	९	८	५१	४१	भ. २२/१६ तक, भीष्माष्टमी,
२६	१	९	र.	५१	३६	भर.	४१	५५	शु.	३९	७	बा.	२२	९	११	२४	४	८	वृष	५६	४८	७	२२	१७	४७	९	९	५२	४२	सूर्य श्रव. में २/३०,
२६	४	१०	चं.	४८	३३	कृत्ति.	४०	४६	शु.	३४	१	तै.	२०	४	१२	२५	५	९	वृष			७	२२	१७	४८	९	१०	५३	४३	
२६	८	११	मं.	४३	३९	रोहि.	३७	४७	ब्र.	२७	२५	व.	१६	६	१३	२६	६	१०	वृष			७	२१	१७	४९	९	११	५४	४२	भ. १६/०६ से ४३/३६ तक, भारत गणतन्त्र दिवस,(E)
२६	११	१२	बु.	३७	८	मृग.	३३	१०	ऐं.	१९	२७	ब.	१०	२३	१४	२७	७	११	मिथुन	५	४०	७	२१	१७	४९	९	१२	५५	४१	वक्री मंगल पुष्य में ३६/५५, यूरेनस पू.भा. ४ मीन (F)
२६	१५	१३	गु.	२९	१८	आर्द्रा	२७	१३	वै.	१०	२०	कौ.	३	१३	१५	२८	८	१२	मिथुन			७	२०	१७	५०	९	१३	५६	३८	प्रदोष व्रत,
२६	१८	१४	शु.	२०	३०	पुन.	२०	१८	वि. प्री.	० ४९	१८ ४२	व.	२०	३०	१६	२९	९	१३	कर्क	७	५	७	२०	१७	५१	९	१४	५७	३४	भ. २०/३० से ४५/५१ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत,
२६	२२	१५	श.	११	१०	पुष्य	१२	५०	आ.	३८	५१	ब.	११	१०	१७	३०	१०	१४	कर्क			७	१९	१७	५२	९	१५	५८	३१	माघी पूर्णिमा, जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी, माघस्नान(G)

(A) पुन.२ में ६/००, तिल-वरद-कुन्द चतुर्थी, (B) सूर्य सायन कुम्भ में ६/२५, श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी, (C) शक माघ प्रा., (D) रथ (आरोग्य) सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली), मर्यादा महोत्सव(जैन), (E) जया एकादशी व्रत (स.). (F) में १४/४५, भीष्म द्वादशी, (G) समाप्त,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २३ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	०	३	८	१०	९	५	८	२
८	३	१८	१४	७	११	१०	२६	२६
५१	३१	२६	३८	६	३१	३४	२७	२७
४२	४८	५२	५५	५	१०	१५	४८	४८
६१	७७२	२३	४७	१३	७५	१	३	३
२	१८	१६	४६	३६	२४	४	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
उ.षा. ४	अश्वि. २	आश्ले. १	पू.षा. १	शत. १	श्रव. १	हस्त १	पू.षा. ४	पुन. २

कुण्डली सूर्योदय (२३ जन.)

गु. ११ | ९ बु. रा. | १० सू. शु. | १२ | ८ | १ चं. | ७ | २ | मं. ४ | श. ६ | ३ के. | ५

लोकभविष्य:- शनि-सूर्य का नवम-पंचम, मंगल का सूर्य-शुक्र से समसप्तक एवं मेदिनी ग्रह यूरेनस का शनि के साथ समसप्तक योग कहीं शासकों के विरुद्ध रोष-प्रदर्शन, कहीं प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प, अग्निकाण्ड, विस्फोट, तूफान किंवा यानदुर्घटना आदि से जनधनहानि का संकेत देता है। शीतलहर, धुन्ध, हिमपात आदि से हिमालय, काश्मीर आदि में अनेकत्र जनजीवन अस्त-व्यस्त होगा।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में गेहूं आदि अनाज तथा हल्दी, सुपारी, केसर, मजीठ व सोना-चान्दी में तेजी रहे। २१ जनवरी के करीब सोना, चान्दी में खासी मन्दी हो। २४ जनवरी के करीब सोना, चान्दी, जौ, चावल, रुई, सूत, सण, सुपारी, लौंग, पीपल में तेजी हो। २८ जनवरी के लगभग सोना, चान्दी, मूंगफली में मन्दी बने।

कुण्डली सूर्योदय (३० जन.)

गु. ११ | ९ बु. रा. | १० सू. शु. | १२ | ८ | १ | ७ | २ | चं. मं. ४ | श. ६ | ३ के. | ५

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ३० जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	३	३	८	१०	९	५	८	२
१५	१२	१५	२१	८	२०	१०	२६	२६
५८	१४	४३	२३	४२	१८	२४	५	५
३१	२६	२२	३६	३०	४०	३५	३३	३३
६०	६१६	२३	६८	१३	७५	.१	३	३
५४	१४	५८	३१	५७	१६	४८	११	११
		व	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ	उ.	उ	अ	उ.	अ.	अ.
श्रव. २	पुष्य ३	पुष्य ४	पू.षा. ३	शत. १	श्रव. ४	हस्त १	पू.षा. ४	पुन. २

आकाश लक्षण:- जनवरी १६, २०, २१, २४, २७ को हिमाचल, शिलांग, आसाम, अरुणाचल, जम्मू-काश्मीर में वर्षा के योग हैं।

श्री वि. सं. २०६६, शाक १९३१, फाल्गुन कृष्ण पक्ष २२

(३१ जन. से १४ फरवरी तक, सन् २०१० ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. माघ	अं. जनवरी	श. माघ	मु. सफर	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.
२६	२६	१	र	१	४२	आश्ले. मघा	५ / ५८	१९ / ०	सौ.	२८	६	कौ.	१	४२	१८	३१	११	१५	सिंह	५	१५	७	१९	१७	५३	९	१६	५९	२४
अवम		२	र	५२	३१	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२६	२९	३	चं.	४४	६	पू.फा.	५१	३३	शो.	१७	४७	व.	१८	१८	१९	फ.१	१२	१६	सिंह			७	१८	१७	५४	९	१८	०	१७
२६	३३	४	मं.	३६	५१	उ.फा.	४६	१९	अ. सु.	८ / ५९	१६ / ४८	ब.	१०	२८	२०	२	१३	१७	कन्या	५	८	७	१८	१७	५५	९	१९	१	१०
२६	३७	५	बु.	३१	८	हस्त	४२	४०	धृ.	५२	४२	कौ.	३	५९	२१	३	१४	१८	कन्या			७	१७	१७	५६	९	२०	२	२
२६	४१	६	गु.	२७	१३	चित्रा	४०	५०	शू.	४७	७	व.	२७	१३	२२	४	१५	१९	तुला	११	३२	७	१६	१७	५७	९	२१	२	५२
२६	४५	७	शु.	२५	१८	स्वा.	४१	०	ग.	४३	८	ब.	२५	१८	२३	५	१६	२०	तुला			७	१६	१७	५७	९	२२	३	४२
२६	४९	८	श.	२५	२७	विशा.	४३	८	वृ.	४०	४५	कौ.	२५	२७	२४	६	१७	२१	वृश्चि.	२७	२७	७	१५	१७	५८	९	२३	४	३२
२६	५३	९	र	२७	३३	अनु.	४७	६	ध्रु.	३९	४९	ग.	२७	३३	२५	७	१८	२२	वृश्चि.			७	१४	१७	५९	९	२४	५	१९
२६	५७	१०	चं.	३१	२३	ज्ये.	५२	३८	व्या.	४०	९	वि.	३१	२३	२६	८	१९	२३	धनु	५२	३८	७	१३	१८	०	९	२५	६	६
२७	१	११	मं.	३६	३५	मूल	५९	२०	ह.	४१	२८	ब.	३	५९	२७	९	२०	२४	धनु			७	१३	१८	१	९	२६	६	५३
२७	५	१२	बु.	४२	४४	पू.षा.	६०	०	व.	४३	२९	कौ.	९	३९	२८	१०	२१	२५	धनु			७	१२	१८	२	९	२७	७	३८
२७	९	१३	गु.	४९	२५	पू.षा.	६	५०	सि.	४५	५३	ग.	१६	४	२९	११	२२	२६	मकर	२३	४७	७	११	१८	३	९	२८	८	२२
२७	१३	१४	शु.	५६	१७	उ.षा.	१४	४१	व्य.	४८	२६	वि.	२२	५१	फा.१	१२	२३	२७	मकर			७	१०	१८	३	९	२९	९	५
२७	१८	३०	श.	६०	०	श्रव.	२२	३४	व.	५०	५४	च.	२९	३९	२	१३	२४	२८	कुम्भ	५६	२६	७	९	१८	४	१०	०	९	४६
२७	२२	३०	र.	३	२	धनि.	३०	१४	प.	५३	६	ना.	३	२	३	१४	२५	२९	कुम्भ			७	८	१८	५	१०	१	१०	२८

शु. ३ फर. से पश्चिम में दृश्य हो जाएगा। प्रातः बु. पूर्व क्षितिज में, श. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में और मं. पश्चिम क्षितिजासन्न होगा। सायं गु. पश्चिम क्षितिज पर होगा।

शुक्र पश्चिम में उदित - ३ फरवरी

द्वितीया तिथिक्षय,
भ.१८/१८ से ४४/०६ तक, शुक्र धनि. में १९/५७, (A) श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
बुध उ.षा. में १९/५५, शुक्र पश्चिम में उदित २३/१०,
भ. २७/१३ से ५६/१६ तक, गुरु शत. २ में २७/०७,
बुध मकर में ५५/००,
सूर्य धनि. में १०/५२, शुक्र कुम्भ में ३८/५७, (B)
भ. ५६/२८ बाद,
भ. ३१/२३ तक,
वक्री शनि उ.फा. ४ में ४५/१९, विजया एकादशी (C)
भ. ४९/२५ बाद, शुक्र शत. में ५८/१५, प्रदोष व्रत,
भ. २२/५१ तक, सं. सूर्य कुम्भ में ४६/०९, (D)
पंचक प्रारम्भ ५६/२६, बुध श्रव. में ६/१५, (E)

(A) फरवरी प्रारम्भ, (B) शुक्रबाल्य समाप्त २३/१५, (C) व्रत (स.), (D) मु. ३०, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत, पहला शाही स्नान कुम्भ महापर्व हरिद्वार, (E) शनैश्चरी अमा,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ६ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	३	९	१०	९	५	८	२
२३	२३	१२	०	१०	२९	१०	२५	२५
४	१०	५८	०	२०	५	९	४३	४३
३२	२१	५२	४६	५१	३८	५८	१७	१७
६०	७६७	२२	७९	१४	७५	२	३	३
४८	४०	२७	५७	११	१५	२८	१०	१०
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (६ फर.)

सू. १० बु. शु. | गु. ११ | ९ रा. | १२ | ८ | १ | चं. ७ | २ | श. ६ | मं. ४ | ३ के. | ५

लोकभविष्य:- इस चान्द्रमास में पांच रविवार हैं, शुक्र पश्चिम में उदित हो रहा है। पक्ष-मध्य में शुक्र-गुरु एक राशिस्थ हैं, अमावस शनिवार को है। कहीं खड़ी फसलों को हानि पहुंचे। कहीं प्राकृतिक आपदा से जनधनहानि संभव है। कहीं प्रधान नेता को भारी संकट का सामना करना पड़े। राजनैतिक दल परस्पर तालमेल न बना सकेंगे। प्रतिष्ठित व्यक्ति संकटग्रस्त रहें। कहीं सत्ताहस्तान्तरण का भी योग बनता है;- "यत्रमासे रवेर्वारा जायंते पंच संततम्। दुर्भिक्षं छत्रभंगः स्यात्तदा तत्र महद्भयम्।।" इस पक्ष में शनि-मंगल दोनों वक्र हैं, जोकि भारी मंहगाई से जनजीवन में असन्तोष का संकेत देते हैं।

कुण्डली सूर्योदय (१४ फर.)

चं. सू. ११ गु. शु. | १२ | १० बु. | १ | रा. ९ | २ | ८ | के.३ | ७ | ५ | मं. ४ | श. ६

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १४ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	९	३	९	१०	१०	५	८	२
१	२९	१०	११	१२	९	९	२५	२५
१०	५३	१२	१२	१५	७	४७	१७	१७
२८	१८	८	३१	३	१३	३९	५१	५१
६०	७११	१८	८८	१४	७५	३	३	३
३९	३८	२०	४१	२३	९	११	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में चावल, मूंग, मोठ, सोना, चान्दी, कपास एवम् सभी प्रकार के अनाजों के भावों में मन्दा रहे। ६ फरवरी के लगभग सभी प्रकार के अनाजों के भाव तेज हों। सोना, चान्दी, मोती आदि जवाहरात, मूंग, मसूर तेज रहें। ११ फरवरी के लगभग गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी, रुई तथा अनाजों के भावों में घटाबढ़ी रहे। **आकाश लक्षण:-** फरवरी १, ३, ४, ५, ६, ८, ११, १२ को उत्तरी भारत में वायु का जोर रहे। लंका के पूर्वी छोर एवम् फिलीपिन आदि में वर्षा के योग हैं।

श्री वि. सं. २०६६, शाक १९३१ फाल्गुन शुक्ल पक्ष ... | तारीखें | चन्द्रराशि - | (भा. स्टैं. टा.) | स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. | (२५ से २८ फरवरी तक, सन् २०१० ई.) उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर--वसन्त ऋतु।

श्री वि. सं. २०६६, शाक १९३१ फाल्गुन शुक्ल पक्ष २३

(१५ से २८ फरवरी तक, सन् २०१० ई.) उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर–वसन्त ऋतु।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. फाल्गुन	अं. फरवरी	श. माघ	मु. सफर	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	१८ फर. को गु. पश्चिम में लुप्त हो जाएगा। बु. भी २६ फर. से पूर्व में दिखाई देना बन्द हो जाएगा। प्रातः श. पश्चिम कपाल में होगा। सायं शु. पश्चिम क्षितिजासन्न और मं. पूर्व कपाल में होगा।
२७	२६	१	चं.	९	२१	शत.	३७	२६	शि.	५४	५५	ब.	९	२१	४	१५	२६	३०	कुम्भ			७	७	१८	६	१०	२	११	६	चन्द्रदर्शन, मु. १५, गुरु वार्धक्य प्रारम्भ ६/१६,
२७	३०	२	मं.	१५	५	पू.भा.	४४	१	सि.	५६	१२	कौ.	१५	५	५	[illegible]	२७	२१	मीन	२७	२८	७	७	१८	७	१०	३	११	४४	जन्मदिन श्रीरामकृष्ण परमहंस, रबि-उल-अव्वल मु.प्रा.,
२७	३५	३	बु.	२०	३	उ.भा.	४९	४८	सा.	५६	५०	ग.	२०	३	६	१७	२८	२	मीन			७	६	१८	८	१०	४	१२	१९	भ. ५२/०० बाद,
२७	३९	४	गु.	२४	४	रेव.	५४	३६	शु.	५६	४०	वि.	२४	४	७	१८	२९	३	मेष	५४	३६	७	५	१८	८	१०	५	१२	५४	भ. २४/०४ तक, पंचक समाप्त ५४/३६, गुरु शत.(A)
२७	४४	५	शु.	२६	५६	अश्वि.	५८	१२	शु.	५५	३४	बा.	२६	५६	८	१९	३०	४	मेष			७	४	१८	९	१०	६	१३	२६	सूर्य शत. में २२/२४,
२७	४८	६	श.	२८	२९	भर.	६०	०	ब्र.	५३	२३	तै.	२८	२९	९	२०	फा.१	५	मेष			७	३	१८	१०	१०	७	१३	५७	शक फाल्गुन प्रा.
२७	५२	७	र.	२८	३१	भर.	०	२७	ऐं.	५०	१	व.	२८	३१	१०	२१	२	६	वृष	१५	४९	७	२	१८	११	१०	८	१४	२६	भ.२८/३१ से ५७/४३ तक, बुध धनि. में (B)
२७	५७	८	चं.	२६	५७	कृत्ति.	१	१०	वै.	४५	२१	ब.	२६	५७	११	२२	३	७	वृष			७	१	१८	११	१०	९	१४	५३	शुक्र पू.भा. में ३८/००, होलाष्टक प्रारम्भ,
२८	१	९	मं.	२३	४४	रोहि. मृग.	० ५७	१८ ४८	वि.	३९	२३	कौ.	२३	४४	१२	२३	४	८	मिथुन	२९	१६	७	००	१८	१२	१०	१०	१५	१७	
२८	६	१०	बु.	१८	५३	आर्द्रा	५३	४७	प्री.	३२	९	ग.	१८	५३	१३	२४	५	९	मिथुन			६	५९	१८	१३	१०	११	१५	४१	भ. ४५/४० बाद,
२८	११	११	गु.	१२	३३	पुन.	४८	२५	आ.	२३	४५	वि.	१२	३३	१४	२५	६	१०	कर्क	३४	५१	६	५८	१८	१४	१०	१२	१६	२	भ. १२/३३ तक, बुध कुम्भ में ५७/००, आमला (C)
२८	१५	१२	शु.	४	५८	पुष्य	४२	१	सौ.	१४	२३	बा.	४	५८	१५	२६	७	११	कर्क			६	५७	१८	१५	१०	१३	१६	२१	बुध पूर्व में अस्त ३६/१२, प्रदोष व्रत,
अवम		१३	शु.	५६	२३	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथिक्षय,
२८	२०	१४	श.	४७	१८	आश्ले.	३४	५६	शो. अ.	४ ५३	१८ ४५	ग.	२१	५०	१६	२७	८	१२	सिंह	३४	५६	६	५५	१८	१५	१०	१४	१६	३८	भ. ४७/१८ बाद,
२८	२४	१५	र.	३८	३	मघा	२७	३६	सु.	४३	१०	वि.	१२	४०	१७	२८	९	१३	सिंह			६	५४	१८	१६	१०	१५	१६	५५	भ. १२/४० तक, होलिका दहन (प्रदोष में), (D)

गुरु अस्त - १८ फरवरी

होलाष्टक - २२ से २८ फरवरी तक

(A) ३ में २६/३६, सूर्य सायन मीन में ४२/३०, गुरु अस्त ६/२२, वसन्त ऋतु प्रारम्भ, (B) ५०/५५, (C) एकादशी व्रत (स.), गोविन्द द्वादशी, (D) जन्मदिन श्रीचैतन्य महाप्रभु, होलाष्टक समाप्त, श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २२ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१	३	६	१०	१०	५	८	२
६	८	८	२३	१४	१९	६	२४	२४
१४	५३	४	२८	१०	७	२०	५२	५२
५३	१७	५२	१९	२८	४७	३	२५	२५
६०	[illegible]	१२	६६	१४	७४	३	३	३
२५	४५	३४	१२	२६	५६	४६	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
धनि.	कृत्ति.	पुष्य	धनि.	शत.	शत.	उ.फा.	पू.षा.	पुन.

कुण्डली सूर्योदय (२२ फर.)

लोकभविष्य:- १८ फरवरी को गुरु अस्त होगा। शनि-मंगल वक्रगति से चल रहे हैं। मंहगाई उत्तरोत्तर बढ़ेगी, जनता का शासन के प्रति आक्रोश बढ़ सकता है- "फाल्गुने गुरोरस्तं वक्रं वा यदि जायते। धन-धान्यादि-सस्यानां तदा वाच्या महर्घता ॥" राजनैतिक पार्टियों में सन्धिबन्धन ढीले पड़ेंगे। नए समीकरण बनने से राजनैतिक स्थिरता संकट में पड़ सकती है। रविवारी होलिकादहन कृषकवर्ग के लिए कष्टप्रद है।

कुण्डली सूर्योदय (२८ फर.)

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में गेहूं आदि अनाज तथा हल्दी, सुपारी, मजीठ व सोने में तेजी बने। २१ फरवरी के लगभग सोना, चान्दी, रुई, तिल, तैल के भावों में घटाबढ़ी; छुहारा, सौंठ, हल्दी, गेहूं आदि तेज रहें। २५ फरवरी के लगभग अलसी, चान्दी, रुई के भावों में घटाबढ़ी; अनाजों के भाव सम रहें। **आकाश लक्षण:-** फरवरी १५, १८, १९, २१, २२, २५, २६ को बंगलादेश, भूटान, सिक्किम और श्रीलंका के पश्चिमी भूभाग पर वर्षा के योग हैं। उत्तरी भारत में ऋतुपरिवर्तन एवम् गर्मी अनुभव होने लगेगी।

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २८ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	४	३	१०	१०	१०	५	८	२
१५	५	७	३	१५	२६	८	२४	२४
१६	२६	१	२०	३७	३७	५६	३३	३३
५५	४५	११	१	२३	१९	२६	२१	२१
६०	६११	७	१०२	१४	७४	४	३	३
१४	२४	५१	६	३०	५०	८	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
शत.	मघा	पुष्य	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.फा.	पू.षा.	पुन.

श्री वि. सं. २०६६, शाक १९३१ चैत्र कृष्ण पक्ष २४

(१ से १५ मार्च तक, सन् २०१० ई.) उत्तरायण, दक्षिण गोल, वसन्त ऋतु।

बु. एवम् गु. अस्त हैं। प्रातः श. पश्चिम कपाल में देखा जा सकता है। सायं शु. पश्चिम क्षितिज पर और मं. पूर्व कपाल में होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	फाल्गुन	मार्च	फाल्गुन	र.उ.ल.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२८	२९	१	चं.	२९	६	पू.फा.	२०	२८	धृ.	३२	५१	बा.	३	३४	१८	१	१०	१४	कन्या	३३	४४	६	५३	१८	१७	१०	१६	१७	८	बुध शत. में ५३/३०, वसन्तोत्सव, होलामेला (A)
२८	३३	२	मं.	२०	५४	उ.फा.	१४	१	शू.	२३	१३	ग.	२०	५४	१९	२	११	१५	कन्या			६	५२	१८	१७	१०	१७	१७	२०	भ. ४७/२२ बाद, शुक्र मीन में ३६/०७,
२८	३८	३	बु.	१३	५५	हस्त	८	४४	गं.	१४	३५	वि.	१३	५५	२०	३	१२	१६	तुला	३६	३७	६	५१	१८	१८	१०	१८	१७	३१	भ. १३/५५ तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
२८	४३	४	गु.	८	३२	चित्रा	५	०	वृ.	७	१६	बा.	८	३२	२१	४	१३	१७	तुला			६	५०	१८	१९	१०	१९	१७	३९	सूर्य पू.भा. में ३८/५५, गुरु शत. ४ में १५/५२, (B)
२८	४७	५	शु.	५	६	स्वा.	३	१०	ध्रु. व्या.	१ ५७	२७ २४	तै.	५	६	२२	५	१४	१८	वृश्चि.	४८	९	६	४९	१८	२०	१०	२०	१७	४७	शुक्र उ.भा. में १६/४५,
२८	५२	६	श.	३	५०	विशा.	३	२८	ह.	५५	५	व.	३	५०	२३	६	१५	१९	वृश्चि.			६	४८	१८	२०	१०	२१	१७	५२	भ. ३/५० से ३४/१८ तक,
२८	५७	७	र.	४	४८	अनु.	५	५५	व.	५४	२४	ब.	४	४८	२४	७	१६	२०	वृश्चि.			६	४६	१८	२१	१०	२२	१७	५६	
२९	१	८	चं.	७	५०	ज्ये.	१०	२३	सि.	५५	७	कौ.	७	५०	२५	८	१७	२१	धनु	१०	२३	६	४५	१८	२२	१०	२३	१७	५९	श्रीशीतलाष्टमी,
२९	६	९	मं.	१२	३८	मूल	१६	२९	व्य.	५६	५४	ग.	१२	३८	२६	९	१८	२२	धनु			६	४४	१८	२२	१०	२४	१७	५९	भ. ४५/३६ बाद, बुध पू.भा. में २०/०३,
२९	११	१०	बु.	१८	४०	पू.षा.	२३	४६	व.	५९	२०	वि.	१८	४०	२७	१०	१९	२३	मकर	४०	४३	६	४३	१८	२३	१०	२५	१७	५८	भ. १८/४० तक, मंगल मार्गी ३६/४६,
२९	१५	११	गु.	२५	२५	उ.षा.	३१	४०	प.	६०	०	बा.	२५	२५	२८	११	२०	२४	मकर			६	४२	१८	२४	१०	२६	१७	५६	पापमोचिनी एकादशी व्रत (स.),
२९	२०	१२	शु.	३२	१७	श्रव.	३९	४०	प.	२	४	तै.	३२	१७	२९	१२	२१	२५	मकर			६	४०	१८	२४	१०	२७	१७	५१	
२९	२५	१३	श.	३८	५०	धनि.	४७	१८	शि.	४	४०	ग.	५	३३	३०	१३	२२	२६	कुम्भ	१३	३५	६	३९	१८	२५	१०	२८	१७	४६	भ. ३८/५० बाद, पंचक प्रारम्भ १३/३५, शनिप्रदोष व्रत,
२९	२९	१४	र.	४४	४४	शत.	५४	१८	सि.	६	५४	वि.	११	४७	चै.१	१४	२३	२७	कुम्भ			६	३८	१८	२६	१०	२९	१७	३८	भ. ११/४७ तक, सं. सूर्य मीन में ३६/३७, मु. १५, (C)
२९	३४	३०	चं.	४९	४५	पू.भा.	६०	०	सा.	८	३४	च.	१७	१४	२	१५	२४	२८	मीन	४४	०	६	३७	१८	२६	११	०	१७	२९	सोमवती अमावस, द्वितीय शाहीस्नान कुम्भ महापर्व (D)

(A) श्री आनन्दपुर साहिब(पं.), मार्च प्रारम्भ, (B) मेला श्रीशीतला माता (कुराली-पं.), (C) पुण्यकाल मध्याह्न बाद, बुध मीन में ३५/०३, मेला पिहोवा तीर्थ (हरियाणा), (D) हरिद्वार, चान्द्र संवत्सर (२०६६ वि.) पूर्ण,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ८ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	३	१०	१०	११	५	८	२
२३	२७	६	१७	१७	६	८	२४	२४
१७	१४	२०	२६	३३	३५	२२	७	७
५६	४	१५	१६	१६	२४	५	५५	५५
६०	७३०	१	११०	१४	७४	४	३	३
१	३६	३६	३८	२७	४०	३०	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (८ मार्च)

१२ शु. | १० | सू. बु. | रा. | ११ गु. | १ | ९ | २ | ८ चं. | के. ३ | ५ | ७ | मं. ४ | श. ६

लोकभविष्यः:- कुम्भ राशिस्थ सूर्य पर नीच राशिस्थ मंगल की दृष्टि इराक, ईरान, चीन, जापान एवं अन्य किसी बड़े राष्ट्र में भारी आपदा का संकेत देती है। मुस्लिम राष्ट्रों में भय, उपद्रव बने रहें। भारत की प्रभावराशि मकर पर मंगल की उच्चदृष्टि प्रगतिकारक योजनाओं को कार्यान्वित करेगी। इस चान्द्रमास में पांच चन्द्रवार हैं। भारत में धनधान्यसमृद्धि रहे एवं भारत सरकार का प्रयास जनहित में रहे;- "सोमस्य पंचवारास्तु यत्र मासे भवन्ति हि। धनधान्यसमृद्धिः स्यात् सुखं भवति सर्वदा।।"

कुण्डली सूर्योदय (१५ मार्च)

१ | ११ चं. गु. | सू. | बु. १२ शु. | २ | १० | ३ के. | रा. ९ | मं. ४ | श. ६ | ८ | ५ | ७

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १५ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	१०	३	११	१०	११	५	८	२
०	२०	६	०	१९	१५	७	२३	२३
१७	३४	२४	४३	१४	१७	५०	४५	४५
२६	३०	६	५	१२	३२	१	४०	४०
५६	७२६	३	११७	१४	७४	४	३	३
४६	६	२६	४६	२१	२६	४०	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में चान्दी, सरसों, तेल, अलसी, गुड़ एवं खाण्ड में घटाबढ़ी चले। ४ मार्च के गमग सोना-चान्दी, उड़द एवं चावल में तेजी रहे। ६ मार्च को लौह-मशीनरी एवं अनाजों में घटाबढ़ी रहे। १४ मार्च को अनाज, सोना, चान्दी में अच्छी घटाबढ़ी के झटके आएंगे।

आकाशीय लक्षण:- [illegible]

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
पौष शुक्ल	1	5	गु.	28	39	शत.	–	–	सि.	24	59	कुम्भ			7	24	17	28	7	18	17	31	7	20	17	41	6	48	17	15	1	इंग्लिश नववर्ष सन् 2009 ई. प्रारम्भ, गुरु मकर के (A)
	2	6	शु.	29	29	शत.	9	4	व्य.	24	32	मीन	28	4	7	25	17	28	7	18	17	32	7	20	17	41	6	48	17	16	2	गुरु मकर के पंचमांश से निवृत्त–1 जन.
	3	7	श.	29	38	पू.भा.	10	20	व.	23	35	मीन			7	25	17	29	7	19	17	33	7	20	17	42	6	48	17	17	3	भ. 29/38 बाद,
	4	8	र.	29	2	उ.भा.	10	54	प.	22	4	मीन			7	25	17	30	7	19	17	33	7	21	17	43	6	48	17	17	4	भ. 17/20 तक, बुध श्रव. में 27/02, शुक्र शत. में (B)
	5	9	चं.	27	41	रेव.	10	45	शि.	19	57	मेष	10	45	7	25	17	31	7	19	17	34	7	21	17	43	6	49	17	18	5	पंचक समाप्त 10/45, मंगल पू. षा. में 30/21,
	6	10	मं.	25	38	अश्वि.	9	52	सि.	17	16	मेष			7	25	17	31	7	19	17	35	7	21	17	44	6	49	17	19	6	राहु श्रव. 2, केतु पुष्य 4 में 23/38,
	7	11	बु.	22	58	भर./	8	18	सा.	14	3	वृष	13	49	7	25	17	32	7	19	17	36	7	21	17	45	6	49	17	19	7	भ. 12/18 से 22/58 तक, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.),
						कृत्ति.	30	11																								
	8	12	गु.	19	49	रोहि.	27	37	शु./	10	24	वृष			7	25	17	33	7	19	17	36	7	21	17	46	6	49	17	20	8	गुरु उ.षा. 4 में 16/30, गुरु वार्धक्य प्रारम्भ 20/16, (C)
									शु.	30	25																					गुरु अस्त-11 जनवरी
	9	13	शु.	16	19	मृग.	24	45	ब्र.	26	13	मिथुन	14	12	7	25	17	34	7	19	17	37	7	21	17	46	6	49	17	21	9	
	10	14	श.	12	38	आर्द्रा	21	48	ऐं.	21	56	मिथुन			7	25	17	35	7	19	17	38	7	21	17	47	6	49	17	22	10	भ. 12/38 से 22/47 तक, सूर्य उ.षा. में 23/54, (D)
	11	15/	र.	8	57	पुन.	18	55	वै.	17	43	कर्क	13	37	7	25	17	36	7	19	17	39	7	21	17	48	6	49	17	22	11	बुध वक्री 22/15, गुरु अस्त 20/16, माघस्नान प्रारम्भ,
माघ कृष्ण		1		29	25																											माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय,
	12	2	चं.	26	14	पुष्य	16	16	वि.	13	41	कर्क			7	25	17	36	7	19	17	40	7	21	17	49	6	49	17	23	12	लोहड़ी (पं.),
	13	3	मं.	23	32	आश्ले.	14	3	प्री./	9	59	सिंह	14	3	7	25	17	37	7	19	17	40	7	21	17	50	6	49	17	24	13	भ. 12/53 से 23/32 तक, सं. सूर्य मकर में 30/27,(E)
									आ.	30	43																					
	14	4	बु.	21	27	मघा	12	23	सौ.	28	0	सिंह			7	25	17	38	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	25	14	बुध पश्चिम में अस्त 9/03, श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी (F)
	15	5	गु.	20	7	पू.फा.	11	24	शो.	25	52	कन्या	17	17	7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	25	15	
	16	6	शु.	19	34	उ.फा.	11	12	अ.	24	22	कन्या			7	25	17	40	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	26	16	भ. 19/34 बाद, शुक्र पू. भा. में 26/34,
	17	7	श.	19	50	हस्त	11	46	सु.	23	30	तुला	24	20	7	24	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	27	17	भ. 7/42 तक, वक्री बुध उ. षा. में 29/51,
	18	8	र.	20	52	चित्रा	13	6	धृ.	23	12	तुला			7	24	17	42	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	28	18	
	19	9	चं.	22	33	स्वाती	15	6	शू.	23	23	तुला			7	24	17	42	7	18	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	19	सूर्य सायन कुम्भ नें 28/10, खण्डग्रास सूर्यग्रहण
	20	10	मं.	24	45	विशा.	17	37	गं.	23	56	वृश्चि.	10	57	7	24	17	43	7	18	17	46	7	20	17	55	6	49	17	29	20	भ. 11/39 से 24/45 तक, 26 जनवरी
	21	11	बु.	27	17	अनु.	20	30	वृ.	24	45	वृश्चि.			7	23	17	44	7	18	17	47	7	20	17	56	6	49	17	30	21	षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
	22	12	गु.	29	58	ज्येष्ठा	23	34	ध्रु.	25	41	धनु	23	34	7	23	17	45	7	18	17	48	7	20	17	57	6	48	17	31	22	गुरु श्रव. 1 में 20/24,
	23	13	शु.	–	–	मूल	26	40	व्या.	26	38	धनु			7	23	17	46	7	17	17	49	7	20	17	57	6	48	17	31	23	सूर्य श्रव. में 26/12, मंगल उ.षा. में 18/21, प्रदोष व्रत,
	24	13	श.	8	38	पू.षा.	29	39	ह.	27	29	धनु			7	22	17	47	7	17	17	50	7	19	17	58	6	48	17	32	24	भ. 8/38 से 21/53 तक,
	25	14	र.	11	9	उ.षा.	–	–	व.	28	11	मकर	12	22	7	22	17	48	7	17	17	50	7	19	17	59	6	48	17	33	25	
	26	30	चं.	13	25	उ.षा.	8	25	सि.	28	39	मकर			7	21	17	49	7	16	17	51	7	19	18	0	6	47	17	34	26	वक्री बुध धनु में 21/18, मौनी अमा, सोमवती अमा, (G)
माघ शु.	27	1	मं.	15	21	श्रव.	10	52	व्य.	28	50	कुम्भ	23	58	7	21	17	50	7	16	17	52	7	18	18	1	6	47	17	35	27	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्र दर्शन, मु. 30, पंचक (H)
	28	2	बु.	16	54	धनि.	12	58	व.	28	43	कुम्भ			7	20	17	51	7	15	17	53	7	18	18	1	6	47	17	35	28	
	29	3	गु.	18	0	शत.	14	40	प.	28	15	कुम्भ			7	20	17	51	7	15	17	54	7	18	18	2	6	46	17	36	29	भ. 30/19 बाद, गौरी तृतीया (गौंतरी),
	30	4	शु.	18	38	पू.भा.	15	54	शि.	27	24	मीन	9	38	7	19	17	52	7	14	17	55	7	17	18	3	6	46	17	37	30	भ. 18/38 तक, शुक्र उ. भा. में 29/36, तिल–कुन्द–(I)
	31	5	श.	18	46	उ.भा.	16	39	सि.	26	10	मीन			7	19	17	53	7	14	17	55	7	17	18	4	6	45	17	38	31	श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी,

(A) पंचमांश से निवृत्त 12/06, (B) 8/33, (C) प्रदोष व्रत, (D) श्रीसत्यनारायण व्रत, (E) मु. 30, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, मकर संक्रान्ति, (F) व्रत, (चन्द्रोदय 21 घं. 28 मि.), पोंगल (द. भारत), (G) खण्डग्रास सूर्यग्रहण (द. भा. में दृश्य), भारत गणतन्त्र दिवस, (H) प्रारम्भ 23/58, मंगल मकर में 26/26, शुक्र मीन में 12/01, बुध पूर्व में उदित 14/28, (I) वरद चतुर्थी,

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
माघ शुक्ल	1	6	र.	18	21	रेव.	16	53	सा.	24	31	मेष	16	53	7	18	17	54	7	13	17	56	7	16	18	5	6	45	17	38	1	पंचक समाप्त 16/53, बुध मार्गी 12/41,
	2	7	चं.	17	24	अश्वि.	16	36	शु.	22	26	मेष			7	17	17	55	7	13	17	57	7	16	18	5	6	44	17	39	2	भ. 17/24 से 28/39 तक, रथ (आरोग्य) सप्तमी (A)
	3	8	मं.	15	54	भर.	15	47	शु.	19	56	वृष	21	30	7	17	17	56	7	12	17	58	7	15	18	6	6	44	17	40	3	भीष्माष्टमी,
	4	9	बु.	13	55	कृत्ति.	14	29	ब्र.	17	3	वृष			7	16	17	57	7	12	17	59	7	15	18	7	6	43	17	40	4	
	5	10	गु.	11	30	रोहि.	12	45	ऐं.	13	50	मिथुन	23	44	7	15	17	58	7	11	18	0	7	14	18	8	6	43	17	41	5	भ. 22/07 बाद, सूर्य धनि. में 29/17, गुरु श्रव. (B)
	6	11/	शु.	8	43	मृग.	10	40	वै./	10	19	मिथुन			7	15	17	59	7	10	18	0	7	13	18	8	6	42	17	42	6	भ. 8/43 तक, भीष्म द्वादशी, जया एकादशी व्रत (वै.),
		12		29	41				वि.	30	36																					द्वादशी तिथिक्षय,
	7	13	श.	26	31	आर्द्रा	8	20	प्री.	26	47	कर्क	24	30	7	14	17	59	7	10	18	1	7	13	18	9	6	42	17	43	7	बुध मकर में 21/42, शनिप्रदोष व्रत,
						/पुन.	29	53																								
	8	14	र.	23	20	पुष्य	27	28	आ.	22	59	कर्क			7	13	18	0	7	9	18	2	7	12	18	10	6	41	17	43	8	भ. 23/20 बाद,
	9	15	चं.	20	19	आश्ले.	25	14	सौ.	19	17	सिंह	25	14	7	12	18	1	7	8	18	3	7	11	18	11	6	41	17	44	9	भ. 9/49 तक, मंगल श्रव. में 24/59, मंगल उदित (C)
फाल्गुन कृष्ण	10	1	मं.	17	35	मघा	23	19	शो.	15	49	सिंह			7	12	18	2	7	7	18	3	7	11	18	11	6	40	17	45	10	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, गुरु उदित 12/15,
	11	2	बु.	15	18	पू.फा.	21	52	अ.	12	43	कन्या	27	36	7	11	18	3	7	7	18	4	7	10	18	12	6	39	17	45	11	भ. 26/27 बाद,
	12	3	गु.	13	36	उ.फा.	21	2	सु.	10	3	कन्या			7	10	18	4	7	6	18	5	7	9	18	13	6	39	17	46	12	भ. 13/36 तक, सं. सूर्य कुम्भ में 19/24, मु. 45, (D)
	13	4	शु.	12	35	हस्त	20	55	धृ./	7	57	कन्या			7	9	18	4	7	5	18	6	7	9	18	13	6	38	17	47	13	नेप्च्यून धनि. 3 कुम्भ में 26/31, गुरुबाल्य समाप्त 12/15,
									शू.	30	26																					
	14	5	श.	12	20	चित्रा	21	34	गं.	29	32	तुला	9	9	7	8	18	5	7	4	18	7	7	8	18	14	6	37	17	47	14	गुरु उदित–10 फरवरी
	15	6	र.	12	54	स्वा	22	59	वृ.	29	14	तुला			7	7	18	6	7	3	18	7	7	7	18	15	6	36	17	48	15	भ. 12/54 से 25/34 तक,
	16	7	चं.	14	13	विशा.	25	4	ध्रु.	29	27	वृश्चि.	18	29	7	6	18	7	7	3	18	8	7	6	18	16	6	36	17	48	16	
	17	8	मं.	16	10	अनु.	27	43	व्या.	30	4	वृश्चि.			7	5	18	8	7	2	18	9	7	5	18	16	6	35	17	49	17	
	18	9	बु.	18	34	ज्येष्ठा	30	42	ह.	30	57	धनु	30	42	7	4	18	9	7	1	18	9	7	5	18	17	6	34	17	50	18	बुध श्रव. में 11/14, शुक्र रेव. में 14/43, (E)
	19	10	गु.	21	13	मूल	–	–	व.	–	–	धनु			7	3	18	9	7	0	18	10	7	4	18	18	6	33	17	50	19	भं. 7/54 से 21/13 तक, सूर्य शत. में 9/52,
	20	11	शु.	23	52	मूल	9	48	व.	7	55	धनु			7	2	18	10	6	59	18	11	7	3	18	18	6	33	17	51	20	विजया एकादशी व्रत (स.),
	21	12	श.	26	19	पू.षा.	12	49	सि.	8	50	मकर	19	32	7	1	18	11	6	58	18	12	7	2	18	19	6	32	17	52	21	
	22	13	र.	28	24	उ.षा.	15	34	व्य.	9	33	मकर			7	0	18	12	6	57	18	12	7	1	18	19	6	31	17	52	22	भ. 28/24 बाद, गुरु श्रव. 3 में 7/09, प्रदोष व्रत,
	23	14	चं.	30	0	श्रव.	17	54	व.	9	58	कुम्भ	30	53	6	59	18	12	6	56	18	13	7	0	18	20	6	30	17	53	23	भ. 17/12 तक, पंचक प्रारम्भ 30/53, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत,
	24	30	मं.	–	–	धनि.	19	45	प.	10	2	कुम्भ			6	58	18	13	6	55	18	14	6	59	18	21	6	29	17	53	24	भौमवती अमा,
	25	30	बु.	7	5	शत.	21	6	शि.	9	41	कुम्भ			6	57	18	14	6	54	18	14	6	58	18	21	6	28	17	54	25	
फाल्गुन शु.	26	1	गु.	7	39	पू.भा.	21	57	सि.	8	57	मीन	15	47	6	56	18	15	6	53	18	15	6	57	18	22	6	27	17	54	26	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्र दर्शन, मु. 30, मंगल (F)
	27	2	शु.	7	42	उ.भा.	22	22	सा./	7	50	मीन			6	55	18	15	6	52	18	16	6	57	18	23	6	27	17	55	27	जन्मदिन श्रीरामकृष्ण परमहंस,
									शु.	30	21																					
	28	3/	श.	7	19	रेव.	22	21	शु.	28	34	मेष	22	21	6	54	18	16	6	51	18	16	6	56	18	23	6	26	17	55	28	भ. 18/55 से 30/32 तक, पंचक समाप्त 22/21,(G)
		4		30	32																											चतुर्थी तिथिक्षय,

(A) (पूर्वारुणोदय वाली), (B) 2 में 23/03, वक्री शनि पू. फा. 4 में 17/41, यूरेनस पू. भा. 3 में 15/01, जया एकादशी व्रत (स्मा.), (C) 17/10, माघी पूर्णिमा, जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी, माघस्नान समाप्त, श्रीसत्यनारायण व्रत, (D) पुण्यकाल मध्याह्न के बाद, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, (E) सूर्य सायन मीन में 18/16, वसन्त ऋतु प्रारम्भ, (F) धनि. में 27/54, (G) बुध धनि. में 15/08.

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
फाल्गुन शुक्ल	1	5	र.	29	24	अश्वि.	21	59	ब्र.	26	31	मेष			6	53	18	17	6	50	18	17	6	55	18	24	6	25	17	56	1	
	2	6	चं.	27	56	भर.	21	18	ऐं.	24	12	वृष	27	5	6	52	18	18	6	49	18	18	6	54	18	24	6	24	17	57	2	
	3	7	मं.	26	13	कृत्ति.	20	21	वै.	21	40	वृष			6	51	18	18	6	48	18	18	6	53	18	25	6	23	17	57	3	भ. 26/13 बाद,
	4	8	बु.	24	15	रोहि.	19	8	वि.	18	56	मिथुन	30	27	6	50	18	19	6	47	18	19	6	52	18	26	6	22	17	58	4	भ. 13/14 तक, सूर्य पूभा. में 16/04, बुध कुम्भ (A)
	5	9	गु.	22	5	मृग.	17	43	प्री.	16	2	मिथुन			6	48	18	20	6	46	18	20	6	51	18	26	6	21	17	58	5	
	6	10	शु.	19	45	आर्द्रा	16	8	आ.	13	0	मिथुन			6	47	18	21	6	45	18	20	6	50	18	27	6	20	17	59	6	भ. 30/31 बाद, गुरु श्रव. 4 में 28/15, (B)
	7	11	श.	17	18	पुन.	14	26	सौ./	9	51	कर्क	8	52	6	46	18	21	6	44	18	21	6	49	18	27	6	19	17	59	7	भ. 17/18 तक, मंगल कुम्भ में 16/32, आमला (C)
									शो.	30	39																					
	8	12	र.	14	50	पुष्य	12	41	अ.	27	29	कर्क			6	45	18	22	6	43	18	21	6	47	18	28	6	18	18	0	8	प्रदोष व्रत, गोविन्द द्वादशी,
	9	13	चं.	12	24	आश्ले.	10	58	सु.	24	23	सिंह	10	58	6	44	18	23	6	42	18	22	6	46	18	28	6	17	18	0	9	बुध शत. में 10/16,
	10	14	मं.	10	8	मघा	9	25	धृ.	21	29	सिंह			6	43	18	23	6	40	18	23	6	45	18	29	6	16	18	1	10	भ. 10/08 से 21/08 तक, राहु श्रव. 1, केतु पुष्य 3 (D)
	11	15/	बु.	8	8	पू.फा.	8	7	शू.	18	50	कन्या	13	51	6	41	18	24	6	39	18	23	6	44	18	29	6	15	18	1	11	वसन्तोत्सव, होलाष्टक समाप्त, होलामेला श्री आनन्दपुर (E)
चैत्र कृष्ण		1		30	31																											चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय,
	12	2	गु.	29	27	उ.फा.	7	13	गं.	16	34	कन्या			6	40	18	25	6	38	18	24	6	43	18	30	6	14	18	2	12	
	13	3	शु.	28	59	हस्त	6	50	वृ.	14	45	तुला	18	53	6	39	18	25	6	37	18	24	6	42	18	30	6	13	18	2	13	भ. 17/13 से 28/59 तक,
	14	4	श.	29	14	चित्रा	7	5	ध्रु.	13	28	तुला			6	38	18	26	6	36	18	25	6	41	18	31	6	12	18	3	14	सं. सूर्य मीन में 16/16, मु. 15, पुण्यकाल 9/50 बाद, (F)
	15	5	र.	30	13	स्वाती	8	0	व्या.	12	44	वृश्चि.	27	10	6	37	18	27	6	35	18	26	6	40	18	32	6	11	18	3	15	मंगल शत. में 28/56,
	16	6	चं.	–	–	विशा.	9	38	ह.	12	33	वृश्चि.			6	35	18	27	6	34	18	26	6	39	18	32	6	10	18	3	16	बुध पूर्व में अस्त 23/45,
	17	6	मं.	7	52	अनु.	11	53	व.	12	51	वृश्चि.			6	34	18	28	6	32	18	27	6	38	18	33	6	9	18	4	17	भ. 7/52 से 20/58 तक, सूर्य उ.भा. में 24/36, (G)
	18	7	बु.	10	3	ज्येष्ठा	14	38	सि.	13	33	धनु	14	38	6	33	18	29	6	31	18	27	6	37	18	33	6	8	18	4	18	
	19	8	गु.	12	35	मूल	17	41	व्य.	14	29	धनु			6	32	18	29	6	30	18	28	6	36	18	34	6	7	18	5	19	श्रीशीतलाष्टमी, मेला श्रीशीतला माता (कुराली–पं.),
	20	9	शु.	15	12	पू.षा.	20	45	व.	15	28	मकर	27	29	6	30	18	30	6	29	18	29	6	35	18	34	6	6	18	5	20	भ. 28/25 बाद, सूर्य सायन मेष में 17/14, (H)
	21	10	श.	17	38	उ.षा.	23	36	प.	16	19	मकर			6	29	18	30	6	28	18	29	6	33	18	35	6	5	18	6	21	भ. 17/38 तक,
	22	11	र.	19	40	श्रव.	26	2	शि.	16	53	मकर			6	28	18	31	6	27	18	30	6	32	18	35	6	4	18	6	22	बुध मीन में 21/35, गुरु धनि. 1 में 25/42, वक्री शुक्र (I)
	23	12	चं.	21	8	धनि.	27	53	सि.	17	1	कुम्भ	15	2	6	27	18	32	6	26	18	30	6	31	18	36	6	3	18	7	23	पंचक प्रारम्भ 15/02, शुक्र पश्चिम में अस्त 25 मार्च
	24	13	मं.	21	56	शत.	29	6	सा.	16	40	कुम्भ			6	25	18	32	6	24	18	31	6	30	18	36	6	2	18	7	24	भ. 21/56 बाद, (J)
	25	14	बु.	22	5	पू.भा.	29	41	शु.	15	47	मीन	23	36	6	24	18	33	6	23	18	31	6	29	18	37	6	1	18	8	25	भ. 10/00 तक, शुक्र पश्चिम में अस्त 8/30, (K)
	26	30	गु.	21	36	उ.भा.	29	41	शु.	14	25	मीन			6	23	18	34	6	22	18	32	6	28	18	37	5	59	18	8	26	चान्द्र संवत्सर 2065 वि. पूर्ण,
चैत्र शुक्ल	27	1	शु.	20	35	रेव.	29	11	ब्र.	12	36	मेष	29	11	6	22	18	34	6	21	18	32	6	27	18	38	5	58	18	8	27	चैत्र शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, पंचक समाप्त 29/11, (L)
	28	2	श.	19	8	अश्वि.	28	19	ऐं.	10	25	मेष			6	20	18	35	6	20	18	33	6	26	18	38	5	57	18	9	28	चन्द्रव्रत, चन्द्र दर्शन, मु. 30, शुक्र पूर्व में उदित 21/26,
	29	3	र.	17	22	भर.	27	10	वै./	7	57	मेष			6	19	18	36	6	19	18	34	6	25	18	39	5	56	18	9	29	भ. 28/23 बाद, (M) शुक्र पूर्व मे उदित 28 मार्च
									वि.	29	17																					
	30	4	चं.	15	25	कृत्ति.	25	52	प्री.	26	30	वृष	8	52	6	18	18	36	6	17	18	34	6	24	18	39	5	55	18	10	30	भ. 15/25 तक, श्री (लक्ष्मी) पंचमी (देखें पृ. 93), (N)
	31	5	मं.	13	20	रोहि.	24	30	आ.	23	39	वृष			6	17	18	37	6	16	18	35	6	22	18	40	5	54	18	10	31	सूर्य रेव. मे 11/22, बुध रेव. में 10/08, शुक्रबाल्य (O)

(A)में 27/40, होलाष्टक प्रारम्भ, (B) शुक्र वक्री 22/48, (C) एकादशी व्रत (स.), (D) में 21/14, होलिकादहन (21घं. 08 मि. बाद), श्रीसत्यनारायण व्रत, (E) साहिब (पं.), जन्मदिन श्रीचैतन्य महाप्रभु, (F) श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, (G) बुध पूभा. मे 9/09, (H) महाविषुवदिन, उत्तरगोल प्रारम्भ, (I) उ. भा. में 11/07, शुक्रवार्धक्य प्रारम्भ 8/30, वक्री शनि पूफा. 3 में 13/11, पापमोचिनी एकादशी व्रत (स.), (J) बुध उ.भा. में 15/57, वारुणी योग, भौमप्रदोष व्रत, (K) मेला पिहोवा तीर्थ (हरियाणा), (L) चान्द्र संवत्सर 2066 वि. प्रारम्भ, वर्षफलश्रवण, तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण, वासन्त नवरात्र प्रारम्भ, (M) गौरी तृतीया (गणगौर), आन्दोलन तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती, (N) हय व्रत, (O) समाप्त 21/26, नागपंचमी, स्कन्द षष्ठी, (देखें पृ. 93).

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
चैत्र शुक्ल	1	6	बु.	11	13	मृग.	23	7	सौ.	20	47	मिथुन	11	49	6	16	18	37	6	15	18	35	6	21	18	40	5	53	18	11	1	मंगल पूभा. में 29/46,
	2	7	गु.	9	6	आर्द्रा	21	46	शो.	17	57	मिथुन			6	14	18	38	6	14	18	36	6	20	18	41	5	52	18	11	2	भ. 9/06 से 20/04 तक, अशोकाष्टमी, श्रीदुर्गाष्टमी,
	3	8/	शु.	7	2	पुन.	20	28	अ.	15	9	कर्क	14	48	6	13	18	39	6	13	18	36	6	19	18	41	5	51	18	11	3	श्रीरामनवमी, नवरात्र समाप्त,
		9		29	2																											नवमी तिथिक्षय
	4	10	श.	27	8	पुष्य	19	16	सु.	12	26	कर्क			6	12	18	39	6	12	18	37	6	18	18	42	5	50	18	12	4	प्लूटो वक्री 23/03,
	5	11	र.	25	21	आश्ले.	18	9	धृ.	9	47	सिंह	18	9	6	11	18	40	6	11	18	37	6	17	18	42	5	49	18	12	5	भ. 14/14 से 25/21 तक, कामदा एकादशी व्रत (स.),
	6	12	चं.	23	43	मघा	17	12	शू./	7	15	सिंह			6	10	18	41	6	9	18	38	6	16	18	43	5	48	18	13	6	बुध अश्वि. मेष में 21/24, यूरेनस पूभा. 4 मीन में 23/45,
									गं.	28	51																					
	7	13	मं.	22	18	पू.फा.	16	26	वृ.	26	38	कन्या	22	17	6	8	18	41	6	8	18	39	6	15	18	43	5	47	18	13	7	अनंग त्रयोदशी, श्रीमहावीर जयन्ती (जैन), भौमप्रदोष व्रत,
	8	14	बु.	21	10	उ.फा.	15	56	धु.	24	40	कन्या			6	7	18	42	6	7	18	39	6	14	18	44	5	46	18	14	8	भ. 21/10 बाद,
	9	15	गु.	20	26	हस्त	15	47	व्या.	23	1	तुला	27	53	6	6	18	42	6	6	18	40	6	13	18	44	5	45	18	14	9	भ. 8/48 तक, गुरु धनि. 2 में 20/16, चैत्री पूर्णिमा, (A)
वैशाख कृष्ण	10	1	शु.	20	9	चित्रा	16	5	ह.	21	45	तुला			6	5	18	43	6	5	18	40	6	12	18	45	5	44	18	15	10	वैशाख कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, गुड फ्राइडे,
	11	2	श.	20	26	स्वाती	16	55	व.	20	55	तुला			6	4	18	44	6	4	18	41	6	11	18	45	5	43	18	15	11	
	12	3	र.	21	19	विशा.	18	20	सि.	20	33	वृश्चि.	11	55	6	2	18	44	6	3	18	41	6	10	18	46	5	42	18	15	12	भ. 8/52 से 21/19 तक, बुध पश्चिम में उदित 25/10, (B)
	13	4	चं.	22	48	अनु.	20	20	व्य.	20	40	वृश्चि.			6	1	18	45	6	2	18	42	6	9	18	46	5	41	18	16	13	सं. सूर्य अश्वि. मेष में 24/47, मु. 15, पुण्यकाल (C)
	14	5	मं.	24	50	ज्येष्ठा	22	51	व.	21	11	धनु	22	51	6	0	18	46	6	1	18	42	6	8	18	47	5	40	18	16	14	मंगल मीन में 25/32,
	15	6	बु.	27	14	मूल	25	46	प.	22	2	धनु			5	59	18	46	6	0	18	43	6	7	18	47	5	39	18	17	15	भ. 27/14 बाद,
	16	7	गु.	29	50	पू.षा.	28	52	शि.	23	2	धनु			5	58	18	47	5	59	18	44	6	6	18	48	5	38	18	17	16	भ. 16/32 तक,
	17	8	शु.	–	–	उ.षा.	–	–	सि.	24	2	मकर	11	38	5	57	18	48	5	58	18	44	6	5	18	48	5	37	18	18	17	शुक्र मार्गी 24/54,
	18	8	श.	6	19	उ.षा.	7	53	सा.	24	49	मकर			5	56	18	48	5	57	18	45	6	4	18	49	5	37	18	18	18	
	19	9	र.	10	28	श्रव.	10	33	शु.	25	14	कुम्भ	23	42	5	55	18	49	5	56	18	45	6	3	18	49	5	36	18	19	19	भ. 23/15 बाद, पंचक प्रारम्भ 23/42, मंगल उ.भा. में (D)
	20	10	चं.	12	2	धनि.	12	41	शु.	25	8	कुम्भ			5	54	18	49	5	55	18	46	6	2	18	50	5	35	18	19	20	भ. 12/02 तक,
	21	11	मं.	12	52	शत.	14	7	ब्र.	24	26	कुम्भ			5	53	18	50	5	54	18	46	6	1	18	50	5	34	18	20	21	बुध कृत्ति. में 15/02, श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती, वरुथिनी (E)
	22	12	बु.	12	56	पू.भा.	14	47	ऐं.	23	8	मीन	8	41	5	51	18	51	5	53	18	47	6	0	18	51	5	33	18	20	22	प्रदोष व्रत,
	23	13	गु.	12	13	उ.भा.	14	42	वै.	21	14	मीन			5	50	18	51	5	52	18	48	5	59	18	51	5	32	18	21	23	भ. 12/13 से 23/31 तक, बुध वृष में 29/47,
	24	14	शु.	10	50	रेव.	13	58	वि.	18	50	मेष	13	58	5	49	18	52	5	51	18	48	5	58	18	52	5	31	18	21	24	पंचक समाप्त 13/58,
	25	30	श.	8	52	अश्वि.	12	41	प्री.	16	1	मेष			5	48	18	53	5	50	18	49	5	57	18	52	5	30	18	22	25	शनैश्चरी अमा,
वैशाख शुक्ल	26	1/	र.	6	30	भर.	11	2	आ.	12	54	वृष	16	34	5	47	18	53	5	49	18	49	5	57	18	53	5	30	18	22	26	वैशाख शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्र दर्शन, मु. 30, श्री शिवाजी (F)
		2		27	52																											द्वितीया तिथिक्षय,
	27	3	चं.	25	7	कृत्ति.	9	8	सौ.	9	36	वृष			5	46	18	54	5	48	18	50	5	56	18	53	5	29	18	23	27	सूर्य भर. में 16/33, श्रीपरशुराम जयन्ती, अक्षय तृतीया,
	28	4	मं.	22	23	रोहि./	7	9	शो./	6	14	मिथुन	18	10	5	45	18	55	5	47	18	51	5	55	18	54	5	28	18	23	28	भ. 11/45 से 22/23 तक,
						मृग.	29	13	अ.	26	55																					
	29	5	बु.	19	46	आर्द्रा	27	27	सु.	23	42	मिथुन			5	45	18	55	5	46	18	51	5	54	18	54	5	27	18	23	29	आद्य जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती, श्रीरामानुजाचार्य (G)
	30	6	गु.	17	21	पुन.	25	53	धृ.	20	41	कर्क	20	15	5	44	18	56	5	45	18	52	5	53	18	55	5	26	18	24	30	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती (उ. भा.).

(A) वैशाखस्नान प्रा., श्रीहनुमान् जयन्ती (द. भा.), श्री सत्यनारायण व्रत.(B) श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, (C) अगले दिन मध्याह्न तक, बुध भर. में 13/30, वैशाखी(पं.), (D) 8/27, सूर्य सायन वृष में 28/14, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ, (E) एकादशी व्रत (स.), अगस्त्य अस्त, (F) जयन्ती, (G) जयन्ती (द. भा.).

मास पक्ष	मई	तिथि	वार	तिथि समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि–प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि . (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
वैशाख शुक्ल	1	7	शु.	15	12	पुष्य	24	37	शू.	17	52	कर्क			5	43	18	57	5	44	18	52	5	52	18	55	5	26	18	24	1	भ. 15/12 से 26/16 तक, गुरु धनि. 3 कुम्भ में (A)
	2	8	श.	13	21	आश्ले.	23	38	गं.	15	18	सिंह	23	38	5	42	18	57	5	44	18	53	5	52	18	56	5	25	18	25	2	श्रीजानकी जयन्ती (देखें पृष्ठ 93),
	3	9	र.	11	47	मघा	22	58	वृ.	12	59	सिंह			5	41	18	58	5	43	18	54	5	51	18	57	5	24	18	25	3	
	4	10	चं.	10	32	पू.फा.	22	36	घ्रु.	10	55	कन्या	28	33	5	40	18	59	5	42	18	54	5	50	18	57	5	24	18	26	4	भ. 22/04 बाद,
	5	11	मं.	9	37	उ.फा.	22	33	व्या.	9	6	कन्या			5	39	18	59	5	41	18	55	5	49	18	58	5	23	18	27	5	भ. 9/37 तक, मोहिनी एकादशी व्रत (स.),
	6	12	बु.	9	1	हस्त	22	51	ह.	7	34	कन्या			5	38	19	0	5	40	18	55	5	49	18	58	5	22	18	27	6	मंगल रेवती में 14/50, प्रदोष व्रत,
	7	13	गु.	8	46	चित्रा	23	31	व./	6	18	तुला	11	8	5	38	19	1	5	40	18	56	5	48	18	59	5	22	18	28	7	बुध वक्री 10/30, श्रीनृसिंह जयन्ती,
									सि.	29	21																					
	8	14	शु.	8	56	स्वाती	24	36	व्य.	28	44	तुला			5	37	19	1	5	39	18	57	5	47	18	59	5	21	18	28	8	भ. 8/56 से 21/13 तक, बुध पश्चिम में अस्त 20/30, (B)
	9	15	श.	9	31	विशा.	26	8	व.	28	30	वृश्चि.	19	44	5	36	19	2	5	38	18	57	5	47	19	0	5	20	18	29	9	वैशाखी पूर्णिमा, श्रीबुद्ध पूर्णिमा, श्रीबुद्ध जयन्ती, वैशाख– (C)
ज्येष्ठ कृष्ण	10	1	र.	10	35	अनु.	28	8	प.	28	38	वृश्चि.			5	35	19	3	5	38	18	58	5	46	19	0	5	20	18	29	10	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	11	2	चं.	12	9	ज्येष्ठा	–	–	शि.	29	7	वृश्चि.			5	35	19	3	5	37	18	58	5	45	19	1	5	19	18	30	11	भ. 25/09 बाद, सूर्य कृत्ति. में 10/46.
	12	3	मं.	14	9	ज्येष्ठा	6	36	सि.	–	–	धनु	6	36	5	34	19	4	5	36	18	59	5	45	19	2	5	19	18	30	12	भ. 14/09 तक, राहु उ.षा. 4, केतु पुष्य 2 में 19/21, (D)
	13	4	बु.	16	31	मूल	9	26	सि.	5	55	धनु			5	33	19	5	5	36	19	0	5	44	19	2	5	18	18	31	13	
	14	5	गु.	19	5	पू.षा.	12	30	सा.	6	56	मकर	19	17	5	33	19	5	5	35	19	0	5	44	19	3	5	18	18	31	14	सं. सूर्य वृष में 21/40, मु. 45, पुण्यकाल मध्याह्न बाद,(E)
	15	6	शु.	21	38	उ.षा.	15	38	शु.	8	1	मकर			5	32	19	6	5	34	19	1	5	43	19	3	5	17	18	32	15	भ. 21/38 बाद,
	16	7	श.	23	57	श्रव.	18	34	शु.	9	0	मकर			5	31	19	7	5	34	19	1	5	43	19	4	5	17	18	32	16	भ. 10/47 तक,
	17	8	र.	25	46	घनि.	21	4	ब्र.	9	43	कुम्भ	7	53	5	31	19	7	5	33	19	2	5	42	19	4	5	16	18	33	17	पंचक प्रारम्भ 7/53, शनि मार्गी 7/37,
	18	9	चं.	26	54	शत.	22	57	ऐं.	10	0	कुम्भ			5	30	19	8	5	33	19	2	5	42	19	5	5	16	18	33	18	
	19	10	मं.	27	13	पू.भा.	24	4	वै.	9	43	मीन	17	51	5	30	19	8	5	32	19	3	5	41	19	5	5	15	18	34	19	भ. 15/03 से 27/13 तक,
	20	11	बु.	26	42	उ.भा.	24	21	वि.	8	47	मीन			5	29	19	9	5	32	19	4	5	41	19	6	5	15	18	34	20	सूर्य सायन मिथुन में 27/21, अपरा एकादशी व्रत (स.), (F)
	21	12	गु.	25	22	रेव.	23	49	प्री./	7	11	मेष	23	49	5	28	19	10	5	31	19	4	5	40	19	6	5	14	18	35	21	पंचक समाप्त 23/49,
									आ.	28	57																					
	22	13	शु.	23	20	अश्वि.	22	35	सौ.	26	9	मेष			5	28	19	10	5	31	19	5	5	40	19	7	5	14	18	35	22	भ. 23/20 बाद, प्रदोष व्रत,
	23	14	श.	20	43	भर.	20	47	शो.	22	53	वृष	26	15	5	28	19	11	5	30	19	5	5	39	19	8	5	14	18	36	23	भ. 10/02 तक, मंगल अश्वि. मेष में 27/01
	24	30	र.	17	41	कृत्ति.	18	33	अ.	19	18	वृष			5	27	19	12	5	30	19	6	5	39	19	8	5	13	18	36	24	वटसावित्री व्रत (अमा पक्ष), भावुका अमा.
ज्येष्ठ शुक्ल	25	1	चं.	14	24	रोहि.	16	4	सु.	15	31	मिथुन	26	48	5	27	19	12	5	30	19	7	5	39	19	9	5	13	18	37	25	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्र दर्शन, मु. 30, सूर्य रोहि. मे (G)
	26	2	मं.	11	2	मृग.	13	31	धृ.	11	40	मिथुन			5	26	19	13	5	29	19	7	5	38	19	9	5	13	18	37	26	रम्भा तृतीया,
	27	3/	बु.	7	45	आर्द्रा	11	4	शू./	7	53	कर्क	27	22	5	26	19	13	5	29	19	8	5	38	19	10	5	12	18	38	27	भ. 18/12 से 28/39 तक, बुध पूर्व में उदित 12/35, (H) चतुर्थी तिथिक्षय,
		4		28	39				गं.	28	17																					
	28	5	गु.	25	53	पुन.	8	50	वृ.	24	56	कर्क			5	26	19	14	5	29	19	8	5	38	19	10	5	12	18	38	28	
	29	6	शु.	23	31	पुष्य	6	57	घ्रु.	21	56	कर्क			5	25	19	15	5	28	19	9	5	38	19	11	5	12	18	39	29	अरण्य षष्ठी, नेप्च्यून वक्री 10/02,
	30	7	श.	21	38	आश्ले.	5	29	व्या.	19	18	सिंह	5	29	5	25	19	15	5	28	19	9	5	37	19	11	5	12	18	39	30	भ. 21/38 बाद, शुक्र अश्वि. मेष में 29/02,
						/मघा	28	30																								
	31	8	र.	20	14	पू.फा.	28	0	ह.	17	4	सिंह			5	25	19	16	5	28	19	10	5	37	19	12	5	12	18	40	31	भ. 8/56 तक, बुध मार्गी 6/53,

(A) 18/38, श्रीगंगाजन्म, (B) श्रीकूर्म जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत, (C) स्नान समाप्त, जन्मदिन श्रीरवीन्द्रनाथ टैगोर, (D) श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, (E) शुक्र रेवती में 28/21, (F) भद्रकाली एकादशी (पं.), (G) 6/58, वक्री बुध मेष में 15/26, (H) महाराणा प्रताप जयन्ती (राज.).

मास पक्ष	दि.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
ज्येष्ठ शुक्ल	1	9	चं.	19	20	उ.फा.	28	1	व.	15	16	कन्या	9	58	5	24	19	16	5	28	19	10	5	37	19	12	5	11	18	40	1	
	2	10	मं.	18	57	हस्त	28	31	सि.	13	51	कन्या			5	24	19	17	5	28	19	11	5	37	19	13	5	11	18	40	2	श्रीगंगा दशहरा,
	3	11	बु.	19	1	चित्रा	—	—	व्य.	12	49	तुला	16	56	5	24	19	17	5	27	19	11	5	37	19	13	5	11	18	41	3	भ. 6/59 से 19/01 तक, निर्जला एकादशी व्रत (स.),
	4	12	गु.	19	34	चित्रा	5	28	व.	12	9	तुला			5	24	19	18	5	27	19	12	5	37	19	14	5	11	18	41	4	चम्पक द्वादशी,
	5	13	शु.	20	32	स्वाती	6	52	प.	11	50	वृश्चिक	26	11	5	24	19	18	5	27	19	12	5	36	19	14	5	11	18	42	5	बुध वृष में 18/14, प्रदोष व्रत,
	6	14	श.	21	55	विशा.	8	40	शि.	11	51	वृश्चिक			5	24	19	19	5	27	19	13	5	36	19	14	5	11	18	42	6	भ. 21/55 बाद,
	7	15	र.	23	42	अनु.	10	52	सि.	12	11	वृश्चिक			5	23	19	19	5	27	19	13	5	36	19	15	5	11	18	43	7	भ. 10/49 तक, सूर्य मृग. में 28/51, वटसावित्री व्रत (A)
आषाढ़ कृष्ण	8	1	चं.	25	49	ज्येष्ठा	13	25	सा.	12	47	धनु	13	25	5	23	19	20	5	27	19	13	5	36	19	15	5	11	18	43	8	आषाढ़ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	9	2	मं.	28	13	मूल	16	17	शु.	13	38	धनु			5	23	19	20	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	18	43	9	
	10	3	बु.	—	—	पू.षा.	19	21	शु.	14	40	मकर	26	8	5	23	19	20	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	18	44	10	भ. 17/30 बाद, मंगल भर. में 23/13,
	11	3	गु.	6	47	उ.षा.	22	30	ब्र.	15	47	मकर			5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	16	5	11	18	44	11	भ. 6/47 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
	12	4	शु.	9	21	श्रव.	25	34	ऐं.	16	51	मकर			5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	44	12	
	13	5	श.	11	46	धनि.	28	21	वै.	17	46	कुम्भ	15	0	5	23	19	22	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	45	13	पंचक प्रारम्भ 15/00, शुक्र भर. में 25/03,
	14	6	र.	13	48	शत.	—	—	वि.	18	21	कुम्भ			5	23	19	22	5	27	19	16	5	36	19	17	5	11	18	45	14	भ. 13/48 से 26/32 तक, सं. सूर्य मिथुन में 28/17, (B)
	15	7	चं.	15	16	शत.	6	39	प्री.	18	29	मीन	25	57	5	23	19	22	5	27	19	16	5	37	19	18	5	11	18	45	15	गुरु वक्री 13/20,
	16	8	मं.	16	1	पू.भा.	8	18	आ.	18	2	मीन			5	24	19	23	5	27	19	16	5	37	19	18	5	11	18	46	16	
	17	9	बु.	15	58	उ.भा.	9	11	सौ.	16	57	मीन			5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	18	5	11	18	46	17	भ. 27/31 बाद, बुध रोहि. में 24/17,
	18	10	गु.	15	5	रेव.	9	15	शो.	15	12	मेष	9	15	5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	19	5	12	18	46	18	भ. 15/05 तक, पंचक समाप्त 9/15,
	19	11	शु.	13	24	अश्वि.	8	32	अ.	12	49	मेष			5	24	19	23	5	28	19	17	5	37	19	19	5	12	18	47	19	योगिनी एकादशी व्रत (स.),
	20	12	श.	11	1	भर./ कृति.	7 / 29	4 / 1	सु.	9	51	वृष	12	36	5	24	19	24	5	28	19	17	5	37	19	19	5	12	18	47	20	शनि प्रदोष व्रत,
	21	13/ 14	र.	8 / 28	4 / 42	रोहि.	26	31	धृ./ शू.	6 / 26	24 / 36	वृष			5	24	19	24	5	28	19	18	5	37	19	19	5	12	18	47	21	भ. 8/04 से 18/23 तक, सूर्य आर्द्रा में 27/51, सूर्य (C) चतुर्दशी तिथिक्षय,
	22	30	चं.	25	5	मृग.	23	45	गं.	22	34	मिथुन	13	9	5	25	19	24	5	28	19	18	5	38	19	20	5	12	18	47	22	सोमवती अमा,
आषाढ़ शुक्ल	23	1	मं.	21	22	आर्द्रा	20	52	वृ.	18	26	मिथुन			5	25	19	24	5	28	19	18	5	38	19	20	5	13	18	47	23	आषाढ़ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,
	24	2	बु.	17	44	पुन.	18	4	ध्रु.	14	21	कर्क	12	45	5	25	19	24	5	29	19	18	5	38	19	20	5	13	18	48	24	चन्द्र दर्शन, मु. 30, रथयात्रा (श्रीजगदीश–रथोत्सव) (पुरी),
	25	3	गु.	14	19	पुष्य	15	29	व्या.	10	26	कर्क			5	25	19	25	5	29	19	18	5	38	19	20	5	13	18	48	25	भ. 24/48 बाद,
	26	4	शु.	11	17	आश्ले.	13	18	ह./ व.	6 / 27	49 / 34	सिंह	13	18	5	26	19	25	5	29	19	18	5	39	19	20	5	13	18	48	26	भ. 11/17 तक, बुध मृग. में 29/10, शुक्र कृत्ति. में (D)
	27	5	श.	8	43	मघा	11	36	सि.	24	48	सिंह			5	26	19	25	5	30	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	27	कुमार षष्ठी,
	28	6/ 7	र.	6 / 29	44 / 24	पू.फा.	10	29	व्य.	22	31	कन्या	16	19	5	26	19	25	5	30	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	28	भ. 29/24 बाद, विवस्वत् सप्तमी, सप्तमी तिथिक्षय,
	29	8	चं.	28	43	उ.फा.	10	1	व.	20	48	कन्या			5	27	19	25	5	30	19	19	5	40	19	20	5	14	18	48	29	भ. 17/04 तक, मंगल कृति. में 5/38, शुक्र वृष में (E)
	30	9	मं.	28	42	हस्त	10	13	व	19	36	तुला	[illegible]	[illegible]	5	27	19	25	5	[illegible]	19	19	5	40	19	20	5	[illegible]	18	48	30	बुध मिथुन में [illegible]

श्री वि. सं. 2066 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) जुलाई, सन् 2009 ई.

मास पक्ष	जुलाई	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
आषाढ़ शुक्ल	1	10	बु.	29	18	चित्रा	11	3	शि.	18	54	तुला			5	27	19	25	5	31	19	19	5	40	19	21	5	15	18	48	1	यूरेनस वक्री 13/08,
	2	11	गु.	—	—	स्वाती	12	29	सि.	18	40	तुला			5	28	19	25	5	31	19	19	5	41	19	21	5	15	18	48	2	भ. 17/52 बाद, बुध पूर्व में अस्त 21/25,
	3	11	शु.	6	27	विशा.	14	25	सा.	18	50	वृश्चि.	7	53	5	28	19	25	5	32	19	19	5	41	19	21	5	16	18	48	3	भ. 6/27 तक, मंगल वृष में 21/12, हरिशयनी एकादशी (A)
	4	12	श.	8	5	अनु.	16	48	शु.	19	20	वृश्चि.			5	29	19	25	5	32	19	19	5	42	19	20	5	16	18	48	4	बुध आर्द्रा में 8/41, शनिप्रदोष व्रत,
	5	13	र.	10	5	ज्येष्ठा	19	30	शु.	20	5	धनु	19	30	5	29	19	25	5	32	19	19	5	42	19	20	5	17	18	48	5	सूर्य पुन. में 27/24,
	6	14	चं.	12	23	मूल	22	27	ब्र.	21	2	धनु			5	29	19	25	5	33	19	19	5	42	19	20	5	17	18	48	6	भ. 12/23 से 25/37 तक, कोकिला व्रत, शिवशयनोत्सव, (B)
	7	15	मं.	14	51	पू.षा.	25	33	ऐं.	22	6	धनु			5	30	19	24	5	33	19	18	5	43	19	20	5	17	18	48	7	चातुर्मास्य व्रतनियमादि प्रारम्भ, गुरुपूर्णिमा (व्यास पूजा), (C)
श्रावण कृष्ण	8	1	बु.	17	25	उ.षा.	28	41	वै.	23	12	मकर	8	20	5	30	19	24	5	34	19	18	5	43	19	20	5	18	18	48	8	श्रावण कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, शुक्र रोहि. में 29/23, अशून्यशयन व्रत,
	9	2	गु.	19	56	श्रव.	—	—	वि.	24	15	मकर			5	31	19	24	5	34	19	18	5	44	19	20	5	18	18	48	9	
	10	3	शु.	22	18	श्रव.	7	43	प्री.	25	10	कुम्भ	21	10	5	31	19	24	5	35	19	18	5	44	19	20	5	19	18	48	10	भद्रा 9/06 से 22/18 तक, पंचक प्रारम्भ 21/10, बुध (D)
	11	4	श.	24	22	धनि.	10	33	आ.	25	50	कुम्भ			5	32	19	24	5	35	19	18	5	44	19	20	5	19	18	48	11	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	12	5	र.	26	0	शत.	13	1	सौ.	26	10	कुम्भ			5	32	19	23	5	36	19	17	5	45	19	19	5	19	18	47	12	
	13	6	चं.	27	3	पू.भा.	15	1	शो.	26	4	मीन	8	34	5	33	19	23	5	36	19	17	5	45	19	19	5	20	18	47	13	भ. 27/03 बाद,
	14	7	मं.	27	27	उ.भा.	16	24	अ.	25	26	मीन			5	33	19	23	5	37	19	17	5	46	19	19	5	20	18	47	14	भ. 15/15 तक, राहु उ.षा. 3, केतु पुष्य 1 में 16/40,
	15	8	बु.	27	8	रेव.	17	6	सु.	24	14	मेष	17	6	5	34	19	22	5	37	19	17	5	46	19	19	5	21	18	47	15	पंचक समाप्त 17/06, बुध कर्क में 8/25,
	16	9	गु.	26	3	अश्वि.	17	4	धृ.	22	26	मेष			5	35	19	22	5	38	19	16	5	47	19	18	5	21	18	46	16	सं. सूर्य कर्क में 15/08, मु. 30, पुण्यकाल सारा दिन, (E)
	17	10	शु.	24	16	भर.	16	19	शू.	20	3	वृष	22	1	5	35	19	22	5	38	19	16	5	47	19	18	5	22	18	46	17	भ. 13/09 से 24/16 तक, मंगल रोहि. में 25/14,
	18	11	श.	21	49	कृत्ति.	14	53	गं.	17	7	वृष			5	36	19	21	5	39	19	16	5	48	19	18	5	22	18	46	18	कामिका एकादशी व्रत (स.),
	19	12	र.	18	51	रोहि.	12	52	वृ.	13	44	मिथुन	23	41	5	36	19	21	5	39	19	15	5	48	19	17	5	23	18	45	19	सूर्य पुष्य में 26/57, प्रदोषव्रत,
	20	13	चं.	15	28	मृग.	10	24	ध्रु.	9	58	मिथुन			5	37	19	20	5	40	19	15	5	49	19	17	5	23	18	45	20	भ. 15/28 से 25/39 तक, शुक्र मृग. में 28/13,
	21	14	मं.	11	49	आर्द्रा.	7	38	व्या./	5	56	कर्क	23	28	5	37	19	20	5	40	19	14	5	49	19	17	5	24	18	45	21	सूर्यग्रहणवेध, **खग्रास सूर्यग्रहण–22 जुलाई**
						/पुन.	28	44	ह.	25	47																					
	22	30/	बु.	8	4	पुष्य	25	51	व.	21	38	कर्क			5	38	19	19	5	41	19	14	5	50	19	16	5	24	18	44	22	सूर्य सायन सिंह में 22/05, खग्रास सूर्यग्रहण (F)
श्रावण शुक्ल		1		28	23																											श्रावण शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय,
	23	2	गु.	24	54	आश्ले.	23	10	सि.	17	37	सिंह	23	10	5	39	19	19	5	41	19	13	5	50	19	16	5	24	18	44	23	चन्द्र दर्शन, मु. 15, बुध आश्ले में 11/09, सूर्यग्रहणवेध,
	24	3	शु.	21	47	मघा	20	50	व्य.	13	52	सिंह			5	39	19	18	5	42	19	13	5	51	19	15	5	25	18	44	24	मधुस्रवा तृतीया (संधारा तीज), सूर्यग्रहणवेध,
	25	4	श.	19	10	पू.फा.	19	1	व.	10	30	कन्या	24	40	5	40	19	18	5	43	19	12	5	51	19	15	5	25	18	43	25	भ. 8/28 से 19/10 तक, सूर्यग्रहणवेध,
	26	5	र.	17	11	उ.फा.	17	50	प./	7	37	कन्या			5	40	19	17	5	43	19	12	5	52	19	14	5	26	18	43	26	शुक्र मिथुन में 25/10, बुध पश्चिम में उदित 11/07, (G)
									शि.	29	18																					
	27	6	चं.	15	56	हस्त	17	21	सि.	27	35	तुला	29	24	5	41	19	16	5	44	19	11	5	52	19	14	5	26	18	42	27	
	28	7	मं.	15	27	चित्रा	17	39	सा.	26	30	तुला			5	42	19	16	5	44	19	11	5	53	19	13	5	27	18	42	28	भ. 15/27 से 27/36 तक, गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती,
	29	8	बु.	15	44	स्वाती	18	42	शु.	26	0	तुला			5	42	19	15	5	45	19	10	5	53	19	13	5	27	18	41	29	श्रीदुर्गाष्टमी,
	30	9	गु.	16	44	विशा.	20	26	शु.	26	2	वृश्चि.	13	56	5	43	19	14	5	45	19	9	5	54	19	12	5	28	18	40	30	बुध मघा सिंह में 15/55, वक्री गुरु धनि. 2 मकर में (H)
	31	10	शु.	18	21	अनु.	22	45	ब्र.	26	30	वृश्चि.			5	43	19	14	5	46	19	9	5	54	19	11	5	28	18	40	31	

(A) व्रत (स.), (B) श्री सत्यनारायण व्रत, (C) आषाढ़ी पूर्णिमा, (D) पुन. में 16/56, शनि पू.फा. 4 में 19/38, (E) बुध पुष्य मे 22/05, (F) (भारत में दृश्य) (देखें पृ. 10), हरियाली अमावस.
(G) नागपंचमी, श्रीकल्कि जयन्ती, (H) 19/50.

मास पक्ष	अगस्त	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	जयपुर सूर्योदय घं. मि.	जयपुर सूर्यास्त घं. मि.	वाराणसी सूर्योदय घं. मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं. मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
श्रावण शुक्ल	1	11	श.	20 27	ज्येष्ठा	25 29	ऐं.	27 18	धनु	25 29	5 44	19 13	5 46	19 8	5 55	19 11	5 29	18 39	1	भ. 7/24 से 20/27 तक, शुक्र आर्द्रा में 20/46, (A)
	2	12	र.	22 51	मूल	28 31	वै.	28 18	धनु		5 45	19 12	5 47	19 7	5 55	19 10	5 29	18 39	2	सूर्य आश्ले. में 25/46,
	3	13	चं.	25 25	पू.षा.	— —	वि.	29 24	धनु		5 45	19 11	5 48	19 7	5 56	19 9	5 30	18 38	3	सोम प्रदोष व्रत,
	4	14	मं.	27 59	पू.षा.	7 38	प्री.	— —	मकर	14 25	5 46	19 11	5 48	19 6	5 56	19 9	5 30	18 37	4	भ. 27/59 बाद,
	5	15	बु.	— —	उ.षा.	10 44	प्री.	6 28	मकर		5 47	19 10	5 49	19 5	5 57	19 8	5 31	18 37	5	भ. 17/12 तक, रक्षाबन्धन(राखी) (देखें पृष्ठ 93), (B)
	6	15	गु.	6 25	श्रव.	13 41	आ.	7 27	कुम्भ	27 4	5 47	19 9	5 49	19 4	5 58	19 7	5 31	18 36	6	पंचक प्रारम्भ 27/04, मंगल मृग. में 13/30, ऋक (C)
भाद्रपद कृष्ण	7	1	शु.	8 37	धनि.	16 23	सौ.	8 14	कुम्भ		5 48	19 8	5 50	19 4	5 58	19 7	5 32	18 35	7	भाद्रपद कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, बुध पू. फा. में 19/27,
	8	2	श.	10 30	शत.	18 46	शो.	8 47	कुम्भ		5 48	19 7	5 50	19 3	5 59	19 6	5 32	18 35	8	भ. 23/14 बाद,
	9	3	र.	11 59	पू.भा.	20 44	अ.	9 2	मीन	14 17	5 49	19 6	5 51	19 2	5 59	19 5	5 32	18 34	9	भ. 11/59 तक, बहुला चतुर्थी, श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी (D)
	10	4	चं.	13 2	उ.भा.	22 15	सु.	8 56	मीन		5 50	19 5	5 51	19 1	6 0	19 4	5 33	18 33	10	
	11	5	मं.	13 34	रेव.	23 15	धृ.	8 27	मेष	23 15	5 50	19 5	5 52	19 0	6 0	19 3	5 33	18 32	11	पंचक समाप्त 23/15,
	12	6	बु.	13 32	अश्वि.	23 41	शू.	7 31	मेष		5 51	19 4	5 52	18 59	6 0	19 3	5 34	18 32	12	भ. 13/32 से 25/14 तक, शनि उ.फा. 1 में 28/45,
	13	7	गु.	12 56	भर.	23 33	गं./	6 9	वृष	29 26	5 51	19 3	5 53	18 58	6 1	19 2	5 34	18 31	13	शुक्र पुन. में 8/22, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मा.) (E)
							वृ.	28 18												
	14	8	शु.	11 45	कृत्ति.	22 50	ध्रु.	25 59	वृष		5 52	19 2	5 54	18 57	6 1	19 1	5 35	18 30	14	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वै.)(चन्द्रोदय 23 घं. 52 मि.), (F)
	15	9	श.	9 59	रोहि.	21 34	व्या.	23 13	वृष		5 53	19 1	5 54	18 57	6 2	19 0	5 35	18 29	15	भ. 20/50 बाद, भारत स्वतन्त्रता दिवस, श्रीगुग्गानवमी,
	16	10/	र.	7 41	मृग.	19 48	ह.	20 2	मिथुन	8 45	5 53	19 0	5 55	18 56	6 2	18 59	5 36	18 28	16	भ. 7/41 तक, सं. सूर्य मघा सिंह में 23/29, मु. 15, (G)
		11		28 56																एकादशी तिथिक्षय,
	17	12	चं.	25 49	आर्द्रा	17 38	व.	16 31	मिथुन		5 54	18 59	5 55	18 55	6 3	18 58	5 36	18 27	17	बुध उ.फा. में 10/21, अजा एकादशी व्रत(वै.), पर्युषणपर्व (H)
	18	13	मं.	22 27	पुन.	15 9	सि.	12 45	कर्क	9 47	5 54	18 58	5 56	18 54	6 3	18 57	5 36	18 27	18	भ. 22/27 बाद, भौम प्रदोष व्रत,
	19	14	बु.	18 58	पुष्य	12 31	व्य./	8 50	कर्क		5 55	18 57	5 56	18 53	6 4	18 56	5 37	18 26	19	भ. 8/43 तक, बुध कन्या में 29/24,
							व.	28 53												
	20	30	गु.	15 31	आश्ले.	9 51	प.	25 1	सिंह	9 51	5 56	18 55	5 57	18 52	6 4	18 55	5 37	18 25	20	कुशोत्पाटिनी अमा., पिठोरी अमा,
भाद्रपद शुक्ल	21	1	शु.	12 16	मघा./	7 21	शि.	21 22	सिंह		5 56	18 54	5 57	18 51	6 5	18 54	5 38	18 24	21	भाद्रपद शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, शुक्र कर्क में 20/16,
					पू.फा.	29 9														
	22	2	श.	9 21	उ.फा.	27 26	सि.	18 4	कन्या	10 40	5 57	18 53	5 58	18 50	6 5	18 53	5 38	18 23	22	चन्द्र दर्शन, मु. 45, सूर्य सायन कन्या में 29/08, शरद (I)
	23	3/	र.	6 57	हस्त	26 20	सा.	15 14	कन्या		5 57	18 52	5 58	18 49	6 6	18 52	5 39	18 22	23	भ. 18/04 से 29/11 तक, हरितालिका तृतीया, गौरी (J)
		4		29 11																चतुर्थी तिथिक्षय,
	24	5	चं.	28 11	चित्रा	25 58	शु.	12 57	तुला	14 3	5 58	18 51	5 59	18 48	6 6	18 51	5 39	18 21	24	शुक्र पुष्य में 15/46, संवत्सरी महापर्व (पंचमी पक्ष–जैन),(K)
	25	6	मं.	27 59	स्वाती	26 23	शु.	11 18	तुला		5 59	18 50	5 59	18 47	6 7	18 50	5 39	18 20	25	वक्री गुरु धनि. 1 में 20/48, सूर्य षष्ठी,
	26	7	बु.	28 36	विशा.	27 37	ब्र.	10 18	वृश्चि.	21 14	5 59	18 49	6 0	18 45	6 7	18 49	5 40	18 19	26	भ. 28/36 बाद, मंगल आर्द्रा में 23/44
	27	8	गु.	29 58	अनु.	29 35	ऐं.	9 56	वृश्चि.		6 0	18 48	6 0	18 44	6 8	18 48	5 40	18 18	27	भ. 17/17 तक, श्रीराधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ, (L)
	28	9	शु.	— —	ज्येष्ठा	— —	वै.	10 8	वृश्चि.		6 0	18 46	6 1	18 43	6 8	18 47	5 41	18 17	28	
	29	9	श.	7 57	ज्येष्ठा	8 8	वि.	10 47	धनु	8 8	6 1	18 45	6 1	18 42	6 8	18 46	5 41	18 16	29	श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव)
	30	10	र.	10 21	मूल	11 5	प्री.	11 43	धनु		6 1	18 44	6 2	18 41	6 9	18 45	5 41	18 15	30	भ. 23/39 बाद, सूर्य पू. फा. में 19/22,
	31	11	चं.	12 57	पू.षा.	14 13	आ.	12 47	मकर	21 0	6 2	18 43	6 2	18 40	6 9	18 44	5 42	18 14	31	भ. 12/57 तक, बुध हस्त में 9/22, शनि अस्त 8/20, (M)

(A) पवित्रा एकादशी व्रत (स्.), (B) श्रावणी पूर्णिमा, शुक्ल–कृष्ण यजु उपाकर्म, श्री सत्यनारायण व्रत, (C) उपाकर्म, (देखें पृष्ठ 93), (D) व्रत (चन्द्रोदय 20 घं. 46 मि.), (E) (चन्द्रोदय 23 घं. 03 मि) (F) गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव), (G) पुण्यकाल मध्याह्न बाद, मंगल मिथुन में 15/25, अजा एकादशी व्रत (स्मा.), (H) (जैन), (I) ऋतु प्रारम्भ, श्रीवराह जयन्ती, मेला बाबा श्रीगोसाईं आणां–कुराली (मोहाली) पं. (J) तृतीया (देखें पृष्ठ 93), सिद्धिविनायक व्रत, हरितालिका चतुर्थी, कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषिद्ध) (चन्द्रास्त 20 घं. 33 मि.), साम उपाकर्म, (K) ऋषि पंचमी, (L) श्रीदुर्गाष्टमी व्रत, (M) पद्मा एकादशी व्रत (स्.)

(नन्दोत्सव). (G) पुण्यकाल मध्याह्न बाद, मंगल मिथुन में ... (C) उपाकर्म, (देखें पृष्ठ 93), (D) व्रत (चन्द्रोदय 20 घं 46 मि.), (E) (चन्द्रोदय 23 घं 03 मि) (F) गोकुलाष्टमी ... आणां-कुराली (मोहाली) पं. (J) तृतीया (देखें पृष्ठ 93).
सिद्धिविनायक व्रत, हरितालिका चतुर्थी, कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषिद्ध) (चन्द्रास्त 20 घं 33 मि), साम उपाकर्म, (K) ऋषि पंचमी, (L) श्रीदुर्गाष्टमी व्रत, (M) पद्मा एकादशी व्रत (स).

मास पक्ष	सितम्बर	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
भाद्रपद शु.	1	12	मं.	15	31	उ.षा.	17	19	सौ.	13	51	मकर			6	3	18	42	6	3	18	39	6	10	18	43	5	42	18	13	1	श्रीवामन जयन्ती, भौम प्रदोष व्रत,
	2	13	बु.	17	53	श्रव.	20	13	शो.	14	46	मकर			6	3	18	41	6	3	18	38	6	10	18	42	5	43	18	12	2	
	3	14	गु.	19	55	धनि.	22	47	अ.	15	25	कुम्भ	9	32	6	4	18	39	6	4	18	37	6	11	18	41	5	43	18	11	3	भ. 19/55 बाद, पंचक प्रारम्भ 9/32, वक्री प्लूटो मूल (A)
	4	15	शु.	21	32	शत.	24	56	सु.	15	46	कुम्भ			6	4	18	38	6	4	18	35	6	11	18	40	5	43	18	10	4	भ. 8/44 तक, शुक्र आश्ले. में 19/45, अगस्त्य उदित, (B)
आश्विन कृष्ण	5	1	श.	22	42	पू.भा.	26	38	धृ.	15	47	मीन	20	15	6	5	18	37	6	5	18	34	6	12	18	39	5	44	18	9	5	आश्विन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, पितृपक्ष(महालय)प्रा., श्राद्ध (C)
	6	2	र.	23	24	उ.भा.	27	55	शू.	15	25	मीन			6	5	18	36	6	5	18	33	6	12	18	38	5	44	18	8	6	द्वितीया का श्राद्ध,
	7	3	चं.	23	40	रेव.	28	45	गं.	14	43	मेष	28	45	6	6	18	34	6	6	18	32	6	12	18	37	5	44	18	7	7	भ. 11/32 से 23/40 तक, पंचक समाप्त 28/45, बुध (D)
	8	4	मं.	23	30	अश्वि.	29	10	वृ.	13	40	मेष			6	7	18	33	6	6	18	31	6	13	18	35	5	45	18	6	8	चतुर्थी का श्राद्ध, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	9	5	बु.	22	55	भर.	29	11	ध्रु.	12	17	मेष			6	7	18	32	6	7	18	30	6	13	18	34	5	45	18	5	9	शनि उ.फा. 2 कन्या में 24/00, भरणीश्राद्ध, पंचमी का (E)
	10	6	गु.	21	57	कृत्ति.	28	49	व्या.	10	35	वृष	11	8	6	8	18	31	6	7	18	28	6	14	18	33	5	46	18	4	10	भ. 21/57 बाद, चन्द्रषष्ठी व्रत, षष्ठी का श्राद्ध
	11	7	शु.	20	35	रोहि.	28	4	ह.	8	34	वृष			6	8	18	29	6	8	18	27	6	14	18	32	5	46	18	3	11	भ. 9/16 तक, प्लूटो मार्गी 22/25, श्रीमहालक्ष्मी व्रत (F)
	12	8	श.	18	51	मृग.	26	57	व./ सि.	6 / 27	15 / 37	मिथुन	15	33	6	9	18	28	6	8	18	26	6	14	18	31	5	46	18	2	12	अष्टमी का श्राद्ध.
	13	9	र.	16	45	आर्द्रा	25	29	व्य.	24	43	मिथुन			6	9	18	27	6	9	18	25	6	15	18	30	5	47	18	1	13	भ. 27/32 बाद, सूर्य उ. फा. में 13/18, वक्री बुध (G)
	14	10	चं.	14	20	पुन.	23	44	व.	21	33	कर्क	18	12	6	10	18	26	6	9	18	24	6	15	18	29	5	47	17	59	14	भ. 14/20 तक, दशमी/एकादशी का श्राद्ध, (देखें पृ. 93).
	15	11	मं.	11	40	पुष्य	21	44	प.	18	12	कर्क			6	10	18	24	6	10	18	22	6	16	18	28	5	47	17	58	15	शुक्र मघा सिंह में 20/39, राहु उ.षा. 2, केतु पुन. (H)
	16	12/ 13	बु.	8 / 29	48 / 51	आश्ले.	19	36	शि.	14	43	सिंह	19	36	6	11	18	23	6	10	18	21	6	16	18	26	5	48	17	57	16	भ. 29/51 बाद, सं. सूर्य कन्या में 23/23, मु. 30, (I) त्रयोदशी तिथिक्षय,
	17	14	गु.	26	57	मघा	17	27	सि.	11	11	सिंह			6	12	18	22	6	11	18	20	6	17	18	25	5	48	17	56	17	भ. 16/24 तक, मंगल पुन. में 17/33, मघाश्राद्ध, (J)
	18	30	शु.	24	14	पू.फा.	15	24	सा./ शु.	7 / 28	44 / 26	कन्या	20	56	6	12	18	20	6	11	18	19	6	17	18	24	5	49	17	55	18	महालय अमावस, सर्वपितृ अमावस, अमा/सर्वपितृ श्राद्ध (K)
आश्विन शुक्ल	19	1	श.	21	51	उ.फा.	13	38	शु.	25	27	कन्या			6	13	18	19	6	12	18	18	6	17	18	23	5	49	17	54	19	आश्विन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, प्लूटो मूल 3 में 30/11, (L)
	20	2	र.	19	57	हस्त	12	18	ब्र.	22	52	तुला	23	50	6	13	18	18	6	12	18	16	6	18	18	22	5	49	17	53	20	चन्द्र दर्शन, मु. 30.
	21	3	चं.	18	41	चित्रा	11	32	ऐं.	20	49	तुला			6	14	18	17	6	13	18	15	6	18	18	21	5	50	17	52	21	
	22	4	मं.	18	9	स्वाती	11	28	वै.	19	21	वृश्चि.	29	55	6	14	18	15	6	13	18	14	6	19	18	20	5	50	17	51	22	भ. 6/25 से 18/09 तक, सूर्य सायन तुला में (M)
	23	5	बु.	18	25	विशा.	12	10	वि.	18	31	वृश्चि.			6	15	18	14	6	14	18	13	6	19	18	18	5	50	17	50	23	उपाङ्गललिता व्रत,
	24	6	गु.	19	28	अनु.	13	39	प्री.	18	17	वृश्चि.			6	16	18	13	6	14	18	12	6	20	18	17	5	51	17	49	24	व. बुध सिंह में 8/22,
	25	7	शु.	21	14	ज्येष्ठा	15	50	आ.	18	36	धनु	15	50	6	16	18	12	6	15	18	10	6	20	18	16	5	51	17	48	25	भ. 21/14 बाद,
	26	8	श.	23	31	मूल	18	33	सौ.	19	20	धनु			6	17	18	10	6	15	18	9	6	21	18	15	5	52	17	46	26	भ. 10/23 तक, सूर्य हस्त में 28/43, शुक्र पू.फा. में (N)
	27	9	र.	26	6	पू.षा.	21	37	शो.	20	19	मकर	28	23	6	17	18	9	6	16	18	8	6	21	18	14	5	52	17	45	27	महानवमी (पूजा/बलिदानार्थ), सरस्वती पूजन, नवरात्र (O)
	28	10	चं.	28	43	उ.षा.	24	44	अ.	21	21	मकर			6	18	18	8	6	16	18	7	6	21	18	13	5	52	17	44	28	विजयादशमी(दशहरा), सरस्वती के लिए बलिदान, आयुध (P)
	29	11	मं.	–	–	श्रव.	27	40	सु.	22	17	मकर			6	19	18	6	6	17	18	6	6	22	18	12	5	53	17	43	29	भ. 17/54 बाद, बुध मार्गी 18/45, सरस्वती विसर्जन, (Q)
	30	11	बु.	7	6	धनि.	30	14	धृ.	22	56	कुम्भ	17	0	6	19	18	5	6	17	18	4	6	22	18	11	5	53	17	42	30	भ. 7/06 तक, पंचक प्रारम्भ 17/00, पापांकुशा एकादशी (R)

(A) 2 में 10/46, श्री अनन्त चतुर्दशी व्रत, (B) श्री सत्यनारायण व्रत, प्रोष्ठपदी श्राद्ध, पूर्णिमा श्राद्ध, (C) प्रारम्भ, प्रतिपदा का श्राद्ध, (D) वक्री 10/15, तृतीया का श्राद्ध, (E) श्राद्ध, (F) समाप्त, सप्तमी का श्राद्ध, (G) उ. फा. में 20/37, बुध पश्चिम में अस्त 16/00, नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध, (H) 4 में 14/21, इन्दिरा एकादशी व्रत (स), द्वादशी का श्राद्ध, संन्यासियों का श्राद्ध, (I) पुण्यकाल मध्याह्न बाद, त्रयोदशी का श्राद्ध, प्रदोष व्रत, (J) चतुर्दशी का श्राद्ध, अपमृत्यु वालों का श्राद्ध, (K) चतुर्दशी-अमा-पूर्णिमा एवं अज्ञात मृत्युतिथि वालों का श्राद्ध, श्राद्ध समाप्त, (L) मातामह/मातामही(नाना-नानी) का महालय श्राद्ध, शारद नवरात्र प्रारम्भ, कलशस्थापन, (M) 26/48, विषुवदिन, दक्षिण गोल प्रारम्भ, (N) 18/58, महाष्टमी, **श्रीदुर्गाष्टमी, सरस्वती आवाहन**, (O) समाप्त, बुध पूर्व में उदित 18/30, (P) पूजा, अपराजिता पूजन, सीमोल्लंघन, श्रीमाधवाचार्य जयन्ती, (Q) भरत मिलाप, (R) व्रत (स).

श्री वि. सं. 2066 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — अक्तूबर, सन् 2009 ई.

मास पक्ष	अक्टूबर	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	जयपुर सूर्योदय घं. मि.	जयपुर सूर्यास्त घं. मि.	वाराणसी सूर्योदय घं. मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं. मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
आश्वि. शु.	1	12	गु.	9 5	शत.	— —	शू.	23 12	कुम्भ		6 20	18 4	6 18	18 3	6 23	18 9	5 54	17 41	1	वक्री नेप्च्यून धनि. 2 मकर में 28/50, प्रदोष व्रत,
	2	13	शु.	10 31	शत.	8 18	गं.	23 3	मीन	27 29	6 20	18 3	6 18	18 2	6 23	18 8	5 54	17 40	2	जन्मदिन श्रीमहात्मा गान्धी,
	3	14	श.	11 22	पू.भा.	9 48	वृ.	22 26	मीन		6 21	18 2	6 19	18 1	6 24	18 7	5 54	17 39	3	भ. 11/22 से 23/31 तक, वक्री गुरु श्रव. 4 में (A)
	4	15	र.	11 40	उ.भा.	10 45	ध्रु.	21 23	मीन		6 22	18 0	6 19	18 0	6 24	18 6	5 55	17 38	4	बुध कन्या में 27/41, महर्षि वाल्मीकि जयन्ती, कार्तिक (B)
कार्तिक कृष्ण	5	1	चं.	11 26	रेव.	11 11	व्या.	19 58	मेष	11 11	6 22	17 59	6 20	17 59	6 25	18 5	5 55	17 37	5	कार्तिक कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, पंचक समाप्त 11/11, मंगल (C)
	6	2	मं.	10 47	अश्वि.	11 12	ह.	18 13	मेष		6 23	17 58	6 20	17 58	6 25	18 4	5 56	17 36	6	भ. 22/16 बाद, शनि उ.फा. 3 में 21/41, शनि उदित (D)
	7	3	बु.	9 46	भर.	10 52	व.	16 12	वृष	16 44	6 23	17 57	6 21	17 56	6 26	18 3	5 56	17 35	7	भ. 9/46 तक, शुक्र उ.फा. में 15/11, करक चतुर्थी (E)
	8	4	गु.	8 28	कृत्ति.	10 16	सि.	13 59	वृष		6 24	17 55	6 22	17 55	6 26	18 2	5 57	17 34	8	
	9	5/6	शु.	6 57 / 29 15	रोहि.	9 26	व्य.	11 35	मिथुन	20 57	6 25	17 54	6 22	17 54	6 27	18 1	5 57	17 33	9	भ. 29/15 बाद, षष्ठी तिथिक्षय,
	10	7	श.	27 24	मृग.	8 26	व./प.	9 3 / 30 24	मिथुन		6 25	17 53	6 23	17 53	6 27	18 0	5 58	17 32	10	भ. 16/20 तक, सूर्य चित्रा में 17/49, शुक्र कन्या (F)
	11	8	र.	25 25	आर्द्रा/पुन.	7 17 / 30 0	शि.	27 38	कर्क	24 20	6 26	17 52	6 23	17 52	6 28	17 59	5 58	17 31	11	मंगल पुष्य में 15/49, अहोई अष्टमी (पं.),
	12	9	चं.	23 19	पुष्य	28 37	सि.	24 47	कर्क		6 27	17 51	6 24	17 51	6 28	17 58	5 58	17 30	12	बुध हस्त में 26/21,
	13	10	मं.	21 7	आश्ले.	27 8	सा.	21 50	सिंह	27 8	6 27	17 50	6 24	17 50	6 29	17 57	5 59	17 29	13	भ. 10/13 से 21/07 तक, गुरु मार्गी 10/00,
	14	11	बु.	18 52	मघा	25 37	शु.	18 52	सिंह		6 28	17 48	6 25	17 49	6 29	17 56	5 59	17 28	14	रमा एकादशी व्रत (स.),
	15	12	गु.	16 39	पू.फा.	24 8	शु.	15 54	कन्या	29 47	6 29	17 47	6 26	17 48	6 30	17 55	6 0	17 27	15	यमप्रीत्यर्थ दीपदान, प्रदोष व्रत, गोवत्स द्वादशी,
	16	13	शु.	14 31	उ.फा.	22 48	ब्र.	13 1	कन्या		6 29	17 46	6 26	17 47	6 30	17 54	6 0	17 26	16	भ. 14/31 से 25/34 तक, बुध पूर्व में अस्त 27/12, (G)
	17	14	श.	12 37	हस्त	21 44	ऐं.	10 18	कन्या		6 30	17 45	6 27	17 46	6 31	17 53	6 1	17 25	17	सं. सूर्य तुला में 11/21, मु. 30, पुण्यकाल 17/44 तक, (H)
	18	30	र.	11 3	चित्रा	21 3	वै./वि.	7 51 / 29 46	तुला	9 20	6 31	17 44	6 27	17 45	6 32	17 52	6 1	17 24	18	शुक्र हस्त में 9/34, श्रीमहावीर निर्वाण दिवस (जैन), (I)
कार्तिक शुक्ल	19	1	चं.	9 57	स्वाती	20 53	प्री.	28 7	तुला		6 31	17 43	6 28	17 44	6 32	17 51	6 2	17 23	19	कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, भाई दूज, यम द्वितीया,
	20	2	मं.	9 27	विशा.	21 20	आ.	27 0	वृश्चि.	15 10	6 32	17 42	6 29	17 43	6 33	17 50	6 2	17 23	20	चन्द्र दर्शन, मु. 45, बुध चित्रा में 28/15, श्रीविश्वकर्मा पूजा,
	21	3	बु.	9 38	अनु.	22 29	सौ.	26 26	वृश्चि.		6 33	17 41	6 29	17 42	6 33	17 49	6 3	17 22	21	भ. 22/05 बाद,
	22	4	गु.	10 33	ज्येष्ठा	24 19	शो.	26 25	धनु	24 19	6 34	17 40	6 30	17 41	6 34	17 48	6 4	17 21	22	भ. 10/33 तक, स्वामी रामतीर्थ जयन्ती,
	23	5	शु.	12 8	मूल	26 45	अ.	26 52	धनु		6 34	17 39	6 31	17 40	6 35	17 47	6 4	17 20	23	सूर्य स्वाती में 28/15, गुरु धनि. 1 में 8/06, सूर्य (J)
	24	6	श.	14 19	पू.षा.	29 39	सु.	27 41	धनु		6 35	17 38	6 31	17 39	6 35	17 46	6 5	17 19	24	बुध तुला में 26/18, सूर्य षष्ठी (बिहार),
	25	7	र.	16 52	उ.षा.	— —	धृ.	28 40	मकर	12 25	6 36	17 37	6 32	17 38	6 36	17 45	6 5	17 18	25	भ. 16/52 से 30/12 तक,
	26	8	चं.	19 32	उ.षा.	8 46	शू.	29 39	मकर		6 37	17 36	6 33	17 37	6 36	17 45	6 6	17 18	26	गोपाष्टमी,
	27	9	मं.	22 2	श्रव.	11 49	गं.	30 26	कुम्भ	25 15	6 37	17 35	6 33	17 36	6 37	17 44	6 6	17 17	27	पंचक प्रारम्भ 25/15, अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी,
	28	10	बु.	24 7	धनि.	14 34	वृ.	— —	कुम्भ		6 38	17 34	6 34	17 35	6 38	17 43	6 7	17 16	28	बुध स्वा. में 25/11, शुक्र चित्रा में 26/36,
	29	11	गु.	25 36	शत.	16 49	वृ.	6 51	कुम्भ		6 39	17 33	6 35	17 34	6 38	17 42	6 8	17 15	29	भ. 12/51 से 25/36 तक, देवप्रबोधिनी एकादशी (K)
	30	12	शु.	26 23	पू.भा.	18 24	ध्रु./व्या.	6 48 / 30 11	मीन	12 4	6 40	17 32	6 36	17 34	6 39	17 41	6 8	17 15	30	देव प्रबोधोत्सव, तुलसी विवाह, चातुर्मास्य व्रत–नियमादि (L)
	31	13	श.	26 28	उ.भा.	19 18	ह.	29 2	मीन		6 40	17 31	6 36	17 33	6 40	17 41	6 9	17 14	31	शनि प्रदोष व्रत,

(A) 11/20, वक्री यूरेनस पू.भा. 3 कुम्भ में 22/51, शरत्पूर्णिमा, कोजागर व्रत, श्री सत्यनारायण व्रत, (B) स्नान प्रारम्भ, (C) कर्क में 9/17, (D) 15/32, (E) (करवा चौथ) (चन्द्रोदय 19 घं 47 मि), श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, [illegible]

श्री वि. सं. 2066 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) नवम्बर, सन् 2009 ई.

मास पक्ष	नवम्बर	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
का.शु.	1	14	र	25	53	रेव.	19	31	व.	27	22	मेष	19	31	6	41	17	30	6	37	17	32	6	40	17	40	6	9	17	13	1	भ. 25/53 बाद, पंचक समाप्त 19/31, (A)
	2	15	चं.	24	44	अश्वि.	19	11	सि.	25	15	मेष			6	42	17	30	6	38	17	31	6	41	17	39	6	10	17	13	2	भ. 13/18 तक, त्रिपुरोत्सव, श्रीगुरुनानक जयन्ती, (B)
मार्गशीर्ष कृष्ण	3	1	मं.	23	8	भर.	18	21	व्य.	22	47	वृष	24	5	6	43	17	29	6	38	17	30	6	42	17	39	6	11	17	12	3	मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, शुक्र तुला में 10/44,
	4	2	बु.	21	13	कृत्ति.	17	12	व.	20	4	वृष			6	44	17	28	6	39	17	30	6	42	17	38	6	11	17	11	4	शनि उ.फा. 4 में 29/45, नेप्च्यून मार्गी 23/43,
	5	3	गु.	19	6	रोहि.	15	49	प.	17	11	मिथुन	27	4	6	44	17	27	6	40	17	29	6	43	17	37	6	12	17	11	5	भ. 8/09 से 19/06 तक, बुध विशा. में 27/45, (C)
	6	4	शु.	16	53	मृग.	14	19	शि.	14	12	मिथुन			6	45	17	26	6	41	17	28	6	44	17	37	6	13	17	10	6	सूर्य विशा. में 12/28,
	7	5	श.	14	40	आर्द्रा	12	49	सि.	11	13	कर्क	29	43	6	46	17	26	6	41	17	28	6	44	17	36	6	13	17	10	7	
	8	6	र.	12	30	पुन.	11	21	सा./	8	16	कर्क			6	47	17	25	6	42	17	27	6	45	17	35	6	14	17	9	8	भ. 12/30 से 23/28 तक, शुक्र स्वा. में 18/38,
									शु.	29	22																					
	9	7	चं.	10	25	पुष्य	9	59	शु.	26	34	कर्क			6	48	17	24	6	43	17	26	6	46	17	35	6	15	17	8	9	मंगल आश्ले. में 14/41, श्रीकालाष्टमी (श्रीभैरवाष्टमी),
	10	8/	मं.	8	28	आश्ले.	8	43	ब्र.	23	53	सिंह	8	43	6	49	17	24	6	44	17	26	6	47	17	34	6	15	17	8	10	
		9		30	38																											नवमी तिथिक्षय,
	11	10	बु.	28	59	मघा/	7	36	ऐं.	21	18	सिंह			6	49	17	23	6	44	17	25	6	47	17	34	6	16	17	8	11	भ. 17/48 से 28/59 तक,
						पू.फा.	30	38																								
	12	11	गु.	27	30	उ.फा.	29	51	वै.	18	52	कन्या	12	25	6	50	17	23	6	45	17	25	6	48	17	33	6	17	17	7	12	बुध वृश्चिक में 10/09, उत्पन्ना एकादशी व्रत (स.).
	13	12	शु.	26	16	हस्त	29	19	वि.	16	36	कन्या			6	51	17	22	6	46	17	24	6	49	17	33	6	17	17	7	13	
	14	13	श.	25	21	चित्रा	29	5	प्री.	14	34	तुला	17	10	6	52	17	21	6	47	17	24	6	50	17	32	6	18	17	6	14	भ. 25/21 बाद, बुध अनु. में 13/01, बाल दिवस, (D)
	15	14	र.	24	48	स्वाती	29	15	आ.	12	47	तुला			6	53	17	21	6	48	17	23	6	50	17	32	6	19	17	6	15	भ. 13/05 तक,
	16	30	चं.	24	43	विशा.	29	52	सौ.	11	21	वृश्चि.	23	40	6	54	17	20	6	48	17	23	6	51	17	32	6	19	17	6	16	सं. सूर्य वृश्चिक में 11/11, मु. 45, पुण्यकाल सारा दिन, (E)
मार्गशीर्ष शुक्ल	17	1	मं.	25	11	अनु.	–	–	शो.	10	17	वृश्चि.			6	54	17	20	6	49	17	22	6	52	17	31	6	20	17	5	17	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, राहु उ.षा. 1 धनु, केतु पुन. (F)
	18	2	बु.	26	14	अनु.	7	2	अ.	9	40	वृश्चि.			6	55	17	19	6	50	17	22	6	53	17	31	6	21	17	5	18	चन्द्र दर्शन, मु. 15,
	19	3	गु.	27	52	ज्येष्ठा	8	45	सु.	9	29	धनु	8	45	6	56	17	19	6	51	17	22	6	53	17	31	6	22	17	5	19	सूर्य अनु. में 18/29, शुक्र विशा. में 9/52,
	20	4	शु.	30	1	मूल	11	1	धृ.	9	45	धनु			6	57	17	19	6	52	17	21	6	54	17	30	6	22	17	4	20	भ. 16/56 से 30/01 तक,
	21	5	श.	–	–	पू.षा.	13	45	शू.	10	22	मकर	20	30	6	58	17	18	6	52	17	21	6	55	17	30	6	23	17	4	21	
	22	5	र.	8	34	उ.षा.	16	49	गं.	11	16	मकर			6	59	17	18	6	53	17	21	6	56	17	30	6	24	17	4	22	बुध ज्येष्ठा में 27/27, सूर्य सायन धनु में 9/53,
	23	6	चं.	11	17	श्रव.	19	58	वृ.	12	16	मकर			7	0	17	18	6	54	17	21	6	56	17	30	6	25	17	4	23	स्कन्द-गुह-चम्पा षष्ठी, मित्र सप्तमी (देखें पृष्ठ 94),
	24	7	मं.	13	56	धनि.	22	58	ध्रु.	13	13	कुम्भ	9	30	7	0	17	17	6	55	17	20	6	57	17	29	6	25	17	4	24	भ. 13/56 से 27/06 तक, पंचक प्रारम्भ 9/30.
	25	8	बु.	16	15	शत.	25	34	व्या.	13	55	कुम्भ			7	1	17	17	6	56	17	20	6	58	17	29	6	26	17	3	25	
	26	9	गु.	18	0	पू.भा.	27	33	ह.	14	12	मीन	21	7	7	2	17	17	6	57	17	20	6	59	17	29	6	27	17	3	26	
	27	10	शु.	19	1	उ.भा.	28	49	व.	13	57	मीन			7	3	17	17	6	57	17	20	6	59	17	29	6	27	17	3	27	शुक्र वृश्चिक में 8/58,
	28	11	श.	19	14	रेव.	29	18	सि.	13	6	मेष	29	18	7	4	17	17	6	58	17	20	7	0	17	29	6	28	17	3	28	भ. 7/07 से 19/14 तक, पंचक समाप्त 29/18, (G)
	29	12	र.	18	39	अश्वि.	29	1	व्य.	11	37	मेष			7	5	17	16	6	59	17	20	7	1	17	29	6	29	17	3	29	गुरु धनि. 2 में 12/29, शुक्र अनु. में 24/38, प्रदोष व्रत,
	30	13	चं.	17	20	भर.	28	5	व./	9	33	मेष			7	6	17	16	7	0	17	20	7	2	17	29	6	30	17	3	30	
									प.	30	57																					

(A) वैकुण्ठ चतुर्दशी, (B) रथ यात्रा (जैन), मेला पुष्करराज (राज.), कार्तिक पूर्णिमा, कार्तिकस्नान समाप्त, भीष्मपंचक समाप्त, श्री सत्यनारायण व्रत, (C) श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, (D) शनि प्रदोष व्रत, (E) सोमवती अमावस, (F) 3 मिथुन में 12/09, (G) बुध पश्चिम में उदित 22/26, मोक्षदा एकादशी व्रत (स.), श्रीगीता जयन्ती,

मास पक्ष	दिसम्बर	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	जयपुर सूर्योदय घं. मि.	जयपुर सूर्यास्त घं. मि.	वाराणसी सूर्योदय घं. मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं. मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
मा.शु.	1	14	मं.	15 24	कृत्ति.	26 36	शि.	27 56	वृष	9 45	7 6	17 16	7 0	17 19	7 2	17 29	6 30	17 3	1	भ. 15/24 से 26/12 तक, बुध मूल धनु में 22/04, (A)
	2	15	बु.	13 0	रोहि.	24 43	सि.	24 36	वृष		7 7	17 16	7 1	17 19	7 3	17 29	6 31	17 3	2	सूर्य ज्येष्ठा में 22/50,
पौष कृष्ण	3	1	गु.	10 17	मृग.	22 36	सा.	21 4	मिथुन	11 40	7 8	17 16	7 2	17 19	7 4	17 29	6 32	17 3	3	पौष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	4	2/	शु.	7 23	आर्द्रा	20 23	शु.	17 27	मिथुन		7 9	17 16	7 3	17 20	7 5	17 29	6 33	17 3	4	भ. 17/54 से 28/27 तक,
		3		28 27																तृतीया तिथिक्षय,
	5	4	श.	25 37	पुन.	18 13	शु.	13 51	कर्क	12 45	7 10	17 16	7 3	17 20	7 5	17 29	6 33	17 3	5	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	6	5	र.	22 58	पुष्य	16 13	ब्र./	10 23	कर्क		7 10	17 16	7 4	17 20	7 6	17 29	6 34	17 4	6	
							ऐं.	31 5												
	7	6	चं.	20 37	आश्ले.	14 28	वै.	28 3	सिंह	14 28	7 11	17 16	7 5	17 20	7 7	17 29	6 35	17 4	7	भ. 20/37 बाद, नेप्च्यून धनि. 3 कुम्भ में 26/06,
	8	7	मं.	18 35	मघा	13 3	वि.	25 17	सिंह		7 12	17 17	7 6	17 20	7 7	17 29	6 35	17 4	8	भ. 7/36 तक,
	9	8	बु.	16 57	पू.फा.	11 59	प्री.	22 51	कन्या	17 47	7 13	17 17	7 6	17 20	7 8	17 30	6 36	17 4	9	
	10	9	गु.	15 43	उ.फा.	11 20	आ.	20 43	कन्या		7 13	17 17	7 7	17 20	7 9	17 30	6 37	17 4	10	भ. 27/19 बाद, बुध पू.षा. में 25/35, शुक्र ज्ये. में (B)
	11	10	शु.	14 55	हस्त	11 4	सौ.	18 56	तुला	23 6	7 14	17 17	7 8	17 21	7 10	17 30	6 37	17 5	11	भ. 14/55 तक, जन्म दिन श्रीपार्श्वनाथ (जैन),
	12	11	श.	14 32	चित्रा	11 14	शो.	17 29	तुला		7 15	17 17	7 8	17 21	7 10	17 30	6 38	17 5	12	सफला एकादशी व्रत (स.),
	13	12	र.	14 36	स्वाती	11 50	अ.	16 22	वृश्चि.	30 33	7 15	17 18	7 9	17 21	7 11	17 31	6 39	17 5	13	प्रदोष व्रत,
	14	13	चं.	15 7	विशा.	12 51	सु.	15 37	वृश्चि.		7 16	17 18	7 10	17 22	7 11	17 31	6 39	17 6	14	भ. 15/07 से 27/37 तक, शुक्र का वार्धक्य प्रारम्भ 9/28,
	15	14	मं.	16 6	अनु.	14 19	धृ.	15 12	वृश्चि.		7 17	17 18	7 10	17 22	7 12	17 31	6 40	17 6	15	सं. सूर्य मूल धनु में 25/52, मु. 15, पुण्यकाल अगले (C)
	16	30	बु.	17 32	ज्येष्ठा	16 14	शू.	15 8	धनु	16 14	7 17	17 19	7 11	17 22	7 13	17 32	6 40	17 6	16	
पौष शुक्ल	17	1	गु.	19 25	मूल	18 34	गं.	15 24	धनु		7 18	17 19	7 12	17 23	7 13	17 32	6 41	17 7	17	पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, शनि हस्त 1 में 22/37, (D)
	18	2	शु.	21 41	पू.षा.	21 16	वृ.	15 58	मकर	27 59	7 18	17 19	7 12	17 23	7 14	17 33	6 42	17 7	18	चन्द्र दर्शन, मु. 30,
	19	3	श.	24 16	उ.षा.	24 16	ध्रु.	16 47	मकर		7 19	17 20	7 13	17 23	7 14	17 33	6 42	17 8	19	गुरु धनि. 3 कुम्भ में 24/15,
	20	4	र.	27 1	श्रव.	27 25	व्या.	17 45	मकर		7 20	17 20	7 13	17 24	7 15	17 33	6 43	17 8	20	भ. 13/38 से 27/01 तक, मंगल वक्री 18/57, (E)
	21	5	चं.	29 45	धनि.	30 33	ह.	18 45	कुम्भ	17 0	7 20	17 21	7 14	17 24	7 15	17 34	6 43	17 9	21	पंचक प्रारम्भ 17/00, सूर्य सायन मकर में 23/16, (F)
	22	6	मं.	— —	शत.	— —	व.	19 39	कुम्भ		7 21	17 21	7 14	17 25	7 16	17 34	6 44	17 9	22	बुध उ.षा. में 28/41,
	23	6	बु.	8 15	शत.	9 28	सि.	20 17	मीन	29 22	7 21	17 22	7 15	17 25	7 16	17 35	6 44	17 10	23	
	24	7	गु.	10 18	पू.भा.	11 56	व्य.	20 32	मीन		7 22	17 22	7 15	17 26	7 17	17 36	6 45	17 10	24	भ. 10/18 से 23/01 तक,
	25	8	शु.	11 43	उ.भा.	13 47	व.	20 15	मीन		7 22	17 23	7 16	17 27	7 17	17 36	6 45	17 11	25	क्रिस्मस डे,
	26	9	श.	12 21	रेव.	14 54	प.	19 21	मेष	14 54	7 22	17 24	7 16	17 27	7 18	17 37	6 45	17 11	26	पंचक समाप्त 14/54, बुध वक्री 20/08, जोड़–मेला (G)
	27	10	र.	12 9	अश्वि.	15 12	शि.	17 48	मेष		7 23	17 24	7 16	17 28	7 18	17 37	6 46	17 12	27	भ. 23/38 बाद,
	28	11	चं.	11 8	भर.	14 42	सि.	15 37	वृष	20 28	7 23	17 25	7 17	17 28	7 19	17 38	6 46	17 13	28	भ. 11/08 तक, सूर्य पू.षा. में 28/04, पुत्रदा एकादशी (H)
	29	12/	मं.	9 22	कृत्ति.	13 29	सा.	12 51	वृष		7 23	17 25	7 17	17 29	7 19	17 38	6 47	17 13	29	वक्री बुध पू.षा. में 30/00, भौम प्रदोष व्रत, बुध (I)
		13		30 56																त्रयोदशी तिथिक्षय,
	30	14	बु.	28 0	रोहि.	11 39	शु./	9 35	मिथुन	22 32	7 24	17 26	7 18	17 30	7 19	17 39	6 47	17 14	30	भ. 28/00 बाद, चन्द्रग्रहणवेध,
							शु.	29 55												
	31	15	गु.	24 43	मृग./	9 20	ब्र.	25 58	मिथुन		7 24	17 27	7 18	17 30	7 20	17 40	6 47	17 14	31	भ. 14/22 तक, शुक्र पू.षा. में 19/40, पौषी पूर्णिमा, (J)
					आर्द्रा	30 42														

शुक्र पूर्व में अस्त 17 दिसम्बर

चन्द्रग्रहण (31 दिस. 09 और 1 जनवरी, 2010 ई. की मध्यरात्रि में)

(A) यूरेनस मार्गी 25/59. श्रीदत्त जयन्ती. श्री सत्यनारायण व्रत. (B) 15/07. (C) दिन मध्याह्न तक. (D) शुक्र पूर्व में अस्त 9/28. (E) शुक्र मूल धनु में 29/23 (F) उत्तर अयन एवं शिशिर ऋतु [illegible]

श्री वि. सं 2066 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — जनवरी, सन् 2010 ई.

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
माघ कृष्ण	1	1	शु.	21	14	पुन.	27	56	ऐं.	21	52	कर्क	22	38	7	24	17	27	7	18	17	31	7	20	17	40	6	48	17	15	1	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, इंग्लिश नववर्ष सन् 2010 ई. (A)
	2	2	श.	17	43	पुष्य	25	12	वै.	17	45	कर्क			7	24	17	28	7	18	17	32	7	20	17	41	6	48	17	16	2	भ. 28/01 बाद, चन्द्रग्रहणवेध,
	3	3	र.	14	20	आश्ले.	22	38	वि.	13	45	सिंह	22	38	7	25	17	29	7	19	17	32	7	20	17	42	6	48	17	16	3	भ. 14/20 तक, श्रीगणेश (संकष्ट)चतुर्थी व्रत (B)
	4	4	चं.	11	14	मघा	20	23	प्री./	9	57	सिंह			7	25	17	30	7	19	17	33	7	21	17	43	6	48	17	17	4	
									आ.	30	29																					
	5	5/	मं.	8	31	पू.फा.	18	36	सौ.	27	25	कन्या	24	14	7	25	17	30	7	19	17	34	7	21	17	43	6	49	17	18	5	भ. 30/20 बाद, गुरु धनि. 4 में 23/29,
		6		30	20																											षष्ठी तिथिक्षय,
	6	7	बु.	28	43	उ.फा.	17	21	शो.	24	50	कन्या			7	25	17	31	7	19	17	35	7	21	17	44	6	49	17	19	6	भ. 17/32 तक,
	7	8	गु.	27	45	हस्त	16	43	अ.	22	44	तुला	28	38	7	25	17	32	7	19	17	35	7	21	17	45	6	49	17	19	7	
	8	9	शु.	27	27	चित्रा	16	43	सु.	21	9	तुला			7	25	17	33	7	19	17	36	7	21	17	45	6	49	17	20	8	
	9	10	श.	27	46	स्वाती	17	21	धृ.	20	3	तुला			7	25	17	34	7	19	17	37	7	21	17	46	6	49	17	21	9	भ. 15/36 से 27/46 तक,
	10	11	र.	28	41	विशा.	18	33	शू.	19	26	वृश्चि.	12	12	7	25	17	34	7	19	17	38	7	21	17	47	6	49	17	21	10	सूर्य उ.षा. में 30/08, व. बुध मूल में 27/14, (C)
	11	12	चं.	30	6	अनु.	20	18	गं.	19	13	वृश्चि.			7	25	17	35	7	19	17	39	7	21	17	48	6	49	17	22	11	शुक्र उ.षा. में 10/01,
	12	13	मं.	—	—	ज्येष्ठा	22	29	वृ.	19	22	धनु	22	29	7	25	17	36	7	19	17	39	7	21	17	49	6	49	17	23	12	मेरु त्रयोदशी (जैन), भौम प्रदोष व्रत,
	13	13	बु.	7	58	मूल	25	2	ध्रु.	19	48	धनु			7	25	17	37	7	19	17	40	7	21	17	49	6	49	17	24	13	भ. 7/58 से 21/05 तक, शुक्र मकर में 25/37, (D)
	14	14	गु.	10	12	पू.षा.	27	53	व्या.	20	28	धनु			7	25	17	38	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	24	14	सं. सूर्य मकर में 12/38, मु. 30, पुण्यकाल सारा दिन,(E)
	15	30	शु.	12	41	उ.षा.	30	54	ह.	21	19	मकर	10	37	7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	25	15	बुध मार्गी 22/22, मौनी अमावस, कंकण सूर्यग्रहण (F)
माघ शुक्ल	16	1	श.	15	21	श्रव.	—	—	व.	22	16	मकर			7	25	17	40	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	26	16	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्र दर्शन, मु. 30, सूर्यग्रहणवेध,
	17	2	र.	18	4	श्रव.	10	2	सि.	23	14	कुम्भ	23	35	7	24	17	41	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	27	17	पंचक प्रारम्भ 23/35, सूर्यग्रहणवेध,
	18	3	चं.	20	45	धनि.	13	8	व्य.	24	10	कुम्भ			7	24	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	27	18	गौरी तृतीया (गोंतरी), सूर्यग्रहणवेध,
	19	4	मं.	23	14	शत.	16	7	व.	24	56	कुम्भ			7	24	17	42	7	18	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	19	भ. 9/59 से 23/14 तक, राहु पू.षा. 4, केतु पुन. 2 (G)
	20	5	बु.	25	24	पू.भा.	18	49	प.	25	27	मीन	12	10	7	24	17	43	7	18	17	46	7	21	17	55	6	49	17	29	20	प्लूटो मूल 4 में 29/24, गुरु शत. 1 में 31/21, (H)
	21	6	गु.	27	4	उ.भा.	21	5	शि.	25	36	मीन			7	23	17	44	7	18	17	47	7	20	17	56	6	49	17	30	21	बुध पू.षा. में 7/33, शुक्र श्रव. में 24/29,
	22	7	शु.	28	7	रेव.	22	48	सि.	25	18	मेष	22	48	7	23	17	45	7	18	17	48	7	20	17	56	6	48	17	31	22	भ. 28/07 बाद, पंचक समाप्त 22/48, रथ (आरोग्य) (I)
	23	8	श.	28	27	अश्वि.	23	50	सा.	24	28	मेष			7	23	17	46	7	17	17	49	7	20	17	57	6	48	17	31	23	भ. 16/17 तक, भीष्माष्टमी,
	24	9	र.	28	1	भर.	24	8	शु.	23	1	वृष	30	5	7	22	17	47	7	17	17	49	7	19	17	58	6	48	17	32	24	सूर्य श्रव. मे 8/22,
	25	10	चं.	26	47	कृत्ति.	23	40	शु.	20	58	वृष			7	22	17	48	7	17	17	50	7	19	17	59	6	48	17	33	25	
	26	11	मं.	24	49	रोहि.	22	28	ब्र.	18	20	वृष			7	21	17	49	7	16	17	51	7	19	18	0	6	47	17	34	26	भ. 13/48 से 24/49 तक, गणतन्त्र दिवस (भारत), (J)
	27	12	बु.	22	12	मृग.	20	37	ऐं.	15	8	मिथुन	9	37	7	21	17	49	7	16	17	52	7	18	18	0	6	47	17	34	27	वक्री मंगल पुष्य में 20/55, यूरेनस पू.भा. 4 मीन में (K)
	28	13	गु.	19	4	आर्द्रा	18	14	वै.	11	29	मिथुन			7	20	17	50	7	15	17	53	7	18	18	1	6	47	17	35	28	प्रदोष व्रत,
	29	14	शु.	15	32	पुन.	15	27	वि./	7	28	कर्क	10	10	7	20	17	51	7	15	17	54	7	18	18	2	6	46	17	36	29	भ. 15/32 से 25/40 तक, श्री सत्यनारायण व्रत,
									प्री.	27	13																					
	30	15	श.	11	47	पुष्य	12	28	आ.	22	52	कर्क			7	19	17	52	7	14	17	54	7	17	18	3	6	46	17	37	30	माघी पूर्णिमा, जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी, माघस्नान (L)
फाल्गुन कृष्ण	31	1/	र.	8	0	आश्ले.	9	25	सौ.	18	33	सिंह	9	25	7	19	17	53	7	14	17	55	7	17	18	4	6	45	17	37	31	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
		2		28	19	/मघा	30	31																								द्वितीया तिथिक्षय,

कंकण सूर्यग्रहण
15 जनवरी

(A) प्रारम्भ, चन्द्रग्रहणवेध,(B) (चन्द्रोदय 20 घं. 40 मि.), चन्द्रग्रहणवेध, (C) बुध पूर्व में उदित 18/45, षट्तिला एकादशी व्रत (स.), (D) शनि वक्री 21/28, लोहड़ी (पं.) (E) मकर संक्रान्ति, पोंगल (द. भारत), सूर्यग्रहणवेध, (F) (भारत में दृश्य), (देखें पृ. 10), (G) में 9/28, तिल–कुन्द–वरद चतुर्थी, (H) सूर्य सायन कुम्भ में 9/58, श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी, (I) सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली), मर्यादा महोत्सव (जैन), (J) जया एकादशी व्रत (स.), (K) 13/15, भीष्म द्वादशी, (L) समाप्त,

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
फाल्गुन कृष्ण	1	3	चं.	24	57	पू.फा.	27	56	शो.	14	25	सिंह			7	18	17	54	7	13	17	56	7	16	18	4	6	45	17	38	1	भ. 14/38 से 24/27 तक, शुक्र धनि. में (A)
	2	4	मं.	22	2	उ.फा.	25	50	अ./	10	36	कन्या	9	21	7	18	17	55	7	13	17	57	7	16	18	5	6	45	17	39	2	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत. शुक्र पश्चिम में उदित– 3 फरवरी
									सु.	31	13																					
	3	5	बु.	19	44	हस्त	24	2[illegible]	धृ.	28	22	कन्या			7	17	17	56	7	12	17	58	7	15	18	6	6	44	17	39	3	बुध उ.षा. में 15/15, शुक्र पश्चिम में उदित 16/33,
	4	6	गु.	18	10	चित्रा	23	36	शू.	26	7	तुला	11	53	7	16	17	57	7	12	17	58	7	15	18	7	6	44	17	40	4	भ. 18/10 से 29/47 तक, गुरु शत. 2 में 18/07,
	5	7	शु.	17	23	स्वाती	23	39	गं.	24	31	तुला			7	16	17	57	7	11	17	59	7	14	18	7	6	43	17	41	5	बुध मकर में 29/16,
	6	8	श.	17	26	विशा.	24	30	वृ.	23	33	वृश्चि.	18	13	7	15	17	58	7	10	18	0	7	13	18	8	6	42	17	42	6	सूर्य धनि. में 11/36, शुक्र कुम्भ में 22/50, शुक्रबाल्य (B)
	7	9	र.	18	16	अनु.	26	5	ध्रु.	23	10	वृश्चि.			7	14	17	59	7	10	18	1	7	13	18	9	6	42	17	42	7	भ. 31/01 बाद,
	8	10	चं.	19	47	ज्येष्ठा	28	16	व्या.	23	17	धनु	28	16	7	13	18	0	7	9	18	2	7	12	18	10	6	41	17	43	8	भ. 19/47 तक,
	9	11	मं.	21	51	मूल	30	57	ह.	23	48	धनु			7	13	18	1	7	8	18	2	7	12	18	10	6	41	17	44	9	वक्री शनि उ.फा. 4 में 25/21, विजया एकादशी व्रत (स.),
	10	12	बु.	24	17	पू.षा.	—	—	व.	24	35	धनु			7	12	18	2	7	8	18	3	7	11	18	11	6	40	17	44	10	
	11	13	गु.	26	57	पू.षा.	9	55	सि.	25	32	मकर	16	41	7	11	18	3	7	7	18	4	7	10	18	12	6	39	17	45	11	भ. 26/57 बाद, शुक्र शत. में 30/29, प्रदोष व्रत,
	12	14	शु.	29	41	उ.षा.	13	3	व्य.	26	32	मकर			7	10	18	3	7	6	18	5	7	9	18	13	6	39	17	46	12	भ. 16/19 तक, सं. सूर्य कुम्भ में 25/38, मु. 30, (C)
	13	30	श.	—	—	श्रव.	16	11	व.	27	31	कुम्भ	29	43	7	9	18	4	7	5	18	6	7	9	18	13	6	38	17	46	13	पंचक प्रारम्भ 29/43, बुध श्रव. में 9/39, शनैश्चरी अमा,
	14	30	र.	8	21	धनि.	19	14	प.	28	23	कुम्भ			7	8	18	5	7	4	18	6	7	8	18	14	6	37	17	47	14	
फाल्गुन शुक्ल	15	1	चं.	10	52	शत.	22	6	शि.	29	6	कुम्भ			7	7	18	6	7	4	18	7	7	7	18	15	6	37	17	48	15	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्र दर्शन, मु. 15, (D)
	16	2	मं.	13	9	पू.भा.	2	43	सि.	29	36	मीन	18	5	7	7	18	7	7	3	18	8	7	6	18	15	6	36	17	48	16	जन्मदिन श्रीरामकृष्ण परमहंस, गुरु अस्त–18 फरवरी
	17	3	बु.	15	7	उ.भा.	2[illegible]	1	सा.	29	50	मीन			7	6	18	8	7	2	18	9	7	6	18	16	6	35	17	49	17	भ. 27/54 बाद,
	18	4	गु.	16	42	रेव.	28	55	शु.	29	45	मेष	28	55	7	5	18	8	7	1	18	9	7	5	18	17	6	34	17	50	18	भ. 16/42 तक, पंचक समाप्त 28/55, गुरु शत. 3 (E)
	19	5	शु.	17	50	अश्वि.	30	21	शु.	29	17	मेष			7	4	18	9	7	0	18	10	7	4	18	17	6	34	17	50	19	सूर्य शत. में 16/02,
	20	6	श.	18	26	भर.	—	—	ब्र.	28	24	मेष			7	3	18	10	6	59	18	11	7	3	18	18	6	33	17	51	20	
	21	7	र.	18	26	भर.	7	13	ऐं.	27	2	वृष	13	21	7	2	18	11	6	58	18	11	7	2	18	19	6	32	17	51	21	भ. 18/26 से 30/07 तक, बुध धनि. में 27/24,
	22	8	चं.	17	48	कृत्ति.	7	30	वै.	25	9	वृष			7	1	18	11	6	57	18	12	7	1	18	19	6	31	17	52	22	शुक्र पू.भा. में 22/13, होलाष्टक प्रारम्भ,
	23	9	मं.	16	29	रोहि./	7	8	वि.	22	45	मिथुन	18	42	7	0	18	12	6	56	18	13	7	0	18	20	6	30	17	53	23	होलाष्टक 22 से 28 फर
						मृग.	30	7																								
	24	10	बु.	14	32	आर्द्रा	28	29	प्री.	19	50	मिथुन			6	59	18	13	6	55	18	14	7	0	18	21	6	29	17	53	24	भ. 25/15 बाद,
	25	11	गु.	11	59	पुन.	26	20	आ.	16	28	कर्क	20	55	6	58	18	14	6	54	18	14	6	59	18	21	6	29	17	54	25	भ. 11/59 तक, बुध कुम्भ में 29/46, आमला (F)
	26	12/	शु.	8	56	पुष्य	23	45	सौ.	12	42	कर्क			6	57	18	15	6	53	18	15	6	58	18	22	6	28	17	54	26	प्रदोष व्रत, बुध पूर्व में अस्त 21/26,
		13		29	30																											त्रयोदशी तिथिक्षय,
	27	14	श.	25	51	आश्ले.	20	54	शो./	8	39	सिंह	20	54	6	55	18	15	6	52	18	16	6	57	18	22	6	27	17	55	27	भ. 25/51 बाद,
									अ.	28	25																					
	28	15	र.	22	8	मघा	17	57	सु.	24	10	सिंह			6	54	18	16	6	51	18	16	6	56	18	23	6	26	17	55	28	भ. 12/00 तक, होलिकादहन (प्रदोष में), जन्मदिन (G)

(A) 15/17, (B) समाप्त 16/33, (C) पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत, पहला शाही स्नान कुम्भ महापर्व हरिद्वार, (D) गुरु वार्धक्य प्रारम्भ 10/50, (E) में 17/43, सूर्य सायन मीन में 24/05, वसन्त ऋतु प्रारम्भ, गुरु अस्त 10/50, (F) एकादशी व्रत (स.), गोविन्द द्वादशी, (G) श्रीचैतन्य महाप्रभु, होलाष्टक समाप्त, श्री सत्यनारायण व्रत.

मास पक्ष	गते	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
चैत्र कृष्ण	1	1	चं.	18	32	पू.फा.	15	5	धृ.	20	2	कन्या	20	24	6	53	18	17	6	50	18	17	6	55	18	24	6	25	17	56	1	चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, बुध शत. में 28/17, वसन्तोत्सव, (A)
	2	.	मं.	15	14	उ.फा.	12	29	शू.	16	9	कन्या			6	52	18	17	6	49	18	18	6	54	18	24	6	24	17	56	2	भ. 25/49 बाद, शुक्र मीन में 22/31,
	3	3	बु.	12	25	हस्त	10	21	गं.	12	41	तुला	21	30	6	51	18	18	6	48	18	18	6	53	18	25	6	23	17	57	3	भ. 12/25 तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	4	4	गु.	10	15	चित्रा	8	50	वृ.	9	44	तुला			6	50	18	19	6	47	18	19	6	52	18	25	6	22	17	57	4	सूर्य पू.भा. में 22/24, गुरु शत. 4 में 13/11, (B)
	5	5	शु.	8	51	स्वाती	8	5	ध्रु./ व्या.	7 / 29	25 / 46	वृश्चि.	26	4	6	49	18	20	6	46	18	19	6	51	18	26	6	21	17	58	5	शुक्र उ.भा. में 14/43,
	6	6	श.	8	20	विशा.	8	11	ह.	28	50	वृश्चि.			6	48	18	20	6	45	18	20	6	50	18	27	6	20	17	58	6	भ. 8/20 से 20/31 तक,
	7	7	र.	8	42	अनु.	9	8	व.	28	32	वृश्चि.			6	46	18	21	6	44	18	21	6	49	18	27	6	19	17	59	7	
	8	8	चं.	9	53	ज्येष्ठा	10	54	सि.	28	48	धनु	10	54	6	45	18	22	6	43	18	21	6	48	18	28	6	18	17	59	8	श्रीशीतलाष्टमी,
	9	9	मं.	11	47	मूल	13	20	व्य.	29	30	धनु			6	44	18	22	6	42	18	22	6	47	18	28	6	17	18	0	9	भ. 24/58 बाद, बुध पू.भा. में 14/45,
	10	10	बु.	14	11	पू.षा.	16	13	व.	30	27	मकर	23	0	6	43	18	23	6	41	18	23	6	46	18	29	6	16	18	0	10	भ. 14/11 तक, मंगल मार्गी 22/39,
	11	11	गु.	16	52	उ.षा.	19	22	प.	—	—	मकर			6	42	18	24	6	40	18	23	6	45	18	29	6	15	18	1	11	पापमोचिनी एकादशी व्रत (स.),
	12	12	शु.	19	35	श्रव.	22	32	प.	7	30	मकर			6	40	18	24	6	38	18	24	6	43	18	30	6	14	18	1	12	
	13	13	श.	22	11	धनि.	25	35	शि.	8	31	कुम्भ	12	5	6	39	18	25	6	37	18	24	6	42	18	30	6	13	18	2	13	भ. 22/11 बाद, पंचक प्रारम्भ 12/05, शनि प्रदोष व्रत,
	14	14	र.	24	32	शत.	28	21	सि.	9	24	कुम्भ			6	38	18	26	6	36	18	25	6	41	18	31	6	12	18	2	14	भ. 11/22 तक, सं. सूर्य मीन में 22/29, मु. 15, (C)
	15	30	चं.	26	31	पू.भा.	—	—	सा.	10	2	मीन	24	13	6	37	18	26	6	35	18	25	6	40	18	31	6	11	18	3	15	सोमवती अमा, द्वितीय शाही स्नान कुम्भ महापर्व (D)

(A) होला मेला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.), (B) मेला श्रीशीतला माता (कुराली-पं.), (C) पुण्यकाल मध्याह्न बाद, बुध मीन में 20/39, मेला पिहोवा तीर्थ (हरियाणा), (D) हरिद्वार, चान्द्र संवत्सर 2066 वि. पूर्ण,

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) सन् 2009 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जनवरी 2009 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	धनि.	4	54	11	31	18	7	0	41
1/2	शत.	7	14	13	44	20	13	2	40
2/3	पू.भा.	9	4	15	27	21	47	4	4
3/4	उ.भा.	10	20	16	32	22	42	4	49
4/5	रेव.	10	54	16	56	22	55	4	51
5/6	अश्वि.	10	45	16	35	22	23	4	9
6/7	भर.	9	52	15	32	21	10	2	45
7/8	कृत्ति.	8	18	13	49	19	18	0	45
8	रोहि.	6	11	11	34	16	56	22	17
9	मृग.	3	36	8	55	14	12	19	29
10	आर्द्रा	0	45	6	1	11	17	16	32
10/11	पुन.	21	48	3	4	8	20	13	37
11/12	पुष्य	18	55	0	13	5	33	10	54
12/13	आश्ले.	16	16	21	40	3	6	8	33
13/14	मघा	14	3	19	34	1	8	6	44
14/15	पू.फा.	12	23	18	4	23	48	5	35
15/16	उ.फा.	11	24	17	17	23	12	5	10
16/17	हस्त	11	12	17	16	23	23	5	33
17/18	चित्रा	11	46	18	2	0	20	6	42
18/19	स्वाती	13	6	19	32	2	1	8	32
1.1/20	विशा.	15	6	21	41	4	18	10	57
20/21	अनु.	17	37	0	19	7	2	13	45
21/22	ज्येष्ठा	20	30	3	16	10	2	16	48
22/23	मूल	23	34	6	21	13	8	19	54
24	पू.षा.	2	40	9	26	16	11	22	55
25/26	उ.षा.	5	39	12	22	19	4	1	45
26/27	श्रव.	8	25	15	3	21	41	4	17
27/28	धनि.	10	52	17	26	23	58	6	29
28/29	शत.	12	58	19	26	1	52	8	17
29/30	पू.भा.	14	40	21	1	3	20	9	38
30/31	उ.भा.	15	54	22	8	4	20	10	30

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
फरवरी 2009 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	रेव.	16	39	22	45	4	50	10	52
1/2	अश्वि.	16	53	22	51	4	48	10	43
2/3	भर.	16	35	22	26	4	15	10	2
3/4	कृत्ति.	15	47	21	30	3	11	8	51
4/5	रोहि.	14	29	20	5	1	40	7	13
5/6	मृग.	12	44	18	15	23	44	5	12
6/7	आर्द्रा	10	39	16	6	21	31	2	56
7/8	पुन.	8	20	13	43	19	7	0	30
8	पुष्य	5	53	11	16	16	40	22	4
9	आश्ले.	3	28	8	53	14	19	19	46
10	मघा	1	14	6	43	12	13	17	45
10/11	पू.फा.	23	19	4	54	10	31	16	11
11/12	उ.फा.	21	52	3	36	9	22	15	11
12/13	हस्त	21	3	2	57	8	53	14	53
13/14	चित्रा	20	55	3	1	9	9	15	20
14/15	स्वाती	21	34	3	51	10	11	16	33
15/16	विशा.	22	59	5	26	11	57	18	29
17	अनु.	1	4	7	41	14	20	21	1
18	ज्येष्ठा	3	43	10	26	17	10	23	56
19/20	मूल	6	42	13	28	20	15	3	2
20/21	पू.षा.	9	48	16	35	23	20	6	5
21/22	उ.षा.	12	49	19	32	2	14	8	55
22/23	श्रव.	15	34	22	11	4	47	11	21
23/24	धनि.	17	54	0	24	6	53	13	20
24/25	शत.	19	45	2	8	8	29	14	48
25/26	पू.भा.	21	6	3	21	9	35	15	47
26/27	उ.भा.	21	57	4	6	10	13	16	18
27/28	रेव.	22	22	4	24	10	24	16	23

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मार्च 2009 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
28/1	अश्वि.	22	21	4	18	10	13	16	7
1/2	भर.	21	59	3	51	9	41	15	30
2/3	कृत्ति.	21	18	3	5	8	51	14	36
3/4	रोहि.	20	21	2	4	7	46	13	28
4/5	मृग.	19	8	0	48	6	27	12	5
5/6	आर्द्रा	17	43	23	20	4	57	10	33
6/7	पुन.	16	8	21	43	3	18	8	52
7/8	पुष्य	14	26	20	0	1	34	7	7
8/9	आश्ले.	12	41	18	15	23	49	5	24
9/10	मघा	10	58	16	34	22	10	3	47
10/11	पू.फा.	9	25	15	4	20	44	2	25
11/12	उ.फा.	8	7	13	51	19	37	1	24
12/13	हस्त	7	13	13	4	18	58	0	53
13/14	चित्रा	6	50	12	50	18	53	0	57
14/15	स्वाती	7	5	13	15	19	27	1	42
15/16	विशा.	8	0	14	21	20	44	3	10
16/17	अनु.	9	38	16	8	22	41	5	16
17/18	ज्येष्ठा	11	53	18	32	1	13	7	55
18/19	मूल	14	38	21	23	4	8	10	54
19/20	पू.षा.	17	41	0	27	7	13	13	59
20/21	उ.षा.	20	45	3	29	10	13	16	55
21/22	श्रव.	23	36	6	15	12	53	19	28
23	धनि.	2	2	8	33	15	2	21	29
24	शत.	3	53	10	15	16	35	22	52
25	पू.भा.	5	6	11	18	17	28	23	36
26	उ.भा.	5	41	11	44	17	45	23	44
27	रेव.	5	40	11	35	17	29	23	21
28	अश्वि.	5	11	11	0	16	47	22	33
29	भर.	4	19	10	3	15	46	21	29
30	कृत्ति.	3	10	8	51	14	32	20	13
31	रोहि.	1	52	7	32	13	12	18	51

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) सन् 2009 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अप्रैल 2009 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	मृग.	0	30	6	09	11	48	17	27
1/ 2	आर्द्रा	23	7	4	46	10	26	16	6
2/ 3	पुन.	21	46	3	26	9	6	14	47
3/ 4	पुष्य	20	28	2	9	7	51	13	33
4/ 5	आश्ले.	19	15	0	58	6	41	12	25
5/ 6	मघा	18	9	23	54	5	39	11	25
6/ 7	पू.फा.	17	12	22	59	4	47	10	36
7/ 8	उ.फा.	16	26	22	17	4	8	10	1
8/ 9	हस्त	15	56	21	51	3	48	9	47
9/10	चित्रा	15	47	21	49	3	53	9	58
10/11	स्वाती	16	5	22	15	4	26	10	40
11/12	विशा.	16	55	23	13	5	33	11	55
12/13	अनु.	18	20	0	47	7	16	13	47
13/14	ज्येष्ठा	20	20	2	55	9	32	16	11
14/15	मूल	22	51	5	33	12	17	19	1
16	पू.षा.	1	46	8	32	15	18	22	5
17/18	उ.षा.	4	51	11	38	18	23	1	8
18/19	श्रव.	7	52	14	35	21	16	3	56
19/20	धनि.	10	33	17	9	23	42	6	13
20/21	शत.	12	41	19	7	1	29	7	50
21/22	पू.भा.	14	7	20	21	2	33	8	41
22/23	उ.भा.	14	47	20	50	2	50	8	47
23/24	रेव.	14	42	20	35	2	25	8	12
24/25	अश्वि.	13	58	19	41	1	23	7	3
25/26	भर.	12	41	18	18	23	54	5	28
26/27	कृत्ति.	11	1	16	34	22	6	3	37
27/28	रोहि.	9	8	14	38	20	9	1	39
28	मृग.	7	9	12	40	18	10	23	42
29	आर्द्रा	5	13	10	45	16	18	21	52
30	पुन.	3	26	9	2	14	38	20	15

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मई 2009 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	पुष्य	1	53	7	33	13	13	18	54
2	आश्ले.	0	37	6	20	12	5	17	51
2/ 3	मघा	23	38	5	26	11	15	17	6
3/ 4	पू.फा.	22	58	4	50	10	44	16	40
4/ 5	उ.फा.	22	36	4	33	10	32	16	32
5/ 6	हस्त	22	33	4	36	10	40	16	45
6/ 7	चित्रा	22	51	4	59	11	8	17	19
7/ 8	स्वाती	23	31	5	45	12	0	18	17
9	विशा.	0	36	6	56	13	19	19	43
10	अनु.	2	8	8	36	15	5	21	36
11	ज्येष्ठा	4	8	10	43	17	19	23	57
12/13	मूल	6	36	13	16	19	58	2	41
13/14	पू.षा.	9	26	16	11	22	57	5	43
14/15	उ.षा.	12	30	19	17	2	4	8	51
15/16	श्रव.	15	38	22	23	5	8	11	52
16/17	धनि.	18	34	1	14	7	53	14	30
17/18	शत.	21	4	3	36	10	6	16	33
18/19	पू.भा.	22	57	5	18	11	36	17	51
20	उ.भा.	0	3	6	12	12	18	18	21
21	रेव.	0	20	6	17	12	11	18	1
21/22	अश्वि.	23	49	5	35	11	17	16	57
22/23	भर.	22	35	4	11	9	44	15	16
23/24	कृत्ति.	20	46	2	15	7	42	13	8
24/25	रोहि.	18	32	23	56	5	19	10	42
25/26	मृग.	16	4	21	26	2	48	8	9
26/27	आर्द्रा	13	31	18	54	0	16	5	40
27/28	पुन.	11	4	16	29	21	55	3	22
28/29	पुष्य	8	50	14	19	19	50	1	23
29	आश्ले.	6	57	12	32	18	9	23	48
30	मघा	5	29	11	11	16	55	22	42
31	पू.फा.	4	30	10	19	16	11	22	5

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जून 2009 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	उ.फा.	4	0	9	58	15	57	21	58
2	हस्त	4	1	10	6	16	12	22	21
3	चित्रा	4	31	10	42	16	56	23	11
4/ 5	स्वाती	5	28	11	46	18	7	0	28
5/ 6	विशा.	6	51	13	16	19	43	2	11
6/ 7	अनु.	8	40	15	11	21	43	4	17
7/ 8	ज्येष्ठा	10	52	17	28	0	6	6	45
8/ 9	मूल	13	25	20	7	2	49	9	32
9/10	पू.षा.	16	17	23	2	5	48	12	34
10/11	उ.षा.	19	21	2	8	8	55	15	43
11/12	श्रव.	22	30	5	17	12	3	18	49
13	धनि.	1	34	8	18	15	0	21	41
14/15	शत.	4	21	10	58	17	34	0	8
15/16	पू.भा.	6	39	13	8	19	34	1	57
16/17	उ.भा.	8	18	14	36	20	51	3	2
17/18	रेव.	9	11	15	17	21	19	3	19
18/19	अश्वि.	9	15	15	9	20	59	2	47
19/20	भर.	8	31	14	13	19	53	1	30
20	कृत्ति.	7	4	12	36	18	6	23	35
21	रोहि.	5	1	10	25	15	49	21	10
22	मृग.	2	31	7	50	13	9	18	27
22/23	आर्द्रा	23	44	5	1	10	18	15	35
23/24	पुन.	20	52	2	9	7	26	12	45
24/25	पुष्य	18	4	23	23	4	44	10	6
25/26	आश्ले.	15	29	20	54	2	20	7	48
26/27	मघा	13	18	18	49	0	23	5	58
27/28	पू.फा.	11	36	17	16	22	58	4	42
28/29	उ.फा.	10	29	16	19	22	10	4	5
29/30	हस्त	10	1	16	0	22	2	4	6

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टे. टा.) सन् 2009 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जुलाई 2009 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/1	चित्रा	10	13	16	22	22	33	4	47
1/2	स्वाती	11	3	17	21	23	42	6	4
2/3	विशा.	12	29	18	55	1	23	7	53
3/4	अनु.	14	25	20	59	3	33	10	10
4/5	ज्येष्ठा	16	48	23	27	6	7	12	48
5/6	मूल	19	30	2	13	8	57	15	42
6/7	पू.षा.	22	27	5	13	11	59	18	46
8	उ.षा.	1	33	8	20	15	7	21	54
9/10	श्रव.	4	40	11	27	18	13	0	58
10/11	धनि.	7	43	14	27	21	10	3	52
11/12	शत.	10	33	17	12	23	50	6	27
12/13	पू.भा.	13	1	19	34	2	5	8	34
13/14	उ.भा.	15	1	21	25	3	48	10	7
14/15	रेव.	16	24	22	39	4	51	11	0
15/16	अश्वि.	17	6	23	10	5	11	11	9
16/17	भर.	17	4	22	57	4	47	10	34
17/18	कृत्ति.	16	19	22	1	3	41	9	18
18/19	रोहि.	14	53	20	26	1	56	7	25
19/20	मृग.	12	52	18	17	23	41	5	3
20/21	आर्द्रा	10	24	15	44	21	3	2	21
21	पुन.	7	38	12	55	18	11	23	28
22	पुष्य	4	44	10	0	15	17	20	34
23	आश्ले.	1	51	7	9	12	28	17	49
23/24	मघा	23	10	4	33	9	57	15	23
24/25	पू.फा.	20	50	2	20	7	51	13	25
25/26	उ.फा.	19	1	0	40	6	20	12	4
26/27	हस्त	17	50	23	39	5	30	11	24
27/28	चित्रा	17	21	23	22	5	24	11	30
28/29	स्वाती	17	39	23	50	6	5	12	22
29/30	विशा.	18	42	1	4	7	29	13	56
30/31	अनु.	20	26	2	58	9	32	16	7

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अगस्त 2009 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	ज्येष्ठा	22	45	5	24	12	5	18	46
2	मूल	1	29	8	14	14	59	21	44
3/4	पू.षा.	4	30	11	17	18	4	0	51
4/5	उ.षा.	7	38	14	25	21	12	3	58
5/6	श्रव.	10	44	17	29	0	14	6	58
6/7	धनि.	13	41	20	23	3	4	9	44
7/8	शत.	16	23	23	1	5	37	12	12
8/9	पू.भा.	18	45	1	17	7	48	14	17
9/10	उ.भा.	20	44	3	9	9	33	15	55
10/11	रेव.	22	15	4	33	10	49	17	3
11/12	अश्वि.	23	15	5	24	11	32	17	38
12/13	भर.	23	41	5	43	11	42	17	39
13/14	कृत्ति.	23	33	5	26	11	16	17	4
14/15	रोहि.	22	50	4	34	10	16	15	56
15/16	मृग.	21	34	3	10	8	45	14	17
16/17	आर्द्रा	19	48	1	18	6	46	12	12
17/18	पुन.	17	38	23	2	4	25	9	47
18/19	पुष्य	15	9	20	30	1	51	7	11
19/20	आश्ले.	12	30	17	50	23	10	4	31
20/21	मघा.	9	51	15	12	20	34	1	57
21	पू.फा.	7	21	12	46	18	12	23	40
22	उ.फा.	5	9	10	40	16	13	21	49
23	हस्त	3	26	9	5	14	48	20	32
24	चित्रा	2	20	8	10	14	3	19	59
25	स्वाती	1	58	8	0	14	4	20	12
26	विशा.	2	23	8	38	14	55	21	14
27	अनु.	3	37	10	3	16	31	23	2
28/29	ज्येष्ठा	5	35	12	10	18	48	1	27
29/30	मूल	8	8	14	51	21	34	4	19
30/31	पू.षा.	11	5	17	52	0	38	7	26

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
सितंबर 2009 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	उ.षा.	14	13	21	0	3	47	10	33
1/2	श्रव.	17	19	0	4	6	48	13	31
2/3	धनि.	20	13	2	53	9	32	16	10
3/4	शत.	22	46	5	21	11	54	18	26
5	पू.भा.	0	56	7	24	13	50	20	15
6	उ.भा.	2	38	9	0	15	20	21	38
7	रेव.	3	54	10	9	16	23	22	34
8	अश्वि.	4	45	10	53	17	0	23	6
9	भर.	5	10	11	12	17	13	23	13
10	कृत्ति.	5	11	11	8	17	3	22	57
11	रोहि.	4	49	10	40	16	29	22	17
12	मृग.	4	4	9	49	15	33	21	16
13	आर्द्रा	2	57	8	37	14	16	19	53
14	पुन.	1	29	7	4	12	38	18	12
14/15	पुष्य	23	44	5	15	10	45	16	15
15/16	आश्ले.	21	44	3	12	8	40	14	8
16/17	मघा.	19	36	1	3	6	31	11	58
17/18	पू.फा.	17	26	22	55	4	24	9	54
18/19	उ.फा.	15	24	20	56	2	29	8	3
19/20	हस्त	13	38	19	15	0	54	6	35
20/21	चित्रा	12	18	18	3	23	50	5	40
21/22	स्वाती	11	32	17	27	23	25	5	25
22/23	विशा.	11	28	17	34	23	43	5	55
23/24	अनु.	12	10	18	28	0	49	7	12
24/25	ज्येष्ठा	13	39	20	8	2	39	9	14
25/26	मूल	15	50	22	28	5	8	11	50
26/27	पू.षा.	18	33	1	18	8	4	14	50
27/28	उ.षा.	21	36	4	23	11	11	17	57
29	श्रव.	0	44	7	29	14	14	20	58
30	धनि.	3	40	10	21	17	0	23	38

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) सन् 2009 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अक्तूबर 2009 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1/2	शत.	6	14	12	48	19	20	1	50
2/3	पू.भा.	8	18	14	43	21	7	3	29
3/4	उ.भा.	9	48	16	5	22	20	4	34
4/5	रेव.	10	45	16	54	23	2	5	7
5/6	अश्वि.	11	11	17	14	23	15	5	14
6/7	भर.	11	12	17	9	23	4	4	59
7/8	कृत्ति.	10	52	16	44	22	36	4	26
8/9	रोहि.	10	15	16	4	21	52	3	39
9/10	मृग.	9	26	15	12	20	57	2	42
10/11	आर्द्रा	8	26	14	10	19	53	1	35
11/12	पुन.	7	17	12	59	18	40	0	20
12	पुष्य	6	0	11	40	17	19	22	58
13	आश्ले.	4	36	10	15	15	52	21	30
14	मघा	3	8	8	45	14	22	19	59
15	पू.फा.	1	37	7	14	12	52	18	30
16	उ.फा.	0	8	5	47	11	27	17	7
16/17	हस्त	22	48	4	30	10	14	15	58
17/18	चित्रा	21	44	3	31	9	20	15	10
18/19	स्वाती	21	3	2	57	8	53	14	52
19/20	विशा.	20	53	2	56	9	1	15	10
20/21	अनु.	21	20	3	33	9	49	16	8
21/22	ज्येष्ठा	22	29	4	52	11	19	17	48
23	मूल	0	19	6	52	13	28	20	6
24	पू.षा.	2	45	9	27	16	10	22	54
25/26	उ.षा.	5	39	12	25	19	12	1	58
26/27	श्रव.	8	46	15	32	22	19	5	4
27/28	धनि.	11	49	18	33	1	15	7	56
28/29	शत.	14	34	21	11	3	46	10	18
29/30	पू.भा.	16	48	23	16	5	41	12	4
30/31	उ.भा.	18	24	0	41	6	56	13	8

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
नवंबर 2009 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	रेव.	19	18	1	25	7	29	13	31
1/2	अश्वि.	19	31	1	29	7	25	13	19
2/3	भर.	19	10	1	1	6	49	12	36
3/4	कृत्ति.	18	21	0	5	5	48	11	30
4/5	रोहि.	17	11	22	52	4	31	10	10
5/6	मृग.	15	49	21	27	3	4	8	42
6/7	आर्द्रा	14	19	19	57	1	34	7	11
7/8	पुन.	12	49	18	27	0	5	5	43
8/9	पुष्य	11	21	17	0	22	39	4	19
9/10	आश्ले.	9	59	15	39	21	20	3	2
10/11	मघा	8	43	14	26	20	9	1	52
11/12	पू.फा.	7	36	13	20	19	6	0	51
12/13	उ.फा.	6	38	12	25	18	13	0	2
13	हस्त	5	51	11	42	17	33	23	26
14	चित्रा	5	19	11	14	17	10	23	7
15	स्वाती	5	5	11	5	17	7	23	10
16	विशा.	5	15	11	21	17	30	23	40
17/18	अनु.	5	52	12	6	18	23	0	41
18/19	ज्येष्ठा	7	2	13	24	19	49	2	16
19/20	मूल	8	45	15	16	21	49	4	24
20/21	पू.षा.	11	1	17	40	0	20	7	2
21/22	उ.षा.	13	45	20	30	3	15	10	2
22/23	श्रव.	16	49	23	36	6	23	13	11
23/24	धनि.	19	58	2	44	9	30	16	14
24/25	शत.	22	58	5	39	12	19	18	57
26	पू.भा.	1	33	8	7	14	39	21	7
27	उ.भा.	3	33	9	57	16	17	22	34
28	रेव.	4	49	11	1	17	9	23	15
29	अश्वि.	5	18	11	18	17	15	23	9
30	भर.	5	1	10	51	16	37	22	22

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
दिसंबर 2009 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	कृत्ति.	4	5	9	45	15	24	21	0
2	रोहि.	2	36	8	9	13	41	19	13
3	मृग.	0	43	6	12	11	40	17	8
3/4	आर्द्रा	22	36	4	3	9	29	14	56
4/5	पुन.	20	23	1	50	7	17	12	45
5/6	पुष्य	18	13	23	42	5	12	10	42
6/7	आश्ले.	16	13	21	45	3	19	8	53
7/8	मघा	14	28	20	5	1	43	7	22
8/9	पू.फा.	13	3	18	45	0	28	6	13
9/10	उ.फा.	11	59	17	47	23	36	5	27
10/11	हस्त	11	19	17	13	23	9	5	6
11/12	चित्रा	11	4	17	4	23	6	5	9
12/13	स्वाती	11	14	17	21	23	29	5	38
13/14	विशा.	11	50	18	3	0	17	6	33
14/15	अनु.	12	51	19	11	1	32	7	55
15/16	ज्येष्ठा	14	19	20	45	3	13	9	43
16/17	मूल	16	14	22	46	5	20	11	56
17/18	पू.षा.	18	33	1	12	7	52	14	33
18/19	उ.षा.	21	16	3	59	10	44	17	30
20	श्रव.	0	16	7	3	13	50	20	37
21	धनि.	3	25	10	13	17	0	23	47
22/23	शत.	6	33	13	18	20	3	2	46
23/24	पू.भा.	9	28	16	7	22	46	5	22
24/25	उ.भा.	11	56	18	27	0	56	7	23
25/26	रेव.	13	47	20	8	2	26	8	41
26/27	अश्वि.	14	54	21	3	3	9	9	12
27/28	भर.	15	12	21	9	3	3	8	54
28/29	कृत्ति.	14	42	20	28	2	11	7	51
29/30	रोहि.	13	29	19	4	0	38	6	9
30/31	मृग.	11	38	17	6	22	32	3	57

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) सन् 2010 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जनवरी 2010 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	आर्द्रा	9	20	14	42	20	3	1	23
1	पुन.	6	42	12	1	17	20	22	38
2	पुष्य	3	56	9	14	14	33	19	52
3	आश्ले.	1	12	6	32	11	53	17	15
3/4	मघा	22	38	4	2	9	28	14	55
4/5	पू.फा.	20	23	1	54	7	26	13	0
5/6	उ.फा.	18	36	0	14	5	54	11	37
6/7	हस्त	17	21	23	8	4	57	10	49
7/8	चित्रा	16	43	22	40	4	38	10	39
8/9	स्वाती	16	43	22	49	4	57	11	8
9/10	विशा.	17	21	23	36	5	53	12	12
10/11	अनु.	18	33	0	57	7	22	13	49
11/12	ज्येष्ठा	20	18	2	48	9	20	15	54
12/13	मूल	22	29	5	6	11	43	18	22
14	पू.षा.	1	2	7	44	14	26	21	9
15/16	उ.षा.	3	52	10	37	17	22	0	8
16/17	श्रव.	6	54	13	41	20	27	3	14
17/18	धनि.	10	2	16	49	23	35	6	22
18/19	शत.	13	8	19	54	2	39	9	23
19/20	पू.भा.	16	7	22	49	5	30	12	10
20/21	उ.भा.	18	49	1	25	8	1	14	34
21/22	रेव.	21	5	3	34	10	1	16	26
22/23	अश्वि.	22	48	5	8	11	25	17	39
23/24	भर.	23	50	5	59	12	5	18	8
25	कृत्ति.	0	8	6	5	12	0	17	51
25/26	रोहि.	23	40	5	26	11	9	16	50
26/27	मृग.	22	28	4	4	9	37	15	8
27/28	आर्द्रा	20	37	2	4	7	29	12	52
28/29	पुन.	18	14	23	34	4	53	10	10
29/30	पुष्य	15	27	20	43	1	58	7	13
30/31	आश्ले.	12	27	17	42	22	56	4	10

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
फरवरी 2010 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	मघा	9	25	14	40	19	56	1	13
1	पू.फा.	6	31	11	50	17	10	22	32
2	उ.फा.	3	56	9	21	14	48	20	18
3	हस्त	1	50	7	24	13	0	18	39
4	चित्रा	0	21	6	5	11	53	17	43
4/5	स्वाती	23	37	5	33	11	32	17	34
5/6	विशा.	23	39	5	48	11	59	18	13
7	अनु.	0	30	6	50	13	12	19	37
8	ज्येष्ठा	2	5	8	34	15	6	21	40
9/10	मूल	4	16	10	54	17	34	0	14
10/11	पू.षा.	6	57	13	40	20	24	3	9
11/12	उ.षा.	9	55	16	41	23	28	6	15
12/13	श्रव.	13	3	19	50	2	37	9	24
13/14	धनि .	16	11	22	57	5	43	12	29
14/15	शत .	19	14	1	58	8	42	15	24
15/16	पू.भा.	22	6	4	47	11	27	18	5
17	उ.भा.	0	43	7	20	13	55	20	28
18	रेव.	3	1	9	32	16	1	22	29
19/20	अश्वि.	4	55	11	19	17	42	0	2
20/21	भर.	6	21	12	37	18	51	1	3
21/22	कृत्ति.	7	13	13	21	19	26	1	29
22/23	रोहि.	7	30	13	28	19	24	1	17
23/24	मृग.	7	8	12	56	18	42	0	26
24	आर्द्रा	6	7	11	46	17	22	22	57
25	पुन.	4	29	10	0	15	28	20	55
26	पुष्य	2	20	7	43	13	5	18	25
26/27	आश्ले.	23	45	5	3	10	21	15	38
27/28	मघा	20	54	2	10	7	25	12	41

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मार्च 2010 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
28/1	पू.फा.	17	57	23	13	4	29	9	47
1/2	उ.फा.	15	5	20	24	1	44	7	6
2/3	हस्त	12	29	17	54	23	21	4	49
3/4	चित्रा	10	20	15	54	21	30	3	8
4/5	स्वाती	8	50	14	34	20	21	2	11
5/6	विशा.	8	5	14	1	20	1	2	4
6/7	अनु.	8	11	14	20	20	33	2	49
7/8	ज्येष्ठा	9	8	15	31	21	56	4	24
8/9	मूल	10	54	17	27	0	3	6	40
9/10	पू.षा.	13	20	20	1	2	44	9	28
10/11	उ.षा.	16	13	23	0	5	47	12	34
11/12	श्रव.	19	22	2	10	8	58	15	45
12/13	धनि .	22	32	5	19	12	5	18	50
14	शत .	1	35	8	18	15	0	21	41
15/16	पू.भा.	4	21	11	0	17	37	0	13
16/17	उ.भा.	6	47	13	21	19	52	2	23
17/18	रेव.	8	52	15	19	21	45	4	10
18/19	अश्वि.	10	33	16	55	23	15	5	34
19/20	भर.	11	52	18	8	0	22	6	35
20/21	कृत्ति.	12	47	18	57	1	5	7	12
21/22	रोहि.	13	17	19	20	1	22	7	22
22/23	मृग.	13	20	19	17	1	12	7	5
23/24	आर्द्रा	12	56	18	45	0	33	6	19
24/25	पुन.	12	3	17	45	23	25	5	4
25/26	पुष्य	10	41	16	16	21	50	3	22
26/27	आश्ले.	8	53	14	22	19	50	1	17
27	मघा	6	43	12	8	17	32	22	56
28	पू.फा.	4	18	9	41	15	3	20	25
29	उ.फा.	1	48	7	10	12	33	17	56
29/30	हस्त	23	20	4	45	10	11	15	38
30/31	चित्रा	21	7	2	37	8	9	13	43

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जनवरी 2009 ई. को अयनांश 23° 59' 12"

जनवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घ. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	6 43 7	8 16 42 49	10 5 47 3	8 9 32 4	9 5 29 25	9 4 56 14	10 3 15 46	4 27 46 50	9 16 58 21	9 15 27 44	-23 1	- 9 51	1 49
2	6 47 3	8 17 44 0	10 18 8 19	8 10 17 15	9 6 45 5	9 5 10 3	10 4 21 21	4 27 46 45	9 16 55 10	9 15 29 32	-22 55	- 4 23	2 50
3	6 51 0	8 18 45 9	11 0 45 24	8 11 2 28	9 7 56 54	9 5 23 54	10 5 26 41	4 27 46 33	9 16 51 59	9 15 31 12	-22 50	1 20	3 44
4	6 54 56	8 19 46 19	11 13 42 7	8 11 47 44	9 9 4 14	9 5 37 47	10 6 31 44	4 27 46 15	9 16 48 48	9 15 32 11	-22 44	7 9	4 28
5	6 58 53	8 20 47 28	11 27 1 51	8 12 33 2	9 10 6 23	9 5 51 42	10 7 36 30	4 27 45 50	9 16 45 37	9 15 32 8	-22 37	12 49	4 59
6	7 2 49	8 21 48 37	0 10 47 8	8 13 18 23	9 11 2 33	9 6 5 38	10 8 40 58	4 27 45 18	9 16 42 27	9 15 30 56	-22 30	18 2	5 14
7	7 6 46	8 22 49 46	0 24 58 42	8 14 3 46	9 11 51 54	9 6 19 36	10 9 45 8	4 27 44 40	9 16 39 16	9 15 28 45	-22 23	22 26	5 11
8	7 10 42	8 23 50 54	1 9 34 55	8 14 49 12	9 12 33 34	9 6 33 35	10 10 48 58	4 27 43 56	9 16 36 5	9 15 25 56	-22 15	25 34	4 48
9	7 14 39	8 24 52 2	1 24 31 11	8 15 34 40	9 13 6 38	9 6 47 35	10 11 52 29	4 27 43 5	9 16 32 54	9 15 23 1	-22 7	27 0	4 5
10	7 18 36	8 25 53 9	2 9 40 10	8 16 20 10	9 13 30 13	9 7 1 37	10 12 55 40	4 27 42 7	9 16 29 43	9 15 20 29	-21 58	26 28	3 4
11	7 22 32	8 26 54 16	2 24 52 27	8 17 5 43	9 13 43 28	9 7 15 40	10 13 58 29	4 27 41 3	9 16 26 32	9 15 18 44	-21 49	23 56	1 51
12	7 26 29	8 27 55 23	3 9 58 8	8 17 51 18	9 13 45 41	9 7 29 44	10 15 0 56	4 27 39 53	9 16 23 22	9 15 17 56	-21 39	19 45	0 29
13	7 30 25	8 28 56 30	3 24 48 10	8 18 36 55	9 13 36 20	9 7 43 49	10 16 3 1	4 27 38 36	9 16 20 11	9 15 18 5	-21 29	14 22	- 0 52
14	7 34 22	8 29 57 36	4 9 15 49	8 19 22 35	9 13 15 12	9 7 57 55	10 17 4 43	4 27 37 13	9 16 17 0	9 15 18 55	-21 19	8 19	- 2 9
15	7 38 18	9 0 58 42	4 23 17 6	8 20 8 18	9 12 42 22	9 8 12 2	10 18 6 1	4 27 35 43	9 16 13 49	9 15 20 6	-21 8	2 2	- 3 15
16	7 42 15	9 1 59 48	5 6 50 53	8 20 54 2	9 11 58 20	9 8 26 10	10 19 6 54	4 27 34 8	9 16 10 38	9 15 21 17	-20 57	- 4 8	- 4 8
17	7 46 11	9 3 0 53	5 19 58 22	8 21 39 49	9 11 4 5	9 8 40 19	10 20 7 22	4 27 32 26	9 16 7 28	9 15 22 9	-20 45	- 9 54	- 4 47
18	7 50 8	9 4 1 59	6 2 42 25	8 22 25 39	9 10 1 1	9 8 54 28	10 21 7 23	4 27 30 38	9 16 4 17	9 15 22 30	-20 33	-15 6	- 5 9
19	7 54 5	9 5 3 4	6 15 6 55	8 23 11 31	9 8 50 59	9 9 8 38	10 22 6 57	4 27 28 43	9 16 1 6	9 15 22 17	-20 21	-19 32	- 5 17
20	7 58 1	9 6 4 9	6 27 16 9	8 23 57 25	9 7 36 8	9 9 22 49	10 23 6 2	4 27 26 43	9 15 57 55	9 15 21 36	-20 8	-23 4	- 5 10
21	8 1 58	9 7 5 13	7 9 14 32	8 24 43 21	9 6 18 50	9 9 37 0	10 24 4 39	4 27 24 36	9 15 54 44	9 15 20 36	-19 55	-25 33	- 4 50
22	8 5 54	9 8 6 17	7 21 6 11	8 25 29 20	9 5 1 28	9 9 51 11	10 25 2 46	4 27 22 24	9 15 51 34	9 15 19 28	-19 42	-26 52	- 4 18
23	8 9 51	9 9 7 21	8 2 54 49	8 26 15 20	9 3 46 19	9 10 5 23	10 26 0 21	4 27 20 6	9 15 48 23	9 15 18 26	-19 28	-26 58	- 3 34
24	8 13 47	9 10 8 24	8 14 43 40	8 27 1 23	9 2 35 25	9 10 19 35	10 26 57 24	4 27 17 42	9 15 45 12	9 15 17 36	-19 14	-25 51	- 2 42
25	8 17 44	9 11 9 26	8 26 35 28	8 27 47 28	9 1 30 26	9 10 33 47	10 27 53 54	4 27 15 12	9 15 42 1	9 15 17 4	-18 59	-23 33	- 1 42
26	8 21 40	9 12 10 28	9 8 32 31	8 28 33 35	9 0 32 41	9 10 47 59	10 28 49 48	4 27 12 36	9 15 38 50	9 15 16 49	-18 44	-20 12	- 0 37
27	8 25 37	9 13 11 28	9 20 36 42	8 29 19 44	8 29 43 3	9 11 2 11	10 29 45 6	4 27 9 55	9 15 35 40	9 15 16 46	-18 29	-15 59	0 30
28	8 29 34	9 14 12 28	10 2 49 43	9 0 5 54	8 29 2 6	9 11 16 23	11 0 39 47	4 27 7 8	9 15 32 29	9 15 16 50	-18 13	-11 4	1 36
29	8 33 30	9 15 13 27	10 15 13 9	9 0 52 7	8 28 30 2	9 11 30 34	11 1 33 48	4 27 4 16	9 15 29 18	9 15 16 53	-17 57	- 5 40	2 39
30	8 37 27	9 16 14 25	10 27 48 33	9 1 38 21	8 28 6 49	9 11 44 46	11 2 27 9	4 27 1 18	9 15 26 7	9 15 16 50	-17 41	0 2	3 35
31	8 41 23	9 17 15 21	11 10 37 38	9 2 24 37	8 27 52 14	9 11 58 56	11 3 19 47	4 26 58 15	9 15 22 56	9 15 16 39	-17 24	5 50	4 21

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 फरवरी 2009 ई. को अयनांश 23° 59' 17"

फरवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घ. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	8 45 20	9 18 16 16	11 23 42 4	9 3 10 55	8 27 45 55	9 12 13 7	11 4 11 41	4 26 55 8	9 15 19 46	9 15 16 23	-17 7	11 29	4 55
2	8 49 16	9 19 17 10	0 7 3 30	9 3 57 14	8 27 47 25	9 12 27 16	11 5 2 49	4 26 51 55	9 15 16 35	9 15 16 7	-16 50	16 45	5 14
3	8 53 13	9 20 18 3	0 20 43 9	9 4 43 35	8 27 56 15	9 12 41 25	11 5 53 8	4 26 48 37	9 15 13 24	9 15 15 59	-16 33	21 17	5 16
4	8 57 9	9 21 18 54	1 4 41 35	9 5 29 58	8 28 11 53	9 12 55 34	11 6 42 38	4 26 45 14	9 15 10 13	9 15 16 5	-16 15	24 44	5 0
5	9 1 6	9 22 19 44	1 18 58 8	9 6 16 22	8 28 33 47	9 13 9 41	11 7 31 16	4 26 41 47	9 15 7 2	9 15 16 27	-15 57	26 43	4 24
6	9 5 3	9 23 20 32	2 3 30 39	9 7 2 47	8 29 1 28	9 13 23 47	11 8 19 0	4 26 38 15	9 15 3 52	9 15 17 3	-15 38	26 57	3 32
7	9 8 59	9 24 21 19	2 18 15 3	9 7 49 14	8 29 34 28	9 13 37 53	11 9 5 48	4 26 34 39	9 15 0 41	9 15 17 43	-15 20	25 17	2 25
8	9 12 56	9 25 22 4	3 3 5 31	9 8 35 43	9 0 12 18	9 13 51 57	11 9 51 38	4 26 30 58	9 14 57 30	9 15 18 15	-15 1	21 51	1 7
9	9 16 52	9 26 22 49	3 17 54 59	9 9 22 13	9 0 54 35	9 14 6 1	11 10 36 27	4 26 27 13	9 14 54 19	9 15 18 23	-14 42	16 59	-0 14
10	9 20 49	9 27 23 31	4 2 35 53	9 10 8 45	9 1 40 55	9 14 20 3	11 11 20 12	4 26 23 24	9 14 51 9	9 15 17 57	-14 23	11 10	-1 34
11	9 24 45	9 28 24 13	4 17 1 19	9 10 55 18	9 2 30 59	9 14 34 4	11 12 2 53	4 26 19 31	9 14 47 58	9 15 16 53	-14 3	4 52	-2 47
12	9 28 42	9 29 24 53	5 1 5 51	9 11 41 53	9 3 24 27	9 14 48 3	11 12 44 26	4 26 15 35	9 14 44 47	9 15 15 15	-13 43	-1 32	-3 47
13	9 32 38	10 0 25 32	5 14 46 11	9 12 28 29	9 4 21 2	9 15 2 2	11 13 24 48	4 26 11 34	9 14 41 36	9 15 13 16	-13 23	-7 39	-4 33
14	9 36 35	10 1 26 10	5 28 1 17	9 13 15 6	9 5 20 30	9 15 15 58	11 14 3 57	4 26 7 30	9 14 38 26	9 15 11 14	-13 3	-13 14	-5 2
15	9 40 32	10 2 26 46	6 10 52 13	9 14 1 45	9 6 22 37	9 15 29 53	11 14 41 50	4 26 3 22	9 14 35 15	9 15 9 30	-12 42	-18 5	-5 15
16	9 44 28	10 3 27 22	6 23 21 47	9 14 48 26	9 7 27 12	9 15 43 47	11 15 18 24	4 25 59 11	9 14 32 4	9 15 8 23	-12 22	-22 1	-5 13
17	9 48 25	10 4 27 56	7 5 33 54	9 15 35 7	9 8 34 3	9 15 57 39	11 15 53 37	4 25 54 56	9 14 28 53	9 15 8 3	-12 1	-24 53	-4 56
18	9 52 21	10 5 28 29	7 17 33 12	9 16 21 50	9 9 43 2	9 16 11 29	11 16 27 25	4 25 50 39	9 14 25 42	9 15 8 35	-11 40	-26 35	-4 27
19	9 56 18	10 6 29 1	7 29 24 35	9 17 8 35	9 10 54 0	9 16 25 17	11 16 59 45	4 25 46 19	9 14 22 32	9 15 9 49	-11 18	-27 3	-3 47
20	10 0 14	10 7 29 31	8 11 12 51	9 17 55 20	9 12 6 49	9 16 39 3	11 17 30 33	4 25 41 55	9 14 19 21	9 15 11 30	-10 57	-26 17	-2 57
21	10 4 11	10 8 30 0	8 23 2 32	9 18 42 7	9 13 21 23	9 16 52 47	11 17 59 47	4 25 37 29	9 14 16 10	9 15 13 13	-10 35	-24 20	-1 59
22	10 8 7	10 9 30 28	9 4 57 42	9 19 28 55	9 14 37 37	9 17 6 30	11 18 27 23	4 25 33 1	9 14 12 59	9 15 14 30	-10 13	-21 17	-0 56
23	10 12 4	10 10 30 54	9 17 1 41	9 20 15 43	9 15 55 24	9 17 20 9	11 18 53 17	4 25 28 30	9 14 9 49	9 15 14 55	-9 52	-17 19	0 10
24	10 16 1	10 11 31 19	9 29 17 8	9 21 2 33	9 17 14 41	9 17 33 47	11 19 17 24	4 25 23 57	9 14 6 38	9 15 14 6	-9 29	-12 33	1 16
25	10 19 57	10 12 31 42	10 11 45 49	9 21 49 24	9 18 35 24	9 17 47 22	11 19 39 43	4 25 19 22	9 14 3 27	9 15 11 54	-9 7	-7 13	2 21
26	10 23 54	10 13 32 3	10 24 28 37	9 22 36 15	9 19 57 28	9 18 0 55	11 20 0 8	4 25 14 45	9 14 0 16	9 15 8 22	-8 45	-1 31	3 19
27	10 27 50	10 14 32 22	11 7 25 43	9 23 23 7	9 21 20 52	9 18 14 25	11 20 18 35	4 25 10 6	9 13 57 6	9 15 3 49	-8 22	4 21	4 8
28	10 31 47	10 15 32 40	11 20 36 40	9 24 10 0	9 22 45 32	9 18 27 52	11 20 35 1	4 25 5 26	9 13 53 55	9 14 58 45	-8 0	10 8	4 46

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 मार्च 2009 ई. को अयनांश 23° 59' 21"

मार्च	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घ. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	10 35 43	10 16 32 55	0 4 0 37	9 24 56 53	9 24 11 26	9 18 41 16	11 20 49 21	4 25 0 44	9 13 50 44	9 14 53 51	-7 37	15 32	5 7
2	10 39 40	10 17 33 9	0 17 36 33	9 25 43 47	9 25 38 33	9 18 54 38	11 21 1 32	4 24 56 1	9 13 47 33	9 14 49 46	-7 14	20 15	5 12
3	10 43 36	10 18 33 21	1 1 23 28	9 26 30 42	9 27 6 51	9 19 7 57	11 21 11 30	4 24 51 17	9 13 44 23	9 14 47 1	-6 51	23 57	4 59
4	10 47 33	10 19 33 30	1 15 20 21	9 27 17 37	9 28 36 19	9 19 21 13	11 21 19 11	4 24 46 32	9 13 41 12	9 14 45 48	-6 28	26 17	4 29
5	10 51 30	10 20 33 38	1 29 26 12	9 28 4 32	10 0 6 57	9 19 34 25	11 21 24 31	4 24 41 46	9 13 38 1	9 14 46 1	-6 5	26 59	3 42
6	10 55 26	10 21 33 43	2 13 39 44	9 28 51 28	10 1 38 43	9 19 47 35	11 21 27 29	4 24 37 0	9 13 34 50	9 14 47 9	-5 42	25 54	2 42
7	10 59 23	10 22 33 46	2 27 59 6	9 29 38 24	10 3 11 38	9 20 0 41	11 21 28 1	4 24 32 14	9 13 31 40	9 14 48 29	-5 18	23 8	1 30
8	11 3 19	10 23 33 47	3 12 21 39	10 0 25 21	10 4 45 41	9 20 13 43	11 21 26 5	4 24 27 27	9 13 28 29	9 14 49 10	-4 55	18 54	0 13
9	11 7 16	10 24 33 46	3 26 43 45	10 1 12 18	10 6 20 52	9 20 26 43	11 21 21 38	4 24 22 40	9 13 25 18	9 14 48 26	-4 32	13 34	-1 4
10	11 11 12	10 25 33 43	4 11 0 55	10 1 59 15	10 7 57 11	9 20 39 39	11 21 14 41	4 24 17 53	9 13 22 7	9 14 45 48	-4 8	7 33	-2 17
11	11 15 9	10 26 33 38	4 25 8 12	10 2 46 13	10 9 34 38	9 20 52 31	11 21 5 13	4 24 13 6	9 13 18 57	9 14 41 9	-3 45	1 13	-3 21
12	11 19 5	10 27 33 31	5 9 0 53	10 3 33 11	10 11 13 15	9 21 5 20	11 20 53 14	4 24 8 20	9 13 15 46	9 14 34 47	-3 21	-5 2	-4 12
13	11 23 2	10 28 33 22	5 22 35 6	10 4 20 9	10 12 53 1	9 21 18 5	11 20 38 45	4 24 3 34	9 13 12 35	9 14 27 20	-2 57	-10 55	-4 47
14	11 26 59	10 29 33 11	6 5 48 31	10 5 7 8	10 14 33 57	9 21 30 46	11 20 21 48	4 23 58 48	9 13 9 25	9 14 19 36	-2 34	-16 9	-5 5
15	11 30 55	11 0 32 58	6 18 40 33	10 5 54 7	10 16 16 5	9 21 43 24	11 20 2 28	4 23 54 4	9 13 6 14	9 14 12 28	-2 10	-20 31	-5 7
16	11 34 52	11 1 32 44	7 1 12 26	10 6 41 6	10 17 59 23	9 21 55 57	11 19 40 47	4 23 49 20	9 13 3 3	9 14 6 39	-1 46	-23 50	-4 55
17	11 38 48	11 2 32 28	7 13 26 55	10 7 28 5	10 19 43 54	9 22 8 27	11 19 16 51	4 23 44 38	9 12 59 52	9 14 2 37	-1 23	-25 58	-4 29
18	11 42 45	11 3 32 10	7 25 27 56	10 8 15 4	10 21 29 38	9 22 20 52	11 18 50 48	4 23 39 57	9 12 56 42	9 14 0 31	-0 59	-26 52	-3 52
19	11 46 41	11 4 31 51	8 7 20 14	10 9 2 4	10 23 16 36	9 22 33 13	11 18 22 43	4 23 35 17	9 12 53 31	9 14 0 7	-0 35	-26 31	-3 5
20	11 50 38	11 5 31 29	8 19 9 1	10 9 49 3	10 25 4 48	9 22 45 30	11 17 52 47	4 23 30 39	9 12 50 20	9 14 0 53	-0 12	-24 57	-2 10
21	11 54 34	11 6 31 7	9 0 59 37	10 10 36 3	10 26 54 15	9 22 57 43	11 17 21 8	4 23 26 2	9 12 47 9	9 14 2 2	0 12	-22 17	-1 10
22	11 58 31	11 7 30 42	9 12 57 7	10 11 23 2	10 28 44 57	9 23 9 51	11 16 47 58	4 23 21 28	9 12 43 59	9 14 2 41	0 36	-18 38	-0 6
23	12 2 28	11 8 30 15	9 25 6 9	10 12 10 1	11 0 36 55	9 23 21 54	11 16 13 29	4 23 16 55	9 12 40 48	9 14 1 59	1 0	-14 10	0 59
24	12 6 24	11 9 29 47	10 7 30 27	10 12 57 0	11 2 30 9	9 23 33 53	11 15 37 52	4 23 12 24	9 12 37 37	9 13 59 15	1 23	-9 2	2 3
25	12 10 21	11 10 29 17	10 20 12 40	10 13 43 59	11 4 24 39	9 23 45 47	11 15 1 22	4 23 7 56	9 12 34 26	9 13 54 8	1 47	-3 26	3 1
26	12 14 17	11 11 28 44	11 3 13 59	10 14 30 57	11 6 20 22	9 23 57 36	11 14 24 13	4 23 3 31	9 12 31 16	9 13 46 42	2 10	2 27	3 52
27	12 18 14	11 12 28 10	11 16 34 2	10 15 17 55	11 8 17 19	9 24 9 20	11 13 46 39	4 22 59 8	9 12 28 5	9 13 37 27	2 34	8 20	4 31
28	12 22 10	11 13 27 34	0 0 10 55	10 16 4 52	11 10 15 28	9 24 20 59	11 13 8 55	4 22 54 47	9 12 24 54	9 13 27 15	2 57	13 57	4 56
29	12 26 7	11 14 26 55	0 14 1 27	10 16 51 49	11 12 14 44	9 24 32 32	11 12 31 15	4 22 50 30	9 12 21 43	9 13 17 12	3 21	18 58	5 4
30	12 30 3	11 15 26 15	0 28 1 47	10 17 38 45	11 14 15 5	9 24 44 1	11 11 53 56	4 22 46 16	9 12 18 33	9 13 8 26	3 44	23 0	4 54
31	12 34 0	11 16 25 32	1 12 8 2	10 18 25 41	11 16 16 25	9 24 55 24	11 11 17 11	4 22 42 5	9 12 15 22	9 13 1 46	4 7	25 42	4 26

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टॅ. टा.), 1 अप्रैल 2009 ई. को अयनांश 23° 59' 24"

अप्रैल	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां	चन्द्रशर
	घ. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	12 37 57	11 17 24 46	1 26 16 50	10 19 12 35	11 18 18 39	9 25 6 41	11 10 41 14	4 22 37 57	9 12 12 11	9 12 57 39	4 31	26 46	3 42
2	12 41 53	11 18 23 59	2 10 25 40	10 19 59 29	11 20 21 39	9 25 17 53	11 10 6 20	4 22 33 53	9 12 9 1	9 12 55 53	4 54	26 6	2 44
3	12 45 50	11 19 23 9	2 24 32 51	10 20 46 22	11 22 25 16	9 25 29 0	11 9 32 41	4 22 29 52	9 12 5 50	9 12 55 47	5 17	23 45	1 36
4	12 49 46	11 20 22 16	3 8 37 20	10 21 33 14	11 24 29 19	9 25 40 1	11 9 0 29	4 22 25 55	9 12 2 39	9 12 56 14	5 40	19 57	0 23
5	12 53 43	11 21 21 22	3 22 38 16	10 22 20 5	11 26 33 35	9 25 50 55	11 8 29 56	4 22 22 2	9 11 59 28	9 12 55 57	6 3	15 2	-0 51
6	12 57 39	11 22 20 25	4 6 34 34	10 23 6 55	11 28 37 52	9 26 1 44	11 8 1 12	4 22 18 13	9 11 56 18	9 12 53 48	6 25	9 22	-2 2
7	13 1 36	11 23 19 26	4 20 24 37	10 23 53 45	0 0 41 52	9 26 12 27	11 7 34 24	4 22 14 28	9 11 53 7	9 12 49 0	6 48	3 18	-3 5
8	13 5 32	11 24 18 24	5 4 6 12	10 24 40 33	0 2 45 18	9 26 23 4	11 7 9 42	4 22 10 47	9 11 49 56	9 12 41 19	7 10	-2 51	-3 56
9	13 9 29	11 25 17 21	5 17 36 39	10 25 27 20	0 4 47 52	9 26 33 35	11 6 47 12	4 22 7 10	9 11 46 45	9 12 31 6	7 33	-8 47	-4 34
10	13 13 26	11 26 16 15	6 0 53 22	10 26 14 7	0 6 49 12	9 26 44 0	11 6 26 58	4 22 3 37	9 11 43 35	9 12 19 9	7 55	-14 13	-4 55
11	13 17 22	11 27 15 8	6 13 54 15	10 27 0 52	0 8 48 58	9 26 54 18	11 6 9 7	4 22 0 9	9 11 40 24	9 12 6 36	8 17	-18 53	-5 1
12	13 21 19	11 28 13 58	6 26 38 16	10 27 47 36	0 10 46 49	9 27 4 30	11 5 53 40	4 21 56 46	9 11 37 13	9 11 54 38	8 39	-22 35	-4 51
13	13 25 15	11 29 12 47	7 9 5 40	10 28 34 20	0 12 42 22	9 27 14 35	11 5 40 40	4 21 53 27	9 11 34 2	9 11 44 16	9 1	-25 9	-4 28
14	13 29 12	0 0 11 34	7 21 18 2	10 29 21 2	0 14 35 18	9 27 24 34	11 5 30 8	4 21 50 13	9 11 30 52	9 11 36 14	9 23	-26 29	-3 53
15	13 33 8	0 1 10 19	8 3 18 15	11 0 7 43	0 16 25 16	9 27 34 26	11 5 22 4	4 21 47 3	9 11 27 41	9 11 30 48	9 44	-26 32	-3 7
16	13 37 5	0 2 9 2	8 15 10 16	11 0 54 23	0 18 11 59	9 27 44 12	11 5 16 28	4 21 43 59	9 11 24 30	9 11 27 49	10 6	-25 22	-2 15
17	13 41 1	0 3 7 44	8 26 58 52	11 1 41 2	0 19 55 8	9 27 53 50	11 5 13 19	4 21 40 59	9 11 21 19	9 11 26 41	10 27	-23 3	-1 16
18	13 44 58	0 4 6 24	9 8 49 21	11 2 27 39	0 21 34 29	9 28 3 22	11 5 12 35	4 21 38 5	9 11 18 9	9 11 26 31	10 48	-19 45	-0 14
19	13 48 55	0 5 5 2	9 20 47 14	11 3 14 16	0 23 9 46	9 28 12 46	11 5 14 14	4 21 35 16	9 11 14 58	9 11 26 15	11 9	-15 37	0 49
20	13 52 51	0 6 3 39	10 2 57 56	11 4 0 50	0 24 40 49	9 28 22 4	11 5 18 12	4 21 32 31	9 11 11 47	9 11 24 48	11 29	-10 47	1 51
21	13 56 48	0 7 2 14	10 15 26 15	11 4 47 24	0 26 7 26	9 28 31 13	11 5 24 28	4 21 29 53	9 11 8 36	9 11 21 18	11 50	-5 25	2 50
22	14 0 44	0 8 0 47	10 28 15 57	11 5 33 56	0 27 29 28	9 28 40 16	11 5 32 57	4 21 27 19	9 11 5 26	9 11 15 13	12 10	0 19	3 41
23	14 4 41	0 8 59 19	11 11 29 16	11 6 20 26	0 28 46 46	9 28 49 11	11 5 43 35	4 21 24 51	9 11 2 15	9 11 6 33	12 30	6 11	4 22
24	14 8 37	0 9 57 48	11 25 6 21	11 7 6 54	0 29 59 12	9 28 57 58	11 5 56 20	4 21 22 29	9 10 59 4	9 10 55 46	12 50	11 56	4 49
25	14 12 34	0 10 56 16	0 9 5 4	11 7 53 21	1 1 6 41	9 29 6 38	11 6 11 7	4 21 20 12	9 10 55 53	9 10 43 49	13 10	17 14	5 0
26	14 16 30	0 11 54 42	0 23 21 1	11 8 39 46	1 2 9 7	9 29 15 9	11 6 27 52	4 21 18 1	9 10 52 43	9 10 31 56	13 29	21 41	4 53
27	14 20 27	0 12 53 6	1 7 48 10	11 9 26 9	1 3 6 24	9 29 23 33	11 6 46 32	4 21 15 56	9 10 49 32	9 10 21 21	13 49	24 53	4 27
28	14 24 24	0 13 51 29	1 22 19 54	11 10 12 30	1 3 58 27	9 29 31 48	11 7 7 3	4 21 13 57	9 10 46 21	9 10 13 4	14 8	26 27	3 44
29	14 28 20	0 14 49 49	2 6 50 1	11 10 58 50	1 4 45 13	9 29 39 56	11 7 29 20	4 21 12 3	9 10 43 10	9 10 7 37	14 26	26 12	2 46
30	14 32 17	0 15 48 7	2 21 13 41	11 11 45 7	1 5 26 38	9 29 47 55	11 7 53 20	4 21 10 15	9 10 40 0	9 10 4 [illegible]	14 [illegible]	[illegible]	1 [illegible]

143

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 मई 2009 ई. को अयनांश 23° 59' 27''

मई	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घ. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	14 36 13	0 16 46 23	3 5 27 46	11 12 31 22	1 6 2 40	9 29 55 46	11 8 19 0	4 21 8 33	9 10 36 49	9 10 4 7	15 3	20 40	0 24
2	14 40 10	0 17 44 37	3 19 30 43	11 13 17 35	1 6 33 15	10 0 3 28	11 8 46 16	4 21 6 58	9 10 33 38	9 10 4 13	15 21	15 58	-0 50
3	14 44 6	0 18 42 49	4 3 22 10	11 14 3 46	1 6 58 24	10 0 11 2	11 9 15 4	4 21 5 28	9 10 30 27	9 10 3 47	15 39	10 31	-2 0
4	14 48 3	0 19 40 59	4 17 2 20	11 14 49 54	1 7 18 5	10 0 18 27	11 9 45 21	4 21 4 4	9 10 27 16	9 10 1 38	15 57	4 37	-3 2
5	14 51 59	0 20 39 7	5 0 31 31	11 15 36 1	1 7 32 22	10 0 25 44	11 10 17 3	4 21 2 46	9 10 24 6	9 9 56 53	16 14	-1 24	-3 53
6	14 55 56	0 21 37 13	5 13 49 47	11 16 22 5	1 7 41 17	10 0 32 52	11 10 50 9	4 21 1 34	9 10 20 55	9 9 49 16	16 31	-7 15	-4 31
7	14 59 53	0 22 35 17	5 26 56 48	11 17 8 7	1 7 44 56	10 0 39 51	11 11 24 34	4 21 0 29	9 10 17 44	9 9 39 3	16 48	-12 42	-4 54
8	15 3 49	0 23 33 19	6 9 51 57	11 17 54 7	1 7 43 27	10 0 46 41	11 12 0 16	4 20 59 29	9 10 14 33	9 9 27 1	17 4	-17 31	-5 1
9	15 7 46	0 24 31 20	6 22 34 33	11 18 40 4	1 7 37 0	10 0 53 22	11 12 37 11	4 20 58 36	9 10 11 23	9 9 14 16	17 20	-21 28	-4 53
10	15 11 42	0 25 29 19	7 5 4 16	11 19 26 0	1 7 25 49	10 0 59 54	11 13 15 18	4 20 57 49	9 10 8 12	9 9 1 59	17 36	-24 21	-4 31
11	15 15 39	0 26 27 16	7 17 21 24	11 20 11 53	1 7 10 12	10 1 6 17	11 13 54 33	4 20 57 8	9 10 5 1	9 8 51 13	17 52	-26 3	-3 57
12	15 19 35	0 27 25 12	7 29 27 5	11 20 57 43	1 6 50 28	10 1 12 30	11 14 34 54	4 20 56 33	9 10 1 50	9 8 42 44	18 7	-26 28	-3 12
13	15 23 32	0 28 23 7	8 11 23 24	11 21 43 32	1 6 27 1	10 1 18 35	11 15 16 17	4 20 56 4	9 9 58 39	9 8 36 53	18 22	-25 39	-2 19
14	15 27 28	0 29 21 0	8 23 13 24	11 22 29 18	1 6 0 17	10 1 24 29	11 15 58 42	4 20 55 42	9 9 55 29	9 8 33 34	18 37	-23 40	-1 21
15	15 31 25	1 0 18 52	9 5 0 59	11 23 15 2	1 5 30 46	10 1 30 14	11 16 42 5	4 20 55 26	9 9 52 18	9 8 32 20	18 51	-20 40	-0 19
16	15 35 22	1 1 16 43	9 16 50 48	11 24 0 43	1 4 59 0	10 1 35 49	11 17 26 24	4 20 55 16	9 9 49 7	9 8 32 24	19 5	-16 48	0 44
17	15 39 18	1 2 14 33	9 28 48 2	11 24 46 22	1 4 25 34	10 1 41 15	11 18 11 37	4 20 55 12	9 9 45 56	9 8 32 47	19 19	-12 15	1 46
18	15 43 15	1 3 12 21	10 10 58 5	11 25 31 59	1 3 51 3	10 1 46 30	11 18 57 42	4 20 55 14	9 9 42 45	9 8 32 29	19 32	-7 9	2 44
19	15 47 11	1 4 10 9	10 23 26 8	11 26 17 33	1 3 16 3	10 1 51 36	11 19 44 36	4 20 55 23	9 9 39 35	9 8 30 40	19 45	-1 39	3 36
20	15 51 8	1 5 7 55	11 6 16 48	11 27 3 4	1 2 41 13	10 1 56 31	11 20 32 18	4 20 55 38	9 9 36 24	9 8 26 46	19 58	4 3	4 18
21	15 55 4	1 6 5 40	11 19 33 24	11 27 48 32	1 2 7 8	10 2 1 17	11 21 20 45	4 20 55 59	9 9 33 13	9 8 20 40	20 10	9 46	4 49
22	15 59 1	1 7 3 24	0 3 17 16	11 28 33 58	1 1 34 22	10 2 5 52	11 22 9 56	4 20 56 27	9 9 30 2	9 8 12 43	20 22	15 13	5 3
23	16 2 57	1 8 1 7	0 17 27 12	11 29 19 21	1 1 3 29	10 2 10 16	11 22 59 50	4 20 57 0	9 9 26 51	9 8 3 40	20 34	20 1	5 1
24	16 6 54	1 8 58 48	1 1 59 9	0 0 4 41	1 0 34 59	10 2 14 30	11 23 50 23	4 20 57 40	9 9 23 41	9 7 54 32	20 45	23 45	4 38
25	16 10 51	1 9 56 28	1 16 46 29	0 0 49 58	1 0 9 18	10 2 18 34	11 24 41 36	4 20 58 27	9 9 20 30	9 7 46 21	20 56	25 59	3 57
26	16 14 47	1 10 54 7	2 1 40 56	0 1 35 12	0 29 46 50	10 2 22 27	11 25 33 25	4 20 59 19	9 9 17 19	9 7 40 1	21 7	26 22	3 0
27	16 18 44	1 11 51 45	2 16 34 0	0 2 20 23	0 29 27 55	10 2 26 9	11 26 25 50	4 21 0 18	9 9 14 8	9 7 36 1	21 17	24 51	1 50
28	16 22 40	1 12 49 21	3 1 18 14	0 3 5 31	0 29 12 50	10 2 29 40	11 27 18 50	4 21 1 23	9 9 10 57	9 7 34 17	21 27	21 38	0 34
29	16 26 37	1 13 46 56	3 15 48 11	0 3 50 35	0 29 1 48	10 2 33 1	11 28 12 23	4 21 2 34	9 9 7 47	9 7 34 18	21 36	17 5	-0 44
30	16 30 33	1 14 44 30	4 0 0 41	0 4 35 37	0 28 55 0	10 2 36 10	11 29 6 29	4 21 3 51	9 9 4 36	9 7 35 10	21 45	11 40	-1 58
31	16 34 30	1 15 42 2	4 13 54 35	0 5 20 35	0 28 52 32	10 2 39 9	0 0 1 5	4 21 5 14	9 9 1 25	9 7 35 50	21 54	5 47	-3 3

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टैं.टा.), 1 जून 2009 ई. को अयनांश 23° 59' 32"

ता.	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्यक्रां	चन्द्रक्रां	चन्द्रशर
	घ. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा.अं. क. वि.	रा.अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	16 38 26	1 16 39 33	4 27 30 14	0 6 5 30	0 28 54 30	10 2 41 57	0 0 56 10	4 21 6 44	9 8 58 14	9 7 35 20	22 3	-0 14	-3 56
2	16 42 23	1 17 37 2	5 10 48 50	0 6 50 21	0 29 0 57	10 2 44 34	0 1 51 45	4 21 8 19	9 8 55 3	9 7 32 58	22 11	-6 7	-4 35
3	16 46 20	1 18 34 31	5 23 51 55	0 7 35 9	0 29 11 53	10 2 46 59	0 2 47 48	4 21 10 0	9 8 51 52	9 7 28 29	22 18	-11 37	-4 59
4	16 50 16	1 19 31 58	6 6 41 1	0 8 19 54	0 29 27 18	10 2 49 14	0 3 44 18	4 21 11 48	9 8 48 42	9 7 22 4	22 25	-16 30	-5 8
5	16 54 13	1 20 29 23	6 19 17 29	0 9 4 36	0 29 47 9	10 2 51 17	0 4 41 14	4 21 13 41	9 8 45 31	9 7 14 17	22 32	-20 36	-5 1
6	16 58 9	1 21 26 48	7 1 42 30	0 9 49 14	1 0 11 22	10 2 53 9	0 5 38 35	4 21 15 40	9 8 42 20	9 7 5 56	22 39	-23 43	-4 40
7	17 2 6	1 22 24 12	7 13 57 6	0 10 33 49	1 0 39 55	10 2 54 50	0 6 36 21	4 21 17 45	9 8 39 9	9 6 57 53	22 45	-25 41	-4 7
8	17 6 2	1 23 21 34	7 26 2 25	0 11 18 21	1 1 12 42	10 2 56 20	0 7 34 31	4 21 19 56	9 8 35 58	9 6 50 54	22 50	-26 26	-3 22
9	17 9 59	1 24 18 56	8 7 59 51	0 12 2 50	1 1 49 39	10 2 57 38	0 8 33 4	4 21 22 13	9 8 32 48	9 6 45 33	22 55	-25 55	-2 29
10	17 13 55	1 25 16 17	8 19 51 16	0 12 47 15	1 2 30 39	10 2 58 45	0 9 32 0	4 21 24 35	9 8 29 37	9 6 42 8	23 0	-24 13	-1 30
11	17 17 52	1 26 13 38	9 1 39 5	0 13 31 37	1 3 15 38	10 2 59 41	0 10 31 17	4 21 27 4	9 8 26 26	9 6 40 37	23 5	-21 28	-0 27
12	17 21 49	1 27 10 58	9 13 26 24	0 14 15 55	1 4 4 31	10 3 0 25	0 11 30 56	4 21 29 37	9 8 23 15	9 6 40 42	23 9	-17 49	0 37
13	17 25 45	1 28 8 17	9 25 16 51	0 15 0 10	1 4 57 13	10 3 0 57	0 12 30 55	4 21 32 17	9 8 20 4	9 6 41 53	23 12	-13 28	1 40
14	17 29 42	1 29 5 36	10 7 14 43	0 15 44 22	1 5 53 39	10 3 1 18	0 13 31 13	4 21 35 2	9 8 16 53	9 6 43 29	23 16	-8 33	2 39
15	17 33 38	2 0 2 55	10 19 24 39	0 16 28 30	1 6 53 44	10 3 1 28	0 14 31 51	4 21 37 53	9 8 13 43	9 6 44 50	23 18	-3 15	3 32
16	17 37 35	2 1 0 13	11 1 51 28	0 17 12 34	1 7 57 26	10 3 1 26	0 15 32 47	4 21 40 49	9 8 10 32	9 6 45 20	23 21	2 17	4 17
17	17 41 31	2 1 57 31	11 14 39 43	0 17 56 35	1 9 4 39	10 3 1 12	0 16 34 1	4 21 43 51	9 8 7 21	9 6 44 35	23 23	7 52	4 50
18	17 45 28	2 2 54 49	11 27 53 14	0 18 40 33	1 10 15 21	10 3 0 47	0 17 35 32	4 21 46 58	9 8 4 10	9 6 42 27	23 24	13 18	5 9
19	17 49 24	2 3 52 6	0 11 34 25	0 19 24 26	1 11 29 29	10 3 0 10	0 18 37 20	4 21 50 11	9 8 0 59	9 6 39 6	23 25	18 16	5 11
20	17 53 21	2 4 49 23	0 25 43 27	0 20 8 16	1 12 47 0	10 2 59 21	0 19 39 24	4 21 53 29	9 7 57 49	9 6 34 58	23 26	22 24	4 55
21	17 57 17	2 5 46 40	1 10 17 47	0 20 52 2	1 14 7 52	10 2 58 21	0 20 41 44	4 21 56 52	9 7 54 38	9 6 30 39	23 26	25 16	4 20
22	18 1 14	2 6 43 56	1 25 11 57	0 21 35 44	1 15 32 2	10 2 57 9	0 21 44 18	4 22 0 21	9 7 51 27	9 6 26 48	23 26	26 26	3 27
23	18 5 11	2 7 41 12	2 10 17 59	0 22 19 22	1 16 59 29	10 2 55 46	0 22 47 7	4 22 3 55	9 7 48 16	9 6 23 56	23 26	25 40	2 18
24	18 9 7	2 8 38 28	2 25 26 36	0 23 2 57	1 18 30 11	10 2 54 11	0 23 50 11	4 22 7 34	9 7 45 5	9 6 22 21	23 25	23 1	1 0
25	18 13 4	2 9 35 43	3 10 28 31	0 23 46 27	1 20 4 6	10 2 52 25	0 24 53 28	4 22 11 19	9 7 41 54	9 6 22 3	23 23	18 47	-0 23
26	18 17 0	2 10 32 58	3 25 15 54	0 24 29 53	1 21 41 12	10 2 50 27	0 25 56 58	4 22 15 8	9 7 38 44	9 6 22 45	23 22	13 26	-1 42
27	18 20 57	2 11 30 12	4 9 43 13	0 25 13 14	1 23 21 25	10 2 48 18	0 27 0 41	4 22 19 3	9 7 35 33	9 6 24 0	23 20	7 27	-2 53
28	18 24 53	2 12 27 26	4 23 47 29	0 25 56 32	1 25 4 43	10 2 45 58	0 28 4 36	4 22 23 2	9 7 32 22	9 6 25 14	23 17	1 16	-3 52
29	18 28 50	2 13 24 39	5 7 27 59	0 26 39 45	1 26 51 0	10 2 43 27	0 29 8 44	4 22 27 7	9 7 29 11	9 6 25 57	23 14	-4 48	-4 36
30	18 32 46	2 14 21 52	5 20 46 44	0 27 22 54	1 28 40 13	10 2 40 44	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जुलाई 2009 ई. को अयनांश 23° 59' 38"

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जुलाई 2009 ई. को अयनांश 23° 59' 38"

जुलाई	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	18	36	43	2	15	9	4	6	3	42	53	0	28	5	59	2	0	32	15	10	2	37	50	1	1	17	35	4	22	35	30	9	7	22	49	9	6	24	43	23	7	-15	33	-5	15
2	18	40	40	2	16	13	16	6	16	22	11	0	28	49	0	2	2	26	59	10	2	34	46	1	2	22	17	4	22	39	49	9	7	19	39	9	6	22	45	23	3	-19	50	-5	11
3	18	44	36	2	17	13	28	6	28	46	32	0	29	31	56	2	4	24	15	10	2	31	31	1	3	27	11	4	22	44	13	9	7	16	28	9	6	20	10	22	58	-23	10	-4	52
4	18	48	33	2	18	10	39	7	10	58	48	1	0	14	48	2	6	23	53	10	2	28	5	1	4	32	16	4	22	48	41	9	7	13	17	9	6	17	21	22	53	-25	23	-4	20
5	18	52	29	2	19	7	50	7	23	1	37	1	0	57	36	2	8	25	41	10	2	24	28	1	5	37	32	4	22	53	14	9	7	10	6	9	6	14	41	22	48	-26	24	-3	37
6	18	56	26	2	20	5	1	8	4	57	22	1	1	40	20	2	10	29	25	10	2	20	41	1	6	42	58	4	22	57	51	9	7	6	55	9	6	12	28	22	42	-26	10	-2	44
7	19	0	22	2	21	2	12	8	16	48	16	1	2	22	59	2	12	34	50	10	2	16	44	1	7	48	35	4	23	2	33	9	7	3	45	9	6	10	57	22	36	-24	45	-1	45
8	19	4	19	2	21	59	23	8	28	36	30	1	3	5	34	2	14	41	40	10	2	12	37	1	8	54	22	4	23	7	19	9	7	0	34	9	6	10	11	22	29	-22	14	-0	42
9	19	8	15	2	22	56	34	9	10	24	19	1	3	48	5	2	16	49	37	10	2	8	19	1	10	0	19	4	23	12	10	9	6	57	23	9	6	10	10	22	22	-18	47	0	23
10	19	12	12	2	23	53	45	9	22	14	11	1	4	30	32	2	18	58	23	10	2	3	51	1	11	6	26	4	23	17	4	9	6	54	12	9	6	10	43	22	15	-14	34	1	28
11	19	16	9	2	24	50	57	10	4	8	50	1	5	12	54	2	21	7	41	10	1	59	14	1	12	12	43	4	23	22	4	9	6	51	1	9	6	11	39	22	7	-9	47	2	29
12	19	20	5	2	25	48	9	10	16	11	19	1	5	55	12	2	23	17	13	10	1	54	27	1	13	19	9	4	23	27	7	9	6	47	50	9	6	12	42	21	59	-4	36	3	24
13	19	24	2	2	26	45	21	10	28	25	4	1	6	37	26	2	25	26	43	10	1	49	30	1	14	25	44	4	23	32	14	9	6	44	40	9	6	13	38	21	50	0	50	4	11
14	19	27	58	2	27	42	34	11	10	53	46	1	7	19	35	2	27	35	53	10	1	44	24	1	15	32	29	4	23	37	26	9	6	41	29	9	6	14	17	21	41	6	20	4	47
15	19	31	55	2	28	39	48	11	23	41	7	1	8	1	40	2	29	44	30	10	1	39	8	1	16	39	22	4	23	42	42	9	6	38	18	9	6	14	33	21	32	11	43	5	10
16	19	35	51	2	29	37	2	0	6	50	33	1	8	43	40	3	1	52	20	10	1	33	44	1	17	46	24	4	23	48	1	9	6	35	7	9	6	14	28	21	23	16	43	5	18
17	19	39	48	3	0	34	17	0	20	24	40	1	9	25	35	3	3	59	12	10	1	28	10	1	18	53	35	4	23	53	25	9	6	31	56	9	6	14	7	21	13	21	3	5	8
18	19	43	44	3	1	31	32	1	4	24	41	1	10	7	26	3	6	4	56	10	1	22	28	1	20	0	54	4	23	58	52	9	6	28	46	9	6	13	38	21	2	24	21	4	40
19	19	47	41	3	2	28	48	1	18	49	45	1	10	49	13	3	8	9	24	10	1	16	38	1	21	8	20	4	24	4	24	9	6	25	35	9	6	13	11	20	52	26	12	3	54
20	19	51	38	3	3	26	5	2	3	36	31	1	11	30	54	3	10	12	28	10	1	10	39	1	22	15	55	4	24	9	59	9	6	22	24	9	6	12	51	20	40	26	17	2	52
21	19	55	34	3	4	23	23	2	18	39	2	1	12	12	31	3	12	14	4	10	1	4	32	1	23	23	37	4	24	15	38	9	6	19	13	9	6	12	42	20	29	24	26	1	36
22	19	59	31	3	5	20	40	3	3	49	10	1	12	54	2	3	14	14	6	10	0	58	18	1	24	31	27	4	24	21	20	9	6	16	2	9	6	12	41	20	17	20	49	0	13
23	20	3	27	3	6	17	59	3	18	57	39	1	13	35	29	3	16	12	32	10	0	51	56	1	25	39	24	4	24	27	6	9	6	12	52	9	6	12	42	20	5	15	48	-1	10
24	20	7	24	3	7	15	18	4	3	55	24	1	14	16	50	3	18	9	20	10	0	45	27	1	26	47	28	4	24	32	56	9	6	9	41	9	6	12	41	19	53	9	53	-2	28
25	20	11	20	3	8	12	38	4	18	34	47	1	14	58	7	3	20	4	26	10	0	38	51	1	27	55	39	4	24	38	49	9	6	6	30	9	6	12	33	19	40	3	32	-3	34
26	20	15	17	3	9	9	58	5	2	50	31	1	15	39	18	3	21	57	52	10	0	32	8	1	29	3	58	4	24	44	46	9	6	3	19	9	6	12	16	19	27	-2	48	-4	26
27	20	19	13	3	10	7	18	5	16	39	59	1	16	20	24	3	23	49	34	10	0	25	19	2	0	12	22	4	24	50	46	9	6	0	8	9	6	11	55	19	14	-8	49	-4	59
28	20	23	10	3	11	4	39	6	0	3	1	1	17	1	25	3	25	39	35	10	0	18	24	2	1	20	54	4	24	56	49	9	5	56	58	9	6	11	37	19	0	-14	13	-5	16
29	20	27	7	3	12	2	0	6	13	1	24	1	17	42	21	3	27	27	53	10	0	11	23	2	2	29	32	4	25	2	55	9	5	53	47	9	6	11	28	18	46	-18	49	-5	15
30	20	31	3	3	12	59	22	6	25	38	15	1	18	23	11	3	29	14	28	10	0	4	17	2	3	38	16	4	25	9	5	9	5	50	36	9	6	11	35	18	32	-22	27	-5	0
31	20	35	0	3	13	56	45	7	7	57	25	1	19	3	56	4	0	59	22	9	29	57	6	2	4	47	7	4	25	15	17	9	5	47	25	9	6	12	3	18	17	-24	58	-4	30

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अगस्त 2009 ई. को अयनांश 23° 59' 43"

अगस्त	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	20	38	56	3	14	54	7	7	20	3	1	1	19	44	36	4	2	42	34	9	29	49	49	2	5	56	4	4	25	21	33	9	5	44	14	9	6	12	48	18	2	-26	17	-3	49
2	20	42	53	3	15	51	31	8	[illegible]	59	2	1	20	25	11	4	4	24	6	9	29	42	28	2	7	5	8	4	25	27	51	9	5	41	4	9	6	13	45	17	47	-26	22	-2	59
3	20	46	49	3	16	48	55	8	13	49	15	1	21	5	40	4	6	3	57	9	29	35	3	2	8	14	18	4	25	34	13	9	5	37	53	9	6	14	42	17	31	-25	14	-2	1
4	20	50	46	3	17	46	20	8	25	36	58	1	21	46	4	4	7	42	9	9	29	27	34	2	9	23	34	4	25	40	37	9	5	34	42	9	6	15	26	17	16	-22	59	-0	59
5	20	54	42	3	18	43	46	9	7	25	8	1	22	26	23	4	9	18	40	9	29	20	2	2	10	32	56	4	25	47	4	9	5	31	31	9	6	15	45	16	59	-19	44	0	6
6	20	58	39	3	19	41	12	9	19	16	18	1	23	6	36	4	10	53	33	9	29	12	26	2	11	42	25	4	25	53	34	9	5	28	20	9	6	15	27	16	43	-15	42	1	11
7	21	2	36	3	20	38	40	10	1	12	42	1	23	46	44	4	12	26	46	9	29	4	47	2	12	52	0	4	26	0	6	9	5	25	10	9	6	14	28	16	26	-11	1	2	14
8	21	6	32	3	21	36	9	10	13	16	22	1	24	26	47	4	13	58	20	9	28	57	5	2	14	1	41	4	26	6	41	9	5	21	59	9	6	12	46	16	10	-5	53	3	11
9	21	10	29	3	22	33	38	10	25	29	13	1	25	6	44	4	15	28	14	9	28	49	21	2	15	11	28	4	26	13	18	9	5	18	48	9	6	10	32	15	52	-0	29	4	0
10	21	14	25	3	23	31	10	11	7	53	13	1	25	46	35	4	16	56	27	9	28	41	35	2	16	21	21	4	26	19	58	9	5	15	37	9	6	8	2	15	35	5	0	4	38
11	21	18	22	3	24	28	42	11	20	30	24	1	26	26	22	4	18	22	59	9	28	33	47	2	17	31	20	4	26	26	41	9	5	12	27	9	6	5	35	15	17	10	23	5	4
12	21	22	18	3	25	26	16	0	3	22	56	1	27	6	2	4	19	47	48	9	28	25	57	2	18	41	25	4	26	33	26	9	5	9	16	9	6	3	34	15	0	15	26	5	15
13	21	26	15	3	26	23	51	0	16	32	57	1	27	45	38	4	21	10	53	9	28	18	7	2	19	51	36	4	26	40	13	9	5	6	5	9	6	2	19	14	41	19	53	5	10
14	21	30	11	3	27	21	28	1	0	2	22	1	28	25	7	4	22	32	12	9	28	10	16	2	21	1	52	4	26	47	2	9	5	2	54	9	6	1	58	14	23	23	26	4	48
15	21	34	8	3	28	19	6	1	13	52	25	1	29	4	30	4	23	51	42	9	28	2	25	2	22	12	15	4	26	53	54	9	4	59	44	9	6	2	30	14	4	25	43	4	9
16	21	38	5	3	29	16	46	[illegible]	28	3	21	1	29	43	48	4	25	9	21	9	27	54	33	2	23	22	42	4	27	0	48	9	4	56	33	9	6	3	39	13	46	26	26	3	15
17	21	42	1	4	0	14	27	2	12	33	44	2	0	23	0	4	26	25	6	9	27	46	42	2	24	33	16	4	27	7	44	9	4	53	22	9	6	4	59	13	27	25	23	2	6
18	21	45	58	4	1	12	10	2	27	20	10	2	1	2	5	4	27	38	53	9	27	38	52	2	25	43	54	4	27	14	41	9	4	50	11	9	6	5	56	13	7	22	32	0	48
19	21	49	54	4	2	9	54	3	12	17	5	2	1	41	5	4	28	50	38	9	27	31	2	2	26	54	38	4	27	21	41	9	4	47	0	9	6	6	2	12	48	18	9	-0	34
20	21	53	51	4	3	7	40	3	27	17	3	2	2	19	58	5	0	0	17	9	27	23	14	2	28	5	27	4	27	28	43	9	4	43	50	9	6	4	55	12	28	12	37	-1	54
21	21	57	47	4	4	5	27	4	12	11	40	2	2	58	45	5	1	7	45	9	27	15	28	2	29	16	21	4	27	35	47	9	4	40	39	9	6	2	30	12	8	6	22	-3	5
22	22	1	44	4	5	3	15	4	26	52	41	2	3	37	25	5	2	12	56	9	27	7	44	3	0	27	20	4	27	42	52	9	4	37	28	9	5	58	59	11	48	-0	7	-4	3
23	22	5	40	4	6	1	5	5	11	13	16	2	4	15	59	5	3	15	43	9	27	0	3	3	1	38	24	4	27	49	59	9	4	34	17	9	5	54	49	11	28	-6	26	-4	45
24	22	9	37	4	6	58	56	5	25	8	51	2	4	54	27	5	4	16	0	9	26	52	24	3	2	49	33	4	27	57	8	9	4	31	7	9	5	50	34	11	8	-12	14	-5	8
25	22	13	34	4	7	56	49	6	8	37	32	2	5	32	47	5	5	13	38	9	26	44	49	3	4	0	46	4	28	4	18	9	4	27	56	9	5	46	53	10	47	-17	16	-5	13
26	22	17	30	4	8	54	42	6	21	39	54	2	6	11	1	5	6	8	28	9	26	37	17	3	5	12	5	4	28	11	30	9	4	24	45	9	5	44	15	10	26	-21	19	-5	1
27	22	21	27	4	9	52	37	7	4	18	34	2	6	49	8	5	7	0	21	9	26	29	49	3	6	23	27	4	28	18	43	9	4	21	34	9	5	42	56	10	5	-24	15	-4	35
28	22	25	23	4	10	50	33	7	16	37	25	2	7	27	9	5	7	49	6	9	26	22	25	3	7	34	55	4	28	25	58	9	4	18	24	9	5	42	57	9	44	-25	57	-3	57
29	22	29	20	4	11	48	31	7	28	41	11	2	8	5	3	5	8	34	31	9	26	15	6	3	8	46	27	4	28	33	14	9	4	15	13	9	5	44	1	9	23	-26	23	-3	9
30	22	33	16	4	12	46	29	8	10	34	48	2	8	42	49	5	9	16	24	9	26	7	52	3	9	58	3	4	28	40	31	9	4	12	2	9	5	45	38	9	2	-25	35	-2	13
31	22	37	13	4	13	44	29	8	22	23	8	2	9	20	29	5	9	54	30	9	26	0	43	3	11	9	45	4	28	47	49	9	4	8	51	9	5	47	11	8	40	-23	38	-1	13

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 सितंबर 2009 ई. को अयनांश 23° 59' 48"

सितंबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	22	41	9	4	14	[illegible]	31	9	4	10	40	2	9	58	2	5	10	28	35	9	25	53	39	3	12	21	30	4	28	55	8	9	4	5	41	9	5	47	59	8	18	-20	40	-0	9
2	22	45	6	4	15	40	33	9	16	1	20	2	10	35	28	5	10	58	24	9	25	46	42	3	13	33	21	4	29	2	29	9	4	2	30	9	5	47	26	7	57	-16	51	0	55
3	22	49	3	4	16	38	[illegible]	9	27	58	25	2	11	12	47	5	11	23	40	9	25	39	50	3	14	45	15	4	29	9	50	9	3	59	19	9	5	45	8	7	35	-12	20	1	58
4	22	52	59	4	17	36	4[illegible]	10	10	4	27	2	11	49	59	5	11	44	5	9	25	33	4	3	15	57	15	4	29	17	12	9	3	56	9	9	5	40	54	7	13	-7	18	[illegible]	55
5	22	56	56	4	18	34	5[illegible]	10	22	21	12	2	12	27	4	5	11	59	22	9	25	26	26	3	17	9	19	4	29	24	35	9	3	52	58	9	5	34	51	6	50	-1	55	[illegible]	45
6	23	0	52	4	19	33	0	11	4	49	49	2	13	4	2	5	12	9	14	9	25	19	54	3	18	21	27	4	29	31	59	9	3	49	47	9	5	27	28	6	28	3	36	4	26
7	23	4	49	4	20	31	12	11	17	30	51	2	13	40	52	5	12	13	22	9	25	13	29	3	19	33	40	4	29	39	24	9	3	46	36	9	5	19	25	6	6	9	3	4	53
8	23	8	45	4	21	29	25	0	0	24	33	2	14	17	35	5	12	11	31	9	25	7	11	3	20	45	57	4	29	46	50	9	3	43	26	9	5	11	34	5	43	14	13	5	7
9	23	12	42	4	22	27	39	0	13	31	2	2	14	54	11	5	12	3	24	9	25	1	1	3	21	58	19	4	29	54	16	9	3	40	15	9	5	4	49	5	21	18	49	5	5
10	23	16	38	4	23	25	56	0	26	50	29	2	15	30	39	5	11	48	51	9	24	54	59	3	23	10	45	5	0	1	42	9	3	37	4	9	4	59	49	4	58	22	33	4	46
11	23	20	35	4	24	24	16	1	10	23	13	2	16	6	59	5	11	27	43	9	24	49	5	3	24	23	16	5	0	9	9	9	3	33	53	9	4	56	56	4	35	25	8	4	11
12	23	24	32	4	25	22	37	1	24	9	36	2	16	43	12	5	10	59	57	9	24	43	19	3	25	35	51	5	0	16	37	9	3	30	43	9	4	56	1	4	12	26	16	3	22
13	23	28	28	4	26	21	0	2	8	9	49	2	17	19	17	5	10	25	37	9	24	37	42	3	26	48	30	5	0	24	5	9	3	27	32	9	4	56	32	3	49	25	44	2	19
14	23	32	25	4	27	19	25	2	22	23	28	2	17	55	13	5	9	44	56	9	24	32	14	3	28	1	13	5	0	31	34	9	3	24	21	9	4	57	33	3	26	23	33	1	7
15	23	36	21	4	28	17	53	3	6	49	6	2	18	31	2	5	8	58	16	9	24	26	55	3	29	14	1	5	0	39	2	9	3	21	10	9	4	58	0	3	3	19	49	-0	10
16	23	40	18	4	29	16	22	3	21	23	46	2	19	6	42	5	8	6	11	9	24	21	45	4	0	26	52	5	0	46	31	9	3	18	0	9	4	56	52	2	40	14	50	-1	27
17	23	44	14	5	0	14	54	4	6	2	48	2	19	42	13	5	7	9	26	9	24	16	44	4	1	39	47	5	0	54	0	9	3	14	49	9	4	53	29	2	17	8	59	-2	39
18	23	48	11	5	1	13	28	4	20	40	5	2	20	17	36	5	6	9	2	9	24	11	54	4	2	52	47	5	1	1	29	9	3	11	38	9	4	47	40	1	54	2	40	-3	40
19	23	52	7	5	2	12	3	5	5	8	39	2	20	52	50	5	5	6	8	9	24	7	13	4	4	5	49	5	1	8	58	9	3	8	27	9	4	39	42	1	31	-3	43	-4	26
20	23	56	4	5	3	10	41	5	19	21	51	2	21	27	55	5	4	2	7	9	24	2	42	4	5	18	56	5	1	16	27	9	3	5	17	9	4	30	22	1	7	-9	47	-4	54
21	0	0	1	5	4	9	21	6	3	14	20	2	22	2	51	5	2	58	28	9	23	58	22	4	6	32	6	5	1	23	56	9	3	2	6	9	4	20	42	0	44	-15	13	-5	5
22	0	3	57	5	5	8	2	6	16	42	49	2	22	37	38	5	1	56	47	9	23	54	12	4	7	45	19	5	1	31	25	9	2	58	55	9	4	11	45	0	21	-19	45	-4	58
23	0	7	54	5	6	6	45	6	29	46	28	2	23	12	15	5	0	58	38	9	23	50	12	4	8	58	36	5	1	38	53	9	2	55	45	9	4	4	24	-0	3	-23	9	-4	35
24	0	11	50	5	7	5	30	7	12	26	41	2	23	46	43	5	0	5	33	9	23	46	24	4	10	11	57	5	1	46	21	9	2	52	34	9	3	59	13	-0	26	-25	19	-3	59
25	0	15	47	5	8	4	17	7	24	46	40	2	24	21	1	4	29	18	57	9	23	42	46	4	11	25	20	5	1	53	49	9	2	49	23	9	3	56	16	-0	49	-26	10	-3	[illegible]
26	0	19	43	5	9	3	5	8	6	50	49	2	24	55	9	4	28	40	3	9	23	39	19	4	12	38	47	5	2	1	16	9	2	46	12	9	3	55	14	-1	13	-25	46	-2	19
27	0	23	40	5	10	1	55	8	18	44	19	2	25	29	8	4	28	9	51	9	23	36	4	4	13	52	17	5	2	8	42	9	2	43	2	9	3	55	22	-1	36	-24	10	-1	20
28	0	27	36	5	11	0	47	9	0	32	37	2	26	2	57	4	27	49	7	9	23	32	59	4	15	5	50	5	2	16	8	9	2	39	51	9	3	55	46	-1	59	-21	31	-0	18
29	0	31	33	5	11	59	40	9	12	21	6	2	26	36	36	4	27	38	22	9	23	30	6	4	16	19	27	5	2	23	33	9	2	36	40	9	3	55	24	-2	23	-17	58	0	45
30	0	35	30	5	12	58	35	9	24	14	41	2	27	10	5	4	27	37	51	9	23	27	25	4	17	33	6	5	2	30	58	9	2	33	29	9	3	53	21	-2	46	-13	41	1	46

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अक्तूबर 2009 ई. को अयनांश 23° 59' 51"

अक्तूबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घ. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा.अं. क. वि.	रा.अं. क. वि.	रा.अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	0 39 26	5 13 57 32	10 6 17 38	2 27 43 23	4 27 47 36	9 23 24 55	4 18 46 48	5 2 38 21	9 2 30 19	9 3 48 56	-3 9	-8 49	2 43
2	0 43 23	5 14 56 31	10 19 33 18	2 28 16 31	4 28 7 28	9 23 22 36	4 20 0 34	5 2 45 44	9 2 27 8	9 3 41 51	-3 33	-3 33	3 34
3	0 47 19	5 15 55 32	11 1 3 51	2 28 49 29	4 28 37 6	9 23 20 29	4 21 14 23	5 2 53 6	9 2 23 57	9 3 32 13	-3 56	1 56	4 15
4	0 51 16	5 16 54 34	11 13 50 18	2 29 22 16	4 29 16 1	9 23 18 34	4 22 28 15	5 3 0 27	9 2 20 46	9 3 20 38	-4 19	7 27	4 44
5	0 55 12	5 17 53 39	11 26 52 23	2 29 54 52	5 0 3 37	9 23 16 50	4 23 42 9	5 3 7 46	9 2 17 36	9 3 8 4	-4 42	12 46	4 59
6	0 59 9	5 18 52 46	0 10 8 49	3 0 27 17	5 0 59 14	9 23 15 18	4 24 56 7	5 3 15 5	9 2 14 25	9 2 55 43	-5 5	17 35	4 59
7	1 3 5	5 19 51 55	0 23 37 37	3 0 59 31	5 2 2 9	9 23 13 58	4 26 10 8	5 3 22 22	9 2 11 14	9 2 44 46	-5 28	21 35	4 42
8	1 7 2	5 20 51 6	1 7 16 35	3 1 31 34	5 3 11 37	9 23 12 50	4 27 24 12	5 3 29 39	9 2 8 3	9 2 36 13	-5 51	24 28	4 8
9	1 10 59	5 21 50 20	1 21 3 44	3 2 3 25	5 4 26 52	9 23 11 54	4 28 38 19	5 3 36 53	9 2 4 53	9 2 30 32	-6 14	25 55	3 20
10	1 14 55	5 22 49 35	2 4 57 36	3 2 35 5	5 5 47 13	9 23 11 9	4 29 52 28	5 3 44 7	9 2 1 42	9 2 27 38	-6 37	25 46	2 20
11	1 18 52	5 23 48 53	2 18 57 16	3 3 6 32	5 7 11 56	9 23 10 37	5 1 6 41	5 3 51 19	9 1 58 31	9 2 26 50	-6 59	23 59	1 11
12	1 22 48	5 24 48 14	3 3 2 9	3 3 37 47	5 8 40 24	9 23 10 17	5 2 20 56	5 3 58 29	9 1 55 21	9 2 26 55	-7 22	20 42	-0 3
13	1 26 45	5 25 47 36	3 17 11 35	3 4 8 50	5 10 12 1	9 23 10 8	5 3 35 14	5 4 5 38	9 1 52 10	9 2 26 33	-7 44	16 11	-1 17
14	1 30 41	5 26 47 1	4 1 24 21	3 4 39 40	5 11 46 14	9 23 10 12	5 4 49 34	5 4 12 46	9 1 48 59	9 2 24 24	-8 7	10 45	-2 27
15	1 34 38	5 27 46 29	4 15 38 13	3 5 10 16	5 13 22 35	9 23 10 28	5 6 3 58	5 4 19 51	9 1 45 48	9 2 19 36	-8 29	4 46	-3 27
16	1 38 34	5 28 45 58	4 29 49 48	3 5 40 39	5 15 0 39	9 23 10 55	5 7 18 23	5 4 26 55	9 1 42 38	9 2 11 47	-8 51	-1 26	-4 14
17	1 42 31	5 29 45 30	5 13 54 45	3 6 10 49	5 16 40 3	9 23 11 35	5 8 32 51	5 4 33 57	9 1 39 27	9 2 1 17	-9 13	-7 31	-4 46
18	1 46 28	6 0 45 4	5 27 48 15	3 6 40 45	5 18 20 28	9 23 12 27	5 9 47 21	5 4 40 57	9 1 36 16	9 1 48 58	-9 35	-13 7	-4 59
19	1 50 24	6 1 44 40	6 11 25 55	3 7 10 26	5 20 1 38	9 23 13 31	5 11 1 54	5 4 47 55	9 1 33 5	9 1 36 3	-9 57	-17 59	-4 56
20	1 54 21	6 2 44 17	6 24 44 25	3 7 39 53	5 21 43 19	9 23 14 47	5 12 16 28	5 4 54 51	9 1 29 55	9 1 23 49	-10 19	-21 49	-4 36
21	1 58 17	6 3 43 57	7 7 42 11	3 8 9 5	5 23 25 19	9 23 16 15	5 13 31 5	5 5 1 45	9 1 26 44	9 1 13 24	-10 40	-24 27	-4 2
22	2 2 14	6 4 43 39	7 20 19 27	3 8 38 2	5 25 7 29	9 23 17 55	5 14 45 43	5 5 8 36	9 1 23 33	9 1 5 31	-11 1	-25 47	-3 17
23	2 6 10	6 5 43 22	8 2 38 17	3 9 6 44	5 26 49 39	9 23 19 47	5 16 0 24	5 5 15 25	9 1 20 22	9 1 0 24	-11 22	-25 48	-2 24
24	2 10 7	6 6 43 8	8 14 42 8	3 9 35 10	5 28 31 43	9 23 21 51	5 17 15 6	5 5 22 12	9 1 17 12	9 0 57 46	-11 43	-24 34	-1 25
25	2 14 3	6 7 42 55	8 26 35 34	3 10 3 20	6 0 13 36	9 23 24 7	5 18 29 50	5 5 28 56	9 1 14 1	9 0 56 54	-12 4	-22 15	-0 23
26	2 18 0	6 8 42 43	9 8 23 51	3 10 31 15	6 1 55 14	9 23 26 34	5 19 44 36	5 5 35 38	9 1 10 50	9 0 56 49	-12 25	-18 59	0 39
27	2 21 57	6 9 42 34	9 20 12 32	3 10 58 53	6 3 36 33	9 23 29 13	5 20 59 23	5 5 42 17	9 1 7 39	9 0 56 25	-12 45	-14 58	1 40
28	2 25 53	6 10 42 26	10 2 7 10	3 11 26 14	6 5 17 30	9 23 32 4	5 22 14 12	5 5 48 53	9 1 4 28	9 0 54 38	-13 5	-10 21	2 37
29	2 29 50	6 11 42 19	10 14 12 54	3 11 53 19	6 6 58 4	9 23 35 7	5 23 29 3	5 5 55 27	9 1 1 18	9 0 50 40	-13 25	-5 16	3 28
30	2 33 46	6 12 42 14	10 26 34 6	3 12 20 6	6 8 38 13	9 23 38 21	5 24 43 55	5 6 1 58	9 0 58 7	9 0 44 5	-13 45	0 6	4 10
31	2 37 43	6 13 42 11	11 9 14 0	3 12 46 36	6 10 17 57	9 23 41 46	5 25 58 49	5 6 8 26	9 0 54 56	9 0 34 55	-14 5	5 35	4 41

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 नवंबर 2009 ई. को अयनांश 23° 59' 54"

30	2 33 46	6 12 42 14	10 26 34 6	3 12 20 6	[illegible]	[illegible]	5 23 29 3	5 5 55 27	9 1 1 18	9 0 50 40	-13 25	-5 16	3 28
31	2 37 43	6 13 42 11	11 9 14 0	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	9 0 44 5	-13 45	0 6	4 10
				3 12 46 36	6 10 17 57	9 23 41 46	5 25 58 49	5 6 8 26	9 0 54 56	9 0 34 55	-14 5	5 35	4 41

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 नवंबर 2009 ई. को अयनांश 23° 59' 54"

नवंबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घ. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा.अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	2 41 39	6 14 42 10	11 22 14 21	3 13 12 49	6 11 57 14	9 23 45 23	5 27 13 44	5 6 14 51	9 0 51 45	9 0 23 42	-14 24	10 58	4 58
2	2 45 36	6 15 42 11	0 5 35 8	3 13 38 43	6 13 36 4	9 23 49 10	5 28 28 41	5 6 21 13	9 0 48 35	9 0 11 22	-14 43	16 0	5 0
3	2 49 32	6 16 42 13	0 19 14 33	3 14 4 19	6 15 14 28	9 23 53 9	5 29 43 39	5 6 27 32	9 0 45 24	8 29 59 6	-15 2	20 20	4 45
4	2 53 29	6 17 42 17	1 3 9 10	3 14 29 36	6 16 52 25	9 23 57 20	6 0 58 39	5 6 33 48	9 0 42 13	8 29 48 8	-15 21	23 37	4 13
5	2 57 26	6 18 42 23	1 17 14 35	3 14 54 33	6 18 29 57	9 24 1 41	6 2 13 40	5 6 40 1	9 0 39 2	8 29 39 27	-15 39	25 30	3 24
6	3 1 22	6 19 42 31	2 1 26 11	3 15 19 12	6 20 7 4	9 24 6 13	6 3 28 43	5 6 46 11	9 0 35 52	8 29 33 38	-15 57	25 45	2 23
7	3 5 19	6 20 42 42	2 15 39 49	3 15 43 30	6 21 43 46	9 24 10 56	6 4 43 48	5 6 52 17	9 0 32 41	8 29 30 38	-16 15	24 18	1 13
8	3 9 15	6 21 42 54	2 29 52 22	3 16 7 27	6 23 20 5	9 24 15 49	6 5 58 54	5 6 58 20	9 0 29 30	8 29 29 51	-16 33	21 18	-0 2
9	3 13 12	6 22 43 8	3 14 1 46	3 16 31 3	6 24 56 1	9 24 20 54	6 7 14 1	5 7 4 20	9 0 26 19	8 29 30 13	-16 50	17 2	-1 17
10	3 17 8	6 23 43 24	3 28 6 48	3 16 54 18	6 26 31 35	9 24 26 9	6 8 29 10	5 7 10 16	9 0 23 8	8 29 30 25	-17 7	11 50	-2 26
11	3 21 5	6 24 43 42	4 12 6 45	3 17 17 11	6 28 6 48	9 24 31 34	6 9 44 19	5 7 16 8	9 0 19 58	8 29 29 14	-17 24	6 4	-3 27
12	3 25 1	6 25 44 2	4 26 0 48	3 17 39 41	6 29 41 42	9 24 37 10	6 10 59 31	5 7 21 57	9 0 16 47	8 29 25 45	-17 40	0 3	-4 14
13	3 28 58	6 26 44 24	5 9 47 48	3 18 1 48	7 1 16 17	9 24 42 57	6 12 14 43	5 7 27 41	9 0 13 36	8 29 19 38	-17 56	-5 54	-4 47
14	3 32 55	6 27 44 48	5 23 26 6	3 18 23 32	7 2 50 33	9 24 48 53	6 13 29 57	5 7 33 23	9 0 10 25	8 29 11 4	-18 12	-11 30	-5 2
15	3 36 51	6 28 45 14	6 6 53 38	3 18 44 51	7 4 24 33	9 24 55 0	6 14 45 11	5 7 39 0	9 0 7 14	8 29 0 48	-18 28	-16 29	-5 1
16	3 40 48	6 29 45 42	6 20 8 13	3 19 5 45	7 5 58 16	9 25 1 18	6 16 0 27	5 7 44 33	9 0 4 4	8 28 49 52	-18 43	-20 35	-4 44
17	3 44 44	7 0 46 11	7 3 8 1	3 19 26 15	7 7 31 45	9 25 7 45	6 17 15 44	5 7 50 2	9 0 0 53	8 28 39 26	-18 58	-23 36	-4 11
18	3 48 41	7 1 46 42	7 15 51 56	3 19 46 18	7 9 4 58	9 25 14 22	6 18 31 1	5 7 55 27	8 29 57 42	8 28 30 31	-19 12	-25 21	-3 27
19	3 52 37	7 2 47 14	7 28 19 57	3 20 5 55	7 10 37 58	9 25 21 9	6 19 46 19	5 8 0 48	8 29 54 31	8 28 23 48	-19 26	-25 46	-2 34
20	3 56 34	7 3 47 48	8 10 33 15	3 20 25 5	7 12 10 45	9 25 28 5	6 21 1 38	5 8 6 5	8 29 51 20	8 28 19 35	-19 40	-24 56	-1 34
21	4 0 30	7 4 48 23	8 22 34 12	3 20 43 47	7 13 43 19	9 25 35 12	6 22 16 58	5 8 11 17	8 29 48 10	8 28 17 44	-19 54	-22 55	-0 31
22	4 4 27	7 5 49 0	9 4 26 17	3 21 2 2	7 15 15 41	9 25 42 27	6 23 32 18	5 8 16 25	8 29 44 59	8 28 17 42	-20 7	-19 56	0 33
23	4 8 24	7 6 49 38	9 16 13 48	3 21 19 48	7 16 47 51	9 25 49 52	6 24 47 39	5 8 21 28	8 29 41 48	8 28 18 44	-20 19	-16 9	1 35
24	4 12 20	7 7 50 16	9 28 1 42	3 21 37 5	7 18 19 50	9 25 57 27	6 26 3 1	5 8 26 27	8 29 38 37	8 28 19 56	-20 32	-11 45	2 33
25	4 16 17	7 8 50 56	10 9 55 17	3 21 53 53	7 19 51 37	9 26 5 10	6 27 18 22	5 8 31 21	8 29 35 26	8 28 20 24	-20 44	-6 53	3 26
26	4 20 13	7 9 51 37	10 21 59 55	3 22 10 10	7 21 23 13	9 26 13 3	6 28 33 45	5 8 36 11	8 29 32 16	8 28 19 27	-20 55	-1 41	4 9
27	4 24 10	7 10 52 19	11 4 20 41	3 22 25 57	7 22 54 36	9 26 21 4	6 29 49 8	5 8 40 56	8 29 29 5	8 28 16 38	-21 6	3 40	4 43
28	4 28 6	7 11 53 2	11 17 1 54	3 22 41 12	7 24 25 46	9 26 29 14	7 1 4 31	5 8 45 36	8 29 25 54	8 28 11 53	-21 17	9 1	5 3
29	4 32 3	7 12 53 46	0 0 6 40	3 22 55 56	7 25 56 42	9 26 37 33	7 2 19 55	5 8 50 11	8 29 22 43	8 28 5 31	-21 28	14 8	5 9
30	4 35 59	7 13 54 32	0 13 36 19	3 23 10 7	7 27 27 23	9 26 46 1	7 3 35 19	5 8 54 42	8 29 19 32	8 27 58 10	-21 38	18 44	4 58

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 दिसंबर 2009 ई. को अयनांश 23° 59' 59"

दिसंबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घ. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	4 39 56	7 14 55 18	0 27 29 58	3 23 23 45	7 28 57 48	9 26 54 37	7 4 50 43	5 8 59 7	8 29 16 22	8 27 50 40	-21 47	22 28	4 29
2	4 43 53	7 15 56 5	1 11 44 25	3 23 36 49	8 0 27 54	9 27 3 21	7 6 6 8	5 9 3 28	8 29 13 11	8 27 43 55	-21 56	24 55	3 43
3	4 47 49	7 16 56 54	1 26 14 25	3 23 49 19	8 1 57 39	9 27 12 13	7 7 21 34	5 9 7 43	8 29 10 0	8 27 38 41	-22 5	25 46	2 42
4	4 51 46	7 17 57 44	2 10 53 21	3 24 1 13	8 3 26 59	9 27 21 13	7 8 37 0	5 9 11 54	8 29 6 49	8 27 35 23	-22 13	24 50	1 30
5	4 55 42	7 18 58 35	2 25 34 19	3 24 12 32	8 4 55 51	9 27 30 22	7 9 52 27	5 9 15 59	8 29 3 38	8 27 34 5	-22 21	22 11	0 11
6	4 59 39	7 19 59 27	3 10 11 2	3 24 23 14	8 6 24 10	9 27 39 38	7 11 7 54	5 9 19 59	8 29 0 28	8 27 34 25	-22 29	18 6	-1 8
7	5 3 35	7 21 0 21	3 24 38 39	3 24 33 18	8 7 51 51	9 27 49 3	7 12 23 21	5 9 23 54	8 28 57 17	8 27 35 40	-22 36	12 59	-2 22
8	5 7 32	7 22 1 15	4 8 53 54	3 24 42 44	8 9 18 47	9 27 58 35	7 13 38 49	5 9 27 43	8 28 54 6	8 27 37 2	-22 42	7 14	-3 26
9	5 11 28	7 23 2 11	4 22 55 4	3 24 51 31	8 10 44 50	9 28 8 14	7 14 54 17	5 9 31 27	8 28 50 55	8 27 37 40	-22 48	1 13	-4 17
10	5 15 25	7 24 3 9	5 6 41 34	3 24 59 38	8 12 9 51	9 28 18 1	7 16 9 46	5 9 35 6	8 28 47 44	8 27 36 59	-22 54	-4 44	-4 52
11	5 19 22	7 25 4 7	5 20 13 29	3 25 7 5	8 13 33 39	9 28 27 56	7 17 25 16	5 9 38 38	8 28 44 33	8 27 34 44	-22 59	-10 22	-5 10
12	5 23 18	7 26 5 7	6 3 31 15	3 25 13 50	8 14 56 1	9 28 37 58	7 18 40 45	5 9 42 6	8 28 41 23	8 27 31 1	-23 4	-15 25	-5 11
13	5 27 15	7 27 6 7	6 16 35 22	3 25 19 52	8 16 16 44	9 28 48 7	7 19 56 15	5 9 45 27	8 28 38 12	8 27 26 13	-23 8	-19 40	-4 55
14	5 31 11	7 28 7 9	6 29 26 16	3 25 25 12	8 17 35 28	9 28 58 23	7 21 11 46	5 9 48 43	8 28 35 1	8 27 20 59	-23 12	-22 55	-4 25
15	5 35 8	7 29 8 12	7 12 4 24	3 25 29 49	8 18 51 55	9 29 8 46	7 22 27 16	5 9 51 54	8 28 31 50	8 27 15 58	-23 16	-24 58	-3 43
16	5 39 4	8 0 9 15	7 24 30 19	3 25 33 41	8 20 5 42	9 29 19 16	7 23 42 47	5 9 54 58	8 28 28 39	8 27 11 45	-23 19	-25 46	-2 50
17	5 43 1	8 1 10 19	8 6 44 46	3 25 36 48	8 21 16 20	9 29 29 53	7 24 58 18	5 9 57 56	8 28 25 29	8 27 8 45	-23 21	-25 16	-1 50
18	5 46 57	8 2 11 24	8 18 48 59	3 25 39 10	8 22 23 21	9 29 40 37	7 26 13 49	5 10 0 49	8 28 22 18	8 27 7 10	-23 23	-23 35	-0 46
19	5 50 54	8 3 12 30	9 0 44 44	3 25 40 46	8 23 26 9	9 29 51 27	7 27 29 20	5 10 3 35	8 28 19 7	8 27 6 55	-23 25	-20 51	0 20
20	5 54 51	8 4 13 36	9 12 34 27	3 25 41 35	8 24 24 6	10 0 2 24	7 28 44 51	5 10 6 16	8 28 15 56	8 27 7 46	-23 26	-17 16	1 24
21	5 58 47	8 5 14 42	9 24 21 15	3 25 41 38	8 25 16 28	10 0 13 27	8 0 0 23	5 10 8 50	8 28 12 45	8 27 9 18	-23 26	-13 2	2 25
22	6 2 44	8 6 15 48	10 6 8 53	3 25 40 53	8 26 2 30	10 0 24 37	8 1 15 54	5 10 11 19	8 28 9 34	8 27 11 4	-23 26	-8 18	3 19
23	6 6 40	8 7 16 55	10 18 1 37	3 25 39 20	8 26 41 19	10 0 35 52	8 2 31 25	5 10 13 41	8 28 6 24	8 27 12 38	-23 26	-3 16	4 6
24	6 10 37	8 8 18 2	11 0 4 7	3 25 37 0	8 27 12 3	10 0 47 13	8 3 46 55	5 10 15 57	8 28 3 13	8 27 13 38	-23 25	1 58	4 42
25	6 14 33	8 9 19 9	11 12 21 15	3 25 33 51	8 27 33 47	10 0 58 41	8 5 2 26	5 10 18 7	8 28 0 2	8 27 13 51	-23 24	7 12	5 6
26	6 18 30	8 10 20 16	11 24 57 41	3 25 29 53	8 27 45 39	10 1 10 14	8 6 17 56	5 10 20 10	8 27 56 51	8 27 13 14	-23 22	12 18	5 16
27	6 22 26	8 11 21 23	0 7 57 28	3 25 25 7	8 27 46 49	10 1 21 53	8 7 33 27	5 10 22 7	8 27 53 40	8 27 11 54	-23 20	17 1	5 11
28	6 26 23	8 12 22 31	0 21 23 30	3 25 19 32	8 27 36 39	10 1 33 37	8 8 48 57	5 10 23 58	8 27 50 29	8 27 10 8	-23 17	21 3	4 49
29	6 30 20	8 13 23 38	1 5 16 52	3 25 13 8	8 27 14 44	10 1 45 26	8 10 4 27	5 10 25 43	8 27 47 19	8 27 8 14	-23 14	24 3	4 9
30	6 34 16	8 14 24 45	1 19 36 15	3 25 5 54	8 26 40 57	10 1 57 21	8 11 19 57	5 10 27 22	8 27 44 8	8 27 6 34	-23 10	25 38	3 13
31	6 38 13	8 15 25 53	2 4 17 40	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जनवरी 2010 ई. को अयनांश 24° 0' 5"

जनवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घ. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	6 42 9	8 16 27 0	2 19 14 38	3 24 49 0	8 24 59 38	10 2 21 27	8 13 50 56	5 10 30 19	8 27 37 46	8 27 4 46	-23 2	23 30	0 43
2	6 46 6	8 17 28 8	3 4 18 52	3 24 39 20	8 23 54 15	10 2 33 37	8 15 6 26	5 10 31 39	8 27 34 35	8 27 4 46	-22 57	19 51	-0 40
3	6 50 2	8 18 29 16	3 19 21 27	3 24 28 50	8 22 41 21	10 2 45 53	8 16 21 55	5 10 32 52	8 27 31 25	8 27 5 11	-22 51	14 53	-2 1
4	6 53 59	8 19 30 24	4 4 14 6	3 24 17 32	8 21 23 12	10 2 58 13	8 17 37 24	5 10 33 58	8 27 28 14	8 27 5 50	-22 45	9 5	-3 12
5	6 57 55	8 20 31 32	4 18 50 17	3 24 5 26	8 20 2 23	10 3 10 38	8 18 52 54	5 10 34 58	8 27 25 3	8 27 6 29	-22 39	2 53	-4 10
6	7 1 52	8 21 32 40	5 3 5 43	3 23 52 32	8 18 41 32	10 3 23 8	8 20 8 23	5 10 35 51	8 27 21 52	8 27 6 57	-22 32	-3 17	-4 51
7	7 5 49	8 22 33 49	5 16 58 29	3 23 38 50	8 17 23 14	10 3 35 43	8 21 23 52	5 10 36 38	8 27 18 41	8 27 7 9	-22 25	-9 8	-5 13
8	7 9 45	8 23 34 57	6 0 28 40	3 23 24 23	8 16 9 47	10 3 48 22	8 22 39 21	5 10 37 18	8 27 15 30	8 27 7 6	-22 17	-14 24	-5 17
9	7 13 42	8 24 36 6	6 13 37 42	3 23 9 9	8 15 3 6	10 4 1 5	8 23 54 50	5 10 37 52	8 27 12 20	8 27 6 55	-22 9	-18 51	-5 5
10	7 17 38	8 25 37 15	6 26 27 53	3 22 53 11	8 14 4 38	10 4 13 53	8 25 10 19	5 10 38 19	8 27 9 9	8 27 6 41	-22 0	-22 19	-4 37
11	7 21 35	8 26 38 24	7 9 1 55	3 22 36 30	8 13 15 20	10 4 26 45	8 26 25 48	5 10 38 40	8 27 5 58	8 27 6 32	-21 51	-24 38	-3 57
12	7 25 31	8 27 39 33	7 21 22 31	3 22 19 6	8 12 35 44	10 4 39 41	8 27 41 17	5 10 38 54	8 27 2 47	8 27 6 30	-21 42	-25 43	-3 6
13	7 29 28	8 28 40 42	8 3 32 15	3 22 1 1	8 12 6 0	10 4 52 41	8 28 56 45	5 10 39 1	8 26 59 36	8 27 6 35	-21 32	-25 32	-2 7
14	7 33 24	8 29 41 50	8 15 33 26	3 21 42 18	8 11 46 0	10 5 5 46	9 0 12 14	5 10 39 2	8 26 56 26	8 27 6 42	-21 22	-24 9	-1 4
15	7 37 21	9 0 42 58	8 27 28 13	3 21 22 56	8 11 35 22	10 5 18 54	9 1 27 42	5 10 38 56	8 26 53 15	8 27 6 45	-21 11	-21 42	0 2
16	7 41 18	9 1 44 6	9 9 18 35	3 21 3 0	8 11 33 37	10 5 32 6	9 2 43 10	5 10 38 44	8 26 50 4	8 27 6 35	-21 0	-18 19	1 7
17	7 45 14	9 2 45 14	9 21 6 34	3 20 42 29	8 11 40 9	10 5 45 21	9 3 58 37	5 10 38 25	8 26 46 53	8 27 6 8	-20 48	-14 14	2 9
18	7 49 11	9 3 46 20	10 2 54 22	3 20 21 28	8 11 54 21	10 5 58 40	9 5 14 4	5 10 38 0	8 26 43 42	8 27 5 21	-20 36	-9 38	3 6
19	7 53 7	9 4 47 26	10 14 44 28	3 19 59 57	8 12 15 35	10 6 12 3	9 6 29 30	5 10 37 28	8 26 40 32	8 27 4 17	-20 24	-4 40	3 55
20	7 57 4	9 5 48 32	10 26 39 46	3 19 38 0	8 12 43 13	10 6 25 29	9 7 44 56	5 10 36 49	8 26 37 21	8 27 3 3	-20 11	0 30	4 34
21	8 1 0	9 6 49 36	11 8 43 35	3 19 15 38	8 13 16 41	10 6 38 58	9 9 0 21	5 10 36 4	8 26 34 10	8 27 1 50	-19 58	5 41	5 1
22	8 4 57	9 7 50 40	11 20 59 36	3 18 52 54	8 13 55 25	10 6 52 30	9 10 15 46	5 10 35 13	8 26 30 59	8 27 0 51	-19 45	10 45	5 15
23	8 8 53	9 8 51 42	0 3 31 48	3 18 29 52	8 14 38 55	10 7 6 5	9 11 31 10	5 10 34 15	8 26 27 48	8 27 0 19	-19 31	15 29	5 15
24	8 12 50	9 9 52 44	0 16 24 6	3 18 6 33	8 15 26 44	10 7 19 44	9 12 46 34	5 10 33 11	8 26 24 38	8 27 0 21	-19 17	19 40	4 59
25	8 16 47	9 10 53 44	0 29 40 2	3 17 43 0	8 16 18 26	10 7 33 25	9 14 1 56	5 10 32 0	8 26 21 27	8 27 0 58	-19 2	23 0	4 27
26	8 20 43	9 11 54 43	1 13 22 11	3 17 19 16	8 17 13 40	10 7 47 9	9 15 17 19	5 10 30 44	8 26 18 16	8 27 2 0	-18 48	25 9	3 39
27	8 24 40	9 12 55 42	1 27 31 31	3 16 55 23	8 18 12 4	10 8 0 55	9 16 32 40	5 10 29 21	8 26 15 5	8 27 3 12	-18 32	25 46	2 37
28	8 28 36	9 13 56 39	2 12 6 38	3 16 31 25	8 19 13 23	10 8 14 44	9 17 48 1	5 10 27 51	8 26 11 54	8 27 4 11	-18 17	24 40	1 22
29	8 32 33	9 14 57 36	2 27 3 18	3 16 7 24	8 20 17 19	10 8 28 36	9 19 3 21	5 10 26 16	8 26 8 44	8 27 4 34	-18 1	21 48	0 0
30	8 36 29	9 15 58 31	3 12 14 26	3 15 43 22	8 21 23 39	10 8 42 30	9 20 18 40	5 10 24 35	8 26 5 33	8 27 4 3	-17 45	17 22	-1 23
31	8 40 26	9 16 59 25	3 27 30 40	3 15 19 24	8 22 32 10	10 8 56 27	9 21 33 59	5 10 22 47	8 26 2 22	8 27 2 34	-17 28	11 48	-2 40

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 फरवरी 2010 ई. को अयनांश 24° 0' 10"

फरवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घ. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	8 44 22	9 18 0 19	4 12 41 44	3 14 55 30	8 23 42 43	10 9 10 25	9 22 49 17	5 10 20 54	8 25 59 11	8 27 0 11	-17 11	5 33	- 3 46
2	8 48 19	9 19 1 11	4 27 38 3	3 14 31 44	8 24 55 7	10 9 24 26	9 24 4 35	5 10 18 54	8 25 56 0	8 26 57 14	-16 54	- 0 54	- 4 35
3	8 52 16	9 20 2 3	5 12 12 7	3 14 8 9	8 26 9 14	10 9 38 29	9 25 19 51	5 10 16 49	8 25 52 50	8 26 54 13	-16 37	- 7 8	- 5 5
4	8 56 12	9 21 2 53	5 26 19 25	3 13 44 47	8 27 24 57	10 9 52 35	9 26 35 8	5 10 14 38	8 25 49 39	8 26 51 37	-16 19	-12 48	- 5 15
5	9 0 9	9 22 3 43	6 9 58 27	3 13 21 40	8 28 42 9	10 10 6 42	9 27 50 23	5 10 12 21	8 25 46 28	8 26 49 53	-16 1	-17 39	- 5 7
6	9 4 5	9 23 4 32	6 23 10 21	3 12 58 52	9 0 0 46	10 10 20 51	9 29 5 38	5 10 9 58	8 25 43 17	8 26 49 17	-15 43	-21 28	- 4 43
7	9 8 2	9 24 5 20	7 5 58 1	3 12 36 25	9 1 20 43	10 10 35 2	10 0 20 53	5 10 7 30	8 25 40 7	8 26 49 49	-15 24	-24 8	- 4 5
8	9 11 58	9 25 6 8	7 18 25 27	3 12 14 20	9 2 41 55	10 10 49 15	10 1 36 6	5 10 4 56	8 25 36 56	8 26 51 13	-15 6	-25 31	- 3 16
9	9 15 55	9 26 6 54	8 0 36 59	3 11 52 42	9 4 4 18	10 11 3 29	10 2 51 20	5 10 2 16	8 25 33 45	8 26 53 2	-14 47	-25 39	- 2 20
10	9 19 51	9 27 7 39	8 12 36 58	3 11 31 31	9 5 27 50	10 11 17 45	10 4 6 32	5 9 59 31	8 25 30 34	8 26 54 41	-14 27	-24 34	- 1 18
11	9 23 48	9 28 8 23	8 24 29 23	3 11 10 50	9 6 52 27	10 11 32 2	10 5 21 44	5 9 56 41	8 25 27 24	8 26 55 31	-14 8	-22 23	- 0 13
12	9 27 45	9 29 9 6	9 6 17 43	3 10 50 42	9 8 18 8	10 11 46 21	10 6 36 54	5 9 53 45	8 25 24 13	8 26 55 3	-13 48	-19 15	0 51
13	9 31 41	10 0 9 48	9 18 4 53	3 10 31 7	9 9 44 50	10 12 0 42	10 7 52 4	5 9 50 45	8 25 21 2	8 26 52 54	-13 28	-15 21	1 53
14	9 35 38	10 1 10 28	9 29 53 18	3 10 12 8	9 11 12 31	10 12 15 3	10 9 7 13	5 9 47 39	8 25 17 51	8 26 48 58	-13 8	-10 52	2 50
15	9 39 34	10 2 11 7	10 11 44 56	3 9 53 48	9 12 41 12	10 12 29 26	10 10 22 22	5 9 44 28	8 25 14 40	8 26 43 26	-12 47	- 5 59	3 40
16	9 43 31	10 3 11 44	10 23 41 29	3 9 36 6	9 14 10 49	10 12 43 49	10 11 37 29	5 9 41 12	8 25 11 30	8 26 36 42	-12 27	- 0 51	4 21
17	9 47 27	10 4 12 20	11 5 44 38	3 9 19 5	9 15 41 24	10 12 58 14	10 12 52 35	5 9 37 52	8 25 8 19	8 26 29 27	-12 6	4 20	4 50
18	9 51 24	10 5 12 54	11 17 56 10	3 9 2 46	9 17 12 55	10 13 12 39	10 14 7 40	5 9 34 27	8 25 5 8	8 26 22 24	-11 45	9 25	5 7
19	9 55 20	10 6 13 27	0 0 18 12	3 8 47 11	9 18 45 22	10 13 27 6	10 15 22 44	5 9 30 58	8 25 1 57	8 26 16 21	-11 24	14 13	5 9
20	9 59 17	10 7 13 58	0 12 53 12	3 8 32 19	9 20 18 45	10 13 41 33	10 16 37 46	5 9 27 24	8 24 58 47	8 26 11 52	-11 2	18 29	4 57
21	10 3 14	10 8 14 26	0 25 43 55	3 8 18 13	9 21 53 4	10 13 56 0	10 17 52 47	5 9 23 45	8 24 55 36	8 26 9 16	-10 41	22 0	4 30
22	10 7 10	10 9 14 53	1 8 53 17	3 8 4 52	9 23 28 19	10 14 10 28	10 19 7 47	5 9 20 3	8 24 52 25	8 26 8 32	-10 19	24 28	3 48
23	10 11 7	10 10 15 18	1 22 24 2	3 7 52 18	9 25 4 31	10 14 24 57	10 20 22 46	5 9 16 17	8 24 49 14	8 26 9 10	- 9 57	25 36	2 53
24	10 15 3	10 11 15 41	2 6 18 15	3 7 40 30	9 26 41 40	10 14 39 26	10 21 37 43	5 9 12 26	8 24 46 4	8 26 10 23	- 9 35	25 12	1 46
25	10 19 0	10 12 16 2	2 20 36 36	3 7 29 29	9 28 19 47	10 14 53 55	10 22 52 39	5 9 8 32	8 24 42 53	8 26 11 15	- 9 13	23 8	0 30
26	10 22 56	10 13 16 22	3 5 17 32	3 7 19 16	9 29 58 52	10 15 8 24	10 24 7 34	5 9 4 35	8 24 39 42	8 26 10 48	- 8 50	19 30	- 0 49
27	10 26 53	10 14 16 39	3 20 16 41	3 7 9 50	10 1 38 57	10 15 22 54	10 25 22 27	5 9 0 33	8 24 36 31	8 26 8 24	- 8 28	14 32	- 2 6
28	10 30 49	10 15 16 55	4 5 26 45	3 7 1 11	10 3 20 1	10 15 37 23	10 26 37 19	5 8 56 29	8 24 33 21	8 26 3 47	- 8 5	8 37	- 3 16

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 मार्च 2010 ई. को अयनांश 24° 0' 14"

मार्च	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां	चन्द्र क्रां	चन्द्रशर
	घ. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	10 34 46	10 16 17 9	4 20 38 9	3 6 53 20	10 5 2 7	10 15 51 53	10 27 52 9	5 8 52 21	8 24 30 10	8 25 57 9	-7 43	2 11	-4 11
2	10 38 43	10 17 17 21	5 5 40 33	3 6 46 16	10 6 45 14	10 16 6 23	10 29 6 58	5 8 48 10	8 24 26 59	8 25 49 11	-7 20	-4 17	-4 48
3	10 42 39	10 18 17 31	5 20 24 32	3 6 40 0	10 8 29 23	10 16 20 52	11 0 21 46	5 8 43 56	8 24 23 48	8 25 40 50	-6 57	-10 22	-5 5
4	10 46 36	10 19 17 40	6 4 43 7	3 6 34 30	10 10 14 36	10 16 35 21	11 1 36 32	5 8 39 39	8 24 20 38	8 25 33 9	-6 34	-15 44	-5 3
5	10 50 32	10 20 17 47	6 18 32 35	3 6 29 47	10 12 0 54	10 16 49 51	11 2 51 17	5 8 35 19	8 24 17 27	8 25 27 0	-6 11	-20 5	-4 42
6	10 54 29	10 21 17 52	7 1 52 28	3 6 25 50	10 13 48 16	10 17 4 19	11 4 6 1	5 8 30 57	8 24 14 16	8 25 22 53	-5 48	-23 13	-4 7
7	10 58 25	10 22 17 56	7 14 44 59	3 6 22 40	10 15 36 43	10 17 18 48	11 5 20 43	5 8 26 32	8 24 11 6	8 25 20 54	-5 24	-25 3	-3 20
8	11 2 22	10 23 17 59	7 27 14 4	3 6 20 15	10 17 26 16	10 17 33 16	11 6 35 24	5 8 22 5	8 24 7 55	8 25 20 39	-5 1	-25 34	-2 25
9	11 6 18	10 24 18 0	8 9 24 43	3 6 18 36	10 19 16 54	10 17 47 43	11 7 50 4	5 8 17 35	8 24 4 44	8 25 21 24	-4 38	-24 48	-1 25
10	11 10 15	10 25 17 59	8 21 22 14	3 6 17 41	10 21 8 38	10 18 2 10	11 9 4 42	5 8 13 4	8 24 1 33	8 25 22 9	-4 14	-22 55	-0 21
11	11 14 12	10 26 17 56	9 3 11 48	3 6 17 32	10 23 1 28	10 18 16 36	11 10 19 19	5 8 8 30	8 23 58 23	8 25 21 54	-3 50	-20 2	0 42
12	11 18 8	10 27 17 52	9 14 58 9	3 6 18 6	10 24 55 21	10 18 31 1	11 11 33 54	5 8 3 55	8 23 55 12	8 25 19 46	-3 27	-16 22	1 43
13	11 22 5	10 28 17 46	9 26 45 20	3 6 19 24	10 26 50 17	10 18 45 26	11 12 48 28	5 7 59 19	8 23 52 1	8 25 15 8	-3 3	-12 3	2 39
14	11 26 1	10 29 17 39	10 8 36 38	3 6 21 25	10 28 46 13	10 18 59 49	11 14 3 1	5 7 54 41	8 23 48 50	8 25 7 48	-2 40	-7 17	3 29
15	11 29 58	11 0 17 29	10 20 34 30	3 6 24 9	11 0 43 5	10 19 14 12	11 15 17 32	5 7 50 1	8 23 45 40	8 24 57 56	-2 16	-2 13	4 10
16	11 33 54	11 1 17 18	11 2 40 39	3 6 27 35	11 2 40 51	10 19 28 33	11 16 32 1	5 7 45 21	8 23 42 29	8 24 46 10	-1 52	2 58	4 40
17	11 37 51	11 2 17 4	11 14 56 7	3 6 31 42	11 4 39 23	10 19 42 54	11 17 46 29	5 7 40 39	8 23 39 18	8 24 33 27	-1 29	8 6	4 58
18	11 41 47	11 3 16 49	11 27 21 37	3 6 36 30	11 6 38 37	10 19 57 13	11 19 0 55	5 7 35 57	8 23 36 7	8 24 20 55	-1 5	12 59	5 2
19	11 45 44	11 4 16 31	0 9 57 39	3 6 41 58	11 8 38 22	10 20 11 30	11 20 15 19	5 7 31 14	8 23 32 57	8 24 9 43	-0 41	17 24	4 51
20	11 49 41	11 5 16 11	0 22 44 56	3 6 48 6	11 10 38 31	10 20 25 46	11 21 29 41	5 7 26 31	8 23 29 46	8 24 0 48	-0 17	21 5	4 25
21	11 53 37	11 6 15 49	1 5 44 27	3 6 54 52	11 12 38 52	10 20 40 1	11 22 44 1	5 7 21 47	8 23 26 35	8 23 54 42	0 6	23 46	3 46
22	11 57 34	11 7 15 24	1 18 57 38	3 7 2 16	11 14 39 11	10 20 54 14	11 23 58 20	5 7 17 3	8 23 23 25	8 23 51 24	0 30	25 13	2 54
23	12 1 30	11 8 14 58	2 2 26 10	3 7 10 17	11 16 39 13	10 21 8 25	11 25 12 36	5 7 12 20	8 23 20 14	8 23 50 19	0 54	25 14	1 51
24	12 5 27	11 9 14 29	2 16 11 44	3 7 18 54	11 18 38 41	10 21 22 34	11 26 26 51	5 7 7 36	8 23 17 3	8 23 50 25	1 17	23 43	0 40
25	12 9 23	11 10 13 57	3 0 15 29	3 7 28 7	11 20 37 16	10 21 36 42	11 27 41 3	5 7 2 53	8 23 13 52	8 23 50 23	1 41	20 42	-0 34
26	12 13 20	11 11 13 24	3 14 37 17	3 7 37 55	11 22 34 37	10 21 50 48	11 28 55 14	5 6 58 10	8 23 10 42	8 23 48 56	2 5	16 22	-1 48
27	12 17 16	11 12 12 48	3 29 15 4	3 7 48 17	11 24 30 22	10 22 4 51	0 0 9 22	5 6 53 28	8 23 7 31	8 23 45 5	2 28	11 0	-2 56
28	12 21 13	11 13 12 10	4 14 4 17	3 7 59 13	11 26 24 6	10 22 18 53	0 1 23 28	5 6 48 47	8 23 4 20	8 23 38 26	2 52	4 56	-3 53
29	12 25 10	11 14 11 29	4 28 57 59	3 8 10 40	11 28 15 25	10 22 32 53	0 2 37 32	5 6 44 7	8 23 1 9	8 23 29 10	3 15	-1 24	-4 34
30	12 29 6	11 15 10 47	5 13 47 35	3 8 22 40	0 0 3 54	10 22 46 50	0 3 51 34	5 6 39 28	8 22 57 59	8 23 18 2	3 38	-7 38	-4 57
31	12 33 3	11 16 10 3	5 28 24 21	3 8 35 11	0 1 49 9	10 23 0 45	0 5 5 34	5 6 34 50	8 22 54 48	8 23 6 14	4 2	-13 21	-4 59

अक्षांश भेद से भारत में चन्द्रदर्शन की तारीखें और चन्द्र के उन्नत श्रृंग की दिशा तथा अंश (सं. 2066 वि.)

मास→	चैत्र		वैशाख		ज्येष्ठ		आषाढ़		श्रावण		भाद्रपद		आश्विन		कार्तिक		मार्गशीर्ष		पौष		माघ		फाल्गुन	
भारतीय अक्षांश	चन्द्रदर्शन (2009 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2009 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2009 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2009 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2009 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2009 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2009 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2009 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2009 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2009 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2010 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2010 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)
+ 5°	28 मार्च	द. 32	26 अप्रै	द 31	25 मई	द 17	24 जून	उ 6	23 जुला	उ. 22	*22अग.	उ 39	20 सित	उ. 43	20 अक्तू	उ 37	18 नव	उ 27	18 दिस.	उ. 9	16 जन	द 12	15 फर	द. 29
+ 15°	28 "	द. 22	26 "	द 21	25 "	द 7	24 "	उ. 16	23 "	उ 32	22 "	उ 48	20 "	उ. 52	20 "	उ 50	18 "	उ. 37	18 "	उ 19	16 "	द. 2	15 "	द 19
+ 25°	28 "	द 11	26 "	द 11	25 "	उ. 3	24 "	उ 27	23 "	उ. 43	22 "	उ. 57	20 "	उ 62	20 "	उ 58	18 "	उ 48	18 "	उ. 30	16 "	उ. 8	15 "	द 9
+ 35°	28 "	0	26 "	0	25 "	उ 13	24 "	उ. 38	23 "	उ. 52	22 "	उ 68	20 "	उ 72	20 "	उ 69	18 "	उ. 57	18 "	उ 40	16 "	उ. 18	15 "	उ 1

नोट :– यहां दिए गए चन्द्र–शृङ्गोन्नति के अंश लगभग हैं। *भारत के दक्षिणी छोर पर 21 अगस्त, 2009 ई. को चन्द्रदर्शन सम्भव है।

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्तकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2009 ई.

तारीख	जनवरी 2009				फरवरी 2009				मार्च 2009				अप्रैल 2009				मई 2009				जून 2009				जुलाई 2009				अगस्त 2009				तारीख
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
1	10	14	21	57	10	14	23	47	8	51	22	45	10	3	--	--	11	18	0	36	13	27	1	00	14	21	0	36	16	4	1	15	1
2	10	42	22	54	10	49	--	--	9	29	23	51	11	8	0	57	12	25	1	17	14	27	1	30	15	20	1	10	16	53	2	5	2
3	11	10	23	52	11	29	0	52	10	15	--	--	12	16	1	51	13	29	1	54	15	27	2	1	16	19	1	48	17	37	2	59	3
4	11	40	--	--	12	18	2	00	11	8	0	58	13	25	2	37	14	32	2	26	16	26	2	34	17	15	2	31	18	16	3	55	4
5	12	13	0	53	13	15	3	8	12	9	2	3	14	32	3	17	15	32	2	57	17	26	3	9	18	8	3	18	18	51	4	51	5
6	12	50	1	57	14	21	4	13	13	16	3	2	15	36	3	52	16	33	3	28	18	24	3	49	18	55	4	10	19	22	5	47	6
7	13	35	3	5	15	32	5	12	14	26	3	54	16	39	4	25	17	33	3	59	19	20	4	33	19	38	5	5	19	51	6	42	7
8	14	29	4	16	16	45	6	3	15	36	4	39	17	41	4	56	18	34	4	33	20	11	5	22	20	15	6	0	20	19	7	37	8
9	15	33	6	32	17	57	6	46	16	44	5	18	18	43	6	2	19	34	5	10	20	57	6	15	20	49	6	57	20	46	8	32	9
10	16	45	6	31	19	5	7	24	17	50	5	53	19	44	5	59	20	32	5	51	21	38	7	10	21	19	7	52	21	15	9	28	10
11	17	59	7	27	20	10	7	58	18	54	6	26	20	45	6	34	21	27	6	38	22	14	8	7	21	47	8	47	21	46	10	26	11
12	19	13	8	15	21	13	8	29	19	56	6	57	21	45	7	13	22	16	7	28	22	47	9	3	22	15	9	42	22	22	11	26	12
13	20	22	8	55	22	15	9	0	20	58	7	29	22	42	7	57	23	1	8	22	23	16	9	58	22	42	10	37	23	3	12	29	13
14	21	28	9	30	23	15	9	32	22	00	8	2	23	35	8	44	23	40	9	18	23	44	10	53	23	12	11	33	23	52	13	34	14
15	22	30	10	2	--	--	10	6	23	0	8	39	--	--	9	36	--	--	10	14	--	--	11	48	23	45	12	32	--	--	14	39	15
16	23	31	10	32	0	15	10	43	23	59	9	19	0	23	10	31	0	15	11	10	0	12	12	44	--	--	13	35	0	49	15	42	16
17	--	--	11	3	1	14	11	24	--	--	10	3	1	5	11	27	0	46	12	6	0	41	13	43	0	23	14	41	1	55	16	39	17
18	0	30	11	34	2	10	12	10	0	54	10	53	1	43	12	24	1	15	13	2	1	13	14	45	1	8	15	49	3	6	17	29	18
19	1	28	12	8	3	3	13	1	1	44	11	46	2	16	13	20	1	44	13	58	1	48	15	51	2	3	16	56	4	19	18	13	19
20	2	26	12	46	3	52	13	55	2	30	12	41	2	47	14	17	2	13	14	57	2	31	17	1	3	6	17	58	5	31	18	51	20
21	3	23	13	29	4	35	14	52	3	10	13	38	3	16	15	14	2	43	15	59	3	22	18	10	4	17	18	53	6	41	19	26	21
22	4	18	14	16	5	14	15	49	3	46	14	35	3	45	16	13	3	17	17	5	4	22	19	17	5	31	19	41	7	48	20	00	22
23	5	9	15	8	5	48	16	47	4	19	15	33	4	15	17	14	3	57	18	14	5	31	20	16	6	45	20	21	8	53	20	33	23
24	5	56	16	4	6	19	17	44	4	49	16	30	4	48	18	18	4	44	19	25	6	44	21	7	7	56	20	57	9	57	21	8	24
25	6	37	17	1	6	49	18	42	5	18	17	29	5	24	19	26	5	40	20	33	7	57	21	50	9	3	21	31	11	0	21	45	25
26	7	14	17	58	7	17	19	40	5	47	18	28	6	7	20	36	6	44	21	36	9	8	22	27	10	8	22	3	12	2	22	26	26
27	7	47	18	55	7	46	20	39	6	18	19	30	6	57	21	45	7	54	22	30	10	15	23	1	11	10	22	36	13	1	23	11	27
28	8	18	19	52	8	17	21	41	6	51	20	35	7	55	22	49	9	6	23	15	11	19	23	32	12	12	23	10	13	57	24	00	28
29	8	46	20	49	--	--	--	--	7	29	21	42	9	00	23	46	10	16	23	54	12	20	--	--	13	13	23	48	14	48	--	--	29
30	9	14	21	46					8	13	22	50	10	9	--	--	11	22	--	--	13	21	0	3	14	12	--	--	15	34	0	53	30
31	9	43	22	46					9	4	23	56					12	26	0	28					15	10	0	29	16	15	1	48	31

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्तकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2009 – 10 ई.

तारीख	सितंबर 2009				अक्तूबर 2009				नवंबर 2009				दिसंबर 2009				जनवरी 2010				फरवरी 2010				मार्च 2010				तारीख
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
1	16	51	2	44	16	23	3	22	16	22	4	58	16	19	5	51	18	16	7	42	20	35	8	23	19	18	6	51	1
2	17	24	3	40	16	52	4	18	16	59	5	59	17	15	6	58	19	29	8	32	21	42	8	58	20	26	7	27	2
3	17	54	4	36	17	20	5	14	17	42	7	4	18	19	8	4	20	40	9	15	22	48	9	33	21	33	8	3	3
4	18	22	5	31	17	51	6	11	18	32	8	11	19	28	9	4	21	48	9	53	23	52	10	8	22	40	8	41	4
5	18	50	6	26	18	25	7	11	19	30	9	17	20	39	9	56	22	54	10	28	--	--	10	46	23	44	9	22	5
6	19	19	7	22	19	3	8	14	20	34	10	18	21	49	10	41	23	58	11	1	0	55	11	27	--	--	10	7	6
7	19	50	8	20	19	47	9	18	21	42	11	13	22	56	11	20	--	--	11	35	1	56	12	12	0	44	10	56	7
8	20	24	9	20	20	39	10	23	22	51	12	1	24	00	11	55	1	0	12	9	2	54	13	1	1	40	11	48	8
9	21	3	10	22	21	37	11	26	23	58	12	43	--	--	12	28	2	2	12	47	3	46	13	54	2	30	12	43	9
10	21	48	11	26	22	42	12	25	--	--	13	19	1	3	13	00	3	3	13	28	4	34	14	49	3	14	13	39	10
11	22	42	12	30	23	49	13	17	1	3	13	53	2	5	13	33	4	2	14	14	5	16	15	45	3	53	14	34	11
12	23	43	13	32	--	--	14	2	2	6	14	25	3	6	14	8	4	58	15	5	5	53	16	40	4	28	15	29	12
13	--	--	14	30	0	58	14	42	3	9	14	58	4	8	14	47	5	49	15	58	6	26	17	35	4	59	16	23	13
14	0	50	15	21	2	5	15	19	4	11	15	32	5	9	15	30	6	36	16	54	6	56	18	29	5	59	17	17	14
15	2	00	16	5	3	11	15	52	5	14	16	9	6	8	16	18	7	16	17	50	7	25	19	23	5	56	18	11	15
16	3	10	16	45	4	16	16	25	6	17	16	49	7	3	17	10	7	52	18	46	7	52	20	16	6	24	19	5	16
17	4	19	17	21	5	20	16	59	7	18	17	35	7	53	18	5	8	24	19	41	8	20	21	11	6	53	20	1	17
18	6	33	17	55	6	24	17	34	8	17	18	25	8	38	19	1	8	53	20	34	8	49	22	7	7	24	20	59	18
19	6	32	18	28	7	28	18	13	9	11	19	19	9	17	19	58	9	21	21	27	9	21	23	5	7	58	21	59	19
20	7	38	19	3	8	31	18	56	9	59	20	14	9	51	20	53	9	48	22	21	9	56	--	--	8	38	23	00	20
21	8	42	19	40	9	32	19	43	10	42	21	11	10	22	21	47	10	16	23	16	10	37	0	5	9	23	--	--	21
22	9	46	20	20	10	29	20	35	11	19	22	6	10	51	22	40	10	46	--	--	11	26	1	7	10	16	0	1	22
23	10	48	21	4	11	21	21	29	11	52	23	1	11	18	23	34	11	19	0	13	12	22	2	9	11	15	1	00	23
24	11	46	21	52	12	6	22	25	12	22	23	55	11	46	--	--	11	57	1	13	13	25	3	8	12	20	1	54	24
25	12	40	22	45	12	46	23	21	12	50	--	--	12	15	0	29	12	42	2	16	14	34	4	2	13	28	2	44	25
26	13	29	23	39	13	21	--	--	13	18	0	50	12	46	1	26	13	36	3	20	15	46	4	51	14	37	3	28	26
27	14	12	--	--	13	53	0	17	13	47	1	45	13	23	2	26	14	38	4	24	16	58	5	35	15	46	4	8	27
28	14	50	0	35	14	23	1	12	14	17	2	42	14	5	3	29	15	47	5	23	18	9	6	14	16	54	4	45	28
29	15	23	1	31	14	51	2	6	14	52	3	41	14	56	4	35	17	0	6	17					18	2	5	20	29
30	15	54	2	27	15	19	3	2	15	32	4	45	15	56	5	41	18	14	7	4					[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	30

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (संवत् 2065 वि.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2009 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा.अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जन. 3	10 25 15	9 28 27	8 7 16	-24 6	-0 42	-21 48	-1 35	-20 47	-0 25	-13 49	-1 29	5 9	2 3	-4 57	-0 45	-14 22	-0 21	-17 44	5 42
6	10 25 20	9 28 32	8 7 23	-24 2	-0 44	-20 33	-1 7	-20 38	-0 25	-12 29	-1 17	5 10	2 4	-4 55	-0 45	-14 20	-0 21	-17 44	5 42
9	10 25 26	9 28 38	8 7 29	-23 57	-0 45	-19 17	-0 30	-20 29	-0 25	-11 7	-1 4	5 11	2 5	-4 53	-0 45	-14 19	-0 21	-17 44	5 42
12	10 25 32	9 28 44	8 7 35	-23 49	-0 47	-18 7	0 17	-20 21	-0 25	-9 44	-0 49	5 13	2 5	-4 50	-0 45	-14 17	-0 21	-17 44	5 41
15	10 25 39	9 28 50	8 7 42	-23 38	-0 48	-17 14	1 11	-20 12	-0 25	-8 19	-0 33	5 15	2 6	-4 47	-0 45	-14 15	-0 21	-17 44	5 41
18	10 25 45	9 28 56	8 7 48	-23 26	-0 49	-16 44	2 7	-20 2	-0 26	-6 53	-0 16	5 18	2 7	-4 45	-0 45	-14 13	-0 21	-17 44	5 41
21	10 25 53	9 29 2	8 7 54	-23 11	-0 51	-16 41	2 55	-19 53	-0 26	-5 27	0 2	5 20	2 8	-4 42	-0 45	-14 11	-0 21	-17 44	5 41
24	10 26 0	9 29 9	8 8 0	-22 53	-0 52	-17 1	3 25	-19 43	-0 26	-4 0	0 22	5 24	2 9	-4 39	-0 44	-14 9	-0 21	-17 44	5 41
27	10 26 8	9 29 15	8 8 6	-22 34	-0 54	-17 34	3 32	-19 33	-0 27	-2 34	0 43	5 27	2 9	-4 36	-0 44	-14 6	-0 21	-17 44	5 41
30	10 26 16	9 29 22	8 8 11	-22 12	-0 55	-18 11	3 21	-19 23	-0 27	-1 8	1 5	5 31	2 10	-4 32	-0 44	-14 4	-0 21	-17 44	5 41
31	10 26 24	9 29 29	8 8 17	-21 47	-0 56	-18 46	2 56	-19 13	-0 27	0 17	1 28	5 35	2 11	-4 29	-0 44	-14 2	-0 21	-17 44	5 41
फर. 1	10 26 27	9 29 31	8 8 19	-21 39	-0 56	-18 57	2 46	-19 10	-0 27	0 45	1 36	5 37	2 11	-4 28	-0 44	-14 1	-0 21	-17 44	5 41
4	10 26 36	9 29 38	8 8 24	-21 12	-0 58	-19 25	2 13	-18 59	-0 27	2 8	2 1	5 41	2 11	-4 24	-0 44	-13 59	-0 21	-17 44	5 41
7	10 26 45	9 29 44	8 8 29	-20 43	-0 59	-19 46	1 39	-18 49	-0 28	3 29	2 28	5 46	2 12	-4 21	-0 44	-13 57	-0 21	-17 44	5 41
10	10 26 54	9 29 51	8 8 34	-20 12	-1 0	-19 57	1 5	-18 38	-0 28	4 47	2 55	5 51	2 13	-4 17	-0 44	-13 55	-0 21	-17 44	5 41
13	10 27 3	9 29 58	8 8 38	-19 38	-1 1	-19 58	0 33	-18 27	-0 28	6 3	3 23	5 56	2 13	-4 13	-0 44	-13 52	-0 21	-17 43	5 42
16	10 27 13	10 0 5	8 8 43	-19 3	-1 2	-19 48	0 2	-18 17	-0 29	7 15	3 52	6 1	2 14	-4 10	-0 44	-13 50	-0 22	-17 43	5 42
19	10 27 23	10 0 12	8 8 47	-18 27	-1 3	-19 27	-0 25	-18 6	-0 29	8 22	4 22	6 7	2 14	-4 6	-0 44	-13 48	-0 22	-17 43	5 42
22	10 27 32	10 0 18	8 8 51	-17 48	-1 4	-18 55	-0 50	-17 55	-0 29	9 25	4 53	6 12	2 15	-4 2	-0 44	-13 46	-0 22	-17 43	5 42
25	10 27 42	10 0 25	8 8 55	-17 8	-1 5	-18 11	-1 12	-17 44	-0 30	10 21	5 24	6 18	2 15	-3 58	-0 44	-13 44	-0 22	-17 42	5 42
28	10 27 52	10 0 32	8 8 58	-16 26	-1 6	-17 15	-1 30	-17 33	-0 30	11 11	5 55	6 24	2 15	-3 54	-0 44	-13 41	-0 22	-17 42	5 42
मार्च 1	10 27 56	10 0 34	8 8 59	-16 11	-1 6	-16 54	-1 36	-17 29	-0 30	11 26	6 5	6 26	2 15	-3 52	-0 44	-13 41	-0 22	-17 42	5 42
4	10 28 6	10 0 41	8 9 2	-15 27	-1 7	-15 43	-1 51	-17 18	-0 31	12 5	6 35	6 32	2 16	-3 48	-0 44	-13 38	-0 22	-17 42	5 43
7	10 28 16	10 0 47	8 9 5	-14 42	-1 7	-14 21	-2 2	-17 7	-0 31	12 35	7 3	6 37	2 16	-3 44	-0 44	-13 36	-0 22	-17 41	5 43
10	10 28 26	10 0 54	8 9 8	-13 55	-1 8	-12 48	-2 9	-16 56	-0 31	12 54	7 29	6 43	2 16	-3 40	-0 44	-13 34	-0 22	-17 41	5 43
13	10 28 37	10 1 0	8 9 10	-13 7	-1 8	-11 3	-2 13	-16 46	-0 32	13 0	7 51	6 49	2 16	-3 36	-0 44	-13 32	-0 22	-17 41	5 43
16	10 28 47	10 1 6	8 9 12	-12 18	-1 9	-9 7	-2 13	-16 35	-0 32	12 54	8 9	6 55	2 16	-3 32	-0 44	-13 30	-0 22	-17 41	5 44
19	10 28 57	10 1 12	8 9 14	-11 28	-1 9	-7 1	-2 9	-16 24	-0 33	12 33	8 21	7 0	2 16	-3 28	-0 44	-13 28	-0 22	-17 40	5 44
22	10 29 8	10 1 18	8 9 15	-10 37	-1 10	-4 44	-2 1	-16 13	-0 33	12 0	8 25	7 6	2 16	-3 24	-0 44	-13 26	-0 22	-17 40	5 44
25	10 29 18	10 1 24	8 9 16	-9 45	-1 10	-2 17	-1 48	-16 3	-0 34	11 14	8 21	7 11	2 16	-3 20	-0 44	-13 24	-0 22	-17 40	5 44
28	10 29 28	10 1 29	8 9 17	-8 52	-1 10	0 19	-1 30	-15 52	-0 34	10 19	8 9	7 16	2 16	-3 16	-0 44	-13 23	-0 22	-17 39	5 45
31	10 29 38	10 1 34	8 9 18	-7 59	-1 10	3 2	-1 7	-15 42	-0 35	9 16	7 49	7 21	2 16	-3 12	-0 44	-13 21	-0 22	-17 39	5 45

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (संवत् 2066 वि.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2009 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अप्रैल 1	10 29 41	10 1 36	8 9 18	-7 41	-1 10	3 57	-0 59	-15 39	-0 35	8 54	7 40	7 22	2 16	-3 11	-0 44	-13 20	-0 22	-17 39	5 45
4	10 29 51	10 1 41	8 9 18	-6 47	-1 10	6 46	-0 31	-15 29	-0 35	7 46	7 11	7 27	2 16	-3 7	-0 44	-13 19	-0 22	-17 39	5 45
7	11 0 1	10 1 46	8 9 18	-5 52	-1 10	9 34	0 1	-15 19	-0 36	6 40	6 36	7 31	2 16	-3 3	-0 44	-13 17	-0 22	-17 38	5 46
10	11 0 10	10 1 51	8 9 18	-4 57	-1 10	12 17	0 34	-15 10	-0 36	5 38	5 57	7 35	2 16	-2 59	-0 44	-13 16	-0 22	-17 38	5 46
13	11 0 20	10 1 55	8 9 17	-4 1	-1 10	14 49	1 8	-15 0	-0 37	4 43	5 17	7 39	2 15	-2 56	-0 44	-13 14	-0 22	-17 38	5 46
16	11 0 29	10 1 59	8 9 16	-3 6	-1 10	17 4	1 39	-14 51	-0 38	3 55	4 36	7 42	2 15	-2 52	-0 44	-13 13	-0 22	-17 38	5 46
19	11 0 38	10 2 3	8 9 15	-2 10	-1 10	18 59	2 6	-14 43	-0 38	3 17	3 55	7 45	2 15	-2 49	-0 44	-13 11	-0 23	-17 38	5 46
22	11 0 47	10 2 7	8 9 13	-1 14	-1 9	20 30	2 28	-14 34	-0 39	2 48	3 15	7 48	2 14	-2 45	-0 44	-13 10	-0 23	-17 37	5 47
25	11 0 55	10 2 10	8 9 12	-0 18	-1 9	21 39	2 41	-14 26	-0 39	2 28	2 37	7 50	2 14	-2 42	-0 44	-13 9	-0 23	-17 37	5 47
28	11 1 4	10 2 13	8 9 10	0 38	-1 8	22 24	2 46	-14 18	-0 40	2 18	2 1	7 52	2 13	-2 39	-0 44	-13 8	-0 23	-17 37	5 47
मई 1	11 1 12	10 2 16	8 9 7	1 33	-1 8	22 46	2 40	-14 11	-0 41	2 16	1 28	7 54	2 13	-2 35	-0 44	-13 7	-0 23	-17 37	5 47
4	11 1 19	10 2 19	8 9 5	2 28	-1 7	22 47	2 25	-14 4	-0 41	2 22	0 57	7 55	2 13	-2 32	-0 44	-13 6	-0 23	-17 37	5 47
7	11 1 27	10 2 21	8 9 2	3 23	-1 6	22 27	1 58	-13 58	-0 42	2 35	0 28	7 56	2 12	-2 30	-0 44	-13 6	-0 23	-17 37	5 47
10	11 1 34	10 2 23	8 8 59	4 18	-1 5	21 47	1 22	-13 52	-0 43	2 54	0 2	7 57	2 12	-2 27	-0 44	-13 5	-0 23	-17 37	5 48
13	11 1 41	10 2 25	8 8 56	5 12	-1 5	20 51	0 37	-13 46	-0 43	3 20	-0 22	7 57	2 11	-2 24	-0 45	-13 5	-0 23	-17 37	5 48
16	11 1 47	10 2 26	8 8 53	6 5	-1 4	19 43	-0 13	-13 41	-0 44	3 51	-0 44	7 57	2 11	-2 22	-0 45	-13 4	-0 23	-17 37	5 48
19	11 1 53	10 2 27	8 8 49	6 58	-1 3	18 29	-1 6	-13 36	-0 45	4 26	-1 4	7 56	2 10	-2 19	-0 45	-13 4	-0 23	-17 37	5 48
22	11 1 59	10 2 28	8 8 46	7 50	-1 1	17 16	-1 56	-13 32	-0 45	5 6	-1 22	7 56	2 9	-2 17	-0 45	-13 4	-0 23	-17 37	5 48
25	11 2 5	10 2 29	8 8 42	8 41	-1 0	16 13	-2 40	-13 28	-0 46	5 49	-1 37	7 54	2 9	-2 15	-0 45	-13 3	-0 23	-17 37	5 48
28	11 2 10	10 2 29	8 8 38	9 31	-0 59	15 26	-3 15	-13 25	-0 47	6 35	-1 51	7 53	2 8	-2 13	-0 45	-13 3	-0 23	-17 37	5 48
31	11 2 14	10 2 29	8 8 34	10 20	-0 58	14 57	-3 39	-13 23	-0 48	7 24	-2 3	7 51	2 8	-2 11	-0 45	-13 4	-0 24	-17 37	5 48
जून 1	11 2 16	10 2 29	8 8 32	10 36	-0 57	14 52	-3 45	-13 22	-0 48	7 41	-2 7	7 50	2 8	-2 11	-0 45	-13 4	-0 24	-17 37	5 48
4	11 2 20	10 2 29	8 8 28	11 24	-0 56	14 49	-3 56	-13 20	-0 49	8 32	-2 17	7 47	2 7	-2 9	-0 45	-13 4	-0 24	-17 38	5 47
7	11 2 23	10 2 28	8 8 24	12 11	-0 55	15 6	-3 57	-13 19	-0 50	9 25	-2 25	7 45	2 7	-2 8	-0 45	-13 4	-0 24	-17 38	5 47
10	11 2 27	10 2 27	8 8 19	12 57	-0 53	15 38	-3 50	-13 19	-0 50	10 19	-2 32	7 42	2 6	-2 7	-0 45	-13 5	-0 24	-17 38	5 47
13	11 2 30	10 2 26	8 8 15	13 41	-0 51	16 25	-3 36	-13 19	-0 51	11 13	-2 37	7 38	2 6	-2 6	-0 46	-13 5	-0 24	-17 38	5 47
16	11 2 32	10 2 24	8 8 10	14 24	-0 50	17 22	-3 15	-13 19	-0 52	12 7	-2 41	7 34	2 5	-2 5	-0 46	-13 6	-0 24	-17 39	5 47
19	11 2 34	10 2 22	8 8 5	15 6	-0 48	18 27	-2 49	-13 20	-0 53	13 1	-2 44	7 30	2 5	-2 4	-0 46	-13 6	-0 24	-17 39	5 46
22	11 2 36	10 2 20	8 8 1	15 46	-0 46	19 35	-2 19	-13 22	-0 54	13 55	-2 45	7 26	2 4	-2 4	-0 46	-13 7	-0 24	-17 39	5 46
25	11 2 37	10 2 18	8 7 56	16 25	-0 45	20 44	-1 46	-13 24	-0 54	14 47	-2 46	7 21	2 4	-2 3	-0 46	-13 8	-0 24	-17 40	5 46
28	11 2 37	10 2 15	8 7 51	17 2	-0 43	21 50	-1 10	-13 27	-0 55	15 38	-2 45	7 16	2 3	-2 3	-0 46	-13 9	-0 24	-17 40	5 46

25	11 2 37	10 2 18	8 7 56	16 25	-0 45	20 44	-1 46	-13 24	-0 54	14 47	-2 46	7 21	2 [illegible]	[illegible] 3	-0 46	-13 8	-0 24	-17 40	5 46
28	11 2 37	10 2 15	8 7 51	17 2	-0 43	21 50	-1 10	-13 27	-0 55	15 38	-2 45	7 16	2 3	-2 3	-0 46	-13 9	-0 24	-17 40	5 46

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सं. 2066 वि.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2009 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जुलाई 1	11 2 38	10 2 12	8 7 47	17 38	-0 41	22 46	-0 34	-13 31	-0 56	16 27	-2 43	7 11	2 3	-2 3	-0 46	-13 10	-0 24	-17 41	5 45
4	11 2 38	10 2 9	8 7 42	18 12	-0 39	23 27	0 1	-13 35	-0 57	17 14	-2 40	7 5	2 2	-2 3	-0 46	-13 11	-0 24	-17 41	5 45
7	11 2 37	10 2 6	8 7 38	18 45	-0 37	23 50	0 33	-13 40	-0 57	17 58	-2 36	7 0	2 2	-2 4	-0 46	-13 12	-0 24	-17 41	5 44
10	11 2 36	10 2 3	8 7 33	19 16	-0 35	23 49	1 1	-13 45	-0 58	18 40	-2 32	6 53	2 2	-2 4	-0 47	-13 13	-0 24	-17 42	5 44
13	11 2 34	10 1 59	8 7 29	19 45	-0 32	23 24	1 23	-13 50	-0 59	19 18	-2 26	6 47	2 1	-2 5	-0 47	-13 15	-0 24	-17 42	5 43
16	11 2 33	10 1 55	8 7 25	20 13	-0 30	22 35	1 38	-13 56	-1 0	19 53	-2 20	6 41	2 1	-2 6	-0 47	-13 16	-0 25	-17 43	5 43
19	11 2 30	10 1 51	8 7 20	20 38	-0 28	21 24	1 46	-14 3	-1 0	20 24	-2 13	6 34	2 1	-2 7	-0 47	-13 17	-0 25	-17 44	5 42
22	11 2 28	10 1 47	8 7 16	21 2	-0 26	19 57	1 48	-14 9	-1 1	20 51	-2 6	6 27	2 0	-2 8	-0 47	-13 19	-0 25	-17 44	5 42
25	11 2 24	10 1 42	8 7 13	21 25	-0 23	18 16	1 44	-14 16	-1 2	21 14	-1 58	6 20	2 0	-2 9	-0 47	-13 20	-0 25	-17 45	5 41
28	11 2 21	10 1 38	8 7 9	21 45	-0 21	16 25	1 35	-14 24	-1 2	21 32	-1 50	6 13	2 0	-2 10	-0 47	-13 22	-0 25	-17 45	5 41
31	11 2 17	10 1 33	8 7 5	22 4	-0 18	14 28	1 21	-14 31	-1 3	21 45	-1 41	6 5	1 59	-2 12	-0 47	-13 24	-0 25	-17 46	5 40
अगस्त 1	11 2 16	10 1 32	8 7 4	22 10	-0 17	13 48	1 15	-14 34	-1 3	21 48	-1 38	6 3	1 59	-2 13	-0 47	-13 24	-0 25	-17 46	5 40
4	11 2 11	10 1 27	8 7 1	22 26	-0 15	11 45	0 57	-14 42	-1 3	21 55	-1 29	5 55	1 59	-2 14	-0 47	-13 26	-0 25	-17 47	5 39
7	11 2 7	10 1 22	8 6 58	22 40	-0 12	9 41	0 35	-14 50	-1 4	21 56	-1 19	5 47	1 59	-2 16	-0 47	-13 27	-0 25	-17 48	5 38
10	11 2 2	10 1 18	8 6 55	22 53	-0 10	7 37	0 10	-14 58	-1 4	21 53	-1 10	5 39	1 59	-2 18	-0 48	-13 29	-0 25	-17 49	5 38
13	11 1 57	10 1 13	8 6 52	23 4	-0 7	5 36	-0 16	-15 6	-1 5	21 44	-1 0	5 31	1 58	-2 21	-0 48	-13 31	-0 25	-17 49	5 37
16	11 1 51	10 1 8	8 6 50	23 13	-0 4	3 37	-0 44	-15 14	-1 5	21 29	-0 50	5 23	1 58	-2 23	-0 48	-13 32	-0 25	-17 50	5 36
19	11 1 45	10 1 3	8 6 47	23 21	-0 1	1 43	-1 13	-15 22	-1 5	21 9	-0 40	5 14	1 58	-2 25	-0 48	-13 34	-0 25	-17 51	5 35
22	11 1 39	10 0 58	8 6 45	23 27	0 2	-0 4	-1 43	-15 29	-1 6	20 44	-0 30	5 6	1 58	-2 28	-0 48	-13 36	-0 25	-17 52	5 35
25	11 1 33	10 0 53	8 6 44	23 31	0 4	-1 43	-2 13	-15 37	-1 6	20 14	-0 20	4 57	1 58	-2 30	-0 48	-13 37	-0 25	-17 52	5 34
28	11 1 26	10 0 48	8 6 42	23 33	0 7	-3 12	-2 42	-15 44	-1 6	19 38	-0 11	4 49	1 58	-2 33	-0 48	-13 39	-0 25	-17 53	5 33
31	11 1 20	10 0 43	8 6 41	23 34	0 11	-4 27	-3 10	-15 51	-1 6	18 58	-0 1	4 40	1 58	-2 35	-0 48	-13 41	-0 25	-17 54	5 32
सितं. 1	11 1 17	10 0 42	8 6 41	23 34	0 12	-4 49	-3 19	-15 54	-1 6	18 43	0 2	4 37	1 58	-2 36	-0 48	-13 41	-0 25	-17 54	5 32
4	11 1 10	10 0 37	8 6 40	23 33	0 15	-5 41	-3 42	-16 0	-1 6	17 56	0 11	4 28	1 58	-2 39	-0 48	-13 43	-0 25	-17 55	5 31
7	11 1 3	10 0 33	8 6 39	23 31	0 18	-6 9	-4 1	-16 6	-1 6	17 4	0 20	4 20	1 58	-2 42	-0 48	-13 44	-0 25	-17 56	5 30
10	11 0 56	10 0 28	8 6 39	23 27	0 21	-6 9	-4 12	-16 12	-1 6	16 8	0 29	4 11	1 58	-2 45	-0 48	-13 46	-0 25	-17 57	5 30
13	11 0 49	10 0 24	8 6 39	23 22	0 24	-5 35	-4 11	-16 17	-1 6	15 8	0 37	4 2	1 58	-2 48	-0 48	-13 47	-0 25	-17 57	5 29
16	11 0 42	10 0 20	8 6 39	23 15	0 28	-4 25	-3 55	-16 22	-1 6	14 4	0 44	3 53	1 58	-2 50	-0 48	-13 49	-0 25	-17 58	5 28
19	11 0 35	10 0 15	8 6 40	23 8	0 31	-2 43	-3 22	-16 27	-1 6	12 57	0 52	3 44	1 58	-2 53	-0 48	-13 50	-0 25	-17 59	5 27
22	11 0 27	10 0 12	8 6 41	22 59	0 35	-0 44	-2 33	-16 30	-1 6	11 46	0 58	3 36	1 58	-2 56	-0 48	-13 51	-0 25	-18 0	5 26
25	11 0 20	10 0 8	8 6 42	22 49	0 38	1 12	-1 34	-16 34	-1 5	10 31	1 4	3 27	1 59	-2 59	-0 48	-13 53	-0 25	-18 1	5 25
28	11 0 13	10 0 4	8 6 43	22 38	0 42	2 43	-0 35	-16 37	-1 5	9 15	1 10	3 18	1 59	-3 2	-0 48	-13 54	-0 25	-18 2	5 25

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (संवत् 2066 वि.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2009 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अक्टू. 1	11 0 6	10 0 1	8 6 45	22 26	0 46	3 33	0 19	-16 39	-1 5	7 55	1 15	3 9	1 59	-3 4	-0 48	-13 55	-0 25	-18 2	5 24
4	10 29 59	9 29 58	8 6 47	22 14	0 50	3 37	1 2	-16 40	-1 5	6 34	1 20	3 1	1 59	-3 7	-0 48	-13 56	-0 25	-18 3	5 23
7	10 29 53	9 29 55	8 6 49	22 1	0 54	2 59	1 32	-16 42	-1 4	5 10	1 23	2 52	2 0	-3 10	-0 48	-13 57	-0 25	-18 4	5 22
10	10 29 46	9 29 53	8 6 52	21 47	0 58	1 47	1 51	-16 42	-1 4	3 45	1 27	2 44	2 0	-3 12	-0 48	-13 58	-0 25	-18 5	5 21
13	10 29 40	9 29 50	8 6 54	21 32	1 2	0 9	1 58	-16 42	-1 4	2 19	1 29	2 36	2 0	-3 15	-0 48	-13 58	-0 25	-18 6	5 21
16	10 29 34	9 29 48	8 6 57	21 18	1 6	-1 46	1 58	-16 42	-1 3	0 52	1 31	2 28	2 1	-3 17	-0 48	-13 59	-0 25	-18 6	5 20
19	10 29 28	9 29 46	8 7 1	21 3	1 10	-3 50	1 51	-16 41	-1 3	-0 35	1 32	2 20	2 1	-3 19	-0 48	-14 0	-0 25	-18 7	5 19
22	10 29 22	9 29 45	8 7 4	20 47	1 15	-5 57	1 39	-16 39	-1 3	-2 3	1 33	2 12	2 1	-3 22	-0 47	-14 0	-0 25	-18 8	5 18
25	10 29 17	9 29 44	8 7 8	20 32	1 19	-8 5	1 24	-16 37	-1 2	-3 31	1 33	2 4	2 2	-3 24	-0 47	-14 1	-0 25	-18 8	5 18
28	10 29 12	9 29 43	8 7 12	20 16	1 24	-10 11	1 7	-16 34	-1 2	-4 58	1 32	1 57	2 2	-3 25	-0 47	-14 1	-0 25	-18 9	5 17
31	10 29 7	9 29 42	8 7 16	20 1	1 29	-12 12	0 48	-16 31	-1 2	-6 25	1 31	1 49	2 3	-3 27	-0 47	-14 1	-0 25	-18 10	5 16
नवं. 1	10 29 6	9 29 42	8 7 18	19 56	1 31	-12 51	0 41	-16 29	-1 2	-6 53	1 30	1 47	2 3	-3 28	-0 47	-14 1	-0 25	-18 10	5 16
4	10 29 2	9 29 42	8 7 22	19 41	1 36	-14 45	0 21	-16 25	-1 1	-8 18	1 28	1 40	2 3	-3 29	-0 47	-14 1	-0 25	-18 11	5 15
7	10 28 58	9 29 42	8 7 27	19 26	1 41	-16 32	0 1	-16 21	-1 1	-9 42	1 25	1 33	2 4	-3 31	-0 47	-14 1	-0 25	-18 11	5 15
10	10 28 54	9 29 42	8 7 32	19 12	1 46	-18 11	-0 19	-16 16	-1 1	-11 3	1 22	1 26	2 4	-3 32	-0 47	-14 1	-0 25	-18 12	5 14
13	10 28 51	9 29 43	8 7 37	18 59	1 52	-19 42	-0 39	-16 10	-1 0	-12 22	1 18	1 20	2 5	-3 33	-0 47	-14 1	-0 25	-18 12	5 13
16	10 28 49	9 29 44	8 7 43	18 46	1 58	-21 5	-0 57	-16 4	-1 0	-13 39	1 14	1 14	2 6	-3 34	-0 47	-14 0	-0 25	-18 13	5 13
19	10 28 47	9 29 45	8 7 48	18 34	2 4	-22 18	-1 15	-15 58	-1 0	-14 52	1 9	1 8	2 6	-3 35	-0 46	-14 0	-0 25	-18 14	5 12
22	10 28 45	9 29 47	8 7 54	18 23	2 10	-23 21	-1 32	-15 51	-0 59	-16 2	1 4	1 2	2 7	-3 35	-0 46	-13 59	-0 25	-18 14	5 12
25	10 28 44	9 29 48	8 8 00	18 14	2 16	-24 13	-1 46	-15 43	-0 59	-17 9	0 59	0 57	2 8	-3 36	-0 46	-13 59	-0 25	-18 14	5 11
28	10 28 43	9 29 51	8 8 6	18 6	2 22	-24 55	-1 59	-15 35	-0 59	-18 11	0 53	0 52	2 8	-3 36	-0 46	-13 58	-0 25	-18 15	5 10
दिसं. 1	10 28 42	9 29 53	8 8 12	17 59	2 29	-25 24	-2 9	-15 27	-0 58	-19 9	0 46	0 47	2 9	-3 36	-0 46	-13 57	-0 25	-18 15	5 10
4	10 28 42	9 29 56	8 8 18	17 54	2 36	-25 41	-2 17	-15 18	-0 58	-20 2	0 40	0 43	2 10	-3 36	-0 46	-13 56	-0 25	-18 16	5 10
7	10 28 43	9 29 59	8 8 24	17 51	2 43	-25 46	-2 20	-15 9	-0 58	-20 50	0 33	0 39	2 10	-3 35	-0 46	-13 55	-0 25	-18 16	5 9
10	10 28 44	10 0 2	8 8 30	17 49	2 50	-25 37	-2 20	-14 59	-0 58	-21 33	0 26	0 35	2 11	-3 35	-0 46	-13 54	-0 25	-18 16	5 9
13	10 28 45	10 0 6	8 8 37	17 50	2 57	-25 16	-2 14	-14 49	-0 57	-22 9	0 19	0 32	2 12	-3 34	-0 46	-13 53	-0 25	-18 17	5 8
16	10 28 47	10 0 10	8 8 43	17 53	3 5	-24 42	-2 1	-14 39	-0 57	-22 40	0 12	0 29	2 13	-3 33	-0 45	-13 52	-0 25	-18 17	5 8
19	10 28 50	10 0 14	8 8 50	17 58	3 13	-23 58	-1 41	-14 28	-0 57	-23 5	0 5	0 26	2 14	-3 32	-0 45	-13 50	-0 25	-18 17	5 8
22	10 28 53	10 0 19	8 8 56	18 5	3 20	-23 7	-1 11	-14 16	-0 57	-23 24	-0 3	0 24	2 14	-3 31	-0 45	-13 49	-0 25	-18 17	5 7
25	10 28 56	10 0 23	8 9 3	18 14	3 28	-22 13	-0 30	-14 5	-0 56	-23 36	-0 10	0 22	2 15	-3 30	-0 45	-13 47	-0 25	-18 17	5 7
28	10 29 00	10 0 28	8 9 9	18 26	3 35	-21 22	0 21	-13 53	-0 56	-23 41	-0 17	0 20	2 16	-3 28	-0 45	-13 46	-0 25	-18 18	5 7
31	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (संवत् 2066 वि.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल क्रांति	मंगल शर	बुध क्रांति	बुध शर	गुरु क्रांति	गुरु शर	शुक्र क्रांति	शुक्र शर	शनि क्रांति	शनि शर	यूरेनस क्रांति	यूरेनस शर	नेप्च्यून क्रांति	नेप्च्यून शर	प्लूटो क्रांति	प्लूटो शर
2010 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जन. 3	10 29 5	10 0 35	8 9 18	18 45	3 45	-20 28	1 38	-13 37	-0 56	-23 39	-0 26	0 19	2 17	-3 26	-0 45	-13 43	-0 25	-18 18	5 6
6	10 29 10	10 0 40	8 9 25	19 2	3 53	-20 3	2 31	-13 24	-0 56	-23 29	-0 33	0 18	2 18	-3 24	-0 45	-13 42	-0 25	-18 18	5 6
9	10 29 15	10 0 46	8 9 31	19 21	4 0	-19 51	3 6	-13 11	-0 56	-23 12	-0 39	0 18	2 19	-3 22	-0 45	-13 40	-0 25	-18 18	5 6
12	10 29 21	10 0 52	8 9 37	19 41	4 6	-19 52	3 20	-12 58	-0 56	-22 49	-0 46	0 18	2 20	-3 19	-0 44	-13 38	-0 25	-18 18	5 6
15	10 29 27	10 0 57	8 9 44	20 3	4 12	-20 4	3 14	-12 44	-0 56	-22 20	-0 52	0 18	2 21	-3 17	-0 44	-13 36	-0 25	-18 18	5 6
18	10 29 33	10 1 3	8 9 50	20 25	4 18	-20 25	2 55	-12 30	-0 56	-21 45	-0 57	0 19	2 22	-3 14	-0 44	-13 34	-0 25	-18 18	5 5
21	10 29 40	10 1 10	8 9 56	20 48	4 22	-20 49	2 28	-12 16	-0 55	-21 4	-1 2	0 20	2 22	-3 11	-0 44	-13 32	-0 25	-18 18	5 5
24	10 29 47	10 1 16	8 10 2	21 12	4 26	-21 14	1 58	-12 2	-0 55	-20 17	-1 7	0 22	2 23	-3 9	-0 44	-13 30	-0 25	-18 18	5 5
27	10 29 54	10 1 22	8 10 8	21 34	4 29	-21 35	1 28	-11 47	-0 55	-19 25	-1 12	0 24	2 24	-3 6	-0 44	-13 27	-0 25	-18 17	5 5
30	11 0 2	10 1 29	8 10 14	21 56	4 31	-21 50	0 57	-11 32	-0 55	-18 27	-1 15	0 27	2 25	-3 2	-0 44	-13 25	-0 25	-18 17	5 5
31	11 0 10	10 1 36	8 10 19	22 17	4 32	-21 57	0 28	-11 17	-0 55	-17 25	-1 19	0 29	2 26	-2 59	-0 44	-13 23	-0 25	-18 17	5 5
फर. 1	11 0 12	10 1 38	8 10 21	22 24	4 32	-21 57	0 19	-11 12	-0 55	-17 4	-1 20	0 30	2 26	-2 58	-0 44	-13 22	-0 25	-18 17	5 5
4	11 0 21	10 1 44	8 10 26	22 42	4 31	-21 51	-0 7	-10 57	-0 55	-15 56	-1 23	0 33	2 27	-2 55	-0 44	-13 20	-0 25	-18 17	5 5
7	11 0 29	10 1 51	8 10 31	22 58	4 30	-21 35	-0 32	-10 41	-0 55	-14 44	-1 25	0 37	2 27	-2 51	-0 44	-13 18	-0 25	-18 17	5 5
10	11 0 38	10 1 58	8 10 36	23 13	4 28	-21 9	-0 54	-10 26	-0 55	-13 29	-1 26	0 41	2 28	-2 48	-0 44	-13 15	-0 25	-18 16	5 5
13	11 0 47	10 2 5	8 10 41	23 25	4 25	-20 30	-1 14	-10 10	-0 55	-12 10	-1 27	0 45	2 29	-2 44	-0 43	-13 13	-0 25	-18 16	5 5
16	11 0 57	10 2 12	8 10 46	23 34	4 21	-19 41	-1 31	-9 54	-0 56	-10 48	-1 28	0 49	2 30	-2 40	-0 43	-13 11	-0 25	-18 16	5 5
19	11 1 6	10 2 19	8 10 50	23 42	4 16	-18 39	-1 45	-9 38	-0 56	-9 24	-1 27	0 54	2 30	-2 37	-0 43	-13 9	-0 25	-18 16	5 5
22	11 1 16	10 2 25	8 10 54	23 47	4 11	-17 26	-1 56	-9 22	-0 56	-7 58	-1 27	0 59	2 31	-2 33	-0 43	-13 6	-0 25	-18 15	5 6
25	11 1 25	10 2 32	8 10 58	23 49	4 6	-16 1	-2 4	-9 6	-0 56	-6 29	-1 25	1 4	2 31	-2 29	-0 43	-13 4	-0 25	-18 15	5 6
28	11 1 35	10 2 39	8 11 2	23 50	4 0	-14 24	-2 8	-8 49	-0 56	-5 0	-1 23	1 9	2 32	-2 25	-0 43	-13 2	-0 25	-18 15	5 6
मार्च 1	11 1 39	10 2 41	8 11 3	23 50	3 58	-13 49	-2 9	-8 44	-0 56	-4 29	-1 23	1 11	2 32	-2 23	-0 43	-13 1	-0 25	-18 15	5 6
4	11 1 49	10 2 48	8 11 6	23 48	3 52	-11 57	-2 8	-8 28	-0 56	-2 58	-1 20	1 16	2 32	-2 19	-0 43	-12 59	-0 26	-18 15	5 6
7	11 1 59	10 2 54	8 11 9	23 45	3 46	-9 52	-2 4	-8 11	-0 56	-1 26	-1 17	1 22	2 33	-2 15	-0 43	-12 57	-0 26	-18 14	5 6
10	11 2 9	10 3 1	8 11 12	23 39	3 39	-7 37	-1 55	-7 55	-0 57	0 7	-1 13	1 28	2 33	-2 11	-0 43	-12 54	-0 26	-18 14	5 6
13	11 2 19	10 3 7	8 11 14	23 33	3 33	-5 10	-1 41	-7 39	-0 57	1 39	-1 9	1 33	2 33	-2 7	-0 43	-12 52	-0 26	-18 14	5 7
16	11 2 30	10 3 13	8 11 17	23 25	3 27	-2 34	-1 22	-7 22	-0 57	3 12	-1 4	1 39	2 34	-2 3	-0 43	-12 50	-0 26	-18 14	5 7
19	11 2 40	10 3 20	8 11 19	23 15	3 20	0 9	-0 59	-7 6	-0 57	4 43	-0 59	1 45	2 34	-1 59	-0 43	-12 48	-0 26	-18 13	5 7
22	11 2 50	10 3 26	8 11 20	23 5	3 14	2 58	-0 30	-6 50	-0 58	6 14	-0 53	1 51	2 34	-1 55	-0 43	-12 46	-0 26	-18 13	5 7
25	11 3 0	10 3 31	8 11 22	22 53	3 8	5 48	0 2	-6 34	-0 58	7 44	-0 47	1 56	2 34	-1 51	-0 43	-12 44	-0 26	-18 13	5 7
28	11 3 11	10 3 37	8 11 23	22 40	3 2	8 33	0 37	-6 17	-0 58	9 12	-0 40	2 2	2 34	-1 47	-0 43	-12 42	-0 26	-18 12	5 8
31	11 3 21	10 3 43	8 11 24	22 26	2 56	11 7	1 13	-6 1	-0 58	10 38	-0 33	2 8	2 34	-1 43	-0 43	-12 40	-0 26	-18 12	5 8

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र चरण–चार (1 जनवरी, 2009 से 31 मार्च, 2010 ई. तक)

सूर्य–चार (सन् 2009–10 ई.)

तारीख 2009 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 1		पू.षा.	2	4 23
4		पू.षा.	3	10 52
7		पू.षा.	4	17 22
10		उ.षा.	1	23 54
14	मकर	उ.षा.	2	6 27
17		उ.षा.	3	13 00
20		उ.षा.	4	19 35
24		श्रव.	1	2 12
27		श्रव.	2	8 51
30		श्रव.	3	15 35
फरवरी 2		श्रव.	4	22 23
6		धनि.	1	5 17
9		धनि.	2	12 18
12	कुम्भ	धनि.	3	19 24
16		धनि.	4	2 35
19		शत.	1	9 52
22		शत.	2	17 14
26		शत.	3	0 43
मार्च 1		शत.	4	8 19
4		पू.भा.	1	16 04
7		पू.भा.	2	23 59
11		पू.भा.	3	8 03
14	मीन	पू.भा.	4	16 16
18		उ.भा.	1	0 36
21		उ.भा.	2	9 05
24		उ.भा.	3	17 41
28		उ.भा.	4	2 27
31		रेव.	1	11 22
अप्रैल 3		रेव.	2	20 27
7		रेव.	3	5 44
10		रेव.	4	15 11

तारीख 2009 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
अप्रैल 14	मेष	अश्वि.	1	0 47
17		अश्वि.	2	10 31
20		अश्वि.	3	20 23
24		अश्वि.	4	6 24
27		भर.	1	16 33
31		भर.	2	2 52
मई 4		भर.	3	13 21
7		भर.	4	23 59
11		कृत्ति.	1	10 46
14	वृष	कृत्ति.	2	21 40
18		कृत्ति.	3	8 40
21		कृत्ति.	4	19 46
25		रोहि.	1	6 58
28		रोहि.	2	18 16
जून 1		रोहि.	3	5 41
4		रोहि.	4	17 13
8		मृग.	1	4 51
11		मृग.	2	16 32
15	मिथुन	मृग.	3	4 17
18		मृग.	4	16 03
22		आर्द्रा	1	3 51
25		आर्द्रा	2	15 41
29		आर्द्रा	3	3 33
जुलाई 2		आर्द्रा	4	15 27
6		पुन.	1	3 24
9		पुन.	2	15 20
13		पुन.	3	3 15
16	कर्क	पुन.	4	15 08
20		पुष्य	1	2 57
23		पुष्य	2	14 43
27		पुष्य	3	2 27

तारीख 2009 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जुलाई 30		पुष्य	4	14 08
अगस्त 3		आश्ले.	1	1 46
6		आश्ले.	2	13 21
10		आश्ले.	3	0 51
13		आश्ले.	4	12 14
16	सिंह	मघा	1	23 29
20		मघा	2	10 38
23		मघा	3	21 39
27		मघा	4	8 34
30		पू.फा.	1	19 22
सितम्बर 3		पू.फा.	2	6 04
6		पू.फा.	3	16 38
10		पू.फा.	4	3 03
13		उ.फा.	1	13 18
16	कन्या	उ.फा.	2	23 23
20		उ.फा.	3	9 19
23		उ.फा.	4	19 05
27		हस्त	1	4 43
30		हस्त	2	14 13
अक्तूबर 3		हस्त	3	23 35
7		हस्त	4	8 47
10		चित्रा	1	17 49
14		चित्रा	2	2 40
17	तुला	चित्रा	3	11 21
20		चित्रा	4	19 52
24		स्वाती	1	4 15
27		स्वाती	2	12 30
30		स्वाती	3	20 37
नवम्बर 3		स्वाती	4	4 37
6		विशा.	1	12 28
9		विशा.	2	20 11

तारीख 2009 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
नवम्बर 13		विशा.	3	3 45
16	वृश्चिक	विशा.	4	11 11
19		अनु.	1	18 29
23		अनु.	2	1 41
26		अनु.	3	8 49
29		अनु.	4	15 52
दिसम्बर 2		ज्येष्ठा	1	22 50
6		ज्येष्ठा	2	5 43
9		ज्येष्ठा	3	12 31
12		ज्येष्ठा	4	19 13
16	धनु	मूल	1	1 52
19		मूल	2	8 27
22		मूल	3	15 00
25		मूल	4	21 32
29		पू.षा.	1	4 04
(सन् 2010 ई.)				
जनवरी 1		पू.षा.	2	10 36
4		पू.षा.	3	17 07
7		पू.षा.	4	23 38
11		उ.षा.	1	6 08
14	मकर	उ.षा.	2	12 38
17		उ.षा.	3	19 09
21		उ.षा.	4	1 44
24		श्रव.	1	8 22
27		श्रव.	2	15 04
30		श्रव.	3	21 51
फरवरी 3		श्रव.	4	4 42
6		धनि.	1	11 36
9		धनि.	2	18 35
13	कुम्भ	धनि.	3	1 38
16		धनि.	4	8 46

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र चरण–चार (1 जनवरी, 2009 से 31 मार्च, 2010 ई. तक)

सूर्य–चार (सन् 2010)

तारीख 2010 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
फरवरी 19		शत.	1	16 02
22		शत.	2	23 25
26		शत.	3	6 57
मार्च 1		शत.	4	14 37
4		पू.भा.	1	22 24
8		पू.भा.	2	6 18
11		पू.भा.	3	14 20
14	मीन	पू.भा.	4	22 29
18		उ.भा.	1	6 47
21		उ.भा.	2	15 14
24		उ.भा.	3	23 52
28		उ.भा.	4	8 40
31		रेव.	1	17 38

मंगल–चार (सन् 2009 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
जनवरी 1		मूल	4	20 20
6		पू.षा.	1	6 21
10		पू.षा.	2	15 57
15		पू.षा.	3	1 09
19		पू.षा.	4	9 56
23		उ.षा.	1	18 21
28	मकर	उ.षा.	2	2 26
फरवरी 1		उ.षा.	3	10 13
5		उ.षा.	4	17 43
10		श्रव.	1	0 59
14		श्रव.	2	8 01
18		श्रव.	3	14 50
22		श्रव.	4	21 26
27		धनि.	1	3 54
मार्च 3		धनि.	2	10 16
7	कुम्भ	धनि.	3	16 32

मंगल–चार (सन् 2009–2010 ई.)

तारीख 2009 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
मार्च 11		धनि.	4	22 46
16		शत.	1	4 56
20		शत.	2	11 05
24		शत.	3	17 15
28		शत.	4	23 27
अप्रैल 2		पू.भा.	1	5 46
6		पू.भा.	2	12 12
10		पू.भा.	3	18 47
15	मीन	पू.भा.	4	1 32
19		उ.भा.	1	8 27
23		उ.भा.	2	15 36
27		उ.भा.	3	23 01
मई 2		उ.भा.	4	6 45
6		रेव.	1	14 50
10		रेव.	2	23 17
15		रेव.	3	8 07
19		रेव.	4	17 20
24	मेष	अश्वि.	1	3 01
28		अश्वि.	2	13 13
जून 1		अश्वि.	3	23 58
6		अश्वि.	4	11 17
10		भर.	1	23 13
15		भर.	2	11 46
20		भर.	3	0 58
24		भर.	4	14 54
29		कृत्ति.	1	5 38
जुलाई 3	वृष	कृत्ति.	2	21 12
8		कृत्ति.	3	13 38
13		कृत्ति.	4	6 58
18		रोहि.	1	1 14

तारीख 2009 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जुलाई 22		रोहि.	2	20 32
27		रोहि.	3	16 58
अगस्त 1		रोहि.	4	14 36
6		मृग.	1	13 30
11		मृग.	2	13 45
16	मिथुन	मृग.	3	15 25
21		मृग.	4	18 41
26		आर्द्रा	1	23 44
सितम्बर 1		आर्द्रा	2	6 45
6		आर्द्रा	3	15 54
12		आर्द्रा	4	3 23
17		पुन.	1	17 33
23		पुन.	2	10 53
29		पुन.	3	7 56
अक्तूबर 5	कर्क	पुन.	4	9 17
11		पुष्य	1	15 49
18		पुष्य	2	4 54
25		पुष्य	3	2 39
नवम्बर 1		पुष्य	4	12 08
9		आश्ले.	1	14 41
18		आश्ले.	2	22 12
30		आश्ले.	3	22 48
दिसम्बर 20	वक्री			18 57
सन् 2010				
जनवरी 8		आश्ले.	2	12 31
19		आश्ले.	1	5 27
27		पुष्य	4	20 55
फरवरी 5		पुष्य	3	7 15
14		पुष्य	2	21 17
मार्च 3		पुष्य	1	5 28
10	मार्गी			22 39
18		पुष्य	2	21 11

बुध–चार (सन् 2009 ई.)

तारीख 2009 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 2		उ.षा.	4	3 53
5		श्रव.	1	3 02
9		श्रव.	2	19 06
11	वक्री			22 15
14		श्रव.	1	0 03
18		उ.षा.	4	5 51
20		उ.षा.	3	22 56
23		उ.षा.	2	14 25
26	धनु	उ.षा.	1	21 18
फरवरी 1	मार्गी			12 41
7	मकर	उ.षा.	2	21 42
12		उ.षा.	3	3 30
15		उ.षा.	4	11 57
18		श्रव.	1	11 14
21		श्रव.	2	5 03
23		श्रव.	3	19 00
26		श्रव.	4	6 14
28		धनि.	1	15 08
मार्च 2		धनि.	2	22 12
5	कुम्भ	धनि.	3	3 40
7		धनि.	4	7 38
मार्च 9		शत.	1	10 16
11		शत.	2	11 40
13		शत.	3	11 55
15		शत.	4	11 03
17		पू.भा.	1	9 09
19		पू.भा.	2	6 15
21		पू.भा.	3	2 23
22	मीन	पू.भा.	4	21 35
24		उ.भा.	1	15 57
26		उ.भा.	2	9 32

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र चरण–चार (1 जनवरी, 2009 से 31 मार्च, 2010 ई. तक)

बुध–चार (सन् 2009–10 ई.)

तारीख 2009 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)	तारीख 2009 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)	तारीख 2009 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)	तारीख 2009 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
मार्च 28		उ.भा.	3	2 22	जून 29		मृग.	2	3 01	अगस्त 31		हस्त	1	9 22	नवम्बर 25		ज्येष्ठा	2	7 42
29		उ.भा.	4	18 31	30	मिथुन	मृग.	3	22 35	सितम्बर 7	वक्री			10 15	27		ज्येष्ठा	3	12 11
31		रेव.	1	10 08	जुलाई 2		मृग.	4	16 21	13		उ.फा.	4	20 37	29		ज्येष्ठा	4	16 58
अप्रैल 2		रेव.	2	1 16	4		आर्द्रा	1	8 41	17		उ.फा.	3	17 12	दिसम्बर 1	धनु	मूल	1	22 04
3		रेव.	3	16 05	5		आर्द्रा	2	23 48	20		उ.फा.	2	21 23	4		मूल	2	3 37
5		रेव.	4	6 44	7		आर्द्रा	3	14 03	24	सिंह	उ.फा.	1	8 22	6		मूल	3	9 50
6	मेष	अश्वि.	1	21 24	9		आर्द्रा	4	3 42	29	मार्गी			18 45	8		मूल	4	17 00
8		अश्वि.	2	12 18	10		पुन.	1	16 56	अक्तूबर 5	कन्या	उ.फा.	2	3 41	11		पू.षा.	1	1 35
10		अश्वि.	3	3 41	12		पुन.	2	6 01	8		उ.फा.	3	8 11	13		पू.षा.	2	12 36
11		अश्वि.	4	19 58	13		पुन.	3	19 07	10		उ.फा.	4	20 27	16		पू.षा.	3	3 39
13		भर.	1	13 30	15	कर्क	पुन.	4	8 25	13		हस्त	1	2 21	19		पू.षा.	4	3 09
15		भर.	2	8 49	16		पुष्य	1	22 05	15		हस्त	2	4 51	23		उ.षा.	1	4 41
17		भर.	3	6 40	18		पुष्य	2	12 16	17		हस्त	3	5 29	26	वक्री			20 08
19		भर.	4	8 12	20		पुष्य	3	3 04	19		हस्त	4	5 07	30		पू.षा.	4	6 00
21		कृत्ति.	1	15 02	21		पुष्य	4	18 41	21		चित्रा	1	4 15	(सन् 2010 ई.)				
24	वृष	कृत्ति.	2	5 47	23		आश्ले.	1	11 09	23		चित्रा	2	3 14	जनवरी 2		पू.षा.	3	16 47
27		कृत्ति.	3	11 46	25		आश्ले.	2	4 34	25	तुला	चित्रा	3	2 18	5		पू.षा.	2	6 12
मई 2		कृत्ति.	4	11 56	26		आश्ले.	3	23 09	27		चित्रा	4	1 35	7		पू.षा.	1	19 38
7	वक्री			10 30	28		आश्ले.	4	18 53	29		स्वाती	1	1 11	11		मूल	4	3 14
12		कृत्ति.	3	16 12	30	सिंह	मघा	1	15 55	31		स्वाती	2	1 11	15	मार्गी			22 22
19		कृत्ति.	2	2 48	अगस्त 1		मघा	2	14 21	नवम्बर 2		स्वाती	3	1 36	21		पू.षा.	1	7 33
25	मेष	कृत्ति.	1	15 26	3		मघा	3	14 19	4		स्वाती	4	2 27	25		पू.षा.	2	14 52
31	मार्गी			6 53	5		मघा	4	15 57	6		विशा.	1	3 45	28		पू.षा.	3	23 00
जून 5	वृष	कृत्ति.	2	18 14	7		पू.फा.	1	19 27	8		विशा.	2	5 29	31		पू.षा.	4	21 46
11		कृत्ति.	3	7 39	10		पू.फा.	2	1 01	10		विशा.	3	7 37	फरवरी 3		उ.षा.	1	15 15
15		कृत्ति.	4	0 01	12		पू.फा.	3	9 01	12	वृश्चिक	विशा.	4	10 09	6	मकर	उ.षा.	2	5 16
18		रोहि.	1	0 17	14		पू.फा.	4	19 56	14		अनु.	1	13 01	8		उ.षा.	3	16 36
20		रोहि.	2	15 18	17		उ.फा.	1	10 21	16		अनु.	2	16 13	11		उ.षा.	4	1 58
23		रोहि.	3	0 09	20	कन्या	उ.फा.	2	5 24	18		अनु.	3	19 42	13		श्रव.	1	9 39
25		रोहि.	4	4 27	23		उ.फा.	3	7 12	20		अनु.	4	23 27	15		श्रव.	2	15 53
27		मृग.	1	5 10	26		उ.फा.	4	20 05	23		ज्येष्ठा	1	3 27	17		श्रव.	3	20 52

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र चरण–चार (1 जनवरी, 2009 से 31 मार्च, 2010 ई. तक)

बुध–चार (सन् 2010 ई.)

तारीख 010 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
रवरी 20		श्रव.	4	0 41
22		धनि.	1	3 24
24		धनि.	2	5 05
26	कुम्भ	धनि.	3	5 46
28		धनि.	4	5 30
मार्च 2		शत.	1	4 17
4		शत.	2	2 10
5		शत.	3	23 11
7		शत.	4	19 22
9		पू.भा.	1	14 45
11		पू.भा.	2	9 24
13		पू.भा.	3	3 21
14	मीन	पू.भा.	4	20 39
16		उ.भा.	1	13 26
18		उ.भा.	2	5 47
19		उ.भा.	3	21 48
21		उ.भा.	4	13 42
23		रेव.	1	5 39
24		रेव.	2	21 57
26		रेव.	3	14 55
28		रेव.	4	8 56
30	मेष	अश्वि.	1	4 38

गुरु–चार (सन् 2009 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
जनवरी 8		उ.षा.	4	16 30
22		श्रव.	1	20 24
फरवरी 5		श्रव.	2	23 03
22		श्रव.	3	7 09
मार्च 7		श्रव.	4	4 15
23		धनि.	1	1 42
अप्रैल 9		धनि.	2	20 16
मई 1	कुम्भ	धनि.	3	18 38
जून 15	वक्री			13 20

गुरु–चार (सन् 2009–10 ई.)

तारीख 2009 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जुलाई 30	मकर	धनि.	2	19 50
अगस्त 25		धनि.	1	20 48
अक्तूबर 3		श्रव.	4	11 20
13	मार्गी			10 00
23		धनि.	1	8 06
नवम्बर 29		धनि.	2	12 29
दिसम्बर 20	कुम्भ	धनि.	3	0 15
(सन् 2010 ई.)				
जनवरी 5		धनि.	4	23 29
21		शत.	1	7 21
फरवरी 4		शत.	2	18 07
18		शत.	3	17 43
मार्च 4		शत.	4	13 11
18		पू.भा.	1	10 11

शुक्र–चार (सन् 2009 ई.)

तारीख 2009 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 1		धनि.	4	7 03
4		शत.	1	8 33
7		शत.	2	11 05
10		शत.	3	14 47
13		शत.	4	19 52
17		पू.भा.	1	2 34
20		पू.भा.	2	11 12
23		पू.भा.	3	22 09
27	मीन	पू.भा.	4	12 01
31		उ.भा.	1	5 36
फरवरी 4		उ.भा.	2	4 13
8		उ.भा.	3	9 56
13		उ.भा.	4	2 37
18		रेव.	1	14 43
26		रेव.	2	5 21
मार्च 6	वक्री			22 48
मार्च 15		रेव.	1	8 21
22		उ.भा.	4	11 07
27		उ.भा.	3	22 27
अप्रैल 2		उ.भा.	2	9 56
9		उ.भा.	1	13 44
18	मार्गी			0 54
26		उ.भा.	2	21 22
मई 4		उ.भा.	3	16 43
10		उ.भा.	4	8 25
15		रेव.	1	4 21
19		रेव.	2	13 17
23		रेव.	3	15 07
27		रेव.	4	11 56
31	मेष	अश्वि.	1	5 02
जून 3		अश्वि.	2	19 12
7		अश्वि.	3	7 01
10		अश्वि.	4	16 51
14		भर.	1	1 03
17		भर.	2	7 50
20		भर.	3	13 26
23		भर.	4	18 01
26		कृत्ति.	1	21 43
30	वृष	कृत्ति.	2	0 38
जुलाई 3		कृत्ति.	3	2 51
6		कृत्ति.	4	4 25
9		रोहि.	1	5 23
12		रोहि.	2	5 48
15		रोहि.	3	5 44
18		रोहि.	4	5 11
21		मृग.	1	4 13
24		मृग.	2	2 52
जुलाई 27	मिथुन	मृग.	3	1 10
29		मृग.	4	23 08
अगस्त 1		आर्द्रा	1	20 46
4		आर्द्रा	2	18 07
7		आर्द्रा	3	15 09
10		आर्द्रा	4	11 54
13		पुन.	1	8 22
16		पुन.	2	4 35
19		पुन.	3	0 32
21	कर्क	पुन.	4	20 16
24		पुष्य	1	15 46
27		पुष्य	2	11 04
30		पुष्य	3	6 09
सितम्बर 2		पुष्य	4	1 03
4		आश्ले.	1	19 45
7		आश्ले.	2	14 15
10		आश्ले.	3	8 34
13		आश्ले.	4	2 42
15	सिंह	मघा	1	20 39
18		मघा	2	14 27
21		मघा	3	8 05
24		मघा	4	1 36
26		पू.फा.	1	18 58
29		पू.फा.	2	12 12
अक्तूबर 2		पू.फा.	3	5 19
4		पू.फा.	4	22 18
7		उ.फा.	1	15 11
10	कन्या	उ.फा.	2	7 56
13		उ.फा.	3	0 35
15		उ.फा.	4	17 07
18		हस्त	1	9 34

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र चरण–चार (1 जनवरी, 2009 से 31मार्च, 2010 ई. तक)

शुक्र–चार (सन् 2009–10 ई.)

तारीख 2009 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
अक्तूबर 21		हस्त	2	1 56
23		हस्त	3	18 13
26		हस्त	4	10 27
29		चित्रा	1	2 36
31		चित्रा	2	18 42
नवम्बर 3	तुला	चित्रा	3	10 44
6		चित्रा	4	2 43
8		स्वाती	1	18 38
11		स्वाती	2	10 30
14		स्वाती	3	2 20
16		स्वाती	4	18 07
19		विशा.	1	9 52
22		विशा.	2	1 35
24		विशा.	3	17 17
27	वृश्चिक	विशा.	4	8 58
30		अनु.	1	0 38
दिसम्बर 2		अनु.	2	16 16
5		अनु.	3	7 54
7		अनु.	4	23 31
10		ज्येष्ठा	1	15 07
13		ज्येष्ठा	2	6 41
15		ज्येष्ठा	3	22 15
18		ज्येष्ठा	4	13 49
21	धनु	मूल	1	5 23
23		मूल	2	20 57
26		मूल	3	12 31
29		मूल	4	4 05
31		पू.षा.	1	19 40
(सन् 2010 ई.)				
जनवरी 3		पू.षा.	2	11 15
6		पू.षा	3	2 50

तारीख 2010 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 8		पू.षा.	4	18 25
11		उ.षा.	1	10 01
14	मकर	उ.षा.	2	1 37
16		उ.षा.	3	17 13
19		उ.षा.	4	8 50
22		श्रव.	1	0 29
24		श्रव.	2	16 09
27		श्रव.	3	7 50
29		श्रव.	4	23 33
फरवरी 1		धनि.	1	15 17
4		धनि.	2	7 03
6	कुम्भ	धनि.	3	22 50
9		धनि.	4	14 39
12		शत.	1	6 29
14		शत.	2	22 21
17		शत.	3	14 16
20		शत.	4	6 13
22		पू.भा.	1	22 13
25		पू.भा.	2	14 16
28		पू.भा.	3	6 22
मार्च 2	मीन	पू.भा.	4	22 31
5		उ.भा.	1	14 43
8		उ.भा.	2	6 59
10		उ.भा.	3	23 17
13		उ.भा.	4	15 39
16		रेव.	1	8 04
19		रेव.	2	0 34
21		रेव.	3	17 07
24		रेव.	4	9 45
27	मेष	अश्वि.	1	2 28
29		अश्वि.	2	19 16

शनि–चार (सन् 2009–10 ई.)

तारीख 2009 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
फरवरी 5		पू.फा.	4	17 41
मार्च 22		पू.फा.	3	13 11
मई 17	मार्गी			7 37
जुलाई 10		पू.फा.	4	19 38
अगस्त 13		उ.फा.	1	4 45
सितम्बर 9	कन्या	उ.फा.	2	24 00
अक्तूबर 6		उ.फा.	3	21 41
नवम्बर 5		उ.फा.	4	5 25
दिसम्बर 17		हस्त	1	22 37
(सन् 2010 ई.)				
जनवरी 13	वक्री			21 28
फरवरी 10		उ.फा	4	1 21
मार्च 30		उ.फा	3	2 43

राहु–चार (सन् 2009 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
जनवरी 6		श्रव.	2	23 38
मार्च 10		श्रव.	1	21 14
मई 12		उ.षा.	4	19 21
जुलाई 14		उ.षा.	3	16 40
सितम्बर 15		उ.षा.	2	14 21
नवम्बर 17	धनु	उ.षा	1	12 09
(सन् 2010 ई.)				
जनवरी 19		पू.षा.	4	9 28
मार्च 23		पू.षा	3	7 14

केतु–चार (सन् 2009 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
जनवरी 6		पुष्य	4	23 38
मार्च 10		पुष्य	3	21 14
मई 12		पुष्य	2	19 21
जुलाई 14		पुष्य	1	16 40
सितम्बर 15		पुन.	4	14 21
नवम्बर 17	मिथुन	पुन.	3	12 09

केतू–चार (सन् 2010 ई.)

तारीख 2010 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 19		पुन.	2	9 28
मार्च 23		पुन.	1	7 14

यूरेनस–चार (सन् 2009 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
फरवरी 5		पू.भा.	3	15 01
अप्रैल 6	मीन	पू.भा.	4	23 45
जुलाई 1	वक्री			13 08
अक्तूबर 3	कुम्भ	पू.भा.	3	22 51
दिसम्बर 2	मार्गी			1 59
(सन् 2010 ई.)				
जनवरी 27	मीन	पू.भा.	4	13 15
मार्च 31		उ.भा.	1	0 03

नेप्च्यून–चार (सन् 2009 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
फरवरी 14	कुम्भ	धनि.	3	2 31
मई 29	वक्री			10 02
अक्तूबर 2		धनि.	2	4 50
नवम्बर 4	मार्गी			23 43
दिसम्बर 8	कुम्भ	धनि.	3	2 06
(सन् 2010 ई.)				
मार्च 19		धनि.	4	10 16

प्लूटो–चार (सन् 2009 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
अप्रैल 4	वक्री			23 03
सितम्बर 3		मूल	2	10 46
सितम्बर 11	मार्गी			22 25
सितम्बर 20		मूल	3	6 11
(सन् 2010 ई.)				
जनवरी 21		मूल	4	5 24

ग्रहों के वक्र / मार्ग, उदयास्त अगले पृष्ठ पर देखें।

(सन् 2010 ई.)			24	रेव.	4	9 45	जुलाई 14		पुष्य	1	16 40
जनवरी 3	पू.षा.	2 11 15									
6	पू.षा	3 2 50	29	अश्वि.	2	19 16	नवम्बर 17	मिथुन	पुन.	3	12 09

ग्रहों के वक्र/मार्ग, उदयास्त अगले पृष्ठ पर देखें।

ग्रहों के वक्र–मार्ग/उदयास्त की तारीखें

(1 जनवरी, सन् 2009 ई. से 15 मार्च, 2010 ई. तक)

ग्रह	वक्र/मार्ग	तारीख	ग्रह	उदय/अस्त	तारीख
मंगल	वक्री	20 दिसं., 2009 ई.	मंगल	इसवर्ष (सं. 2066 वि. में) मंगल अस्त नहीं होगा।	
मंगल	मार्गी	10 मार्च, 2010 ई.			
बुध	वक्री	11 जन., 2009 ई.	बुध	प. में अस्त	14 जन., 2009 ई.
बुध	मार्गी	1 फर., 2009 ई.	बुध	पू. में उदित	27 जन., 2009 ई.
बुध	वक्री	7 मई, 2009 ई.	बुध	पू. में अस्त	16 मार्च, 2009 ई.
बुध	मार्गी	31 मई, 2009 ई.	बुध	प. में उदित	12 अप्रै., 2009 ई.
बुध	वक्री	7 सितं., 2009 ई.	बुध	प. में अस्त	8 मई, 2009 ई.
बुध	मार्गी	29 सितं., 2009 ई.	बुध	पू. में उदित	27 मई, 2009 ई.
बुध	वक्री	26 दिसं., 2009 ई.	बुध	पू. में अस्त	2 जुला., 2009 ई.
बुध	मार्गी	15 जन., 2010 ई.	बुध	प. में उदित	26 जुला., 2009 ई.
गुरु	वक्री	15 जून, 2009 ई.	बुध	प. में अस्त	13 सितं., 2009 ई.
गुरु	मार्गी	13 अक्तू. 2009 ई.	बुध	पू. में उदित	27 सितं., 2009 ई.
शुक्र	वक्री	6 मार्च, 2009 ई.	बुध	पू. में अस्त	16 अक्तू., 2009 ई.
शुक्र	मार्गी	18 अप्रै., 2009 ई.	बुध	प. में उदित	28 नवं., 2009 ई.
शनि	मार्गी	17 मई, 2009 ई.	बुध	प. में अस्त	29 दिसं., 2009 ई.
शनि	वक्री	13 जन., 2010 ई.	बुध	पू. में उदित	10 जन., 2010 ई.
यूरेनस	वक्री	1 जुला., 2009 ई.	बुध	पू. में अस्त	26 फर., 2010 ई.
यूरेनस	मार्गी	2 दिसं., 2009 ई.	गुरु	अस्त	11 जन., 2009 ई.
नेप्च्यून	वक्री	29 मई, 2009 ई.	गुरु	उदित	10 फर., 2009 ई.
नेप्च्यून	मार्गी	4 नवं., 2009 ई.	गुरु	अस्त	18 फर., 2010 ई.
प्लूटो	वक्री	4 अप्रै., 2009 ई.	गुरु	उदित	20 मार्च, 2010 ई.
प्लूटो	मार्गी	11 सितं., 2009 ई.	शुक्र	प. में अस्त	25 मार्च, 2009 ई.
			शुक्र	पू. में उदित	28 मार्च, 2009 ई.
			शुक्र	पू. में अस्त	17 दिसं., 2009 ई.
			शुक्र	प. में उदित	3 फर., 2010 ई.
			शनि	अस्त	31 अग., 2009 ई.
			शनि	उदित	6 अक्तू., 2009 ई.

विश्व के नगरों का सूर्योदयास्तकाल

(प्रो. प्रियव्रत शर्मा द्वारा रचित "गणकमार्त्तण्ड" से उद्धृत)

आज के इस वैज्ञानिक युग में जहां वायुयान जैसे द्रुतगति वाहनों, रेडियो, टी. वी., Wireless, Fax आदि के प्रयोग ने राष्ट्र के नगरों, ग्रामों की दूरी को लगभग समाप्त ही कर डाला है, वहां स्थानीयकाल (या स्थानीय मध्यमकाल L.M.T.) का प्रयोग अनेक समस्याएं उत्पन्न करता है। क्योंकि यह काल प्रत्येक स्थान (नगर–ग्राम) के लिए लगभग भिन्न–भिन्न होता है, अतः आज के वैज्ञानिक नक्षत्रविदों ने एक ऐसे काल का सिद्धान्त अपनाया है, जो एक राष्ट्र के नगरों, ग्रामों मे एकरूप में प्रयुक्त होता है। इसी काल को स्टैण्डर्ड टाईम का नाम दिया गया है। अब विश्व के सभी राष्ट्रों मे स्टैं. टा. (स्टैण्डर्ड टाईम) का ही सर्वत्र प्रयोग होता है। प्रत्येक राष्ट्र अपने क्षेत्र (Area) के किसी लगभग मध्यस्थान (केन्द्रस्थल) के स्थानीयकाल(स्था.म.का.) को, जिसे उस देश का स्टैण्डर्ड टाईम कहा जाता है, अपने समस्त प्रान्तों, नगरों, ग्रामों में सभी जगह एकरूप में प्रयोग में लाता है और उसी काल को उस देश की सभी घड़ियां बतलाती हैं। जैसे–भारत का केन्द्रस्थल, जहां का स्था.म.का. (स्थानीय मध्यमकाल) पूरे भारत में भा. स्टैं. टा. के रूप में प्रयुक्त होता है, 82°/30' (पूर्व) रेखांश वाला स्थल है। जिस स्थल का स्था. म. का. स्टैण्डर्ड टाईम के रूप में इस्तेमाल किया जाता है, उस स्थल के रेखांश (Longitude) को उस देश की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (Standard Time Meridian) कहा जाता है। इस प्रकार भारत की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन का रेखांश 82°/30' (पूर्व) है।

क्योंकि सभी जनव्यवहार स्टैं. टा. के अनुसार ही होता है, रेलगाड़ियां, वायुयान, टी.वी., रेडियो, ऑफिस, कालेज, स्कूल आदि से सम्बद्ध शत–प्रतिशत कालव्यवहार में इसी (स्टैं.टा.) को ही सरकार एवं जनसाधारण प्रयोग में लाते हैं, अतः यह भी आवश्यक है कि, सूर्योदय, सूर्यास्त को बतलाने वाला काल भी, भले ही वह किसी स्थान (नगर, ग्राम) विशेष से ही सम्बन्ध रखता है, इसी स्टैं. टा. में ही प्रयुक्त किया जाए, अन्यथा इस के लिए स्था.म.का. को प्रयुक्त करने पर इसके (सूर्योदयास्त के) काल का स्टैं. टा. से (जिसे हमारी सभी घड़ियां बतलाती हैं) समन्वय (co-ordination) नहीं हो पाएगा। उदाहरणार्थ – यदि हम प्रत्येक नगर–ग्राम का सूर्योदय, सूर्यास्त उस नगर–ग्राम के स्थानीयकाल में ही इस्तेमाल करने लग जाएं तो [illegible]

अतः सूर्योदय, सूर्यास्त जैसी स्थानीय घटनाओं को भी हम स्टैं. टा. में ही प्रकट करते हैं, ताकि हम इन स्थानीय आकाशीय घटनाओं के काल को भी अपनी इन (स्टैं. टा. बतलाने वाली) घड़ियों से जान सकें । प्रत्येक देश में रहने वाले लोगों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली घड़ियां उस देश के स्टैं. टा. को ही बतलाया करती हैं,–यह ध्यान में रखें। जैसे–भारतीय जनता द्वारा प्रयोग में लाई जा रही घड़ियां भा.स्टैं.टा. को और जापान की जनता द्वारा प्रयोग में लाई जा रही घड़ियां जापानी स्टैं. टा. को बतलाती हैं।

विश्व के किसी भी नगर का सूर्योदय, सूर्यास्तकाल स्टैं. टा. में जानने के लिए सबसे पहले हमें निम्नलिखित तीन पदार्थ ज्ञात होने चाहिएः–

(1) अभीष्ट नगर के अक्षांश, रेखांश ।

(2) अभीष्ट नगर, जिस देश में स्थित है, उस देश की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन।

(3) अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर ।

इन तीनों पदार्थों को ज्ञात करने का प्रकार यह है :–

(1) नगर के अक्षांश–रेखांश :– अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश–रेखांश किसी प्रामाणिक एटलस से ज्ञात करने होंगे। इसके लिए ऑक्सफोर्ड, मैकमिलन, Britannica एवम् Philip's आदि के एटलसों का प्रयोग किया जा सकता है। इन एटलसों के अन्त में विश्व के प्रसिद्ध–प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांशों की सूची दी रहती है। यहां हमने आगे अलग से भारत के सभी लगभग 1,000 प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश दिए हैं। यहां विदेशी प्रसिद्ध कुछ नगरों के अक्षांश, रेखांश भी अलग से दिए गए हैं।

(2) देश की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन :– यहां आगे हमने 'स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी' दी है। इसमें विश्व के खास–खास अनेक देशों के स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियनों के रेखांश दिए गए हैं। इससे अपने अभीष्ट देश की स्टैं. मेरिडियन के रेखांश ज्ञात कर लें । जैसे–जापान की स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांश, जैसा कि सारणी में लिखा है, 135 अंश 00 कला (पूर्व)

है। अर्थात् जापान में सर्वत्र प्रयोग में लाया जाने वाला जापानी स्टैं. टा. इसी रेखांश वाले स्थान का स्था.म.का. है।

अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया आदि बड़े–बड़े देशों को सुविधार्थ चार–चार, पांच–पांच आदि कालक्षेत्रों (Time Zones) में बांटा गया है। इन कालक्षेत्रों में अलग–अलग स्टैं.टा. प्रयोग में आते हैं। जैसे– अमेरिका 4 कालक्षेत्रों में बंटा है। इन कालक्षेत्रों में इस्तेमाल होने वाले कालों (स्टैं. टा) के नाम ये हैं :–

(1) E.T.(Eastern Time)
(2) C.T. (Central Time)
(3) M.T. (Mountain Time)
(4) P.T. (Pacific Time)

यहां दी गई 'स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी' में इन बड़े देशों के कालक्षेत्रों की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियनों के रेखांश अलग–अलग दिए गए हैं। किस कालक्षेत्र में कौन–कौन से नगर/प्रदेश पड़ते हैं, यह जानना भी जरूरी है। जैसे–अमेरिका के कैलिफोर्निया, नेवाडा आदि राज्य 'P.T.' कालक्षेत्र में और डेलावेयर, फ्लोरिडा आदि 'E.T.' कालक्षेत्र में पड़ते हैं। सभी बड़े देशों (अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया आदि) के भिन्न–भिन्न कालक्षेत्रों में पड़ने वाले प्रदेशों का विस्तृत विवरण हमने अपनी **'विश्वलग्न सारणी'** पुस्तक में दिया है। इन बड़े देशों मे उत्पन्न बच्चे की जन्मपत्री आदि बनाने हेतु वहां के सूर्योदयास्त आदि का स्टैं. टा. जानने के लिए यह ज्ञात करना जरूरी है कि– वह नगर उस बड़े देश के किस ' कालक्षेत्र ' में पड़ता है। उसका कालक्षेत्र जानकर उस कालक्षेत्र की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन के रेखांश **'स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी '** से ज्ञात कर लेने चाहिएं। **जैसे**–कोई बच्चा न्यूयार्क (अमेरिका) में उत्पन्न हुआ है। न्यूयार्क E.T.(ईस्टर्न टाईम) वाले कालक्षेत्र में पड़ता है, अतः इस बच्चे की जन्मपत्री बनाने के लिए "स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी' से इस नगर के कालक्षेत्र (E.T.) की स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांश 75°/00' (प.) लेने होंगे। स्टैं. टा. में न्यूयार्क का सूर्योदयास्त जानने के लिए इसी को प्रयोग में लाया जाएगा । इस स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी 'में यह भी बतलाया गया है कि– इस देश या देश के कालक्षेत्र के टाईम से भा. स्टैं. टा. कितना आगे (+) या पीछे (–) रहता है। इन कालक्षेत्रों के किसी भी नगर में उत्पन्न बच्चे का जन्मकाल (E.T., P.T. आदि) बतलाने वाला व्यक्ति यह भी आपको (दैवज्ञ को) बतलाएगा (अथवा आप स्वयं भी उससे यह पूछ सकते हैं) कि– बच्चे के जन्म का यह विदेशीकाल भा. स्टैं. टा. से कितना आगे या पीछे रहता है। यह ज्ञात हो जाने पर आप 'स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी' में दिए गए उस विदेशी काल और भा.स्टैं.टा. के अन्तर से यह जान सकेंगे कि– उस बच्चे के जन्म का समय उस देश के किस कालक्षेत्र का है। उदाहरणार्थ – मान लीजिए–कोई बच्चा अमेरिका के सेनफ्रांसिस्को (कैलिफोर्निया) में उत्पन्न हुआ। कैलिफोर्निया अमेरिका के किस कालक्षेत्र में पड़ता है, यह हमें मालूम नहीं है। लेकिन यह हमें ज्ञात है कि– सेनफ्रांसिस्को में इस्तेमाल होने वाला टाईम भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम से 13 घण्टा 30 मिनट पीछे है। इतना ज्ञात होने से हमें मालूम हो जाएगा, कि– सेनफ्रांसिस्को शहर "P.T."(Pacific Time) के कालक्षेत्र में है, क्योंकि यहां दी गई 'स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी' में लिखा है कि– अमेरिका देश के "P.T." कालक्षेत्र के टाईम से भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 13 घण्टा 30 मिनट आगे है।

(3) नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर :–अभीष्ट देश या कालक्षेत्र के स्टैण्डर्ड मेरिडियन ज्ञात हो जाने पर उस देश या कालक्षेत्र के किसी भी नगर का " स्टैण्डर्ड अन्तर " जानना आसान है। अभीष्ट नगर के रेखांश और उस नगर के देश या कालक्षेत्र की स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांशों का अन्तर करने पर जो अंश–कलाएं मिलें, उन्हें 4 से गुणा करें। गुणनफल मिनट और सेकण्ड होंगे (अंशों को 4 से गुणा करने पर मिनट और कलाओं को 4 से गुणा करने पर सैकण्ड मिलेंगे)।

जैसे–टोकियो (जापान) का स्टैण्डर्ड अन्तर ज्ञात करना है । टोकियो के रेखांश 139 अंश 33 कला (पूर्व) हैं और स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी में जापान की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन के रेखांश 135 अंश 00 कला (पूर्व) हैं। इन दोनों रेखांशों का अन्तर 4 अंश 33 कला है । इसे 4 से गुणा करने पर 18 मिनट 12 सेकण्ड मिले। यह टोकियो का स्टैं. अन्तर है। यदि नगर स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन से पूर्व में है तो उसका स्टैण्डर्ड अन्तर धन (+) चिह्न वाला, अन्यथा ऋण (–) चिह्न वाला होगा। नगर स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन से पूर्व में है या पश्चिम में, इसका निर्णय मानचित्र (नक्शा) देखकर किया जा सकता है। **वैसे इसे जानने का दूसरा प्रकार यह भी है**– यदि नगर के रेखांश पूर्व दिशा वाले हों और वे रेखांश स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन के रेखांश से अधिक हों तो वह नगर स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन से पूर्व में होगा, अन्यथा पश्चिम में। पश्चिम रेखांश वाले नगरों के लिए इससे

उल्टा समझना चाहिए। इस नियम से स्पष्ट है कि– टोकियो अपने देश (जापान) की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन से पूर्व में है। क्योंकि, इसके रेखांश पूर्व हैं और ये जापान की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन से अधिक हैं, अतः इसका स्टैण्डर्ड अन्तर धन (+) चिह्न वाला होगा।

स्टैण्डर्ड अन्तर जानने का एक और उदाहरण – उस नगर का ले लेते हैं, जो अनेक कालक्षेत्रों में बंटी अमेरिका का है। हम यहां लॉस एंजलस का स्टैं. अन्तर निकालेंगे। यह शहर अमेरिका के कैलिफोर्निया स्टेट में स्थित है। इस स्टेट में "P.T." (Pacific Time) प्रयोग में आता है। अर्थात् यह नगर "P.T." कालक्षेत्र में पड़ता है। 'स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी' में "P.T." कालक्षेत्र की स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांश 120 अंश 00 कला (प.) हैं। लॉस एंजलस के रेखांश 118 अंश 17 कला (प.) हैं। इन दोनों का अन्तर 1 अंश 43 कला है। इसे 4 से गुणा करने पर 6 मिनट 52 सेकण्ड मिले। यह लॉस एंजलस का स्टैं. अन्तर है। क्योंकि, लॉस एंजलस अपने कालक्षेत्र की स्टैं. मेरिडियन से पूर्व में स्थित है, अतः इसके स्टैं. अन्तर का चिह्न धन (+) होगा।

यहां हमने 'स्थानीय मध्यमकाल' (L.M.T.) और क्षेत्रीय स्टैं. टा. के अन्तर को 'स्टैण्डर्ड अन्तर' (स्टैं. अं.) की संज्ञा दी है। भारत के सभी (लगभग 1,000) प्रसिद्ध नगरों के स्टैं. अन्तर तथा विदेशी प्रसिद्ध नगरों के स्टैं. अन्तर भी इनके अक्षांश–रेखांशों के साथ अलग–अलग कोष्ठकों में दिए गए हैं।

स्टैं. टा. में सूर्योदयास्तकाल जानना

उपरोक्त तीन पदार्थ (अक्षांश, स्टैं. टाईम मेरिडियन, स्टैं. अन्तर) ज्ञात हो जाने पर अभीष्ट नगर का सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल उस देश या कालक्षेत्र के स्टैं. टाईम में नीचे लिखे प्रकार से सरलतापूर्वक जाना जा सकता है।

आगे विश्व के सभी अक्षांशों के दैनिक सूर्योदय और सूर्यास्त का स्थानीय मध्यमकाल (स्था. म. का.) बतलाने वाली सूर्योदय एवं सूर्यास्तसारणी दी गई है। इसमें कुछ सूर्योदयास्तकाल 10–10 अक्षांशों के अन्तर पर और कुछ 5–5 तथा अन्य 2–2 अक्षांशों के अन्तर पर दिए गए हैं। ये तीन–तीन दिनों के अन्तर पर हैं। इस सारणी से आप अपने अभीष्ट अक्षांश एवम् तारीख का सूर्योदय–सूर्यास्त मौखिक त्रैराशिक (अनुपात) द्वारा ज्ञात कर सकते हैं। (गणक मार्त्तण्ड में दी गई सूर्योदय एवम् सूर्यास्तकाल सारणी में एक–एक दिन के अन्तर पर सूर्योदय–सूर्यास्तकाल दिया गया है।)

इस सारणी से प्राप्त होने वाला सूर्योदय–सूर्यास्तकाल स्था.म.का. में होगा, जो जनव्यवहार में नहीं आता। अतः इनमें स्टैं. अन्तर का संस्कार (जोड़, घटाव) करके उन्हें स्टैं. टाईम मे बदलना जरूरी है। क्योंकि– जनव्यवहार में सभी जगह स्टैं. टाईम से ही काम होता है, अतः हमारी घड़ियां भी हमेशा स्टैं. टा. ही बतलाती हैं। यदि अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर धन (+) चिह्न वाला है तो उसे सूर्योदय, सूर्यास्त के स्था. म. का. में से घटाने, अन्यथा जोड़ने पर सूर्योदय, सूर्यास्तकाल स्थानीय (उस देश/कालक्षेत्र के) स्टैं. टा. में बदल जाएंगे।

सूर्योदय, सूर्यास्त के इस स्टैं टाईम में एक और छोटा सा संस्कार करना होगा। यहां आगे एक 'सूर्य केन्द्र उदयास्त संस्कार सारणी' दी गई है। इस सारणी से अपनी अभीष्ट तारीख, मास और नगर के अक्षांशों द्वारा संस्कार–मिनट प्राप्त करें। इन्हें सूर्योदयकाल में जोड़ें और सूर्यास्तकाल में से घटाएं। इस प्रकार प्राप्त होने वाला सूर्योदय–सूर्यास्तकाल ज्योतिष–शास्त्रीय (जन्मपत्र आदि की) गणित में इस्तेमाल करने योग्य हो जाएगा। इसी सूर्योदय–सूर्यास्त से जन्मकालिक इष्टकाल आदि बनाना चाहिए।

इस उपरोक्त विधि से उत्तर अक्षांश वाले नगरों का सूर्योदय, सूर्यास्तकाल ज्ञात होता है। दक्षिणी अक्षांश वाले स्थलों का सूर्योदयास्तकाल जानने के लिए आगे दी गई "दक्षिण अक्षांश संस्कार सारणी" प्रयोग में लाइए। जिस तारीख के लिए दक्षिण अक्षांशीय नगर का सूर्योदयास्त जानना है, उस 'दक्षिण अक्षांशीय तारीख' के आगे इस सारणी में लिखी 'उ. अक्षांश तारीख' का सूर्योदयास्तकाल " सूर्योदय एवम् सूर्यास्त सारणी " से ज्ञात कर लें। इसमें इस "दक्षिण अक्षांश संस्कार सारणी" से प्राप्त संस्कार के मिनटों को चिह्नानुसार जोड़ने या घटाने से आपकी अभीष्ट तारीख का अभीष्ट दक्षिण अक्षांशीय नगर के सूर्योदयास्त का स्था.म.का. ज्ञात हो जाएगा। इसमें अभीष्ट नगर के स्टैण्डर्ड अन्तर का संस्कार (जोड़–घटाव) पूर्वोक्तवत् कर देने पर सूर्योदयास्त का स्था. म. काल स्टैं. टा. में बदल जाएगा। इनमें 'सूर्यकेंद्रोदयास्त संस्कार सारणी' से प्राप्त मिनटों का भी उपरोक्त प्रकार से संस्कार करना होगा।

स्पष्टता के लिए हम नीचे कुछ उदाहरण दे रहे हैं—

उदाहरण (1) :– लुधियाना (पंजाब) में 1 मार्च को भा. स्टैं. टा. के अनुसार सूर्योदय और सूर्यास्तकाल जानना है। लुधियाना के अक्षांश 30°–55' (उ.) और रेखांश 75°– 54' (पू.) तथा स्टैं. अन्तर –26 मि. 24 से.

सकते हैं। (गणक मार्त्तण्ड में दी गई सूर्योदय... एक-एक दिन के अन्तर पर सूर्योदय-सूर्यास्तकाल दिया गया है।)

उदाहरण (1) :- लुधियाना (पंजाब) में 1 मार्च को भा. स्टैं. टा. ... जानना है। लुधियाना के अक्षांश 30°-55' (उ.) और रेखांश 75°- 54' (पू.) तथा स्टैं. अन्तर -26 मि. 24 से.

है। 1 मार्च को अक्षांश 30°-55' (उ.) का सूर्योदय 6 घं. 27 मि. 43 से. और सूर्यास्त 17 घं. 57 मि. 27 से. सूर्योदय-सूर्यास्तसारणी से अनुपात (त्रैराशिक) द्वारा प्राप्त किए। ये स्था. म. का. में हैं । लुधियाना का स्टैं. अन्तर 26 मि. 24 से. ऋण (-) है। अतः स्था. म. का. वाले सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल में इसे चिह्न के विपरीत जोड़ देने पर 6 घं 54 मि. 7 से. और 18 घं. 23 मि. 51 से. मिले, जो लुधियाना में 1 मार्च को भा. स्टैं. टा. के अनुसार क्रमशः सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल हैं। 'सूर्य केंद्रोदयास्त संस्कारसारणी' से 1 मार्च को 30° अक्षांश का संस्कार 3 मि. 41 से. मिला, इसे सूर्योदयकाल में जोड़ने और सूर्यास्तकाल में से घटा देने पर 6 घं. 57 मि. 48से. और 18 घं. 20 मि. 10 से. मिले। जो ज्योतिषशास्त्रीय (इष्टकाल/लग्नादि साधन के लिए उपयोगी) सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल हैं।

उदाहरण (2) :- काबुल (अफगानिस्तान) में 10 अप्रैल को सूर्योदय-सूर्यास्तकाल (अफगान स्टैं. टा.) में जनना है। काबुल के अक्षांश 34 अंश 33 कला (उत्तर) और रेखांश 69 अंश 12 कला (पूर्व) हैं। काबुल का स्टैं. अन्तर +6 मिनट 48 से. है (काबुल का यह स्टैं. अं. काबुल के रेखांश और अफगानिस्तान की स्टैं. टाईम मेरिडियन के रेखांशों के अन्तर से पूर्वोक्त विधि द्वारा बनाया गया है)। सूर्योदयास्तसारणी से 10 अप्रैल को 34 अंश 33 कला का सूर्योदय 5 घं. 36 मि. 27 से. और सूर्यास्त 18 घं. 27 मि. 38 से. मिला । यह स्था. मध्यमकाल है। इसमें से काबुल का स्टैं. अन्तर 6 मि. 48 से. धन (+) होने से चिह्न के विपरीत घटाया, तो 5 घं. 29 मि. 39 से. और 18 घं. 20 मि. 50 से. क्रमशः सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल हुए। **'सूर्यकेन्द्रोदय संस्कारसारणी'** से काबुल के अक्षांश 35 अंश और 10 अप्रैल द्वारा प्राप्त 3 मि. 52 से. सूर्योदय में जोड़ने और सूर्यास्त में से घटाने पर काबुल में 10 अप्रैल को 5 घं. 33 मि. 31 से. और 18 घं. 16 मि. 58 से. क्रमशः सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल प्राप्त हुए। यह काल अफगानिस्तान के स्टैं. टा. में है।

उदाहरण (3) :- न्यूयार्क (U.S.A.) में 1 मार्च को सूर्योदयास्तकाल ज्ञात करना है। न्यूयार्क के अक्षांश 40°/43'(उ.), रेखांश 74°/00' (प.) हैं। न्यूयार्क (अमेरिका) E.T. (Eastern Time) वाले कालक्षेत्र में पड़ता है। E.T. के कालक्षेत्र की स्टैं. टाईम मेरिडियन के रेखांश 75°/00'(प.) हैं। न्यूयार्क और E.T. की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन के रेखांशों का अन्तर 1 अंश 0 कला है। इसे 4 से गुणा करने पर 4 मि. 00 से. न्यूयार्क का स्टैण्डर्ड अन्तर हुआ। न्यूयार्क शहर E.T. (Eastern Time) की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन के रेखांश से पूर्व में स्थित है। इसलिए इसका स्टैं. अन्तर **धन (+)** चिह्न वाला होगा।

अब सूर्योदयास्तसारणी से अक्षांश 40 अंश 43 कला और तारीख 1 मार्च द्वारा सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल क्रमशः 6 घं. 35 मि. 43 से. और 17 घं. 50मि. 17 से. प्राप्त किए। इनमें न्यूयार्क का स्टैण्डर्ड अन्तर +4 मिनट चिह्न के विपरीत घटाने पर सूर्योदय और सूर्यास्तकाल क्रमशः 6 घं. 31 मि. 43 से. तथा 17 घं. 46 मि. 17 से. हुए। न्यूयार्क के अक्षांश 41° और 1 मार्च द्वारा 'सूर्य केन्द्रोदय सस्कार सारणी' से प्राप्त 4 मि. 14 से. उपरोक्त नियमानुसार सूर्योदयकाल में जोड़ने और सूर्यास्तकाल में से घटाने पर ज्योतिष-गणितोपयोगी सूर्योदय एवं सूर्यास्त क्रमशः 6 घं. 35 मि. 57 से. तथा 17 घं. 42 मि. 03 से. हुए। ये काल E.S.T. (Eastern Standard Time) में हैं।

उदाहरण (4) नैरोबी (केन्या, पूर्वी अफ्रीका) में 6 मई को सूर्योदय सूर्यास्तकाल (केन्या स्टैं. टाईम में) जानना है। नैरोबी के अक्षांश 1°/18'(द.) और रेखांश 36°/52' (पू.) हैं। इसका स्टैं. अं. -32 मि. 32 से. है। सूर्योदयास्तसारणी से 1 अंश 18 कला अक्षांश और 8 नवं. से सूर्योदय और सूर्यास्त क्रमशः 5 घं. 41 मि. 34 से. और 17 घं. 45 मि. 26 से. मिले। (ध्यान दें- क्योंकि, नैरोबी के अक्षांश दक्षिण दिशा के हैं, अतः आगे दी गई "दक्षिण अक्षांश संस्कार सारणी" के अनुसार यहां 6 मई के स्थान पर 8 नवं. को प्रयोग में लाया गया है।) अतः इन दोनों उदयास्तकालों में 6 मई का दक्षिण अक्षांश सस्कार +13 मि. चिह्नानुसार जोड़ा तो उदय और अस्तकाल क्रमशः 5 घं. 54 मि. 34 से. और 17 घं. 58 मि. 26 से. हुए। इनमें नैरोबी का स्टैण्डर्ड अन्तर -32 मि. 32 से. चिह्न के विपरीत जोड़ने पर 6 घं. 27 मि. 6 से. और 18 घं. 30 मि. 58 से. केन्या स्टैं. टा. में क्रमशः उदय एवं अस्तकाल हुए। इनमें नैरोबी के अक्षांश 1 अंश और 6 मई द्वारा "सूर्य-केन्द्रोदयास्त सस्कारसारणी" से प्राप्त 3 मि. 17 से. उदयकाल में जोड़ने और अस्तकाल में से घटाने पर 6 घं. 30 मि. 23 से. और 18 घं. 27 मि. 41 से. नैरोबी में 6 मई को लग्नादि साधनोपयोगी सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल निकल आए।

सूर्योदय सारणी

सूर्योदयकाल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश / तारीख	0° घं. मि.	+10° घं. मि.	+20° घं. मि.	+30° घं. मि.	+35° घं. मि.	+40° घं. मि.	+45° घं. मि.	+50° घं. मि.	+52° घं. मि.	+54° घं. मि.	+56° घं. मि.	+58° घं. मि.	+60° घं. मि.
जन. 1	5 59	6 17	6 35	6 56	7 08	7 22	7 38	7 59	8 08	8 19	8 32	8 46	9 03
4	6 01	6 18	6 36	6 57	7 09	7 22	7 39	7 59	8 08	8 19	8 31	8 45	9 02
7	6 02	6 19	6 37	6 57	7 09	7 22	7 38	7 58	8 07	8 18	8 30	8 43	8 59
10	6 04	6 20	6 37	6 57	7 09	7 22	7 38	7 57	8 06	8 16	8 28	8 41	8 56
13	6 05	6 21	6 38	6 57	7 08	7 21	7 36	7 55	8 04	8 14	8 25	8 38	8 52
16	6 06	6 21	6 38	6 57	7 08	7 20	7 35	7 53	8 02	8 11	8 22	8 34	8 48
19	6 07	6 22	6 38	6 56	7 07	7 19	7 33	7 50	7 59	8 08	8 18	8 30	8 43
22	6 08	6 22	6 38	6 56	7 06	7 17	7 31	7 47	7 56	8 04	8 14	8 25	8 38
25	6 09	6 23	6 38	6 54	7 04	7 15	7 28	7 44	7 52	8 00	8 09	8 20	8 32
28	6 09	6 23	6 37	6 53	7 02	7 13	7 26	7 41	7 48	7 56	8 04	8 14	8 26
31	6 10	6 23	6 36	6 52	7 00	7 11	7 22	7 37	7 43	7 51	7 59	8 08	8 19
फर. 1	6 10	6 23	6 36	6 51	7 00	7 10	7 21	7 35	7 42	7 49	7 57	8 06	8 17
4	6 10	6 22	6 35	6 49	6 58	7 07	7 18	7 31	7 37	7 44	7 51	8 00	8 10
7	6 11	6 22	6 34	6 47	6 55	7 04	7 14	7 26	7 32	7 38	7 45	7 53	8 02
10	6 11	6 21	6 32	6 45	6 52	7 00	7 10	7 22	7 27	7 33	7 39	7 46	7 55
13	6 11	6 21	6 31	6 43	6 49	6 57	7 06	7 16	7 21	7 26	7 32	7 39	7 47
16	6 11	6 20	6 29	6 40	6 46	6 53	7 01	7 11	7 15	7 20	7 26	7 32	7 39
19	6 11	6 19	6 28	6 37	6 43	6 49	6 57	7 05	7 10	7 14	7 19	7 24	7 30
22	6 10	6 18	6 26	6 35	6 40	6 45	6 52	7 00	7 03	7 07	7 12	7 17	7 22
25	6 10	6 17	6 24	6 32	6 36	6 41	6 47	6 54	6 57	7 00	7 04	7 09	7 14
28	6 09	6 15	6 22	6 28	6 32	6 37	6 42	6 48	6 51	6 54	6 57	7 01	7 05
मार्च 1	6 09	6 15	6 21	6 27	6 31	6 35	6 40	6 46	6 48	6 51	6 54	6 58	7 02
4	6 09	6 14	6 18	6 24	6 27	6 31	6 35	6 40	6 42	6 44	6 47	6 50	6 53
7	6 08	6 12	6 16	6 21	6 23	6 26	6 30	6 33	6 35	6 37	6 39	6 42	6 44
10	6 07	6 10	6 14	6 17	6 19	6 21	6 24	6 27	6 28	6 30	6 31	6 33	6 35
13	6 06	6 09	6 11	6 14	6 15	6 17	6 18	6 20	6 21	6 22	6 24	6 25	6 26
16	6 06	6 07	6 09	6 10	6 11	6 12	6 13	6 14	6 15	6 15	6 16	6 16	6 17
19	6 05	6 05	6 06	6 07	6 07	6 07	6 07	6 08	6 08	6 08	6 08	6 08	6 08
22	6 04	6 04	6 03	6 03	6 03	6 02	6 02	6 01	6 01	6 00	6 00	6 00	5 59
25	6 03	6 02	6 01	5 59	5 58	5 57	5 56	5 54	5 54	5 53	5 52	5 51	5 50
28	6 02	6 00	5 58	5 56	5 54	5 52	5 50	5 48	5 47	5 46	5 44	5 43	5 41
31	6 01	5 58	5 56	5 52	5 50	5 48	5 45	5 41	5 40	5 38	5 36	5 34	5 32

स्थानीय मध्यमकाल = स्था. म. का.

सूर्यास्त सारणी

सूर्यास्तकाल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश / तारीख	0° घं. मि.	+10° घं. मि.	+20° घं. मि.	+30° घं. मि.	+35° घं. मि.	+40° घं. मि.	+45° घं. मि.	+50° घं. मि.	+52° घं. मि.	+54° घं. मि.	+56° घं. मि.	+58° घं. मि.	+60° घं. मि.
जन. 1	18 07	17 50	17 32	17 11	16 59	16 45	16 28	16 08	15 58	15 48	15 35	15 21	15 04
4	18 08	17 51	17 34	17 13	17 01	16 47	16 31	16 11	16 02	15 51	15 39	15 25	15 08
7	18 10	17 53	17 36	17 15	17 04	16 50	16 34	16 14	16 05	15 55	15 43	15 30	15 14
10	18 11	17 55	17 38	17 18	17 06	16 53	16 38	16 18	16 09	15 59	15 48	15 35	15 19
13	18 12	17 56	17 39	17 20	17 09	16 56	16 41	16 22	16 14	16 04	15 53	15 40	15 26
16	18 13	17 58	17 41	17 23	17 12	16 59	16 45	16 27	16 18	16 09	15 58	15 46	15 32
19	18 14	17 59	17 43	17 25	17 15	17 03	16 49	16 31	16 23	16 14	16 04	15 52	15 39
22	18 15	18 01	17 45	17 28	17 18	17 06	16 52	16 36	16 28	16 20	16 10	15 59	15 46
25	18 16	18 02	17 47	17 30	17 21	17 10	16 57	16 41	16 34	16 25	16 16	16 06	15 54
28	18 17	18 03	17 49	17 33	17 24	17 13	17 01	16 46	16 39	16 31	16 22	16 13	16 01
31	18 17	18 04	17 51	17 36	17 27	17 17	17 05	16 51	16 44	16 37	16 29	16 20	16 09
फर. 1	18 17	18 05	17 52	17 36	17 28	17 18	17 06	16 53	16 46	16 39	16 31	16 22	16 12
4	18 18	18 06	17 53	17 39	17 31	17 22	17 11	16 58	16 52	16 45	16 38	16 29	16 20
7	18 18	18 07	17 55	17 42	17 34	17 25	17 15	17 03	16 57	16 51	16 44	16 36	16 28
10	18 18	18 08	17 56	17 44	17 37	17 29	17 19	17 08	17 03	16 57	16 51	16 44	16 35
13	18 18	18 08	17 58	17 46	17 40	17 32	17 24	17 13	17 08	17 03	16 57	16 51	16 43
16	18 18	18 09	17 59	17 49	17 43	17 36	17 28	17 18	17 14	17 09	17 04	16 58	16 51
19	18 18	18 09	18 01	17 51	17 46	17 40	17 32	17 24	17 20	17 15	17 10	17 05	16 59
22	18 17	18 10	18 02	17 53	17 48	17 43	17 36	17 29	17 25	17 21	17 17	17 12	17 07
25	18 17	18 10	18 03	17 56	17 51	17 46	17 40	17 34	17 31	17 27	17 23	17 19	17 14
28	18 16	18 10	18 04	17 58	17 54	17 50	17 44	17 39	17 36	17 33	17 30	17 26	17 22
मार्च 1	18 16	18 10	18 05	17 58	17 55	17 51	17 46	17 40	17 38	17 35	17 32	17 28	17 25
4	18 15	18 11	18 06	18 00	17 57	17 54	17 50	17 45	17 43	17 41	17 38	17 35	17 32
7	18 15	18 11	18 07	18 03	18 00	17 57	17 54	17 50	17 49	17 47	17 45	17 42	17 40
10	18 14	18 11	18 08	18 04	18 02	18 00	17 58	17 55	17 54	17 52	17 51	17 49	17 47
13	18 13	18 11	18 09	18 06	18 05	18 04	18 02	18 00	17 59	17 58	17 57	17 56	17 55
16	18 12	18 11	18 10	18 08	18 08	18 07	18 06	18 05	18 04	18 04	18 03	18 03	18 02
19	18 12	18 11	18 11	18 10	18 10	18 10	18 10	18 10	18 10	18 10	18 10	18 10	18 09
22	18 10	18 11	18 11	18 12	18 12	18 13	18 14	18 14	18 15	18 15	18 16	18 16	18 17
25	18 10	18 11	18 12	18 14	18 15	18 16	18 17	18 19	18 20	18 21	18 22	18 23	18 24
28	18 09	18 11	18 13	18 16	18 17	18 19	18 21	18 24	18 25	18 26	18 28	13 30	18 31
31	18 08	18 11	18 14	18 18	18 20	18 22	18 25	18 28	18 30	18 32	18 34	18 36	18 39

स्थानीय मध्यमकाल = स्था. म. का.

31 | 18 08 | 18 11 | 18 14 | 18 18 | 18 20 | 18 22 | 18 25 | 18 28 | 18 30 | 18 32 | 18 34 | 18 36 | 18 39

सूर्योदय सारणी

सूर्योदयकाल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश	0°	+10°	+20°	+30°	+35°	+40°	+45°	+50°	+52°	+54°	+56°	+58°	+60°
तारीख	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अप्रै. 1	6 01	5 58	5 55	5 51	5 48	5 46	5 43	5 39	5 38	5 36	5 34	5 31	5 29
4	6 00	5 56	5 52	5 47	5 44	5 41	5 37	5 33	5 31	5 28	5 26	5 23	5 20
7	5 59	5 54	5 50	5 44	5 40	5 36	5 32	5 26	5 24	5 21	5 18	5 14	5 10
10	5 58	5 53	5 47	5 41	5 36	5 32	5 26	5 20	5 17	5 14	5 10	5 06	5 02
13	5 57	5 51	5 45	5 37	5 32	5 27	5 21	5 14	5 10	5 07	5 02	4 58	4 53
16	5 57	5 50	5 42	5 33	5 28	5 22	5 16	5 08	5 04	5 00	4 55	4 50	4 44
19	5 56	5 48	5 40	5 30	5 24	5 18	5 10	5 01	4 57	4 52	4 47	4 42	4 35
22	5 55	5 47	5 38	5 27	5 21	5 14	5 05	4 55	4 51	4 46	4 40	4 34	4 26
25	5 55	5 45	5 35	5 24	5 17	5 10	5 00	4 50	4 44	4 39	4 33	4 26	4 18
28	5 54	5 44	5 33	5 21	5 14	5 05	4 56	4 44	4 38	4 32	4 25	4 18	4 09
मई 1	5 54	5 43	5 32	5 18	5 10	5 02	4 51	4 38	4 32	4 26	4 18	4 10	4 01
4	5 53	5 42	5 30	5 16	5 07	4 58	4 46	4 33	4 27	4 20	4 12	4 03	3 53
7	5 53	5 41	5 28	5 13	5 04	4 54	4 42	4 28	4 21	4 14	4 05	3 56	3 45
10	5 53	5 40	5 26	5 11	5 01	4 51	4 38	4 23	4 16	4 08	3 59	3 49	3 37
13	5 53	5 40	5 26	5 09	4 59	4 48	4 34	4 18	4 11	4 02	3 53	3 42	3 29
16	5 53	5 39	5 24	5 07	4 56	4 45	4 31	4 14	4 06	3 57	3 47	3 36	3 22
19	5 53	5 38	5 23	5 05	4 54	4 42	4 28	4 10	4 02	3 52	3 42	3 30	3 16
22	5 53	5 38	5 22	5 03	4 52	4 40	4 25	4 06	3 58	3 48	3 37	3 24	3 09
25	5 53	5 38	5 21	5 02	4 50	4 38	4 22	4 03	3 54	3 44	3 32	3 19	3 03
28	5 53	5 38	5 20	5 01	4 49	4 36	4 20	4 00	3 51	3 40	3 28	3 14	2 57
31	5 54	5 38	5 20	5 00	4 48	4 34	4 18	3 57	3 48	3 37	3 24	3 10	2 52
जून 1	5 54	5 38	5 20	4 59	4 47	4 34	4 17	3 56	3 47	3 36	3 23	3 08	2 50
4	5 54	5 38	5 20	4 59	4 46	4 32	4 16	3 54	3 44	3 33	3 20	3 05	2 46
7	5 55	5 38	5 20	4 58	4 46	4 31	4 14	3 53	3 42	3 31	3 17	3 02	2 43
10	5 55	5 38	5 20	4 58	4 45	4 31	4 13	3 51	3 41	3 29	3 15	2 59	2 40
13	5 56	5 39	5 20	4 58	4 45	4 30	4 13	3 50	3 40	3 28	3 14	2 57	2 37
16	5 56	5 39	5 20	4 58	4 45	4 30	4 12	3 50	3 39	3 27	3 13	2 56	2 36
19	5 57	5 40	5 21	4 59	4 46	4 30	4 13	3 50	3 39	3 27	3 12	2 56	2 35
22	5 58	5 40	5 21	4 59	4 46	4 31	4 13	3 50	3 39	3 27	3 13	2 56	2 35
25	5 58	5 41	5 22	5 00	4 47	4 32	4 14	3 51	3 40	3 28	3 14	2 57	2 36
28	5 59	5 42	5 23	5 01	4 48	4 33	4 15	3 52	3 42	3 29	3 15	2 58	2 38

सूर्यास्त सारणी

सूर्यास्तकाल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश	0°	+10°	+20°	+30°	+35°	+40°	+45°	+50°	+52°	+54°	+56°	+58°	+60°
तारीख	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अप्रै. 1	18 08	18 11	18 14	18 18	18 20	18 23	18 26	18 30	18 32	18 34	18 36	18 38	18 41
4	18 07	18 10	18 15	18 20	18 23	18 26	18 30	18 35	18 37	18 40	18 42	18 45	18 48
7	18 06	18 10	18 16	18 22	18 25	18 29	18 34	18 39	18 42	18 45	18 48	18 52	18 56
10	18 05	18 10	18 16	18 24	18 28	18 32	18 38	18 44	18 47	18 50	18 54	18 58	19 03
13	18 04	18 10	18 17	18 25	18 30	18 35	18 42	18 49	18 52	18 56	19 00	19 05	19 10
16	18 03	18 10	18 18	18 27	18 32	18 38	18 45	18 54	18 58	19 02	19 06	19 12	19 18
19	18 03	18 11	18 19	18 29	18 35	18 41	18 49	18 58	19 03	19 07	19 12	19 18	19 25
22	18 02	18 11	18 20	18 31	18 37	18 44	18 53	19 03	19 08	19 13	19 19	19 25	19 33
25	18 02	18 11	18 21	18 33	18 40	18 47	18 57	19 08	19 13	19 18	19 25	19 32	19 40
28	18 01	18 11	18 22	18 35	18 42	18 50	19 00	19 12	19 18	19 24	19 31	19 39	19 47
मई 1	18 01	18 12	18 23	18 37	18 44	18 53	19 04	19 17	19 23	19 30	19 37	19 45	19 55
4	18 00	18 12	18 24	18 38	18 47	18 56	19 08	19 21	19 28	19 35	19 43	19 52	20 02
7	18 00	18 12	18 25	18 40	18 49	18 59	19 12	19 26	19 33	19 40	19 49	19 58	20 10
10	18 00	18 13	18 26	18 42	18 52	19 02	19 15	19 30	19 38	19 46	19 55	20 05	20 17
13	18 00	18 13	18 28	18 44	18 54	19 05	19 19	19 35	19 42	19 51	20 01	20 12	20 24
16	18 00	18 14	18 29	18 46	18 56	19 08	19 22	19 39	19 47	19 56	20 06	20 18	20 31
19	18 00	18 14	18 30	18 48	18 59	19 11	19 25	19 43	19 52	20 01	20 12	20 24	20 38
22	18 00	18 15	18 31	18 50	19 01	19 14	19 29	19 47	19 56	20 06	20 17	20 30	20 45
25	18 00	18 16	18 32	18 52	19 03	19 16	19 32	19 51	20 00	20 10	20 22	20 36	20 52
28	18 01	18 17	18 34	18 54	19 05	19 19	19 35	19 55	20 04	20 15	20 27	20 41	20 58
31	18 01	18 17	18 35	18 55	19 07	19 21	19 37	19 58	20 08	20 19	20 31	20 46	21 04
जून 1	18 01	18 18	18 35	18 56	19 08	19 22	19 38	19 59	20 09	20 20	20 33	20 48	21 05
4	18 02	18 18	18 36	18 57	19 10	19 24	19 41	20 02	20 12	20 24	20 37	20 52	21 10
7	18 02	18 19	18 38	18 59	19 11	19 26	19 43	20 05	20 15	20 27	20 40	20 56	21 15
10	18 03	18 20	18 38	19 00	19 13	19 28	19 45	20 07	20 18	20 30	20 43	20 59	21 19
13	18 03	18 21	18 40	19 01	19 14	19 29	19 47	20 09	20 20	20 32	20 46	21 02	21 22
16	18 04	18 22	18 40	19 02	19 15	19 30	19 48	20 11	20 22	20 34	20 48	21 05	21 25
19	18 05	18 22	18 41	19 03	19 16	19 31	19 49	20 12	20 23	20 35	20 50	21 06	21 27
22	18 05	18 23	18 42	19 04	19 17	19 32	19 50	20 13	20 24	20 36	20 50	21 07	21 28
25	18 06	18 24	18 42	19 04	19 18	19 32	19 50	20 13	20 24	20 36	20 51	21 07	21 28
28	18 06	18 24	18 43	19 05	19 18	19 33	19 51	20 13	20 24	20 36	20 50	21 07	21 27

सूर्योदय सारणी

सूर्योदयकाल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश	0°	+10°	+20°	+30°	+35°	+40°	+45°	+50°	+52°	+54°	+56°	+58°	+60°
तारीख	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जुला.1	6 00	5 42	5 24	5 02	4 49	4 34	4 16	3 54	3 43	3 31	3 17	3 01	2 41
4	6 00	5 43	5 25	5 03	4 50	4 36	4 18	3 56	3 45	3 34	3 20	3 04	2 44
7	6 01	5 44	5 26	5 04	4 52	4 37	4 20	3 58	3 48	3 36	3 23	3 07	2 48
10	6 01	5 45	5 27	5 06	4 53	4 39	4 22	4 01	3 51	3 39	3 26	3 11	2 52
13	6 02	5 45	5 28	5 07	4 55	4 41	4 24	4 04	3 54	3 43	3 30	3 15	2 57
16	6 02	5 46	5 29	5 09	4 57	4 43	4 27	4 07	3 58	3 47	3 34	3 20	3 03
19	6 02	5 47	5 30	5 10	4 59	4 46	4 30	4 10	4 01	3 51	3 39	3 25	3 09
22	6 03	5 48	5 31	5 12	5 01	4 48	4 33	4 14	4 05	3 55	3 44	3 31	3 15
25	6 03	5 48	5 32	5 14	5 03	4 51	4 36	4 18	4 09	4 00	3 49	3 36	3 22
28	6 03	5 49	5 33	5 16	5 05	4 53	4 39	4 22	4 14	4 05	3 54	3 42	3 28
31	6 03	5 49	5 34	5 18	5 08	4 56	4 43	4 26	4 18	4 10	4 00	3 48	3 35
अग. 1	6 03	5 49	5 35	5 18	5 08	4 57	4 44	4 27	4 20	4 11	4 01	3 51	3 38
4	6 03	5 50	5 36	5 20	5 10	5 00	4 47	4 32	4 24	4 16	4 07	3 57	3 45
7	6 02	5 50	5 37	5 22	5 13	5 03	4 51	4 36	4 29	4 21	4 13	4 03	3 52
10	6 02	5 50	5 38	5 24	5 15	5 06	4 54	4 40	4 34	4 27	4 19	4 10	3 59
13	6 02	5 51	5 39	5 25	5 17	5 08	4 58	4 45	4 39	4 32	4 24	4 16	4 06
16	6 01	5 51	5 40	5 27	5 20	5 11	5 01	4 49	4 44	4 37	4 30	4 22	4 14
19	6 00	5 51	5 41	5 29	5 22	5 14	5 05	4 54	4 48	4 43	4 36	4 29	4 21
22	6 00	5 51	5 42	5 31	5 24	5 17	5 08	4 58	4 53	4 48	4 42	4 36	4 28
25	5 59	5 51	5 42	5 32	5 26	5 20	5 12	5 03	4 58	4 53	4 48	4 42	4 35
28	5 58	5 51	5 43	5 34	5 29	5 23	5 16	5 07	5 03	4 59	4 54	4 48	4 42
31	5 57	5 51	5 44	5 36	5 31	5 25	5 19	5 12	5 08	5 04	5 00	4 55	4 50
सितं.1	5 57	5 51	5 44	5 36	5 32	5 26	5 20	5 13	5 10	5 06	5 02	4 57	4 52
4	5 56	5 51	5 45	5 38	5 34	5 29	5 24	5 18	5 14	5 11	5 08	5 04	4 59
7	5 55	5 50	5 45	5 40	5 36	5 32	5 28	5 22	5 19	5 17	5 14	5 10	5 06
10	5 54	5 50	5 46	5 41	5 38	5 35	5 31	5 26	5 24	5 22	5 19	5 16	5 13
13	5 53	5 50	5 47	5 43	5 40	5 38	5 35	5 31	5 29	5 27	5 25	5 23	5 20
16	5 52	5 50	5 47	5 44	5 43	5 41	5 38	5 35	5 34	5 33	5 31	5 29	5 27
19	5 51	5 50	5 48	5 46	5 45	5 44	5 42	5 40	5 39	5 38	5 37	5 36	5 34
22	5 50	5 49	5 49	5 48	5 47	5 46	5 46	5 44	5 44	5 43	5 43	5 42	5 41
25	5 49	5 49	5 49	5 49	5 49	5 49	5 49	5 49	5 49	5 49	5 49	5 48	5 48
28	5 48	5 49	5 50	5 51	5 52	5 52	5 53	5 54	5 54	5 54	5 55	5 55	5 56

सूर्यास्त सारणी

सूर्यास्तकाल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश	0°	+10°	+20°	+30°	+35°	+40°	+45°	+50°	+52°	+54°	+56°	+58°	+60°
तारीख	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जुला.1	18 07	18 24	18 43	19 05	19 18	19 33	19 50	20 13	20 23	20 35	20 49	21 06	21 26
4	18 08	18 25	18 43	19 05	19 18	19 32	19 50	20 12	20 22	20 34	20 48	21 04	21 24
7	18 08	18 25	18 43	19 05	19 17	19 32	19 49	20 10	20 21	20 32	20 46	21 01	21 20
10	18 09	18 25	18 43	19 04	19 16	19 31	19 48	20 09	20 19	20 30	20 43	20 58	21 17
13	18 09	18 25	18 43	19 03	19 16	19 29	19 46	20 06	20 16	20 27	20 40	20 55	21 12
16	18 09	18 25	18 42	19 02	19 14	19 28	19 44	20 04	20 13	20 24	20 36	20 51	21 08
19	18 10	18 25	18 42	19 01	19 13	19 26	19 42	20 01	20 10	20 20	20 32	20 46	21 02
22	18 10	18 25	18 41	19 00	19 11	19 24	19 39	19 58	20 06	20 16	20 28	20 41	20 56
25	18 10	18 24	18 40	18 58	19 09	19 21	19 36	19 54	20 02	20 12	20 23	20 35	20 50
28	18 10	18 24	18 39	18 56	19 07	19 19	19 33	19 50	19 58	20 07	20 18	20 29	20 43
31	18 10	18 23	18 38	18 55	19 04	19 16	19 29	19 46	19 54	20 02	20 12	20 23	20 36
अग. 1	18 10	18 23	18 37	18 54	19 04	19 15	19 28	19 44	19 52	20 00	20 10	20 21	20 33
4	18 09	18 22	18 36	18 52	19 01	19 12	19 24	19 40	19 47	19 55	20 04	20 14	20 26
7	18 09	18 21	18 34	18 49	18 58	19 08	19 20	19 35	19 41	19 49	19 58	20 07	20 18
10	18 09	18 20	18 32	18 47	18 55	19 05	19 16	19 29	19 36	19 43	19 51	20 00	20 10
13	18 08	18 19	18 30	18 44	18 52	19 01	19 11	19 24	19 30	19 37	19 44	19 52	20 02
16	18 08	18 18	18 28	18 41	18 48	18 57	19 06	19 18	19 24	19 30	19 37	19 45	19 54
19	18 07	18 16	18 26	18 38	18 45	18 53	19 02	19 13	19 18	19 24	19 30	19 37	19 45
22	18 06	18 15	18 24	18 35	18 41	18 48	18 57	19 07	19 12	19 17	19 23	19 29	19 36
25	18 06	18 13	18 22	18 32	18 38	18 44	18 52	19 01	19 05	19 10	19 15	19 21	19 28
28	18 05	18 12	18 19	18 28	18 34	18 40	18 46	18 55	18 59	19 03	19 08	19 13	19 19
31	18 04	18 10	18 17	18 25	18 30	18 35	18 41	18 48	18 52	18 56	19 00	19 05	19 10
सितं.1	18 03	18 09	18 16	18 24	18 28	18 33	18 39	18 46	18 50	18 53	18 57	19 02	19 07
4	18 02	18 08	18 13	18 20	18 24	18 28	18 34	18 40	18 43	18 46	18 50	18 54	18 58
7	18 02	18 06	18 11	18 16	18 20	18 24	18 28	18 34	18 36	18 39	18 42	18 45	18 49
10	18 00	18 04	18 08	18 13	18 16	18 19	18 22	18 27	18 29	18 31	18 34	18 37	18 40
13	17 59	18 02	18 05	18 09	18 11	18 14	18 17	18 21	18 22	18 24	18 26	18 28	18 31
16	17 58	18 00	18 03	18 05	18 07	18 09	18 11	18 14	18 15	18 16	18 18	18 20	18 22
19	17 57	17 58	18 00	18 02	18 03	18 04	18 05	18 07	18 08	18 09	18 10	18 11	18 12
22	17 56	17 57	17 57	17 58	17 58	17 59	18 00	18 01	18 01	18 02	18 02	18 03	18 03
25	17 55	17 55	17 54	17 54	17 54	17 54	17 54	17 54	17 54	17 54	17 54	17 54	17 54
28	17 54	17 53	17 52	17 50	17 50	17 49	17 48	17 47	17 47	17 46	17 46	17 46	17 45

सूर्योदय सारणी

सूर्योदयकाल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश	0°	+10°	+20°	+30°	+35°	+40°	+45°	+50°	+52°	+54°	+56°	+58°	+60°
तारीख	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अक्तू. 1	5 47	5 49	5 51	5 53	5 54	5 55	5 56	5 58	5 59	6 00	6 01	6 02	6 03
4	5 46	5 49	5 51	5 54	5 56	5 58	6 00	6 03	6 04	6 05	6 07	6 08	6 10
7	5 45	5 48	5 52	5 56	5 58	6 01	6 04	6 07	6 09	6 11	6 13	6 15	6 17
10	5 44	5 48	5 53	5 58	6 01	6 04	6 08	6 12	6 14	6 16	6 19	6 21	6 24
13	5 43	5 48	5 54	6 00	6 03	6 07	6 12	6 17	6 19	6 22	6 25	6 28	6 32
16	5 43	5 49	5 55	6 02	6 06	6 10	6 16	6 22	6 24	6 28	6 31	6 35	6 39
19	5 42	5 49	5 56	6 04	6 08	6 13	6 19	6 26	6 30	6 33	6 37	6 42	6 46
22	5 41	5 49	5 57	6 06	6 11	6 17	6 23	6 31	6 35	6 39	6 43	6 48	6 54
25	5 41	5 50	5 58	6 08	6 14	6 20	6 28	6 36	6 40	6 45	6 50	6 55	7 02
28	5 41	5 50	5 59	6 10	6 16	6 23	6 32	6 41	6 46	6 51	6 56	7 02	7 09
31	5 40	5 50	6 01	6 12	6 19	6 27	6 36	6 46	6 51	6 56	7 02	7 09	7 17
नवं. 1	5 40	5 50	6 01	6 13	6 20	6 28	6 37	6 48	6 53	6 58	7 05	7 12	7 19
4	5 40	5 51	6 02	6 16	6 23	6 31	6 41	6 53	6 58	7 04	7 11	7 18	7 27
7	5 40	5 52	6 04	6 18	6 26	6 35	6 45	6 58	7 04	7 10	7 17	7 26	7 35
10	5 40	5 53	6 06	6 20	6 29	6 38	6 49	7 03	7 09	7 16	7 24	7 32	7 42
13	5 41	5 54	6 07	6 23	6 32	6 42	6 53	7 08	7 14	7 22	7 30	7 39	7 50
16	5 41	5 55	6 09	6 25	6 34	6 45	6 58	7 13	7 20	7 28	7 36	7 46	7 58
19	5 42	5 56	6 11	6 28	6 37	6 48	7 02	7 18	7 25	7 33	7 42	7 53	8 05
22	5 42	5 57	6 13	6 30	6 40	6 52	7 06	7 22	7 30	7 39	7 48	8 00	8 12
25	5 43	5 58	6 14	6 33	6 43	6 55	7 09	7 27	7 35	7 44	7 54	8 06	8 20
28	5 44	6 00	6 16	6 35	6 46	6 58	7 13	7 31	7 40	7 49	8 00	8 12	8 26
दिसं. 1	5 45	6 01	6 18	6 38	6 49	7 02	7 17	7 35	7 44	7 54	8 05	8 18	8 33
4	5 46	6 03	6 20	6 40	6 51	7 05	7 20	7 39	7 48	7 58	8 10	8 23	8 39
7	5 48	6 04	6 22	6 42	6 54	7 08	7 24	7 43	7 52	8 03	8 14	8 28	8 44
10	5 49	6 06	6 24	6 44	6 56	7 10	7 27	7 46	7 56	8 07	8 19	8 33	8 49
13	5 50	6 07	6 26	6 46	6 59	7 13	7 29	7 49	7 59	8 10	8 22	8 37	8 54
16	5 52	6 09	6 27	6 48	7 01	7 15	7 32	7 52	8 02	8 13	8 25	8 40	8 57
19	5 53	6 10	6 29	6 50	7 03	7 17	7 34	7 54	8 04	8 15	8 28	8 43	9 00
22	5 55	6 12	6 31	6 52	7 04	7 18	7 35	7 56	8 06	8 17	8 30	8 45	9 02
25	5 56	6 13	8 32	6 53	7 06	7 20	7 37	7 57	8 07	8 18	8 31	8 46	9 04
28	5 58	6 15	6 33	6 55	7 07	7 21	7 38	7 58	8 08	8 19	8 32	8 47	9 04
31	5 59	6 16	6 35	6 56	7 08	7 22	7 38	7 59	8 08	8 20	8 32	8 46	9 04
32	6 00	6 17	6 35	6 56	7 08	7 22	7 39	7 59	8 08	8 20	8 32	8 46	9 03

सूर्यास्त सारणी

सूर्यास्तकाल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश	0°	+10°	+20°	+30°	+35°	+40°	+45°	+50°	+52°	+54°	+56°	+58°	+60°
तारीख	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अक्तू. 1	17 53	17 51	17 49	17 47	17 46	17 44	17 43	17 41	17 40	17 39	17 38	17 37	17 36
4	17 52	17 49	17 46	17 43	17 42	17 39	17 37	17 34	17 33	17 32	17 30	17 29	17 27
7	17 51	17 48	17 44	17 40	17 37	17 35	17 32	17 28	17 26	17 24	17 22	17 20	17 18
10	17 50	17 46	17 41	17 36	17 33	17 30	17 26	17 22	17 20	17 17	17 15	17 12	17 09
13	17 50	17 44	17 39	17 33	17 29	17 25	17 21	17 15	17 13	17 10	17 07	17 04	17 00
16	17 49	17 43	17 37	17 29	17 25	17 21	17 15	17 09	17 06	17 03	17 00	16 56	16 51
19	17 48	17 42	17 34	17 26	17 22	17 16	17 10	17 03	17 00	16 56	16 52	16 48	16 43
22	17 48	17 40	17 32	17 23	17 18	17 12	17 05	16 57	16 53	16 49	16 45	16 40	16 34
25	17 48	17 39	17 30	17 20	17 14	17 08	17 00	16 51	16 47	16 43	16 38	16 32	16 26
28	17 47	17 38	17 28	17 17	17 11	17 04	16 56	16 46	16 41	16 36	16 31	16 24	16 18
31	17 47	17 37	17 27	17 15	17 08	17 00	16 51	16 40	16 36	16 30	16 24	16 17	16 10
नवं. 1	17 47	17 37	17 26	17 14	17 07	16 59	16 50	16 39	16 34	16 28	16 22	16 15	16 07
4	17 47	17 36	17 25	17 12	17 04	16 56	16 46	16 34	16 28	16 22	16 15	16 08	15 59
7	17 47	17 36	17 23	17 09	17 01	16 52	16 42	16 29	16 23	16 16	16 09	16 01	15 52
10	17 48	17 35	17 22	17 07	16 59	16 49	16 38	16 24	16 18	16 11	16 03	15 54	15 44
13	17 48	17 35	17 21	17 06	16 57	16 46	16 34	16 20	16 13	16 06	15 58	15 48	15 37
16	17 48	17 35	17 20	17 04	16 55	16 44	16 31	16 16	16 09	16 01	15 52	15 42	15 31
19	17 49	17 35	17 20	17 03	16 53	16 42	16 28	16 12	16 05	15 57	15 47	15 37	15 24
22	17 50	17 35	17 19	17 02	16 51	16 40	16 26	16 09	16 01	15 53	15 43	15 32	15 19
25	17 51	17 35	17 19	17 01	16 50	16 38	16 24	16 06	15 58	15 49	15 39	15 27	15 13
28	17 51	17 36	17 19	17 00	16 49	16 37	16 22	16 04	15 55	15 46	15 35	15 23	15 08
दिसं.1	17 52	17 36	17 19	17 00	16 49	16 36	16 20	16 02	15 53	15 43	15 32	15 19	15 04
4	17 54	17 37	17 20	17 00	16 48	16 35	16 19	16 00	15 51	15 41	15 30	15 16	15 00
7	17 55	17 38	17 20	17 00	16 48	16 35	16 19	15 59	15 50	15 39	15 27	15 14	14 57
10	17 56	17 39	17 21	17 00	16 48	16 35	16 18	15 58	15 49	15 38	15 26	15 12	14 55
13	17 58	17 40	17 22	17 01	16 49	16 35	16 18	15 58	15 48	15 38	15 25	15 11	14 54
16	17 59	17 42	17 23	17 02	16 50	16 36	16 19	15 58	15 49	15 38	15 25	15 10	14 53
19	18 00	17 43	17 25	17 03	16 51	16 37	16 20	15 59	15 49	15 38	15 25	15 11	14 53
22	18 02	17 44	17 26	17 05	16 52	16 38	16 21	16 00	15 50	15 39	15 27	15 12	14 54
25	18 03	17 46	17 28	17 06	16 54	16 40	16 23	16 02	15 52	15 41	15 28	15 14	14 56
28	18 05	17 48	17 29	17 08	16 56	16 42	16 25	16 04	15 54	15 43	15 31	15 16	14 59
31	18 06	17 49	17 31	17 10	16 58	16 44	16 27	16 07	15 57	15 46	15 34	15 19	15 02
32	18 07	17 50	17 32	17 11	16 59	16 45	16 28	16 08	15 58	15 47	15 35	15 21	15 04

सूर्यकेन्द्रोदयास्त–संस्कार सारणी

उत्तर या दक्षिण अक्षांश→	0	10°	20°	30°	35°	40°	45°	50°	52°	54°	56°	58°	60°
तारीख	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.
22 दिसं.	3 25	3 29	3 41	4 05	4 22	4 47	5 22	6 13	6 41	7 16	8 01	9 01	10 29
21 जन.	3 20	3 24	3 35	3 56	4 13	4 34	5 04	5 46	6 07	6 33	7 05	7 44	8 35
9 फर.	3 15	3 18	3 28	3 47	4 02	4 21	4 46	5 19	5 36	5 57	6 19	6 47	7 20
24 फर.	3 11	3 14	3 24	3 42	3 55	4 12	4 34	5 04	5 18	5 35	5 54	6 16	6 41
8 मार्च	3 09	3 12	3 21	3 38	3 51	4 07	4 28	4 55	5 08	5 24	5 41	5 59	6 22
21 मार्च	3 08	3 11	3 20	3 37	3 50	4 05	4 26	4 53	5 05	5 20	5 36	5 55	6 16
2 अप्रै.	3 09	3 12	3 21	3 38	3 51	4 07	4 28	4 55	5 08	5 24	5 41	5 59	6 22
16 अप्रै.	3 11	3 14	3 24	3 42	3 55	4 12	4 34	5 04	5 18	5 35	5 54	6 16	6 41
1 मई	3 15	3 18	3 28	3 47	4 02	4 21	4 46	5 19	5 36	5 57	6 19	6 47	7 20
20 मई	3 20	3 24	3 35	3 56	4 13	4 34	5 04	5 46	6 07	6 33	7 05	7 44	8 35
21 जून	3 25	3 29	3 41	4 05	4 22	4 47	5 22	6 13	6 41	7 16	8 01	9 01	10 29
23 जुला.	3 20	3 24	3 35	3 56	4 13	4 34	5 04	5 46	6 07	6 33	7 05	7 44	8 35
12 अग.	3 15	3 18	3 28	3 47	4 02	4 21	4 46	5 19	5 36	5 57	6 19	6 47	7 20
27 अग.	3 11	3 14	3 24	3 42	3 55	4 12	4 34	5 04	5 18	5 35	5 54	6 16	6 41
10 सितं.	3 09	3 12	3 21	3 38	3 51	4 07	4 28	4 55	5 08	5 24	5 41	5 59	6 22
23 सितं.	3 08	3 11	3 20	3 37	3 50	4 05	4 26	4 53	5 05	5 20	5 36	5 55	6 16
6 अक्तू.	3 09	3 12	3 21	3 38	3 51	4 07	4 28	4 55	5 08	5 24	5 41	5 59	6 22
19 अक्तू.	3 11	3 14	3 24	3 42	3 55	4 12	4 34	5 04	5 18	5 35	5 54	6 16	6 41
3 नवं.	3 15	3 18	3 28	3 47	4 02	4 21	4 46	5 19	5 36	5 57	6 19	6 47	7 20
22 नवं.	3 20	3 24	3 35	3 56	4 13	4 34	5 04	5 46	6 07	6 33	7 05	7 44	8 35
22 दिसं.	3 25	3 29	3 41	4 05	4 22	4 47	5 22	6 13	6 41	7 16	8 01	9 01	10 29

गत पृष्ठों पर दी गई सूर्योदय– सूर्यास्तसारणी से सूर्यबिम्ब के ऊपरी कोर का उदयास्त ज्ञात होता है, इसलिए इसे 'बिम्बशीर्ष दृश्य' उदयास्तकाल कहा जाता है। यह उदयास्तकाल किरणवक्रीभवन संस्कार से संस्कृत भी है। पृथ्वी के वातावरण के कारण उत्पन्न किरणवक्रीभवन (Refraction) से सूर्य का बिम्ब वास्तविक सूर्योदयकाल से कुछ मिनट पहले ही पूर्वी क्षितिज में दीखने लग जाता है और इसी कारण वह वास्तविक सूर्यास्तकाल के कुछ मिनट बाद तक पश्चिमी क्षितिज में भी दीखता रहता है। किरणवक्रीभवन के कारण सूर्यबिम्ब की ऊपरी कोर जब पूर्वी एवं पश्चिमी क्षितिज में दिखाई पड़ रही होती है तब सूर्यबिम्ब का केन्द्र वस्तुतः क्षितिज से लगभग 47 कला नीचे होता है। लग्नआदि साधन के लिए, इष्टकाल बनाने के लिए वास्तविक सूर्यबिम्ब के केन्द्रोदयास्त का काल अपेक्षित होता है। इस 'सूर्यकेन्द्रोदयास्त संस्कार सारणी' में दिया गया संस्कार किरणवक्रीभवन संस्कार से युक्त सूर्योदयास्तकाल (सूर्योदयास्तकाल सारणी में दिए गए सूर्योदयास्तकाल) में कर देने से वास्तविक सूर्यकेन्द्रोदयास्तकाल ज्ञात हो जाता है। यह संस्कार सूर्योदय में जोड़ा और सूर्यास्त में से घटाया जाता है। इस प्रकार प्राप्त सूर्योदयास्तकाल को गणितागत अथवा ज्योतिष–शास्त्रीय सूर्योदयास्त– काल भी कहते हैं।

22 नव.	3 20	3 24	3 35	3 56	4 13	4 34	5 04	5 46	6 07	6 33	7 05	7 44	8 35	को गणितागत अथवा ज्योतिष–शास्त्रीय
22 दिसं.	3 25	3 29	3 41	4 05	4 22	4 47	5 22	6 13	6 41	7 16	8 01	9 01	10 29	सूर्योदयास्त– काल भी कहते हैं।

दक्षिण-अक्षांशीय सूर्योदयास्तसाधन सहायकसारणी (भाग 1)

दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट
जन. 1	जुला. 3	00	जन. 31	अग. 3	+07	मार्च 2	सितं. 4	+13	अप्रै. 1	अक्तू. 5	+15	मई 1	नवं. 3	+ 13	मई 31	दिसं. 2	+ 08	जून 30	दिसं. 30	+ 01
2	4	00	फर. 1	5	08	3	5	13	2	6	15	2	4	13	जून 1	3	08	जुला. 1	31	01
3	5	00	2	6	08	4	6	13	3	7	15	3	5	13	2	4	08	2	जन. 1	01
4	6	00	3	7	08	5	7	13	4	7	15	4	6	13	3	5	07	3	1	00
5	7	+ 01	4	8	08	6	8	14	5	8	15	5	7	13	4	5	07	4	2	00
6	8	01	5	9	09	7	9	14	6	9	15	6	8	13	5	6	07	5	3	00
7	9	01	6	10	09	8	10	14	7	10	15	7	9	13	6	7	07	6	4	– 01
8	10	02	7	11	09	9	11	14	8	11	15	8	10	12	7	8	07	7	5	01
9	11	02	8	12	09	10	12	14	9	12	15	9	11	12	8	9	07	8	6	01
10	12	02	9	13	09	11	13	14	10	13	15	10	12	12	9	10	06	9	7	01
11	13	02	10	14	10	12	14	14	11	14	15	11	13	12	10	11	06	10	8	02
12	14	02	11	15	10	13	15	14	12	15	15	12	14	12	11	12	06	11	9	02
13	15	03	12	16	10	14	16	14	13	16	15	13	15	12	12	13	06	12	10	02
14	16	03	13	17	10	15	17	14	14	17	15	14	16	12	13	14	05	13	11	02
15	17	03	14	18	10	16	18	15	15	18	15	15	17	11	14	15	05	14	12	03
16	19	03	15	19	11	17	19	15	16	19	15	16	17	11	15	16	05	15	13	03
17	20	04	16	20	11	18	20	15	17	20	15	17	18	11	16	17	04	16	14	03
18	21	04	17	21	11	19	21	15	18	21	15	18	19	11	17	18	04	17	15	03
19	22	04	18	22	11	20	22	15	19	22	15	19	20	11	18	19	04	18	15	03
20	23	05	19	23	11	21	23	15	20	23	15	20	21	11	19	20	04	19	16	04
21	24	05	20	25	12	22	24	15	21	24	14	21	22	10	20	21	04	20	17	04
22	25	05	21	26	12	23	25	15	22	25	14	22	23	10	21	21	03	21	18	04
23	26	06	22	27	12	24	26	15	23	26	14	23	24	10	22	22	03	22	19	04
24	27	06	23	28	12	25	27	15	24	27	14	24	25	10	23	23	03	23	20	05
25	28	06	24	29	12	26	29	15	25	28	14	25	26	10	24	24	03	24	21	05
26	29	06	25	30	13	27	30	15	26	29	14	26	27	09	25	25	02	25	22	05
27	30	07	26	31	13	28	अक्तू. 1	15	27	30	14	27	28	09	26	26	02	26	23	06
28	31	07	27	सितं. 1	13	29	2	15	28	31	14	28	29	09	27	27	02	27	24	06
29	अग. 1	07	28	2	13	30	3	15	29	नवं. 1	14	29	30	09	28	28	01	28	25	06
30	2	+ 07	मार्च 1	3	+ 13	31	4	+ 15	30	2	+ 14	30	दिसं. 1	+ 09	29	29	+ 01	29	26	– 06

दक्षिण अक्षांशीय सूर्योदयास्तसाधन सहायकसारणी (भाग 2)

दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट
जुला.30	जन. 27	– 07	अग. 30	फर. 25	– 13	सित. 30	मार्च 27	– 15	अक्तु. 31	अप्रै. 28	– 14	दिसं. 1	मई 30	– 08
31	28	07	31	26	13	अक्तू. 1	28	15	नवं. 1	29	14	2	31	08
अग. 1	29	07	सितं 1	27	13	2	29	15	2	30	14	3	जून 1	08
2	30	07	2	28	13	3	31	15	3	मई 1	13	4	2	08
3	30	07	3	मार्च 1	13	4	31	15	4	2	13	5	3	07
4	31	08	4	2	13	5	अप्रै. 1	15	5	3	13	6	4	07
5	फर. 1	08	5	3	13	6	2	15	6	4	13	7	6	07
6	2	08	6	4	14	7	3	15	7	5	13	8	7	07
7	3	08	7	5	14	8	4	15	8	6	13	9	8	07
8	4	08	8	6	14	9	5	15	9	7	13	10	9	07
9	5	09	9	7	14	10	6	15	10	8	12	11	10	06
10	6	09	10	8	14	11	7	15	11	9	12	12	11	06
11	7	09	11	9	14	12	9	15	12	10	12	13	12	06
12	8	09	12	10	14	13	10	15	13	11	12	14	13	05
13	9	09	13	11	14	14	11	15	14	12	12	15	14	05
14	10	10	14	12	14	15	12	15	15	13	12	16	15	05
15	11	10	15	13	14	16	13	15	16	14	11	17	16	04
16	12	10	16	14	14	17	14	15	17	15	11	18	17	04
17	13	10	17	15	15	18	15	15	18	17	11	19	18	04
18	14	10	18	16	15	19	16	15	19	18	11	20	19	04
19	15	11	19	17	15	20	17	15	20	19	11	21	21	03
20	16	11	20	18	15	21	18	15	21	20	11	22	22	03
21	17	11	21	19	15	22	19	15	22	21	10	23	23	03
22	18	11	22	20	15	23	20	15	23	22	10	24	24	03
23	19	11	23	21	15	24	21	14	24	23	10	25	25	02
24	19	12	24	22	15	25	22	14	25	24	10	26	26	02
25	20	12	25	23	15	26	23	14	26	25	10	27	27	02
26	21	12	26	24	15	27	24	14	27	26	09	28	28	02
27	22	12	27	25	15	28	25	14	28	27	09	29	29	01
28	23	12	28	26	15	29	26	14	29	28	09	30	30	01
29	24	– 12	29	26	– 15	30	27	– 14	30	29	– 09	31	जुला. 1	– 01
												32	2	00

गत पृष्ठों पर सूर्योदयसारणी एवं सूर्यास्तसारणी में दिया गया सूर्योदयास्त–काल केवल उत्तरी अक्षांशों के लिए है। दक्षिण अक्षांश वाले स्थलों का सूर्योदयास्तकाल जानने के लिए ऊपर दिए गए इस कोष्ठक का प्रयोग कीजिए । जिस तारीख के लिए दक्षिण अक्षांश का सूर्योदयास्तकाल जानना है, उस 'द. अक्षांशीय तारीख' के आगे इस कोष्ठक में लिखी 'उ.अक्षांशीय तारीख' का सूर्योदयास्त पिछले पृष्ठों पर दी गई सूर्योदय–सूर्यास्त–सारणी से ही ज्ञात कर लें। इसमें इस कोष्ठक से प्राप्त संस्कार के मिनटों को चिह्नानुसार जोड़ने या घटाने से आपके अभीष्ट तारीख का अभीष्ट द.अक्षांशीय सूर्योदयास्तकाल (स्था. म. का.) ज्ञात हो जाएगा। जैसे :– 10 मार्च को द. अक्षांश 20° के स्थल का सूर्योदयास्त जानने के लिए इस कोष्ठक के अनुसार हमें 12 सितम्बर का सूर्योदयास्त 'उ. अक्षांशीय सारणी से ही लेना होगा। जो कि क्रमशः 5 घं 46 मि. और 18 घं 6 मि. है। इन दोनों में इस कोष्ठक से प्राप्त संस्कार मिनट +14 चिह्नानुसार जोड़ने पर 10 मार्च को 20° द. अक्षांश का सूर्योदयास्तकाल (स्था. म. काल) क्रमशः 6 घं. 00 मि. और 18 घं. 20 मि. प्राप्त हुआ। इनमें अभीष्ट नगर का स्टैंण्डर्ड अन्तर जोड़ने या घटाने से यह सूर्योदयास्तकाल क्षेत्रीय स्टैं. टा. में बदल जाएगा।

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

संक्षिप्तरूपः— अं. नि.= अण्डेमान एवं निकोबार, अरुणा.= अरुणाचल प्रदेश, आं.=आन्ध्र प्रदेश, आसा.= आसाम , उ.= उड़ीसा, उ.प्र.=उत्तरप्रदेश, उ.आं उत्तरांचल, क.= कर्णाटक , के.= केरल, गु.= गुजरात, गोवा= गोवा, का.= जम्मू–काश्मीर, ता.= तामिलनाडु, त्रि.= त्रिपुरा, दा.ना.= दादर एण्ड नागर हवेली, डा.= डामन ड्यू, ना.= नागालैण्ड, बं.= प. बंगाल, पं.= पंजाब, पां.= पाण्डिचेरी, बि.=बिहार, झा.ख.= झारखण्ड, मणि.= मणिपुर, म.प्र.= मध्यप्रदेश, छ.ग.= छत्तीसगढ़, म.= महाराष्ट्र, मिज़ो.= मिज़ोरम, मे.= मेघालय, रा.= राजस्थान, लक्ष.= लक्षद्वीप, सि.= सिक्किम, ह.= हरियाणा, हि.= हिमाचल प्रदेश,

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
अकबरपुर	(उ.प्र.)	26 25	82 33	+ 0 12
अंकलेश्वर	(गु.)	21 38	73 02	−37 52
अकोला	(म.)	20 40	77 05	−21 40
अखनूर	(का.)	32 53	74 45	−31 00
अगरतला	(त्रि.)	23 48	91 15	+35 00
अगरोहा	(ह.)	29 21	75 38	−27 28
अंगुल	(उ.)	20 48	85 04	+10 16
अच्छीवाल	(का.)	33 41	75 14	−29 04
अजन्ता	(म.)	20 30	75 48	−26 48
अजनाला	(पं.)	31 51	74 48	−30 48
अजमेर	(रा.)	26 27	74 42	−31 12
अटारी	(पं.)	31 36	74 35	−31 40
अतनेर	(म.प्र.)	21 40	77 59	−18 04
अनन्तनाग	(का.)	33 44	75 10	−29 20
अनन्तपुर	(आं.)	14 42	77 36	−19 36
अनामले	(ता.)	10 34	76 50	−22 40
अनूपगढ़	(रा.)	29 07	73 06	−37 36
अनूपशहर	(उ.प्र.)	28 22	78 16	−16 56
अबोहर	(पं.)	30 09	74 11	−33 16
अमरकंटक	(म.प्र.)	22 40	81 45	− 3 00
अमरनाथगुफा	(का.)	34 13	75 32	−27 52
अमरावती	(म.)	20 56	77 45	−19 00
अमरावती	(आं.)	16 35	80 20	− 8 40
अमरेली	(गु.)	21 36	71 18	−44 48
अमरोहा	(उ.प्र.)	28 54	78 29	−16 04
अमलापुरम्	(आं.)	16 36	82 03	− 1 48
अमलोह	(पं.)	30 37	76 14	−25 04
अमीनगांव	(आसा.)	26 13	91 45	+37 00
अमृतसर	(पं.)	31 37	74 55	−30 20
अमेठी	(उ.प्र.)	26 08	81 50	− 2 40
अम्ब	(हि.)	31 42	76 07	−25 32
अम्बाला	(ह.)	30 21	76 52	−22 32
अम्बाह	(उ.प्र.)	26 43	78 15	−17 00
अम्बिकापुर	(छ.ग.)	23 07	83 12	+ 2 48
अयोध्या	(उ.प्र.)	26 48	82 12	− 1 12
अरकोट	(ता.)	12 54	79 20	−12 40
अरकोणम्	(ता.)	13 05	79 40	−11 20
अर्की	(हि.)	31 09	76 58	−22 08
अर्वी.	(म.)	21 00	78 18	−16 48
अरारिया	(बि.)	26 08	87 24	+19 36
अल्मोड़ा	(उ.आं.)	29 37	79 40	−11 20
अलवर	(रा.)	27 34	76 38	−23 28
अलीगंज	(उ.प्र.)	27 30	79 11	−13 16
अलीगढ़	(उ.प्र.)	27 53	78 05	−17 40
अलीपुर	(बं.)	22 32	88 20	+23 20
अलीपुर दुआर	(बं.)	26 29	89 44	+28 56
अलीबाग	(म.)	18 38	72 55	−38 20
अवनिगड्डा	(आं.)	16 03	80 59	− 6 04
अशोकनगर	(म.प्र.)	24 33	77 43	−19 08
अहमदनगर	(म.)	19 05	74 44	−31 04
अहमदाबाद	(गु.)	23 03	72 40	−39 20
अहवा	(गु.)	20 44	73 41	−35 16
आगरा	(उ.प्र.)	27 11	78 01	−17 56
आजमगढ़	(उ.प्र.)	26 04	83 11	+ 2 44
आडोनी	(आं.)	15 38	77 16	−20 56
आदिलाबाद	(आं.)	19 40	78 31	−15 56
आनन्द	(गु.)	22 34	73 01	−37 56
आनन्दपुरसाहिब	(पं.)	31 15	76 31	−23 56
आनी	(हि.)	31 27	77 25	−20 20
आबू	(रा.)	24 40	72 45	−39 00
आरा	(बि.)	25 34	84 40	+ 8 40
आरामबाग	(बं.)	22 53	87 47	+21 08
आसनसोल	(बं.)	23 41	86 59	+17 56
आसिन्द	(रा.)	25 42	74 21	−32 36
इच्छापुरम्	(उ.)	19 10	84 43	+ 8 52
इटारसी	(म.प्र.)	22 37	77 45	−19 00
इटावा	(उ.प्र.)	26 47	79 02	−13 52
इन्दौर	(म.प्र.)	22 44	75 50	−26 40
इन्दौरा	(हि.)	32 07	75 40	−27 20
इम्फाल	(मणि.)	24 47	93 57	+45 48
इलाहाबाद	(उ.प्र.)	देखें	प्रयाग	−
ईटानगर	(अरुणा.)	27 05	93 40	+44 40
ईसागढ़	(म.प्र.)	24 50	77 53	−18 28
उखरूल	(मणि.)	25 07	94 23	+47 32
उगाला	(ह.)	30 11	76 59	−22 04
उज्जैन	(म.प्र.)	23 09	75 43	−27 08
उड़ी	(का.)	34 05	74 01	−33 56
उडुपी	(क.)	13 23	74 45	−31 00
उत्तरकाशी	(उ.आं.)	30 44	78 27	−16 12
उदयगिरि	(उ.)	19 08	84 10	+ 6 40
उदयपुर	(त्रि.)	23 32	91 29	+35 56

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
उदयपुर	(र.)	24 35	73 41	−35 16	कपूरथला	(पं.)	31 23	75 23	−28 28	कालिकट	(के.)	11 15	75 46	−26 56
उन्नाव	(उ.प्र.)	26 32	80 30	− 8 00	करतारपुर	(पं.)	31 27	75 30	−28 00	कालिम्पोंग	(बं.)	27 04	88 29	+23 56
उपशी	(का.)	33 52	77 50	−18 40	कर्णप्रयाग	(उ.आं.)	30 13	79 17	−12 52	काशी	(उ.प्र.)	देखें	वाराणसी	− −
उमरकोट	(उ.)	19 39	82 18	− 0 48	करनाल	(ह.)	29 42	77 02	−21 52	कियारीघाट	(हि.)	31 00	77 05	−21 40
उरई	(उ.प्र.)	25 59	79 28	−12 08	करसोग	(हि.)	31 23	77 13	−21 08	किरकी	(म.)	18 36	73 57	−34 12
उल्हासनगर	(म.)	19 13	73 07	−37 32	कराड	(म.)	17 15	74 12	−33 12	किश्तवाड़	(का.)	33 19	75 48	−26 48
ऊटकमण्ड	(ता.)	11 24	76 44	−23 04	करूर	(ता.)	10 58	78 03	−17 48	किशनगंज	(बि.)	26 10	87 56	+21 44
ऊधमपुर	(का.)	32 54	75 06	−29 36	कालाअम्ब	(हि.)	30 30	77 13	−21 08	किशनगढ़ (अजमेर)	(रा.)	26 34	74 52	−30 32
ऊना	(हि.)	31 29	76 17	−24 52	काल्पा	(हि.)	31 32	78 15	−17 00	कीरतपुरसाहिब	(पं.)	31 11	76 34	−23 44
एकलिंगजी	(रा.)	24 43	73 46	−34 56	करीमगंज	(आसा.)	24 48	92 30	+40 00	कुड्डप्पा	(ता.)	14 28	78 50	−14 40
एटा	(उ.प्र.)	27 38	78 40	−15 20	करीमनगर	(आं.)	18 27	79 06	−13 36	कुड्डालूर	(ता.)	11 43	79 49	−10 44
एरोड	(ता.)	11 20	77 46	−18 56	करौली	(रा.)	26 30	77 01	−21 56	कुफरी	(हि.)	31 06	77 12	−21 12
एर्नाकुलम्	(के.)	10 00	76 16	−24 56	कर्नूल	(आं.)	15 50	78 05	−17 40	कुंभकोणम्	(ता.)	10 59	79 24	−12 24
एलिचपुर	(म.)	21 18	77 33	−19 48	कल्याण	(म.)	19 17	73 11	−37 16	कुमारी अन्तरीप	(ता.)	8 05	77 34	−19 44
एलुरु	(आं.)	16 43	81 09	− 5 24	कवरत्ती	(लक्ष.)	10 33	72 38	−39 28	कुम्हारहट्टी	(हि.)	30 53	77 03	−21 48
एलेप्पे	(के.)	9 30	76 22	−24 32	कवार्धा	(छ.ग.)	22 00	81 15	− 5 00	कुराली	(पं.)	30 50	76 35	−23 40
एलोरा	(म.)	20 04	75 15	−29 00	कसारागोड	(के.)	12 30	75 00	−30 00	कुरुक्षेत्र	(ह.)	29 59	76 50	−22 40
ऐजावल	(मिज़ो.)	23 43	92 44	+40 56	कसौली	(हि.)	30 55	76 57	−22 12	कुल्लू	(हि.)	31 58	77 06	−21 36
ओखा	(गु.)	22 26	69 02	−53 52	काकिनाडा	(आं.)	16 56	82 13	− 1 08	कूच बिहार	(बं.)	26 19	89 26	+27 44
ओंगोल	(आं.)	15 30	80 06	− 9 36	कांकेर	(म.प्र.)	20 17	81 32	− 3 52	कृष्णानगर	(बं.)	23 24	88 30	+24 00
औरैया	(उ.प्र.)	26 28	79 31	−11 56	कांगड़ा	(हि.)	32 05	76 18	−24 48	केओंजरगढ़	(उ.)	21 38	85 35	+12 20
ओस्मानाबाद	(म.)	18 09	76 06	−25 36	कांचीपुरम्	(ता.)	12 50	79 44	−11 04	केन्द्रपाड़ा	(उ.)	20 30	86 25	+15 40
औट	(हि.)	31 47	77 11	−21 16	काठगोदाम	(उ.आं.)	29 16	79 32	−11 52	केदारनाथ	(उ.आं.)	30 44	79 04	−13 44
औरंगाबाद	(म.)	19 52	75 22	−28 32	काठियावाड़	(गु.)	22 00	71 00	−46 00	केप कैमोरिन	(ता.)	देखें	कुमारी	अन्तरीप
कटक	(उ.)	20 26	85 56	+13 44	कादियां	(पं.)	31 49	75 23	−28 28	केसरी	(ह.)	30 14	76 54	−22 24
कटनी	(म.प्र.)	23 47	80 27	− 8 12	कानपुर	(उ.प्र.)	26 28	80 21	− 8 36	कैथल	(ह.)	29 48	76 26	−24 16
कटरा	(का.)	32 59	74 57	−30 12	कामठी (काम्पटी)	(म.)	21 12	79 16	−12 56	कैलाशहर	(त्रि.)	24 18	92 01	+38 04
कटराई	(हि.)	32 07	77 07	−21 32	कारकाल	(क.)	13 12	74 59	−30 04	कोचीन	(के.)	9 58	76 14	−25 04
कटिहार	(बि.)	25 30	87 35	+20 20	कारगिल	(का.)	34 31	76 13	−25 08	कोटकपूरा	(पं.)	30 36	74 54	−30 24
कठुआ	(का.)	32 22	75 32	−27 52	कारवाड़	(क.)	14 50	74 09	−33 24	कोटखाई	(हि.)	31 08	77 36	−19 36
कण्डाघाट	(हि.)	30 58	77 07	−21 32	कारिकाल	(पां.)	10 55	79 50	−10 40	कोटगढ़	(हि.)	31 19	77 29	−20 04
कन्नूर	(के.)	11 52	75 25	−28 20	कालका	(ह.)	30 50	76 56	−22 16	कोटा	(रा.)	25 10	75 52	−26 32
कन्नौज	(उ.प्र.)	27 04	79 55	−10 [illegible]										

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
कोट्टायम्	(के.)	9 34	76 31	−23 56
कोटद्वारा	(उ.आं.)	29 45	78 32	−15 52
कोंटई	(बं.)	21 50	87 48	+21 12
कोडैकनाल	(ता.)	10 14	77 29	−20 04
कोणार्क	(उ.)	19 54	86 07	+14 28
कोप्पल	(क.)	15 21	76 09	−25 24
कोयम्बटूर	(ता.)	11 00	77 00	−22 00
कोरबा	(छ.ग.)	22 22	82 42	+ 0 48
कोरापुट	(उ.)	18 48	82 41	+ 0 44
कोलकाता	(बं.)	22 34	88 24	+23 36
कोल्हापुर	(म.)	16 42	74 19	−32 44
कोलार	(क.)	13 10	78 10	−17 20
कोल्लेगाल	(क.)	12 08	77 06	−21 36
कोलेबीरा	(बि.)	22 43	84 42	+ 8 48
कोहिमा	(नागा.)	25 39	94 08	+46 32
क्विलोन	(के.)	8 54	76 38	−23 28
खजियार	(हि.)	32 32	76 04	−25 44
खड़गपुर	(बं.)	22 20	87 20	+19 20
खंडवा	(म.प्र.)	21 50	76 23	−24 28
खतौली	(उ.प्र.)	29 17	77 43	−19 08
खन्ना	(पं.)	30 42	76 13	−25 08
खम्भालिया	(गु.)	22 12	69 39	−51 24
खम्मम्	(आं.)	17 16	80 13	− 9 08
खरगोन	(म.प्र.)	21 52	75 36	−27 36
खरड़	(पं.)	30 45	76 37	−23 32
खलीलाबाद	(उ.प्र.)	26 47	83 04	+ 2 16
खुर्जा	(उ.प्र.)	28 13	77 50	−18 40
खुर्दा	(उ.)	20 10	85 38	+12 32
खेड़ा	(गु.)	22 45	72 45	−39 00
खेमकरण	(पं.)	31 08	74 34	−31 44
गगरेट	(हि.)	31 40	76 04	−25 44
गंगटोक	(सि.)	27 22	88 36	+24 24
गंजम्	(उ.)	19 28	85 05	+10 20

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
गढ़चिराली	(म.)	20 12	80 00	−10 00
गढ़मुक्तेश्वर	(उ.प्र.)	28 48	78 06	−17 36
गढ़वा (गरवा)	(झा.खं.)	24 10	83 52	+ 5 28
गढ़शंकर	(पं.)	31 13	76 08	−25 28
गदग	(क.)	15 26	75 42	−27 12
गया	(बि.)	24 49	85 01	+10 04
गाजियाबाद	(उ.प्र.)	28 40	77 26	−20 16
गाजीपुर	(उ.प्र.)	25 35	83 34	+ 4 16
गांधीधाम	(गु.)	23 06	70 08	−49 28
गिरडीह	(झा.खं.)	24 12	86 21	+15 24
गिलगित	(का.)	35 55	74 21	−32 36
गुड़गांव	(ह.)	28 27	77 04	−21 44
गुंटकल	(आं.)	15 11	77 24	−20 24
गुंटूर	(आं.)	16 20	80 27	− 8 12
गुड़ीवाड़ा	(आं.)	16 27	81 00	− 6 00
गुड्डूर	(आं.)	14 10	79 51	−10 36
गुना	(म.प्र.)	24 40	77 20	−20 40
गुम्मा	(हि.)	31 06	77 28	−20 08
गुरदासपुर	(पं.)	32 02	75 27	−28 12
गुलबर्गा	(क.)	17 20	76 50	−22 40
गुलमर्ग	(का.)	34 05	74 25	−32 20
गुवाहाटी	(आसा.)	26 10	91 45	+37 00
गोइन्दवाल	(पं.)	31 22	75 08	−29 28
गोंडल	(गु.)	21 56	70 50	−46 40
गोंडा	(उ.प्र.)	27 08	82 01	− 1 56
गोधरा	(गु.)	22 49	73 40	−35 20
गोपालगंज	(बि.)	26 28	84 26	+ 7 44
गोम्पा	(का.)	35 02	77 20	−20 40
गोरखपुर	(उ.प्र.)	26 45	83 22	+ 3 28
गोरस	(म.प्र.)	25 32	76 56	−22 16
गोहाना	(ह.)	29 08	76 42	−23 12
गौंडीया	(म.)	21 26	80 14	− 9 04
ग्वालियर	(म.प्र.)	26 14	78 10	−17 20

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
घरौण्डा	(ह.)	29 33	76 58	−22 08
घाटल	(बं.)	22 40	87 43	+20 52
घाटसिला	(झा.खं.)	22 36	86 29	+15 56
घुमारवीं	(हि.)	31 26	76 43	−23 08
चच्योट	(हि.)	31 32	77 01	−21 56
चण्डीगढ़	(यू.टी.)	30 45	76 50	−22 40
चण्डीमन्दिर कैंट	(ह.)	30 42	76 52	−22 32
चन्दननगर	(बं.)	22 51	88 21	+23 24
चन्दौसी	(उ.प्र.)	28 27	78 46	−14 56
चन्द्रपुर	(म.)	19 57	79 18	−12 48
चम्बा	(हि.)	32 34	76 08	−25 28
चमौली	(उ.आं.)	30 24	79 21	−12 36
चरखी दादरी	(ह.)	28 37	76 18	−24 48
चामुण्डा जी	(हि.)	32 07	76 23	−24 28
चायल	(हि.)	30 59	77 12	−21 12
चास	(झा.खं.)	23 38	86 10	+14 40
चिक मंगलूर	(क.)	13 19	75 47	−26 52
चिंगलपुट	(ता.)	12 42	80 01	− 9 56
चित्तरंजन	(बं.)	23 52	86 52	+17 28
चित्तूर	(आं.)	13 12	79 07	−13 32
चितौड़गढ़	(रा.)	24 54	74 40	−31 20
चित्रदुर्ग	(क.)	14 14	76 24	−24 24
चित्रौद	(गु.)	23 25	70 42	−47 12
चिदम्बरम्	(ता.)	11 25	79 42	−11 12
चिन्तपूर्णी	(हि.)	31 49	76 07	−25 32
चिनसुरा	(बं.)	22 53	88 25	+23 40
चिरगांव	(उ.प्र.)	25 35	78 49	−14 44
चिराला	(आं.)	15 50	80 21	− 8 36
चुंगतास	(का.)	35 37	78 37	−15 32
चुनार	(उ.प्र.)	25 08	82 56	+ 1 44
चुशुल	(का.)	33 34	78 38	−15 28
चूड़ाचांदपुर	(मणि.)	24 19	93 40	+44 40
चूरू	(रा.)	28 19	75 01	−29 56

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
चेन्नई	(ता.)	देखें	मद्रास	–
चेरापूंजी	(मे.)	25 17	91 42	+36 48
चौपाल	(हि.)	30 57	77 36	−19 36
छतरपुर	(उ.)	19 24	85 00	+10 00
छतरपुर	(म.प्र.)	24 54	79 38	−11 28
छपरा	(बि.)	25 47	84 45	+ 9 00
छिंदवाड़ा	(म.प्र.)	22 03	78 58	−14 08
छिब्रामऊ	(उ.प्र.)	27 09	79 31	−11 56
छोटा उदयपुर	(गु.)	22 19	74 01	−33 56
जगदलपुर	(छ.ग.)	19 05	82 04	− 1 44
जगरांव	(पं.)	30 47	75 29	−28 04
जगाधरी	(ह.)	30 10	77 18	−20 48
जंगीपुर	(बं.)	24 28	88 04	+22 16
जण्ड्याला	(पं.)	31 36	75 03	−29 48
जतोग	(हि.)	31 06	77 07	−21 32
जनगांव	(आं.प्र.)	17 44	79 10	−13 20
जबलपुर	(म.प्र.)	23 10	79 59	−10 04
जम्बूसार	(गु.)	22 00	72 50	−38 40
जमशेदपुर	(बि.)	22 50	86 10	+14 40
जमालपुर	(बि.)	25 19	86 32	+16 08
जमूई	(बि.)	24 55	86 13	+14 52
जम्मू	(का.)	32 43	74 54	−30 24
जयपुर	(आसा.)	27 14	95 24	+51 36
जयपुर	(रा.)	26 55	75 52	−26 32
जलगांव	(म.)	21 03	75 39	−27 24
जलपाईगुड़ी	(बं.)	26 31	88 44	+24 56
जलालाबाद	(उ.प्र.)	27 43	79 40	−11 20
जशपुरनगर	(छ.ग.)	22 53	84 12	+ 6 48
जसरा	(उ.प्र.)	25 17	81 48	− 2 48
जसरोटा	(का.)	32 29	75 27	−28 12
जाखल	(ह.)	29 48	75 50	−26 40
जामनगर	(गु.)	22 28	70 06	−49 36
जालना	(म.)	19 50	75 58	−26 08

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
जालन्धर	(पं.)	31 19	75 34	−27 44
जालेश्वर	(उ.)	21 48	87 14	+18 56
जालोर	(रा.)	25 22	72 38	−39 28
जालौन	(उ.प्र.)	26 09	79 21	−12 36
ज़िरो	(अरुणा.)	27 32	93 47	+45 08
जींद	(ह.)	29 19	76 19	−24 44
ज़ीरा	(पं.)	30 58	74 59	−30 04
जुब्बल	(हि.)	31 07	77 39	−19 14
जूनागढ़	(गु.)	21 32	70 34	−47 44
जेतपुर	(गु.)	21 43	70 42	−47 12
जैतों	(पं.)	30 28	74 53	−30 28
जैसलमेर	(रा.)	26 55	70 54	−46 24
जोगिन्द्रनगर	(हि.)	31 59	76 46	−22 56
जोधपुर	(रा.)	26 18	73 04	−37 44
जोरहाट	(आसा.)	26 45	94 12	+46 48
जौनपुर	(उ.प्र.)	25 44	82 41	+ 0 44
ज्वालाजी	(हि.)	31 53	76 22	−24 32
ज्वालामुखी	(हि.)	31 53	76 19	−24 44
झज्जर	(ह.)	28 37	76 39	−23 24
झाबुआ	(म.प्र.)	22 45	74 38	−31 28
झरिया	(झा.खं.)	23 45	86 24	+15 36
झांसी	(उ.प्र.)	25 26	78 35	−15 40
झालरापाटन	(रा.)	24 33	76 10	−25 20
झालावाड़	(रा.)	24 36	76 09	−25 24
झुंझुनू	(रा.)	28 06	75 25	−28 20
टांडा उरमुर	(पं.)	31 42	75 38	−27 28
टिकापाडा डैम	(उ.)	20 32	84 56	+ 9 44
टिथवाल	(का.)	34 24	73 47	−34 52
टिहरी	(उ.आं.)	30 20	78 30	−16 00
टीकमगढ़	(म.प्र.)	24 45	78 53	−14 28
टीहरा सुजानपुर	(हि.)	31 51	76 32	−23 52
टुंकूर	(क.)	13 21	77 05	−21 40
[illegible]	(ता.)	8 49	78 14	−17 16

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
टुण्डला	(उ.प्र.)	27 12	78 17	−16 52
टोंक	(रा.)	26 11	75 50	−26 40
टोडा रायसिंह	(रा.)	26 00	75 29	−28 04
टोहाना	(ह.)	29 42	75 54	−26 24
ट्रावनकोर	(के.)	9 00	77 00	−22 00
ठयोग	(हि.)	31 07	77 21	−20 36
डगशई	(हि.)	30 53	77 03	−21 48
डबवाली	(पं.)	29 58	74 45	−31 00
डमटाल	(हि.)	32 12	75 40	−27 20
डलहौज़ी	(हि.)	32 32	75 59	−26 04
डामन	(डा.)	20 25	72 53	−38 28
डायमंड हार्बर	(बं.)	22 12	88 12	+22 48
डालटनगंज	(झा.खं.)	24 02	84 04	+ 6 16
डिगबोई	(आसा.)	27 22	95 40	+52 40
डिंडीगुल	(क.)	10 22	78 00	−18 00
डिबाई	(उ.प्र.)	28 13	78 15	−17 00
डिब्रूगढ़	(आसा.)	27 29	94 56	+49 44
डीडवाना	(रा.)	27 24	74 34	−31 44
डीसा	(गु.)	24 14	72 13	−41 08
डूंगरपुर	(रा.)	23 50	73 43	−35 08
डोडा	(का.)	33 10	75 35	−27 40
ड्यू	(डा.)	20 42	71 01	−45 56
ढुबरी	(आसा.)	26 02	89 58	+29 52
तंजावर	(ता.)	10 46	79 09	−13 24
तपा	(पं.)	30 19	75 21	−28 36
तरनतारन	(पं.)	31 27	74 58	−30 08
तवांग	(अरुणा.)	27 35	91 52	+37 28
तांगला	(आसा.)	26 40	91 57	+37 48
ताड़पत्री	(आं.)	14 55	77 59	−18 04
तामलुक	(बं.)	22 18	87 55	+21 40
ताम्बरम्	(ता.)	12 55	80 07	− 9 32
तारकेश्वर	(बं.)	22 54	88 02	+22 08
तारा	(गु.)	24 00	71 51	−42 36

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
तारादेवी	(हि.)	31 03	77 08	−21 28
तिनसुकिया	(आसा.)	27 28	95 20	+51 20
तिरुवनन्तपुरम्	(के.)	8 30	76 58	−22 08
तिरुपति	(आं.)	13 39	79 25	−12 20
तिरुप्पर	(क.)	11 05	77 20	−20 40
तिरुवन्नामलै	(ता.)	12 13	79 04	−13 44
तुर्रा	(मे.)	25 30	90 13	+30 52
तेजपुर	(आसा.)	26 38	92 49	+41 16
तेनाली	(आं.)	16 13	80 36	− 7 36
तेरुनेलवेली	(ता.)	8 45	77 43	−19 08
त्रिचुरापल्ली	(ता.)	10 49	78 41	−15 16
त्रिचूर	(के.)	10 32	76 14	−25 04
त्रिवेन्द्रम्	(के.)	देखें —	तिरुवनन्तपुरम्	
थराड	(गु.)	24 26	71 40	−43 20
थानेधार	(हि.)	31 20	77 34	−19 44
थानेसर	(ह.)	29 58	76 56	−22 16
दतिया	(म.प्र.)	25 39	78 27	−16 12
दन्तेवाड़ा	(छ.ग.)	18 52	81 22	− 4 32
दभोई	(गु.)	22 08	73 28	−36 08
दमोह	(म.प्र.)	23 50	79 29	−12 04
दरभंगा	(बि.)	26 10	85 57	+13 48
दसूहा	(पं.)	31 49	75 38	−27 28
दादरी	(ह.)	28 34	77 33	−19 48
दानापुर	(बि.)	25 38	85 05	+10 20
दार्जिलिंग	(बं.)	27 02	88 16	+23 04
दावनगेरे	(क.)	14 30	75 52	−26 32
दिल्ली	(यू.टी.)	28 38	77 12	−21 12
दीनानगर	(पं.)	32 09	75 28	−28 08
दीमापुर	(नागा.)	25 53	93 43	+44 52
दुजाना	(ह.)	28 41	76 37	−23 32
दुमका	(झा.खं.)	24 16	87 15	+19 00
दुर्ग	(म.प्र.)	21 11	81 17	− 4 52
दुर्गापुर	(बं.)	23 29	87 20	+19 20
देओगढ़	(उ.)	21 32	84 46	+ 9 04
देओट सिद्ध	(हि.)	31 28	76 34	−23 44
देवघर	(बि.)	24 30	86 42	+16 48
देवप्रयाग	(उ.आं.)	30 09	78 37	−15 32
देवबन्द	(उ.प्र.)	29 42	77 41	−19 16
देवरिया	(उ.प्र.)	26 31	83 47	+ 5 08
देवलाली	(म.)	19 58	73 52	−34 32
देवास	(म.प्र.)	22 58	76 06	−25 36
देहरा गोपीपुर	(हि.)	31 54	76 13	−25 08
देहरादून	(उ.आं.)	30 19	78 02	−17 52
देहरी	(बि.)	24 52	84 11	+ 6 44
दोराहा मण्डी	(पं.)	30 49	76 02	−25 52
दौसा	(रा.)	26 51	76 21	−24 36
द्रास	(का.)	34 27	75 46	−26 56
द्वारिका	(गु.)	22 14	69 02	−53 52
धनबाद	(झा.खं.)	23 47	86 30	+16 00
धनुष्कोडी	(ता.)	9 12	79 25	−12 20
धमतरी	(छ.ग.)	20 42	81 34	− 3 44
धर्मजयगढ़	(म.प्र.)	22 28	83 13	+ 2 52
धर्मपुर	(हि.)	30 53	77 02	−21 52
धर्मशाला	(हि.)	32 16	76 23	−24 28
ध्रांगधरा	(गु.)	22 59	71 29	−44 04
धार	(म.प्र.)	22 35	75 20	−28 40
धारवाड़	(क.)	15 30	75 04	−29 44
धुले	(म.)	20 58	74 47	−30 52
धेन कानाल	(उ.)	20 40	85 39	+12 36
धौलपुर	(रा.)	26 42	77 53	−18 28
नईहाटी	(बं.)	22 57	88 25	+23 40
नकोदर	(पं.)	31 07	75 29	−28 04
नगर	(हि.)	32 07	77 08	−21 28
नगरोटा बगवां	(हि.)	32 06	76 22	−24 32
नजीबाबाद	(उ.प्र.)	29 38	78 20	−16 40
नडियाद	(गु.)	22 42	72 55	−38 20
नन्दापुर	(उ.)	18 32	82 52	+ 1 28
नन्दुरबार	(म.)	21 22	74 15	−33 00
नयागढ़	(उ.)	20 10	85 08	+10 32
नरवाणा	(ह.)	29 37	76 07	−25 32
नरसिंहपुरा	(उ.)	20 28	85 08	+10 32
नरेन्द्रनगर	(उ.आं.)	30 10	78 20	−16 40
नरैना	(रा.)	26 50	74 11	−33 16
नवद्वीप	(बं.)	23 25	88 22	+23 28
नवरंगपुर	(उ.)	19 15	82 39	+ 0 36
नवलगढ़	(रा.)	27 51	75 18	−28 48
नवसारी	(गु.)	20 52	72 56	−38 16
नवांशहर	(पं.)	31 07	76 08	−25 28
नसीराबाद	(रा.)	26 18	74 46	−30 56
नागापट्टनम्	(ता.)	10 45	79 50	−10 40
नागपुर	(म.)	21 10	79 10	−13 20
नागरकोयल	(ता.)	8 10	77 26	−20 16
नागौर	(रा.)	27 11	73 44	−35 04
नाचना	(रा.)	27 29	71 45	−43 00
नाथद्वारा	(रा.)	24 56	73 50	−34 40
नान्देड़	(म.)	19 11	77 21	−20 36
नानपाड़ा	(उ.प्र.)	27 52	81 30	− 4 00
नान्दोड़	(गु.)	21 52	73 32	−35 52
नाभा	(पं.)	30 22	76 08	−25 28
नारकण्डा	(हि.)	31 16	77 27	−20 12
नारनौल	(ह.)	28 03	76 14	−25 04
नारायणगढ़	(ह.)	30 29	77 08	−21 28
नालगोंडा	(आं.)	17 04	79 15	−13 00
नालन्दा	(बि.)	25 07	85 25	+11 40
नालागढ़	(हि.)	31 03	76 42	−23 12
नालिया	(गु.)	23 19	68 51	−54 36
नासिक	(म.)	20 00	73 52	−34 32
नाहन	(हि.)	30 33	77 21	−20 36

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
निज़ामाबाद	(आं.)	18 40	78 07	−17 40
निम्बहेड़ा	(रा.)	24 37	74 45	−31 00
निरमण्ड	(हि.)	31 27	77 34	−19 44
नीमच	(म.प्र.)	24 27	74 52	−30 32
नीलगिरि	(उ.)	21 29	86 49	+17 16
नीलोखेड़ी	(ह.)	29 51	76 55	−22 20
नूरपुर	(हि.)	32 18	75 54	−26 24
नूरपुरबेदी	(पं.)	31 09	76 29	−24 04
नैनवा	(रा.)	25 45	75 57	−26 12
नैनीताल	(उ.आं.)	29 23	79 27	−12 12
नैल्लूर	(आं.)	14 29	80 00	−10 00
नोखामण्डी	(रा.)	27 35	73 29	−36 04
नोंगस्टोइन	(मे.)	25 31	91 16	+35 04
नोहर	(रा.)	29 11	74 46	−30 56
नौशहरा	(का.)	33 10	74 15	−33 00
पचपदरा	(रा.)	25 55	72 21	−40 36
पंचकूला	(ह.)	30 42	76 52	−22 32
पंचमढ़ी	(म.प्र.)	22 28	78 26	−16 16
पंजिम	(गोवा)	15 29	73 50	−34 40
पटना	(बि.)	25 37	85 13	+10 52
पटियाला	(पं.)	30 20	76 25	−24 20
पट्टी	(पं.)	31 17	74 51	−30 36
पटौदी	(ह.)	28 18	76 48	−22 48
पठानकोट	(पं.)	32 17	75 42	−27 12
पंढरपुर	(म.)	17 42	75 24	−28 24
पन्ना	(म.प्र.)	24 44	80 14	− 9 04
परभनी	(म.)	19 16	76 51	−22 36
पराकसम	(आं.)	15 30	80 06	− 9 36
पलवल	(ह.)	28 09	77 20	−20 40
पहलगाम	(का.)	34 01	75 20	−28 40
पाकौर	(झा.खं.)	24 38	87 54	+21 36
पाटन	(गु.)	23 50	72 09	−41 24
पाटनगढ़	(उ.)	20 43	83 09	+ 2 36

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
पाठलगांव	(म.प्र.)	22 34	83 28	+ 3 52
पाण्डिचेरी	(पां.)	11 58	79 54	−10 24
पणजी	(गोवा)	15 29	73 50	−34 40
पानीपत	(ह.)	29 23	77 00	−22 00
पापड़हांडी	(उ.)	19 22	82 34	+ 0 16
पालनपुर	(गु.)	24 12	72 29	−40 04
पालमपुर	(हि.)	32 07	76 33	−23 48
पालिताणा	(गु.)	21 30	71 50	−42 40
पाली	(रा.)	25 46	73 20	−36 40
पालयंकोट्टै	(ता.)	8 42	77 46	−18 56
पांवटा साहिब	(हि.)	30 27	77 37	−19 32
पासीघाट	(अरुणा.)	28 05	95 20	+51 20
पिठोरागढ़	(उ.आं.)	29 35	80 13	− 9 08
पिपली	(ह.)	29 58	76 53	−22 28
पिहोवा	(ह.)	29 57	76 37	−23 32
पीलीभीत	(उ.प्र.)	28 38	79 48	−10 48
पुंछ	(का.)	33 51	74 06	−33 36
पुट्टापर्त्ती	(आं.)	14 15	77 45	−19 00
पुदुक्कोट्टै	(ता.)	10 23	78 49	−14 44
पुरनिया	(बि.)	25 49	87 31	+20 04
पुरी	(उ.)	19 48	85 52	+13 28
पुरुलिया	(बं.)	23 20	86 22	+15 28
पुष्कर	(रा.)	26 30	74 33	−31 48
पूना	(म.)	18 34	73 53	−34 28
पोरबन्दर	(गु.)	21 40	69 36	−51 36
पोर्टब्लेयर	(अं.नि.)	11 41	92 43	+40 52
पोलाची	(ता.)	10 38	77 00	−22 00
पौड़ी	(उ.आं.)	30 09	78 47	−14 52
प्रतापगढ़	(उ.प्र.)	25 50	81 59	− 2 04
प्रतापगढ	(म.प्र.)	24 02	74 47	−30 52
प्रयाग	(उ.प्र.)	25 28	81 54	− 2 24
प्रोद्दातूर	(ता.)	14 45	78 35	−15 40
फगवाड़ा	(पं.)	31 14	75 46	−26 56

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
फतेहपुर	(उ.प्र.)	25 56	80 52	− 6 32
फतेहपुर सीकरी	(उ.प्र.)	27 06	77 40	−19 20
फतेहाबाद	(उ.प्र.)	27 01	78 19	−16 44
फतेहाबाद	(ह.)	29 31	75 28	−28 08
फरीदकोट	(पं.)	30 40	74 40	−31 20
फरीदाबाद	(ह.)	28 26	77 19	−20 44
फर्रुखाबाद	(उ.प्र.)	27 24	79 34	−11 44
फाज़िल्का	(पं.)	30 25	74 04	−33 44
फिरोज़पुर	(पं.)	30 55	74 40	−31 20
फिरोज़ाबाद	(उ.प्र.)	27 09	78 24	−16 24
फिल्लौर	(पं.)	31 01	75 47	−26 52
फुलेरा	(रा.)	26 52	75 16	−28 56
फूलबानी	(उ.)	20 30	84 18	+ 7 12
फैज़ाबाद	(उ.प्र.)	26 47	82 08	− 1 28
बक्सर	(बि.)	25 34	83 59	+ 5 56
बंगलौर	(क.)	13 00	77 35	−19 40
बंगा	(पं.)	31 11	75 59	−26 04
बटाला	(पं.)	31 48	75 12	−29 12
बठिण्डा	(पं.)	30 11	75 00	−30 00
बड़ानगर	(बं.)	22 38	88 22	+23 28
बड़ौदा	(गु.)	22 18	73 13	−37 08
बदायूं	(उ.प्र.)	28 03	79 07	−13 32
बद्दी	(हि.)	30 55	76 48	−22 48
बद्रीनाथ	(उ.आं.)	30 44	79 29	−12 04
बनगांव	(बं.)	23 04	88 49	+25 16
बनिहाल	(का.)	33 30	75 18	−28 48
बबीना	(उ.प्र.)	25 15	78 28	−16 08
बंबई	(म.)	देखें – मुम्बई		
बरवाला	(ह.)	29 22	75 54	−26 24
बरेली	(उ.प्र.)	28 22	79 27	−12 12
बरौनी	(बि.)	25 30	85 53	+13 52
बर्दवान	(बं.)	23 16	87 52	+21 28
बलरामपुर	(उ.प्र.)	27 26	82 11	− 1 16

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
लिया	(उ.प्र.)	25 45	84 10	+ 6 40
ल्लभगढ़	(ह.)	28 21	77 19	−20 44
सीरहाट	(बं.)	22 40	88 53	+25 32
स्ति	(उ.प्र.)	26 48	82 43	+ 0 52
ह्मकुण्ड	(आसा.)	27 52	96 23	+55 32
हराईच	(उ.प्र.)	27 35	81 36	− 3 36
गलकोट	(क.)	16 14	75 47	−26 52
ाघ	(म.प्र.)	22 22	74 49	−30 44
ातल	(हि.)	32 22	77 36	−19 36
ांकीपुर	(बि.)	25 40	85 12	+10 48
बांकुरा	(बं.)	23 15	87 04	+18 16
बाघपत	(उ.प्र.)	28 57	77 13	−21 08
बाटानगर	(बं.)	22 31	88 15	+23 00
बाड़मेर	(रा.)	25 45	71 25	−44 20
बांदा	(उ.प्र.)	25 29	80 20	− 8 40
बामनघाटी	(उ.)	22 13	86 15	+15 00
बारपेटा	(आसा.)	26 20	91 02	+34 08
बारसी	(म.)	18 14	75 44	−27 04
बारागढ़	(उ.)	21 25	83 35	+ 4 20
बाराबंकी	(उ.प्र.)	26 55	81 12	− 5 12
बारामूला	(का.)	34 12	74 20	−32 40
बारासत	(बं.)	22 43	88 29	+23 56
बारीपाड़ा	(उ.)	21 56	86 44	+16 56
बालाघाट	(म.प्र.)	21 48	80 11	− 9 16
बालामऊ	(उ.प्र.)	27 15	80 23	− 8 28
बालासौर	(उ.)	21 31	86 54	+17 36
बालीपाड़ा	(आसा.)	26 09	92 09	+38 36
बालूरघाट	(बं.)	25 13	88 46	+25 04
बालेश्वर	(उ.)	21 31	86 59	+17 56
बालोतरा	(रा.)	25 49	72 14	−41 04
बांसवाड़ा	(रा.)	23 30	74 24	−32 24
बिजनौर	(उ.प्र.)	29 22	78 08	−17 28
बिलासपुर	(छ.ग.)	22 05	82 09	− 1 24
बिलासपुर	(हि.)	31 20	76 47	−22 52
बिलासीपाड़ा	(आसा.)	26 13	90 13	+30 52
बिष्णुपुर	(बं.)	23 05	87 19	+19 16
बिहारशरीफ	(बि.)	25 11	85 32	+12 08
बीकानेर	(रा.)	28 01	73 20	−36 40
बीजापुर	(क.)	16 50	75 45	−27 00
बीड़	(म.)	18 59	75 46	−28 56
बीदर	(क.)	17 56	77 35	−19 40
बुक्क पत्तनम	(आं.)	14 12	77 46	−18 56
बुढलाडा	(पं.)	29 56	75 34	−27 44
बुटाणा	(ह.)	29 11	76 38	−23 28
बुद्धगया	(बि.)	24 41	84 58	+ 9 52
बुरनपुर	(बं.)	23 42	86 58	+17 52
बुरहानपुर	(म.प्र.)	21 18	76 14	−25 04
बुलन्दशहर	(उ.प्र.)	28 24	77 51	−18 36
बुलसार	(गु.)	20 36	72 56	−38 16
बूंदी	(रा.)	25 27	75 40	−27 20
बृन्दावन	(उ.प्र.)	27 33	77 44	−19 04
बेगूसराय	(बि.)	25 25	86 08	+14 32
बेट्टिया	(बि.)	26 48	84 33	+ 8 12
बेलगांव	(क.)	15 54	74 36	−31 36
बेला	(पं.)	30 56	76 23	−24 28
बेला(प्रतापगढ़)	(उ.प्र.)	25 54	82 01	− 1 56
बेल्लारी	(क.)	15 11	76 54	−22 24
बैकुण्ठपुर	(छ.ग.)	23 15	82 33	+ 0 12
बैजनाथ	(हि.)	32 04	76 37	−23 32
बैरकपुर	(बं.)	22 46	88 24	+23 36
बोम्डिला	(अरुणा.)	27 19	92 25	+39 40
बोरसाद	(गु.)	22 24	72 59	−38 04
बोलपुर	(बं.)	23 40	87 43	+20 52
बोलानगिर	(उ.)	.20 41	83 30	+ 4 00
बौडा	(उ.)	20 50	84 22	+ 7 28
ब्यावर	(रा.)	26 06	74 20	−32 40
ब्यास	(पं.)	31 31	75 18	−28 48
भटिण्डा	(पं.)	देखें	बठिण्डा	(पं.)
भण्डारा	(म.)	21 10	79 41	−11 16
भदोही	(उ.प्र.)	25 25	82 34	+ 0 16
भद्रक	(उ.)	21 05	86 30	+16 00
भद्रवाह	(का.)	32 59	75 43	−27 08
भद्राचलम्	(आं.)	17 42	80 53	− 6 28
भरतपुर	(रा.)	27 15	77 30	−20 00
भरमौर	(हि.)	32 27	76 32	−23 52
भरूच	(गु.)	21 40	72 58	−38 08
भवानीपत्तन	(उ.)	19 54	83 10	+ 2 40
भागलपुर	(बि.)	25 15	87 00	+18 00
भातपाड़ा	(बं.)	22 52	88 24	+23 36
भादसों	(पं.)	30 31	76 15	−25 00
भाभर	(गु.)	24 08	71 42	−43 12
भावनगर	(गु.)	21 46	72 10	−41 20
भिंड	(म.प्र.)	26 35	78 46	−14 56
भिलाई	(छ.ग.)	21 13	81 26	− 4 16
भिवंडी	(गु.)	19 18	73 04	−37 44
भिवानी	(ह.)	28 48	76 08	−25 28
भीनमाल	(रा.)	25 00	72 19	−40 44
भीमावरम्	(आं.)	16 34	81 35	− 3 40
भीलवाड़ा	(रा.)	25 21	74 40	−31 20
भुज	(गु.)	23 16	69 40	−51 20
भुवनेश्वर	(उ.)	20 13	85 50	+13 20
भुसावल	(म.)	21 01	75 50	−26 40
भोपाल	(म.प्र.)	23 16	77 24	−20 24
मऊ	(उ.प्र.)	25 17	81 23	− 4 28
मंगलोर	(क.)	12 54	74 51	−30 36
मंगलौर	(उ.आं.)	29 48	77 52	−18 32
मंगालादै	(आसा.)	26 28	92 02	+38 08
मछलीपट्टणम्	(आं.)	16 10	81 08	− 5 28
मजीठा	(पं.)	31 46	74 57	−30 12

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
मण्डला	(म.प्र.)	22 37	80 22	− 8 32	माहे	(पां.)	11 42	75 32	−27 52	मोरेना (मुरैना)	(म.प्र.)	26 23	78 04	−17 44
मण्ड्या	(क.)	12 34	76 55	−22 20	मिदनापुर	(बं.)	22 25	87 21	+19 24	मोहनिया	(बि.)	25 11	83 37	+ 4 28
मण्डी	(हि.)	31 43	76 58	−22 08	मिराज	(म.)	16 51	74 42	−31 12	मोहाना	(म.)	25 54	77 45	−19 00
मणिकर्ण	(हि.)	32 02	77 21	−20 36	मिर्जापुर	(उ.प्र.)	25 09	82 35	+ 0 20	मोहाली	(पं.)	30 43	76 42	−23 12
मथुरा	(उ.प्र.)	27 30	77 41	−19 16	मीरपुर	(का.)	33 32	73 51	−34 36	यनम्	(पां.)	16 44	82 13	− 1 08
मदुरै	(ता.)	9 58	78 10	−17 20	मुक्तसर	(पं.)	30 29	74 31	−31 56	यमुनानगर	(ह.)	30 07	77 18	−20 48
मद्रास	(ता.)	13 05	80 18	− 8 48	मुकेरियां	(पं.)	31 57	75 37	−27 32	यवतमाल	(म.)	20 24	78 08	−17 28
मधुपुर	(झा.खं.)	24 16	86 39	+16 36	मुगलसराय	(उ.प्र.)	25 18	83 07	+ 2 28	योल	(हि.)	32 11	76 23	−24 28
मधुबनी	(बि.)	26 22	86 05	+14 20	मुंगेर	(बि.)	25 23	86 30	+16 00	रक्सौल	(बि.)	26 58	84 51	+ 9 24
मधीपुरा	(बि.)	25 55	86 47	+17 08	मुजफ्फरनगर	(उ.प्र.)	29 28	77 41	−19 16	रंगिया	(आसा.)	26 28	91 35	+36 20
मनाली	(हि.)	32 16	77 10	−21 20	मुजफ्फरपुर	(बि.)	26 07	85 27	+11 48	रतलाम	(म.प्र.)	23 21	75 07	−29 32
मन्दसोर	(म.प्र.)	24 05	75 06	−29 36	मुजफ्फराबाद	(का.)	34 23	73 30	−36 00	रतनगढ़	(रा.)	28 05	74 39	−31 24
मन्सूरी	(उ.आं.)	30 27	78 07	−17 32	मुद्रा	(म.प्र.)	24 43	77 35	−19 40	रत्नागिरि	(म.)	17 00	73 22	−36 32
मनसादेवी	(ह.)	30 43	76 51	−22 36	मुन्दरा	(गु.)	22 50	69 48	−50 48	राऊरकेला	(उ.)	22 15	84 52	+ 9 28
मनीमाजरा	(ह.)	30 42	76 52	−22 32	मुम्बई	(म.)	19 00	72 54	−38 24	रांची	(झा.खं.)	23 23	85 23	+11 32
मलोट	(पं.)	30 13	74 29	−32 04	मुरवाड़ा	(म.प्र.)	23 51	80 22	− 8 32	राजकोट	(गु.)	22 18	70 53	−46 28
मवाना	(उ.प्र.)	29 06	77 55	−18 20	मुरादाबाद	(उ.प्र.)	28 50	78 47	−14 52	राजगढ़	(म.प्र.)	24 01	76 45	−23 00
महबूबनगर	(आं.)	16 44	77 59	−18 04	मुरी	(झा.खं.)	23 51	82 34	+ 0 16	राजनन्दगांव	(छ.ग.)	21 05	81 05	− 5 40
महवा	(रा.)	27 03	76 56	−22 16	मुलाना	(ह.)	30 17	77 03	−21 48	राजपालैयम्	(ता.)	9 27	77 34	−19 44
महाबलिपुरम्	(ता.)	12 37	80 12	− 9 12	मुर्शिदाबाद	(बं.)	24 11	88 16	+23 04	राजपुरा	(पं.)	30 29	76 36	−23 36
महाबलेश्वर	(गु.)	17 58	73 43	−35 08	मेतूर	(ता.)	11 50	77 51	−18 36	राजमहल	(झा.खं.)	25 03	87 53	+21 32
महुआ	(गु.)	21 05	71 48	−42 48	मेढ़क	(आं.)	18 03	78 15	−17 00	राजमहेन्द्री	(आं.)	17 05	81 48	− 2 48
महेन्द्रगढ़	(ह.)	28 17	76 09	−25 24	मेरठ	(उ.प्र.)	28 59	77 42	−19 12	राजुला	(गु.)	21 01	71 26	−44 16
महेसाणा	(गु.)	23 37	72 28	−40 08	मेलघाट	(म.)	21 44	77 12	−21 12	राजौरी	(का.)	33 22	74 17	−32 52
माछीवाड़ा	(पं.)	30 55	76 11	−25 16	मैनपुरी	(उ.प्र.)	27 14	79 01	−13 56	रादौर	(ह.)	30 01	77 08	−21 28
मांगरोल	(गु.)	21 07	70 08	−49 28	मैसूर	(क.)	12 18	76 37	−23 32	राधनपुर	(गु.)	23 52	71 36	−43 36
माण्डवी (कच्छ)	(गु.)	22 50	69 28	−52 08	मैहर	(म.प्र.)	24 16	80 45	− 7 00	रानाघाट	(बं.)	23 11	88 35	+24 20
मानसा	(पं.)	29 59	75 23	−28 28	मोकोक चुंग	(नागा.)	26 19	94 32	+48 08	रानीखेत	(उ.आं.)	29 39	79 25	−12 20
मायूरम्	(ता.)	11 08	79 40	−11 20	मोगा	(पं.)	30 48	75 10	−29 20	रापर	(गु.)	23 33	70 38	−47 28
मारवाड़ जं.	(रा.)	25 43	73 36	−35 36	मोतीहारी	(बि.)	26 40	84 57	+ 9 48	राबर्ट्सगंज	(उ.प्र.)	24 42	83 04	+ 2 16
मालदा	(बं.)	25 05	88 09	+22 36	मोरवी	(गु.)	22 50	70 50	−46 40	रामनाथपुरम्	(ता.)	9 23	78 53	−14 28
मालेगांव(नासिक)	(म.)	20 32	74 38	−31 28	मोरार	(म.प्र.)	26 13	78 14	−17 04	रामपुर	(उ.प्र.)	28 49	79 02	−13 52
मालेरकोटला	(पं.)	30 31	75 52	−26 32	मोरिण्डा	(पं.)	30 48	76 30	−24 00	रामबन	(का.)	33 15	75 15	−29 00

मालदा	(बं.)	25 05	88 09	+22 36	मोरबी	(गु.)	23 50	70 50	−46 40	रामनाथपुरम	(ता.)	9 23	78 53	−14 28
मालेगांव(नासिक)	(म.)	20 32	74 38	−31 28	मोरार	(म.प्र.)	26 13	78 14	−17 04	रामपुर	(उ.प्र.)	28 49	79 02	−13 52
मालेरकोटला	(पं.)	30 31	75 52	−26 32	मोरिण्डा	(पं.)	30 48	76 30	−24 00	रामबन	(का.)	33 15	75 15	−29 00

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
रामपुरबुशहर	(हि.)	31 27	77 38	−19 28
रामपुराफूल	(पं.)	30 17	75 14	−29 04
रामानुजगंज	(छ.ग.)	23 48	83 42	+ 4 48
रामेश्वरम्	(ता.)	9 18	79 19	−12 44
रायकोट	(पं.)	30 39	75 36	−27 36
रायगढ़	(छ.ग.)	21 54	83 26	+ 3 44
रायचूर	(क.)	16 15	77 20	−20 40
रायपुर	(उ.प्र.)	30 19	78 06	−17 36
रायपुर	(छ.ग.)	21 15	81 41	− 3 16
रायबरेली	(उ.प्र.)	26 14	81 16	− 4 56
रायसिंहनगर	(रा.)	29 32	73 27	−36 12
रायसेन	(म.प्र.)	23 18	77 47	−18 52
रियांग	(अरुणा.)	27 32	92 55	+41 40
रिवालसर	(हि.)	31 38	76 50	−22 40
रीवां	(म.प्र.)	24 31	81 19	− 4 44
रुड़की	(उ.आं.)	29 52	77 53	−18 28
रुद्रप्रयाग	(उ.आं.)	30 16	78 59	−14 04
रिवाड़ी	(ह.)	28 12	76 40	−23 20
रोन्दू	(का.)	35 37	75 06	−29 36
रोपड़	(पं.)	30 57	76 32	−23 52
रोहड़ू	(हि.)	31 13	77 45	−19 00
रोहतक	(ह.)	28 54	76 38	−23 28
लक्सर	(उ.आं.)	29 48	78 02	−17 52
लखनऊ	(उ.प्र.)	26 51	80 55	− 6 20
लखपत	(गु.)	23 49	68 47	−54 52
लखीमपुर	(उ.प्र.)	27 57	80 49	− 6 44
लखीसराय	(बि.)	25 12	86 06	+14 24
ललितपुर	(उ.प्र.)	24 41	78 25	−16 20
लाटूर	(म.)	18 24	76 34	−23 44
लाडवा	(ह.)	29 59	77 05	−21 40
लालसोत	(रा.)	26 34	76 23	−24 28
लिम्बड़ी	(गु.)	22 36	71 48	−42 48
लुधियाना	(पं.)	30 55	75 54	−26 24

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
लुम्डिंग	(आसा.)	25 46	93 10	+42 40
लूनावाड़ा	(गु.)	23 08	73 37	−35 32
लूनी	(रा.)	26 00	73 00	−38 00
लेह	(का.)	34 09	77 35	−19 40
लैंस डाऊन	(उ.आं.)	29 50	78 41	−15 16
लोहारू	(ह.)	28 27	75 49	−26 44
वर्धा	(म.)	20 42	78 40	−15 20
वलपरै	(ता.)	10 22	76 58	−22 08
वल्लभीपुर	(गु.)	20 52	71 58	−42 08
वलसाड	(गु.)	20 40	72 55	−38 20
वारंगल	(आं.)	18 00	79 35	−11 40
वाल्टेअर	(आं.)	17 47	83 22	+ 3 28
वाराणसी	(उ.प्र.)	25 20	83 00	+ 2 00
विजयनगर	(क.)	15 20	76 30	−24 00
विजयपुरी	(आं.)	16 52	79 35	−11 40
विजयवाड़ा	(आं.)	16 31	80 39	− 7 24
विदिशा	(म.प्र.)	23 32	77 50	−18 40
विरामग्राम	(गु.)	23 08	72 04	−41 44
विरुदुनगर	(ता.)	9 36	77 58	−18 08
विल्लुपुरम्	(ता.)	11 56	79 29	−12 04
विशाखापट्टनम्	(आं.)	17 42	83 18	+ 3 12
विसनगर	(गु.)	23 41	72 36	−39 36
वेंकटपलम्	(उ.)	18 05	81 40	− 3 20
वेरावल	(गु.)	20 53	70 28	−48 08
वेल्लूर	(ता.)	12 56	79 09	−13 24
वैष्णोदेवी	(का.)	33 02	74 57	−30 12
व्यारा	(गु.)	21 09	73 28	−36 08
शहडोल	(म.प्र.)	23 20	81 22	− 4 32
शाजापुर	(म.प्र.)	23 26	76 18	−24 48
शान्ति निकेतन	(बं.)	23 40	87 42	+20 48
शान्तिपुर	(बं.)	23 15	88 26	+23 44
शामली	(उ.प्र.)	29 27	77 19	−20 44
शाहजहांपुर	(उ.प्र.)	27 53	79 55	−10 20

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
शाहदरा	(दिल्ली)	28 41	77 17	−20 52
शाहपुर	(हि.)	32 12	76 10	−25 20
शाहाबाद	(ह.)	30 10	76 52	−22 32
शाहाबाद	(उ.प्र.)	27 39	79 57	−10 12
शिकोहाबाद	(उ.प्र.)	27 06	78 36	−15 36
शिमला	(हि.)	31 06	77 10	−21 20
शिमोग	(क.)	13 56	75 34	−27 44
शिलांग	(मे.)	25 36	91 53	+37 32
शिवपुरी	(म.प्र.)	25 26	77 40	−19 20
शिवसागर	(आसा.)	26 58	94 39	+48 36
शिवहार (शिवविहार)	(बि.)	26 35	85 18	+11 12
शिवाकाशी	(ता.)	9 26	77 50	−18 40
शेखपुरा	(बि.)	25 09	85 53	+13 32
शैलभ्	(आं.)	16 02	78 56	−14 16
शोलापुर	(म.)	17 43	75 56	−26 16
श्योपुर	(म.प्र.)	25 40	76 40	−23 20
श्रीकाकुलम्	(आं.)	18 19	84 00	+ 6 00
श्रीकालाहस्ती	(आं.)	13 48	79 42	−11 12
श्रीगंगानगर	(रा.)	29 49	73 50	−34 40
श्रीनगर	(उ.आं.)	30 13	78 47	−14 52
श्रीनगर	(का.)	34 07	74 50	−30 40
श्रीमाधोपुर	(रा.)	27 25	75 32	−27 52
श्रीरंगम्	(ता.)	10 52	78 40	−15 20
संगरूर	(पं.)	30 12	75 53	−26 28
संगारेड्डी पेठ	(आं.)	17 37	78 04	−17 44
सढौरा	(हि.)	30 23	77 13	−21 08
सतना	(म.प्र.)	24 34	80 55	− 6 20
सतारा	(म.)	17 49	74 05	−33 40
सदरा	(गु.)	23 20	72 48	−38 48
सदिया	(अरुणा.)	27 48	95 38	+52 32
सनौर	(पं.)	30 18	76 28	−24 08
सपाटू	(हि.)	30 59	76 59	−22 04
समराला	(पं.)	30 51	76 11	−25 16

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
समाना	(पं.)	30 09	76 12	−25 12
समस्तीपुर	(बि.)	25 55	85 50	+13 20
सम्बलपुर	(उ.)	21 28	84 01	+ 6 04
सरदारशहर	(रा.)	28 27	74 30	−32 00
सरहिंद	(पं.)	30 38	76 22	−24 32
सलीम	(म.)	11 39	78 12	−17 12
सवाई माधोपुर	(रा.)	25 58	76 25	−24 20
सहरसा	(बि.)	25 55	86 35	+16 20
सहसवां	(उ.प्र.)	28 05	78 45	−15 00
सहारनपुर	(उ.प्र.)	29 58	77 33	−19 48
सागर	(म.प्र.)	23 50	78 50	−14 40
सांगला	(हि.)	31 29	78 12	−17 12
सांगली	(म.)	16 55	74 37	−31 32
सांगानेर	(रा.)	26 49	75 49	−26 44
सांचोर	(रा.)	24 40	71 50	−42 40
साम्बा	(का.)	32 32	75 08	−29 28
सांभर	(रा.)	26 54	75 13	−29 08
सारनाथ	(उ.प्र.)	25 24	83 01	+ 2 04
सासनी	(उ.प्र.)	27 43	78 05	−17 40
सासाराम	(बि.)	24 57	84 03	+ 6 12
साहिबगंज	(झा.खं.)	25 13	87 40	+20 40
सिऊनी	(म.प्र.)	22 06	79 35	−11 40
सिऊरी	(बं.)	23 55	87 32	+20 08
सिकती	(बि.)	26 24	87 33	+20 12
सिकन्दराबाद	(आं.)	17 27	78 30	−16 00
सिकन्दराराऊ	(उ.प्र.)	27 42	78 27	−16 12
सिन्दरी	(रा.)	25 33	71 55	−42 20
सिन्दरी	(बं.)	23 45	86 42	+16 48
सिवाना	(रा.)	25 36	72 27	−40 12
सिरसा	(ह.)	29 32	75 04	−29 44
सिरोही	(रा.)	24 53	72 54	−38 24
सिल्चर	(आसा.)	24 49	92 47	+41 08
सिल्वासा	(दा.ना.)	20 17	72 59	−38 04

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
सिलीगुड़ी	(बं.)	26 42	88 26	+23 44
सिहोरा	(म.प्र.)	23 29	80 07	− 9 32
सिंहभूम	(झा.खं.)	22 24	85 30	+12 00
सीकर	(रा.)	27 36	75 09	−29 24
सीतापुर	(उ.प्र.)	27 34	80 41	− 7 16
सीतामढ़ी	(बि.)	26 35	85 32	+12 08
सीवां	(बि.)	26 12	84 23	+ 7 32
सुईगांव	(गु.)	24 10	71 23	−44 28
सुन्दरगढ़	(उ.)	22 07	84 02	+ 6 08
सुन्दरनगर	(हि.)	31 32	76 53	−22 28
सुनाम	(पं.)	30 08	75 48	−26 48
सुपौल	(बि.)	26 07	86 36	+16 24
सुरेन्द्रनगर	(गु.)	22 42	71 41	−43 16
सुल्तानपुर	(उ.प्र.)	26 16	82 04	− 1 44
सूरत	(गु.)	21 10	72 50	−38 40
सूरतगढ़	(रा.)	29 19	73 57	−34 12
सूरी	(बं.)	23 55	87 32	+20 08
सेरमपुर	(बं.)	22 45	88 21	+23 24
सैंज	(हि.)	31 49	77 19	−20 44
सोजत	(रा.)	25 56	73 42	−35 12
सोनगढ़	(गु.)	21 42	71 58	−42 08
सोनपुर	(बि.)	25 42	85 12	+10 48
सोनपुर	(उ.)	20 50	83 58	+ 5 52
सोनहाट	(छ.ग.)	23 29	82 30	0 00
सोनामर्ग	(का.)	34 18	75 18	−28 48
सोनीपत	(ह.)	28 59	77 01	−21 56
सोमनाथ	(गु.)	21 04	70 26	−48 16
सोलन	(हि.)	30 55	77 09	−21 24
हजारीबाग	(झा.खं.)	23 59	85 25	+11 40
हडसर	(हि.)	32 22	76 33	−23 48
हनुमानगढ़	(रा.)	29 35	74 21	−32 36
हफलोंग	(आसा.)	25 11	93 02	+42 08
हमीरपुर	(उ.प्र.)	25 57	80 09	− 9 24

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
हमीरपुर	(हि.)	31 41	76 31	−23 56
हरदोई	(उ.प्र.)	27 25	80 07	− 9 32
हरसीपत्तन	(हि.)	31 53	76 39	−23 24
हरिद्वार	(उ.आं.)	29 58	78 13	−17 08
हरिपुर	(हि.)	31 59	76 05	−25 40
हरिपुरधार	(हि.)	30 52	77 28	−20 08
हरीकेपत्तन	(पं.)	31 30	74 57	−30 12
हल्द्वानी	(उ.आं.)	29 13	79 31	−11 56
हल्दिया	(बं.)	22 02	88 05	+22 20
हास्सन	(क.)	13 01	76 03	−25 48
हसनपुर	(ह.)	27 58	77 30	−20 00
हसनपुर	(उ.प्र.)	28 43	78 17	−16 52
हाजीपुर	(बि.)	25 43	85 14	+10 56
हाटकोटी	(हि.)	31 08	77 45	−19 00
हाथरस	(उ.प्र.)	27 36	78 03	−17 48
हापुड़	(उ.प्र.)	28 43	77 47	−18 52
हालीशहर	(बं.)	22 56	88 25	+23 40
हावड़ा	(बं.)	22 36	88 19	+23 16
हावेरी	(क.)	14 46	75 26	−28 16
हासपेट	(क.)	15 16	76 26	−24 16
हांसी	(हि.)	32 27	77 50	−18 40
हांसी	(ह.)	29 06	76 00	−26 00
हिंगनघाट	(म.)	20 32	78 52	−14 32
हिम्मतनगर	(गु.)	23 35	73 00	−38 00
हिसार	(ह.)	29 10	75 46	−26 56
हीराकुण्ड डैम	(उ.)	21 31	83 57	+ 5 48
हुबली	(क.)	15 20	75 14	−29 04
हैदराबाद	(आं.)	17 22	78 30	−16 00
होडल	(ह.)	27 53	77 22	−20 32
होशंगाबाद	(म.प्र.)	22 46	77 45	−19 00
होशियारपुर	(पं.)	31 32	75 57	−26 12
होसुर	(ता.)	12 45	77 51	−18 36

कुछ विदेशी प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश आदि

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन	अक्षांश	रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
		अं. क.	अं. क.	अं. क.	मि. से.	घं मि.
Abadan	Iran	52 30 पू.	30 20 उ.	48 16 पू.	−16 56	+02 00
Abbottabad	Pakistan	75 00 पू.	34 09 उ.	73 13 पू.	−07 08	+00 30
Abu Dhabi	U.A.E.	60 00 पू.	24 28 उ.	54 22 पू.	−22 32	+01 30
Accra	Ghana	00 00	05 33 उ.	00 13 प.	−00 52	+05 30
Addis Ababa	Ethiopia	45 00 पू.	09 02 उ	38 44 पू.	−25 04	+02 30
Aden	Yemen	45 00 पू.	12 45 उ.	45 04 पू.	+00 16	+02 30
Akyab	Myanmar	97 30 पू.	20 09 उ.	92 55 पू.	−18 20	−01 00
*Alexandria	Egypt	30 00 पू.	31 12 उ.	29 53 पू.	−00 28	+03 30
Algiers	Algeria	15 00 पू.	36 47 उ.	03 03 पू.	−47 48	+04 30
*Amman	Jordan	30 00 पू.	31 57 उ	35 56 पू.	+23 44	+03 30
*Amsterdam	Netherlands	15 00 पू.	52 22 उ.	04 53 पू.	−40 28	+04 30
*Angmagssalik	Greenland	45 00 प.	65 36 उ.	37 41 प.	+29 16	+08 30
*Ankara	Turkey	30 00 पू.	39 57 उ.	32 54 पू.	+11 36	+03 30
Anuradhapur	Sri Lanka	82 30 पू.	08 21 उ.	80 23 पू.	−08 28	00 00
*Athens	Greece	30 00 पू.	37 54 उ	23 43 पू.	−25 08	+03 30
*Auckland	New Zealand	180 00 पू.	36 52 द.	174 42 पू.	−21 12	−06 30
*Austin (Texas)	U.S.A.	90 00 प.	30 16 उ.	97 44 प.	−30 56	+11 30
Bacolod	Phill.	120 00 पू.	10 40 उ.	122 57 पू.	+11 48	−02 30
*Baghdad	Iraq	45 00 पू.	33 20 उ.	44 27 पू.	−02 12	+02 30
*Bahawalpur	Pakistan	75 00 पू.	29 59 उ	73 16 पू.	−06 56	+00 30
Bangkok	Thailand	105 00 पू.	13 44 उ.	100 30 पू.	−18 00	−01 30
Batticoloa	Sri Lanka	82 30 पू.	07 43 उ.	81 45 पू.	−03 00	00 00
Beijing	China	120 00 पू.	39 55 उ.	116 25 पू.	−14 20	−02 30
*Beirut	Lebanon	30 00 पू.	33 50 उ.	35 25 पू.	+21 40	+03 30
*Belgrade	Yugoslavia	15 00 पू.	44 50 उ.	20 30 पू.	+22 00	+04 30
*Berlin	Germany	15 00 पू.	52 32 उ.	13 25 पू.	−06 20	+04 30
*Berne	Switzerland	15 00 पू.	46 57 उ.	07 26 पू.	−30 16	+04 30
Biratnagar	Nepal	86 15 पू.	26 29 उ.	87 17 पू.	+04 08	−00 15

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन	अक्षांश	रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
		अं. क.	अं. क.	अं. क.	मि. से.	घं मि.
*Birmingham	England	00 00	52 30 उ.	01 50 प.	−07 20	+05 30
Bogota	Colombia	75 00 प.	04 36 उ.	74 05 प.	+03 40	+10 30
Bogra	Bangladesh	90 00 पू.	24 51 उ.	89 22 पू.	−02 32	−00 30
*Bonn	Germany	15 00 पू.	50 44 उ.	07 04 पू.	−31 44	+04 30
*Boston	U.S.A.	75 00 प.	42 21 उ.	71 04 प.	+15 44	+10 30
*Brasilia	Brazil	45 00 प.	15 47 द.	47 55 प.	−11 40	+08 30
*Bratislava	Slovakia	15 00 पू.	48 09 उ.	17 07 पू.	+08 28	+04 30
Brazzaville	Congo	15 00 पू.	04 16 द.	15 17 पू.	+01 08	+04 30
*Brisbane	Australia	150 00पू.	27 28 द.	153 02 पू.	+12 08	−04 30
*Brussels	Belgium	15 00 पू.	50 52 उ.	04 22 पू.	−42 32	+04 30
*Bucharest	Romania	30 00 पू.	44 25 उ.	26 07 पू.	−15 32	+03 30
*Budapest	Hungary	15 00 पू.	47 29 उ.	19 03 पू.	+16 12	+04 30
Buenos Aires	Argentina	45 00 प.	34 35 द.	58 27 प.	−53 48	+08 30
*Buffalo (N.Y.)	U.S.A.	75 00 प.	42 55 उ.	78 50 प.	−15 20	+10 30
*Cairo	Egypt	30 00 पू.	30 03 उ.	31 14 पू.	+04 56	+03 30
*California City	U.S.A.	120 00प.	35 07 उ.	117 59प.	+08 04	+13 30
*Canberra	Australia	150 00पू.	35 19 द.	149 08पू.	−03 28	−04 30
*Cape Town	South Africa	30 00 पू.	33 56 द.	18 22 पू.	−46 32	+03 30
Caracas	Venezuela	60 00 प.	10 30 उ.	66 56 प.	−39 44	+09 30
*Charlotti Amali	Virgin Is (U.K.)	60 00 प.	18 21 उ.	64 56 प.	−19 44	+09 30
*Chicago	U.S.A.	90 00 प.	41 53 उ.	87 38 प.	+09 28	+11 30
Chittagong	Bangla.	90 00 पू.	22 20 उ.	91 50 पू.	+07 20	−00 30
*Cleveland (Ohio)	U.S.A.	75 00 प.	41 30 उ.	81 41 प.	−26 44	+10 30
Colombo	Sri Lanka	82 30 पू.	06 56 उ.	79 51 पू.	−10 36	00 00
Comilla	Bangladesh	90 00 पू.	23 27 उ.	91 12 पू.	+04 48	−00 30
*Copenhagen	Denmark	15 00 पू.	55 40 उ.	12 35 पू.	−09 40	+04 30
Dakar	Senegal	00 00	14 40 उ.	17 26 प.	−69 44	+05 30
*Dallas (Texas)	U.S.A.	90 00 प.	32 47 उ.	96 48 प.	−27 12	+11 30

* इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय (*Summer Time*) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय क्षेत्रीय स्टैं. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।

कुछ विदेशी प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश आदि

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन अं. क.	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर) मि. से.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं मि.
*Damascus	Syria	30 00 पू.	33 30 उ.	36 18 पू.	+25 12	+03 30
Dar-es-salaam	Tanzania	45 00 पू.	06 50 द.	39 17 पू.	−22 52	+02 30
*Detroit (Mich.)	U.S.A.	75 00 प.	42 23 उ.	83 05 प.	−32 20	+10 30
Dhaka	Bangla.	90 00 पू.	23 43 उ.	90 25 पू.	+01 40	−00 30
Djibouti	Djibouti	45 00 पू.	11 36 उ.	43 09 पू.	−07 24	+02 30
Dinajpur	Bangla.	90 00 पू.	25 38 उ.	88 38 पू.	−05 28	−00 30
Doha	Qatar	45 00 पू.	25 17 उ.	51 32 पू.	+26 08	+02 30
*Dublin	Ireland	00 00	53 20 उ.	06 15 प.	−25 00	+05 30
Dubai	U.A.E.	60 00 पू.	25 18 उ.	55 18 पू.	−18 48	+01 30
*Edinburgh	Scotland	00 00	55 56 उ.	03 11 प.	−12 44	+05 30
*Edmonton	Canada	105 00 प.	53 33 उ.	113 28 प.	−33 52	+12 30
*Florida City	U.S.A.	75 00 प.	25 27 उ.	80 29 प.	−21 56	+10 30
*Frankfurt	Germany	15 00 पू.	50 06 उ.	08 40 पू.	−25 20	+04 30
Fukuoka	Japan	135 00 पू.	35 34 उ.	137 27 पू.	+09 48	−03 30
Galle	Sri Lanka	82 30 पू.	06 02 उ.	80 13 पू.	−09 08	00 00
Guatemala	Guatemala	90 00 प.	14 38 उ.	90 31 प.	−02 04	+11 30
*Geneva	Switzerland	15 00 पू.	46 12 उ.	06 09 पू.	−35 24	+04 30
*Glasgow	Scotland	00 00	55 52 उ.	04 15 प.	−17 00	+05 30
*Greenwich	England	00 00	51 29 उ.	00 00	00 00	+05 30
Guiyang	China	120 00 पू.	26 35 उ.	106 43 पू.	−53 08	−02 30
*Hamilton	Canada	75 00 प.	43 15 उ.	79 50 प.	−19 20	+10 30
Hanoi	North Vietnam	105 00 पू.	21 02 उ.	105 52 पू.	+03 28	−01 30
*Havana	Cuba	75 00 प.	23 08 उ.	82 22 प.	−29 28	+10 30
*Heidelberg	Germany	15 00 पू.	49 24 उ.	08 43 पू.	−25 08	+04 30
*Helsinki	Finland	30 00 पू.	60 09 उ.	24 57 पू.	−20 12	+03 30
Hiroshima	Japan	135 00 पू.	34 24 उ.	132 27 पू.	−10 12	−03 30
Hongkong	China	120 00 पू.	22 18 उ.	114 10 पू.	−23 20	−02 30
Honolulu	Hawai Island	150 00 प.	21 19 उ.	157 52 प.	−31 28	+15 30

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन अं. क.	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर) मि. से.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं मि.
*Houston (Texas)	U.S.A.	90 00 प.	29 45 उ.	95 21 प.	−21 24	+11 30
*Hyderabad	Pakistan	75 00 पू.	25 22 उ.	68 22 पू.	−26 32	+00 30
*Isfahan	Iran	52 30 पू.	32 40 उ.	51 38 पू.	−03 28	+02 00
*Islamabad	Pakistan	75 00 पू.	33 42 उ.	73 10 पू.	−07 20	+00 30
*Istanbul	Turkey	30 00 पू.	41 00 उ.	29 00 पू.	−04 00	+03 30
Jaffna	Sri Lanka	82 30 पू.	09 40 उ.	80 00 पू.	−10 00	00 00
Jakarta	Indonesia	105 00 पू.	06 10 द.	106 49 पू.	+07 16	−01 30
Jamaica	West Indies	75 00 प.	18 00 उ.	76 48 प.	−07 12	+10 30
*Jerusalem	Israel	30 00 पू.	31 46 उ.	35 14 पू.	+20 56	+03 30
Jessore	Bangla	90 00 पू.	23 10 उ.	89 13 पू.	−03 08	−00 30
Johannesburg	South Africa	30 00 पू.	26 15 द.	28 00 पू.	−08 00	+03 30
Kabul	Afghanistan	67 30 पू.	34 33 उ.	69 12 पू.	+06 48	+01 00
Kampala	Uganda	45 00 पू.	00 19 उ.	32 25 पू.	−50 20	+02 30
Kandahar	Afghanistan	67 30 पू.	31 32 उ.	65 30 पू.	−08 00	+01 00
Kandy	SriLanka	82 30 पू.	07 18 उ.	80 38 पू.	−07 28	00 00
*Karachi	Pakistan	75 00 पू.	24 52 उ.	67 03 पू.	−31 48	+00 30
Kathmandu	Nepal	86 15 पू.	27 43 उ.	85 19 पू.	−03 44	−00 15
Khartoum	Sudan	30 00 पू.	15 35 उ.	32 35 पू.	+10 20	+03 30
Kingston	*Jamaica*	75 00 प.	18 00 उ.	76 48 प.	−07 12	+10 30
Khulna	Bangla.	90 00 पू.	22 48 उ.	89 33 पू.	−01 48	−00 30
Kuala Lumpur	Malaysia	120 00 पू.	03 09 उ.	101 43 पू.	−73 08	−02 30
Kushtia	Bangla.	90 00 पू.	23 55 उ.	89 07 पू.	−03 32	−00 30
Kuwait	Kuwait	45 00 पू.	29 20 उ.	47 59 पू.	+11 56	+02 30
Kwangchow	China	120 00 पू.	23 06 उ.	113 16 पू.	−26 56	−02 30
Lagos	Nigeria	15 00 पू.	06 25 उ.	03 27 पू.	−46 12	+04 30
*Leeds	England	00 00	53 50 उ.	01 35 प.	−06 20	+05 30
*Leipzig	Germany	15 00 पू.	51 20 उ.	12 23 पू.	−10 28	+04 30
*Leningrad	Russia	30 00 पू.	59 57 उ.	30 18 पू.	+01 12	+03 30

* इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय(Summer Time) प्रचलित [illegible]

Hiroshima	Japan	135 00 पू.	34 24 उ.	132 27 पू.	−10 12	−03 30
Hongkong	China	120 00 पू.	22 18 उ.	114 10 पू.	−23 20	−02 30
Honolulu	Hawai Island	150 00 प.	21 19 उ.	157 52 प.	−31 28	+15 30

*Leeds	England	00 00	53 50 उ.	01 35 प.	−06 20	+05 30
*Leipzig	Germany	15 00 पू.	51 20 उ.	12 23 पू.	−10 28	+04 30
*Leningrad	Russia	30 00 पू.	59 57 उ.	30 18 पू.	+01 12	+03 30

* इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय(Summer Time) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय क्षेत्रीय स्टैं. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।

कुछ विदेशी प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश आदि

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन	अक्षांश	रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
		अं. क.	अं. क.	अं. क.	मि. से.	घं. मि.
Leopoldville	Zaire	15 00 पू.	04 18 द.	15 18 पू.	+01 12	+04 30
Lhasa	China	120 00 पू.	29 40 उ.	91 07 पू.	−115 32	−02 30
Lima	Peru	75 00 प.	12 02 द.	77 02 प.	−08 08	+10 30
Lisbon	Portugal	00 00	38 43 उ.	09 11 प.	−36 44	+05 30
Liverpool	England	00 00	53 25 उ.	02 55 प.	−11 40	+05 30
London	England	00 00	51 32 उ.	00 05 प.	−00 20	+05 30
Long Beach,Ca.	U.S.A.	120 00 प.	33 46 उ.	118 12 प.	+07 12	+13 30
Los Angeles	U.S.A.	120 00 प.	34 03 उ.	118 14 प.	+07 04	+13 30
Luanda	Angola	15 00 पू.	08 48 द.	13 14 पू.	−07 04	+04 30
Lusaka	Zambia	30 00 पू.	15 25 द.	28 17 पू.	−06 52	+03 30
*Luxembourg	Luxembourg	15 00 पू.	49 36 उ..	06 09 पू.	−35 24	+04 30
*Madrid	Spain	15 00 पू.	40 25 उ.	03 41 प.	−74 44	+04 30
*Manchester	England	00 00	53 30 उ.	02 15 प.	−09 00	+05 30
Mandlay	Myanmar	97 30 पू.	22 00 उ.	96 05 पू.	−05 40	−01 00
Manila	Philippines	120 00 पू.	14 35 उ.	121 00 पू.	+04 00	−02 30
Mecca	SaudiArabia	45 00 पू.	21 25 उ.	39 54 पू.	−20 24	+02 30
*Melbourne	Australia	150 00 पू.	37 50 द.	144 59 पू.	−20 04	−04 30
*Mexico City	Mexico	90 00 प.	19 26 उ.	99 10 प.	−36 40	+11 30
*Milan	Italy	15 00 पू.	45 28 उ.	09 11 पू.	−23 16	+04 30
Mombasa	Kenya	45 00 पू.	04 00 द	39 40 पू.	−21 20	+02 30
*Montreal	Canada	75 00 प.	45 30 उ.	73 34 प.	+05 44	+10 30
*Moscow	Russia	45 00 पू.	55 45 उ.	37 34 पू.	−29 44	+02 30
Moulmein	Myanmar	97 30 पू.	16 30 उ.	97 38 पू.	+00 32	−01 00
* Multan	Pakistan	75 00 पू.	30 11 उ.	71 29 पू.	−14 04	+00 30
*Munich	Germany	15 00 पू.	48 08 उ.	11 35 पू.	−13 40	+04 30
Muscat	Oman	60 00 पू.	23 37 उ.	58 35 पू.	−05 40	+01 30
Mymensingh	Bangla.	90 00 पू.	24 45 उ.	90 24 पू.	+01 36	−00 30
Nagoya	Japan	135 00 पू.	35 10 उ.	136 55 पू.	+07 40	−03 30

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन	अक्षांश	रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
		अं. क.	अं. क.	अं. क.	मि. से.	घं. मि.
Nairobi	Kenya	45 00 पू.	01 18 द.	36 52 पू.	−32 32	+02 30
*New Castle	England	00 00	52 27 उ.	03 06 प.	−12 24	+05 30
*New Orleans	U.S.A.	90 00 प.	29 57 उ.	90 04 प.	−00 16	+11 30
*New York	U.S.A.	75 00 प.	40 43 उ.	74 00 प.	+04 00	+10 30
Noakhali	Bangla.	90 00 पू.	22 49 उ.	91 06 पू.	+04 24	−00 30
*Nuuk	Greenland	45 00 प.	64 11 उ.	51 44 प.	+26 56	+08 30
Osaka	Japan	135 00 पू.	34 40 उ.	135 30 पू.	+02 00	−03 30
*Oslo	Norway	15 00 पू.	59 54 उ.	10 45 पू.	−17 00	+04 30
*Ottawa	Canada	75 00 प.	45 24 उ.	75 43 प.	−02 52	+10 30
Pabna	Bangla.	90 00 पू.	24 00 उ.	89 15 पू.	−03 00	−00 30
Paramaribo	Suriname	45 00 प.	05 50 उ.	55 10 प.	−40 40	+08 30
*Paris	France	15 00 पू.	48 50 उ.	02 20 पू.	−50 40	+04 30
Pegu	Myanmar	97 30 पू.	17 20 उ.	96 29 पू.	−04 04	−01 00
Peking	China	देखें –	Beijing	—	—	—
Penang	Malaysia	120 00 पू.	05 25 उ.	100 20 पू.	−78 40	−02 30
Perth	Australia	120 00 पू.	32 00 द.	115 50 पू.	−16 40	−02 30
*Peshawar	Pakistan	75 00 पू.	34 01 उ.	71 33 पू.	−13 48	+00 30
*Philadelphia, Pa.	U.S.A.	75 00 प.	39 58 उ.	75 10 प.	−00 40	+10 30
Phnom penh	Cambodia	105 00 पू.	11 35 उ.	104 57 पू.	−00 12	−01 30
*Pittsburgh, Pa.	U.S.A.	75 00 प.	40 25 उ.	79 55 प.	−19 40	+10 30
Port Elizabeth	South Africa	30 00 पू.	33 58 द.	25 40 पू.	−17 20	+03 30
Port Louis	Mauritius	60 00 पू.	20 10 द.	57 30 पू.	−10 00	+01 30
Port of Spain	Trininad and Tobago	60 00 प.	10 39 उ.	61 31 प.	−06 04	+09 30
*Prague	Czecho.	15 00 पू.	50 05 उ.	14 24 पू.	−02 24	+04 30
Prome	Myanmar	97 30 पू.	18 47 उ.	95 15 पू.	−09 00	−01 00
Punakha	Bhutan	90 00 पू.	27 42 उ.	89 52 पू.	−00 32	−00 30
*Quetta	Pakistan	75 00 पू.	30 12 उ.	67 00 पू.	−32 00	+00 30
Rabat*	Morocco	00 00	34 02 उ.	06 51 प.	−27 24	+05 30

* इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय(Summer Time) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय क्षेत्रीय स्टैं. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।

कुछ विदेशी प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश आदि

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन	अक्षांश	रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
		अं. क.	अं. क.	अं. क.	मि. से.	घं मि.
Rangoon	Myanmar	97 30 पू.	16 47 उ.	96 10 पू.	−05 20	−01 00
Rangpur	Bangla.	90 00 पू.	25 45 उ.	89 15 पू.	−03 00	−00 30
Rajshahi	Bangla.	90 00 पू.	24 22 उ.	88 36 पू.	−05 36	−00 30
*Rawalpindi	Pakistan	75 00 पू.	33 36 उ.	73 04 पू.	−07 44	+00 30
Riyadh	Saudi Arabia	45 00 पू.	24 39 उ.	46 41 पू.	+06 44	+02 30
Road Town	Virgin Is. (U.K.)	60 00 प.	18 27 उ.	64 37 प.	−18 28	+09 30
*Rome	Italy	15 00 पू.	41 55 उ.	12 27 पू.	−10 12	+04 30
Saigon	SouthVietnam	105 00 पू.	10 49 उ.	106 41 पू.	+06 44	−01 30
Salisbury (Harare)	Zimbabwe	30 00 पू.	17 50 द.	31 03 पू.	+04 12	+03 30
San'a'	Yeman	45 00 पू.	15 23 उ.	44 12 पू.	−03 12	+02 30
*San Diego, Ca.	U.S.A.	120 00 प.	32 43 उ.	117 10 प.	+10 40	+13 30
*San Francisco	U.S.A.	120 00 प.	37 48 उ.	122 25 प.	−09 40	+13 30
*San Juan	Puetro Rico	60 00 प.	18 28 उ.	66 07 प.	−24 28	+09 30
Santiago	Chile	60 00 प.	33 27 द.	70 40 प.	−42 40	+09 30
*Seattle	U.S.A	120 00 प.	47 41 उ.	122 15 प	−09 00	+13 30
Seoul	South Korea	135 00 पू.	37 31 उ.	126 58 पू.	−32 08	−03 30
Shanghai	China	120 00 पू.	31 14 उ.	121 28 पू.	+05 52	−02 30
Sharjah	U.A.E.	60 00 पू.	25 20 उ.	55 24 पू.	−18 24	+01 30
Singapore	Singapore	120 00 पू.	01 17 उ.	103 54 पू.	−64 24	−02 30
*Sofia	Bulgaria	30 00 पू.	42 41 उ.	23 21 पू.	−26 36	+03 30
*Stanley	Falkland Is.	60 00 प.	51 42 द.	57 51 प.	+08 36	+09 30
*Stockholm	Sweden	15 00 पू.	59 20 उ.	18 00 पू.	+12 00	+04 30
*Sukkur	Pakistan	75 00 पू.	27 42 उ.	68 52 पू.	−24 32	+00 30
Suva	Fiji	180 00 पू.	18 08 द.	178 25 पू.	−06 20	−06 30

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन	अक्षांश	रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
		अं. क.	अं. क.	अं. क.	मि. से.	घं मि.
*Sydney	Australia	150 00 पू.	33 52 द.	151 12 पू.	+04 48	−04 30
Sylhet	Bangla.	90 00 पू.	24 54 उ.	91 52 पू.	+07 28	−00 30
Taipei	Taiwan	120 00 पू.	25 03 उ.	121 30 पू.	+06 00	−02 30
Taskent	Uzbekistan	75 00 पू.	41 20 उ.	69 18 पू.	−22 48	+00 30
*Tehran	Iran	52 30 पू.	35 41 उ.	51 26 पू.	−04 16	+02 00
Thimpu	Bhutan	90 00 पू.	27 28 उ.	89 39 पू.	−01 24	−00 30
*Tirane	Albania	15 00 पू.	41 20 उ.	19 50 पू.	+19 20	+04 30
Tokyo	Japan	135 00 पू.	35 40 उ.	139 46 पू.	+19 04	−03 30
*Toronto	Canada	75 00 प.	43 39 उ.	79 23 प.	−17 32	+10 30
Trincomalee	Sri Lanka	82 30 पू.	08 31 उ.	81 14 पू.	−05 04	00 00
Tripoli	Libya	30 00 पू.	32 54 उ.	13 15 पू.	−67 00	+03 30
*Ulan Bator	Mongolia	105 00 पू.	47 55 उ.	106 53 पू.	+07 32	−01 30
*Vancouver	Canada	120 00 प.	49 16 उ.	123 07 प.	−12 28	+13 30
Vatican City	Vatican City	15 00 पू.	41 54 उ.	12 27 पू.	−10 12	+04 30
*Vienna	Austria	15 00 पू.	48 12 उ.	16 22 पू.	+05 28	+04 30
*Volgograd	Russia	45 00 पू.	48 44 उ.	44 25 पू.	−02 20	+02 30
Wakayama	Japan	135 00 पू.	34 13 उ.	135 11 पू.	+00 44	−03 30
*Warsaw	Poland	15 00 पू.	52 12 उ.	21 00 पू.	+24 00	+04 30
*Washington (D.C.)	U.S.A.	75 00 प.	38 55 उ.	77 04 प.	−08 16	+10 30
*Wellington	New Zealand	180 00 पू.	41 16 द.	174 47 पू.	−20 52	−06 30
Yokohama	Japan	135 00 पू.	35 27 उ.	139 39 पू.	+18 36	−03 30
Zanzibar	Tanzania	45 00 पू.	06 10 द.	39 11 पू.	−23 16	+02 30
*Zurich	Switzerland	15 00 पू.	47 23 उ.	08 32 पू.	−25 52	+04 30

* इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय (Summer Time) प्रचलित [illegible]

आपने गणक मार्त्तण्ड अभी तक नहीं खरीदा ? इसे अभी खरीदिए — क्योंकि ऐसे उपयोगी [illegible] दुबारा संस्करण जल्दी छपने वाला नहीं है— यह ध्यान में रखिए। भारत का यह Computer से तैयार किया गया सर्वप्रथम 110 वर्ष का सूक्ष्मतम परमशुद्ध तिथ्यादि, ग्रहस्पष्ट ग्रहराशि प्रवेशकाल आदि महत्त्वपूर्ण विषयों से समृद्ध ऐसा अनुपम पंचांग है, जिसमें जन्मपत्रोपयोगी 140 पृष्ठों की विपुल सामग्री भी है। विद्वानों का मत है कि इस ग्रन्थ का वाकई कोई जवाब नहीं।

* इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय (Summer Time) प्रचलित है। [illegible]

स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी (विश्व के लगभग सभी मुख्य देशों / कालक्षेत्रों की स्टैंडर्ड टाईम मेरिडियन्स)

देश / प्रदेश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
Afghanistan	67 30 पू.	+ 01 00
*Albania	15 00 पू.	+ 04 30
Algeria	15 00 पू.	+ 04 30
Angola	15 00 पू.	+ 04 30
Argentina	45 00 प.	+ 08 30
*AUSTRALIA यह देश इन 3 कालक्षेत्रों (Time Zones) में बटा है –		
(i) E.S.T. (Eastern St. Time) (इस कालक्षेत्र में Victoria, Tasmania आदि क्षेत्र आते हैं)	150 00 पू.	– 04 30
(ii) C.S.T. (Central St. Time) (इस कालक्षेत्र में South Australia, Broken Hill Area आदि आते हैं।)	142 30 पू.	– 04 00
(iii) W.S.T. (इस कालक्षेत्र में Western Australia आता है)	120 00 पू.	– 02 30
*Austria	15 00 पू.	+ 04 30
Bahrain	45 00 पू.	+ 02 30
Bangladesh	90 00 पू.	– 00 30
*Belgium	15 00 पू.	+ 04 30
Bhutan	90 00 पू.	– 00 30
Bolivia	60 00 प.	+ 09 30
*Bulgaria	30 00 पू.	+ 03 30
Burundi	30 00 पू.	+ 03 00
Cameroon	15 00 पू.	+ 04 30
*CANADA यह देश मुख्यतः इन 4 कालक्षेत्रों (Time Zones) में बंटा है –		
(i) E.S.T. (Eastern St. Time) इस काल-क्षेत्र में N.W. Territories और Ontario का पू. भाग पड़ता है।	75 00 प.	+ 10 30

देश / प्रदेश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
(ii) C.S.T. (Central St. Time) इसमें N.W. Territories का मध्यभाग और Ontario का प. भाग पड़ता है।	90 00 प.	+ 11 30
(iii) M.S.T. (Mountain St. Time इसमें N.W. Territories का कुछ प. भाग तथा Alberta आदि प्रान्त पड़ते हैं।	105 00 प.	+12 30
(iv) P.S.T. (Pacific St. Time) इस कालक्षेत्र में N.W. Territories का अन्तिम प. भाग तथा B.Columbia पड़ता है।	120 00 प.	+ 13 30
*Chile	60 00 प.	+ 09 30
China	120 00 पू.	– 02 30
Colombia	75 00 प.	+ 10 30
Congo	15 00 पू.	+ 04 30
*Cuba	75 00 प.	+ 10 30
Ceylon	देखें ——	Sri Lanka
Cyprus	30 00 पू.	+ 03 30
*Denmark	15 00 पू.	+ 04 30
Ecuador	75 00 प.	+ 10 30
*Egypt	30 00 पू.	+ 03 30
*England(U.K.)	00 00	+ 05 30
Ethiopia	45 00 पू.	+ 02 30
*Falkland Islands	60 00 प.	+ 09 30
Fiji	180 00 पू.	– 06 30
*Finland	30 00 पू.	+ 03 30
*France	15 00 पू.	+ 04 30
Gambia	00 00	+ 05 30
*Germany	15 00 पू.	+ 04 30
Ghana	00 00	+ 05 30
*Greece	30 00 पू.	+ 03 30

देश / प्रदेश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
*Guatemala	90 00 प.	+ 11 30
Honduras	90 00 प.	+ 11 30
Hong Kong	120 00 पू.	– 02 30
*Iceland	00 00	+ 05 30
India	82 30 पू.	00 00
INDONESIA, REPUBLIC OF:- यह देश छोटे–बड़े 13000 से भी अधिक द्वीपों से बना है। पहिले यह 30–30 मिनटों के अन्तर वाले छः कालक्षेत्रों में विभाजित था। अब इसे एक–एक घण्टा के अन्तर वाले इन तीन कालक्षेत्रों में विभाजित किया गया है–		
(i) Bali, Bangka, Enggano, Java, Madura एवम् Sumatra द्वीप;........................	105 00 पू.	– 1 30
(ii) Alore, Borneo, Celebes (Sulawesi), Flores, Kabaena , Lombok, Sangihe , Talaud , Sumba, Sumbawa (Soembawa) और Timor (Timur) (द्वीपसमूह)	120 00 पू.	– 2 30
(iii) Aru, Babar, Buru, Cerem (Seram), Irian Jaya (West Irian), Larat , Maluku(Moluccas = Molukken), Schouten , Tanah Merah और Tanimbar (द्वीपसमूह)...	135 00 पू.	– 3 30

स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी (विश्व के लगभग सभी मुख्य देशों / कालक्षेत्रों की स्टैंडर्ड टाईम मेरिडियन्स)

देश / प्रदेश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
*Iran	52 30 पू.	+ 02 00
*Iraq	45 00 पू.	+ 02 30
*Irish Republic	00 00	+ 05 30
*Israel	30 00 पू.	+ 03 30
*Italy	15 00 पू.	+ 04 30
*Jamaica	75 00 प.	+ 10 30
Japan	135 00 पू.	− 03 30
*Jordan	30 00 पू.	+ 03 30
***KAZAKHSTAN** – यह देश, जो पहिले Soviet Union का भाग था, इन तीन कालक्षेत्रों में बंटा है:–		
(i) Kazakhstan (West) .	60 00 पू.	+ 01 30
(ii) Kazakhstan (Central)..	75 00 पू.	+ 0 30
(iii) Kazakhstan (East) ..	90 00 पू.	− 0 30
Kumpuchia	105 00 पू.	− 01 30
Kenya	45 00 पू.	+ 02 30
Korea	135 00 पू.	− 03 30
Kuwait	45 00 पू.	+ 02 30
Laos	105 00 पू.	− 01 30
* Lebanon	30 00 पू.	+ 03 30
Libya	30 00 पू.	+ 03 30
Macao	120 00 पू.	− 02 30
Madagascar	45 00 पू.	+ 02 30
Malaysia	120 00 पू.	− 02 30
Maldive Islands	75 00 पू.	+ 00 30
Mauritius	60 00 पू.	+ 01 3[illegible]

देश / प्रदेश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
***KYRGHIZSTAN (KIRGIZSTAN= KIRGHIZIA= KIRGIZIA)** (यह पहिले Soviet Union का भाग था)......	0 00 पू.	+ 0 30
*MEXICO यह देष इन 3 कालक्षेत्रों में बंटा है:–		
(i) **E.S.T.** (Eastern St. Time) (इस कालक्षेत्र में Compeche, Chiapas आदि प्रान्त आते हैं)	90 00 प.	+ 11 30
(ii) **C.S.T.** (Central St. Time) (इस कालक्षेत्र में Baja California, Sur, Nayarit आदि पड़ते हैं।)	105 00 प.	+ 12 30
(iii) **W.S.T.** (Western St. Time) (इस कालक्षेत्र में Baja California- Norte आते हैं)	120 00 प.	+ 13 30
Morocco	00 00	+ 05 30
Mozambique	30 00 पू.	+ 03 30
Myanmar (Burma)	97 30 पू.	− 01 00
Nepal	86 15 पू.	− 00 15
Netherlands	15 00 पू.	+ 04 30
*New Zealand	180 00 पू.	− 06 30
Nicaragua	90 00 प.	+ 11 30
Nigeria	15 00 पू.	+ 04 30
*Northern Ireland (U.K.)	00 00	+ 05 30
*Norway	15 00 पू.	+ 04 30
Oman (Muscat and Oman)	60 00 पू.	+ 01 30
*Pakistan	75 00 पू.	+ 00 30
[illegible]	[illegible]	[illegible]

देश / प्रदेश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
*Paraguay	60 00 प.	+ 09 30
Peru	75 00 प.	+ 10 30
Philippines	120 00 पू.	− 02 30
*Poland	15 00 पू.	+ 04 30
*Portugal	00 00	+ 05 30
Qatar	45 00 पू.	+ 02 30
Rwanda	30 00 पू.	+ 03 30
Romania	30 00 पू.	+ 03 30
*RUSSIA यह महादेश, जो Soviet Union का मूल घटक राष्ट्र रहा है, यह इन ग्यारह कालक्षेत्रों में बँटा है–		
(i)कालक्षेत्र Kaliningrad area	30 00 पू.	+ 3 30
(ii) कालक्षेत्र Novaja Zemla, European RSFSR (पश्चिमी भाग)....	45 00 पू.	+ 2 30
(iii) कालक्षेत्र European RSFSR (मध्य भाग)...............	60 00 पू.	+ 1 30
(iv) कालक्षेत्र European RSFSR (पू. भाग), Asian RSFSR (प. भाग)	75 00 पू.	+ 0 30
(v) कालक्षेत्र Asian RSFSR ...	90 00 पू.	− 0 30
(vi) कालक्षेत्र Asian RSFSR, Severnaja Zemla	105 00 पू.	− 1 30
(vii) कालक्षेत्र Asian RSFSR ...	120 00 पू.	− 2 30
(viii) कालक्षेत्र Asian RSFSR...	135 00 पू.	− 3 30
(ix) कालक्षेत्र Asian RSFSR, Novosibirskije Ostrova	150 00 पू.	− 4 30
(x) कालक्षेत्र Asian RSFSR (पू. भाग) . Ostrov Sachalin, Kuril Islands	165 00 पू.	− 5 30
(xi) कालक्षेत्र Asian RSFSR (अन्तिम पूर्वी छोर). Komandorskije Ostrova...	180 00 पू.	− 6 30

Malaysia	120 00 पू.	[illegible]	*Norway	15 00 पू.	+ 04 30	Ostrov Sachalin, Kuril Islands	165 00 पू.	– 5 30
Maldive Islands	75 00 पू.	+ 00 30	Oman (Muscat and Oman)	60 00 पू.	+ 01 30	[illegible] Asian RSFSR (अन्तिम पूर्वी छोर).		
Mauritius	60 00 पू.	+ 01 30	*Pakistan	75 00 पू.	+ 00 30	Komandorskije Ostrova	180 00 पू.	– 6 30
			Panama	75 00 प.	+ 10 30			

स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी (विश्व के लगभग सभी मुख्य देशों / कालक्षेत्रों की स्टैंडर्ड टाईम मेरिडियन्स)

देश / प्रदेश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
Saudi Arabia	45 00 पू.	+ 02 30
*Scotland (U.K.)	00 00	+ 05 30
Singapore	120 00 पू.	– 02 30
South Africa	30 00 पू.	+ 03 30
*Spain	15 00 पू.	+ 04 30
Sri Lanka	82 30 पू.	00 00
Sudan	30 00 पू.	+ 03 30
Suriname	45 00 प.	+ 08 30
*Sweden	15 00 पू.	+ 04 30
*Switzerland	15 00 पू.	+ 04 30
*Syria	30 00 पू.	+ 03 30
TAJIKISTAN (TADZHIKISTAN) (यह पहिले Soviet Union का भाग था)......	75 00 पू.	+ 00 30
Taiwan	120 00 पू.	– 02 30
Tanzania	45 00 पू.	+ 02 30
Thailand	105 00 पू.	– 01 30
Trinidad and Tobago	60 00 प.	+ 09 30
Tunisia	15 00 पू.	+ 04 30
*Turkey	30 00 पू.	+ 03 30

देश / प्रदेश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
U.A.E. (UNITED ARAB EMIRATES) [Abu Dhabi, Ajman, Dubai, Fujairah, Ras-al-Khaimah, Sharjah, और Umma-al-Quiwain)	60 00 पू.	+ 01 30
Uganda	45 00 पू.	+ 02 30
*U.K.	00 00	+ 05 30
Uruguay	45 00 प.	+ 08 30
UKRAIN यह पहिले Soviet Union का भाग था। यह इन दो कालक्षेत्रों में बँटा है–		
(i) इस कालक्षेत्र में Ukraine का प्रमुख भाग [Black और Azov Sea से घिरे दक्षिणी भाग (द्वीप) को छोड़ कर शेष पूरा भाग आता है।......................	30 00 पू.	+ 03 30
(ii) इसमें Black और Azov Sea से घिरा इसका केवल दक्षिणी भाग (द्वीप) आता है।....	45 00 पू.	+ 02 30
UZBEKISTAN.................. (यह पहले Soviet Union का भाग था)	75 00 पू.	+ 00 30

देश / प्रदेश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
*U.S.A. यह देश इन 4 कालक्षेत्रों (Time Zones) में बंटा है :–		
(i) **E.S.T.** (Eastern St. Time) (इस कालक्षेत्र में Delaware, Florida, Ohio आदि States पड़ती हैं।)	75 00 प.	+ 10 30
(ii) **C.S.T.** (Centrar St. Time) (इस कालक्षेत्र में Alabama, Illinois आदि States पड़ती हैं।)	90 00 प.	+ 11 30
(iii) **M.S.T.** (Mountain St. Time) (इस कालक्षेत्र में Arizona, Colorado आदि States पड़ती हैं।)	105 00 प.	+ 12 30
(iv) **P.S.T.** (Pacific St. Time) (इस कालक्षेत्र में California, Nevada आदि States पड़ती हैं।)	120 00 प.	+ 13 30
Vatican State	15 00 पू.	+ 04 30
Venezuela	60 00 प.	+ 09 30
Vietnam	105 00 पू.	– 01 30
*Wales(U.K.)	00 00	+ 05 30
*Yugoslavia	15 00 पू.	+ 04 30
Zamibia	30 00 पू.	+ 03 30
Zaire	30 00 पू.	+ 03 30
Zimbabwe	30 00 पू.	+ 03 30

*** इन देशों में ग्रीष्मकालीन समय (Summer Time) प्रचलित है। Summer Time के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए हमारी पुस्तक " विश्वलग्न सारणी " देखें।**

धन (+) चिह्न वाले 'अभीष्ट स्टैं. टा. अन्तर' का अर्थ है, कि भा. स्टैं. टा. अभीष्ट स्थानीय (देश / कालक्षेत्रीय) स्टैं. टा. से आगे है। इसी प्रकार ऋण (–) चिह्न वाला "अभीष्ट स्टैं. टा. अन्तर" बतलाता है, कि भा. स्टैं. टा. अभीष्ट स्थानीय (देश / कालक्षेत्रीय) स्टैं. टा. से पीछे है।

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

वैशाख

माह	अंग्रेज़ी तारीख	वैशाख प्रविष्टे	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अप्रैल	१३	१	७ ३६	९ ३०	११ ४४	१४ ०७	१६ २७	१८ ४४	२१ ०६	२३ २६	१ ३१	३ १२	४ ३७	५ ५९
	१४	२	७ ३२	९ २६	११ ४०	१४ ०३	१६ २३	१८ ४०	२१ ०२	२३ २२	१ २७	३ ०८	४ ३३	५ ५५
	१५	३	७ २८	९ २२	११ ३७	१३ ५९	१६ १९	१८ ३६	२० ५८	२३ १८	१ २३	३ ०४	४ २९	५ ५१
	१६	४	७ २४	९ १८	११ ३३	१३ ५५	१६ १५	१८ ३३	२० ५४	२३ १४	१ १९	३ ००	४ २५	५ ४७
	१७	५	७ २०	९ १४	११ २९	१३ ५१	१६ ११	१८ २९	२० ५०	२३ १०	१ १५	२ ५६	४ २१	५ ४३
	१८	६	७ १६	९ ११	११ २५	१३ ४७	१६ ०७	१८ २५	२० ४६	२३ ०६	१ ११	२ ५२	४ १७	५ ३९
	१९	७	७ १२	९ ०७	११ २१	१३ ४३	१६ ०३	१८ २१	२० ४२	२३ ०२	१ ०७	२ ४८	४ १३	५ ३५
	२०	८	७ ०८	९ ०३	११ १७	१३ ३९	१५ ५९	१८ १७	२० ३८	२२ ५८	१ ०३	२ ४४	४ ०९	५ ३१
	२१	९	७ ०४	८ ५९	११ १३	१३ ३५	१५ ५५	१८ १३	२० ३४	२२ ५४	० ५९	२ ४०	४ ०५	५ २८
	२२	१०	७ ००	८ ५५	११ ०९	१३ ३१	१५ ५१	१८ ०९	२० ३०	२२ ५१	० ५५	२ ३६	४ ०१	५ २४
	२३	११	६ ५६	८ ५१	११ ०५	१३ २७	१५ ४७	१८ ०५	२० २७	२२ ४७	० ५१	२ ३२	३ ५७	५ २०
	२४	१२	६ ५२	८ ४७	११ ०१	१३ २३	१५ ४३	१८ ०१	२० २३	२२ ४३	० ४७	२ २८	३ ५३	५ १६
	२५	१३	६ ४८	८ ४३	१० ५७	१३ १९	१५ ३९	१७ ५७	२० १९	२२ ३९	० ४३	२ २४	३ ४९	५ १२
	२६	१४	६ ४४	८ ३९	१० ५३	१३ १६	१५ ३६	१७ ५३	२० १५	२२ ३५	० ३९	२ २०	३ ४५	५ ०८
	२७	१५	६ ४१	८ ३५	१० ४९	१३ .२	१५ ३२	१७ ४९	२० ११	२२ ३१	० ३५	२ १६	३ ४२	५ ०४
	२८	१६	६ ३७	८ ३१	१० ४५	१३ ०८	१५ २८	१७ ४५	२० ०७	२२ २७	० ३२	२ १३	३ ३८	५ ००
	२९	१७	६ ३३	८ २७	१० ४२	१३ ०४	१५ २४	१७ ४१	२० ०३	२२ २३	० २८	२ ०९	३ ३४	४ ५६
	३०	१८	६ २९	८ २३	१० ३८	१३ ००	१५ २०	१७ ३७	१९ ५९	२२ १९	० २४	२ ०५	३ ३०	४ ५२
मई	१	१९	६ २५	८ १९	१० ३४	१२ ५६	१५ १६	१७ ३४	१९ ५५	२२ १५	० २०	२ ०१	३ २६	४ ४८
	२	२०	६ २१	८ १६	१० ३०	१२ ५२	१५ १२	१७ ३०	१९ ५१	२२ ११	० १६	१ ५७	३ २२	४ ४४
	३	२१	६ १७	८ १२	१० २६	१२ ४८	१५ ०८	१७ २६	१९ ४७	२२ ०७	० १२	१ ५३	३ १८	४ ४०
	४	२२	६ १३	८ ०८	१० २२	१२ ४४	१५ ०४	१७ २२	१९ ४३	२२ ०३	० ०८	१ ४९	३ १४	४ ३६
	५	२३	६ ०९	८ ०४	१० १८	१२ ४०	१५ ००	१७ १८	१९ ३९	२१ ५९	० ०४	१ ४५	३ १०	४ ३२
	६	२४	६ ०५	८ ००	१० १४	१२ ३६	१४ ५६	१७ १४	१९ ३५	२१ ५६	० ००	१ ४१	३ ०६	४ २९
	७	२५	६ ०१	७ ५६	१० १०	१२ ३२	१४ ५२	१७ १०	१९ ३२	२१ ५२	२३ ५६	१ ३७	३ ०२	४ २५
	८	२६	५ ५७	७ ५२	१० ०६	१२ २८	१४ ४८	१७ ०६	१९ २८	२१ ४८	२३ ५२	१ ३३	२ ५८	४ २१
	९	२७	५ ५३	७ ४८	१० ०२	१२ २४	१४ ४४	१७ ०२	१९ २४	२१ ४४	२३ ४८	१ २९	२ ५४	४ १७
	१०	२८	५ ४९	७ ४४	९ ५८	१२ २०	१४ ४०	१६ ५८	१९ २०	२१ ४०	२३ ४४	१ २५	२ ५०	४ १३
	११	२९	५ ४६	७ ४०	९ ५४	१२ १७	१४ ३६	१६ ५४	१९ १६	२१ ३६	२३ ४०	१ २१	२ ४६	४ ०९
	१२	३०	५ ४२	७ ३६	९ ५०	१२ १३	१४ ३३	१६ ५०	१९ १२	२१ ३२	२३ ३७	१ १८	२ ४३	४ ०५
	१३	३१	५ ३८	७ ३२	९ ४६	१२ ०९	१४ २९	१६ ४६	१९ ०८	२१ २८	२३ ३३	१ १४	२ ३९	४ ०१
	१४	[illegible]	५ ३४											

ज्येष्ठ

माह	अंग्रेज़ी तारीख	ज्येष्ठ प्रविष्टे	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
मई	१४	१	७ २८	९ ४३	१२ ०५	१४ २५	१६ ४२	१९ ०४	२१ २४	२३ २९	१ १०	२ ३५	३ ५७	५ ३०
	१५	२	७ २४	९ ३९	१२ ०१	१४ २१	१६ ३९	१९ ००	२१ २०	२३ २५	१ ०६	२ ३१	३ ५३	५ २६
	१६	३	७ २०	९ ३५	११ ५७	१४ १७	१६ ३५	१८ ५६	२१ १६	२३ २१	१ ०२	२ २७	३ ४९	५ २२
	१७	४	७ १७	९ ३१	११ ५३	१४ १३	१६ ३१	१८ ५२	२१ १२	२३ १७	० ५८	२ २३	३ ४५	५ १८
	१८	५	७ १३	९ २७	११ ४९	१४ ०९	१६ २७	१८ ४८	२१ ०८	२३ १३	० ५४	२ १९	३ ४१	५ १४
	१९	६	७ ०९	९ २३	११ ४५	१४ ०५	१६ २३	१८ ४४	२१ ०४	२३ ०९	० ५०	२ १५	३ ३७	५ १०
	२०	७	७ ०५	९ १९	११ ४१	१४ ०१	१६ १९	१८ ४०	२१ ०१	२३ ०५	० ४६	२ ११	३ ३४	५ ०६
	२१	८	७ ०१	९ १५	११ ३७	१३ ५७	१६ १५	१८ ३६	२० ५७	२३ ०१	० ४२	२ ०७	३ ३०	५ ०२
	२२	९	६ ५७	९ ११	११ ३३	१३ ५३	१६ ११	१८ ३३	२० ५३	२२ ५७	० ३८	२ ०३	३ २६	४ ५८
	२३	१०	६ ५३	९ ०७	११ २९	१३ ४९	१६ ०७	१८ २९	२० ४९	२२ ५३	० ३४	१ ५९	३ २२	४ ५४
	२४	११	६ ४९	९ ०३	११ २५	१३ ४५	१६ ०३	१८ २५	२० ४५	२२ ४९	० ३०	१ ५५	३ १८	४ ५०
	२५	१२	६ ४५	८ ५९	११ २२	१३ ४१	१५ ५९	१८ २१	२० ४१	२२ ४५	० २६	१ ५१	३ १४	४ ४७
	२६	१३	६ ४१	८ ५५	११ १८	१३ ३८	१५ ५५	१८ १७	२० ३७	२२ ४२	० २२	१ ४८	३ १०	४ ४३
	२७	१४	६ ३७	८ ५१	११ १४	१३ ३४	१५ ५१	१८ १३	२० ३३	२२ ३८	० १९	१ ४४	३ ०६	४ ३९
	२८	१५	६ ३३	५ ४७	११ १०	१३ ३०	१५ ४७	१८ ०९	२० २९	२२ ३४	० १५	१ ४०	३ ०२	४ ३५
	२९	१६	६ २९	८ ४४	११ ०६	१३ २६	१५ ४३	१८ ०५	२० २५	२२ ३०	० ११	१ ३६	२ ५८	४ ३१
	३०	१७	६ २५	८ ४०	११ ०२	१३ २२	१५ ४०	१८ ०१	२० २१	२२ २६	० ०७	१ ३२	२ ५४	४ २७
	३१	१८	६ २२	८ ३६	१० ५८	१३ १८	१५ ३६	१७ ५७	२० १७	२२ २२	० ०३	१ २८	२ ५०	४ २३
जून	१	१९	६ १८	८ ३२	१० ५४	१३ १४	१५ ३२	१७ ५३	२० १३	२२ १८	२३ ५९	१ २४	२ ४६	४ १९
	२	२०	६ १४	८ २८	१० ५०	१३ १०	१५ २८	१७ ४९	२० ०९	२२ १४	२३ ५५	१ २०	२ ४२	४ १५
	३	२१	६ १०	८ २४	१० ४६	१३ ०६	१५ २४	१७ ४५	२० ०५	२२ १०	२३ ५१	१ १६	२ ३८	४ ११
	४	२२	६ ०६	८ २०	१० ४२	१३ ०२	१५ २०	१७ ४१	२० ०२	२२ ०६	२३ ४७	१ १२	२ ३४	४ ०७
	५	२३	६ ०२	८ १६	१० ३८	१२ ५८	१५ १६	१७ ३७	१९ ५८	२२ ०२	२३ ४३	१ ०८	२ ३१	४ ०३
	६	२४	५ ५८	८ १२	१० ३४	१२ ५४	१५ १२	१७ ३४	१९ ५४	२१ ५८	२३ ३९	१ ०४	२ २७	३ ५९
	७	२५	५ ५४	८ ०८	१० ३०	१२ ५०	१५ ०८	१७ ३०	१९ ५०	२१ ५४	२३ ३५	१ ००	२ २३	३ ५५
	८	२६	५ ५०	८ ०४	१० २६	१२ ४६	१५ ०४	१७ २६	१९ ४६	२१ ५०	२३ ३१	० ५६	२ १९	३ ५१
	९	२७	५ ४६	८ ००	१० २३	१२ ४३	१५ ००	१७ २२	१९ ४२	२१ ४६	२३ २७	० ५२	२ १५	३ ४८
	१०	२८	५ ४२	७ ५६	१० १९	१२ ३९	१४ ५६	१७ १८	१९ ३८	२१ ४३	२३ २३	० ४९	२ ११	३ ४४
	११	२९	५ ३८	७ ५२	१० १५	१२ ३५	१४ ५२	१७ १४	१९ ३४	२१ ३९	२३ २०	० ४५	२ ०७	३ ४०
	१२	३०	५ ३४	७ ४९	१० ११	१२ ३१	१४ ४८	१७ १०	१९ ३०	२१ ३५	२३ १६	० ४१	२ ०३	३ ३६
	१३	३१	५ ३०	७ ४५	१० ०७	१२ २७	१४ ४५	१७ ०६	१९ २६	२१ ३१	२३ १२	० ३७	१ ५९	३ ३२

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

मास	अंग्रेज़ी तारीख	आषाढ़ प्रविष्टे	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.
जून	१४	१	७ ४१	१० ०३	१२ २३	१४ ४१	१७ ०२	१९ २२	२१ २७	२३ ०८	० ३३	१ ५५	३ २८	५ २३
	१५	२	७ ३७	९ ५९	१२ १९	१४ ३७	१६ ५८	१९ १८	२१ २३	२३ ०४	० २९	१ ५१	३ २४	५ १९
	१६	३	७ ३३	९ ५५	१२ १५	१४ ३३	१६ ५४	१९ १४	२१ १९	२३ ००	० २५	१ ४७	३ २०	५ १५
	१७	४	७ २९	९ ५१	१२ ११	१४ २९	१६ ५०	१९ १०	२१ १५	२२ ५६	० २१	१ ४३	३ १६	५ ११
	१८	५	७ २५	९ ४७	१२ ०७	१४ २५	१६ ४६	१९ ०६	२१ ११	२२ ५२	० १७	१ ३९	३ १२	५ ०७
	१९	६	७ २१	९ ४३	१२ ०३	१४ २१	१६ ४२	१९ ०३	२१ ०७	२२ ४८	० १३	१ ३६	३ ०८	५ ०३
	२०	७	७ १७	९ ३९	११ ५९	१४ १७	१६ ३९	१८ ५९	२१ ०३	२२ ४४	० ०९	१ ३२	३ ०४	४ ५९
	२१	८	७ १३	९ ३५	११ ५५	१४ १३	१६ ३५	१८ ५५	२० ५९	२२ ४०	० ०५	१ २८	३ ००	४ ५५
	२२	९	७ ०९	९ ३१	११ ५१	१४ ०९	१६ ३१	१८ ५१	२० ५५	२२ ३६	० ०१	१ २४	२ ५६	४ ५१
	२३	१०	७ ०५	९ २७	११ ४७	१४ ०५	१६ २७	१८ ४७	२० ५१	२२ ३२	२३ ५७	१ २०	२ ५३	४ ४७
	२४	११	७ ०१	९ २४	११ ४४	१४ ०१	१६ २३	१८ ४३	२० ४८	२२ २८	२३ ५४	१ १६	२ ४९	४ ४३
	२५	१२	६ ५७	९ २०	११ ४०	१३ ५७	१६ १९	१८ ३९	२० ४४	२२ २५	२३ ५०	१ १२	२ ४५	४ ३९
	२६	१३	६ ५३	९ १६	११ ३६	१३ ५३	१६ १५	१८ ३५	२० ४०	२२ २१	२३ ४६	१ ०८	२ ४१	४ ३५
	२७	१४	६ ५०	९ १२	११ ३२	१३ ४९	१६ ११	१८ ३१	२० ३६	२२ १७	२३ ४२	१ ०४	२ ३७	४ ३१
	२८	१५	६ ४६	९ ०८	११ २८	१३ ४६	१६ ०७	१८ २७	२० ३२	२२ १३	२३ ३८	१ ००	२ ३३	४ २७
	२९	१६	६ ४२	९ ०४	११ २४	१३ ४२	१६ ०३	१८ २३	२० २८	२२ ०९	२३ ३४	० ५६	२ २९	४ २४
	३०	१७	६ ३८	९ ००	११ २०	१३ ३८	१५ ५९	१८ १९	२० २४	२२ ०५	२३ ३०	० ५२	२ २५	४ २०
जुलाई	१	१८	६ ३४	८ ५६	११ १६	१३ ३४	१५ ५५	१८ १५	२० २०	२२ ०१	२३ २६	० ४८	२ २१	४ १६
	२	१९	६ ३०	८ ५२	११ १२	१३ ३०	१५ ५१	१८ ११	२० १६	२१ ५७	२३ २२	० ४४	२ १७	४ १२
	३	२०	६ २६	८ ४८	११ ०८	१३ २६	१५ ४७	१८ ०८	२० १२	२१ ५३	२३ १८	० ४१	२ १३	४ ०८
	४	२१	६ २२	८ ४४	११ ०४	१३ २२	१५ ४३	१८ ०४	२० ०८	२१ ४९	२३ १४	० ३७	२ ०९	४ ०४
	५	२२	६ १८	८ ४०	११ ००	१३ १८	१५ ४०	१८ ००	२० ०४	२१ ४५	२३ १०	० ३३	२ ०५	४ ००
	६	२३	६ १४	८ ३६	१० ५६	१३ १४	१५ ३६	१७ ५६	२० ००	२१ ४१	२३ ०६	० २९	२ ०१	३ ५६
	७	२४	६ १०	८ ३२	१० ५२	१३ १०	१५ ३२	१७ ५२	१९ ५६	२१ ३७	२३ ०२	० २५	१ ५७	३ ५२
	८	२५	६ ०६	८ २९	१० ४९	१३ ०६	१५ २८	१७ ४८	१९ ५२	२१ ३३	२२ ५८	० २१	१ ५४	३ ४८
	९	२६	६ ०२	८ २५	१० ४५	१३ ०२	१५ २४	१७ ४४	१९ ४९	२१ २९	२२ ५४	० १७	१ ५०	३ ४४
	१०	२७	५ ५८	८ २१	१० ४१	१२ ५८	१५ २०	१७ ४०	१९ ४५	२१ २६	२२ ५१	० १३	१ ४६	३ ४०
	११	२८	५ ५५	८ १७	१० ३७	१२ ५४	१५ १६	१७ ३६	१९ ४१	२१ २२	२२ ४७	० ०९	१ ४२	३ ३६
	१२	२९	५ ५१	८ १३	१० ३३	१२ ५०	१५ १२	१७ ३२	१९ ३७	२१ १८	२२ ४३	० ०५	१ ३८	३ ३२
	१३	३०	५ ४७	८ ०९	१० २९	१२ ४७	१५ ०८	१७ २८	१९ ३३	२१ १४	२२ ३९	० ०१	१ ३४	३ २९
	१४	३१	५ ४३	८ ०५	१० २५	१२ ४३	१५ ०४	१७ २४	१९ २९	२१ १०	२२ ३५	२३ ५७	१ ३०	३ २५
	१५	३२	५ ३९	८ ०१	१० २१	१२ ३९	१५ ००	१७ २०	१९ २५	२१ ०६	२२ ३१	२३ ५३	१ २६	३ २१
	१६	श्रा.१	५ ३४											

मास	अंग्रेज़ी तारीख	श्रावण प्रविष्टे	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.
जुलाई	१६	१	७ ५७	१० १७	१२ ३५	१४ ५६	१७ १६	१९ २१	२१ ०२	२२ २७	२३ ४९	१ २२	३ १७	५ ३१
	१७	२	७ ५३	१० १३	१२ ३१	१४ ५२	१७ १२	१९ १७	२० ५८	२२ २३	२३ ४५	१ १८	३ १३	५ २७
	१८	३	७ ४९	१० ०९	१२ २७	१४ ४८	१७ ०९	१९ १३	२० ५४	२२ १९	२३ ४१	१ १४	३ ०९	५ २३
	१९	४	७ ४५	१० ०५	१२ २३	१४ ४५	१७ ०५	१९ ०९	२० ५०	२२ १५	२३ ३८	१ १०	३ ०५	५ १९
	२०	५	७ ४१	१० ०१	१२ १९	१४ ४१	१७ ०१	१९ ०५	२० ४६	२२ ११	२३ ३४	१ ०६	३ ०१	५ १५
	२१	६	७ ३७	९ ५७	१२ १५	१४ ३७	१६ ५७	१९ ०१	२० ४२	२२ ०७	२३ ३०	१ ०२	२ ५७	५ ११
	२२	७	७ ३३	९ ५३	१२ ११	१४ ३३	१६ ५३	१८ ५७	२० ३८	२२ ०३	२३ २६	० ५८	२ ५३	५ ०७
	२३	८	७ ३०	९ ५०	१२ ०७	१४ २९	१६ ४९	१८ ५३	२० ३४	२१ ५९	२३ २२	० ५५	२ ४९	५ ०३
	२४	९	७ २६	९ ४६	१२ ०३	१४ २५	१६ ४५	१८ ५०	२० ३०	२१ ५६	२३ १८	० ५१	२ ४५	४ ५९
	२५	१०	७ २२	९ ४२	११ ५९	१४ २१	१६ ४१	१८ ४६	२० २७	२१ ५२	२३ १४	० ४७	२ ४१	४ ५६
	२६	११	७ १८	९ ३८	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ४२	२० २३	२१ ४८	२३ १०	० ४३	२ ३७	४ ५२
	२७	१२	७ १४	९ ३४	११ ५२	१४ १३	१६ ३३	१८ ३८	२० १९	२१ ४४	२३ ०६	० ३९	२ ३३	४ ४८
	२८	१३	७ १०	९ ३०	११ ४८	१४ ०९	१६ २९	१८ ३४	२० १५	२१ ४०	२३ ०२	० ३५	२ ३०	४ ४४
	२९	१४	७ ०६	९ २६	११ ४४	१४ ०५	१६ २५	१८ ३०	२० ११	२१ ३६	२२ ५८	० ३१	२ २६	४ ४०
	३०	१५	७ ०२	९ २२	११ ४०	१४ ०१	१६ २१	१८ २६	२० ०७	२१ ३२	२२ ५४	० २७	२ २२	४ ३६
	३१	१६	६ ५८	९ १८	११ ३६	१३ ५७	१६ १७	१८ २२	२० ०३	२१ २८	२२ ५०	० २३	२ १८	४ ३१
अगस्त	१	१७	६ ५४	९ १४	११ ३२	१३ ५३	१६ १३	१८ १८	१९ ५९	२१ २४	२२ ४७	० १९	२ १४	४ २८
	२	१८	६ ५०	९ १०	११ २८	१३ ४९	१६ १०	१८ १४	१९ ५५	२१ २०	२२ ४३	० १५	२ १०	४ २४
	३	१९	६ ४६	९ ०६	११ २४	१३ ४६	१६ ०६	१८ १०	१९ ५१	२१ १६	२२ ३९	० ११	२ ०६	४ २०
	४	२०	६ ४२	९ ०२	११ २०	१३ ४२	१६ ०२	१८ ०६	१९ ४७	२१ १२	२२ ३५	० ०७	२ ०२	४ १६
	५	२१	६ ३८	८ ५८	११ १६	१३ ३८	१५ ५८	१८ ०२	१९ ४३	२१ ०८	२२ ३१	० ०३	१ ५८	४ १२
	६	२२	६ ३४	८ ५४	११ १२	१३ ३४	१५ ५४	१७ ५८	१९ ३९	२१ ०४	२२ २७	० ००	१ ५४	४ ०८
	७	२३	६ ३१	८ ५१	११ ०८	१३ ३०	१५ ५०	१७ ५५	१९ ३५	२१ ०१	२२ २३	२३ ५६	१ ५०	४ ०४
	८	२४	६ २७	८ ४७	११ ०४	१३ २६	१५ ४६	१७ ५१	१९ ३२	२० ५७	२२ १९	२३ ५२	१ ४६	४ ००
	९	२५	६ २३	८ ४३	११ ००	१३ २२	१५ ४२	१७ ४७	१९ २८	२० ५३	२२ १५	२३ ४८	१ ४२	३ ५७
	१०	२६	६ १९	८ ३९	१० ५६	१३ १८	१५ ३८	१७ ४३	१९ २४	२० ४९	२२ ११	२३ ४४	१ ३८	३ ५३
	११	२७	६ १५	८ ३५	१० ५३	१३ १४	१५ ३४	१७ ३९	१९ २०	२० ४५	२२ ०७	२३ ४०	१ ३४	३ ४९
	१२	२८	६ ११	८ ३१	१० ४९	१३ १०	१५ ३०	१७ ३५	१९ १६	२० ४१	२२ ०३	२३ ३६	१ ३१	३ ४५
	१३	२९	६ ०७	८ २७	१० ४५	१३ ०६	१५ २६	१७ ३१	१९ १२	२० ३७	२१ ५९	२३ ३२	१ २७	३ ४१
	१४	३०	६ ०३	८ २३	१० ४१	१३ ०२	१५ २२	१७ २७	१९ ०८	२० ३३	२१ ५५	२३ २८	१ २३	३ ३७
	१५	३१	५ ५९	८ १९	१० ३७	१२ ५८	१५ १८	१७ २३	१९ ०४	२० २९	२१ ५१	२३ २४	१ १९	३ ३३
	१६	भा.१	५ ५५											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

अंग्रेज़ी तारीख (मास)	अंग्रेज़ी तारीख	भाद्रपद प्रविष्टे	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अगस्त	१६	१	८ १५	१० ३३	१२ ५४	१५ १५	१७ १९	१९ ००	२० २५	२१ ४८	२३ २०	१ १५	३ २९	५ ५१
	१७	२	८ ११	१० २९	१२ ५०	१५ ११	१७ १५	१८ ५६	२० २१	२१ ४४	२३ १६	१ ११	३ २५	५ ४७
	१८	३	८ ०७	१० २५	१२ ४७	१५ ०७	१७ ११	१८ ५२	२० १७	२१ ४०	२३ १२	१ ०७	३ २१	५ ४३
	१९	४	८ ०३	१० २१	१२ ४३	१५ ०३	१७ ०७	१८ ४८	२० १३	२१ ३६	२३ ०८	१ ०३	३ १७	५ ३९
	२०	५	७ ५९	१० १७	१२ ३९	१४ ५९	१७ ०३	१८ ४४	२० ०९	२१ ३२	२३ ०४	० ५९	३ १३	५ ३६
	२१	६	७ ५६	१० १३	१२ ३५	१४ ५५	१६ ५९	१८ ४०	२० ०५	२१ २८	२३ ०१	० ५५	३ ०९	५ ३२
	२२	७	७ ५२	१० ०९	१२ ३१	१४ ५१	१६ ५६	१८ ३६	२० ०२	२१ २४	२२ ५७	० ५१	३ ०५	५ २८
	२३	८	७ ४८	१० ०५	१२ २७	१४ ४७	१६ ५२	१८ ३३	१९ ५८	२१ २०	२२ ५३	० ४७	३ ०२	५ २४
	२४	९	७ ४४	१० ०१	१२ २३	१४ ४३	१६ ४८	१८ २९	१९ ५४	२१ १६	२२ ४९	० ४३	२ ५८	५ २०
	२५	१०	७ ४०	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४४	१८ २५	१९ ५०	२१ १२	२२ ४५	० ३९	२ ५४	५ १६
	२६	११	७ ३६	९ ५४	१२ १५	१४ ३५	१६ ४०	१८ २१	१९ ४६	२१ ०८	२२ ४१	० ३६	२ ५०	५ १२
	२७	१२	७ ३२	९ ५०	१२ ११	१४ ३१	१६ ३६	१८ १७	१९ ४२	२१ ०४	२२ ३७	० ३२	२ ४६	५ ०८
	२८	१३	७ २८	९ ४६	१२ ०७	१४ २७	१६ ३२	१८ १३	१९ ३८	२१ ००	२२ ३३	० २८	२ ४२	५ ०४
	२९	१४	७ २४	९ ४२	१२ ०३	१४ २३	१६ २८	१८ ०९	१९ ३४	२० ५६	२२ २९	० २४	२ ३८	५ ००
	३०	१५	७ २०	९ ३८	११ ५९	१४ १९	१६ २४	१८ ०५	१९ ३०	२० ५२	२२ २५	० २०	२ ३४	४ ५६
	३१	१६	७ १६	९ ३४	११ ५५	१४ १५	१६ २०	१८ ०१	१९ २६	२० ४९	२२ २१	० १६	२ ३०	४ ५२
सितम्बर	१	१७	७ १२	९ ३०	११ ५२	१४ १२	१६ १६	१७ ५७	१९ २२	२० ४५	२२ १७	० १२	२ २६	४ ४८
	२	१८	७ ०८	९ २६	११ ४८	१४ ०८	१६ १२	१७ ५३	१९ १८	२० ४१	२२ १३	० ०८	२ २२	४ ४४
	३	१९	७ ०४	९ २२	११ ४४	१४ ०४	१६ ०८	१७ ४९	१९ १४	२० ३७	२२ ०९	० ०४	२ १८	४ ४०
	४	२०	७ ००	९ १८	११ ४०	१४ ००	१६ ०४	१७ ४५	१९ १०	२० ३३	२२ ०६	० ००	२ १४	४ ३७
	५	२१	६ ५७	९ १४	११ ३६	१३ ५६	१६ ००	१७ ४१	१९ ०६	२० २९	२२ ०२	२३ ५६	२ १०	४ ३३
	६	२२	६ ५३	९ १०	११ ३२	१३ ५२	१५ ५७	१७ ३८	१९ ०३	२० २५	२१ ५८	२३ ५२	२ ०६	४ २९
	७	२३	६ ४९	९ ०६	११ २८	१३ ४८	१५ ५३	१७ ३४	१८ ५९	२० २१	२१ ५४	२३ ४८	२ ०३	४ २५
	८	२४	६ ४५	९ ०२	११ २४	१३ ४४	१५ ४९	१७ ३०	१८ ५५	२० १७	२१ ५०	२३ ४४	१ ५९	४ २१
	९	२५	६ ४१	८ ५९	११ २०	१३ ४०	१५ ४५	१७ २६	१८ ५१	२० १३	२१ ४६	२३ ४०	१ ५५	४ १७
	१०	२६	६ ३७	८ ५५	११ १६	१३ ३६	१५ ४१	१७ २२	१८ ४७	२० ०९	२१ ४२	२३ ३७	१ ५१	४ १३
	११	२७	६ ३३	८ ५१	११ १२	१३ ३२	१५ ३७	१७ १८	१८ ४३	२० ०५	२१ ३८	२३ ३३	१ ४७	४ ०९
	१२	२८	६ २९	८ ४७	११ ०८	१३ २८	१५ ३३	१७ १४	१८ ३९	२० ०१	२१ ३४	२३ २९	१ ४३	४ ०५
	१३	२९	६ २५	८ ४३	११ ०४	१३ २४	१५ २९	१७ १०	१८ ३५	१९ ५७	२१ ३०	२३ २५	१ ३९	४ ०१
	१४	३०	६ २१	८ ३९	११ ००	१३ २१	१५ २५	१७ ०६	१८ ३१	१९ ५४	२१ २६	२३ २१	१ ३५	३ ५७
	१५	३१	६ १७	८ ३५	१० ५६	१३ १७	१५ २१	१७ ०२	१८ २७	१९ ५०	२१ २२	२३ १७	१ ३१	३ ५३
	१६	आ.१	६ १३											

अंग्रेज़ी तारीख (मास)	अंग्रेज़ी तारीख	आश्विन प्रविष्टे	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
सितम्बर	१६	१	८ ३१	१० ५३	१३ १३	१५ १७	१६ ५८	१८ २३	१९ ४६	२१ १८	२३ १३	१ २७	३ ४९	६ ०९
	१७	२	८ २७	१० ४९	१३ ०९	१५ १३	१६ ५४	१८ १९	१९ ४२	२१ १४	२३ ०९	१ २३	३ ४५	६ ०५
	१८	३	८ २३	१० ४५	१३ ०५	१५ ०९	१६ ५०	१८ १५	१९ ३८	२१ १०	२३ ०५	१ १९	३ ४२	६ ०१
	१९	४	८ १९	१० ४१	१३ ०१	१५ ०५	१६ ४६	१८ ११	१९ ३४	२१ ०७	२३ ०१	१ १५	३ ३८	५ ५८
	२०	५	८ १५	१० ३७	१२ ५७	१५ ०२	१६ ४२	१८ ०८	१९ ३०	२१ ०३	२२ ५७	१ ११	३ ३४	५ ५४
	२१	६	८ ११	१० ३३	१२ ५३	१४ ५८	१६ ३९	१८ ०४	१९ २६	२० ५९	२२ ५३	१ ०७	३ ३०	५ ५०
	२२	७	८ ०७	१० २९	१२ ४९	१४ ५४	१६ ३५	१८ ००	१९ २२	२० ५५	२२ ४९	१ ०४	३ २६	५ ४६
	२३	८	८ ०३	१० २५	१२ ४५	१४ ५०	१६ ३१	१७ ५६	१९ १८	२० ५१	२२ ४५	१ ००	३ २२	५ ४२
	२४	९	८ ००	१० २१	१२ ४१	१४ ४६	१६ २७	१७ ५२	१९ १४	२० ४७	२२ ४१	० ५६	३ १८	५ ३८
	२५	१०	७ ५६	१० १७	१२ ३७	१४ ४२	१६ २३	१७ ४८	१९ १०	२० ४३	२२ ३८	० ५२	३ १४	५ ३४
	२६	११	७ ५२	१० १३	१२ ३३	१४ ३८	१६ १९	१७ ४४	१९ ०६	२० ३९	२२ ३४	० ४८	३ १०	५ ३०
	२७	१२	७ ४८	१० ०९	१२ २९	१४ ३४	१६ १५	१७ ४०	१९ ०२	२० ३५	२२ ३०	० ४४	३ ०६	५ २६
	२८	१३	७ ४४	१० ०५	१२ २५	१४ ३०	१६ ११	१७ ३६	१८ ५८	२० ३१	२२ २६	० ४०	३ ०२	५ २२
	२९	१४	७ ४०	१० ०१	१२ २२	१४ २६	१६ ०७	१७ ३२	१८ ५५	२० २७	२२ २२	० ३६	२ ५८	५ १८
	३०	१५	७ ३६	९ ५७	१२ १८	१४ २२	१६ ०३	१७ २८	१८ ५१	२० २३	२२ १८	० ३२	२ ५४	५ १४
अक्तूबर	१	१६	७ ३२	९ ५४	१२ १४	१४ १८	१५ ५९	१७ २४	१८ ४७	२० १९	२२ १४	० २८	२ ५०	५ १०
	२	१७	७ २८	९ ५०	१२ १०	१४ १४	१५ ५५	१७ २०	१८ ४३	२० १५	२२ १०	० २४	२ ४६	५ ०६
	३	१८	७ २४	९ ४६	१२ ०६	१४ १०	१५ ५१	१७ १६	१८ ३९	२० ११	२२ ०६	० २०	२ ४३	५ ०३
	४	१९	७ २०	९ ४२	१२ ०२	१४ ०६	१५ ४७	१७ १२	१८ ३५	२० ०८	२२ ०२	० १६	२ ३९	४ ५९
	५	२०	७ १६	९ ३८	११ ५८	१४ ०३	१५ ४३	१७ ०९	१८ ३१	२० ०४	२१ ५८	० १२	२ ३५	४ ५५
	६	२१	७ १२	९ ३४	११ ५४	१३ ५९	१५ ४०	१७ ०५	१८ २७	२० ००	२१ ५४	० ०८	२ ३१	४ ५१
	७	२२	७ ०८	९ ३०	११ ५०	१३ ५५	१५ ३६	१७ ०१	१८ २३	१९ ५६	२१ ५०	० ०५	२ २७	४ ४७
	८	२३	७ ०५	९ २६	११ ४६	१३ ५१	१५ ३२	१६ ५७	१८ १९	१९ ५२	२१ ४६	० ०१	२ २३	४ ४३
	९	२४	७ ०१	९ २२	११ ४२	१३ ४७	१५ २८	१६ ५३	१८ १५	१९ ४८	२१ ४३	२३ ५७	२ १९	४ ३९
	१०	२५	६ ५७	९ १८	११ ३८	१३ ४३	१५ २४	१६ ४९	१८ ११	१९ ४४	२१ ३९	२३ ५३	२ १५	४ ३५
	११	२६	६ ५३	९ १४	११ ३४	१३ ३९	१५ २०	१६ ४५	१८ ०७	१९ ४०	२१ ३५	२३ ४९	२ ११	४ ३१
	१२	२७	६ ४९	९ १०	११ ३०	१३ ३५	१५ १६	१६ ४१	१८ ०३	१९ ३६	२१ ३१	२३ ४५	२ ०७	४ २७
	१३	२८	६ ४५	९ ०६	११ २६	१३ ३१	१५ १२	१६ ३७	१७ ५९	१९ ३२	२१ २७	२३ ४१	२ ०३	४ २३
	१४	२९	६ ४१	९ ०२	११ २३	१३ २७	१५ ०८	१६ ३३	१७ ५६	१९ २८	२१ २३	२३ ३७	१ ५९	४ १९
	१५	३०	६ ३७	८ ५९	११ १९	१३ २३	१५ ०४	१६ २९	१७ ५२	१९ २४	२१ १९	२३ ३३	१ ५५	४ १५
	१६	का.१	६ ३३											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

माह	अंग्रेज़ी तारीख	कार्तिक तिथि	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अक्तूबर	१६	१	८ ५५	११ १५	१३ १९	१५ ००	१६ २५	१७ ४८	१९ २०	२१ १५	२३ २९	१ ५१	४ ११	६ २९
	१७	२	८ ५१	११ ११	१३ १५	१४ ५६	१६ २१	१७ ४४	१९ १६	२१ ११	२३ २५	१ ४७	४ ०७	६ २५
	१८	३	८ ४७	११ ०७	१३ ११	१४ ५२	१६ १७	१७ ४०	१९ १३	२१ ०७	२३ २१	१ ४४	४ ०४	६ २१
	१९	४	८ ४३	११ ०३	१३ ०८	१४ ४८	१६ १४	१७ ३६	१९ ०९	२१ ०३	२३ १७	१ ४०	४ ००	६ १७
	२०	५	८ ३९	१० ५९	१३ ०४	१४ ४५	१६ १०	१७ ३२	१९ ०५	२० ५९	२३ १३	१ ३६	३ ५६	६ १३
	२१	६	८ ३५	१० ५५	१३ ००	१४ ४१	१६ ०६	१७ २८	१९ ०१	२० ५५	२३ ०९	१ ३२	३ ५२	६ ०९
	२२	७	८ ३१	१० ५१	१२ ५६	१४ ३७	१६ ०२	१७ २४	१८ ५७	२० ५१	२३ ०६	१ २८	३ ४८	६ ०६
	२३	८	८ २७	१० ४७	१२ ५२	१४ ३३	१५ ५८	१७ २०	१८ ५३	२० ४७	२३ ०२	१ २४	३ ४४	६ ०२
	२४	९	८ २३	१० ४३	१२ ४८	१४ २९	१५ ५४	१७ १६	१८ ४९	२० ४४	२२ ५८	१ २०	३ ४०	५ ५८
	२५	१०	८ १९	१० ३९	१२ ४४	१४ २५	१५ ५०	१७ १२	१८ ४५	२० ४०	२२ ५४	१ १६	३ ३६	५ ५४
	२६	११	८ १५	१० ३५	१२ ४०	१४ २१	१५ ४६	१७ ०८	१८ ४१	२० ३६	२२ ५०	१ १२	३ ३२	५ ५०
	२७	१२	८ ११	१० ३१	१२ ३६	१४ १७	१५ ४२	१७ ०४	१८ ३७	२० ३२	२२ ४६	१ ०८	३ २८	५ ४६
	२८	१३	८ ०७	१० २८	१२ ३२	१४ १३	१५ ३८	१७ ०१	१८ ३३	२० २८	२२ ४२	१ ०४	३ २४	५ ४२
	२९	१४	८ ०३	१० २४	१२ २८	१४ ०९	१५ ३४	१६ ५७	१८ २९	२० २४	२२ ३८	१ ००	३ २०	५ ३८
	३०	१५	८ ००	१० २०	१२ २४	१४ ०५	१५ ३०	१६ ५३	१८ २५	२० २०	२२ ३४	० ५६	३ १६	५ ३४
	३१	१६	७ ५६	१० १६	१२ २०	१४ ०१	१५ २६	१६ ४९	१८ २१	२० १६	२२ ३०	० ५२	३ १२	५ ३०
नवम्बर	१	१७	७ ५२	१० १२	१२ १६	१३ ५७	१५ २२	१६ ४५	१८ १७	२० १२	२२ २६	० ४८	३ ०९	५ २६
	२	१८	७ ४८	१० ०८	१२ १२	१३ ५३	१५ १८	१६ ४१	१८ १३	२० ०८	२२ २२	० ४५	३ ०५	५ २२
	३	१९	७ ४४	१० ०४	१२ ०९	१३ ४९	१५ १५	१६ ३७	१८ ०९	२० ०४	२२ १८	० ४१	३ ०१	५ १८
	४	२०	७ ४०	१० ००	१२ ०५	१३ ४६	१५ ११	१६ ३३	१८ ०६	२० ००	२२ १५	० ३७	२ ५७	५ १४
	५	२१	७ ३६	९ ५६	१२ ०१	१३ ४२	१५ ०७	१६ २९	१८ ०२	१९ ५६	२२ ११	० ३३	२ ५३	५ १०
	६	२२	७ ३२	९ ५२	११ ५७	१३ ३८	१५ ०३	१६ २५	१७ ५८	१९ ५२	२२ ०७	० २९	२ ४९	५ ०७
	७	२३	७ २८	९ ४८	११ ५३	१३ ३४	१४ ५९	१६ २१	१७ ५४	१९ ४९	२२ ०३	० २५	२ ४५	५ ०३
	८	२४	७ २४	९ ४४	११ ४९	१३ ३०	१४ ५५	१६ १७	१७ ५०	१९ ४५	२१ ५९	० २१	२ ४१	४ ५९
	९	२५	७ २०	९ ४०	११ ४५	१३ २६	१४ ५१	१६ १३	१७ ४६	१९ ४१	२१ ५५	० १७	२ ३७	४ ५५
	१०	२६	७ १६	९ ३६	११ ४१	१३ २२	१४ ४७	१६ ०९	१७ ४२	१९ ३७	२१ ५१	० १३	२ ३३	४ ५१
	११	२७	७ १२	९ ३२	११ ३७	१३ १८	१४ ४३	१६ ०५	१७ ३८	१९ ३३	२१ ४७	० ०९	२ २९	४ ४७
	१२	२८	७ ०८	९ २९	११ ३३	१३ १४	१४ ३९	१६ ०२	१७ ३४	१९ २९	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ ४३
	१३	२९	७ ०५	९ २५	११ २९	१३ १०	१४ ३५	१५ ५८	१७ ३०	१९ २५	२१ ३९	० ०१	२ २१	४ ३९
	१४	३०	७ ०१	९ २१	११ २५	१३ ०६	१४ ३१	१५ ५४	१७ २६	१९ २१	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ ३५
	१५	मा. १	६ ५७											

माह	अंग्रेज़ी तारीख	मार्गशीर्ष तिथि	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
नवम्बर	१५	१	९ १७	११ २१	१३ ०२	१४ २७	१५ ५०	१७ २२	१९ १७	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ ३१	६ ५३
	१६	२	९ १३	११ १७	१२ ५८	१४ २३	१५ ४६	१७ १८	१९ १३	२१ २७	२३ ५०	२ १०	४ २७	६ ४९
	१७	३	९ ०९	११ १३	१२ ५४	१४ १९	१५ ४२	१७ १५	१९ ०९	२१ २३	२३ ४६	२ ०६	४ २३	६ ४५
	१८	४	९ ०५	११ १०	१२ ५०	१४ १६	१५ ३८	१७ ११	१९ ०५	२१ १९	२३ ४२	२ ०२	४ १९	६ ४१
	१९	५	९ ०१	११ ०६	१२ ४७	१४ १२	१५ ३४	१७ ०७	१९ ०१	२१ १६	२३ ३८	१ ५८	४ १५	६ ३७
	२०	६	८ ५७	११ ०२	१२ ४३	१४ ०८	१५ ३०	१७ ०३	१८ ५७	२१ १२	२३ ३४	१ ५४	४ १२	६ ३३
	२१	७	८ ५३	१० ५८	१२ ३९	१४ ०४	१५ २६	१६ ५९	१८ ५३	२१ ०८	२३ ३०	१ ५०	४ ०८	६ २९
	२२	८	८ ४९	१० ५४	१२ ३५	१४ ००	१५ २२	१६ ५५	१८ ५०	२१ ०४	२३ २६	१ ४६	४ ०४	६ २५
	२३	९	८ ४५	१० ५०	१२ ३१	१३ ५६	१५ १८	१६ ५१	१८ ४६	२१ ००	२३ २२	१ ४२	४ ००	६ २१
	२४	१०	८ ४१	१० ४६	१२ २७	१३ ५२	१५ १४	१६ ४७	१८ ४२	२० ५६	२३ १८	१ ३८	३ ५६	६ १७
	२५	११	८ ३७	१० ४२	१२ २३	१३ ४८	१५ १०	१६ ४३	१८ ३८	२० ५२	२३ १४	१ ३४	३ ५२	६ १३
	२६	१२	८ ३३	१० ३८	१२ १९	१३ ४४	१५ ०७	१६ ३९	१८ ३४	२० ४८	२३ १०	१ ३०	३ ४८	६ ०९
	२७	१३	८ ३०	१० ३४	१२ १५	१३ ४०	१५ ०३	१६ ३५	१८ ३०	२० ४४	२३ ०६	१ २६	३ ४४	६ ०६
	२८	१४	८ २६	१० ३०	१२ ११	१३ ३६	१४ ५९	१६ ३१	१८ २६	२० ४०	२३ ०२	१ २२	३ ४०	६ ०२
	२९	१५	८ २२	१० २६	१२ ०७	१३ ३२	१४ ५५	१६ २७	१८ २२	२० ३६	२२ ५८	१ १८	३ ३६	५ ५८
	३०	१६	८ १८	१० २२	१२ ०३	१३ २८	१४ ५१	१६ २३	१८ १८	२० ३२	२२ ५४	१ १४	३ ३२	५ ५४
दिसम्बर	१	१७	८ १४	१० १८	११ ५९	१३ २४	१४ ४७	१६ २०	१८ १४	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ २८	५ ५०
	२	१८	८ १०	१० १५	११ ५५	१३ २१	१४ ४३	१६ १६	१८ १०	२० २४	२२ ४७	१ ०७	३ २४	५ ४६
	३	१९	८ ०६	१० ११	११ ५२	१३ १७	१४ ३९	१६ १२	१८ ०६	२० २०	२२ ४३	१ ०३	३ २०	५ ४२
	४	२०	८ ०२	१० ०७	११ ४८	१३ १३	१४ ३५	१६ ०८	१८ ०२	२० १७	२२ ३९	० ५९	३ १६	५ ३८
	५	२१	७ ५८	१० ०३	११ ४४	१३ ०९	१४ ३१	१६ ०४	१७ ५८	२० १३	२२ ३५	० ५५	३ १३	५ ३४
	६	२२	७ ५४	९ ५९	११ ४०	१३ ०५	१४ २७	१६ ००	१७ ५४	२० ०९	२२ ३१	० ५१	३ ०९	५ ३०
	७	२३	७ ५०	९ ५५	११ ३६	१३ ०१	१४ २३	१५ ५६	१७ ५१	२० ०५	२२ २७	० ४७	३ ०५	५ २६
	८	२४	७ ४६	९ ५१	११ ३२	१२ ५७	१४ १९	१५ ५२	१७ ४७	२० ०१	२२ २३	० ४३	३ ०१	५ २२
	९	२५	७ ४२	९ ४७	११ २८	१२ ५३	१४ १५	१५ ४८	१७ ४३	१९ ५७	२२ १९	० ३९	२ ५७	५ १८
	१०	२६	७ ३८	९ ४३	११ २४	१२ ४९	१४ ११	१५ ४४	१७ ३९	१९ ५३	२२ १५	० ३५	२ ५३	५ १४
	११	२७	७ ३४	९ ३९	११ २०	१२ ४५	१४ ०८	१५ ४०	१७ ३५	१९ ४९	२२ ११	० ३१	२ ४९	५ १०
	१२	२८	७ ३१	९ ३५	११ १६	१२ ४१	१४ ०४	१५ ३६	१७ ३१	१९ ४५	२२ ०७	० २७	२ ४५	५ ०७
	१३	२९	७ २७	९ ३१	११ १२	१२ ३७	१४ ००	१५ ३२	१७ २७	१९ ४१	२२ ०३	० २३	२ ४१	५ ०३
	१४	३०	७ २३	९ २७	११०८	१२ ३३	१३ ५६	१५ २८	१७ २३	१९ ३७	२१ ५९	० १९	२ ३७	४ ५९
	१५	पौ.१	७ १९											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

माह	अंग्रेज़ी तारीख	पौष प्रविष्टे	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.
दिसम्बर	१५	१	९ २३	११ ४	१२ २९	१३ ५२	१५ २४	१७ १९	१९ ३३	२१ ५६	० १६	२ ३३	४ ५५	७ १५
	१६	२	९ १९	११ ००	१२ २५	१३ ४८	१५ २१	१७ १५	१९ २९	२१ ५२	० १२	२ २९	४ ५१	७ ११
	१७	३	९ १६	१० ५६	१२ २२	१३ ४४	१५ १७	१७ ११	१९ २५	२१ ४८	० ०८	२ २५	४ ४७	७ ०७
	१८	४	९ १२	१० ५३	१२ १८	१३ ४०	१५ १३	१७ ०७	१९ २२	२१ ४४	० ०४	२ २१	४ ४३	७ ०३
	१९	५	९ ०८	१० ४९	१२ १४	१३ ३६	१५ ०९	१७ ०३	१९ १८	२१ ४०	० ००	२ १७	४ ३९	६ ५९
	२०	६	९ ०४	१० ४५	१२ १०	१३ ३२	१५ ०५	१६ ५९	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ १४	४ ३५	६ ५५
	२१	७	९ ००	१० ४१	१२ ०६	१३ २८	१५ ०१	१६ ५६	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	२ १०	४ ३१	६ ५१
	२२	८	८ ५६	१० ३७	१२ ०२	१३ २४	१४ ५७	१६ ५२	१९ ०६	२१ २८	२३ ४८	२ ०६	४ २७	६ ४७
	२३	९	८ ५२	१० ३३	११ ५८	१३ २०	१४ ५३	१६ ४८	१९ ०२	२१ २४	२३ ४४	२ ०२	४ २३	६ ४३
	२४	१०	८ ४८	१० २९	११ ५४	१३ १६	१४ ४९	१६ ४४	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ५८	४ १९	६ ३९
	२५	११	८ ४४	१० २५	११ ५०	१३ १२	१४ ४५	१६ ४०	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ५४	४ १५	६ ३६
	२६	१२	८ ४०	१० २१	११ ४६	१३ ०९	१४ ४१	१६ ३६	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ५०	४ १२	६ ३२
	२७	१३	८ ३६	१० १७	११ ४२	१३ ०५	१४ ३७	१६ ३२	१८ ४६	२१ ०८	२३ २८	१ ४६	४ ०८	६ २८
	२८	१४	८ ३२	१० १३	११ ३८	१३ ०१	१४ ३३	१६ २८	१८ ४२	२१ ०४	२३ २४	१ ४२	४ ०४	६ २४
	२९	१५	८ २८	१० ०९	११ ३४	१२ ५७	१४ २९	१६ २४	१८ ३८	२१ ००	२३ २०	१ ३८	४ ००	६ २०
	३०	१६	८ २४	१० ०५	११ ३०	१२ ५३	१४ २६	१६ २०	१८ ३४	२० ५७	२३ १७	१ ३४	३ ५६	६ १६
	३१	१७	८ २०	१० ०१	११ २६	१२ ४९	१४ २२	१६ १६	१८ ३०	२० ५३	२३ १३	१ ३०	३ ५२	६ १२
जनवरी	१	१८	८ १६	९ ५७	११ २२	१२ ४४	१४ १७	१६ ११	१८ २६	२० ४८	२३ ०८	१ २५	३ ४७	६ ०७
	२	१९	८ १२	९ ५३	११ १८	१२ ४०	१४ १३	१६ ०७	१८ २२	२० ४४	२३ ०४	१ २१	३ ४३	६ ०३
	३	२०	८ ०८	९ ४९	११ १४	१२ ३६	१४ ०९	१६ ०३	१८ १८	२० ४०	२३ ००	१ १७	३ ३९	५ ५९
	४	२१	८ ०४	९ ४५	११ १०	१२ ३२	१४ ०५	१५ ५९	१८ १४	२० ३६	२२ ५६	१ १४	३ ३५	५ ५५
	५	२२	८ ००	९ ४१	११ ०६	१२ २८	१४ ०१	१५ ५६	१८ १०	२० ३२	२२ ५२	१ १०	३ ३१	५ ५१
	६	२३	७ ५६	९ ३७	११ ०२	१२ २४	१३ ५७	१५ ५२	१८ ०६	२० २८	२२ ४८	१ ०६	३ २७	५ ४७
	७	२४	७ ५२	९ ३३	१० ५८	१२ २०	१३ ५३	१५ ४८	१८ ०२	२० २४	२२ ४४	१ ०२	३ २३	५ ४३
	८	२५	७ ४८	९ २९	१० ५४	१२ १६	१३ ४९	१५ ४४	१७ ५८	२० २०	२२ ४०	० ५८	३ १९	५ ३९
	९	२६	७ ४४	९ २५	१० ५०	१२ १३	१३ ४५	१५ ४०	१७ ५४	२० १६	२२ ३६	० ५४	३ १५	५ ३६
	१०	२७	७ ४०	९ २१	१० ४६	१२ ०९	१३ ४१	१५ ३६	१७ ५०	२० १२	२२ ३२	० ५०	३ १२	५ ३२
	११	२८	७ ३६	९ १७	१० ४२	१२ ०५	१३ ३७	१५ ३२	१७ ४६	२० ०८	२२ २८	० ४६	३ ०८	५ २८
	१२	२९	७ ३२	९ १३	१० ३८	१२ ०१	१३ ३३	१५ २८	१७ ४२	२० ०४	२२ २४	० ४२	३ ०४	५ २४
	१३	माघ १	७ २८											

माह	अंग्रेज़ी तारीख	माघ प्रविष्टे	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.
जनवरी	१३	१	९ ०९	१० ३४	११ ५७	१३ २९	१५ २४	१७ ३८	२० ००	२२ २०	० ३८	३ ००	५ २०	७ २४
	१४	२	९ ०५	१० ३०	११ ५३	१३ २६	१५ २०	१७ ३४	१९ ५७	२२ १७	० ३४	२ ५६	५ १६	७ २०
	१५	३	९ ०१	१० २७	११ ४९	१३ २२	१५ १६	१७ ३०	१९ ५३	२२ १३	० ३०	२ ५२	५ १२	७ १७
	१६	४	८ ५८	१० २३	११ ४५	१३ १८	१५ १२	१७ २६	१९ ४९	२२ ०९	० २६	२ ४८	५ ०८	७ १३
	१७	५	८ ५४	१० १९	११ ४१	१३ १४	१५ ०८	१७ २३	१९ ४५	२२ ०५	० २२	२ ४४	५ ०४	७ ०९
	१८	६	८ ५०	१० १५	११ ३७	१३ १०	१५ ०४	१७ १९	१९ ४१	२२ ०१	० १९	२ ४०	५ ००	७ ०५
	१९	७	८ ४६	१० ११	११ ३३	१३ ०६	१५ ०१	१७ १५	१९ ३७	२१ ५७	० १५	२ ३६	४ ५६	७ ०१
	२०	८	८ ४२	१० ०७	११ २९	१३ ०२	१४ ५७	१७ ११	१९ ३३	२१ ५३	० ११	२ ३२	४ ५२	६ ५७
	२१	९	८ ३८	१० ०३	११ २५	१२ ५८	१४ ५३	१७ ०७	१९ २९	२१ ४९	० ०७	२ २८	४ ४८	६ ५३
	२२	१०	८ ३४	९ ५९	११ २१	१२ ५४	१४ ४९	१७ ०३	१९ २५	२१ ४५	० ०३	२ २४	४ ४४	६ ४९
	२३	११	८ ३०	९ ५५	११ १७	१२ ५०	१४ ४५	१६ ५९	१९ २१	२१ ४१	२३ ५९	२ २०	४ ४१	६ ४५
	२४	१२	८ २६	९ ५१	११ १४	१२ ४६	१४ ४१	१६ ५५	१९ १७	२१ ३७	२३ ५५	२ १६	४ ३७	६ ४१
	२५	१३	८ २२	९ ४७	११ १०	१२ ४२	१४ ३७	१६ ५१	१९ १३	२१ ३३	२३ ५१	२ १३	४ ३३	६ ३७
	२६	१४	८ १८	९ ४३	११ ०६	१२ ३८	१४ ३३	१६ ४७	१९ ०९	२१ २९	२३ ४७	२ ०९	४ २९	६ ३३
	२७	१५	८ १४	९ ३९	११ ०२	१२ ३४	१४ २९	१६ ४३	१९ ०५	२१ २५	२३ ४३	२ ०५	४ २५	६ २९
	२८	१६	८ १०	९ ३५	१० ५८	१२ ३०	१४ २५	१६ ३९	१९ ०२	२१ २२	२३ ३९	२ ०१	४ २१	६ २५
	२९	१७	८ ०६	९ ३१	१० ५४	१२ २७	१४ २१	१६ ३५	१८ ५८	२१ १८	२३ ३५	१ ५७	४ १७	६ २२
	३०	१८	८ ०२	९ २८	१० ५०	१२ २३	१४ १७	१६ ३१	१८ ५४	२१ १४	२३ ३१	१ ५३	४ १३	६ १८
	३१	१९	७ ५९	९ २४	१० ४६	१२ १९	१४ १३	१६ २८	१८ ५०	२१ १०	२३ २७	१ ४९	४ ०९	६ १४
फरवरी	१	२०	७ ५५	९ २०	१० ४२	१२ १५	१४ ०९	१६ २४	१८ ४६	२१ ०६	२३ २३	१ ४५	४ ०५	६ १०
	२	२१	७ ५१	९ १६	१० ३८	१२ ११	१४ ०५	१६ २०	१८ ४२	२१ ०२	२३ २०	१ ४१	४ ०१	६ ०६
	३	२२	७ ४७	९ १२	१० ३४	१२ ०७	१४ ०२	१६ १६	१८ ३८	२० ५८	२३ १६	१ ३७	३ ५७	६ ०२
	४	२३	७ ४३	९ ०८	१० ३०	१२ ०३	१३ ५८	१६ १२	१८ ३४	२० ५४	२३ १२	१ ३३	३ ५३	५ ५८
	५	२४	७ ३९	९ ०४	१० २६	११ ५९	१३ ५४	१६ ०८	१८ ३०	२० ५०	२३ ०८	१ २९	३ ४९	५ ५४
	६	२५	७ ३५	९ ००	१० २२	११ ५५	१३ ५०	१६ ०४	१८ २६	२० ४६	२३ ०४	१ २५	३ ४५	५ ५०
	७	२६	७ ३१	८ ५६	१० १९	११ ५१	१३ ४६	१६ ००	१८ २२	२० ४२	२३ ००	१ २१	३ ४२	५ ४६
	८	२७	७ २७	८ ५२	१० १५	११ ४७	१३ ४२	१५ ५६	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	१ १७	३ ३८	५ ४२
	९	२८	७ २३	८ ४८	१० ११	११ ४३	१३ ३८	१५ ५२	१८ १४	२० ३४	२२ ५२	१ १४	३ ३४	५ ३८
	१०	२९	७ १९	८ ४४	१० ०७	११ ३९	१३ ३४	१५ ४८	१८ १०	२० ३०	२२ ४८	१ १०	३ ३०	५ ३४
	११	३०	७ १५	८ ४०	१० ०३	११ ३५	१३ ३०	१५ ४४	१८ ०६	२० २६	२२ ४४	१ ०६	३ २६	५ ३०
	१२	फा. १	७ ११											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

फाल्गुन

अंग्रेज़ी तारीख		फाल्गुन तिथि	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.
फरवरी	१२	१	८ ३६	९ ५९	११ ३२	१३ २६	१५ ४०	१८ ०३	२० २३	२२ ४०	१ ०२	३ २२	५ २६	७ ०७
	१३	२	८ ३३	९ ५५	११ २८	१३ २२	१५ ३६	१७ ५९	२० १९	२२ ३६	० ५८	३ १८	५ २३	७ ०४
	१४	३	८ २९	९ ५१	११ २४	१३ १८	१५ ३२	१७ ५५	२० १५	२२ ३२	० ५४	३ १४	५ १९	७ ००
	१५	४	८ २५	९ ४७	११ २०	१३ १४	१५ २९	१७ ५१	२० ११	२२ २८	० ५०	३ १०	५ १५	६ ५६
	१६	५	८ २१	९ ४३	११ १६	१३ १०	१५ २५	१७ ४७	२० ०७	२२ २५	० ४६	३ ०६	५ ११	६ ५२
	१७	६	८ १७	९ ३९	११ १२	१३ ०६	१५ २१	१७ ४३	२० ०३	२२ २१	० ४२	३ ०२	५ ०७	६ ४८
	१८	७	८ १३	९ ३५	११ ०८	१३ ०३	१५ १७	१७ ३९	१९ ५९	२२ १७	० ३८	२ ५८	५ ०३	६ ४४
	१९	८	८ ०९	९ ३१	११ ०४	१२ ५९	१५ १३	१७ ३५	१९ ५५	२२ १३	० ३४	२ ५४	४ ५९	६ ४०
	२०	९	८ ०५	९ २७	११ ००	१२ ५५	१५ ०९	१७ ३१	१९ ५१	२२ ०९	० ३०	२ ५०	४ ५५	६ ३६
	२१	१०	८ ०१	९ २३	१० ५६	१२ ५१	१५ ०५	१७ २७	१९ ४७	२२ ०५	० २६	२ ४६	४ ५१	६ ३२
	२२	११	७ ५७	९ २०	१० ५२	१२ ४७	१५ ०१	१७ २३	१९ ४३	२२ ०१	० २२	२ ४३	४ ४७	६ २८
	२३	१२	७ ५३	९ १६	१० ४८	१२ ४३	१४ ५७	१७ १९	१९ ३९	२१ ५७	० १९	२ ३९	४ ४३	६ २४
	२४	१३	७ ४९	९ १२	१० ४४	१२ ३९	१४ ५३	१७ १५	१९ ३५	२१ ५३	० १५	२ ३५	४ ३९	६ २०
	२५	१४	७ ४५	९ ०८	१० ४०	१२ ३५	१४ ४९	१७ ११	१९ ३१	२१ ४९	० ११	२ ३१	४ ३५	६ १६
	२६	१५	७ ४१	९ ०४	१० ३६	१२ ३१	१४ ४५	१७ ०७	१९ २७	२१ ४५	० ०७	२ २७	४ ३१	६ १२
	२७	१६	७ ३७	९ ००	१० ३३	१२ २७	१४ ४१	१७ ०४	१९ २४	२१ ४१	० ०३	२ २३	४ २८	६ ०८
	२८	१७	७ ३४	८ ५६	१० २९	१२ २३	१४ ३७	१७ ००	१९ २०	२१ ३७	२३ ५९	२ १९	४ २४	६ ०५
मार्च	१	१८	७ ३०	८ ५२	१० २५	१२ १९	१४ ३३	१६ ५६	१९ १६	२१ ३३	२३ ५५	२ १५	४ २०	६ ०१
	२	१९	७ २६	८ ४८	१० २१	१२ १५	१४ ३०	१६ ५२	१९ १२	२१ २९	२३ ५१	२ ११	४ १६	५ ५७
	३	२०	७ २२	८ ४४	१० १७	१२ ११	१४ २६	१६ ४८	१९ ०८	२१ २६	२३ ४७	२ ०७	४ १२	५ ५३
	४	२१	७ १८	८ ४०	१० १३	१२ ०८	१४ २२	१६ ४४	१९ ०४	२१ २२	२३ ४३	२ ०३	४ ०८	५ ४९
	५	२२	७ १४	८ ३६	१० ०९	१२ ०४	१४ १८	१६ ४०	१९ ००	२१ १८	२३ ३९	१ ५९	४ ०४	५ ४५
	६	२३	७ १०	८ ३२	१० ०५	१२ ००	१४ १४	१६ ३६	१८ ५६	२१ १४	२३ ३५	१ ५५	४ ००	५ ४१
	७	२४	७ ०६	८ २८	१० ०१	११ ५६	१४ १०	१६ ३२	१८ ५२	२१ १०	२३ ३१	१ ५१	३ ५६	५ ३७
	८	२५	७ ०२	८ २४	९ ५७	११ ५२	१४ ०६	१६ २८	१८ ४८	२१ ०६	२३ २७	१ ४८	३ ५२	५ ३३
	९	२६	६ ५८	८ २१	९ ५३	११ ४८	१४ ०२	१६ २४	१८ ४४	२१ ०२	२३ २३	१ ४४	३ ४८	५ २९
	१०	२७	६ ५४	८ १७	९ ४९	११ ४४	१३ ५८	१६ २०	१८ ४०	२० ५८	२३ २०	१ ४०	३ ४४	५ २५
	११	२८	६ ५०	८ १३	९ ४५	११ ४०	१३ ५४	१६ १६	१८ ३६	२० ५४	२३ १६	१ ३६	३ ४०	५ २१
	१२	२९	६ ४६	८ ०९	९ ४१	११ ३६	१३ ५०	१६ १२	१८ ३२	२० ५०	२३ १२	१ ३२	३ ३६	५ १७
	१३	३०	६ ४२	८ ०५	९ ३८	११ ३२	१३ ४६	१६ ०९	१८ २९	२० ४६	२३ ०८	१ २८	३ ३२	५ १३
	१४	चै.१	६ ३८											

चैत्र

अंग्रेज़ी तारीख		चैत्र तिथि	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.
मार्च	१४	१	८ ०१	९ ३४	११ २८	१३ ४२	१६ ०५	१८ २५	२० ४२	२३ ०४	१ २४	३ २९	५ ०९	६ ३५
	१५	२	७ ५७	९ ३०	११ २४	१३ ३८	१६ ०१	१८ २१	२० ३८	२३ ००	१ २०	३ २५	५ ०६	६ ३१
	१६	३	७ ५३	९ २६	११ २०	१३ ३५	१५ ५७	१८ १७	२० ३४	२२ ५६	१ १६	३ २१	५ ०२	६ २७
	१७	४	७ ४९	९ २२	११ १६	१३ ३१	१५ ५३	१८ १३	२० ३०	२२ ५२	१ १२	३ १७	४ ५८	६ २३
	१८	५	७ ४५	९ १८	११ १२	१३ २७	१५ ४९	१८ ०९	२० २७	२२ ४८	१ ०८	३ १३	४ ५४	६ १९
	१९	६	७ ४१	९ १४	११ ०९	१३ २३	१५ ४५	१८ ०५	२० २३	२२ ४४	१ ०४	३ ०९	४ ५०	६ १५
	२०	७	७ ३७	९ १०	११ ०५	१३ १९	१५ ४१	१८ ०१	२० १९	२२ ४०	१ ००	३ ०५	४ ४६	६ ११
	२१	८	७ ३३	९ ०६	११ ०१	१३ १५	१५ ३७	१७ ५७	२० १५	२२ ३६	० ५६	३ ०१	४ ४२	६ ०७
	२२	९	७ २९	९ ०२	१० ५७	१३ ११	१५ ३३	१७ ५३	२० ११	२२ ३२	० ५२	२ ५७	४ ३८	६ ०३
	२३	१०	७ २५	८ ५८	१० ५३	१३ ०७	१५२९	१७ ४९	२० ०७	२२ २८	० ४९	२ ५३	४ ३४	५ ५९
	२४	११	७ २२	८ ५४	१० ४९	१३ ०३	१५ २५	१७ ४५	२० ०३	२२ २५	० ४५	२ ४९	४ ३०	५ ५५
	२५	१२	७ १८	८ ५०	१० ४५	१२ ५९	१५ २१	१७ ४१	१९ ५९	२२ २१	० ४१	२ ४५	४ २६	५ ५१
	२६	१३	७ १४	८ ४६	१० ४१	१२ ५५	१५ १७	१७ ३७	१९ ५५	२२ १७	० ३७	२ ४१	४ २२	५ ४७
	२७	१४	७ १०	८ ४२	१० ३७	१२ ५१	१५ १३	१७ ३३	१९ ५१	२२ १३	० ३३	२ ३७	४ १८	५ ४३
	२८	१५	७ ०६	८ ३८	१० ३३	१२ ४७	१५ १०	१७ ३०	१९ ४७	२२ ०९	० २९	२ ३३	४ १४	५ ३९
	२९	१६	७ ०२	८ ३५	१० २९	१२ ४३	१५ ०६	१७ २६	१९ ४३	२२ ०५	० २५	२ ३०	४ १०	५ ३६
	३०	१७	६ ५८	८ ३१	१० २५	१२ ३९	१५ ०२	१७ २२	१९ ४०	२२ ०१	० २१	२ २६	४ ०७	५ ३२
	३१	१८	६ ५४	८ २७	१० २१	१२ ३६	१४ ५८	१७ १८	१९ ३६	२१ ५७	० १७	२ २२	४ ०३	५ २८
अप्रैल	१	१९	६ ५०	८ २३	१० १७	१२ ३२	१४ ५४	१७ १४	१९ ३२	२१ ५३	० १३	२ १८	३ ५९	५ २४
	२	२०	६ ४६	८ १९	१० १३	१२ २८	१४ ५०	१७ १०	१९ २८	२१ ४९	० ०९	२ १४	३ ५५	५ २०
	३	२१	६ ४२	८ १५	१० १०	१२ २४	१४ ४६	१७ ०६	१९ २४	२१ ४५	० ०५	२ १०	३ ५१	५ १६
	४	२२	६ ३८	८ ११	१० ०६	१२ २०	१४ ४२	१७ ०२	१९ २०	२१ ४१	० ०१	२ ०६	३ ४७	५ १२
	५	२३	६ ३४	८ ०७	१० ०२	१२ १६	१४ ३८	१६ ५८	१९ १६	२१ ३७	२३ ५७	२ ०२	३ ४३	५ ०८
	६	२४	६ ३०	८ ०३	९ ५८	१२ १२	१४ ३४	१६ ५४	१९ १२	२१ ३३	२३ ५३	१ ५८	३ ३९	५ ०४
	७	२५	६ २७	७ ५९	९ ५४	१२ ०८	१४ ३०	१६ ५०	१९ ०८	२१ २९	२३ ५०	१ ५४	३ ३५	५ ००
	८	२६	६ २३	७ ५५	९ ५०	१२ ०४	१४ २६	१६ ४६	१९ ०४	२१ २६	२३ ४६	१ ५०	३ ३१	४ ५६
	९	२७	६ १९	७ ५१	९ ४६	१२ ००	१४ २२	१६ ४२	१९ ००	२१ २२	२३ ४२	१ ४६	३ २७	४ ५२
	१०	२८	६ १५	७ ४७	९ ४२	११ ५६	१४ १८	१६ ३८	१८ ५६	२१ १८	२३ ३८	१ ४२	३ २३	४ ४८
	११	२९	६ ११	७ ४३	९ ३८	११ ५२	१४ १४	१६ ३४	१८ ५२	२१ १४	२३ ३४	१ ३८	३ १९	४ ४४
	१२	३०	६ ०७	७ ४०	९ ३४	११ ४८	१४ ११	१६ ३१	१८ ४८	२१ १०	२३ ३०	१ ३५	३ १५	४ ४१
	१३	वै.१	६ ०३											

भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल

यहां पीछे जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह चण्डीगढ़ में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बतलाती है। इसी लग्नसारणी से नीचे दिए गए कोष्ठक की सहायता से भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) आसानी से इस प्रकार जाना जा सकता है :-दैनिक लग्नसारणी से अपनी अभीष्ट तारीख को चण्डीगढ़ में लग्न का समाप्तिकाल जान लीजिए और उसमें अपने नगर के आगे और लग्न के नीचे इस कोष्ठक में लिखे मिनटों को चिह्न के अनुसार जोड़ने या घटाने से उस नगर में लग्न का समाप्ति काल मालूम हो जाएगा। जैसे-मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुन लग्न का समाप्ति काल जानना है। ९ अप्रैल को चण्डीगढ़ में मिथुन का समाप्तिकाल १२ घं. ० मि. है, यह हमने दैनिक लग्नसारणी से ज्ञात किया। नीचे कोष्ठक में मद्रास, के आगे मिथुन के नीचे + १९ मिनट लिखे हैं। + होने से १९ मिनटों को १२ घं. ० मिनट में जोड़ने पर १२ घं. १९ मिनट मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुनलग्न का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बन गया।

लग्न / नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
अजमेर	+१७	+१८	+१७	+१४	+१०	+६	+१	-१	०	+४	+८	+१२
अम्बाला	०	०	०	०	०	०	-१	-१	-१	०	०	०
अमृतसर	+७	+६	+६	+७	+८	+९	+१०	+१०	+१०	+९	+८	+७
अलवर	+७	+८	+७	+५	+२	-२	-५	-६	-६	-३	०	+४
अलीगढ़	+१	+२	+१	-१	-४	-८	-११	-१२	-१२	-९	-६	-२
अहमदाबाद	+३०	+३३	+३१	+२५	+१८	+११	+४	-१	+१	+८	+१५	+२३
आगरा	+१	+३	+२	-१	-४	-८	-११	-१३	-१३	-९	-६	-२
उज्जैन	+१८	+२१	+१९	+१३	+६	-१	-८	-१३	-११	-४	+३	+११
उदयपुर	+२४	+२६	+२५	+२०	+१४	+८	+२	-२	०	+५	+१२	+१८
इन्दौर	+१८	+२२	+२०	+१४	+५	-३	-१०	-१५	-१३	-६	+३	+१०
करनाल	+१	+१	+१	०	०	-१	-२	-२	-२	-१	-१	०
कलकत्ता	-३२	-२८	-३०	-३६	-४५	-५३	-६०	-६५	-६३	-५६	-४७	-४०
कांगड़ा	०	-१	-१	+१	+२	+३	+५	+६	+५	+४	+३	+१
कानपुर	-६	-५	-६	-९	-१३	-१७	-२२	-२४	-२३	-१९	-१५	-११
काशी	-१५	-१३	-१४	-१८	-२४	-२९	-३४	-३७	-३६	-३१	-२५	-२०
कुरुक्षेत्र	+२	+२	+२	+१	+१	०	-१	-१	-१	०	०	+१
कोटा	+१४	+१६	+१५	+११	+५	०	-५	-८	-७	-२	+४	+९
गुड़गांव	+४	+४	+४	+२	०	-२	-४	-५	-५	-३	-१	+१
गुरदासपुर	+३	+२	+२	+४	+५	+६	+८	+९	+८	+७	+६	+४
गोरखपुर	-१८	-१७	-१८	-२१	-२५	-२९	-३४	-३६	-३५	-३१	-२७	-२३
ग्वालियर	+३	+५	+४	०	-४	-९	-१३	-१६	-१५	-११	-६	-२
चम्बा	-१	-२	-१	०	+२	+५	+७	+८	+७	+६	+३	+१
जम्मू	+४	+३	+४	+५	+७	+१०	+१२	+१३	+१२	+११	+८	+६
जयपुर	+११	+१२	+११	+८	+५	+१	-३	-५	-४	०	+३	+७
जालन्धर	+५	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+५
जीन्द	+५	+६	+५	+४	+३	+१	०	-१	-१	+१	+२	+४
जैसलमेर	+३१	+३२	+३१	+२८	+२५	+२१	+१७	+१५	+१६	+२०	+२३	+२७
जोधपुर	+२३	+२५	+२४	+२०	+१६	+११	+७	+४	+५	+९	+१४	+१८
झांसी	+३	+५	+४	०	-६	-११	-१६	-१९	-१८	-१३	-७	-२
दिल्ली	+३	+३	±३	+१	-१	-३	-५	-६	-६	-४	-२	०
देहरादून	-५	-५	-५	-५	-५	-५	-६	-६	-६	-५	-५	-५
नागपुर	+८	+२२	+२०	+२	-७	-१७	-२६	-३१	-३०	-२०	-११	-२
नाभा	+३	+३	+३	+३	+३	+३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

लग्न / नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
नैनीताल	-८	-७	-८	-९	-१०	-१२	-१३	-१४	-१४	-१२	-११	-९
पटियाला	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१	+१	+१	+२	+२	+२
पठानकोट	+१	+१	+१	+३	+४	+६	+८	+९	+८	+७	+५	+३
पटना	-२४	-२२	-२३	-२७	-३२	-३८	-४३	-४५	-४४	-३९	-३४	-२९
पुंछ	+४	+३	+४	+७	+१०	+१४	+१८	+२०	+१९	+१५	+१२	+८
प्रयाग	-११	-९	-१०	-१४	-१९	-२४	-२९	-३१	-३१	-२६	-२१	-१६
फरीदकोट	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८
फिरोजपुर	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९
बम्बई	+३६	+४१	+३८	+२९	+१८	+७	-४	-१०	-८	+३	+१४	+२५
बरेली	-६	-६	-६	-८	-१०	-१२	-१४	-१५	-१५	-१३	-११	-९
बंगलौर	+२६	+३३	+३०	+१७	०	-१६	-३२	-४०	-३७	-२२	-६	+११
बुलन्दशहर	०	०	०	-२	-४	-६	-८	-९	-९	-७	-५	-३
भटिण्डा	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+७	+७	+७	+८	+८	+८
भरतपुर	+३	+५	+४	+१	-२	-६	-९	-११	-११	-७	-४	०
भुवनेश्वर	-१८	-१४	-१६	-२४	-३४	-४४	-५४	-५८	-५७	-४८	-३८	-२८
भोपाल	+११	+१४	+१२	+६	-१	-८	-१५	-२०	-१८	-११	-४	+४
मद्रास	+१५	+२२	+१९	+६	-११	-२७	-४३	-५१	-४८	-३३	-१७	०
मथुरा	+३	+४	+३	+१	-२	-६	-९	-१०	-१०	-७	-४	०
मण्डी (हि.प्र.)	-२	-३	-३	-२	-१	०	+२	+२	+२	+१	०	-१
मलेरकोटला	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३	+३	+३	+४	+४	+४
मेरठ	-१	०	-१	-२	-३	-५	-६	-७	-७	-५	-४	-२
रोपड	+१	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१
रोहतक	+४	+५	+४	+३	+१	०	-२	-३	-३	-१	+१	+२
लखनऊ	-९	-८	-९	-१२	-१५	-१९	-२३	-२५	-२४	-२०	-१७	-१३
लुधियाना	+३	+३	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३
शिमला	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-२
श्रीनगर (का.)	+१	०	+१	+४	+७	+११	+१५	+१७	+१६	+१२	+९	+५
सहारनपुर	-१	-१	-१	-२	-२	-३	-४	-४	-४	-३	-३	-२
हरिद्वार	-४	-४	-४	-५	-५	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-५
हिसार	+७	+८	+७	+६	+५	+३	+२	+१	+१	+३	+४	+६
हैदराबाद	+१५	+२२	+१८	+८	-५	-१७	-२९	-३५	-३३	-२२	-९	+३
होशियारपुर	+२	+२	+२	+२	+३	+४	+५	+५	+५	+४	+३	+२

प्राचीन पद्धति द्वारा लग्न एवं दशम का साधन

जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि की गणित में शुद्ध लग्न का साधन सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवं श्रमसाध्य विषय है। इसके लिए ज्योतिषी को स्थानीयकाल का ज्ञान होना चाहिए. नगरो के अक्षांश-रेखांशों की प्रामाणिक सूची भी उसके पास होनी चाहिए, किन्च भिन्न-भिन्न अक्षांशों की लग्नसारणियां उसके पास होना नितान्त आवश्यक है, क्योंकि किसी स्थान पर लग्न स्पष्ट करने के लिए उस स्थान के अक्षांश की लग्नसारणी का ही प्रयोग होता है। आगे हमने साम्पातिक काल द्वारा लग्न एवं दशम लग्न स्पष्ट करने की नवीन विधि दी है। यह विधि अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म और सुविधाजनक है। इस विधि में अभीष्ट नगर का सूर्योदय, सूर्योदयात् इष्ट काल, दिनमान और इष्टकालिक सूर्य की जरुरत नहीं होती, जबकि प्रचीन विधि में इनकी जरूरत रहती है। यहां हम लग्न एवं दशम साधन की प्राचीन विधि दे रहे हैं।

लग्न साधनविधि

जिस नगर में लग्न स्पष्ट करना है, उस नगर में उस दिन का सूक्ष्म सूर्योदयकाल ज्ञात कीजिए। सूर्योदयकाल से अभीष्ट समय का सूर्योदयात् इष्ट (घ. प.) बना लीजिए और इष्टकालिक सूर्य स्पष्ट कर लीजिए। इस पंचांग में दी गई "अक्षांशादि सारणी" से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश ज्ञात कर लीजिए। अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्नसारणी द्वारा इस प्रकार लग्न स्पष्ट कीजिएः-

आगे 29, 30, 31 अक्षांशों की तीन लग्नसारणियां दी गई हैं, जो दिल्ली, पंजाब, तथा हरियाणा के लगभग सभी नगरों के लिए पर्याप्त हैं। अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्नसारणी में इष्टकालिक स्पष्ट सूर्य की राशि के आगे और अंश के नीचे लिखे घड़ी, पलों को लेकर अलग लिख लीजिए। सारणी में इन घडी, पलों के दाईं ओर अगले अंश के नीचे जो घड़ी-पल दिए गए हैं, उनसे इन अलग लिखे गए घडी, पलों का अन्तर जानिए। अन्तर के इन पलों को "सहायक सारणी" (जो अगले पृष्ठ पर दी गई है) के बाईं ओर पहले कॉलम में देखिए। इसके आगे इस सारणी में जहां स्पष्ट सूर्य की कला-विकलाओं के बराबर या लगभग बराबर कला-विकलाएं लिखी हों, उनके बिल्कुल ऊपर सारणी की पहली लाईन में जो पल लिखे हों, उन्हें लेकर अलग लिखे हुए घडी, पलों में जोड दीजिए और उसमें इष्टकाल के घड़ीपल भी जोड़ दीजिए। इसे हम "अभीष्ट घड़ी-पल" कहेंगे। "अभीष्ट घड़ी-पल" यदि 60 घड़ी से अधिक हों तो उनमें से 60 घड़ी घटाकर, शेष ग्रहण करना चाहिए। "अभीष्ट घड़ी- पलों" के बराबर (बराबर न मिलें तो उनसे कुछ कम) घडी, पल लग्नसारणी में ढूंढिये, जिन्हें "सारणीस्थ घड़ी-पल" कहा जाएगा। "सारणीस्थ घडी-पलों" के बाईं ओर लग्नसारणी के पहले कॉलम में लिखी राशि और सबसे ऊपर लिखे अंशों को अलग लिख लीजिए। "सारणीस्थ घड़ी-पलों" के दाईं ओर सारणी के अगले अंश के नीचे दिए गए घडी-पलों का "सारणीस्थ घड़ी-पलों" से अन्तर कीजिए। इसे "सारणीस्थ अन्तर" कहेंगे। "सारणीस्थ घड़ी-पलों" और "अभीष्ट घडी-पलों "का भी अन्तर कीजिए। अन्तर के ये पल "सहायक सारणी" के बिल्कुल ऊपर वाली लाईन में जहां लिखे हैं, उसके नीचे "सारणीस्थ अन्तर" के बराबर पलों के आगे जो कला- विकला मिलें, उन्हें अलग लिखे राशि, अंशों में जोड दें। अब इसमें अगले पृष्ठ पर दी गई "अयनांश संस्कार सारणी" से अपने संवत् के आगे दी गई कलाओं को लेकर चिन्ह के अनुसार जोड़ने या घटाने पर निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

उदाहरण- मान लीजिए- वि. सं. 2029 के वैशाख प्रविष्टे 3 को 58 घ. 45 प. इष्ट पर शिमला (हि.प्र.) में लग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य 0 रा., 2 अंश 37 क. 47 वि. है। शिमला के अक्षांश 31 अंश 6 क. (उत्तर) हैं, अतः 31 अक्षांश वाली लग्नसारणी में स्पष्ट सूर्य की 0 (मेष) राशि के आगे 2 अंश के नीचे 2 घ. 55 प. हैं, इन्हें अलग लिखा। सारणी में 2 घ. 55 प. के दाईं ओर 3 अंश के नीचे 3 घ. 2 प. लिखे हैं। इनका 2 घ. 55 प. से अन्तर 7 पल है। "सहायक सारणी" के बाईं ओर पहले कॉलम में लिखे हुए 7 पल के आगे वाली पंक्ति में स्पष्ट सूर्य की 37 क. 47 वि. नहीं मिली। अतः सारणी में इनके लगभग बराबर 34 क. 17 वि. देखें, जिनके बिल्कुल ऊपर 4 पल लिखे हैं। इन्हें अलग लिखे 2 घ. 55 पल में जोड़ा और इष्टकाल के घ. प. भी इसमें जोडे तो 61 घ. 44 प. (60 घ. घटाने पर 1 घ. 44 प.) 'अभीष्ट घडी-पल' हुए। लग्नसारणी में 'अभीष्ट घडी-पल' 1 घ. 44 प. नहीं हैं, अतः इससे कुछ कम 1 घ. 40 प. सारणी में देखें, जो "सारणीस्थ घडी पल" हैं। इनके बाईं ओर सारणी के पहले कॉलम मे 11 राशि और बिल्कुल ऊपर की लाईन में 21 अंश लिखे हैं। इन 11 रा. 21 अं. को अलग लिखा। लग्न सारणी में "सारणीस्थ घडी-पलों" (1 घ. 40 प.) के दाईं ओर 22 अंश के नीचे 1 घ. 46 प. का 1 घ. 40 प. से अन्तर 6 पल 'सारणीस्थ अन्तर' है। "अभीष्ट घडी-पल" (1 घ. 44 प.) और सारणीस्थ घड़ी-पल (1 घ. 40 प.) का अन्तर 4 पल है। 'सहायक सारणी' की ऊपर वाली लाईन मे लिखे गए 4 पल के नीचे सारणीस्थ अन्तर के बराबर 6 पल के आगे 40क. 00वि. लिखा है। इन्हें 11रा. 21 अं. मे जोड़ने पर 11 रा. और 21अं. 40क. 00 वि. हुआ। "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. 2029 के आगे +1 कला लिखा है। इसे चिन्हानुसार 11 रा. 21 अं. 40 क. 0 वि. मे जोड़ने पर 11 रा. 21 अं. 41 क. 00 वि. निरयण लग्न स्पष्ट हुआ।

दशम लग्नसाधन

आगे साम्पातिक काल द्वारा दशम लग्न साधन की सरल पद्धति दी है, जिससे अभीष्ट स्थल का सूर्योदय, दिनमान तथा तात्कालिक सूर्यस्पष्ट जानने की अवश्यकता नहीं होती है। प्राचीन पद्धति से, जिसका निर्देश यहां किया जा रहा है, इन सब की आवश्यकता रहती है।

सारणी (अक्षांश २९° उत्तर) (पलभा ६।३१।६)

दिल्ली, मेरठ, रोहतक, हिसार, जींद, नैनीताल, मुरादाबाद आदि के लिए।

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
० प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	[illegible]
वृष घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१ प.	४८	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	[illegible]
मि. घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	[illegible]
२ प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	[illegible]
३ प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
सिं. घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	[illegible]
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	[illegible]
५ प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	[illegible]
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	[illegible]
६ प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	[illegible]
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	[illegible]
७ प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	[illegible]
धनु घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	[illegible]
८ प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	[illegible]
९ प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	[illegible]
कु. घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	[illegible]
१० प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१३	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	[illegible]
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	[illegible]
११ प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	[illegible]

लग्न सारणी ३०° उत्तर (पलभा ६।५५।४२)

अम्बाला, करनाल, कुरुक्षेत्र, देहरादून, नाभा, पटियाला, भटिण्डा, जैसलमेर, अल्मोड़ा, सहारनपुर और हरिद्वार आदि के लि

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	[illegible]
वृष घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	[illegible]
१ प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	[illegible]
मि. घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	[illegible]
२ प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	[illegible]
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	[illegible]
३ प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	[illegible]
सिं. घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	[illegible]
४ प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	[illegible]
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
७ प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
धनु घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
९ प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८
कु. घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	३	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

लग्न सारणी (अक्षांश ३१ उत्तर) (पलभा ७।१२।३७)

कपूरथला, चण्डीगढ़, जालंधर, फरीदकोट, फिरोजपुर, रोपड़, लुधियाना, शिमला आदि के लिए

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२७	३५
वृष घ	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१
मि. घ	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
२ प	२१	३१	४१	५१	१	१०	२०	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६
क. घ	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१५	२७	३९	५१	३	१५	२७	३८	५०
सिं. घ	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
क. घ	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२
तु. घ	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
६ प	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६
वृ. घ	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
७ प	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५
धनु घ	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
म. घ	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
९ प	२६	३६	४६	५६	६	१५	२५	३५	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५३	१	९	१७	२५	३३	४१
कु. घ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	८	१५
मी. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३४	४१

दशम लग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी)

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
० प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृष घ	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
१ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
मि. घ	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९
२ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
क. घ	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
३ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
सिं. घ	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९
४ प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४०	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
क. घ	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३
५ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८
तु. घ	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८
६ प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृ. घ	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३
७ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२४	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
धनु घ	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९
८ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
म. घ	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४
९ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
कु. घ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१० प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३१	४१	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
मी. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
११ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८

दशमलग्न साधनविधि

इष्टकाल के घ. प. में से दिनार्ध (अभीष्ट नगर के दिनमान का आधा) घटाएं। यदि दिनार्ध से इष्ट कम हो तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर दिनार्ध घटाएं, जो शेष बचे वह नतकाल होगा। नतकाल के घ. प. को इष्ट के घ. प. समझकर तात्कालिक स्पष्ट सूर्य द्वारा दशम लग्नसारणी से ठीक उसी तरह दशम लग्न स्पष्ट कीजिए जैसे कि ऊपर लग्नसारणी से लग्न स्पष्ट किया गया है। दशम लग्नसारणी सभी नगरों के लिए एक ही होती है।

दशमलग्न साधन का उदाहरणः— वि. सं. २०२६ के वैशाख प्रविष्टे ३ को शिमला में ५८घ. ४५ प. इष्ट पर दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा. २ अं. ३७ क. ४७ वि. है। इस दिन शिमला में दिनमान ३१ घ. ५६ प. है, अतः दिनार्ध १६ घ. ० प. हुआ। इष्ट काल ५८ घ. ४५ प. में से दिनार्ध घटाने पर ४२ घ. ४५ प. नतकाल हुआ, जो दशमसाधन के लिए इष्टकाल है। दशमलग्न सारणी में स्पष्ट सूर्य की ० राशि के आगे २ अंश के नीचे ३ घ. ५६ प. मिला। इसे पृथक् लिखा। सारणी में ३ घ. ५६ प. के दाईं ओर (३ अं. के नीचे) ४ घ. ०६ प. लिखा है। ३।५६ और ४।६ का अन्तर १० पल है। सहायक सारिणी में १० पल के आगे स्पष्ट सूर्य की ३७ क. ४७ वि. के लगभग बराबर ३६ क. ०० वि. है। इसके ऊपर सारिणी में ६ पल लिखा है। इन ६ पलों को अलग लिखे ३ घ. ५६ प. में जोड़कर इसमें नतकाल जोड़ा तो ४६ घ. ४७ प. 'अभीष्ट घड़ी–पल' हुए। "दशम लग्नसारणी" में इन "अभीष्ट घड़ी–पलों" से कुछ कम घ. प. ४६।४२ 'सारणीस्थ घड़ी पल' धनु (८) राशि के आगे १६ अंश के नीचे लिखे हैं। अतः ८ रा. १६ अं. को अलग लिखा। सारणी में ४६।४२ के दाईं ओर (१७ अं. के नीचे) लिखे ४६।५२ का ४६।४२ से अन्तर १० पल का 'सारणीस्थ अन्तर' हुआ। 'सारणीस्थ घड़ी–पल' ४६।४२ और अभीष्ट घड़ीपल ४६।४७ का अन्तर ५ पल है। अब 'सहायक सारणी' में १० पल के आगे ५ पल के नीचे ३० क. ०० वि. मिली। इन्हें अलग लिखे ८ रा. १६ अं. में जोड़ने पर ८ रा.१६ अं. में जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३० क. ० वि. हुई। इसमें "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. २०२६ के आगे दिया गया अयनांश संस्कार + १क. चिह्नानुसार जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३१ क. ०० वि. निरयण दशमलग्न स्पष्ट हुआ।

सहायक सारणी

पल	१		२		३		४		५		६		७		८		९		१०		११		१२		१३	
→ ↓	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.
६	१०	०	२०	०	३०	०	४०	०	५०	०	६०	०														
७	८	३४	१७	९	२५	४३	३४	१७	४२	५१	५१	२६	६०	०												
८	७	३०	१५	०	२२	३०	३०	०	३७	३०	४५	०	५२	३०	६०	०										
९	६	४०	१३	२०	२०	०	२६	४०	३३	२०	४०	०	४६	४०	५३	२०	६०	०								
१०	६	०	१२	०	१८	०	२४	०	३०	०	३६	०	४२	०	४८	०	५४	०	६०	०						
११	५	२७	१०	५५	१६	२२	२१	४९	२७	१६	३२	४४	३८	११	४३	३८	४९	५	५४	३३	६०	०				
१२	५	०	१०	०	१५	०	२०	०	२५	०	३०	०	३५	०	४०	०	४५	०	५०	०	५५	०	६०	०		
१३	४	३७	९	१४	१३	५१	१८	२८	२३	५	२७	४२	३२	१९	३६	५६	४१	३३	४६	१०	५०	४७	५५	२३	६०	०

अयनांश संस्कार सारणी

विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला
२०२३	+ ७	२०३१	०	२०३९	— ७	२०४७	— १३	२०५५	— २०	२०६३	—२६	२०७१	—३३
२०२४	+ ६	२०३२	— १	२०४०	— ८	२०४८	— १४	२०५६	— २१	२०६४	—२७	२०७२	—३४
२०२५	+ ५	२०३३	— २	२०४१	— ९	२०४९	— १५	२०५७	— २२	२०६५	—२८	२०७३	—३५
२०२६	+ ४	२०३४	— ३	२०४२	— ९	२०५०	— १६	२०५८	—२२	२०६६	—२९	२०७४	—३६
२०२७	+ ३	२०३५	— ४	२०४३	—१०	२०५१	— १७	२०५९	—२३	२०६७	—३०	२०७५	—३६
२०२८	+ २	२०३६	— ४	२०४४	—११	२०५२	— १८	२०६०	—२४	२०६८	—३१	२०७६	—३७
२०२९	+ १	२०३७	— ५	२०४५	—१२	२०५३	— १८	२०६१	—२५	२०६९	—३१	२०७७	—३८
२०३०	+ १	२०३८	— ६	२०४६	— १३	२०५४	— १९	२०६२	—२६	२०७०	—३२	२०७८	—३९

सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि

यहां हम सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की एक नवीन सरल विधिी दे रहे है । स्पष्ट सूर्य द्वारा लग्न स्पस्ट करने में अधिक परिश्रम होता है, इसलिए इस विषय में पाश्चात्य ज्योतिषियों ने 'साम्पातिककाल' की पद्धति को अपनाया है । यहां हम ''साम्पातिककाल क्या है''- इस विषय का कुछ सैद्धान्तिक- विवेचन न करते हुए, इससे लग्न स्पष्ट-करने की सर्व- साधारणोपयोगी विधि प्रस्तुत कर रहे हैं ।

विधिः- सां. का. (साम्पतिककाल) से लग्न स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम नीचे लिखे उपकरण (चीजें), जो इस पंचांग में दिए गए कोष्ठकों (सारणियों) से बिना किसी परिश्रम के तैयार किए जा सकते है, तैयार करें -

(१) अभीष्ट नगर के अक्षांश (उत्तर या दक्षिण)
(२) अभीष्ट नगर के रेखांश (पूर्व या पश्चिम)
(३) अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर (+या-)

ये तीनों उपकरण 'अक्षांशादि सारणी' से उठाइये।

विशेष- यदि ''अक्षांशादि सारणी'' में अभीष्ट नगर न मिले तो उसके निकटतम किसी अन्य नगर के अक्षांशादि प्रयोग में लाए जा सकते है ।

ध्यान रहे- भारत के सभी नगरों के अक्षांश उत्तर और रेखांश पूर्व ही है ।

(४) अभीष्ट नगर का स्थानीयमध्यमकाल- जिस समय लग्न स्पष्ट करना हो उस समय के स्वदेशीय स्टैण्डर्ड - टाईम में अभीष्ट नगर (जहां का लग्न स्पष्ट करना हो, वहां) के स्टैण्डर्ड - अन्तर के मिनटादि (या घण्टादि) को चिन्हानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगर का ''**स्थानीयमध्यमकाल**'' बन जाता है + यह चिह्न जोड़ने की एवं- यह चिह्न घटाने की प्रक्रिया को बतलाता है ।

जैसे- चण्डीगढ में दोपहर के १२घं. ५७ मि. (भा. स्टैं टा.) पर स्थानीयमध्यकाल जानने के लिए इस (भा. स्टैं टा.) में से चण्डीगढ का स्टैण्डर्ड अन्तर -२२ मिनट ३२ सेकण्ड चिन्हानुसार घटाया, तो १२ घं. ३४ मि. २८ सें. स्थानीयमध्यमकाल बना।

१सितं.१९४२ ई. से १५ अक्तू १९४५ ई. तक भारत में युद्ध के कारण घड़ियां एक घण्टा आगे की गई थी । अतः इन दिनों में घड़ियों द्वारा जाने गए टाईम में से १ घण्टा घटा कर उसे भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समझना चाहिए।

जैसे- सन्१९४४ की २० अग. को काई बच्चा भारत में युद्ध के समयानुसार दिन में १२ बज कर ४५ मि. पर पैदा हुआ । इसका जन्मपत्र बनाने के लिए हमें इस बच्चे का जन्म काल भा. स्टै.टा. के अनुसार ११ घं ४५ मि. मानना होगा ।

(५) अभीष्ट तारीख का अयनांश - आगे दो [नं.(१) और नं.(२)]अयनांशसारणियां दी गई हैं । अयनांशसारणी नं.(१) में से अभीष्ट सन् के आगे लिखाअंशादि अयनांश लें, और अयनांशसारणी नं. (२) में से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का विकलादि फल लेकर उसमें जोड़ दें; - यह अभीष्ट तारीख का अयनांश होगा ।

जैसे - १५ जुलाई १९६९ ई. को अयनांश जानने के लिए अयनांशसारणी नं.(१) में से सन् १९६९ ई. के आगे लिखा अयनांश २३अं.२५ क २६ वि. प्राप्त किया । इसमें अयनांशसारणी नं.(२)से प्राप्त की गई १५ जुलाई की २७ वि. जोडने पर २३ अं.२५क. ५६ वि. हमारा अभीष्ट अयनांश हुआ ।

(६) इष्टकालिक साम्पातिककाल - आगे साम्पातिककाल के चार कोष्ठक दिए गये है । इनके आधार पर इष्टकालिक साम्पातिककाल इस प्रकार सरलता से बनाया जा सकता है-

सां. का. कोष्ठक नं. (१) में से अभीष्ट सन् का सां. कां. उठाएं। उसमें साम्पातिक काल कोष्ठक नं.(२)से अभीष्टमास की अभीष्ट तारीख का (लीप ईयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख की जगह उससे एक आगे की तारीख का) सां. का. लेकर जोड़ें । इसमें सां. का. कोष्ठक नं.(३)से अभीष्ट नगर के रेखांशों द्वारा सैकण्डात्मक संस्कार उठा कर चिन्हानुसार जोडें या घटाएं । इस प्रकार मिले सां. का के घं. मि. में अभीष्ट स्थानीयमध्यमकाल(जिसका साधन पहले बताया जा चुका है) के घण्टा- मिनटादि जोडें और फिर इस योगफल में स्थानीयमध्यमकाल के घण्टा- मिनटों द्वारा सां. का. कोष्ठक नं.(४)से प्राप्त किए गए मिनटादि जोड़ देने से इष्टसमय का घण्टादि सां. का बन जाएगा । इस प्रकार बना सां. का. यदि २४ घं. से अधिक हो तो उसमें से २४ घटा कर शेष ही ग्रहण करना चाहिए ।

साम्पातिककाल साधन का उदाहरण - यहां हम १५ जुलाई १९६९ को भा. स्टै.टा. के अनुसार प्रातः १०घं.४५मि. पर चम्बा (हि. प्र.)में सां. का. स्पष्ट करेगें । अक्षांशादि सारणी में चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. (उत्तर), रेखांश७६ अं. १०क.(पूर्व) एंव स्टैं. अन्तर - २५ मि. २० से. है । स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण चिह्न वाला है, अतः इसे १० घण्टे४५ मि. में से घटाने पर १० घं. १९ मि. ४० से. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल हुआ । सां. का. कोष्ठक नं. (१)से सन् १९६९ ई. का सां. का. (६घं.४१ मि. २ से.) लिया । इसमें कोष्ठक नं.(२)सें लिया गया १५ जुला. का सां का. (१२घं. ४८ मि. ४९ से.)जोड़ा तो १९ घं.२९ मि. ५१ सै. हुआ । चम्बा के रेखांश ७६अं.१० क. के लिए कोष्टक नं.(३)वाला संस्कार तो० है। अब १९घं. २९ मि. ५१सैं. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल १०घं.१९मि ४० सै. जोडा तो २९घं. ४९मि. ३१ सै. हुए। इसमें कोष्ठक न. (४)से स्थानीयमध्यमकाल के १०घं. २० मि. उठाए गए १ मि. ४२सै. जोड़ने पर २९ घं. ५१ मि. १३ से. हुए । क्योंकि यहां घण्टे२४से अधिक हैं अतः२४ घं. घटाए तो ५घं. ५१मि. १३से. अभीष्ट साम्पातिककाल हुआ ।

साम्पातिककाल बनाते समय नीचे लिखी इन बातों को भी ध्यान में रखें:-

(१)यदि धन (+)चिह्न वाले स्टैण्डर्डअन्तर (स्टैं. अं.)के मिनटों को स्टैण्डर्ड टाईम में जोड़ने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. या इससे ज्यादा हो जाए तब उसमें से २४ घण्टा घटा दें और ऊपर बतलाई विधि से प्राप्त साम्पातिककाल में ४ मि. जोड कर उसे शुद्ध साम्पातिककाल समझें । जैसे - कलकता में २जन. १९७४ ई. को २३ घंटा ५५ मि. (रात के ११ बज कर ५५ मि.)भा. स्टै. टा. पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । कलकता का रेखांश ८८अं. २४ क, (पूर्व)और स्टैं. अन्तर +२३ मि. ३६ से. है। **स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए**२३ घं. ५५ मि. में २३ मि. ३६ सै. जोड़े तो २४ घं. १८ मि. ३६से. हुए यह २४ घं. से ज्यादा हो गया है , अतः इसमें से २४ घं. घटाने पर ० घं. १८ मि. ३६ से.

स्थानीयमध्यमकाल हुआ । अब सां. का. बनाने के लिए कोष्टक नं.(१) से १९७४ के आगे लिखे ६ घं. ४० मि. १२ से. में कोष्ठक नं.(२) से लिए गए २ जन. के ० घं. ३ मि. ५७ से. जोडने पर ६ घं. ४४ मि. ९ से. हुए। इसमें कोष्ठक नं. (३) से कलकता के रेखांश ८८ से प्राप्त −८ से. चिह्न के अनुसार घटाए , तो ६ घं. ४४ मि. १ से. हुए । इसमें स्थानीयमध्यमकाल जोड़ने पर ७ घं. , २ मि. ३७ से. हुए । इसमें कोष्ठक नं.(४)से स्थानीयमध्यमकाल के ० घं. १९ मि. द्वारा प्राप्त ३ से. जोडने पर ७घं. २ मि. ४० से. हुए । क्योंकि स्टैं .टा. में स्टैं. अन्तर के मिनट जोडने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. से ज्यादा हो गया था । अत: उपरोक्त नियमानुसार इसमें ४ मि. और जोड़ने पर ७ घं. ६ मि. ४० से. हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल बना । लग्न और दशम को स्पष्ट करने के लिए इसी सां. का. को प्रयोग में लाइए ।

(२)सां. का. बनाते समय दूसरी बात यह भी ध्यान में रखें कि यदि स्टैं. टा. से ऋण चिह्न वाले स्टैं. अन्तर के मिनटादि अधिक हों तो स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए स्टैं. टा. में २४ घंटे जोड कर स्टैं. अन्तर घटाना चाहिए और ऐसी स्थिति में सा.का. कोष्ठक नं. (४)का प्रयोग नहीं करना चाहिए । जैसे- जयपुर में १५ मार्च १९७० को ०घं. १५ मि.(भा. स्टै. टा.) पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । जयपुर के रेखांश ७५ अं. ५२ क. (पूर्व)और स्टैं अं.- २६ मि. ३२ से. है । यहां स्टैं टा. के घं. मि. में से स्टैं. अं. ज्यादा है , अत: स्टै. टा. में २४ घं. जोड़ कर स्टैं अं. घटाने पर २३ घं. ४८ मि. २८ से. स्थानीयमध्यमकाल बना । सां. का. के कोष्ठक नं.(१)से प्राप्त १९७० ई. के ६ घं. ४० मि. ५ से. में कोष्ठक नं. (२) से प्राप्त १५ मार्च के ४ घं. ४७ मि. ४९ से. जोड़ने पर ११ घं. २७ मि. ५४से. हुए । जयपुर के रेखांश ७६ (पूर्व) का कोष्ठक नं. ३ वाला संस्कार लगभग ० है । अब ११ घं. २७ मि. ५४ से. में स्थानीयमध्यमकाल जोड़ा तो ३५ घं. १६ मि. २२ से. हुए । क्योंकि हमारा स्टैं. टा. हमारे नगर के ऋण स्टैं . अं. से कम था अत:-यहां साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(४)का प्रयोग हम नहीं करेगें । इसलिए हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल ११घं. १६ मि. २२ से. ही हुआ । यहां घंटे २४ से अधिक होने से उसमें से २४ घंटे घटा दिए गए हैं।

(३)जैसाकि हम पहिले भी लिख चुके हैं - लीप इयर (२९ फरवरी वाले साल)में फरवरी के बाद के महीनों की किसी तारीख का सां. का. बनाना हो तो उस तारीख में एक जोड़ कर साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२) को प्रयोग में लाना चाहिए। जैसे -मान लीजिए , १५ मार्च सन् १९४४ को किसी नगर में सां. का. स्पष्ट करना है। साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (१) में सन् १९४४ के आगे लिखे ६ घं. ३७ मि. १७ से. मिलें । क्योंकि हमारा सन् लीप इयर है और हमारी तारीख (१५ मार्च)फरवरी के बाद की भी है , इसलिए ''साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)'' में से हम १५ मार्च की जगह १६ मार्च के घं. मि. सै. (४ घं.५१ मि. ४५ से.)ही लेगें और इन्हें ही ६ घं. ३७मि. १७ से. में जोडेंगे । ध्यान रहे- यदि सन् १९४४ की १० फर. को हमें सां. का. स्पष्ट करना हो तो ''साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(२)''से १० फर.के ही घं. मि. से. उठाने होगें ।

साम्पातिककाल से लग्नसाधन की विधि:-

उपर दी गई विधि से जाने गए अभीष्ट सां. का. (साम्पातिककाल) के घं. मि. को आगे दी गई लग्नसारणी के बाई ओर वाले पहिले कालम में देखें । इसके आगे अभीष्ट नगर के अक्षांश के नीचे जो लग्न की अंश कला लिखी हैं, उन्हें अलग नोट कर लें। क्योंकि सारणी में सां. का. ३०-३० मिनटों के अन्तर पर और लग्नसारणी ३-३ अक्षांशों के अन्तर पर दी हुई है । अत: अधिकतर यहां सम्भव है कि आपको लग्न सारणी में अभीष्ट सां. का. के घं. मिं. न मिले और यह भी अधिकतर सभव है कि आपको लग्नसारणी में अभीष्ठ सां का. के घं. मि. न मिलें और यह भी सम्भव है कि अभीष्ट अक्षांश वाली लग्नसारणी भी न मिले । ऐसी स्थिति में सारणी में अभीष्ट सां. का. के समीपतम (अभीष्ट सां. का. से कम)सां. का. के आगे और अपने अभीष्ट अक्षांश के समीपतम(अभीष्ट अक्षांश से कम) अक्षांश वाली लग्नसारणी में लिखीं लग्न की अंश - कलाएं नोट करें - यह ''स्थूलतम लग्न''है । अब ३० मि. में लग्न की गति सारणी से ही ज्ञात कीजिए, (अर्थात् यह ज्ञात कीजिए कि ३०मि. में लग्न कितना आगे बढ़ता है) ३० मि. की लग्नगति की कलाओं को सां. का. के शेष मिनटों से गुणा करके ३० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें ''स्थूलतम लग्न'' में जोड़ देने से ''स्थूललग्न'' बन जाएगा। अब सारणी से ही ३ अक्षांशों की लग्न की गति मालूम करें । ३ अक्षांशों में लग्न घटता है तो यह ''३ अक्षाशों की लग्नगति'' ऋण, अन्यथा धन होगी । अपने अक्षांश की शेष अंश−कलाओं की कलाएं बना कर उन्हें ''३ अक्षाशों की लग्नगति '' की कलाओं से गुणा करके १८० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें ''३ अक्षाशों की लग्नगति'' के धन,ऋण चिह्न के अनुसार स्थूललग्न में जोड़ने या घटाने से सायनलग्न स्पष्ट होगा । इसमें से उस दिन के अयनांश घटा देने पर फलितोपयोगी निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

दशमलग्न स्पष्ट करने की विधि :- लग्नसारणी के दूसरे कालम में दशम (दशमलग्न)दिया गया है । इससे सभी नगरों में दशमलग्न स्पष्ट किया जा सकता है (अर्थात् -दशम स्पष्ट करने के लिए अंक्षाशों की जरूरत नहीं होती।) अभीष्ट सां. का. के घं. मि. के आगे सारणी में दशम (दशमलग्न)की अंश-कलाएं उठा लें। यह ''स्थूलदशमलग्न'' है। सां.का. के शेष मिनटों से दशमलग्न की ३० मि. की गति की कलाओं को गुणा करके ३०से भाग देने पर कलाएं मिलेगी। इन्हें ''स्थूलदशमलग्न'' में जोड़ने पर इष्टकालिक सायनदशम होगा । इसमें से उसदिन का अयनांश घटा देने पर निरयण दशमलग्न स्पष्ट हो जाएगा।

लग्नसाधन का उदाहरण:-चम्बा (हि.प्र.) में १५ जुलाई सन् १९६९ को प्रात: १० घं. ४५ मि. (भा. स्टै. टा.)पर लग्न स्पष्ट करना है ।

ऊपर हमने चम्बा में १५ जुलाई १९६९ को प्रात: १० घंटे ४५मि. (भा. स्टै. टा.)पर सां.का. ५ घं. ५१ मि. १३ सै. स्पष्ट किया है । चम्बा के अक्षांश ३२ अं.२९ क. है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे लग्न १७३ अं. ३४ क. लिखा है । यह ''स्थूलतम लग्न''है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घ. ३० मि. के आगे १७३ अं. ३४ क. और सां. का.६घं. ० मि. के आगे १८० अं.० क. लिखा है । इन दोनों का अन्तर ६अं. २६ क. (=३८६क.) लग्न की ३० मि. की गति है । हमारे अभीष्ट सां. का. ५ घं. ५१ मि. और ५ घं. ३० मि. का अन्तर २१ मि. है । इन २१ मि. (सा.का.के शेष मिनटों) से लग्न की ३० मिनट की गति कलाओं (३८६) को गुणा करके ३० का भाग देने पर २७० क. (= ४ अं. ३० क.) मिलीं। इन्हें '' स्थूलतम लग्न '' में जोड़ने पर १७८ अं. ४ क. ''स्थूल लग्न '' हुआ ।

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) {भाग १ म}

साम्पातिक काल घं.	मि.	सभी स्थलों के लिए दशम अं.	क.	अक्षांश ८°(उ.) लग्न अं.	क.	अक्षांश ११°(उ.) लग्न अं.	क.	अक्षांश १४°(उ.) लग्न अं.	क.	अक्षांश १७°(उ.) लग्न अं.	क.	अक्षांश २०°(उ.) लग्न अं.	क.
०	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४
०	३०	८	१०	१००	३	१०१	१५	१०२	२७	१०३	४१	१०४	५७
१	०	१६	१७	१०६	५४	१०८	३	१०९	१३	११०	२४	१११	३६
१	३०	२४	१८	११३	४७	११४	५३	११५	५९	११७	६	११८	१४
२	०	३२	११	१२०	४३	१२१	४५	१२२	४७	१२३	५०	१२४	५२
२	३०	३९	५५	१२७	४५	१२८	४२	१२९	४०	१३०	३६	१३१	३३
३	०	४७	२८	१३४	५४	१३५	४५	१३६	३६	१३७	२७	१३८	१८
३	३०	५४	५१	१४२	१०	१४२	५५	१४३	३९	१४४	२२	१४५	६
४	०	६२	५	१४९	३३	१५०	१०	१५०	४६	१५१	२३	१५१	५८
४	३०	६९	१२	१५७	३	१५७	३१	१५८	०	१५८	२७	१५८	५५
५	०	७६	११	१६४	३८	१६४	५८	१६५	१७	१६५	३६	१६५	५४
५	३०	८३	७	१७२	१८	१७२	२८	१७२	३८	१७२	४७	१७२	५७
६	०	९०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०
६	३०	९६	५३	१८७	४२	१८७	३२	१८७	२२	१८७	१३	१८७	३
७	०	१०३	४९	१९५	२२	१९५	२	१९४	४३	१९४	२४	१९४	६
७	३०	११०	४८	२०२	५७	२०२	२९	२०२	०	२०१	३३	२०१	५
८	०	११७	५५	२१०	३०	२०९	५०	२०९	१४	२०८	३७	२०८	२
८	३०	१२५	९	२१७	५०	२१७	५	२१६	२१	२१५	३८	२१४	५४
९	०	१३२	३२	२२५	६	२२४	१५	२२३	२४	२२२	३३	२२१	४२
९	३०	१४०	५	२३२	१५	२३१	१७	२३०	२०	२२९	२४	२२८	२७
१०	०	१४७	४९	२३९	१७	२३८	१५	२३७	१३	२३६	१०	२३५	८
१०	३०	१५५	४२	२४६	१३	२४५	७	२४४	१	२४२	५४	२४१	४६
११	०	१६३	४३	२५३	६	२५१	५७	२५०	४७	२४९	३६	२४८	२४
११	३०	१७१	५०	२५९	५७	२५८	४५	२५७	३३	२५६	१९	२५५	३
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६

साम्पातिक काल घं.	मि.	सभी स्थलों के लिए दशम अं.	क.	अक्षांश ८°(उ.) लग्न अं.	क.	अक्षांश ११°(उ.) लग्न अं.	क.	अक्षांश १४°(उ.) लग्न अं.	क.	अक्षांश १७°(उ.) लग्न अं.	क.	अक्षांश २०°(उ.) लग्न अं.	क.
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६
१२	३०	१८८	१०	२७३	४१	२७२	२७	२७१	११	२६९	५३	२६८	३३
१३	०	१९६	१७	२८०	३९	२७९	२५	२७८	९	२७६	४०	२७५	२९
१३	३०	२०४	१८	२८७	४३	२८६	३०	२८५	१५	२८३	५७	२८२	३५
१४	०	२१२	११	२९४	५७	२९३	४६	२९२	३३	२९१	१६	२८९	५५
१४	३०	२१९	५५	३०२	२१	३०१	१४	३००	४	२९८	४०	२९७	३२
१५	०	२२७	२८	३०९	५८	३०८	५६	३०७	५१	३०६	४२	३०५	२८
१५	३०	२३४	५१	३१७	४९	३१६	५४	३१५	५५	३१४	५३	३१३	४५
१६	०	२४२	५	३२५	५४	३२५	७	३२४	१७	३२३	२३	३२२	२५
१६	३०	२४९	१२	३३४	१२	३३३	३५	३३२	५५	३३२	१२	३३१	२६
१७	०	२५६	११	३४२	४१	३४२	१५	३४१	४८	३४१	१८	३४०	४५
१७	३०	२६३	७	३५१	१८	३५१	५	३५०	५१	३५०	३६	३५०	१९
१८	०	२७०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८	३०	२७६	५३	८	४२	८	५५	९	९	९	२४	९	४१
१९	०	२८३	४९	१७	१९	१७	४५	१८	१२	१८	४२	१९	२५
१९	३०	२९०	४८	२५	४८	२६	२५	२७	५	२७	४८	२८	३४
२०	०	२९७	५५	३४	६	३४	५३	३५	४३	३६	३७	३७	३५
२०	३०	३०५	९	४२	११	४३	६	४४	५	४५	७	४६	१४
२१	०	३१२	३२	५०	२	५१	४	५२	९	५३	१८	५४	३२
२१	३०	३२०	५	५७	३९	५८	४६	५९	५६	६१	१०	६२	२८
२२	०	३२७	४९	६५	३	६६	१४	६७	२७	६८	४४	७०	५
२२	३०	३३५	४२	७२	१७	७३	३०	७४	४५	७६	३	७७	२५
२३	०	३४३	४३	७९	२१	८०	३५	८१	५१	८३	१०	८४	३१
२३	३०	३५१	५०	८६	१९	८७	३३	८८	४९	९०	७	९१	२७
२४	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४

अब लग्न सारणी में ३२ अक्षांश और ३५ अक्षांश वाले कालमों में सां.का. ५घं. ३० मि. के आगे क्रमशः १७३ अं. ३४ क. और १७३ अं. ४४ क. लिखा है। इन दोनों का अन्तर १० क. हुआ। यह लग्न की "३ अक्षांश की गति" है। क्योंकि लग्न ३५ अक्षांश में बढ़ रहा है। अतः यह गति धन है। ३२ अक्षांश और चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. का अन्तर २९ क. है। इससे ३ अक्षांश की लग्न की गति कलाओं (१०) को गुणा करके १८० से भाग देने पर लब्धि १ क. मिली। क्योंकि ३ अक्षांशों की लग्न गति धन है अतः इसे "स्थूल लग्न" में जोड़ने पर १७८ अं. ५ क. सायन लग्न हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३अं. २६क. घटा देने पर १५४ अं. ३९ क. (=५ रा४ अं. ३९ क.) निरयणलग्न बन गया।

दशमलग्न साधन का उदाहरण- १५ जुला. १९६९ ई. को प्रातः १० घं. ४५ मि. (भा.स्टै.टा.) पर ही चम्बा, हि.प्र. में दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय चम्बा में सां का ५ घं. ५१ मि. है। लग्नसारणी के दूसरे कालम में सां.का. ५ घं. ३० मिनट के आगे दशमलग्न८३ अं.७क. है, यह "स्थूल दशमलग्न" है। सारणी में सां.का. ५ घं.३०मि. और ६ घं. ० मि. के आगे क्रमशः ८३ अं. ७ क. एवं ९० अं. ० क. है इन दोनों का अन्तर ६ अं. ५३ क. (=४१३ क.) है, यह ३० मि. की दशमलग्न की गति है। इन कलाओं को सां. का. के शेष मि. (५ घं. ५१ मि.- ५घं. ३० मि.=२१ मि.) से गुणा करके ३० का भाग देने पर २८९ क. (=४अं.४९क.) मिली। इन्हें "स्थूलदशमलग्न" में जोड़ने पर ८७ अं. ५६ क. सायन दशमलग्न स्पष्ट हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २६ क. घटा देने पर ६४ अं.३० क. (=२ रा.४अं. ३०क.) इष्टकालिक निरयण दशम लग्न हुआ।

ध्यान दें-यहां हमने सां.का. के सेकण्ड और अयनांश की विकलाओं को अनावश्यक समझकर छोड़ दिया है। क्योंकि लग्न और दशम में विकलाओं तक की सूक्ष्मता लाने का प्रयास वस्तुतः अर्थहीन है। कला तक की सूक्ष्मता भी लग्न में संभव नहीं है; इस तथ्य का विस्तार पूर्वक स्पष्टीकरण गणित द्वारा "गणकमार्तण्ड" में हमने किया है वहाँ पढ़ें।

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) {भाग २ य}

साम्पातिक काल	सभी स्थलों के लिए	अंक्षाश २३° (उ.)	अंक्षाश २६° (उ.)	अंक्षाश २९° (उ.)	अंक्षाश ३२° (उ.)	अंक्षाश ३५° (उ.)	साम्पातिक काल	सभीस्थलों के लिए	अंक्षाश २३° (उ.)	अंक्षाश २६° (उ.)	अंक्षाश २९° (ट.)	अंक्षाश ३२° (उ.)	अंक्षाश ३५° (उ.)
घं. मि.	दशम अं. क.	लग्न अं. क.	लग्न अं. कं.	लग्न अं. क.	लग्न अं. क.	लग्न अं. क.	घं. मि.	दशम अं. क.	लग्न अं. क.	लग्न अं. कं.	लग्न अं. क.	लग्न अं. क.	लग्न अं. क.
० ०	० ०	९९ ३५	१०० ५९	१०२ २६	१०३ ५७	१०५ ३४	१२ ०	१८० ००	२६० २५	२५९ १	२५७ ३४	२५६ ३	२५४ २६
० ३०	८ १०	१०६ १४	१०७ ३४	१०८ ५७	११० २४	१११ ५३	१२ ३०	१८८ १०	२६७ १०	२६५ ४३	२६४ १२	२६२ ३६	२६० ५४
१ ०	१६ १७	११२ ४९	११४ ४	११५ २२	११६ ४३	११८ ७	१३ ०	१९६ १७	२७४ ३	२७२ ३४	२७१ ०	२६९ २१	२६७ ३३
१ ३०	२४ १८	११९ २२	१२० ३३	१२१ ४५	१२३ ०	१२४ १७	१३ ३०	२०४ १८	२८१ ९	२७९ ३९	२७८ २	२७६ १९	२७४ २९
२ ०	३२ ११	१२५ ५६	१२७ ०	१२८ ७	१२९ १७	१३० २५	१४ ०	२१२ ११	२८८ ३०	२८६ ५९	२८५ २२	२८३ ३६	२८१ ४५
२ ३०	३९ ५५	१३२ ३१	१३३ २९	१३४ २९	१३५ ३०	१३६ ३२	१४ ३०	२१९ ५५	२९६ ९	२९४ ४०	२९३ ४	२९१ २०	२८९ २६
३ ०	४७ २८	१३९ ३	१४० ००	१४० ५२	१४१ ४५	१४२ ४०	१५ ००	२२७ २८	३०४ १०	३०२ ४४	३०१ १२	२९९ २८	२९७ ३८
३ ३०	५४ ५१	१४५ ५०	१४६ ३४	१४७ १८	१४८ ४	१४८ ५०	१५ ३०	२३४ ५१	३१२ ३३	३११ १५	३०९ ४८	३०८ १३	३०६ २५
४ ०	६२ ५	१५२ ३४	१५३ १०	१५३ ४७	१५४ २४	१५५ १	१६ ०	२४२ ५	३२१ २२	३२० १३	३१८ ५६	३१७ ३०	३१५ ५४
४ ३०	६९ १२	१५९ २२	१५९ ५०	१६० १७	१६० ४६	१६१ १४	१६ ३०	२४९ १२	३३० ३५	३२९ ३९	३२८ ३६	३२७ २५	३२६ ४
५ ०	७६ ११	१६६ १३	१६६ ३२	१६६ ५०	१६७ ९	१६७ २८	१७ ०	२५६ ११	३४० ९	३३९ ३०	३३८ ४५	३३७ ५४	३३६ ५५
५ ३०	८३ ७	१७३ ६	१७३ १५	१७३ २५	१७३ ३४	१७३ ४४	१७ ३०	२६३ ७	३५० ००	३४९ ४०	३४९ १६	३४८ ४९	३४८ १९
६ ०	९० ०	१८० ००	१८० ००	१८० ०	१८० ०	१८० ०	१८ ०	२७० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
६ ३०	९६ ५३	१८६ ५४	१८६ ४५	१८६ ३५	१८६ २६	१८६ १६	१८ ३०	२७६ ५३	१० ०	१४ २०	१० ४४	११ ११	११ ४१
७ ०	१०३ ४९	१९३ ४७	१९३ २८	१९३ १०	१९२ ५१	१९२ ३२	१९ ०	२८३ ४९	१९ ५१	२० ३०	२१ १५	२२ ६	२३ ४
७ ३०	११० ४८	२०० ३८	२०० १०	१९९ ४३	१९९ १४	१९८ ४६	१९ ३०	२९० ४८	२९ २५	३० २१	३१ २४	३२ ३५	३३ ५६
८ ०	११७ ५५	२०७ २६	२०६ ५०	२०६ १३	२०५ ३६	२०४ ५९	२० ०	२९७ ५५	३८ ३८	३९ ४७	४१ ४	४२ ३०	४४ ६
८ ३०	१२५ ५९	२१४ १०	२१३ २६	२१२ ४२	२११ ५६	२११ १०	२० ३०	३०५ ९	४७ २७	४८ ४५	५० १२	५१ ४७	५३ ३५
९ ०	१३२ ३२	२२० ५१	२२० ००	२१९ ८	२१८ १५	२१७ २०	२१ ०	३१२ ३२	५५ ५०	५७ १६	५८ ४८	६० ३२	६२ २२
९ ३०	१४० ५	२२७ २९	२२६ ३१	२२५ ३१	२२४ ३०	२२३ २८	२१ ३०	३२० ५	६३ ५१	६५ २०	६६ ५६	६८ ४०	७० ३४
१० ००	१४७ ४९	२३४ ४	२३३ ०	२३१ ५३	२३० ४५	२२९ ३५	२२ ०	३२७ ४९	७१ ३०	७३ १	७४ ३८	७६ २४	७८ १५
१० ३०	१५५ ४२	२४० ३८	२३९ २७	२३८ १५	२३७ ०	२३५ ४३	२२ ३०	३३५ ४२	७८ ५१	८० २१	८१ ५८	८३ ४१	८५ ३१
११ ०	१६३ ४३	२४७ ११	२४५ ५६	२४४ ३८	२४३ १७	२४१ ५३	२३ ०	३४३ ४३	८५ ५६	८७ २६	८९ ०	९० ३९	९२ २६
११ ३०	१७१ ५०	२५३ ४६	२५२ २६	२५१ ३	२४९ ३६	२४८ ७	२३ ३०	३५१ ५०	९२ ५०	९४ १७	९५ ४८	९७ २४	९९ ६
१२ ०	१८० ००	२६० २५	२५९ ३	२५७ ३४	२५६ ३	२५४ २६	२४ ०	००० ०	९९ ३५	१०० ५९	१०२ २६	१०३ ५७	१०५ ३४

साम्पातिककाल कोष्ठक नं. १

सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.
१९७१	६ ३९ ०७	१९७८	६ ४० १९	१९८५	६ ४१ ३२	१९९२	६ ३८ ४७	१९९९	६ ३९ ५९	२००६	६ ४१ ११	२०१३	६ ४२ २३	२०२०	६ ३९ ३९
१९७२	६ ३८ १०	१९७९	६ ३९ २२	१९८६	६ ४० ३५	१९९३	६ ४१ ४६	२०००	६ ३९ ०२	२००७	६ ४० १४	२०१४	६ ४१ २६	२०२१	६ ४२ ३८
१९७३	६ ४१ १०	१९८०	६ ३८ २४	१९८७	६ ३९ ३८	१९९४	६ ४० ४९	२००१	६ ४२ ०१	२००८	६ ३९ १७	२०१५	६ ४० २९	२०२२	६ ४१ ४०
१९७४	६ ४० १२	१९८१	६ ४१ २३	१९८८	६ ३८ ४०	१९९५	६ ३९ ५२	२००२	६ ४१ ०४	२००९	६ ४२ १६	२०१६	६ ३९ ३१	२०२३	६ ४० ४३
१९७५	६ ३९ १५	१९८२	६ ४० २६	१९८९	६ ४१ ३९	१९९६	६ ३८ ५४	२००३	६ ४० ०७	२०१०	६ ४१ १९	२०१७	६ ४२ ३१	२०२४	६ ३९ ४६
१९७६	६ ३८ १७	१९८३	६ ३९ २९	१९९०	६ ४० ४१	१९९७	६ ४१ ५३	२००४	६ ३९ ०९	२०११	६ ४० २१	२०१८	६ ४१ ३३	२०२५	६ ४२ ४५
१९७७	६ ४१ १६	१९८४	६ ३८ ३२	१९९१	६ ३९ ४४	१९९८	६ ४० ५६	२००५	६ ४२ ०९	२०१२	६ ३९ २४	२०१९	६ ४० ३६	२०२६	६ ४१ ४८

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० २

ता.	जनवरी			फरवरी			मार्च			अप्रैल			मई			जून			जुलाई			अगस्त			सितम्बर			अक्तूबर			नवम्बर			दिसम्बर			ता.
↓	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	↓
१	०	०	०	२	२	१३	३	५२	३७	५	५४	५१	७	५३	७	९	५५	२१	११	५३	३८	१३	५५	५०	१५	५८	४	१७	५६	२१	१९	५८	३४	२१	५६	५०	१
२	०	३	५७	२	६	९	३	५६	३३	५	५८	४७	७	५७	४	९	५९	१७	११	५७	३४	१३	५९	४७	१६	२	०	१८	०	१७	२०	२	३१	२२	०	४७	२
३	०	७	५३	२	१०	६	४	०	३०	६	२	४३	८	१	०	१०	३	१४	१२	१	३१	१४	३	४४	१६	५	५७	१८	४	१४	२०	६	२७	२२	४	४३	३
४	०	११	५०	२	१४	२	४	४	२६	६	६	४०	८	४	५७	१०	७	१०	१२	५	२७	१४	७	४०	१६	९	५३	१८	८	१	२०	१०	२४	२२	८	४०	४
५	०	१५	४६	२	१७	५९	४	८	२३	६	१०	३६	८	८	५३	१०	११	७	१२	९	२४	१४	११	३६	१६	१३	५०	१८	१२	७	२०	१४	२०	२२	१२	३६	५
६	०	१९	४३	२	२१	५५	४	१२	१९	६	१४	३३	८	१२	५०	१०	१५	३	१२	१३	२१	१४	१५	३३	१६	१७	४६	१८	१६	३	२०	१८	१७	२२	१६	३३	६
७	०	२३	३९	२	२५	५२	४	१६	१६	६	१८	२९	८	१६	४६	१०	१९	०	१२	१७	१७	१४	१९	२९	१६	२१	४३	१८	२०	०	२०	२२	१३	२२	२०	३०	७
८	०	२७	३६	२	२९	४८	४	२०	१२	६	२२	२६	८	२०	४३	१०	२२	५६	१२	२१	१४	१४	२३	२६	१६	२५	४०	१८	२३	५७	२०	२६	१०	२२	२४	२७	८
९	०	३१	३२	२	३३	४५	४	२४	९	६	२६	२२	८	२४	३९	१०	२६	५३	१२	२५	१०	१४	२७	२३	१६	२९	३७	१८	२७	५४	२०	३०	६	२२	२८	२३	९
१०	०	३५	२९	२	३७	४२	४	२८	५	६	३०	१९	८	२८	३६	१०	३०	४९	१२	२९	६	१४	३१	२०	१६	३३	३३	१८	३१	५०	२०	३४	३	२२	३२	२०	१०
११	०	३९	२५	२	४१	३९	४	३२	२	६	३४	१६	८	३२	३२	१०	३४	४६	१२	३३	३	१४	३५	१६	१६	३७	३०	१८	३५	४७	२०	३८	०	२२	३६	१६	११
१२	०	४३	२२	२	४५	३५	४	३५	५९	६	३८	१२	८	३६	२९	१०	३८	४२	१२	३६	५९	१४	३९	१३	१६	४१	२६	१८	३९	४३	२०	४१	५६	२२	४०	१३	१२
१३	०	४७	१८	२	४९	३२	४	३९	५६	६	४२	९	८	४०	२५	१०	४२	३९	१२	४०	५६	१४	४३	९	१६	४५	२३	१८	४३	४०	२०	४५	५२	२२	४४	९	१३
१४	०	५१	१५	२	५३	२८	४	४३	५२	६	४६	६	८	४४	४२	१०	४६	३५	१२	४४	५२	१४	४७	६	१६	४९	१९	१८	४७	३७	२०	४९	४९	२२	४८	६	१४
१५	०	५५	१२	२	५७	२५	४	४७	४९	६	५०	२	८	४८	१८	१०	५०	३२	१२	४८	४९	१४	५१	२	१६	५३	१६	१८	५१	३३	२०	५३	४५	२२	५२	२	१५
१६	०	५९	८	३	१	२१	४	५१	४५	६	५३	५९	८	५२	१५	१०	५४	२८	१२	५२	४५	१४	५४	५९	१६	५७	१२	१८	५५	३०	२०	५७	४२	२२	५५	५९	१६
१७	१	३	४	३	५	१८	४	५५	४२	६	५७	५५	८	५६	११	१०	५८	२५	१२	५६	४२	१४	५८	५५	१७	१	९	१८	५९	२६	२१	१	३९	२२	५९	५६	१७
१८	१	७	१	३	९	१४	४	५९	३८	७	१	५२	९	०	८	११	२	२१	१३	०	३८	१५	२	५२	१७	५	५	१९	३	२२	२१	५	३६	२३	३	५३	१८
१९	१	१०	५७	३	१३	११	५	३	३५	७	५	४८	९	४	४	११	६	१८	१३	४	३५	१५	६	४८	१७	९	२	१९	७	१९	२१	९	३२	२३	७	४९	१९
२०	१	१४	५४	३	१७	८	५	७	३१	७	९	४५	९	८	१	११	१०	१५	१३	८	३२	१५	१०	४५	१७	१२	५८	१९	११	१५	२१	१३	२९	२३	११	४६	२०
२१	१	१८	५१	३	२१	५	५	११	२८	७	१३	४१	९	११	५८	११	१४	१२	१३	१२	२९	१५	१४	४१	१७	१६	५५	१९	१५	१२	२१	१७	२५	२३	१५	४२	२१
२२	१	२२	४८	३	२५	१	५	१५	२५	७	१७	३८	९	१५	५५	११	१८	८	१३	१६	२५	१५	१८	३८	१७	२०	५१	१९	१९	८	२१	२१	२२	२३	१९	३९	२२
२३	१	२६	४४	३	२८	५८	५	१९	२२	७	२१	३४	९	१९	५१	११	२२	५	१३	२०	२२	१५	२२	३४	१७	२४	४८	१९	२३	५	२१	२५	१८	२३	२३	३५	२३
२४	१	३०	४१	३	३२	५४	५	२३	१८	७	२५	३१	९	२३	४८	११	२६	१	१३	२४	१८	१५	२६	३१	१७	२८	४४	१९	२७	१	२१	२९	१५	२३	२७	३२	२४
२५	१	३४	३७	३	३६	५१	५	२७	१५	७	२९	२८	९	२७	४४	११	२९	५८	१३	२८	१५	१५	३०	२७	१७	३२	४१	१९	३०	५८	२१	३३	११	२३	३१	२८	२५
२६	१	३८	३४	३	४०	४७	५	३१	११	७	३३	२४	९	३१	४१	११	३३	५४	१३	३२	११	१५	३४	२४	१७	३६	३७	१९	३४	५४	२१	३७	८	२३	३५	२५	२६
२७	१	४२	३०	३	४४	४४	५	३५	८	७	३७	२०	९	३५	३७	११	३७	५१	१३	३६	८	१५	३८	२०	१७	४०	३४	१९	३८	५१	२१	४१	४	२३	३९	२१	२७
२८	१	४६	२७	३	४८	४०	५	३९	५	७	४१	१७	९	३९	३४	११	४१	४७	१३	४०	४	१५	४२	१७	१७	४४	३१	१९	४२	४८	२१	४५	१	२३	४३	१८	२८
२९	१	५०	२३	३	५२	३७	५	४३	१	७	४५	१३	९	४३	३०	११	४५	४४	१३	४४	१	१५	४६	१४	१७	४८	२८	१९	४६	४५	२१	४८	५७	२३	४७	१४	२९
३०	१	५४	२०				५	४६	५८	७	४९	१०	९	४७	२७	११	४९	४१	१३	४८	५७	१५	५०	११	१७	५२	२४	१९	५०	४१	२१	५२	५४	२३	५१	११	३०
३१	१	५८	१६				५	५०	५४				९	५१	२४				१३	५१	५४	१५	५४	७				१९	५४	३८				२३	५५	७	३१
																																		२३	५९	३	३२

लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़ कर कोष्ठक नं० २ को प्रयोग में लाइए ।

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ३

रेखांश	०°	पू.२०°	पू.४०°	पू.६०°	पू.८०°	पू.१००°	पू.१२०°	पू.१४०°	पू.१६०°
संस्कार सेकण्ड	+५०	+३७	+२४	+११	-२	-१५	-२८	-४१	-५४
रेखांश	१८०°	प.१६०°	प.१४०°	प.१२०°	प.१००°	प.८०°	प.६०°	प.४०°	प.२०°
संस्कार सेकण्ड	-६७/+१६९	+१५६	+१४३	+१२९	+११६	+१०३	+८९	+७७	+६३

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ४

मि.	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५
घं.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.
०	० ००	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ७	० ७	० ८	० ९
१	० १०	० ११	० ११	० १२	० १३	० १४	० १५	० १६	० १६	० १७	० १८	० १९
२	० २०	० २१	० २१	० २२	० २३	० २४	० २५	० २५	० २६	० २७	० २८	० २९
३	० ३०	० ३०	० ३१	० ३२	० ३३	० ३४	० ३४	० ३५	० ३६	० ३७	० ३८	० ३९
४	० ३९	० ४०	० ४१	० ४२	० ४३	० ४४	० ४४	० ४५	० ४६	० ४७	० ४८	० ४८
५	- ४९	० ५०	० ५१	० ५२	० ५३	० ५३	० ५४	० ५५	० ५६	० ५७	० ५७	० ५८
६	० ५९	१ ००	१ १	१ २	१ २	१ ३	१ ४	१ ५	१ ६	१ ७	१ ७	१ ८
७	१ ९	१ १०	१ ११	१ ११	१ १२	१ १३	१ १४	१ १५	१ १६	१ १६	१ १७	१ १८
८	१ १९	१ २०	१ २०	१ २१	१ २२	१ २३	१ २४	१ २५	१ २५	१ २६	१ २७	१ २८
९	१ २९	१ ३०	१ ३०	१ ३१	१ ३२	१ ३३	१ ३४	१ ३४	१ ३५	१ ३६	१ ३७	१ ३८
१०	१ ३९	१ ३९	१ ४०	१ ४१	१ ४२	१ ४३	१ ४३	१ ४४	१ ४५	१ ४६	१ ४७	१ ४८
११	१ ४८	१ ४९	१ ५०	१ ५१	१ ५२	१ ५३	१ ५३	१ ५४	१ ५५	१ ५६	१ ५७	१ ५७
१२	१ ५८	१ ५९	२ ०	२ १	२ २	२ २	२ ३	२ ४	२ ५	२ ६	२ ६	२ ७
१३	२ ८	२ ९	२ १०	२ ११	२ ११	२ १२	२ १३	२ १४	२ १५	२ १६	२ १६	२ १७
१४	२ १८	२ १९	२ २०	२ २०	२ २१	२ २२	२ २३	२ २४	२ २५	२ २५	२ २६	२ २७
१५	२ २८	२ २९	२ २९	२ ३०	२ ३१	२ ३२	२ ३३	२ ३४	२ ३४	२ ३५	२ ३६	२ ३७
१६	२ ३८	२ ३९	२ ३९	२ ४०	२ ४१	२ ४२	२ ४३	२ ४३	२ ४४	२ ४५	२ ४६	२ ४७
१७	२ ४८	२ ४८	२ ४९	२ ५०	२ ५१	२ ५२	२ ५२	२ ५३	२ ५४	२ ५५	२ ५६	२ ५७
१८	२ ५७	२ ५८	२ ५९	३ ०	३ १	३ २	३ २	३ ३	३ ४	३ ५	३ ६	३ ६
१९	३ ७	३ ८	३ ९	३ १०	३ ११	३ ११	३ १२	३ १३	३ १४	३ १५	३ १५	३ १६
२०	३ १७	३ १८	३ १९	३ २०	३ २०	३ २१	३ २२	३ २३	३ २४	३ २५	३ २५	३ २६
२१	३ २७	३ २८	३ २९	३ २९	३ ३०	३ ३१	३ ३२	३ ३३	३ ३४	३ ३४	३ ३५	३ ३६
२२	३ ३७	३ ३८	३ ३८	३ ३९	३ ४०	३ ४१	३ ४२	३ ४३	३ ४३	३ ४४	३ ४५	३ ४६
२३	३ ४७	३ ४८	३ ४८	३ ४९	३ ५०	३ ५१	३ ५२	३ ५२	३ ५३	३ ५४	३ ५५	३ ५६

अयनांश सारणी नं० १

ई. सन्	अयनांश	ई. सन्	अयनांश	ई. सन्	अयनांश
	अं. क. वि.		अं. क. वि.		अं. क. वि.
१९५१	२३ १० २१	१९७५	२३ ३० २८	१९९९	२३ ५० ३४
१९५२	२३ ११ १२	१९७६	२३ ३१ १७	२०००	२३ ५१ २४
१९५३	२३ १२ ०२	१९७७	२३ ३२ ०८	२००१	२३ ५२ १५
१९५४	२३ १२ ५२	१९७८	२३ ३२ ५६	२००२	२३ ५३ ०५
१९५५	२३ १३ ४२	१९७९	२३ ३३ ४६	२००३	२३ ५३ ५५
१९५६	२३ १४ ३३	१९८०	२३ ३४ ३६	२००४	२३ ५४ ४६
१९५७	२३ १५ २३	१९८१	२३ ३५ २६	२००५	२३ ५५ ३६
१९५८	२३ १६ १३	१९८२	२३ ३६ २०	२००६	२३ ५६ २६
१९५९	२३ १७ ०३	१९८३	२३ ३७ १०	२००७	२३ ५७ १७
१९६०	२३ १७ ५४	१९८४	२३ ३८ ००	२००८	२३ ५८ ०७
१९६१	२३ १८ ४४	१९८५	२३ ३८ ५१	२००९	२३ ५८ ५७
१९६२	२३ १९ ३५	१९८६	२३ ३९ ४१	२०१०	२३ ५९ ४८
१९६३	२३ २० २५	१९८७	२३ ४० ३१	२०११	२४ ०० ३८
१९६४	२३ २१ १५	१९८८	२३ ४१ २१	२०१२	२४ ०१ २८
१९६५	२३ २२ ०५	१९८९	२३ ४२ १२	२०१३	२४ ०२ १८
१९६६	२३ २२ ५५	१९९०	२३ ४३ ०२	२०१४	२४ ०३ ०९
१९६७	२३ २३ ४६	१९९१	२३ ४३ ५२	२०१५	२४ ०३ ५९
१९६८	२३ २४ ३६	१९९२	२३ ४४ ४२	२०१६	२४ ०४ ४९
१९६९	२३ २५ २६	१९९३	२३ ४५ ३३	२०१७	२४ ०५ ४०
१९७०	२३ २६ १६	१९९४	२३ ४६ २३	२०१८	२४ ०६ ३०
१९७१	२३ २७ ०७	१९९५	२३ ४७ १३	२०१९	२४ ०७ २०
१९७२	२३ २७ ५७	१९९६	२३ ४८ ०३	२०२०	२४ ०८ १०
१९७३	२३ २८ ४७	१९९७	२३ ४८ ५४	२०२१	२४ ०९ ०१
१९७४	२३ २९ ३७	१९९८	२३ ४९ ४४	२०२२	२४ ०९ ५१

अयनांश सारणी नं. २

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जनवरी	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४
फरवरी	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८
मार्च	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२
अप्रैल	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६
मई	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०
जून	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जुलाई	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९
अगस्त	२९	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३३
सितम्बर	३४	३४	३४	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७
अक्तूबर	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४१	४१	४१
नवम्बर	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	४६
दिसम्बर	४६	४७	४७	४७	४८	४८	४९	४९	४९	५०

महर्षि–पराशरोक्त विंशोत्तरी महादशान्तर्दशा ज्ञान–चक्र

सूर्यदशा वर्ष ६ एक घड़ी में ३६ दिन	चंद्रदशा वर्ष १० एक घड़ी में ६० दिन	भौम दशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन	राहु दशा वर्ष १८ एक घड़ी में १०८ दिन	गुरु दशा वर्ष १६ एक घड़ी में ९६ दिन	शनिदशा वर्ष १९ एक घड़ी में ११४ दिन	बुधदशा वर्ष १७ एक घड़ी में १०२ दिन	केतुदशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन	शुक्रदशा वर्ष २० एक घड़ी में १२० दिन
कृ. उ.फा. उ.षा.	रो. ह. श्रव.	मृ. चि. ध.	आर्द्रा स्वा. श.	पुन. वि. पू.भा.	पु. अनु. उ.भा.	आश्ले. ज्ये. रे.	म. मू. अश्वि.	पू.फा. पू.षा. भ.
तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्
ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.
र. ० ३ १८	चं. ० १० ०	मं. ० ४ २७	रा. २ ८ १२	बृ. २ १ १८	श. ३ ० ३	बु. २ ४ २७	के. ० ४ २७	शु. ३ ४ ०
चं. ० ६ ०	मं. ० ७ ०	रा. १ ० १८	बृ. २ ४ २४	श. २ ६ १२	बु. २ ८ ९	के. ० ११ २७	शु. १ २ ०	र. १ ० ०
मं. ० ४ ६	रा. १ ६ ०	बृ. ० ११ ६	श. २ १० ६	बु. २ ३ ६	के. १ १ ९	शु. २ १० ०	र. ० ४ ६	चं. १ ८ ०
रा. ० १० २४	बृ. १ ४ ०	श. १ १ ९	बु. २ ६ १८	के. ० ११ ६	शु. ३ २ ०	र. ० १० ६	चं. ० ७ ०	मं. १ २ ०
बृ. ० ९ १८	श. १ ७ ०	बु. ० ११ २७	के. १ ० १८	शु. २ ८ ०	र. ० ११ १२	चं. १ ५ ०	मं. ० ४ २७	रा. ३ ० ०
श. ० ११ १२	बु. १ ५ ०	के. ० ४ २७	शु. ३ ० ०	र. ० ९ १८	चं. १ ७ ०	मं. ० ११ २७	रा. १ ० १८	बृ. २ ८ ०
बु. ० १० ६	के. ० ७ ०	शु. १ २ ०	र. ० १० २४	चं. १ ४ ०	मं. १ १ ९	रा. २ ६ १८	बृ. ० ११ ६	श. ३ २ ०
के. ० ४ ६	शु. १ ८ ०	र. ० ४ ६	चं. १ ६ ०	मं. ० ११ ०६	रा. २ १० ६	बृ. २ ३ ६	श. १ १ ९	बु. २ १० ०
शु. १ ० ०	र. ० ६ ०	चं. ० ७ ०	मं. १ ० १८	रा. २ ४ २४	बृ. २ ६ १२	श. २ ८ ९	बु. ० ११ २७	के. १ २ ०

शिवोक्त योगिनी–दशाऽन्तर्दशा ज्ञानार्थ चक्र

मंगला व. १	पिंगला व. २	धान्या व. ३	भ्रामरी व. ४	भद्रा व. ५	उल्का व. ६	सिद्धा व. ७	संकटा व. ८	दशा तथा वर्ष
चन्द्र	सूर्य	गुरु	मंगल	बुध	शनि	शुक्र	केतु	दशेश ग्रह
आर्द्रा चि. श्रव.	पुन. स्वा. ध.	पुष्य वि. श.	अश्वि आश्ले. अनु पूषा	भ. म. ज्ये. उ.भा.	कृ. पूफा. मू. रे.	रो. उ.फा. पूषा.	मृ. ह. उ.षा.	जन्म नक्षत्र
मं. ० १०	पिं. १ १०	धा. ३ ०	भ्रा. ५ १०	भ. ८ १०	उ. १२ ०	सि. १६ १०	सं. २१ १०	
पिं. ० २०	धा. २ ०	भ्रा. ४ ०	भ. ६ २०	उ. १० ०	सि. १४ ०	सं. १८ २०	मं. २ २०	
धा. १ ०	भ्रा. २ २०	भ. ५ ०	उ. ८ ०	सि. ११ २०	सं. १६ ०	मं. २ १०	पिं. ५ १०	
भ्रा. १ १०	भ. ३ १०	उ. ६ ०	सि. ९ १०	सं. १३ १०	मं. २ ०	पिं. ४ ३०	धा. ८ ०	अन्तर्दशा के मास, दिन
भ. १ २०	उ. ४ ०	सि. ७ ०	सं. १० २०	मं. १ २०	पिं. ४ ०	धा. ७ ०	भ्रा. १० २०	
उ. २ ०	सि. ४ २०	सं. ८ ०	मं. १ १०	पिं ३ १०	धा. ६ ०	भ्रा. ९ १०	भ. १३ १०	
सि. २ १०	सं. ५ १०	मं. १ ०	पिं. २ २०	धा. ५ ०	भ्रा. ८ ०	भ. ११ २०	उ. १६ ०	
सं. २ २०	मं. ० २०	पिं. २ ०	धा. ४ ०	भ्रा. ६ २०	भ. १० ०	उ. १४ ०	सि. १८ २०	

वर्षकुण्डली में १२ भावों में स्थित ग्रहों का फल

ग्रह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	चिन्ता	नृपभय	धनलाभ	हानि	कष्ट	शत्रुनाश	पीड़ा	कष्ट	धर्मनाश	सुख	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्र	पीड़ा	धनलाभ	हर्ष	शत्रुनाश	सुख	पीड़ा	कष्ट	दुःख	भाग्योदय	विजय	धनलाभ	व्यय
भौम	ज्वर	धननाश	जय	व्यसन	दुर्गति	शत्रुनाश	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्यलाभ	धनलाभ	विरोध
बुध	सुख	धनलाभ	सुख	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुख	मानलाभ	सुखलाभ	विग्रह
गुरु	सुख	धनलाभ	जय	वाहनलाभ	पुत्रलाभ	कष्ट	सुख	रोग	धर्मलाभ	राज्यलाभ	धनलाभ	शोक
शुक्र	मानप्राप्ति	धनप्राप्ति	कीर्तिलाभ	सुखलाभ	धनलाभ	शत्रुभीति	स्त्रीसुख	कष्ट	धर्मोदय	मानलाभ	धनलाभ	व्यय
शनि	वायुरोग	पीड़ा	धनलाभ	दुःख	पुत्रप्राप्ति	जय	स्त्रीकष्ट	रोग	भाग्यहानि	धनहानि	धनलाभ	चिन्ता
राहु	सिरदर्द	राजभय	सुख	दुःख	बुद्धिनाश	शत्रुनाश	रोगभय	दुःख	हानि	विजय	सुखलाभ	व्याधि
केतु	चिन्ता	क्लेश	आरोग्य	राजभय	दुर्बुद्धि	सुख	कलेश	पीड़ा	भाग्यनाश	धनलाभ	लाभ	शोक
मुन्था	सुख	यश, अर्थ	पुष्टि	दुःख	सुखप्राप्ति	कष्ट	व्यसन	दुःख	भाग्योदय	राज्यप्राप्ति	लाभ	कष्ट

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट–घटीपल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाए हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र के घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें। भयात के पलों को दशा के वर्षों से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध अंक वर्ष; फिर शेषांक को १२ से गुणा करें, भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध मास; फिर शेषांक को ३० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध दिन; फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें, लब्धांक घटी; फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध पल होंगे। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में से घटाने पर भोग्य दशा होगी।

सूर्यसिद्धान्तीय वर्षप्रवेश–सारणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

सूचना– वेधसिद्ध वर्षमान सूर्य सिद्धान्तीय वर्षमान से ८.५पल कम है। अतः सूक्ष्म–वर्षप्रवेशकालिक इष्ट निकालने के लिए गताब्दों को ८.५ से गुणा करके पलात्मक फल को सारणी से साधित इष्ट में से घटा देना चाहिए। यही सूक्ष्म–वर्ष मानानुसारी इष्ट होगा, चाहो तो इस इष्ट पर भी फल अनुभव करें।

वर्षफलसाधन–प्रकारः– (१) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष निकालना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे उसे गतवर्ष, (गताब्द) जानें। स्मरण रहे, कि– मेषार्कप्रवेश से प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनंतर का यदि वर्ष करना हो तो पिछले संवत् से करना होगा–वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात्– इस प्रकार गताब्द निकालकर उसी गताब्द अंक के नीचे सारणी में जो वारादि अंक हैं, उनमें जन्म का वार, इष्ट, घड़ी, पल जोड़ने से वर्षप्रवेशकालिक वारादि इष्ट ज्ञात हो जाता है। यदि नीचे घट्यादि अंक साठ से अधिक हों तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना। ऊपर से वारांक में सात से अधिक आ जाए तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से शेष को वर्षप्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट समझें।

(२) जिस दिन जन्म समय के स्पष्ट सूर्यतुल्य वर्ष में सूर्य मिले, उसी दिन वर्षप्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कमी–कमी वार नहीं मिलता। वहां पर गणितागत वार को ठीक जानें। इस इष्ट के अनुसार स्वदेशीय लग्नसारणी से लग्नसाधन करके वर्षकुण्डली लगाएं।

मुन्थानयनप्रकार– गताब्दसंख्या में जन्मलग्न जोड़कर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे उसे मुन्था जानें। यह मुन्था प्रति दिन पांच कला चलती है।

मुद्दा दशा– गत वर्ष में जन्मनक्षत्र जोड़कर, उसमें से दो घटाएं, ९ का भाग देने से जो शेष बचे उसे दशा समझें। १ शेष से सूर्य, २ से चन्द्रमा, ३ से मंगल, ४ से राहु, ५ से गुरु, ६ से शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, और ९ शेष से शुक्र की दशा जानें।

दशा के दिन– सूर्य के १८ दिन, चन्द्रमा के ३०, मंगल २१, राहु ५४, गुरु ४८, शनि ५७, बुध ५१, केतु २१, शुक्र ६० – ये दशा के दिन हैं।

हर्ष स्थान बल– सूर्य वर्ष लग्न से ९, चन्द्रमा ३, मंगल ६, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५वें और शनि १२ वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वोच्च बल– सू. १।५, चं. २।४, मं. १।८।१०, बुध ३।६, गुरु ९।१२।४, शु. २।७।१२ तथा श. १०।११ ७ राशियों में ५ बल देते हैं।

पुरुषस्त्री–ग्रह–बल– स्त्रीग्रह (चं., बु., शु., श.) १।२।३।७।८।९ और पुरुष ग्रह (सू., मं., बृ.) ४।५।६।१०।११।१२वें स्थानों में ५ बल देते हैं। **दिनरात्रि बल**–दिन के वर्षेष्ट में पुरुषग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्रीग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

राशि→	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
दिनलग्नपति→	सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	गु.	चं.
रात्रिलग्नपति→	गु.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.

वर्ष में दृष्टि–ज्ञान और फल

⁂ वर्ष में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो उस भाव से ५वें, ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। फल– कार्य में शीघ्र सफलता, सुख, प्रेम, लाभ और जिन मनुष्यों के साथ पहले शत्रुता होती है, उनसे प्रेम होता है। ⁂ तीसरे ग्यारहवें गुप्त मित्र दृष्टि से देखता है। फल– कार्य कठिनता से एवं गुप्त भाव से सफल हो।⁂ पहले, सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि होती है। फल– शत्रुता करे, मित्र से बैर, धनहानि, बनते काम को बिगड़ना आदि फल होते हैं।⁂ ४–१०वें गुप्तशत्रु दृष्टि से देखता है। फल– कार्य बड़ी कठिनता से सफल हो, गुप्तरूप से शत्रु भी उत्पन्न होते हैं।

अथ वर्षेश निर्णयः– जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, समयेश ५ (दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्रराशि का स्वामी समयेश होता है।) इन पांच अधिकारियों में से जो सबसे बलवान् हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होता है। यदि पांचों में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उन में से जो अधिक बलवान् हो वही वर्षेश्वर होगा। कई ग्रहों का बल समान हों तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह और बल, दृष्टि, अधिकार– तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश हो। यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे या जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश हो। फल– वर्षेश ६। ८। १२ वें व अस्तंगत, हीनबली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भयविशेष होगा। यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो।

वर्ष में तबदीली का योग– वर्षकुण्डली में लग्नेश– तृतीयेश वा चतुर्थेश–नवमेश एक घर में हों या एक–दूसरे को मित्रदृष्टि से देखें तो उस वर्ष तबदीली होगी। अगर वर्षलग्नेश वक्री हो और वह मित्रग्रह से दृष्ट हो तो भी तबदीली का योग बनेगा।

सूक्ष्म, शुद्ध वर्षमान के अनुसार वर्षप्रवेशकाल

वेध द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि– सूर्यसिद्धान्तीय वर्षमान वास्तविक (शुद्ध) वर्षमान से $\frac{1}{2}$ मिनट अधिक है। शुद्ध वर्षफल बनाने के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल का होना आवश्यक है। हम यहां "सूक्ष्म वर्ष–प्रवेश–सारणी" दे रहे हैं। जो दैवज्ञ वर्षफल के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल जानना चाहते हैं, उन्हें इसी सारणी का प्रयोग करना चाहिए।

इस सारणी में घं. मि. का प्रयोग है, अतः इससे वर्षप्रवेशकाल जानने के लिए जातक के जन्म का स्टैं. टा. ही यहां प्रयोग में लाना होगा। जैसे– मान लीजिए, किसी व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेशकाल जानना है। उस व्यक्ति के जन्म का वार चन्द्र और जन्मकाल (भा. स्टैं. टा.) ८घं. २०मि. (प्रातः) है। उसके वारादि जन्मकाल (2 वा. 8 घं. 20 मि.) में सारणी से गताब्द 9 द्वारा प्राप्त वारादि काल 4 वा. 7 घं. 22 मि. जोड़ने पर 6 वा. 15 घं. 42 मि. मिले। इसका अर्थ हुआ कि इस व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेश शुक्रवार को 15 घं. 42 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर होगा।

ध्यान रहे– इस सारणी के प्रयोग से प्राप्त वार रात्रि के 12 बजे बदलने वाला होगा। अतः यहां प्रयोग में लाया जाने वाला जन्मकालिक वार भी इसी प्रकार होना चाहिए।

सूक्ष्म वर्षप्रवेश सारणी

गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.
१	१/६/९	१३	२/७/५९	२५	३/९/४९	३७	४/११/३९	४९	५/१३/२९	६१	६/१५/१९	७३	०/१७/९	८५	१/१८/५९	९७	२/२०/४९	१०९	३/२२/३९
२	२/१२/१८	१४	३/१४/८	२६	४/१५/५८	३८	५/१७/४८	५०	६/१९/३८	६२	०/२१/२८	७४	१/२३/१८	८६	३/१/८	९८	४/२/५८	११०	५/४/४८
३	३/१८/२७	१५	४/२०/१७	२७	५/२२/७	३९	६/२३/५७	५१	१/१/४७	६३	२/३/३७	७५	३/५/२७	८७	४/७/१७	९९	५/९/७	१११	६/१०/५७
४	५/०/३७	१६	६/२/२७	२८	०/४/१६	४०	१/६/६	५२	२/७/५६	६४	३/९/४६	७६	४/११/३६	८८	५/१३/२६	१००	६/१५/१६	११२	०/१७/६
५	६/६/४६	१७	०/८/३६	२९	१/१०/२६	४१	२/१२/१६	५३	३/१४/०६	६५	४/१५/५६	७७	५/१७/४५	८९	६/१९/३५	१०१	०/२१/२५	११३	१/२३/१५
६	०/१२/५५	१८	१/१४/४५	३०	२/१६/३५	४२	३/१८/२५	५४	४/२०/१५	६६	५/२२/५	७८	६/२३/५५	९०	१/१/४५	१०२	२/३/३४	११४	३/५/२४
७	१/१९/०४	१९	२/२०/५४	३१	३/२२/४४	४३	५/०/३४	५५	६/२/२४	६७	०/४/१४	७९	१/६/४	९१	२/७/५४	१०३	३/९/४४	११५	४/११/३४
८	३/१/१३	२०	४/३/३	३२	५/४/५३	४४	६/६/४३	५६	०/८/३३	६८	१/१०/२३	८०	२/१२/१३	९२	३/१४/३	१०४	४/१५/५३	११६	५/१७/४३
९	४/७/२२	२१	५/९/१२	३३	६/११/२	४५	०/१२/५२	५७	१/१४/४२	६९	२/१६/३२	८१	३/१८/२२	९३	४/२०/१२	१०५	५/२२/२	११७	६/२३/५२
१०	५/१३/३२	२२	६/१५/२२	३४	०/१७/११	४६	१/१९/१	५८	२/२०/५१	७०	३/२२/४१	८२	५/०/३१	९४	६/२/२१	१०६	०/४/११	११८	१/६/१
११	६/१९/४१	२३	०/२१/३१	३५	१/२३/२१	४७	३/१/११	५९	४/०३/१	७१	५/४/५०	८३	६/६/४०	९५	०/८/३०	१०७	१/१०/२०	११९	२/१२/१०
१२	१/१/५०	२४	२/३/४०	३६	३/५/३०	४८	४/७/२०	६०	५/९/१०	७२	६/११/०	८४	०/१२/५०	९६	१/१४/४०	१०८	२/१६/२९	१२०	३/१८/१९

वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए।

जिस प्रकार जातक का जन्म जिस स्थान पर होता है उसी स्थान के अक्षांश–रेखांशानुसार ही लग्न का निर्णय किया जाता है, ठीक उसी प्रकार वर्षप्रवेश के समय जातक जिस स्थान पर हो उसी स्थान के अक्षांश–रेखांशानुसार ही वर्षप्रवेश का लग्न होना चाहिए, क्योंकि वर्ष प्रवेश भी जातक का एक 'उपजन्म' ही है। इस प्रकार न्यूयार्क (अमेरिका) में जन्म लेने वाला जातक यदि अपने किसी वर्ष के प्रवेश के समय दिल्ली (भारत) में मौजूद है तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न दिल्ली के अक्षांश–रेखांशानुसार ही लगाना चाहिए। इसी तरह यदि दिल्ली में जन्म लेने वाला जातक वर्षप्रवेश के समय न्यूयार्क में हो तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न न्यूयार्क के अक्षांश–रेखांशानुसार ही होना चाहिए। क्योंकि प्राचीनकाल में अधिकतर लोग अपने जन्मस्थान को छोड़कर बहुत कम दूसरे स्थान पर जाते थे, अतः ज्योतिषी लोगों में वर्षप्रवेश के लग्न को जन्मस्थान से ही जोड़ने की परम्परा बन गई, जो तर्कसंगत नहीं है।

इस विषय को स्पष्टता से जानने के लिए 'सं. 2052 वि. के' "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" में पृ. 41/42 पर मेरा लेख "वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए?" पढ़ें।

मास प्रवेशकाल

भिन्न–भिन्न राशियों में संचार करता हुआ सूर्य जब–जब जातक के जन्म–कालिक स्पष्ट सूर्य की अंश, कला, विकलाओं के तुल्य अंश, कला, विकलाओं पर आता है, तब–तब जातक के मासों का प्रारम्भ (मासप्रवेश) होता है। उदाहरणार्थ– यदि जातक का जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य 2 रा. 10 अं. 25 क. 40 वि. है, तो जब जब (सूर्य) जातक की आयु के विभिन्न वर्षों में मेष आदि राशियों के 10 अं. 25 क. 40 वि. पर पहुँचेगा– इसका निर्णय सूर्य की मास–प्रवेश वाले दिन की गति और उस दिन के पंचांगस्थ दैनिक सूर्य तथा मास–प्रवेशकालिक सूर्य के अन्तर से त्रैराशिक द्वारा किया जा सकता है। (इसके लिए सं. 2050 वि. के "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" में पृष्ठ 41 पर दिया गया मेरा लेख "स्पष्टमान से मास–प्रवेशकाल" पढ़ें।)

–प्रियव्रत शर्मा

ग्रहशील-चक्र

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रहाः
३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	०	३/१०	३/१०	एकपाददृष्टिः
५/९	५/९	५/९	५/९	०	५/९	५/९	५/९	५/९	द्विपाददृष्टिः
४/८	४/८	०	४/८	४/८	४/८	४/८	४/८	४/८	त्रिपाददृष्टिः
७	७	४/७/८	७	५/७/९	७	३/७/१०	७	७	सम्पूर्णदृष्टिः
चं. मं. गु.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बुध	मित्र—ग्रहाः
बु.	मं.श.गु.शु.	शु. श.	मं. गु. श.	रा. श.	मं. गु.	गु.	गु.	०	समग्रहाः
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रुग्रहाः
मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	मिथुन	धनु	उच्चराशयः
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५	परमोच्चांशाः
तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	धनु	मिथुन	नीचराशयः
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५	नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे., वृश्चि.	मि., क.	ध., मी.	वृष, तुला	म., कुं.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्णः
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पुरुष, स्त्री, नपुंसकः
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लौह	लौह	लौह	धातु
चतुष्पद	बहुपद्	चतुष्पद	द्विपद्	द्विपद्	द्विपद्	भुजंगपद्	अपद्	अपद्	पाद्
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्त्व	सत्त्व	तम	रज	सत्त्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षी,स्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभू	दुग्ध	श्मशान	वाणी	जल	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	धूम्र	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर	स्थानम्

वर्ष में योगिनी के लिए जन्मनक्षत्रसंख्या में गताब्द जोड़ें, ३ और जोड़ें, ८ से भाग दें, तो शेष मंगलादि योगिनी दशा होती है।

वर्षयोगिनीमतेन मुद्दादशा (मास–दिन)

मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

गर्भयोग–

वर्ष–कुण्डली में लग्नेश पांचवें या सातवें पड़ा हो व पंचमेश और सप्तमेश लग्न में पड़े हों तो उस वर्ष गर्भयोग होता है। मुंथेश और चन्द्रमा बली होकर पांचवें हों और पंचमेश भी बली हो तो गर्भ होता है।

जन्मपत्री न हो तो वर्ष बनाने की रीति

स्पष्ट प्रश्नलग्न की राशि को छोड़कर अंशादिक की कला करें, फिर उसमें १५० (डेढ़ सौ) का भाग दें। लब्ध, जो राश्यादि चार फल आवे उसकी राशि के अंक में प्रश्नलग्न की राशि के अंक मिलाएं। प्राप्तांक को मुन्था का स्पष्ट लग्न समझें और प्रश्नलग्न से चतुर्थराशि के स्वामी को जन्मलग्नेश जानें अर्थात् पंचाधिकारियों में जन्मलग्नपति के स्थान में प्रश्नलग्न से चतुर्थराशि का स्वामी जो हो उसे लग्नेश समझिए। प्रश्नपत्र पर वर्ष बनाने में इतना ही विशेष है। अन्य सर्व रीति में कुछ न्यूनाधिक नहीं है।

अरिष्ट योग

यदि जन्मलग्न ही वर्ष लग्न हो और जन्मनक्षत्र भी वर्ष में आ जाए तो यह द्विजन्मा वर्ष अशुभ है। वर्ष में गुरु, चन्द्र शुभ न हों तो अशुभ, कष्टभय होता है। वर्ष में गुरु, चन्द्र शुभ हों तो अशुभ फल नहीं होगा।

आवश्यक मुहूर्त्त

कोई भी कार्य यदि शास्त्र–सम्मत शुभ–मुहूर्त्त में किया जाए तो वह अवश्य सफल होकर सुखप्रद होता है। गया–गोदावरी–यात्रा में, नवरात्रकृत्य में एवम् चातुर्मास्य व्रत में गुरु–शुक्रास्त का दोष नहीं होता।

गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त्त

शुभ तिथियां– १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३। **शुभ नक्षत्र–**तीनों उत्तरा, मृ., ह., अनु., रो., स्वा., श्र., ध., श.। **शुभ लग्न–** जब लग्न और ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों;३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; सूर्य, मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांश में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से पहली चार रात्रि छोड़ कर १६ रात्रि तक समरात्रि में गर्भ हो तो पुत्र, विषम में हो तो कन्या होती है।

चित्रा, पुन. पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिए मध्यम हैं।

गर्भाधान के लिए अशुभकाल

भद्रा; ४, ६, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां; संक्रान्ति का दिन, सन्ध्याकाल, मंगल, रवि, शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां; ज्येष्ठा, रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो–दो घड़ी; मूल, अश्विनी और मघा के आदि की २–२ घड़ी; ४, ८, १२ लग्नों के अन्त की आधी–आधी घड़ी; ५, ९, १ लग्नों की आधी–आधी घड़ी; ५, १, १५ तिथियों के अन्त की एक–एक घड़ी; ६, ११, १ तिथियों के आदि की एक–एक घड़ी; निर्बल तारा, जन्मनक्षत्र, मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा नक्षत्र एवम् ग्रहण के दिन, व्यतिपात, वैधृति योग; माता–पिता के श्राद्ध का दिन; दिन का समय; परिघ योग का आधा भाग; उत्पात से हत नक्षत्र; जन्मराशि से अष्टमलग्न; पापयुक्त लग्न तथा पापाकान्त नक्षत्र गर्भाधान के लिए वर्जित है।

गर्भमासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भाधान समय का लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री–पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल देखना चाहिए और अन्यकार्यों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए– यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन संस्कार का मुहूर्त्त

यह संस्कार गर्भधान के तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को मृग., पुन., पु., ह., मू. और श्रवण नक्षत्रों में; १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ १५ तिथियों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तो शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी, रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं।

सीमान्त संस्कार का मुहूर्त्त

गर्भाधान के छठे या आठवें मास में जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त्त में निर्दिष्ट तिथियों, वारों, नक्षत्रों और लग्नों में सीमान्त शुभ होता है। **"सीमान्त जातकादीनि प्राशनान्तानि यानि वै। न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः।।"**

गर्भ–रक्षा के लिए विष्णुपूजा

गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में; शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब गर्भ की रक्षा के लिए विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

मेधाजनन संस्कार

बालक के उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्णसहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर **"ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भू र्भुवः स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्व त्वयि दधामि"**– इन पांचों मन्त्रों से बालक को थोड़ा–थोड़ा चार बार मधु चटावें– ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तनपान कराने व सूतिकापथ्य का मुहूर्त

रिक्ता., अमा, भद्रा, व्यतिपात एवं वैधृति को छोड़कर शुभ तिथियां हों; वार चं. बु. गु. श. हों; नक्षत्र मृग., पुन., पु., श्र., रे., म. हों– तब स्तनपान कराना शुभ है। आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि, नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त्त

रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृग., ह., स्वा., अश्वि. और अनु. नक्षत्रों में; रवि, गुरु और भोम वारों में; १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियों में शुभ हैं। आर्द्रा, पुन., पु., श्र., म., भ., कृ., वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं। अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं।

प्रसूता स्त्री द्वारा जलपूजन का मुहूर्त्त

मास समाप्त होने पर बुध, गुरु या चन्द्रवार को ४, ९, १४, तिथियों को **छोड़कर** अन्य तिथियों में श्र., पुन., पु., मृ., ह., मू., अनु., नक्षत्रों में जलपूजन उत्तम **है। परन्तु** गुरु और शुक्र के अस्त में; चैत्र, पौष या अधिक मास में (मास पूरा होने पर भी) जलपूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकरण का मुहूर्त्त

संक्रान्तिदिन, भद्रा और व्यतिपात को छोड़कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११ १२, १३ तिथियों में जन्मकाल से ११वें या १२वें दिन सोम, बुध और शुक्रवार को मृ., रे., चि., अनु., तीनों उत्तरा, रो., ह., अश्विनी, पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तब शुभ होता है।

अथ दोला (झूला) आरोहणमुहूर्त्त

जन्म दिन से १०, १२, १६, १८, ३२वें दिन शुक्रवार में; मृ., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पुष्य, अभि., तीनों उत्तरा, रो. नक्षत्रों में ४, ९, १४, ३० तिथियों के अलावा अन्य तिथियों में; १, ४, ७, १० लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर एवं १, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११ वें शुभग्रह हों तथा ३, ६, ११ वें पापग्रह हो तो उत्तम होता है।

निष्क्रमण का मुहूर्त्त

सूर्य नक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५ नैरोग्य	५ मरण	५ कृषता	५ व्याधि	७ सौख्य

स्वा., अश्वि., पुन., ह., मू., पु., अनु., श्र., रो., ध. नक्षत्रों में; भौम एवं शनि को छोड़कर अन्य वारों में, रिक्ता, अमा, भद्रादि से रहित शुभ दिन में; तीसरे, चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होने पर १२वें दिन बालक का निष्क्रमण करें। इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करा दें।

भूम्युपवेशन—मुहूर्त्त

पांचवें महीने में पृथ्वी, वाराह का पूजन करके भौम के पूर्ण बल में तीनों उत्तरा, रो., मृग., ज्ये., अनु., अश्वि., हस्त, पुष्य, अभि— इन नक्षत्रों में; ४, ९, १४, ३०— इन तिथियों को छोड़कर स्थिर लग्न एवं शुभ दिन में बालक के करधनी का त्रिसूत्र बांधकर पृथ्वी पर बैठाएं।

भूम्युपवेशन के लिए मंत्र— " रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये।" इति।।

इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रखें। जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी आजीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त्त

जन्ममास से ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११ वें मास में कन्या का भद्रादि दोषरहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में; सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को म., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पु., अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में; जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष, वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़कर शेष लग्नों में; १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों या शुभ ग्रह की दृष्टि हो; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; दशम स्थान पापग्रहरहित हो; १, ६, ८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी—किसी के मत से जन्मनक्षत्र अनु., शततारिका (शतभिषा) और स्वाती अशुभ हैं।

कर्णवेध का मुहूर्त्त

चैत्र, पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्त्तिक शुक्ल ११ तक), जन्ममास, जन्मनक्षत्र, ४, ९, १४ तिथियां, जन्मतारा, क्षयतिथि और सम वर्षों को छोड़कर जन्म के १२वें या १६वें दिन; ६वें, ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को श्र., ध., पुन., मृ., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पुष्य, अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो; १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; तुला, वृष, धनु या मीन लग्न में बृहस्पतिवार हो तो कर्णच्छेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के समय पर करने से मनुष्य के हर्निया (अंत्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या के नासिकाच्छेदन का मुहूर्त्त

कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत., स्वा. में शुभ तिथ्यादिक, **शुक्लपक्ष** में दिन के प्रथम प्रहर के समय नासिका वेध शुभ है।

मुण्डनमुहूर्त्त

गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३रे, ५वें, ७वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोडकर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टम लग्न को छोड़कर; २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रान्तिदिन को छोड़कर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रहरहित) हो; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; ज्ये., मृ., रे., चि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., ह., अश्वि., पुष्य और अभिजित् नक्षत्रों में मुण्डन शुभ है।

ध्यान रहे– लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु पांच वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए।

मुण्डनकर्म में विशेष–स्वकुल–शिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र, तिथ्यादि; शुभ समय में अपने–अपने इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, जो "यथा कुलधर्म वः"– इस स्मृति के अनुसार से ठीक ही है।

क्षौर बनवाने का मुहूर्त्त

मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाये गए हैं वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ हैं– वर्जित काल–शनि, रवि, भौमवार; हजामत में नौवें दिन, संध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रान्तिदिन, रात्रि में, बिना आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर और भोजन के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

विशेष फल– यज्ञ, विवाह, मृतककर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय(बिना मुहूर्त्त के भी) हजामत बनवाई जा सकती है। किसी–किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे रूपजीवी (जैसे– नट–भांड आदि) किसी भी दिन हजामत बनवा सकते हैं।

कर्णवेध और क्षौर का वार– ब्राह्मण रविवार को,, क्षत्रिय सोमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त्त

जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायण सूर्य में गणेश, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., श्र., स्वा., रे., पुन., आर्द्रा, चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में बुरे योगों और भद्रा को छोड़कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है। लग्न में मेष, कर्क तुला और मकर राशियां नहीं होनी चाहिएं।

विद्यारम्भ का मुहूर्त्त

उत्तरायण में (कुम्भ के सूर्य को छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को; २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में; भ.., आर्द्रा, पुन., हस्त, चि., स्वा., श्र., ध., शत., अश्वि., म., तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रो., पुष्य, आश्ले., अनु., रेवती नक्षत्रों में; जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है।

फारसी, अंग्रेज़ी विद्यारम्भ का मुहूर्त्त

सूर्य, भौम, शनिवार हों; ४, ९, १४ तिथि हों; ज्ये., आश्ले., म., तीनों पूर्वा, भ., कृ., वि., आर्द्रा, उ. षा., शत. नक्षत्र शुभ हैं।

सीने–पिरोने (सूचिकर्म) का मुहूर्त्त

अश्वि., पु., चि., अनु., ध. नक्षत्र; सूर्य, बुध, चन्द्र, गुरु, शनि वार एवम् १; २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९ १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीत संस्कार का मुहूर्त्त

यज्ञ और उपवीत– इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है। देवताओं की पूजा, संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हों, उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत का अर्थ है– पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु–धागाविशेष)– यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक को गुरु, चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से या गर्भ से **(गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः)** ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११वें, वैश्य १२वें, वर्ष में करें। यदि इन वर्षों में न किया जा सके तो ब्राह्मण १६, क्षत्रिय २२ और वैश्य २५वें वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं। उसके बाद सावित्रीपतित व्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह., अश्वि., पुष्य, अभि., ३ उत्तरा, रो., आश्ले., स्वा., श्र., ध., मू., मृग., रे., चि., अनु., तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेधरहित, इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय, वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य है) सू., चं., बु., (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श., गुरुवार को शुक्ल २, ३, १०, ११, १२ तथा कृष्ण पक्ष की २, ३, ५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथि (जैसे– आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघ शुक्ल १२), संक्रान्तिदिन तथा रोगबाण को छोड़कर मध्याह्न से पहले शुभ है। शु., गु., चं. और लग्नेश ६, ८ स्थानों में चं., शु. १२वें स्थान में और १, ५, ८वें भावों में पापग्रह अशुभ है। शुभ ग्रह ६, ८, १२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में; पाप ग्रह ३, ६, ११ स्थानों; वृष या कर्क का पूर्ण चन्द्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु, शुक्र के बाल्य–वृद्धत्त्व–अस्त के समय को छोड़कर उपनयन शुभ है। यदि गोचराष्टक वर्ग से बालक के उपनयन संस्कार के लिए समयशुद्धि न मिले अथवा सिंह, मकर किंवा अशुभ स्थान में गुरु हो तो सौर चैत्र में उपनयन संस्कार किया जा सकता है–ऐसी शास्त्र की आज्ञा है।

मेलापक सारणी देखने की रीति और अष्टकूट दोषों के परिहार

लेखक:- प्रियव्रत शर्मा

आगे चार पृष्ठों पर 'मेलापक सारणी' दी गई है । इसके बाई ओर पहिले,दूसरे कालमों में लड़की की और सबसे ऊपर वाली पहिली,दूसरी पंक्तियों में लड़के की राशियां तथा चरण-नक्षत्र दिए गए हैं । लड़की के नक्षत्र चरण के आगे लड़के के नक्षत्र-चरण के नीचे वर्ण आदि अष्टकूटों के गुण और मिलान में होने वाले वर्ण आदि दोषों का निर्देश है । वर्ण आदि दोषों के लिए नीचे लिखे सांकेतिक अक्षरों का इस सारणी में प्रयोग किया गया है:-

वर्ण दोष के लिए	= ब	राशीश दोष के लिए	= र
वश्य दोष के लिए	= व	गण दोष के लिए	= ग
तारा दोष के लिए	= त	भकूट दोष के लिए	= भ
योनि दोष के लिए	= य	नाडी दोष के लिए	= न

उदाहरणार्थ - यदि लड़की का जन्म चित्रा के ४ र्थ चरण में और लड़के का पू. भा. के **३ य चरण में हुआ हो तो इनके मिलान में इस मेलापक सारणीसे अष्टकूटों के गुण १८ ३/२ मिले, और ज्ञात हुआ कि इस मिलान में त (तारा), य (योनि), ग (गण), तथा भ (भकूट) दोष हैं ।**

अष्टकूट दोषों के परिहार-

वर, कन्या के राशीशों अथवा नवमांशेशों की मैत्री तथा राशीशों , नवशांशेशों की एकता द्वारा नाड़ी दोष के अलावा शेष सभी दोषों का परिहार हो जाता है । राशीश-नवमांशेशों की मैत्री-एकता के अलावा अन्य और भी अनेक परिहार हैं, जिनसे वर्ण आदि दोष दूर हो जाते हैं। इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है -

(१) वर्ण दोष का परिवार:- वर की राशि के वर्ण से कन्या की राशि का वर्ण उत्तम होने पर वर्ण दोष होता है । लेकिन यदि वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो तो वर्ण दोष का परिहार हो जाता है । सभी ग्रहों के वर्ण इस प्रकार हैं:-

रवि का वर्ण क्षत्रिय,चन्द्र का वैश्य,मंगल का क्षत्रिय,बुध का शूद्र, गुरु का ब्राह्मण, शुक्र का ब्राह्मण और शनि का शूद्र है ।

(२) वश्य दोष का परिहार:- वर कन्या की राशियों की योनिमैत्री होने पर वश्य दोष दूर हो जाता है ।

(३) तारा दोष का परिहार:-वर कन्या के राशीशों, नवमांशेशों की मैत्री या एकता के अलावा तारा दोष का दूसरा कोई परिहार नहीं है ।

(४) योनि दोष का परिहार:- भकूट और वश्य कूटों में से कोई एक भी यदि शुभ(ठीक) हों तो योनिदोष का परिहार हो जाता है ।

(५) राशीश दोष का परिहार:- भकूट शुभ होने पर (यानि द्विर्द्वादश, नवपंचम और **षडष्टक का अभाव होने पर**) राशीश दोष दूर हो जाता है ।

(६) गण दोष का परिहार:- वर -कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों या भकूट दोष न हों तो गण दोष दूर हो जाता है।

(७) भकूट दोष का परिहार :- वर कन्या के राशीशों, नवांशेशों की मैत्री या एकता ही भकूट दोष का प्रमुख परिहार है। यदि इसके साथ ताराशुद्धि या वश्यशुद्धि भी हो तो भकूट दोष का उत्तम परिहार माना जाता है ।

(८) नाड़ी दोष का परिहार :- वर,कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों, अथवा नक्षत्र एक और राशियां, भिन्न-भिन्न हों तो नाड़ी दोष दूर हो जाता है । दोनों के नक्षत्रों के चरणों का वेध न होने की स्थिति में भी नाड़ी दोष का परिहार माना जाता है ।

नाड़ी दोष के परिहार के प्रसंगमें वर-कन्या में से किसी एक का जन्म नक्षत्र के प्रथम चरण में और दूसरे का चतुर्थ चरण में अथवा एक का द्वितीय चरण में और दूसरे का तृतीय चरण में हुआ हो तो पादवेध मान लिया जाता है । लेकिन यह नियम सर्वत्र लागू नहीं होता । इसके स्पष्टीकरण के लिए सं. २०४७ के 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' में पृष्ठ ३४ पर दिया गया मेरा लेख **''पाद वेध द्वारा नाड़ी दोष के परिहार में परम्परागत एक भ्रांति''** पढ़ना चाहिए । यह लेख मेरी पुस्तक **'ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन'** में भी है ।

ध्यान दें:-जैसा कि ऊपर भी बता चुके हैं,वर,कन्या के राशीशों,नवमांशों की मैत्री और एकता तो वर्ण,वश्य,तारा,योनि,राशीश,गण और भकूट दोषों का परिहार कर देती है,लेकिन नाड़ी दोष का परिहार इनसे नहीं होता । नाड़ी दोष का परिहार तो केवल उपरोक्त स्थितियों में ही होता है ।

दैवज्ञ को यह विशेष रूप से ध्यान में रखना चाहिए,कि नाड़ीदोष का यदि परिहार नहीं मिले तो किसी भी स्थिति में (भले ही अन्य सातों कूट शुद्ध क्यों न हों, मिलान में गुण अठाईस भी क्यों न प्राप्त हों), सम्बन्ध करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए । इस बारे में मुहूर्तशास्त्रकारों का यही स्पष्ट निर्णय है ।

'नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्'-वाक्य को संहिताकारों ने मान्यता नहीं दी है । 'मुहूर्त चिन्तामणि' आदि अन्य प्रामाणिक मुहूर्तग्रन्थों ने भी इसकी उपेक्षा की है,अत: इसे मान्यता नहीं दी जा सकती।

'एकनक्षत्र जातानां नाड़ीदोषो न विद्यते'- वाक्य भी प्रामाणिक नहीं है । एक ही नक्षत्र में उत्पन्न वर,कन्या को नाड़ी दोष तब नहीं माना जाता, जबकि उनका जन्म भिन्न-भिन्न चरणों में हुआ हो । 'मुहूर्तचिन्तामणि' का वाक्य है -'नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्' (अर्थात् दोनों का नक्षत्र एक होने पर दोष (नाड़ीदोष) की निवृत्ति तभी होती है,जबकि दोनों के चरण भिन्न-भिन्न हों)। **ध्यान रहे,** दोनों का जन्म एक ही नक्षत्र के एक ही चरण में होने पर नाड़ी दोष परमाधिक माना जाता है। एक ही नक्षत्र में पादवेध भी नहीं माना जाता ।

दोषपूर्ण अष्टकूटों के ,परिहारों को प्रमाणित करने वाले शास्त्रवाक्य बहुत हैं,उनको विस्तारभय से यहां उद्धृत नहीं किया गया। उन्हें मेरी पुस्तक **''ग्रहयोग एवं दाम्पत्यजीवन''** में आप देख सकते हैं)

सरलता पूर्वक एक ही दृष्टि में सभी अष्टकूटों के परिहार आ जाएं- इसके लिए नीचे दिया गया यह कोष्ठक देखें :-

अष्टकूट परिहार कोष्ठक

कूट	परिहार
वर्ण	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो।
वश्य	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ योनिमैत्री हो ।
तारा	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।
योनि	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वश्यशुद्धि हो। ३ सद्भकूट हो।
राशीश	१ दोनों के नवमांशेशों में मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो।
गण	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो। ३ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों ।
भकूट	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।*
नाड़ी	१ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न - भिन्न हों । २ दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों । ३ दोनों का नक्षत्र एक और चरण भिन्न - भिन्न हों । ४ पाद वेध न हो।

* यदि इस परिहार के साथ ताराशुद्धि , वश्यशुद्धि में से कोई एक भी हो तो यह परिहार उत्तम माना जाता है।

परिहृत कूट के गुण

वर्ण आदि जो कूट दोषपूर्ण होता है, उसके लिए निर्धारित पूरे गुणों को छोड़ दिया जाता है। जब उस दोषपूर्ण कूट का कोई उपरोक्त परिहार मिल जाए तब उसके पूरे गुणों को पुनः स्वीकार कर उन्हें मेलापक सारणी से प्राप्त गुण संख्या में जोड़कर उस गुणसंख्या को वास्तविक गुणसंख्या माना जाए- ऐसा कुछ आचार्यों का मत है । कुछ आचार्यों का मत है कि परिहार द्वारा दोष का पूरा नहीं, अपितु आंशिक निवारण होता है,अतः परिहृत कूट के आधे गुणों को ही स्वीकार करना चाहिए । यह (दूसरा)मत तर्कसंगत है। इसके अनुसार परिहृत कूट के आधे गुण(उस कूट के लिए निर्धारित पूरे गुणों का आधा भाग)मेलापक सारणी से मिली गुणसंख्या में जोड़कर उसे ही यथार्थ गुणसंख्या मानना युक्तियुक्त है ।

कितने गुण मिलने पर सम्बन्ध कर देना चाहिए ?

परिहृत कूटों की आधी गुणसंख्या को मेलापक सारणी में उपलब्ध गुणसंख्या में जोड़ने. पर मिली गुणसंख्या यदि १६ $\frac{१}{२}$ से कम है तो सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । यदि षडष्टक भकूट का परिहार न मिल रहा हो तब २० से कम गुण संख्या होने पर सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । ध्यान रहे- यहां प्रत्येक स्थिति में नाड़ी दोष का परिहार मिलना नितान्त आवश्यक है। यदि नाड़ी दोष के उपरोक्त परिहारों में से कोई एक भी परिहार न मिल रहा हो तब तो २८ गुण मिलने पर भी सम्बन्ध करने की अनुमति शास्त्रकारों ने नहीं दी है ।

यदि किसी विशेष कारण (विवशता) वश सम्बन्ध करना आवश्यक (अपरिहार्य)हो जाए, तब १६ से कम गुणों और षडष्टक तथा नाड़ीदोष के अपरिहार की स्थिति में भी गाय,अन्न,वस्त्र,सुवर्ण का यथाशक्ति दान, तथा जप -शान्ति करके सम्बन्ध किया जा सकता है । इस स्थिति में कन्या का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने की भी परम्परा है । लेकिन दान,जप,शान्ति करना भी इस स्थिति में अत्यन्त आवश्यक है । साधाराण स्थिति में (नितान्त विवशता की स्थिति के अभाव में) लड़की का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाना सर्वथा अशास्त्रीय है । नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने का 'सिद्धान्त' अपनाने पर तो किसी भी लड़की का किसी भी लड़के के साथ और किसी भी लड़के का किसी भी लड़की के साथ सम्बन्ध बेरोक-टोक किया जा सकता है और वहां अष्टकूटों के गुण इच्छानुसार अधिकाधिक प्राप्त किए जा सकते हैं, जिससे दोषपूर्ण कूटों का परिहार बतलाने वाले सभी शास्त्रवाक्य अर्थहीन हो जायेंगे।

मिलान में कुछ और विचार्य विषय

यद्यपि संहिताओं में इन आठ कूटों के अतिरिक्त अनेक और भी विचार्य विषय मिलते हैं, लेकिन वर्गमैत्री और नृदूर का भी विचार करने की भी कुछ दैवज्ञों में परम्परा हैं,इन दोनों का विवेचन इस प्रकार है-

वर्गमैत्री-

वर्गमैत्री का विचार वर,कन्या के नाम के आदिम वर्णो से सम्बद्ध है। हिन्दी वर्णमाला के अकार आदि स्वर 'अवर्ग', 'क' आदि पांच वर्ण 'कवर्ग', 'च' आदि पांच वर्ण 'चवर्ग', 'ट' आदि पाँच वर्ण 'टवर्ग' त आदि पांच वर्ण 'तवर्ग', 'प' आदि पांच वर्ण 'पवर्ग', 'य' आदि पांच वर्ण 'यवर्ग' तथा 'श' आदि पांच वर्ण 'शवर्ग' कहलाते हैं। इन अवर्ग आदि आठ वर्गों को उपरोक्त क्रमानुसार क्रमशः प्रथम वर्ग, द्वितीय वर्ग, आदि संज्ञाएं दी गई हैं। इन आठ वर्गों केस्वामी क्रमशः गरुड़, मार्जार,सिंह, श्वान,

सर्प, मूषक, मृग और मेष माने गये हैं । प्रत्येक वर्गेश अपने से पंचम वर्ग के स्वामी का शत्रु माना गया है । जैसे :- गरुड़ और सर्प तथा मूषक और मार्जार परस्पर शत्रु हैं ।

नामाक्षरों से वर्ग ज्ञान कोष्ठक :

वर्ग	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
वर्ग के वर्ण	अ, इ, उ,ए	क, ख, ग, घ,ङ	च,छ,ज, झ,ञ	ट,ठ,ड, ढ,ण	त,थ,द, ध,न	प, फ,ब, भ,म	य,र, ल,व	श,ष, स,ह
वर्गेश	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेष

वर, कन्या के नामों के आदिम वर्णों के वर्गो के स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अच्छा नहीं माना जाता, उनका जीवन दुःखमय रहता है ।

यदि वर्गेशों में शत्रुता है तो अष्टकूटों से प्राप्त गुण १७ से अधिक होने पर ही सम्बन्ध करना चाहिए। यदि मिलान में अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १४,१५ ही हों और नाडी दोष न हो तब वर्गेश की एकता (अभिनता) होने पर सम्बन्ध किया जा सकता है-ऐसा कुछ लोगों का मत है

नृदूर

वर का नक्षत्र या नक्षत्र चरण यदि कन्या के नक्षत्र या नक्षत्र चरण से तुरन्त परवर्ती हो तो 'नृदूर' दोष कहलाता है। जैसे - कन्या का जन्म नक्षत्र अश्विनी और वर का भरणी, अथवा कन्या का जन्म अश्विनी के प्रथम चरण में और वर का अश्विनी के द्वितीय चरण में हो तो भी नृदूर दोष होगा। 'नृदूर' दोष का फल मुहूर्त शास्त्रों में बहुत अशुभ लिखा है।

दोनों (वर ,कन्या) की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न या दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों तों नृदूर का परिहार हो जाता है।

अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १६ $\frac{१}{२}$,१७,१८ हों और 'नृदूर' दोष का परिहार न मिले, तब नाड़ी दोष के अभाव में भी मिलान को कुछ मुहूर्त्तकार अच्छा नहीं मानते । १८ से अधिक गुण होने पर 'नृदूर' की उपेक्षा की जा सकती है।

नामराशि से अष्टकूटों का निर्णय

वर और कन्या-दोनों का यदि जन्मकाल ज्ञात न हो, तब दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों (नामों के आदिम अक्षरों से अबकहड़ा चक्र द्वारा निर्णीत राशि और नक्षत्रों) के आधार पर ही मेलापक सारणी से अष्ट कूटों के गुणों का निर्णय करना चाहिए। अपिच यदि वर, कन्या-दोनों में से किसी एक का जन्मकाल ज्ञात न हो तो भी दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों के आधार पर ही अष्टकूटों का निर्णय करना चाहिए। एक की जन्मराशि, जन्मनक्षत्र और दूसरे की नामराशि, नाम नक्षत्र के आधार पर अष्टकूटों का निर्णय करने की अनुमति शास्त्र नहीं देते।

कुज (मंगली) दोष-

निम्नलिखित स्थितियों में कुजदोष (मंगली दोष) माना गया है -

(१) जन्म कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भावमें मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो।
(२) चन्द्र कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या कोई क्रूर ग्रह हो ।
(३) शुक्र से १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो ।

कुजदोष बनाने वाला ग्रह अस्त, नीचस्थ या शत्रुराशिस्थ हो तो कुजदोष का फल अधिक माना गया है । कुजदोष दाम्पत्य जीवन के लिए अच्छा नहीं माना जाता ।

कुजदोष के सामान्य कुछ परिहार -

इन स्थितियों में वर, कन्या का कुज दोष दूर हो जाता है -

(१) **कुजदोष बनाने वाला ग्रह (क्रूरग्रह)** उच्चस्थ स्वराशिस्थ, स्वनवांशस्थ, मित्रराशिस्थ, उच्चनवांश **या मित्रनवांश में हो।**
(२) कुजदोष बनाने वाले ग्रह पर वृहस्पति की पूर्णदृष्टि हो ।
(३) वर-कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोष विद्यमान हो तो दोनों के कुजदोष समाप्त हो जाते हैं।

ध्यान रहे, कुजदोष वाले वर और कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोषों का परिहार मिलने पर कुजदोष का कुफल समाप्त हो जाता है । दोनों की कुण्डलियों में से किसी एक की कुण्डली में ही कुजदोष परिहार हो तो कुजदोष का कुप्रभाव रहता है ।

कुण्डली मिलान की प्रामाणिकता

हमारे ज्योतिष के मानक ग्रन्थों (संहिता, जातक, मुहूर्त्त ग्रन्थों) में वर, कन्या का सम्बन्ध करने से पूर्व उनकी कुण्डलियों में ग्रहस्थितियों के मिलान द्वारा कुजदोष के परिहार की चर्चा कहीं भी नहीं की गई है। पुनरपि कुण्डली मिलान की परम्परा सभी भारतीय प्रदेशों में प्रचलित है । इसका शास्त्रीय मूल अभी तक अज्ञात है। आश्चर्य है- सभी वशिष्ठ, नारद, गर्ग आदि की संहिताओं, मुहूर्त्तमार्तण्ड, मुहूर्त्तचिन्तामणि आदि मुहूर्त्तग्रन्थों तथा वर-कन्या के सम्बन्ध की अनुकूलता के परीक्षण के लिए रचित 'विवाहवृन्दावन' आदि सभी ग्रन्थों में वर-कन्या के सम्बन्ध के लिए केवल अष्टकूटों के परीक्षण का ही निर्देश है, कुण्डली मिलान का कहीं भी नहीं ।

षट्कूट चक्र

वर्ण, वश्य, योनि, राशीश, गण और नाड़ी ज्ञापक चक्र।

राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्र	अश्वि.	भर	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चि.
चरण	१, २ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२
वर्ण	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.
वश्य	च.	च.	च.	च.	च.	च.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	व.	व.	व.	द्वि.	द्वि.	द्वि.
योनि	अ.	ग.	मे.	मे.	स.	स.	स.	श्वा.	मा.	मा.	मे.	मा.	मू.	मू.	गौ.	गौ.	म	व्या.
राशीश	म.	मं.	मं.	शु.	शु.	शु.	बु.	बु.	बु.	चं.	चं.	चं.	सू.	सू.	सू.	बु.	बु.	बु.
गण	दे.	म.	रा.	रा.	म.	दे.	दे.	म.	दे.	दे.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.
नाड़ी	आ.	म.	अ.	अ.	अ.	म.	म	आ.	आ.	आ.	म.	अ.	अं.	म.	आ.	आ.	आ.	म.

राशि	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
नक्षत्र	चि.	स्वा	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	ध.	ध.	श.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा	रेव.
चरण	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४
वर्ण	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.
वश्य	द्वि.	द्वि.	द्वि.	की.	की.	की.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.
योनि	व्या.	म.	व्या.	व्या.	मृ.	मृ.	श्वा.	वा.	न.	न.	वा.	सि.	सि.	अ.	सि.	सि	गौ.	ग.
राशीश	शु.	शु.	शु.	मं.	मं.	मं.	गु.	गु.	गु.	श.	श.	श.	श.	श.	श.	गु.	गु.	गु.
गण	रा.	दे.	रा.	रा.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.
नाड़ी	म.	अं.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	अं.	म.	म.	आ.	आ.	आ.	म.	अं.

वर्ण- ब्रा.= ब्राह्मण, क्ष= क्षत्रिय, वै= वैश्य, शू.=शूद्र

योनि- अ.=अश्व, ग=गज, मे=मेष, स=सर्प, श्वा.=श्वान, मा.=मार्जार, मू = मूषक,म=महिष, व्या=व्याघ्र, मृ=मृग, वा=वानर, न=नकुल, सिं=सिंह

गण- दे=देव, म=मनुष्य, रा=राक्षस

वश्य- च=चतुष्पद, की=कीट, व= वनचर, द्वि=द्विपद, ज=जलचर

राशीश-सू=सूर्य, चं=चन्द्र, मं.=मंगल, बु=बुध, गु=गुरु, शु=शुक्र, श=शनि

नाड़ी- आ=आद्य, म=मध्य, अं=अन्त्य

मेलापक सारणी (भाग 1)

कन्या \ वर		मेष अश्वि. 1,2,3,4	मेष भर. 1,2,3,4	मेष कृत्ति. 1	वृष कृत्ति. 2,3,4	वृष रोहि. 1,2,3,4	वृष मृग. 1,2	मिथुन मृग. 3,4	मिथुन आर्द्रा 1,2,3,4	मिथुन पुन. 1,2,3	कर्क पुन. 4	कर्क पुष्य 1,2,3,4	कर्क आश्ले. 1,2,3,4	सिंह मघा 1,2,3,4	सिंह पू.फा. 1,2,3,4	सिंह उ.फा. 1	कन्या उ.फा. 2,3,4	कन्या हस्त 1,2,3,4	कन्या चित्रा 1,2
मेष	अश्वि. 1,2,3,4	28 न	33	28½ त	18½ ब भ त	21½ ब भ त	22½ ब भ त	26 ब त र	17 ब न त र	19 ब न त र	23½ न त	31½ त	28 ग	21 व भ ग	25 व भ	15½ व भ न त	11 ब भ नतर	9 तबभ यनर	13 [illegible]
	भर. 1,2,3,4	34	28 न	29 ग	19 ब ग भ	21½ ब भ त	14½ ब भ त न	18 न ब त र	26 ब त र	27 ब त र	31½ त	23½ न त	25½ ग त	20 ग व भ	18 व भ न	26 व भ	21½ ब भ र	20 ब भ र त	4 [illegible]
	कृत्ति. 1	27½ ग त	29 ग	28 न	18 ब भ न	10 ग ब न भ	16½ ग ब भ त	20 ग ब त	20 ग ब त	21 ग ब त र	25½ ग त	26½ ग त	23½ न त	16½ व भ न त	20 ग व भ	20 ग व भ	15½ ग व भ	15½ ग व भ र	18 ब भ त
वृष	कृत्ति. 2,3,4	18½ ग भ त	20 ग भ	19 भ न	28 न	20 ग न	26½ ग त	17½ ग ब भ त	17½ ब ग भ त	18½ ग ब भ त	22 ग त र	23 ग त र	20 न त र	18½ न व त र	22 र व ग	22 र व ग	21 ग भ	21 ग भ	23½ भ त
	रोहि. 1,2,3,4	23½ भ त	23½ भ त	11 ग भ न	20 ग न	28 न	36	27½ ब भ	23½ ब भ त	22½ भ ब त य	26 त र य	27 त र	12 ग न तरय	10½ रवग नतय	24½ र व त य	27 र व	26 भ	26 भ	2[illegible] ग
	मृग. 1,2	23½ भ त	14½ भ न त	18½ भ त ग	27½ त ग	35	28 न	19 ब भ न	24 ब भ	22½ ब भ त य	26 त य र	19 त र न	21 त र य ग	19½ गरव त य	15½ र व नतय	24½ र व त	23½ भ त	26 भ	13 भ ग
मिथुन	मृग. 3,4	27 तर	18 न त र	22 त र ग	19½ भ ग त	27 भ	20 भ न	28 न	33	31½ त य	19 भ व तयर	12 भ न वतर	14 भवत यगर	23½ व त य ग	19½ व न त य	28½ व त	31½ त	34	2[illegible] न
	आर्द्रा 1,2,3,4	19 त र न	27 त र	21 त र ग	18½ ग भ त	24½ भ त	26 भ	34	28 न	25 न य	12½ भ न तयर	20 भ व त र	13 गभर वतय	23½ ग त व	29½ व त	21½ न व त	24½ न त	24½ न त	27 ग
	पुन. 1,2,3	20 न त र	27 त र	23 त र	20½ भ त ग	22½ भ त	23½ भ त य	31½ त य	24 न य	28 न	15½ न भ व र	22½ भ व र	17 भ व तरग	22½ य व त ग	26½ य व त	21½ न व त	24½ न त	25½ न त	27 त
कर्क	पुन. 4	22½ ब न त	29½ ब त	25½ ब त ग	22 ब ग त र	24 ब त य र	25 ब त य र	18 बभव रतय	10½ बभव नयर	14½ ब भ रनत	28 न	35	29½ त ग	16½ बभय ग त	20½ ब भ त य	15½ ब भ न त	18 न भ त र	19 न ब वतर	2[illegible] ब [illegible]
	पुष्य 1,2,3,4	30½ ब त	21½ ब न त	26½ ब त ग	23 ब त र ग	25 ब त र	18 ब न त र	11 बभन वतर	18 ब भ वतर	21½ ब भ व र	35	28 न	30 ग	19½ ब भ ग त	15½ ब भ न त	23½ ब भ त	26 ब व त र	27 ब व त र	12 [illegible]
	आश्ले. 1,2,3,4	26 ब ग	24½ ब ग त	22½ न ब त	19 न ब त र	11 गबत नयर	19 ग ब तयर	12 गबत भवयर	12 गबभ वतयर	15 गबत भवर	28½ ग त	29 ग	28 न	15 य ब भ न	15½ गबय भ त	18½ ग ब भ त	21 ग ब वतर	21 ग ब वतर	2[illegible] ब त
सिंह	मघा 1,2,3,4	20 ग व भ	20 ग व भ	16½ व भ न त	17½ वब रनत	9½ वबत गरनय	17½ वबत गरय	21½ व ब गतय	22½ व ब ग त	20½ व ब गयत	16½ ग भ य त	19½ ग भ त	16 न भ य	28 न	30 ग	27½ ग त	16½ व ब गभत	16½ व ब गभत	21½ व ब भ त
	पू.फा. 1,2,3,4	26 व भ	18 व भ न	20 ग व भ	21 ब व र ग	23½ व ब रतय	15½ वबन रतय	19½ व ब नतय	28½ व ब त	26½ व ब त य	22½ य भ त	17½ भ न त	16½ ग भ य त	30 ग	28 न	35	24 व ब भ	22½ व ब भ त	7½ वबत गनभ
	उ.फा. 1	16½ व भ त न	26 व भ	20 व ग भ	21 व ब ग र	26 व ब र	24½ व ब र त	28½ व ब त	20½ व ब न त	21½ व ब न त	17½ भ न त	25½ भ त	19½ ग भ त	27½ ग त	35	28 न	17 व ब भ न	16 व ब भ न	13½ वयब तगभ
कन्या	उ.फा. 2,3,4	13 भ न त र	22½ भ र	16½ ग भ र	21 ग भ	26 भ	24½ भ त	31½ ब त	23½ न ब त	24½ न ब त	20 न व त र	28 व त र	22 ग व त र	17½ ग व भ त	25 भ व	18 व भ न	28 न	27 न	24½ य ग त
	हस्त 1,2,3,4	10 य भ नतर	20 भ त र	17½ भ र ग	22 भ ग	25 भ	26 भ	33 ब	22½ न ब त	24½ न ब त	20 न व त र	28 व त र	23 व त र ग	18½ व भ त ग	22½ व भ त	16 व भ न	26 न	28 न	28 य ग
	चित्रा 1,2	13 गभत यर	5 गभन तयर	19 भ त य र	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	19 ग ब न	26 ग ब य	26½ ग ब त	21 ग व त र	12 गनव तयर	27 व त र	22½ व भ त	8½ ग व भनत	14½ व य गभत	24½ ग य त	27 ग य	28 न

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 2)

वर		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
कन्या		चित्रा 3,4	स्वाती 1,2,3,4	विशा. 1,2,3	विशा. 4	अनु. 1,2,3,4	ज्ये. 1,2,3,4	मूल 1,2,3,4	पूषा. 1,2,3,4	उ.षा. 1,	उ.षा. 2,3,4	श्रव. 1,2,3,4	धनि. 1,2,	धनि. 3,4	शत. 1,2,3,4	पूभा. 1,2,3	पूभा. 4	उ.भा. 1,2,3,4	रेव. 1,2,3,4
मेष	अश्वि. 1,2,3,4	22½ बयतग	26½ बयत	22½ तबयग	18½ गभतय	25½ भत	14 भनग	13½ भनग	25 भ	23½ भत	25 बतर	28 बतर	20 बतयरग	20 बतयरग	15 बनतरग	16 बनतयर	14½ नभतय	24½ भत	26 भ
मेष	भर. 1,2,3,4	13½ बगनतय	29½ बत	21½ गबतय	17½ गभतय	17½ नभत	19½ गभत	20 गभ	18 नभ	26 भ	27½ बर	26 बतर	10 बयगनतर	10 बयगनतर	20 गबतर	24 बयतर	22½ तभय	17½ नभत	26½ भत
मेष	कृत्ति. 1	27½ बतय	15½ बगनत	19½ बनतय	15½ भनतय	19½ गभत	25½ भत	24½ भत	18 गभय	12 गभन	13½ बगनर	11½ बयरगन	25 बतयर	25 बतयर	27 बतर	19 बगतयर	17½ गभतय	19½ गभत	11½ गभतन
वृष	कृत्ति. 2,3,4	22½ बभतय	10½ गबभनत	14½ बभतनय	20½ नतय	24½ गत	30½ त	20 भतर	13½ यगभर	7½ गभनर	12 गभन	10 यगभन	23½ भतय	29½ बतय	31½ बत	23½ गबतय	20 गतयर	22 गतर	14 गनतर
वृष	रोहि. 1,2,3,4	19 गबभ	15½ बभनत	9½ तबगनभ	15½ गनत	29½ त	23½ गत	14 गभतर	19 रभतय	11½ यभनर	16 भयन	17 नभय	20 गभ	26½ गब	24½ गबत	30½ बत	27 तर	27 तर	19 रनत
वृष	मृग. 1,2	12 बभनग	25 बभ	18½ बभतग	24½ तग	21½ नत	24½ तग	15 भतरग	10 नभतयर	17 यभतर	21½ भयत	25 भय	13 नभग	19 बगन	27 बग	29½ बत	26 तर	18 नतर	27 तर
मिथुन	मृग. 3,4	14 नभग	27 भ	20½ भतग	14 भवतरग	11 भवनतर	14 भवतरग	23 तरग	18 नतयर	25 यतर	20 भयवत	23½ भवय	11½ नभवग	13 नभग	21 भग	23½ भत	25½ तवर	17½ नवतर	26½ वतर
मिथुन	आर्द्रा 1,2,3,4	20 गभय	27 भ	20 गभय	13½ रगवभय	17 तभवयर	3 यतगवभनर	16 गनतर	28 तर	28 तर	23 भवत	23 भवत	17½ गभवय	19 गभय	12 गभन	17 नभय	19 नरवय	26½ वतर	26½ वतर
मिथुन	पुन. 1,2,3	20½ भतग	28 भ	22 भग	15½ वभरग	21½ वभर	7 रगवभनत	14 यरतनग	27 तर	27 तर	22 वतभ	23 वतभ	17 वतभयग	18½ भगतय	14 नभग	16 नभय	18 रनयव	28 रव	27½ वतर
कर्क	पुन. 4	20½ बतरग	28 वरब	22 वरबग	20 गभ	26 भ	11½ तगभन	8 वतबभगनय	21 बभवत	21 बभवत	26 बतर	27 बतर	21 बगतयर	12½ बभवतयगर	8 बभवनगर	10 बभरनवय	16 नभय	26 भ	25½ भत
कर्क	पुष्य 1,2,3,4	11½ गनबवतयर	26½ बवतर	21 रबगवय	19 भयग	18 भन	21 भग	17 गबभवत	11 यबभतनव	21 बभवत	26 बतर	25 बयतर	13 गबनतयर	4½ भबगयवनतर	14½ बवतरगभ	18 बभवयर	24 भय	18 नभ	27 भ
कर्क	आश्ले. 1,2,3,4	25½ बवतर	12½ गबवतरन	17½ नबवतर	15½ नभत	20 गभ	26 भ	22½ बभवय	16 गबवभत	8 गबवभनत	13 गबरनत	13 बगतनर	26 बतयर	17½ बभवतरय	19½ बभवतर	11½ गबभवतयर	17½ गभतय	21 गभ	13 गभन
सिंह	मघा 1,2,3,4	24½ बवतर	11½ बवतरगन	16½ बवतरन	22½ नवत	25½ गवत	33 व	25 भव	19 गवभ	8½ वगभनतय	3½ बरतयगभन	4½ बरतगभन	18½ बरतभ	24½ बवतर	25½ बवतर	18½ बवरगत	18½ गभत	19½ गभत	13 गभन
सिंह	पू.फा. 1,2,3,4	10½ बवतरगन	25½ बवतर	18½ बवरगत	24½ गवत	23½ नवत	25½ गवत	19 गवभ	17 भवन	24 भवन	17 बरभय	18½ बतभत	4½ बरतगभन	10½ बवतरगन	19½ बवरगत	24½ बवरत	24½ भत	17½ नभत	25½ भत
सिंह	उ.फा. 1	16½ बवतयगर	25½ बवतर	16½ बवयगतर	22½ यवगत	31½ वत	17½ गवतन	9½ गवनभत	25 भव	25 भव	20 बरभ	20 बरभ	11½ बरतगभय	17½ बवतगरय	11½ बवतगनर	15½ बवतनरय	15½ नभतय	26½ भत	25½ भत
कन्या	उ.फा. 2,3,4	16½ गबयभत	25½ बभत	16½ गबयभत	18 यवतगर	27 वतर	13 गवतनर	14 गनतर	29½ र	29½ र	24½ भव	24½ भव	16 गभवतय	16½ गबभतय	10½ गबनभत	14½ बभनतय	17½ तनवयर	28½ वतर	27½ वतर
कन्या	हस्त 1,2,3,4	20 बभयग	26½ बभत	18½ बभतयग	20 वगतयर	26 वतर	13 नवतरग	15 नतरग	27 तर	28½ र	23½ भव	24½ भव	18½ भगवर	19 बभयग	8½ बयभनतग	13½ बभनतय	16½ वनतयर	26½ वतर	27½ वतर
कन्या	चित्रा 1,2	20 बभन	19 गबभय	26½ बभत	28 वतर	11 गवनतयर	25 वतयर	27 तयर	14 गनतर	22 गतर	17 गभत	18½ गभव	15½ भवनय	16 बयभन	24 बभय	16½ गबतभय	19½ गवतयर	10½ गयवनतर	19½ वगतयर

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीशदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 3)

वर / कन्या		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. 1,2,3,4	भर. 1,2,3,4	कृत्ति. 1	कृत्ति. 2,3,4	रोहि. 1,2,3,4	मृग. 1,2	मृग. 3,4	आर्द्रा 1,2,3,4	पुन. 1,2,3	पुन. 4	पुष्य 1,2,3,4	आश्ले. 1,2,3,4	मघा 1,2,3,4	पू.फा. 1,2,3,4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1,2,3,4	चित्रा 1,2
तुला	चित्रा 3,4	22½ गतय	14½ गनतय	28½ तय	23½ भतय	20 गभ	12 गभन	13 गभन	21 गभ	19½ गभत	20½ गरवत	11½ गनयवरत	26½ वतर	25½ वरत	11½ वरगनत	17½ वयगरत	17½ यगभत	20 गभय	21 भन
	स्वाती 1,2,3,4	27½ यत	29½ त	17½ नत	12½ भनत	15½ भनत	26 भ	27 भ	26 भ	28 भ	29 वर	27½ वतर	14½ नवतर	13½ वनतग	25½ वरत	25½ वरत	25½ भत	27½ भत	21 भवग
	विशा. 1, 2,3	22½ तयग	22½ तयग	20½ तयन	15½ तभनय	10½ गभतन	18½ गभत	19½ गभत	20 गभय	21 गभ	22 गवर	21 गतर	18½ नवतर	17½ वरतन	19½ वरतग	17½ वयरगत	17½ यगभत	18½ गभतय	27½ भत
वृश्चिक	विशा. 4	16½ बगभयत	16½ बगभयत	14½ बभनयत	19½ बनयत	14½ बगनत	22½ बगत	12 बवरगभत	12½ वबयगभर	13½ बवगभर	19 गभ	18 गभय	15½ भनत	21½ बवनत	23½ बवगत	21½ बवगयत	17 तबवगयर	18 बवगतयर	27 बवत
	अनु. 1,2,3,4	24½ बभत	15½ बभनत	19½ बभगत	24½ बतग	27½ बत	20½ बनत	10 बवतनभर	15½ तबवरभय	20½ बवभर	26 भ	18 भन	21 भग	24½ बवतग	20½ बवतन	29½ बवत	25 बवतर	26 बवत	[illegible]
	ज्येष्ठा 1,2, 3,4	12 बगभन	18½ बगतभ	24½ बभत	29½ बत	22½ बगत	22½ बगत	12 तबवगभर	2 तवबयगभनर	5 तबवरगभन	10½ तगभन	20 गभ	26 भ	31 बव	23½ बवगत	16½ तबवगन	12 तबवगनर	12 तबवगनर	[illegible]
धनु	मूल 1,2,3,4	12 गभन	20 गभ	24½ भत	19 बभतर	13 बगतभर	13 रबगतभ	21 बगतर	15 बगनतर	12 रबगतनय	8 यगभवनत	17 गभवत	23½ भवय	25 वभ	19 वगभ	9½ तवगभन	13 तरबगन	13 तरबगन	[illegible]
	पूषा. 1,2,3,4	26 भ	18 भन	18 गभय	12½ बयगभर	18 बभतयर	10 रबभतनय	18 बनतयर	27 बतर	27 बतर	23 भवत	13 यभनवत	17 गभवत	19 वगभ	17 वभन	25 वभ	28½ बर	27 बतर	[illegible]
	उ.षा 1	24½ भत	26 भ	12 गभन	6½ रबयभन	10½ बयरभन	17 बयतभर	25 बयतर	27 बतर	27 बतर	23 भवत	23 भवत	9 गभवनत	8½ तगवयभन	24 वभय	25 वभ	28½ बर	28½ बर	[illegible]
मकर	उ.षा. 2,3,4	27 तर	28½ र	14½ गनर	12 गभन	16 भनय	22½ यभत	20 बयतभ	22 बभत	22 बभवत	28 तर	28 तर	14 गनतर	4½ तयरगभन	20 रभय	21 रभ	24½ भत	24½ वभ	17 गव
	श्रव. 1,2,3,4	27 तर	26 तर	13½ यनर	11 यभगन	16 भनय	25 भय	22½ बभवय	21 बभवत	22 बभवत	28 त	26 यतर	15 नतर	6½ तगरभन	18½ रभत	20 भर	23½ भव	24½ भव	19½ भ
	धनि. 1,2	20 गतयर	11 यगनतर	26 तयर	23½ भतय	20 गभ	12 गभन	9½ वबगभन	16½ वयबगभ	16 बगवतभ	22 गतर	13 रगनतय	28 तर	19½ रभत	5½ तगरभन	12½ तयरगभ	16 गभवतय	17½ गभव	15 भव
कुम्भ	धनि. 3,4	20 गतयर	11 यगतनर	26 तयर	30½ तय	27 ग	19 गन	12 गभन	19 गभय	18½ गभत	13½ गभवतर	4½ तयरगभनव	19½ भवतर	25½ वतर	11½ वतरगन	18½ वरगतय	17½ गभतय	19 गभय	17 यभन
	शत. 1,2,3,4	15 गनतर	21 गतर	28 तर	32½ त	25½ गत	27 ग	20 गभ	12 गभन	13 गभन	8 गभवनर	14½ गभवतर	20½ वभतर	26½ वरत	20½ वरगत	12½ वरतगन	11½ तगनभ	8½ तयगनभ	25 भय
	पूभा. 1,2,3	18 नतयर	25 यतर	20 गरतय	24½ गतय	31½ त	31½ त	24½ भत	17 भनय	18 भन	13 भनव	20 भरवय	13½ गभवतर	19½ वरतग	25½ वरत	16½ वरयनत	15½ भनत	15½ भनतय	17½ गभतय
मीन	पूभा. 4	14½ बभतनय	21½ बयतभ	16½ गबतभय	19 गबतयर	26 बतर	26 बतर	25½ बवतर	18 बनवयर	19 नबवर	18 नभ	25 भय	18½ गभत	17½ बगतभ	23½ बभत	14½ बभतनय	16½ रबनवतय	16½ रबनवतय	18½ रबगवतय
	उ.भा. 1,2,3,4	24½ बभत	16½ बभतन	18½ गबतभ	21 गबतर	26 बतर	18 नबतर	17½ नबवतर	25½ बरवत	28 बवर	27 भ	19 भन	21 गभ	18½ गबतभ	16½ बभन	25½ बभत	27½ बवतर	26½ बवतर	9½ बतरवयगन
	रेव. 1,2,3,4	25 बभ	24½ बभत	11½ तगबभन	14 गबनतर	17 वनतर	26 बत	25½ बरवत	24½ रबवत	26½ रबवत	25½ भत	27 भ	14 भनग	13 बभगन	23½ बभत	23½ बभत	25½ बरवत	26½ बरवत	19½ बयरवतग

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 4)

वर \ कन्या		तुला चित्रा 3,4	तुला स्वाती 1,2,3,4	तुला विशा. 1,2,3	वृश्चिक विशा. 4	वृश्चिक अनु. 1,2,3,4	वृश्चिक ज्ये. 1,2,3,4	धनु मूल 1,2,3,4	धनु पू.षा. 1,2,3,4	धनु उ.षा. 1	मकर उ.षा. 2,3,4	मकर श्रव. 1,2,3,4	मकर धनि. 1,2	कुम्भ धनि. 3,4	कुम्भ शत. 1,2,3,4	कुम्भ पू.भा. 1,2,3	मीन पू.भा. 4	मीन उ.भा. 1,2,3,4	मीन रेव. 1,2,3,4
तुला	चित्रा 3,4	28 न	27 गय	34½ त	23½ भद त	6½ यगव तनभ	20½ भव तय	27 तय र	14 गभ तर	22 गत र	25 गत व	26½ गव	23½ नव य	18 नभ य	26 भय	18½ गभ तय	12½ गभव तयर	3½ वतयग भनर	12½ यरग भवत
	स्वाती 1,2,3,4	28 यग	28 न	20 नय ग	9 भवय नग	21½ भव त	16½ भव तग	23 तर ग	27 तर ग	19 तन र	22 नव त	23 नव त	26½ वय ग	21 यग भ	20 गय भ	25 यभ	19 वभ यर	19½ वत भर	12½ वतभ नर
	विशा. 1,2,3	34½ त	19 गन य	28 न	17 भव न	16 गव भय	20½ भव तय	27 तय र	22 गत र	14 गन तर	17 गन वत	17 गन वत	30 वत य	24½ भत य	26 भय	20 गभ य	14 गभव यर	13 गयभ तर	4½ गभव नतयर
वृश्चिक	विशा. 4	22½ बव भत	7 बवग नभय	16 बव नभ	28 न	27 गय	31½ तय	21½ बवत यभ	16½ बवग भत	8½ बवग नभत	12 गबन तर	12 बनग तर	25 बत यर	24 बवत यर	25½ बव यर	19½ बवग यर	19 गभ य	18 गय भ	9½ गभन तय
	अनु. 1,2,3,4	6½ बवतभ यगन	21½ बव भत	16 बवभ यग	28 यग	28 न	31 ग	15½ बवत गयभ	13½ तबव नभ	21½ बव तभ	25 बत र	26 बत र	12 तयब नरग	11 तयबव नरग	21 बवत रग	24½ बव यर	24 भय	18 नभ	27 भ
	ज्येष्ठा 1,2,3,4	19½ बवत भय	15½ तबव गभ	19½ बवभ तय	31½ तय	30 ग	28 न	14 बवन भय	16½ बवत गभ	16½ बवत गभ	20 गव तर	20 गब तर	25 बत यर	24 बवत यर	18 बवन रत	10 तबवय गनर	9½ गभत नय	21 गभ	21 गभ
धनु	मूल 1,2,3,4	26 तब यर	21 गब तर	26 तब यर	22½ भव तय	15½ गवभ यत	15 यव नभ	28 न	28 ग	26½ गत	15 गबभ वत	15 गबभ वत	20 बभव तय	28½ बव य	21½ बन त	14½ गनब तय	16 गनव तय	25 गव त	26 गव
	पू.षा. 1,2,3,4	13 गबत नर	27 बत र	21 गब तर	17½ गव भत	15½ भव नत	17½ गव भत	28 ग	28 न	34	22½ बभ व	23 बभ वत	6 गबवभ नतय	14½ गबत नय	23½ गब त	28½ बत य	30 वत य	23 नव त	31 वत
	उ.षा 1	21 गब तर	19 नब तर	13 गबन तर	9½ गवभ नत	23½ भव त	17½ गव भत	26½ गत	34	28 न	16½ बभ वन	14½ बभ वन	15 गबव भत	23½ गब त	23½ गब त	29½ बत	31 वत	31 वत	23 नव त
मकर	उ.षा. 2,3,4	24 गब त	22 नब वत	16 गब नत	13 गन तर	27 तर	21 गत र	16 गभ वत	23½ भव	17½ न भव	28 न	26 न	26½ गत	17 गबभ वत	17 गबव भत	23 बभ वत	30½ त	30½ त	22½ नत
	श्रव. 1,2,3,4	26½ बव ग	22 नब वत	17 नबग वत	14 नत र	27 तर	22 तर	17 भव तग	23 भव त	14½ नभ व	25 न	28 न	28 यग	18½ बभव यग	18 बभव तग	21 बभव तय	28½ तय	29½ त	22½ नत
	धनि. 1,2	22½ नब वय	24½ गब वय	29 बव तय	26 तय र	12 गनत यर	26 तय र	21 भव तय	7 गभय वनत	16 गभ वत	26½ गत	27 गय	28 न	18½ बभ नव	23½ बभ वय	19 गबव तभ	26½ गत	15½ गन तय	22½ गय त
कुम्भ	धनि. 3,4	18 नभ य	20 गभ य	24½ भत य	25 तव यर	11 गवय तनर	25 तव यर	29½ तय	15½ गत नय	24½ तग	18 गभ वत	18½ गभ वय	19½ भव न	28 न	33 य	28½ गत	18 गभ वत	7 तगभ वनय	14 गयव भत
	शत. 1,2,3,4	26 भय	19 भय ग	26 भय	26½ यव र	21 गव तर	19 नव तर	22½ नत	24½ गत	24½ गत	18 गभ वत	18 गभ वत	24½ भव य	33 य	28 न	19 गन य	8½ गभव नय	17 गभ वत	16 गभ वत
	पू.भा. 1,2,3	18½ गभ तय	26 भय	20 गभ य	20½ गव यर	26½ वय र	11 गवत यनर	15½ नग तय	29½ तय	30½ त	24 भव त	23 भव तय	20 भग वत	28½ गत	19 नग य	28 न	17½ नभ व	22½ भव य	20 भय वत
मीन	पू.भा. 4	11½ गबवभ तयर	19 बभव यर	13 गबव भयर	19 गभ य	25 भय	9½ गभन तय	15 गबत नय	29 बव तय	30 बव त	29½ बत	28½ बत य	25½ गब त	17 गब भत	7½ गबय भतन	16½ बभ तन	28 न	33 य	30½ यत
	उ.भा. 1,2,3,4	2½ ययबर गभनत	19½ भवब तर	12 गवर भयब	18 गय भ	19 नभ	21 गभ	24 गब वत	22 नब वत	30 बव त	29½ बत	29½ बत	14½ गबत नय	6 गबवन भतय	16 गबव भत	21½ बभ तय	33 य	28 न	35
	रेव. 1,2,3,4	12½ बभव तयर	11½ बभत वनर	4½ बभवन तगयर	10½ नभत यग	27 भ	22 भग	26½ बग व	29 बव त	21 नब वत	20½ नब त	21½ नब त	22½ बय तग	14 बवय भतग	16 बभव तग	18 बयभ वत	29½ यत	34	28 न

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

लग्न–गण्डान्त

कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु, मीन और मेष के अन्त एवम् आदि की आधी–आधी घड़ी लग्नगण्डान्त होता है। वह जन्म में ही भयप्रद होता है।

अथ विवाहमासाः–आचार्य चूड़ामणौ–"माङ्गल्येषु विवाहेषु कन्या–संवरणेषु च। दशमासाः प्रशस्यन्ते चैत्र–पौष–विवर्जिताः॥" वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद्वदन्तीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे यथा यत्र तथैव तत्र॥ केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया॥

अथ जन्म–मासादिषु निषेधः– सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) के जन्ममास (अर्थात् जन्मतिथि से ३० दिन) जन्मनक्षत्र अथवा जन्मतिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं है। **अत्यावश्यके परिहारः**– जातं दिनं दूषयते वशिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो– एक घर में दो शुभ काम करना मना है, परन्तु अति आवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग–अलग मण्डप गाड़कर और जो पुरोहित पहला कार्य करा चुका हो, उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावें। इसी प्रकार जिस गृह में पहला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मण्डप गाड़कर कार्य को करें।

अथ ज्येष्ठ विचारः– ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। अत्यावश्यकता में कृत्तिका के सूर्य को छोड़कर दानादि पूर्वक करें।

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय– दो सगी बहनों का विवाह एक साथ या छः मास के अन्दर करें तो निस्संदेह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट्मास तक कन्या का विवाह न करें और कन्या व पुत्र के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करें, अर्थात् पहले कर लें और मंगलकार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्ध, तिलतर्पण भी न करें। मुण्डन भी विवाह, जनेऊ के पीछे न करें। वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभकार्य कर लें। वहां छः मास का विचार नहीं है। यह ६ महीने का निषेध तीन पीढ़ी तक ही है।

विवाहादि शुभ कार्यों में मरणाशौच– साढ़े चिट्ठी (कुंकम पत्रिका) आने पर विवाह दिन निश्चित हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से एक साल, स्त्री के मरण से तीन मास, भाई व पुत्र के मरण से १ ३/२ मास, कुल वालों के मरण से २२ ३/२ दिन तक कोई शुभ कार्य न करें। अति संकट में ३० दिन बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करें।

त्रिबल शुद्धि विचार

विवाह के शुद्ध मुहूर्त पंचांग के अन्त में दिए गए हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त देखकर और उसी दिन वर की राशि से सूर्य, चन्द्र देखिए तथा कन्या राशि से चन्द्र, गुरु देखिए। बस, इसी को त्रिबलशुद्धि कहते है। यह त्रिबलशुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह–दिन उत्तम है। यदि रवि, गुरु पूज्य हों तो मध्यम है, यदि सूर्य नेष्ट हो तो विवाह नहीं बनेगा–ऐसा समझें। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु.सू.चं.) शुद्धि प्रथम देखें– "झष–चाप–कुलीरस्थो जीवोप्यशुभगोचरः अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु॥ (बृहस्पतिः)॥ अत्यावश्यकता में "द्विरर्च्यो द्वादशस्तुर्योऽथाष्टमस्त्रिगुणार्चनात्। उच्च उच्चांशके ग्राह्यः चन्द्रादष्टमगो रविः। नीचे नीचांशके त्याज्यः अरिलाभादिगोऽपि चेत्॥"

तुलाराशौ अपूज्यःरविः–धर्म–धी–धनगतो दिवाकरस्तौलिराशि–जनितस्य शोभनः।।

आवश्यके पूज्यरवि–परिहारः– गार्ग्याङ्गिरोवत्स वशिष्ठ गौतम पराशराद्याः मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहः॥ (मु.प्र.सा.)।

विवाहादौ त्रिबल–शोधनम्

पूज्यगुरुः– १०/६/३/१
श्रेष्ठगुरुः–९/५/११/२/७
नेष्टगुरुः– ४/८/१२
श्रेष्ठरविः– ३/६/१०/११
पूज्यरविः– २/५/९
विशेष पूज्य रविः– १/७
नेष्टरविः– ४/८/१२
नेष्टचन्द्रः– ४/८
श्रेष्ठचन्द्रः–१/२/३/५/६/

कन्या–वरयोःतैलादि–लापन (बन्न)–दिन–संख्या

राशि →	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैल सं.	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

अथ विवाहे तिथि–वार–नक्षत्राणि–रो. मृ. उत्तरा ३. म. ह. स्वा. अनु. मू. रे एतद्वेध–रहितेषु शुभेऽह्नि। अमाक्षय–रहित–तिथिषु कात्यायनमते अश्वि. चि. श्र. धनिष्ठास्वपि शुभम्॥

अथ विवाहांगकृत्यारम्भ मुहूर्त्तः

वर, कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाहदिन से पहिले ३/६/९– इन दिनों को छोड़कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्दी हाथ, दलना, पीसना, कूटना, मंगलकशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगनसफाई, भूषण घढ़ाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना, चन्दोया बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध, मंगलस्नानादि सर्वकार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाह–मुहूर्त्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चवाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि– इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सबका विचार करके इस वर्ष के विवाहमुहूर्त्त लग्न दिए हुए हैं। इन दसों दोषों में जो दोष जिस मुहूर्त्त में हैं, वे क्रमानुसार टेढी रेखा से सूचित किए गए हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है।

(१) लत्तादोष–ज्ञान चक्र

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	← लग्न नक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	← दिशा
धननाशः	भयम्	मृत्युः	भयम्	बन्धुनाशः	कार्यहानिः	कुलक्षयः	मरणम्	← फलम्

यथा–सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ.फा. का हो। सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ.फा. १२वां हुआ, यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जानें।

(२) पातदोष ज्ञानचक्र

रो.	मृ.	मघा	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे.	विवाह नक्षत्र
आर्द्रा पुन. श. पू.फा. चि. मू.	मृ. आ. ज्ये. ध. म. ह.	अ. मृ. ज्ये. पुष्य ह. रे.	कृ. आ. वि. पू.फा. उ.भा. पू.भा.	भ. मृ. श. पू.भा. स्वा. म.	कृ. श्र. ध. पुष्य ह. रे.	अ. आ. उ.षा. पू.भा. पू.षा. पू.फा.	रो. ज्ये. ध. आश्ले. मू. उ.भा.	भ. पुन. श. वि. अनु. उ.षा.	भ. श. वि. उ.फा. पू.फा. मू.	अ. ज्ये. ध. म. पू.फा. स्वा.	सूर्यस्थित नक्षत्र

हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतिपात, गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करने से पात दोष होता है।

(३) युतिदोष

जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो वहां उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च, मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता, किन्तु श्रेष्ठ है। सू., मं., शु., श., रा., के. की युति दारिद्र्य, मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है।

(४) वेध दोषचक्र

अश्वि.	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
पू.फा.	अभि.	उ.षा.	श्रव.	रेव.	उ.भा.	पू.भा.	शत.	भर.	पुन.	मृग.	मघा	आश्ले.	हस्त	उ.फा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेधदोष होता है। यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग देना चाहिए।

(५) जामित्र दोषचक्र

विवाह नक्षत्र→	रो.	मृग.	म.	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे.
ग्रह नक्षत्र→	अनु.	ज्ये.	ध.	पू.भा.	उ.भा.	ल.	कृ.	मृ.	पुन.	उ.फा.	ह.

विवाहलग्न से सातवें ग्रह होने से जामित्रदोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र और नीचे ग्रह नक्षत्र हैं। यानी 14वें नक्षत्र में पापी ग्रह का जामित्रदोष वर्जनीय है।

(६) बाणज्ञान–चक्र

बाण नाम	गतांशाः प्रति राशौ अर्कस्य	कर्मसु वर्ज्याः	वारे वर्ज्याः	समयपरत्वेन वर्ज्याः
रोगः	८/१७/२६	व्रतबंध	रवौ	रात्रौ त्याज्यम्
अग्निः	२/११/२०/२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृपः	४/१३/२२	नृपसेवायम्	मन्दे	दिवा त्याज्यम्
चौरः	६/१५/२४	यात्रायाम्	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्युः	१/१०/१९/२८	विवाहे	बुधे	संध्ययोः वर्ज्यम्

(७) एकार्गल दोष

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड–ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

(८) उपग्रहदोष

सूर्य के नक्षत्र से ५, ७, ८, १०, १४, १५, १८, १९, २१, २२, २३, २४ और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

(९) स्थूल–क्रान्तिसाम्य–दोषचक्र

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कन्या	तुला
सिंह	मकर	धनु	वृश्चि.	मीन	कुम्भ

नीचे और ऊपर की राशि पर कहीं भी सूर्य एवं चन्द्रमा हो तो स्थूल रूप से क्रान्तिसाम्य दोष होता है। यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे–मेष के सूर्य और सिंह के चन्द्रमा में या सिंह के सूर्य और मेष के चन्द्रमा में। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित है। जिसका निर्णय महापातगणित से करना चाहिए।

(१०) दग्धातिथि–दोषचक्र

९	२	४	६	५	१०	← सूर्य
१२	११	१	३	८	७	राशयः
२	४	६	८	१०	१२	← तिथयः

इन संक्रान्तियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं। विशेषतः ये मध्यप्रदेश में ही वर्ज्य हैं।

"भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीन–विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत्।। –*कश्यपः*

लत्तादि–दोषाणां परिहारवाक्यानि

लत्ता मालवके (उज्जैन प्रान्ते) देशे, पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्रबांगरे) जांगले (फिरोज़पुर–भटिण्डाप्रान्ते)। एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्।। उपग्रहर्क्षं कुरुवाह्लिकेषु (कुरुक्षेत्र, आगराप्रान्ते) कलिंगबंगेषु (जगन्नाथपुरी–बंगाल–अयोध्यायां) च पातितं भम्। सौराष्ट्रे (काठियावाड़े) शाल्वे (उज्जैनप्रान्ते) च लत्तितं भं त्यजेत्तु विद्धं किल सर्वदेशे।। युतिदोषो भवेद्गौडे (बंगाले) जामित्रस्य च यामुने (मथुराप्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः।।

विशेष परिहारः– चित्रांगते पातविचित्रदेशे मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः।।

युतिपरिहारः–स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः।
युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा ॥

अत्यावश्यके वेध–परिहारः–"पादमेकं शुभैर्विद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नतः।"
–(नारदः)

ग्रह प्रथम चरण में हो तो चतुर्थ चरण में वेध होता है, यदि चतुर्थ चरण में हो तो प्रथम चरण विद्ध होता है। द्वितीय में हो तो तृतीय, तथा तृतीय चरण में ग्रह हो तो द्वितीय चरण विद्ध होता है। आवश्यकता में चरणमात्र का त्याग किया जाता है– **भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः ॥**

अस्यापवादः– ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण युक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते।।

एकार्गलोपग्रह-पात-लत्ता-जामित्रकर्तर्युदयास्त दोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्क-बलोपपन्ने लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः॥ - (मु.चिं.)

उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः।
केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान् गरुडो यथा।।

विवाहे लग्न–शुद्धिचक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	←भावाः
चं. पाप.	०	शु.	रा.	०	चं. शु. लग्नेश	सर्वे	चं. मं. शुभाः लग्नेश	०	मं.	०	श.	← त्याज्याः
चं. मं.	कुलिकं क्रान्तिसाम्यश्च				चं.	मं.	चं. मं.	विद्धभश्च				← गोधूलौ त्याज्याः

लग्नभंगयोगा :– व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः। लग्नेट् कविग्लौ च रिपौ मृतौ ग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे न सर्वे (अस्तेऽब्जगुरु समौ)॥ वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो विवाहे न शुभप्रदः। वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नन्त्वष्टमो राशिरेव च। यदि लग्नंगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः॥ पंग्वन्धादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्यागः। बादरायणः मासशून्याह्वयास्तारा राशयो वधिरादयः। गौडमालवयोरत्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः।।

कर्तरी दोषः— लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोश्च साध्वोः सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः। तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारौ न कर्तरी चेति पितामहोक्तिः॥ इय कर्तरी चन्द्रस्यपि द्रष्टव्या। **केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहाराः** —पापौ कर्तरिकारकौ रिपुगृहनीचास्तंगौ कर्तरी दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्पष्ठदोषेऽपि न। भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद: भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न॥

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे— दोषाश्च बहव सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह॥

अपवादान्तरम्— उक्तानुक्ताश्च ये दोषस्तान्निहन्ति बली गुरुः। केन्द्र-संस्थः सितो वापि पन्नगान्गरुडो यथा॥ मुहूर्तलग्नषड्वर्गकुनवांश ग्रहोद्भवाः। ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगःशशी॥ अब्दायनर्तुमासोत्थाः पक्षतिथ्यृक्षसम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये। सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत्॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोष-शतत्रयम्। द्यूनं विहाय दैत्येज्यः सहस्रं लक्षमंगिरा॥ स्मरण रहे कि— पूर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सप्तमरहित केन्द्र (१/४/१०) ही ग्रहण करना चाहिए।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रद—स्थानानि

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहाः	मुहूर्त गणपतौ
३	२	३	१	१	१	३	३	३		लग्नं शुभं विवाहे स्याद दशविंशोपकाधिकंम्।
६	३	६	२	२	२	६	६	६		
८	११	११	३	३	४	८	८	८		
११			४	४	५	११	११	११		
			५	५	९					
			६	६	१०					
			९	९	११					
			१०	१०						
			११	११						
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विंशोपकबलम्

अथ गोधूलि लग्नविचारः— लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी। तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति। लग्ने विशुद्धे सति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते॥ मार्ग., माघ, फाल्गुन में संध्यासमय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होने पर चैत्र, वैशाख में गौओं की धूली से आकाश आच्छादित होने पर, ज्येष्ठ, आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर, श्रावण भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है।

गोधूलिके त्याज्या दोषाः— कुलिकं क्रातिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी। तथा गोधूलिके त्याज्यं पञ्चदोषैस्तु दूषितम्। अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के। अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे।क्योंकि सूर्य अस्त से पहले वारवेला होगी और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने में कुलिकं मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना चाहिए।

संकीर्ण वर्णसंकर चाण्डालादि जाति का विवाह मुहूर्त्त

कृष्णपक्ष क्रूरवार निषिद्ध नक्षत्र योगों में संकीर्ण जाति वालों का विवाह धन, पुत्र आयु प्रीती लाभ देता है। ऐसा शौनकादि मुनि कहते हैं।

पुनर्विवाहे (रीत) सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम्

नक्षत्र→	३	३	३	३	३	३	३	३
फल→	मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	दुर्भग	श्री	उन्नति

अन्यच्च— सूर्यभात् ४/११/१८/२५ संख्यकसाभिजिदभेषु पुनर्विवाहे मृत्युः। अत्र तिथि—मासवेध भृगु—गुर्वस्तादि दोषोऽपि नावलोकनीयः।

वधु प्रवेश का मुहूर्त्त

जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहले आती है वह वधू प्रवेश कहा जाता है। विवाह के १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन; इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में, एकवर्ष के भीतर विषम मास में; एक वर्ष के उपरान्त ३रे, ५वें वर्ष मे भी स्थिर लग्न में वधू प्रवेश शुभ है। ५वर्ष के उपरान्त जब चाहे तब शुभ मुहूर्त में हो सकता है। १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि, चन्द्रबल, गुरुशुक्र के मूढत्व का भी विचार नहीं करना— **व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा अमासंक्रान्ति—तिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत्॥** रेव., अश्वि., रोहि., मृग., श्रव., धनि., हस्त, चित्रा, स्वा., मघा, मूल, उत्तरा ३, पुष्य, अनु., इन नक्षत्रों में और चं., बु., बृ. शु. श. इन वारों में १/२/३/५/६/७/८/१०/११/१२/१३/१५ तिथियों में, ५/८/११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधु प्रवेश शुभ है।

वधु–प्रवेश–समय

वधुप्रवेशो न दिवा–प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि–प्रशस्तः।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः॥

विवाहतः प्रथम वर्षे वधू–निवासफलम्– विवाह के बाद आषाढ़ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षय मास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को और अधिक मास में पति को नाश करती है। विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं होता।

द्विरागमन का मुहूर्त्त

प्योके (पितृगृह) से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं। विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवें वर्ष वृश्चिक कुम्भ, मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को २, ३, ६, ७ या १२ वीं राशि के लग्न में हस्त, अश्वि., पुष्य, अभिजित्, तीनों उत्तरा, रोहि. स्वा., पुन., श्रवण, धनि., शत., मूल, मृग., रेव., चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है। शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है।

विशेषः– द्विरागमं षोडशवासरान्ते एकादशाहे समवासरेषु। न चात्र ऋक्षं न तिथिर्न योगो न वारशुद्ध्यादि विचारणीयम्।।

शुक्र सम्मुख व दक्षिण में निषेध– सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि नूतन वधू जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे। यदि ऐसे समय राजविद्रोह–राजपीडन आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवम् विवाह सम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं, क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है।

विशेषः– सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे सम्मुखेऽस्तंगतेऽपि वा। शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे।।

अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः– राजते वाथ सौवर्णे कांस्यपात्रेऽथवा पुनः। शुक्लपुष्पांबरयुते श्वेततण्डुलपूरिते।। निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ता फलान्वितम्। महाश्वेत गवायुक्तं सामगाय निवेदयेत्।

प्रथम स्त्रीसंगम मुहूर्त्त

रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त, ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो., मृ., पुष्य, ह., चि. अनु., ध., उत्तरा. ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम पहर को छोड़कर। शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर, प्रथम दिन स्त्री संगम करें।

मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्त्तव्य–स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करें, आदर सत्कार करें। विशेष गुप्त बात न कहें और विशेषाधिकार भी न दें, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती। अपवाद में एक–दो हो सकती है। प्रभुकृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना चाहिए। उसका दिल और दिमाग़ तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है। पशुओं में भी घोड़े, हाथी, सांड, भैंसा आदि अपनी स्त्री जाति पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं।

नववधुद्वारा पाककर्म मुहूर्त्त

द्विरागमनोत्तरं मृग., उत्तरा. ३, पुष्य, कृ., ज्ये., श्रव., धनि., श., रो., वि., रे. एषु नक्षत्रेषु शुभवासरे (रविभौमवर्जिते), रिक्ताक्षयरहिततिथौ, २/५/८/११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टमशुद्धे सप्तमभावे च बलान्विते सति पाक्कर्म शुभम्।

सधवा स्त्री का वस्त्र, सुवर्णरत्नभूषणादिधारण करने का मुहूर्त्त

हस्त., चित्रा., स्वा., अनु., धनि., रेवती., अश्वि. एषु भेषु बु., गु., शु., वारेषु रिक्तामावस्यारहित तिथिषु, नूतन वस्त्रसौवर्णरत्नरजत–दन्तादि भूषणानां धारणं प्रशस्तम्।।

चूड़ीचक्र में विशेषः– सूर्य नक्षत्र से गणना करने पर ८ अशुभ। ३ शुभ। २ अशुभ। ७ शुभ। २ अशुभ। ४ शुभ। १ अशुभ। गुरुशुक्रोदय में शुभ।

वस्त्रधारणे विशेषः– विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्ष्मापालने समर्पितम्। निन्द्येपि धिष्ण्ये वारादौ धारयेच्च नवाम्बरम्।।

आभूषण बनवाने का मुहूर्त्त

हस्त., अ., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रव., धनि., शत., उत्तरा.३, रोहि. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामाक्षयरहित तिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम्।।

दुकान खेलने का मुहूर्त्त

हस्त, चित्रा, रोहि., रेव., उत्तरा. ३, पुष्य, अश्वि., अभि. इन नक्षत्रों में ४। ९। १४। ३० इन तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़कर अन्यवारों में, कुम्भ लग्न को छोड़कर अन्य लग्नों में, २। १०। ११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३। ६ में पापग्रह हों, ८। १२ वां स्थान पाप रहित हो, शुभ दशा भी हो तो दुकान करना शुभ है, चन्द्र लग्न में हो तो अत्यन्त शुभ है।

भर्तृगृह से पितृ गृहागमन मुहूर्त्त

पूर्वा.३, भ., मू., म. ज्ये., आर्द्रा, आश्ले. एतदभिन्नेषु, चं., बु., शु., वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः।।

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त्त

भ., आर्द्रा, आश्ले., म., पूर्वा. 3, ज्ये., मू. इन नक्षत्रों को छोड़कर, शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है।

हट्टचक्रः— सूर्य नक्षत्र से दुकान खेलने के दिन तक, नक्षत्र गिन कर चक्र से शुभाशुभ फल जानें।

हट्टचक्र

नक्षत्र	२	३	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैर्ऋत	सम्मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोरभय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवाकर्म (नौकरी) मुहूर्त्त

अ., मू., चि., ह., पुष्य, अनु., रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, र., बु., बृ., शु. वारेषु शुभः। लग्नस्थे, १०, ११ सूर्ये—भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशीश—योनि—मैत्र्यां सत्यां शुभः।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भ मुहूर्त्त

अश्वि., रो., मू., पुन., पु., उत्तरा. ३, ह., चि., अनु., श्रव., रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू., चं., बु., बृ., श. वारेषु शुभे युते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्यायाष्टरहिते पापैः केन्द्रकोणगैः शुभैः स्यात्।।

द्रव्यप्रयोगमुहूर्त्त

पुन., स्वा., मृग., रे., चि., अनु., वि., पुष्य., श्रव., ध., श., अश्वि. एषु नक्षत्रेषु १। ४। ७। १०, लग्नेषु ९। ८। ५ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः। अत्रावसरे ९। ५ शुभः, ग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः।।

ऋण लेने के लिए वर्जितकाल

मंगलवार, संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुधवार को धन न देना चाहिए। कृ., रो., आर्द्रा, आश्ले., उत्तरा ३, वि., ज्ये., मू. नक्षत्रों में भद्रा, व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगडे आदि पर उतारू होना पड़ता है।

श्रीकाशीनाथ के मत से क्रयविक्रय मुहूर्त्त

पुष्य, पू.भा., अनु., श्रव., ह., म., स्वा., उत्तरा.३, आश्ले., रे., एषु भेषु सत्तिथौ, शुभदिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रयविक्रयणं कार्यम्।

वस्तु खरीदने के नक्षत्रः— रे., शत., अश्वि., स्वा., श्रव., चि., वारों में, बुध, रवि श्रेष्ठ माने गए हैं।

वस्तु बेचने के नक्षत्रः— पू. फा., पू. षा., पू. भा., वि., कृ., आश्ले., भ. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गए हैं।

नोटः— बेचने के नक्षत्रों मे खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५ फीसदी नुकसान रहेगा, इसमें संशय नहीं। इसी कारण खरीदने—बेचने के नक्षत्र दिखाए गए हैं, परन्तु सम्प्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिन भर में १० बार बेचना, २० बार खरीदना। ऐसे व्यापारी क्या करेंगे, इन नक्षत्रों को।

लेकिन हमारा कहना है कि विश्वास करके परीक्षा तो कीजिये, बात कहां तक सच है। सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सत्य हैं।

प्रार्थनापत्र (अर्जी) देने का मुहूर्त्त

४। ९। १४ तिथि हों, मं., श. वार हों, कृ., आर्द्रा, भ., अश्वि., आश्ले., म., ज्ये., मू., वि., पूर्वा. ३ नक्षत्र हों, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई–चौड़ाई को परस्परगुणाकर, आठ का भाग देवें, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वज, २ धुम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ, ६ गर्दभ, ७ हस्ति, ८ (०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और २ आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शुद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ है।

ग्रामभात् वासकर्तुः नक्षत्रं यावद् साभिजित् गणना कार्या

स्थान	नक्षत्र	फलम्
मस्तके	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैस्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान

घर केक्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई–चौडाई के गुणन) को आठ से गुणाकर २७ का भाग दें। जो अंक शेष रहे, तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जानें। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवें। शेषांक तुल्य व्यय जानें। आय से व्यय कम हो तो शुभ, अन्यथा अशुभ।

वास्तुभूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भूमिपूजन पूर्वक साम को एक हाथ चौड़ा, एक हाथ लम्बा और एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर, उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा

मकान की नींव को इतना गहरा खोदें कि जल दीखने लगे अथवा दूसरी मिट्टी जब तक निकले अथवा साढे तीन हाथ गहरी खोदें अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदें। खोदते समय यदि ज़मीन में पत्थर निकले तो धन–आयु की वृद्धि हो; अगर गुठली निकले तो धननाश हो और अगर अस्थि, राख, बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि–पीड़ा हो।

गृहारम्भमुहूर्त्त

वैशा., श्रा., मार्ग., माघ, फाल्गुन सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं; भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २। ३। ५। ६। ७। १०। ११। १२। १३। १५ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा, इन तिथियों में चं., बु., गु., शु., श. वारों में; रो., मृ., चि., ह., स्वा., अनु., उत्तरा. ३, ध., श., रे. वेधरहित नक्षत्रों में; २। ३। ५। ६। ८। ११। १२ लग्नों में; पञ्चवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में; लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३। ६। ११ वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्सचक्र व मासादि का विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्

सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।

स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाहः
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्तिः
द. कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेषः– पुष्य, उत्तरा. ३, रो., म., आश्ले., पूषा., इनमें से जिस पर बृहस्पति हो, उस नक्षत्र में बृहस्पतिवार को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो., ह., अ., उ. फा., चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। वि., अ., चि., ध., श., आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्:– 'संक्रान्ति मिति दिन पांचवें सप्तम नवम जोय।

नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भूमिपूजन पूर्वक शाम को एक हाथ

१०। २१। २४ में षंड़दिन पृथ्वी सोय।। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५। ११। ७। ६। २। १० एताः घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः।" **अन्यच्च**– सूर्य के नक्षत्र से ५। ७। ९। १२। १९। २६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्य में कूपविचार

मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
र्थहानि	सुपुष्टि	सुप्राप्ति	पुत्रनाश	स्त्रीनाश	गृहेशनाश	संपत्	सुख	शत्रुभय

अथ चुल्लिचक्र–विचार

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्रपीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर–सुख–भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक। २ वरण के नाशक। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डित जन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चुल्हा बनावें तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावें।

नूतनगृह प्रवेश मुहूर्त्त

माघ–फाल्गुन–वैशाख–ज्येष्ठ मासेषु शोभनाः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग.)कार्त्तिक मासयोः।। (यहां चन्द्रमास लेना) उत्तरा. ३, अनु., रो., मृ., चि., रे. इन नक्षत्रों में रिक्तामारहित तिथियों में। चं., बृ., श. इन वारों में। २। ५। ८। ११ लग्नों में; **अत्यावश्यके** ३। ६। ९। १२ लग्नों में भी; लग्न से १। २। ३। ५। ७। ९। १० इन स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३। ६। ११ में क्रूर हों १। ६। ८। १२वें चन्द्रमा न हो; चौथा, ८वां स्थान शुद्ध हो; जन्म लग्न या जन्म राशि से ८वीं राशि लग्न में न हो; चन्द्र–तारा शुभ हो और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो, तो आगे गौ, कन्या, जलपूर्ण–पुष्पमाला युक्तकलश, शंखध्वनि व मंगलगान के साथ दम्पति का गृह प्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त्त

पुराने अर्थात् जीर्ण या तृणकुटीर अथवा अग्नि–वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वैशाख., श्रावण, कार्त्तिक., मार्गशीर्ष और फाल्गुन मास में शत., पुष्य, स्वा. और धनि. नक्षत्रों तथा गुरु, शुक्र के अस्त में भी गृह प्रवेश हो सकता है।

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्

खाते राहोर्मुखात्पृष्ठदिग्भागःशुभदो भवेत्।

राहुमुखम्	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालयारम्भे सूर्यः	मीन, मेष, वृष	मिथुन, कर्क, सिंह	कन्या, तुला, वृश्चिक	धनु, मकर, कुम्भ
गृहारम्भे सूर्यः	सिंह, कन्या, तुला	वृश्चि., धनु, मकर	कुम्भ, मीन, मेष,	वृष, मिथुन, कर्क
जलाशयारम्भे सूर्यः	मकर, कुम्भ, मीन	मेष, वृष, मिथुन	कर्क, सिंह, कन्या	तुला, वृश्चि., धनु
खातदिशाज्ञानम्	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम्

सूर्यनक्षत्रात्

स्थान.	न	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोणे	८	उद्धसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाशः
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम्।

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्

सूर्यभात्

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप, तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त्त

अनु., हस्त, उत्तरा. ३, रोहि., धनि., शत., भरणी, पू.षा., रेवती, पुष्य, मृग. नक्षत्र हों व चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध, मीन या कर्क में हो, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १०वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २। १०। ४। ११। १२ लग्न हो तो अत्यउत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूप–नलचक्रम्			सूर्यभात्तड़ागचक्रम्		
ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल	ईशान २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आग्ने. २ जलाधिक्य
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल	उत्तर २ अमृतजल	मध्य ५ बहुजल	दक्षिण २ जलनाश
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्यां ३ अमृतजल	वायव्य ३ जलनाश	पश्चिम २ बहुजल	नैर्ऋत्य २ अमृतजल

गणनाक्रमः—मध्य–पूर्व–आग्नेय–दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्– अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति। तत्फलम्—वारिवाहे वारिहानिः। गणनाक्रमः– पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, मध्य में वारिवाह।

रोहिणीभात् वापीचक्रम्

ईशान अश्विनी, भरणी, कृत्तिका मध्यजलम्	पूर्व पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा जलाभावः	आग्ने. मघा, पू.फा., उ.षा. मध्यजलम्
उत्तर पू.भा., उ.भा., रेवती मिष्ठजलम्	मध्य रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा शीघ्रजलम्	दक्षिण हस्त, चित्रा., स्वाती जलाभाव
वायव्य श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा. क्षारजलम्	पश्चिम मूल, .पू.षा., उ.षा. अमृतजलम्	नैर्ऋत्यां विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा बहुजलम्

जलाशयारामदेवप्रतिष्ठामुहूर्त्त

"देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे। माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने।।
मातृ–भैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमाः। महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने।।"

अश्वि., रोहिणी, मृग., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनु., श्रवण, धनि., शत., उत्तरा. 3, रेवती एषु भेषु कुजशनिवर्जितवारेषु २। ३। ५। ७। ८। १०। ११। १२। १३ तिथिषु शुक्ले १। २। ३। ५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्ब–लास्तादिरहितकाले, कर्तुः सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२। ५। ८। ११) लग्नेषु लग्नात् १। ४। ७। १०। ९। ५। २। ११ स्थानेषु शुभैः, ६। ११ सेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्ने देवप्रतिष्ठा कार्या।

देवता–विशेषेण लग्नम्:– सिंहे सूर्यः शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः। कुम्भे वेधाश्चरे क्षुद्राद्यंगदेव्यः स्थिरेऽखिलाः।। यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिनेयदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्तो [illegible] ।।

वास्तुशान्ति मुहूर्त्त

श्रव., धनि., मृग., मूल, अनु., रेवती, हस्त, चित्रा, स्वा., उत्तरा. 3, पुन., पुष्य, रोहि., अश्वि. एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है

जिस दिन हवन करना हो, उस दिन तिथि और वार क संख्या जोड़कर एक ओर जोड़ना, पुनः ४ का भाग देना। यदि पूरा भाग लग जाए, (०–शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे, तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानिकारक, शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से तथा वार की गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुतिचक्र ज़रूर देखिए।

विशेषः– यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्याखिलव्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्।। महारुद्रे व्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कास्तराहुणा। नित्यनैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत्।। दिग्दाहेप्यथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतूनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत्।। लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणेमहाविधौ। देवखातभवने सुरालयादग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः।। दुर्गभंगे गृहे वापि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकार्ये नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत्।।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्
(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

ग्रहाः	सू.	बु.	शु.	श.	चं.	मं.	गु.	रा.	के.
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फलम्	नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट

पापग्रहमुखे–हवने कृते शान्तिः—क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे। शान्तिं विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने। आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेतामधोमुखीम्। गोमूत्र–मधुगन्धाद्यैरर्चितां प्रतिमां ततः। कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते।।

अथ ऋणी–धनी विचार– स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टभिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत्।।(अर्थात् अपने वर्ग को दूना कर, दूसरे के वर्ग में जोड़ना, फिर ८ का भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दूना करके, अपना वर्ग जोड़ना, फिर ८ का भाग देना। जिसका शेषांक अधिक बचे, वह दूसरे का ऋणी होगा।), लेकिन वशिष्ठ आदि का मत है कि जिसका शेषांक कम बचे, वह दूसरे का ऋणी होता है– यही प्रामाणिक है।

हलप्रवहण मुहूर्त्त

मृग., रेव., चित्रा, अनु., रोहि., उत्तरा.३, हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रवण, धनि., श., मूल, मघा, विशा. एषु भेषु रिक्तामाषष्ट्यष्ठमीरहित सत्तिथौ शुभ–ग्रहस्य वासरे, १। ५। ७। १०। ११ लग्नेषु भूमिशयन–भद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

	हलचक्रम्				बीजवपने राहुचक्रम्								
	सूर्यभुक्तनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें				राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
नक्षत्र	३	७	९	८	८	३	१	३	१	३	१	३	४
फल	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्त्त

हस्त, अश्वि., पुष्य, उत्तरा. 3, चित्रा, अनु., मृग., रेवती, स्वा., धनि., मघा, मूल एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः।

विशेषः– रवौ रौद्रा(आर्द्रा) द्यपादस्थे भूमेः संजायते रजः।
तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत्।।

नवान्न–भक्षण–मुहूर्त्त

मृग., रेवती, चित्रा, अनु., हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रवण, धनि., शत. एवम् विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है, नन्दा–रिक्ता तिथियों और पौष–चैत्र को छोड़कर अन्य मासों में सू., बु., गु., शुक्रवार शुभ है।

गौ, बैल आदि पशु लेने का मुहूर्त्त

अश्वि., पुन., पुष्य, हस्त, विशा., ज्ये., धनि., शत., रेव. नक्षत्र में गौ लेना–बेचना। अन्य पशु पुन., पूर्वा. 3, हस्त, अनु., ज्ये., मूल, धनि., रेवती में लेना–बेचना शुभ है। गाय लेनी हो तो उ.फा. से दिन नक्षत्र तक गिने। ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थलाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है। वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक; फिर दो–दो के क्रम से गाय के समानफल जानें। महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौ नक्षत्रगणना क्रम से शुभाशुभफल हेतु सूर्य नक्षत्र तक गिनें– नौमी चौदस चौथ चौपाया। मंगल हान करे घर आया।।

सूर्यनक्षत्रात्काष्ठादि (गुहारा आदि) संस्थापनचक्रम्							
नक्षत्र संख्या	६	२	४	४	४	४	४
	उत्तमपाक	शवदहन	सर्पभय	मित्रलाभ	रोगभय	क्वाथकर्म	सुख
फल	शुभ	नेष्ट	नेष्ट	शुभ	नेष्ट	नेष्ट	शुभ

लतावृक्षाद्यारोपण मुहूर्त्त

मृग., रेवती, चित्रा, अनु., उत्तरा. 3, रोहि., हस्त., पुष्य, अश्वि., शत., मूल, विशा. नक्षत्रों में रिक्तामारहित शुभ तिथियों में और चं., बु., बृ., शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४। १०। ११। १२ लग्न में शुभ हैं।

तृणकाष्ठादिसंग्रहे निषेधः – तृण–काष्ठ का सञ्चय और पलंग बनवाना आदि कर्म कुम्भ–मीन के चन्द्रमा (पञ्चककाल) में नहीं करना चाहिए।

औषधसेवन का मुहूर्त्त

हस्त, अ., पुष्य, अभि., मृग., रेवती, चित्रा, अनु., स्वा., पुन., श्रव., धनि., शत. व मूल में जन्मनक्षत्र को छोड़कर, इन नक्षत्रों में ४। ९। १४ को छोड़कर, शुभ तिथियों में, भौम–शनि को छोड़कर, अन्यवारों में शुभ है।

अथ यात्रा–मुहूर्त्त–विचारः

हस्त, मघा, श्रव., अश्वि., पुष्य, पुन., धनि., अनु., रेवती, एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रोहि., उत्तरा. ३, पूर्वा. ३, एषु भेषु मध्या; भरणी, कृत्ति., आर्द्रा, आश्ले., मघा, चित्रा, स्वा., विशा., ज्ये., एतद्भेषु निन्द्याः। तत्रात्यावश्यकेऽपि यात्रायां भरण्यादि भानां क्रमात् ७। २१। १४। १४। ११। ४०। १४। १४। १४ एता घटिकाः गमन कर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः। २। ३। ५। ७। १०। ११। १२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु द्विग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा।

द्विग्द्वारलग्नानि				
दिशा→	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
शुभम्→	१। ५। ९	२। ६। १०	३। ७। ११	४। ८। १२
मध्यमम्→	२। ६ १०	३। ७। ११	४। ८। १२	१। ५। ९
भयम्→	४। ८ १२	१। ५। ९	२। ६। १०	३। ७। ११
महद्भयम्→	३। ७। ११	४। ८। १२	१। ५। ९	२। ६। १०

यात्रा में शुभाशुभ लग्नः– जन्मलग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें। शुभलग्न वह है, जब १। ४। ५। ७। ९। १० स्थानों में शुभ ग्रह और ३। ६। १०। ११ वें पापग्रह हों। अशुभ लग्न वह है– जब १। ६। ८। १२वें चन्द्रमा, १०वें शनि, ६वें शुक्र, १२। ६। ८वें लग्नेश हो। **अन्यच्च–** यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने।।

जन्मलग्नेश, दशेश अस्त हों व मारकदशा हो तो सुमुहूर्त्त में भी दूर की यात्रा न करें, प्रथम तीर्थयात्रा व देवदर्शन गुरु–शुक्रास्त में वर्जित है।

दिक्शूलज्ञानाय चक्रम्									नक्षत्रशूलचक्रम्			
दिशा	पूर्व	आ.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.	पू.	द.	प.	उ.
वार	चं.,श.	चं.,बृ.	गुरु	सू.,शु.	सू.,शु	भौम	मं.	बु.,श.	ज्ये.	पू.भा.	रोहि.	उ.फा.

दिक्शूलपरिहारः– न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम्। दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः॥१॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्य चन्द्रवारे पयस्तथा। गुड़मंगारके वारे बुधवारे तिलान्नपि। गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवान्नपि। माषान्भुक्त्वा शनेर्वारे शूले गच्छञ्छूले न दोषभाक ॥२॥

यात्रायां कालज्ञान चक्रम्							
सम्मुखे	शनौ	शुक्रे	गुरौ	बुधे	भौमे	चन्द्रे	रवौ
नेष्टः	पूर्वे	आग्नेय्यां	दक्षिणे	नैर्ऋत्यां	पश्चिमे	वायव्ये	उत्तरे

योगिनीवास–चक्रम्								
दिशा	पूर्व	आग्ने.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.
तिथि	१। ९	३। ११	५। १३	४। १२	६। १४	७। १५	२। १०	८। ३०

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बाएं की शुभ किंवा युद्ध यात्रा में बाएं ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है।

समयशूल– उषाकाल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्धरात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए।

गर्ग–गुरु–अङ्गिरामत– गर्ग जी के मत से ५ या ४ घडी रात रहे तो गमन करें। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करें। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाए। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पंच–पंच (५५) उषाकालः सप्तपञ्चाशद (५७) रुणोदयः। अष्ट पंच (५८) भवेत्प्रातः शेषः सूर्योदयो भवेत्।।

चन्द्रवासचक्रम्			
पूर्वे	दक्षि.	पश्चि.	उत्तर
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यके तात्कालिक–यात्रायां घट्यात्मकं चन्द्रवासचक्रम्

दिशा	पू.	द.	प.	उ.	पू.	द.	प.	उ.
घटी	१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४

घट्यात्मक चन्द्रवास

जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिए। कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जाएं।

चन्द्रफलम्:– सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुख–सम्पदः। पृष्ठतो [illegible] सर्वे दोषाःलयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे॥

सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा—भगणदोषं वार–संक्रान्ति–दोषं कुतिथिकुलिकदोषं यामयामार्धदोषम्। कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादि दोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमाः सम्मुखस्थः ॥

सर्वाङ्कसिद्धियोग—यात्राकालिक शुक्लादि तिथि तथा वार की संख्या को जोड़कर तीन जगह रखें। क्रमशः ७। ८। ३ का भाग दें। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अङ्क आने से सौख्य, जयलाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वांकादि मुहूर्त के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत्य को मत जाएं, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो भी कदापि न जाएं, क्योंकि मुहूर्त एवम् शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

वर्ण के क्रम से प्रस्थान का विधान— यदि यात्रा मुहूर्त में किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय, तो उसी मुहूर्त में ब्राह्मण जनेऊ, माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु–घृत व रुपया और शूद्र फल को अपने वस्त्र में बांध, किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान के समय रखे। अथवा मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख देना चाहिए।

यात्रा से पहले त्याज्य वस्तुः— यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दे, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन और समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य ही करें।

दिने चतुर्घटिका मुर्हूत्तम्		रात्रौ चतुर्घटिका मुर्हूत्तम्
सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि	घटि.	सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल	३॥।	शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ
चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ	७॥	अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग
लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग	११।	चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ
अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग	१५	रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत
काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर	१८॥।	काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर,
शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ	२२॥	लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग
रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत	२६।	उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल	३०	शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ

सूचनाः— यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी–पल ज्ञात होंगे।

यात्रा में शुभ शकुन— मृग बाएं ते दाहिने जो आवे तत्काल। अन्न धन लक्ष्मी बहू मिले चलते प्रातःकाल॥ विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्षप, कमल, निर्मलवस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, सपुत्र–स्त्री, गोरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धि वाक्य, जलपूर्णघट। यात्रा पश्चात् रिक्तघट यात्रा के समय देखने में शुभ है।

यात्रा में अशुभ शकुन :— बन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जारयुद्ध, कुटुम्बकलह, विधवास्त्री, जातिभ्रष्ट, अङ्गहीन, छिक्का, दुष्टवाणी यात्रा के समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

आवश्यके रामदैवज्ञोक्त यात्रामुहूर्त्तचक्रम्

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चि.	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्रय	दारिद्रय	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	लाभ	सुख
६	७	८	९	१०	१०	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

तृतीया–त्रयोदशी, चतुर्थी–चतुर्दशी, पञ्चमी–पूर्णमासी का फल समान जानना। अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

यात्रा मे सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े। कार्य सिद्ध हो, यात्रा सफल होगी।

नौकायात्रा–मुहूर्त्तः

चित्रा, हस्त, पु., मृग., पूर्वा. ३, अनु., श्रव., धनि.–एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽह्नि चन्द्र–तारानुकूल्ये सति शुभः।

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशमुहूर्त्तः

मृग., रेवती, अनु., रोहि., उत्तरा. ३, हस्त, अश्वि., पुष्य, स्वा., श्रवण, धनि. –एषु भेषु; चं., बु., बृ., शु., श. वारेषु; १। २। ३। ५। ७। १०। ११। १३ तिथिषु; ३। ५। ८। ९। ११। १२ एषु लग्नेषु; १। ४। ७। १०। ५। ९ स्थानेषु शुभैः; ३। ६। ११ स्थानेषु पापैः; ४। ८ शुद्धौ शुभः। विशा., कृत्ति., पूर्वा. ३, भरणी, मघा, मूल, ज्ये., आर्द्रा, आश्ले., नक्षत्राणि; ४। ९। १४। ६। १२। ८। ३० तिथयः; सू., मं. वारौ; १। ४। ७। १० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि।

मंगलवार को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है।

विशेषः– प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्। नवमे जातु नो कुर्यादिने वारे तिथाविति।।

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

राशि→	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
घात चन्द्र	मे.	क.	कुं.	सिं.	म.	मि.	ध.	वृष	मी.	सिंह	ध.	कुम्भ
घात वार	र.	श.	चं.	बु.	श.	श.	बृ.	शु.	शु.	मं.	बृ.	शु.
घात नक्षत्र	म.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	आश्ले.
स्त्री चन्द्रघात	मे.	ध.	ध.	मि.	वृश्चि.	वृश्चि.	मी.	ध.	कन्या	वृश्चि.	मि.	मेष
घात मास	का.	मार्ग.	पौं.	मा.	फा.	चैत्र	वैशा.	ज्ये.	आषा.	श्रावण	भाद्र.	आ.
घातयोग	वि.	सु.	प.	घृ.	प्री.	सु.	अ.गं.	वृ.	वै.	गं.	व्या.	वै.
घातलग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घाततिथि	१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५
घाततिथि	६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०
घाततिथि	११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	४	१३	१५

युद्ध, विवाद, राजसेवा,वाहन, रोगादि कार्यों में घातचक्र देखना और तीर्थयात्रा तथा विवाहादि शुभ कार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं होती। **"घाततिथिर्घातवारः घातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसु शोभनम्।।"**

वाम–दक्षिणनिर्देश

अग्रे चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ, भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का है, वही सरट (गिरगिट) के चढ़ने का समझें। सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

अथाङ्ग विभाग में पल्ली–(छिपकली, कोढ़किरली) पतन का फल

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रूमध्ये	राज्यसंबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	अधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभयम्	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्रलाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभः	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्ठान्नभोजनम्
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धिः	नेत्रयोः	धनप्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	रणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द.मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षिणांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यर्क्षाणि

यदि छिपकली १। २। ३। ५। ६। १०। ११। १२। १३— इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है तथा चं., बु., गु., शु.— इन वारों में भी शुभ फल देती है। पुष्य, अश्वि., रोहि., मूल, पुन., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., धनि., रेवती, अनु., शत.— ये नक्षत्र शुभफलदायक हैं। इसके अलावा अन्य नक्षत्रों में गिरे तो शुभ

पल्ली (किरली) पतनोपरान्त कर्तव्य—पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगिट) स्पर्श होने पर वस्त्रसहित स्नान करें। जन्मनक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धा–तिथि, भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय जप एवम् तिल, स्वर्ण, दान और पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्र दान भी करना उत्तम है।

छिक्का फलम्

छिक्का प्रायः सब देशाओं की नेष्ट होती है। गौ की छिक्का मरण करती है– **"मदिरा के योग अथवा छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं, पीन सरदी घास फल हीनी। छींक पीठी की कुशवाज उचारे; बाईं कारज सवै सवारे॥१॥ सम्मुख छींक लड़ाई भापै; छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै ॥२॥ ऊंची छींक कहे जयकारी; नीची छींक होय भयकारी। अपनी छींक महा दुखदाई; ऐसे छींक विचारो भाई ॥३॥**

कन्या, विधवा, मालिन, धोबिन, रजस्वला, वैश्या, चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्काः— आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहाः। एक नाक से दो छींक भी शुभ मानी जाती है– **एक नाक दो छींक; काम बने सब ठींक॥**

तीर्थ में मुण्डनविचार

मुण्डनं चोपवासञ्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः। वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रं विशालां (उज्जयिनी) गिरिजां गयाम्।।

अथ वारपरत्वेन तैलाभ्यंगे फलं–विधिश्च								तैलाभ्यंगे वर्ज्यानि
सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः	तदत्राह–
नापम्; पृष्पं	सुकीर्ति ०	मृति मृत्तिका	श्री. ०	वित्त हानि दूर्व्वा	विपत्ति गौमय	सुख सुयोग ०	फलम् पातनम्	रवौ भोमे व्यतिपाते संक्रांति– वैधृतावपि । षष्ट्यष्टम्योश्च विष्ट्यां च तैलाभ्यंगो न पर्वसु।।

विशेष— यदि प्रतिदिन तेल लगाने का स्वभाव हो तब अथवा उत्सव के दिन व वातरोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल व सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

अंग–स्फुरण का फल

पुरुषों का दायां और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है।
मस्तक का स्फुरण (फरकना) स्त्री–पुरुष दोनों के लिए शुभ है।

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तुप्राप्ति
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग्य
स्कन्ध	भोगवृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधोभाग	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभप्राप्ति	आंत्रिक	कोषवृद्धि	मुख	मित्रप्रापि
नेत्र	धनप्राप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्ष	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर	कोषलाभ	वस्तिदेश	भाग्योन्नति
नेत्रपक्षम	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोर्ध्व	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्व–बुद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल, लसन, मस्सा हो व खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानें। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल व खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

काकस्पर्श का फल

मस्तक पर काक स्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है। कमर, कन्धे पर अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति–पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दहीं आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है। काकमैथुन का देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट व इच्छितकार्य का नाश करता है। इसके दोष दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काकप्रतिमा मृण्मय (मिट्टी के) पात्र में स्थापित कर उडद, चावल, घी, मीठे का नैवेद्य देवें। ग्राम में दक्षिण की ओर बाहर चौराहे पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय मन्त्र का यथाशक्ति जप करें (या करावें), घृतच्छाया–पात्र दान, पञ्चगव्य से स्नान भी करें। इस विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नष्ट होते हैं।

काकविष्ठा विचार :– शिरसि–मृत्युः वा कष्टम्। स्कन्धयोः रोगः। भुजयोः प्रियार्तिः। उदरे शोकः। गुह्ये सन्तानकष्टम्। जंघयोः वाहनपीडा। पादयोः प्रवासः।

कौवा उडता हुआ या किसी सूखे पेड़ पर बैठा हुआ किंवा पूर्व की तरफ बैठा हुआ अथवा दक्षिण दिशा की ओर मुंह किए किसी के ऊपर काली बीठ कर दे तो अशुभ होता है। यदि किसी हरे–भरे या फूले–फले पीपल, बड आदि श्रेष्ठ पेड़ पर बैठा हुआ सफेद बीठ कर दे तो शुभ जानिए।

....

विवाहादि मुहूर्त्त (सं. २०६६वि.)

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), P.O. पंचकूला–134 109;

(इन विवाहादि मुहूर्त्तों के शोधन में नालाबलोग (पंचकूला) निवासी, मेरे योग्य शिष्य चि. सुरेशानन्द शर्मा, B.A. का पर्याप्त सहयोग मिला है।)

—: समय शुद्धि :—

शुक्र-अस्त :- पौष शुक्ल १ गु. से फाल्गु. कृ. ५ बु.(१७ दिसं., २००९ ई. से ३ फर., २०१० ई.) तक शुक्र पूर्व में अस्त रहेगा ।

गुरु-अस्त :- फाल्गु. शु. ४ गु. (१८ फर., २०१० ई.) से संवत् के अन्त तक गुरु अस्त रहेगा ।

गुरु-शुक्र के अस्त का यह उपरोक्त काल पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली आदि के लिए है । क्योंकि अक्षांशभेद से इन ग्रहों के अस्त-उदय की तारीखें भिन्न-भिन्न होती हैं, इसलिए अपने अभीष्ट प्रान्त के गुरु-शुक्र अस्तकाल का निर्णय नीचे दिए गए कोष्ठक से जान कर विवाहादि मुहूर्त्तों का दैवज्ञ को निर्णय करना चाहिए ।

अक्षांशभेद से भारत के विभिन्न स्थलों पर गुरु–शुक्र का उदय–अस्त 'सं. २०६६ वि.'

अक्षांश →	+१०°	+२०°	+३०°	+३५°
शुक्र पूर्व में अस्त	१९ दिसं. '०९	१८ दिसं. '०९	१७ दिसं. '०९	१६ दिसं. '०९
शुक्र पश्चिम में उदित	५ फर. '१०	४ फर. '१०	३ फर. '१०	३ फर. '१०
गुरु अस्त	१८ फर. '१०	१८ फर. '१०	१८ फर. '१०	१७ फर. '१०
गुरु उदित	१४ मार्च '१०*	१६ मार्च '१०*	२० मार्च '१०*	२३ मार्च '१०*

*वि. संवत् २०६७

गुरु-शुक्र के अस्तकाल में तो शुभकृत्य वर्जित रहते ही हैं, इनके अस्त से ३ दिन पूर्व वार्धक्यदोष और उदय होने के ३ दिन बाद तक भी बाल्यदोष के कारण शुभकृत्य नहीं किए जाते ।

ध्यान रहे:- गतवर्ष (सं.२०६५ वि.) के चैत्र कृष्ण की चतुर्दशी, बुधवार से इस वर्ष (सं.२०६६ वि.) के चैत्र शुक्ल की द्वितीया, शनिवार (२५ से २८ मार्च '०९) तक केवल ३ दिनों के लिए भी **शुक्र पश्चिम में अस्त रहेगा।** लेकिन इसका विवाहादि मंगलकृत्यों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, क्योंकि इसका यह अस्तकाल मीनस्थ सूर्य के काल में पड़ता है, जोकि मंगलकृत्यों के लिए पहले ही वर्जित है ।

निर्बल लग्न– यद्यपि यहां दिए गए सभी लग्न विवाह के लिए सर्वथा निर्दोष हैं तथापि गुरु, शुक्र, बुध एवम् लग्नेश आदि की [illegible] चन्द्र-त्रिकोण आदि में स्थिति के कारण इनमें से अधिकतर लग्न पूर्णतया बलवान् हैं, जबकि इनमें से कुछ लग्न इस दृष्टि से अपेक्षाकृत कम बल रखते हैं। इन कम बल वाले लग्नों को यहां **'निर्बल लग्न'** लिखा गया है । आवश्यकता की स्थिति में इन निर्बल लग्नों को निःशङ्क होकर प्रयोग में लाइए, क्योंकि इनमें लग्नशुद्धि पर्याप्त है ।

ध्यान दें, - मुहूर्त्तों में जिस लग्न का कुछ भाग किसी विशेष दोष के कारण वर्जित है, उस लग्न के आगे कोष्ठक में भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार यह निर्देश दिया गया है कि इस लग्न को इस टाईम के बाद अथवा पहले ही मुहूर्त्तों में स्वीकार करें ।

यहां मुहूर्त्तों में क्रान्तिसाम्य (महापात) दोष का विचार सूक्ष्मगणित से किया गया है । सूर्य एवं चन्द्र की राशियों के आधार पर निर्णीत क्रान्तिसाम्य नितांत स्थूल होता है। भास्कर आदि आचार्यों ने इसके निर्णय के लिए एक विशेष गणितप्रक्रिया (महापात-गणित) निर्दिष्ट की है। कई पंचांगकार इसकी जटिल गणित-प्रक्रिया से डरकर स्थूल क्रान्तिसाम्य के आधार पर ही मुहूर्त्तों का निर्णय कर देते हैं, जो सर्वथा भ्रामक है। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ और समाप्तिकाल पृष्ठ 61 पर दिया गया है ।

यहां दिए गए मुहूर्त्तों में जहां युति, वेध, कर्त्तरी, दग्धातिथि, अष्टमस्थ भौम, षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र-शुक्र आदि दोषों के परिहार मिल गए हैं, उन मुहूर्त्तों को शास्त्रानुसार शुद्ध माना गया है और वहां विवाह-लग्न लगा दिए गए हैं ।

ध्यान रहे -यहां मुहूर्त्तों में दी गई अंग्रेजी तारीखें सूर्योदयकालिक हैं । जो मुहूर्त्तकाल (लग्न) रात के १२ बजे के बाद और सूर्योदय से पहिले पड़ता है, वहां अंग्रेजी तारीख अग्रिम (परवर्ती) समझनी चाहिए ।

इन विवाहमुहूर्त्तों में प्रयुक्त सांकेतिक शब्दों का स्पष्टीकरण

दि.ल. = दिन का लग्न । **ल.** = रात्रि का लग्न ।

पादवेध = विवाहलग्नकालिक नक्षत्रचरण को शुभग्रह का वेध है ।

पादवेधाभाव = विवाहलग्नकालिक नक्षत्रचरण को शुभग्रह का वेध नहीं है ।

दा. = इस ग्रह की दान-पूजा करके इस लग्न में विवाह किया जा सकता है। जैसे– मं.दा. का अभिप्राय है, इस विवाह लग्न में मंगल की दान-पूजा आवश्यक है ।

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०६६ वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २००६ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
वैशा. कृ. ८ शु.	वैशा. ५	अप्रै. १७	उ.षा.	मकर	मेष	मकर	॥ ॥ ॥ ऽऽ ॥	ल. गोधू., ८, ६,
वैशा. कृ. ९ र.	वैशा. ७	अप्रै. १९	धनि.	मकर	मेष	मकर	ऽबु. । ऽगु ॥ ॥ ऽ ॥	ल. गोधू. ८, ६ (२३/१५ तक),
वैशा. शु. ४ मं.	वैशा. १६	अप्रै. २८	मृग.	मिथुन	मेष	मकर	॥ ॥ ॥ ॥ ॥	ल. ६ (२२/२३ बाद)(चं.दा.),
वैशा. शु. ११ मं.	वैशा. २३	मई ५	उ.फा.	कन्या	मेष	कुम्भ	॥ ॥ ।ऽअ. ॥ ॥	दि.ल. ३ (९/३७ बाद) (मं.दा.), गोधू.,
वैशा. शु. १२ बु.	वैशा. २४	मई ६	हस्त	कन्या	मेष	कुम्भ	ऽसू. ऽ।ऽशु. ऽऽनृ. ॥ ॥	ल. गोधू., (१४/५० तक भौमवेध),(शुक्र पादवेधाभाव),
वैशा. शु. १२ बु.	वैशा. २४	मई ६	चित्रा	कन्या	मेष	कुम्भ	॥ ॥ ऽमं. ऽनृ. ऽ। ॥	ल. ६ (२२/५१ बाद),
वैशा. शु. १३ गु.	वैशा. २५	मई ७	चित्रा	कन्या/तुला	मेष	कुम्भ	॥ ॥ ऽमं. ऽनृ. ऽ। ॥	दि.ल. २, ३ (मं.दा.), रा. ल. ६ (२२/१९ तक),
वैशा. शु. १३ गु.	वैशा. २५	मई ७	स्वा.	तुला	मेष	कुम्भ	॥ ॥ ॥ ।ऽ ॥	ल. ६ (२३/३१ बाद),
ज्ये. कृ. ३ मं.	वैशा. ३०	मई १२	मूल	धनु	मेष	कुम्भ	॥ ॥ ॥ ऽ । ॥	ल. गोधू.,
ज्ये. कृ. ६ शु.	ज्ये. २	मई १५	श्रव.	मकर	वृष	कुम्भ	ऽचं.शु. ॥। ऽके. ।ऽ ॥।	ल. ६ (२१/३८ तक), (१६/५० तक क्रान्तिसाम्य),
ज्ये. कृ. ७ श.	ज्ये. ३	मई १६	धनि.	मकर	वृष	कुम्भ	ऽशु. ।ऽगु. ॥ ऽअ. ।ऽ ॥	ल. १ (निर्बल लग्न), (गोधू. एवं धनु लग्न में मृत्युबाण),
ज्ये. कृ. ८ र.	ज्ये. ४	मई १७	धनि.	कुम्भ	वृष	कुम्भ	ऽशु. ।ऽगु. ॥ ऽअ. ।ऽ ॥	दि.ल. ३ (७/५३ बाद) (मं.दा.), गोधू.,
ज्ये. कृ. १० मं.	ज्ये. ६	मई १९	उ.भा.	मीन	वृष	कुम्भ	॥ ॥ ॥ ऽऽ ॥	ल. १, (निर्बल लग्न),
ज्ये. कृ. ११ बु.	ज्ये. ७	मई २०	उ.भा.	मीन	वृष	कुम्भ	॥ ॥ ॥ ऽऽ ॥	दि.ल. ३ (मं.दा.), गोधू., ६ (२३/०९ तक),
ज्ये. शु. ७ श.	ज्ये. १७	मई ३०	मघा	सिंह	वृष	कुम्भ	॥ ॥ ऽगु. ऽचौ. ऽऽ ॥	दि.ल. ३, गोधू., ६ (२१/३८ तक),
ज्ये. शु. ९ चं.	ज्ये. १९	जून १	उ.फा.	सिंह/कन्या	वृष	कुम्भ	॥ ॥ । ऽरो. ऽ। ॥	दि.ल. ३, गोधू., ६, १२(२६/४९ तक) (चं.दा.),
ज्ये. शु. १० मं.	ज्ये. २०	जून २	हस्त	कन्या	वृष	कुम्भ	॥ ॥ । ऽरो. ।ऽ ॥	दि.ल. ३,
ज्ये. शु. १४ श.	ज्ये. २४	जून ६	अनु.	वृश्चिक	वृष	कुम्भ	॥ ॥ ऽबु. ऽनृ. ।ऽ ॥	ल. ६ (२१/५५ तक),
आषा. कृ. ३ गु.	ज्ये. २९	जून ११	श्रव.	मकर	वृष	कुम्भ	॥ ॥ ऽके. ऽरो. ऽऽ ॥	ल. १२,
आषा. कृ. ९ बु.	आषा. ४	जून १७	रेव.	मीन	मिथुन	कुम्भ	॥ ॥ ।ऽअ. ।ऽ ॥	ल. गोधू., २ (२७/३१ तक),
आषा. शु. ४ शु.	आषा. १३	जून २६	मघा	सिंह	मिथुन	कुम्भ	॥ ॥ ऽगु. ऽअ. ऽऽ ॥	ल. गोधू., २, (१५/४८ तक मृत्युबाण),
आषा. शु. ६ र.	आषा. १५	जून २८	उ.फा.	कन्या	मिथुन	कुम्भ	।ऽसू. ॥ ।ऽनृ. ऽऽ ॥	ल. १२ (चं.दा.), २,
आषा. शु. ८ चं.	आषा. १६	जून २९	हस्त	कन्या	मिथुन	कुम्भ	॥ ॥ ॥ ।ऽ ॥	ल. गोधू.,
आषा. शु. ९ मं.	आषा. १७	जून ३०	चित्रा	कन्या	मिथुन	कुम्भ	॥ ॥ ॥ ऽ। ॥	ल. गोधू.,
आषा. शु. १० बु.	आषा. १८	जुला. १	स्वा.	तुला	मिथुन	कुम्भ	॥ ॥ ।ऽचौ. ऽ। ॥	ल. गोधू.,
आषा. शु. ११ शु.	आषा. २०	जुला. ३	अनु.	वृश्चिक	मिथुन	कुम्भ	ऽसू. ऽ॥ ऽमं.शु. ऽरो. ॥ ॥	ल. गोधू., १२ (शु.दा.),

शुद्ध विवाह मुहूर्त (सं. २०६६ वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २००९ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
आषा. शु. १२ श.	आषा. २१	जुला. ४	अनु.	वृश्चिक	मिथुन	कुम्भ	ऽसू.ऽ ॥ ऽमं.शु. । ॥ ॥	दि.ल. ६ (श.दा.),
श्राव. कृ. २ गु.	आषा. २६	जुला. ९	श्रव.	मकर	मिथुन	कुम्भ	॥ ॥ ऽके. । ॥ ॥	दि.ल. ६ (श.दा.), गोधू., १२ (शु.दा.), १,
श्राव. कृ. ३ शु.	आषा. २७	जुला. १०	धनि.	कुम्भ	मिथुन	कुम्भ	॥ ऽगु. ॥ ऽचौ. ॥ ॥	ल. १२ (शु.दा.), १,
श्राव. कृ. ६ चं.	आषा. ३०	जुला. १३	उ.भा.	मीन	मिथुन	कुम्भ	ऽचं. । ॥ ॥ ऽ। ॥	ल. गोधू., १,
श्राव. कृ. ११ श.	श्राव. ३	जुला. १८	रोहि.	वृष	कर्क	कुम्भ	।ऽ ऽमं.शु. ॥ ऽअ. ।ऽ ॥	ल. गोधू., १२ (शु.दा.), १, ३, (१७/२६ तक मृत्युबाण),
श्राव. कृ. १२ र.	श्राव. ४	जुला. १९	रोहि.	वृष	कर्क	कुम्भ	।ऽ ऽमं.शु. ॥ ऽअ. ।ऽ ॥	दि.ल. ६ (११/४० तक) (श.दा.),
श्राव. शु. ५ र.	श्राव. ११	जुला. २६	हस्त	कन्या	कर्क	कुम्भ	॥ ॥ ॥ ॥ ॥	ल. गोधू., १२ (चं.शु.दा.), ३, (२६/२५ बाद मृत्युबाण),
श्राव. शु. ६ चं.	श्राव. १२	जुला. २७	चित्रा	कन्या	कर्क	कुम्भ	॥ ॥ ।ऽअ. ऽऽ ॥	ल. ३, (२५/३२ तक मृत्युबाण),
श्राव. शु. ७ मं.	श्राव. १३	जुला. २८	चित्रा	तुला	कर्क	कुम्भ	॥ ॥ ।ऽअ. ऽऽ ॥	दि.ल. ६ (श.दा.),
श्राव. शु. ८ बु.	श्राव. १४	जुला. २९	स्वा.	तुला	कर्क	कुम्भ	।ऽ ॥ ॥ ।ऽ ॥	दि.ल. ६ (श.दा.), (८/११ तक क्रान्तिसाम्य),
श्राव. शु. ९ गु.	श्राव. १५	जुला. ३०	अनु.	वृश्चिक	कर्क	मकर	॥ ॥।ऽनृ. ।ऽ ॥	ल. १२, १ (शु.दा.),
श्राव. शु. १० शु.	श्राव. १६	जुला. ३१	अनु.	वृश्चिक	कर्क	मकर	॥ ॥ ॥ ।ऽ ॥	दि.ल. ६ (श.दा.), गोधू.,
भाद्र. कृ. ३ र.	श्राव. २५	अग. ९	उ.भा.	मीन	कर्क	मकर	॥ ॥ ॥ ऽऽ ॥	ल. १ (शु.दा.),
भाद्र. कृ. ४ चं.	श्राव. २६	अग. १०	उ.भा.	मीन	कर्क	मकर	॥ ॥ ॥ ऽऽ ॥	दि.ल. ६ (चं.श.दा.), गोधू.,
भाद्र. कृ. ४ चं.	श्राव. २६	अग. १०	रेव.	मीन	कर्क	मकर	॥ ॥ ।ऽचौ. ।ऽ ॥	ल. १ (२२/१५ बाद) (शु.दा.),
भाद्र. कृ. ५ मं.	श्राव. २७	अग. ११	रेव.	मीन	कर्क	मकर	॥ ॥ ।ऽचौ. ।ऽ ॥	दि.ल. ६ (१०/२७ बाद) (चं.श.दा.), गोधू.,
भाद्र. शु. २ श.	भाद्र. ७	अग. २२	उ.फा.	सिंह/कन्या	सिंह	मकर	॥ ऽबु.श. । ॥ ऽ। ॥	दि.ल. ६ (मं.श.दा.), ७ (रा.दा.), २ (शु.दा.),
भाद्र. शु. ३ र.	भाद्र. ८	अग. २३	हस्त	कन्या	सिंह	मकर	।ऽ ॥ ।ऽचौ. ॥ ॥	दि.ल. ७ (रा.दा.),
भाद्र. शु. ५ चं.	भाद्र. ९	अग. २४	चित्रा	कन्या/तुला	सिंह	मकर	॥ ॥ ॥ ऽऽ ॥	दि.ल. ७ (रा.दा.), गोधू., १ (चं.दा.),
भाद्र. शु. ६ मं.	भाद्र. १०	अग. २५	स्वा.	तुला	सिंह	मकर	॥ ॥ ।ऽरो. ॥ ॥	दि.ल. ६ (मं.श.दा.), गोधू., १ (चं.दा.),
भाद्र. शु. ९ श.	भाद्र. १४	अग. २९	मूल	धनु	सिंह	मकर	ऽश. । ॥ ॥ ।ऽ ॥	दि.ल. ६ (८/५६ बाद)(मं.श.दा.), ७ (रा.दा.), गोधू., १,
भाद्र. शु. १० र.	भाद्र. १५	अग. ३०	मूल	धनु	सिंह	मकर	ऽश. । ॥ ॥ ।ऽ ॥	दि.ल. ६ (मं.श.दा.), ७ (६/५३ तक)(रा.दा.),
भाद्र. शु. १२ मं.	भाद्र. १७	सितं. १	श्रव.	मकर	सिंह	मकर	ऽसू. । ॥ ।ऽचौ. ऽ। ॥	ल. गोधू., १, २ (शु.दा.),
भाद्र. शु. १३ बु.	भाद्र. १८	सितं. २	श्रव.	मकर	सिंह	मकर	ऽसू. । ॥ ।ऽचौ. ऽ। ॥	दि.ल. ६ (मं.श.दा.), ७ (रा.दा.), गोधू.,
भाद्र. शु. १३ बु.	भाद्र. १८	सितं. २	धनि.	मकर	सिंह	मकर	॥ ऽगु. । ॥ ॥ ॥	ल. १, २ (शु.दा.),
भाद्र. श १४ गु.	भाद्र. १९	सितं. ३	धनि.	मकर/कुम्भ	सिंह	[illegible]	[illegible]	दि.ल. ६ (मं.श.दा.), ७ (रा.दा.),

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०६६ वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २००९ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	· शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
आश्वि. शु. १ श.	आश्वि. ४	सितं. १९	हस्त	कन्या	कन्या	मकर	।। ।। । ऽअ. ।। ।।	ल. २ (२१/५१ बाद), ५,
आश्वि. शु. २ र.	आश्वि. ५	सितं. २०	हस्त	कन्या	कन्या	मकर	।। ।। ।। ।। ।।	दि.ल. ७ (श.रा.दा.),
आश्वि. शु. २ र.	आश्वि. ५	सितं. २०	चित्रा	कन्या/तुला	कन्या	मकर	।। ।। ।। ऽ । ।।	ल. गोधू., २, ५,
आश्वि. शु. ३ चं.	आश्वि. ६	सितं. २१	स्वा.	तुला	कन्या	मकर	।। । ऽचं. ।ऽनृ. ।। ।।	ल. १ (२०/४९ तक) (चं.दा.), (चन्द्रपादवेधाभाव),
आश्वि. शु. ५ बु.	आश्वि. ८	सितं. २३	अनु.	वृश्चिक	कन्या	मकर	।। ।। । ऽचौ. ।। ।।	ल. गोधू., १, २ (चं.दा.), ५,
आश्वि. शु. ६ गु.	आश्वि. ९	सितं. २४	अनु.	वृश्चिक	कन्या	मकर	।। ।। ।। ।। ।।	दि.ल. ७ (श.रा.दा.),
आश्वि. शु. ११ मं.	आश्वि.१४	सितं. २९	श्रव.	मकर	कन्या	मकर	।। ।। ।। ऽऽ ।।	दि.ल. ७ (श.रा.दा.),
आश्वि. शु. ११ बु.	आश्वि.१५	सितं. ३०	धनि.	मकर/कुम्भ	कन्या	मकर	।। ऽगु. ।। ऽनृ. ।। ।।	दि.ल. ७ (श.रा.दा.), गोधू., १, २, ५(२९/०२ तक) (चं.दा.) ,
कार्त्ति. कृ. १ चं.	आश्वि.२०	अक्तू. ५	अश्वि.	मेष	कन्या	मकर	।। । ऽशु. ।। ऽ। ।।	ल. २, ५, (१७/११ तक शुक्रपादवेध),
कार्त्ति. कृ. २ मं.	आश्वि.२१	अक्तू. ६	अश्वि.	मेष	कन्या	मकर	।। । ऽशु. ।। ऽ। ।।	दि.ल. ७ (८/२५ तक)(चं.मं.श.रा.दा.), (शुक्रपादवेधाभाव), (८/२५ बाद मृत्युबाण)
कार्त्ति. कृ. ४ गु.	आश्वि.२३	अक्तू. ८	रोहि.	वृष	कन्या	मकर	।। ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. ८(१०/१६ बाद) (चं.दा.),
कार्त्ति. कृ. ११ बु.	आश्वि.२९	अक्तू. १४	मघा	सिंह	कन्या	मकर	ऽमं. ।। ऽगु. ।ऽरो. ऽ। ।।	दि.ल. ७(८/४५बाद) (मं.श.रा.दा.), ८, ९, रा.ल.१, २, (८/४५ तक गुरु पादवेध), (१३/३७ से १७/३९ तक क्रान्तिसाम्य),
कार्त्ति. शु. १ चं.	कार्त्ति. ३	अक्तू. १९	स्वा.	तुला	तुला	मकर	।। ।। ।ऽअ. ।। ।।	दि. ल. ९(११/४० बाद), गोधू., (११/४० तक मृत्युबाण),
कार्त्ति. शु. २ मं.	कार्त्ति. ४	अक्तू. २०	अनु.	वृश्चिक	तुला	मकर	।। ।। ।। ।। ।।	ल. ५, (निर्बल लग्न),
कार्त्ति. शु. ३ बु.	कार्त्ति. ५	अक्तू. २१	अनु.	वृश्चिक	तुला	मकर	।। ।। ।ऽनृ. ।। ।।	दि. ल. ९, गोधू., २ (चं.दा.),
कार्त्ति. शु. ९ मं.	कार्त्ति. ११	अक्तू. २७	धनि.	मकर	तुला	मकर	।ऽसू. ऽगु. ।। ऽअ. ।। ।।	दि. ल. ९ (११/४९ से १२/३१ तक), (१२/३१ बाद मृत्युबाण),
कार्त्ति. शु. १२ शु.	कार्त्ति. १४	अक्तू. ३०	उ.भा.	मीन	तुला	मकर	ऽसू. ।।। ऽश. ऽनृ. ।। ।।	ल. २ (१८/२४ बाद),
कार्त्ति. शु. १३ श.	कार्त्ति. १५	अक्तू. ३१	उ.भा.	मीन	तुला	मकर	ऽसू. ।।। ऽश. ऽनृ. ।। ।।	दि.ल. ८, ९, गोधू.,
कार्त्ति. शु. १४ र.	कार्त्ति. १६	नवं. १	अश्वि.	मेष	तुला	मकर	ऽगु. ।।। ऽशु. ऽचौ. ऽऽ ।।	ल. ५ (२५/५३ तक), (निर्बल लग्न),
मार्ग. कृ. २ बु.	कार्त्ति. १९	नवं. ४	रोहि.	वृष	तुला	मकर	।। ।। ।। ।। ।।	ल. गोधू.,
मार्ग. कृ. ३ गु.	कार्त्ति. २०	नवं. ५	रोहि.	वृष	तुला	मकर	।। ।। ।। ।। ।।	दि.ल. ८ (८/०९ तक) (चं.दा.),
मार्ग. कृ. ८ मं.	कार्त्ति. २५	नवं. १०	मघा	सिंह	तुला	मकर	।। ।। ऽगु. ऽचौ. ऽऽ ।।	दि.ल. ९ (९/३१ बाद), गोधू.,
मार्ग. कृ. ११ गु.	कार्त्ति. २७	नवं. १२	उ.फा.	कन्या	तुला	मकर	।। ऽश. ।। ऽरो. ऽऽ ।।	ल.५ (शु.दा.), (निर्बल लग्न),
मार्ग. कृ. १२ शु.	कार्त्ति. २८	नवं. १३	हस्त	कन्या	तुला	मकर	।। ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. ८, ९, रा. ल. ५ (२६/१६ तक) (शु.दा.),
मार्ग. शु. ५ र.	मार्ग. ७	नवं. २२	श्रव.	मकर	वृश्चिक	मकर	।। ।। ।ऽचौ. ऽ ।।।	ल. गोधू., ७ (मं.श.दा.),
मार्ग. शु. ६ चं.	मार्ग. ८	नवं. २३	श्रव.	मकर	वृश्चिक	मकर	।। ।। ।। ऽ। ।।	ल. गोधू.,

शुद्ध विवाह मुहूर्त (सं. २०६६ वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २००६-१० ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
मार्ग. शु. १० शु.	मार्ग. १२	नवं. २७	उ.भा.	मीन	वृश्चिक	मकर	।। ।। ऽश. ऽअ: ऽऽ ।।	ल. गोधू., ५,
मार्ग. शु. १२ र.	मार्ग. १४	नवं. २६	अश्वि.	मेष	वृश्चिक	मकर	ऽसु.गु. ऽ ।।। ऽनृ. ऽ ।।।	ल. गोधू., ५, ७ (२७/४६ तक) (चं.मं.श.दा.),
मार्ग. शु. १५ बु.	मार्ग. १७	दिसं. २	रोहि.	वृष	वृश्चिक	मकर	।। ।। ।। ।ऽ ।।	ल. ५ (२३/३१ तक),
पौष कृ. ८ बु.	मार्ग. २४	दिसं. ६	उ.फा.	सिंह/कन्या	वृश्चिक	मकर	।। ऽश. ।।। ऽऽ ।।	ल. गोधू., ५, ७ (मं.श.दा.),
पौष कृ. ६ गु.	मार्ग. २५	दिसं. १०	हस्त	कन्या	वृश्चिक	मकर	ऽशु. ।। ।। ऽचौ. ।ऽ ।।	ल. गोधू., ५, ७ (२७/१६ तक) (मं.श.दा.),
पौष कृ. १० शु.	मार्ग. २६	दिसं. ११	चित्रा	कन्या/तुला	वृश्चिक	मकर	ऽबु.शु. ।। ।। । ऽऽ ।।	ल. गोधू., ५,
पौष कृ. ११ श.	मार्ग. २७	दिसं. १२	स्वा.	तुला	वृश्चिक	मकर	।। ।। ।ऽरो. ।ऽ ।।	ल. ५,
फाल्गु.कृ. ८ श.	माघ २४	फर. ६	अनु.	वृश्चिक	मकर	कुम्भ	।। ।। ।। ।ऽ ।।	ल. ७ (२४/३० बाद) (मं.श.दा.),
फाल्गु.कृ. ६ र.	माघ २५	फर. ७	अनु.	वृश्चिक	मकर	कुम्भ	।। ।। । ऽचौ. ।ऽ ।।	दि.ल. १, २ (चं. दा.), गोधू., ७ (२३/१० तक)(मं.श.दा.),

आगामी वर्ष (सं. २०६७ वि.)में गुरु–शुक्रास्तकाल (लगभग)—सं. २०६७ वि. में शुक्र लगभग १३ अक्तूबर, २०१० ई. से ६ नवम्बर, २०१० ई. तक और गुरु लगभग २३ मार्च, २०११ से वर्षान्त तक अस्त रहेगा। ध्यान दें– आगामी वर्ष संवत् २०६७ वि. में वैशाख अधिकमास होगा; जिससे सौरवैशाख (१४ अप्रैल से १४ मई, २०१० तक) में विवाहादि शुभकृत्य नहीं होंगे।

विवाहमुहूर्त्तों के शोधन में वेध–युति आदि दोषों के शास्त्रीय–परिहार

इस पंचांग में दिए जाने वाले विवाहमुहूर्त्तों में जहां वेध, युति, कर्त्तरी, दग्धातिथि, षष्ठाष्टमस्थ–चन्द्र, भौम, शुक्र के दोषों के परिहार मिल जाते हैं, वहां उन मुहूर्त्तों को शास्त्रानुसार शुद्ध मान लिया जाता है और वहां विवाह लग्न लगा दिए जाते हैं। इन दोषों के परिहार इन स्थितियों में माने गए हैं:– *वेध परिहार*– सप्तशलाका एवं पंचशलाका वेध में क्रूरग्रह द्वारा विद्ध नक्षत्र के तो चारों चरण दूषित माने जाते हैं, वेध का वहां परिहार नहीं है। सौम्य ग्रह द्वारा वेध होने पर पादवेधपद्धति से केवल विद्ध चरण को ही दूषित माना जाता है। वहा शेष तीनों चरण वेधदोष से मुक्त रहते हैं। पादवेधपद्धति मे वेधक सौम्यग्रह नक्षत्र के पहिले चरण में हो तो वह वेध्य नक्षत्र के चौथे चरण को, चतुर्थ चरण में स्थित वेधक सौम्य ग्रह वेध्य नक्षत्र के पहिले चरण को, द्वितीय चरणस्थ वेधक ग्रह वेध्य नक्षत्र के तृतीय चरण को एवं तृतीय चरणस्थ वेधक ग्रह वेध्य नक्षत्र के द्वितीय चरण को विद्ध करता है। *युति दोष का परिहार*– नक्षत्र के साथ सौम्यग्रह की युति का दोष सामान्य माना जाता है, लेकिन क्रूरग्रह की युति बहुत ही अशुभ फलप्रद मानी जाती है। यदि चन्द्रमा अपनी उच्च राशि (वृष) या मित्र राशि (सिंह, मिथुन, कन्या) में हो तो क्रूरग्रह की युति का दोष भी समाप्त हो जाता है। *कर्त्तरीदोष का परिहार*– मुहूर्त के लग्न से सप्तम रहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र, बुध या लग्नेश स्थित हो तो कर्त्तरीदोष का परिहार हो जाता है। कर्त्तरी बनाने वाले ग्रह यदि शत्रुराशि या अपनी नीचराशि में हो या दोनों अस्त हों, तो भी लग्न का कर्त्तरीदोष नहीं रहता। यदि मुहूर्त्तलग्न से द्वितीय भाव में कोई शुभ ग्रह बैठा हो अथवा बारहवें भाव में गुरु बैठा हो तो भी कर्त्तरीदोष निष्प्रभाव हो जाता है और ऐसा कर्त्तरीदोष विवाहमुहूर्त्त को अग्राह्य नही बना सकता। चन्द्र कर्त्तरीदोष का परिहार भी चन्द्रमा के स्थान को लग्न समझकर, इन्हीं योगों से देखना चाहिए। *दग्धातिथि का परिहार*– मुहूर्त के लग्न से सप्तमरहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र, बुध या लग्नेश बैठा हो, तो दग्धातिथि का परिहार हो जाता है, इस परिहार की स्थिति में दग्धातिथि मे विवाहलग्न शुद्ध माना जाता है। *षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र का परिहार*– नीच राशि (वृश्चिक) मे चन्द्रमा हो तो वह लग्न से छठे या आठवें भाव में होने पर भी दोषकारक नहीं होता। यदि चन्द्रमा लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो, तब तो उसका कोई परिहार शास्त्रों में नहीं मिलता। *अष्टमस्थ मंगल का परिहार*– मंगल अस्त (अदृश्य) हो या वह नीचराशि (कर्क) अथवा शत्रु राशि (मिथुन या कन्या) में हो, तो लग्न से अष्टमस्थ होने पर भी वह दोषकारक नही होता। यदि मंगल लग्नेश होकर अष्टम में हो, तो किसी भी स्थिति में उसके दोष का परिहार नही माना जाता। *षष्ठाष्टमस्थ शुक्र का परिहार*– शुक्र यदि नीचराशि [illegible] पर भी अशुभ फल नहीं करता। यदि शुक्र लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो, तो उसका भी कोई परिहार नहीं है– मार्तण्ड पंचांग में दिए जाने वाले मुहूर्तों में उपरोक्त सभी दोषों के परिहारों का प्रयोग किया जाता है।

सं. २०६६ वि. में भिन्न-भिन्न राशि वाले वरों और कन्याओं के विवाह-निर्णय के लिए त्रिबल-शुद्धि

(अर्थात् किस राशि वाले वर और कन्या के लिए सं. २०६६ वि. में कुल कितने विवाहमुहूर्त्त किन-किन तारीखों को शुद्ध (ग्राह्य) बनते हैं ?)

लोग अपनी सुविधा के अनुसार किसी खास महीने में या किसी खास तारीख के आस-पास ही विवाह-मुहूर्त्त (साहा) निकालने के लिए ज्योतिषियों से अनुरोध किया करते हैं। ऐसी स्थिति में ज्योतिषी को विवाह मुहूर्त्तों में जगह-जगह त्रिबल-शुद्धि जानने का झंझट करना पड़ता है। इस झंझट से ज्योतिषियों को छुटकारा दिलाने के लिए हम यहां नीचे 'त्रिबलशुद्धि कोष्ठक' दे रहे हैं। संवत् २०६६ वि. के शुद्ध विवाह-मुहूर्त्त इस पंचांग में पृ. 242 पर दिए गए हैं । किस-किस महीने में किस-किस तारीख वाले विवाहमुहूर्त्त में, किस-किस राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं, यह त्रिबलशुद्धि के अनुसार नीचे दिए गए 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' में लिख दिया गया है । अमुक राशि वाले लड़के (वर) और अमुक राशि वाली कन्या के लिए इस वर्ष कुल कितने विवाहमुहूर्त्त किन-किन तारीखों को बनते हैं- इस कोष्ठक द्वारा साधारण व्यक्ति भी एक ही नजर में यह तुरन्त जान सकता है। इस कोष्ठक से यह भी तुरन्त जाना जा सकता है, कि अमुक राशि वाली लड़कियों और लड़कों का विवाह इस वर्ष किन-किन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में हो सकता है । वर के लिए 'सूर्य की पूजा' और कन्या के लिए 'गुरु की पूजा' वाला समय भी इस कोष्ठक में दिया गया है ।

लड़का-लड़की की राशियों वाले कॉलमों/कोष्ठकों में जो-जो तारीखें समान रूप से मिलती हों, उन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में उस लड़के-लड़की का विवाह हो सकता है। **जैसे-** मेषराशि वाले लड़के और मिथुनराशि वाली लड़की का विवाह सं. २०६६ वि. में जुलाई (२००९ ई.) के महीने में किन-किन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में हो सकता है-यह मालूम करना है। नीचे 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' देखें,-लड़के वाले कॉलम में जन्मराशि मेष के आगे जुलाई, २००९ ई. की १, ९, १०, १३ तारीखें हैं, जबकि लड़की वाले कॉलम में जन्मराशि मिथुन के आगे १, ३, ४, १०, १३, १८, १९, २८, २९, ३०, ३१ तारीखें हैं। इसलिए यह समझना चाहिए कि- जुलाई, २००९ ई. में मेष राशि वाले लड़के और मिथुन राशि वाली लड़की का विवाह त्रिबलशुद्धि के अनुसार जुलाई की केवल १, १०, १३ तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में ही हो सकता है, क्योंकि जुलाई की केवल यही तारीखें, दोनों (लड़का-लड़की) की राशियों (मेष-मिथुन) वाले कॉलमों (कोष्ठकों) में एक-सी मिलती हैं। इस प्रकार विवाह की तारीखों का निश्चय करके शुद्ध विवाह-मुहूर्त्तों से उस दिन विवाह के लग्न का निर्णय कर लीजिए। क्योंकि, आजकल लड़कियों का विवाह बड़ी अवस्था में होता है, अतः चतुर्थ-अष्टम-द्वादश गुरु को शास्त्रनिर्देशानुसार नेष्ट न मानकर पूज्य ही माना गया है।

ध्यान दें- लड़के की राशि से १, २, ५, ७, ९ वें स्थित सूर्य एवं कन्या की राशि से १, ३, ४, ६, ८, १०, १२ वें स्थित गुरु यदि स्वराशि, मित्रराशि या स्वोच्चराशि में हो तो उन्हें शास्त्र-निर्देशानुसार यहां पूज्य न मानकर शुभ ही माना जाता है।

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०६६ वि.) (२७ मार्च, सन् २००९ से १५ मार्च, सन् २०१० ई. तक)

(कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है)

नाम/जन्म-राशि	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है।	लड़की	इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है।
मेष	अप्रै. १७, १९, २८; मई ५, ६, ७, १२, १५, १६, १७, १९, २०, ३०; जून १, ११, १७, २६, २८, २९, ३०; जुला. १, ९, १०, १३; अग. २२, २३, २४, २५, २९, ३०; सितं. १, २, ३, १९, २०, २१, २९, ३०; अक्तू. ५, ६, ८, १४, १९, २७, ३०, ३१; नवं. १, ४, ५, १०, १२, १३;	ज्येष्ठ , कार्त्तिक ,	अप्रै. १७, १९, २८; मई ५, ६, ७, १२, १५, १६, १७, १९, २०, ३०; जून १, ११, १७, २६, २८, २९, ३०; जुला. १, ९, १०, १३, १८, १९, २६, २७, २८, २९; अग. ९, १०, ११, २२, २३, २४, २५, २९, ३०; सितं. १, २, ३, १९, २०, २१, २९, ३०; अक्तू. ५, ६, ८, १४, १९, २७, ३०, ३१; नवं. १, ४, ५, १०, १२, १३, २२, २३, २७, २९; दिसं. २, ९, १०, ११, १२;	मकर
वृष	मई १५, १६, १७, १९, २०; जून १ (९/५८ बाद),६, ११, १७, २८, २६, ३०; जुला. १, ३, ४, ९, १०, १३, १८, १९, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१; अग. ९, १०, ११; सितं. १९, २०, २१, २३, २४, २६, ३०; अक्तू. ५, ६, ८, १९, २०, २१, २७, ३०, ३१; नवं. १, ४, ५, १२, १३, २२, २३, २७, २९; दिसं. २, ९(१७/४७ बाद), १०, ११, १२; फर. ६, ७;	ज्येष्ठ , आषाढ़ , आश्विन , माघ ,	अप्रै. १७, १९, २८; मई ५, ६, ७, १५, १६, १७, १९, २०; जून १ (९/५८ बाद), ६, ११, १७, २८, २९, ३०; जुला. १, ३, ४, ९, १०, १३, १८, १९, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१; अग. ९, १०, ११, २२ (१०/४० बाद), २३, २४, २५, ; सितं. १, २, ३, १९, २०, २१, २३, २४, २९, ३०; अक्तू. ५, ६, ८, १९, २०, २१, २७, ३०, ३१; नवं. १, ४, ५, १२, १३, २२, २३, २७, २९; दिसं. २, ९(१७/४७ बाद), १०, ११, १२; फर. ६, ७;	कुम्भ
मिथुन	अप्रै. २८; मई ७ (११/०८ तक), १२; जून १७, २६; जुला. १, ३, ४, १०, १३, १८, १९, २८, २९, ३०, ३१; अग. ९, १०, ११, २२ (१०/४० तक), २४ (१४/०३ बाद), २५, २६, ३०; सितं. ३ (९/३२ बाद); अक्तू. १९, २०, २१, ३०, ३१; नवं. १, ४, ५, १०, २७, २९; दिसं. २, ९ (१७/४७ तक), ११ (२३/०६ बाद), १२;	आषाढ़ , कार्त्तिक, फाल्गुन ,	अप्रै. २८; मई ७ (११/०८ तक), १२, १७, १९, २०, ३० ; जून १ (९/५८ तक), ६, १७, २६; जुला. १, ३, ४, १०, १३, १८, १९, २८, २९, ३०, ३१; अग. ९, १०, ११, २२ (१०/४० तक), २४(१४/०३ बाद), २५, २६, ३०; सितं. ३ (९/३२ बाद), २०(२३/५० बाद), २१, २३, २४, ३०(१७/०० बाद) ; अक्तू. ५, ६, ८, १४, १९, २०, २१, ३०, ३१; नवं. १, ४, ५, १०, २७, २९; दिसं. २, ९(१७/४७ तक), ११(२३/०६ बाद), १२; फर. ६, ७;	मकर
कर्क	अप्रै. १७, १९, २८; मई ५, ६, ७ (११/०८ तक), १२, १५, १६, १९, २०, ३०; जून १, ६, ११; जुला. १८, १९, २६, २७, ३०, ३१; अग. ९, १०, ११, २२, २३, २४ (१४/०३ तक), २६, ३०; सितं. १, २, ३(९/३२ तक), १९, २०(२३/५० तक), २३, २४, २६, ३०(१७/०० तक), अक्तू. ५, ६, ८, १४; नवं. २२, २३, २७, २९; दिसं. २, ९, १०, ११ (२३/०६ तक); फर. ६, ७;	माघ,	अप्रै. १७, १९, २८; मई ५, ६, ७ (११/०८ तक), १२, १५, १६, १९, २०, ३०; जून १, ६, ११, १७, २६, २८, २९, ३०; जुला. ३, ४, ९, १३, १८, १९, २६, २७, ३०, ३१; अग. ९, १०, ११, २२, २३, २४ (१४/०३ तक), २९, ३०; सितं. १, २, ३(९/३२ तक), १९, २०(२३/५० तक), २३, २४, २९, ३०(१७/०० तक), अक्तू. ५, ६, ८, १४, २०, २१, २७, ३०, ३१; नवं. १, ४, ५, १०, १२, १३, २२, २३, २७, २९; दिसं. २, ९, १०, ११ (२३/०६ तक); फर. ६, ७;	कुम्भ

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०६६ वि.) (२७ मार्च, सन् २००९ से १५ मार्च, सन् २०१० ई. तक)

(कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है)

नाम/जन्म-राशि	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है।	लड़की	इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है।
सिंह	अप्रै. १७, १९, २८; मई ५, ६, ७, १२, १५, १६, १७, ३०; जून १, ११, २६, २८, २९, ३०; जुला. १, ९, १०; अग. २२, २३, २४, २५, २९, ३०; सितं. १, २, ३, १९, २०, २१, २९, ३०; अक्तू. ५, ६, ८, १४, १९, २७; नवं. १, ४, ५, १०, १२, १३;	आश्विन, फाल्गुन,	अप्रै. १७, १९, २८; मई ५, ६, ७, १२, १५, १६, १७, ३०; जून १, ११, २६, २८, २९, ३०; जुला. १, ९, १०, १८, १९, २६, २७, २८, २९; अग. २२, २३, २४, २५, २९, ३०; सितं. १, २, ३, १९, २०, २१, २९, ३०; अक्तू. ५, ६, ८, १४, १९, २७; नवं. १, ४, ५, १०, १२, १३, २२, २३, २९; दिसं. २, ९, १०, ११, १२;	मकर
कन्या	मई १५, १६, १७, १९, २०, ३०; जून १ ,६, ११, १७, २६, २८, २९, ३०; जुला. १, ३, ४, ९, १०, १३, १८, १९, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१; अग. ९, १०, ११; सितं. १९, २०, २१, २३, २४, २९, ३०; अक्तू. ८, १४, १९, २०, २१, २७, ३०, ३१; नवं. ४, ५, १०, १२, १३, २२, २३, २७; दिसं. २, ९, १०, ११, १२; फर. ६, ७;	ज्येष्ठ , आश्विन कार्तिक , माघ,	अप्रै. १७, १९, २८; मई ५, ६, ७, १५, १६, १७, १९, २०, ३०; जून १ ,६, ११, १७, २६, २८, २९, ३०; जुला. १, ३, ४, ९, १०, १३, १८, १९, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१; अग. ९, १०, ११, २२, २३, २४, २५; सितं. १, २, ३, १९, २०, २१, २३, २४, २९, ३०; अक्तू. ८, १४, १९, २०, २१, २७, ३०, ३१; नवं. ४, ५, १०, १२, १३, २२, २३, २७; दिसं. २, ९, १०, ११, १२; फर. ६, ७;	कुम्भ
तुला	अप्रै. २८; मई ५, ६, ७ , १२; जून १, ६, १७, २६, २८, २९, ३०; जुला. १, ३, ४, १०, १३, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१; अग. ९, १०, ११, २२, २३, २४, २५, २९, ३०; सितं. ३(९/३२ बाद); अक्तू., १९, २०, २१, ३०, ३१; नवं. १, १०, १२, १३, २७, २९; दिसं. ९, १०, ११, १२;	आषाढ़ , कार्तिक, फाल्गुन,	अप्रै. २८; मई ५, ६, ७ , १२, १७, १९, २०, ३०; जून १, ६, १७, २६, २८, २९, ३०; जुला. १, ३, ४, १०, १३, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१; अग. ९, १०, ११, २२, २३, २४, २५, २९, ३०; सितं. ३(९/३२ बाद), १९, २०, २१, २३, २४, ३०(१७/०० बाद); अक्तू. ५, ६, १४, १९, २०, २१, ३०, ३१; नवं. १, १०, १२, १३, २७, २९; दिसं. ९, १०, ११, १२; फर. ६, ७;	मकर
वृश्चिक	अप्रै. १७, १९; मई ५, ६, ७, १२, १५, १६, १९, २०, ३०; जून १, ६, ११; जुला. १८, १९, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१; अग. ९, १०, ११, २२, २३, २४, २५, २९, ३०; सितं. १, २, ३ (९/३२ तक), १९, २०, २१, २३, २४, २९, ३०(१७/०० तक); अक्तू. ५, ६, ८, १४; नवं. २२, २३, २७, २९; दिसं. २, ९, १०, ११, १२; फर. ६, ७;	ज्येष्ठ,	अप्रै. १७, १९; मई ५, ६, ७, १२, १५, १६, १९, २०, ३०; जून १, ६, ११, १७, २६, २८, २९, ३०; जुला. १, ३, ४, ९, १३, १८, १९, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१; अग. ९, १०, ११, २२, २३, २४, २५, २९, ३०; सितं. १, २, ३ (९/३२ तक), १९, २०, २१, २३, २४, २९, ३०(१७/०० तक); अक्तू. ५, ६, ८, १४, १९, २०, २१, २७, ३०, ३१; नवं. १, ४, ५, १०, १२, १३, २२, २३, २७, २९; दिसं. २, ९, १०, ११, १२; फर. ६, ७;	मकर/ कुम्भ
धनु	अप्रै. १७, १९, २८; मई ५, ६, ७, १२, १५, १६, १७, ३०; जून १, ६,११, २६, २८, २९, ३०; जुला. १, ३, ४, ९, १०; अग. २२, २३, २४, २५, २९, ३०; सितं. १, २, ३, १९, २०, २१, २३, २४, २९, ३०; अक्तू. ५, ६, ८, १४, १९, २०, २१, २७; नवं. १, ४, ५, १०, १२, १३; फर. ६, ७;	आषाढ़ , माघ,	अप्रै. १७, १९, २८; मई ५, ६, ७, १२, १५, १६, १७, ३०; जून १, ६, ११, २६, २८, २९, ३०; जुला. १, ३, ४, ९, १०, १८, १९, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१; अग. २२, २३, २४, २५, २९, ३०; सितं. १, २, ३, १९, २०, २१, २३, २४, २९, ३०; अक्तू. ५, ६, ८, १४, १९, २०, २१, २७; नवं. १, ४, ५, १०, १२, १३, २२, २३, २९; दिसं. २, ९, १०, ११, १२; फर. ६, ७;	कुम्भ
मकर	मई १५, १६, १७, १९, २०; जून १ (९/५८ बाद), ६, ११, १७, २८, २९, ३०; जुला. १, ३, ४, ९, १०, १३, १८, १९, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१; अग. ९, १०, ११; सितं. १९, २०, २१, २३, २४, २९, ३०; अक्तू. ८, १९, २०, २१, २७, ३०, ३१; नवं. ४, ५, १२, १३, २२, २३, २७; दिसं. २, ९(१७/४७ बाद), १०, ११, १२; फर. ६, ७;	ज्येष्ठ , आश्विन, माघ ,फाल्गुन,	अप्रै. १७, १९, २८; मई ५, ६, ७, १२, १५, १६, १७, १९, २०; जून १(९/५८ बाद), ६, ११, १७, २८, २९, ३०; जुला. १, ३, ४, ९, १०, १३, १८, १९, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१; अग. ९, १०, ११, २२(१०/४०बाद), २३, २४, २५, २९, ३०; सितं. १, २, ३, १९, २०, २१, २३, २४, २९, ३०; अक्तू. ८, १९, २०, २१, २७, ३०, ३१; नवं. ४, ५, १२, १३, २२, २३, २७; दिसं. २, ९(१७/४७ बाद), १०, ११, १२; फर. ६, ७;	मकर
कुम्भ	अप्रै. १७, १९, २८; मई ७(११/०८ बाद), १२; जून १७, २६; जुला. १, ३, ४, ९, १०, १३ २८, २९, ३०, ३१; अग. ९, १०, ११, २२(१०/४० तक), २४(१४/०३ बाद), २५, २९, ३०; सितं. १, २, ३; अक्तू. १९, २०, २१, २७, ३०, ३१; नवं. १, १०, २२, २३, २७, २९; दिसं. ९(१७/४७ तक), ११ (२३/०६ बाद), १२;	आषाढ़ , कार्तिक, फाल्गुन,	अप्रै. १७, १९, २८; मई ७(११/०८ बाद), १२, १५, १६, १७, १९, २०, ३०; जून १(९/५८ तक), ६, ११, १७, २६; जुला. १, ३, ४, ९, १०, १३, २८, २९, ३०, ३१; अग. ९, १०, ११, २२(१०/४०तक), २४(१४/०३ बाद), २५, २९, ३०; सितं. १, २, ३, २०(२३/५० बाद), २१, २३, २४, २९, ३०; अक्तू. ५, ६, १४, १९, २०, २१, २७, ३०, ३१; नवं. १, १०, २२, २३, २७, २९; दिसं. ९(१७/४७ तक), ११(२३/०६ बाद), १२; फर. ६, ७;	मकर/ कुम्भ
मीन	अप्रै. १७, १९; मई ५, ६, ७(११/०८ तक), १२, १५, १६, १७, १९, २०, ३०; जून १, ६,११ ; जुला. १८, १९, २६, २७, ३०, ३१; अग. ९, १०, ११, २२, २३, २४(१४/०३ तक), २९, ३०; सितं. १, २, ३, १९, २०(२३/५० तक), २३, २४, २९, ३०; अक्तू. ५, ६, ८, १४; नवं. २२, २३, २७, २९; दिसं. २, ९, १०, ११ [illegible]	आश्विन,	अप्रै. १७, १९; मई ५, ६, ७(११/०८ तक), १२, १५, १६, १७, १९, २०, ३०; जून १, ६, ११, १७, २६, २८, २९, ३०; जुला. ३, ४, ९, १०, १३, १८, १९, २६, २७, ३०, ३१; अग. ९, १०, ११, २२, २३, २४(१४/०३ तक), २९, ३०; सितं. १, २, ३, १९, २०(२३/५० तक), २३, २४, २९, ३०; अक्तू. [illegible] २०, २१, २७, ३०, ३१; नवं. १, ४, ५, १०, १२, १३, [illegible] ११ (२३/०६ तक); फर. ६, ७;	कुम्भ

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०६६ वि.)

प्रतिवर्ष हमें ज्योतिषियों एवं अन्य लोगों के ऐसे अनेकों पत्र उपलब्ध होते हैं, जिनमें वे ऐसे अनेक विवाहमुहूर्त्तों के बारे में हमसे स्पष्टीकरण चाहते हैं, जिन्हें हमने अपने पंचांग में तो अशुद्ध विवाहमुहूर्त्तों की कोटि में रखा होता है, लेकिन किसी अन्य पंचांग में उन्हें शुद्ध विवाह मुहूर्त्त मानकर, उनमें विवाहलग्न लगाए होते हैं। इस समस्या को दृष्टि में रखकर अशुद्ध विवाहमुहूर्त्तों का स्पष्टीकरण हम इस स्तम्भ में दिया करते हैं। यह स्तम्भ ज्योतिषियों को शुद्ध और अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त सम्बन्धी दुविधा से मुक्त कराने में काफी हद तक समर्थ सिद्ध हुआ है और इससे ज्योतिषी लोग स्वयं यह भलीभांति जान सकते हैं कि– अमुक नक्षत्र, अमुक दिन या अमुक समय या अमुक लग्न में विवाह करना शास्त्रविरुद्ध क्यों है ? यहां साथ-साथ उन दोषों का निर्देश भी किया गया है, जिनके कारण विवाहनक्षत्र होते हुए भी, वहां विवाह नहीं किया जा सकता। जहां भद्रा, व्यतीपात, क्रूरग्रहवेध आदि दोषों से रहित होने से विवाहनक्षत्र का काल शुद्ध होने पर भी षष्ठाष्टमस्थ शुक्र, चन्द्र, भौम और लग्नेश आदि के कारण शुद्ध लग्न नहीं बन सका, वहां लग्नाभाव दोष लिखा गया है। *ध्यान रहे*– यहां जिन युति, वेध आदि दोषों का निर्देश किया गया है, वे सभी ऐसे हैं, जिनका कोई परिहार नहीं है। नीचे सं. २०६६ वि. के अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त दिए जा रहे हैं– प्रियव्रत शर्मा ।

तिथि-वार	तारीख २००९ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
वैशा.कृ. ४ चन्द्रवार (१३ अप्रैल, २००९ ई.) तक मीनस्थ सूर्य।			
वैशा. कृ. ५ मं.	अप्रै. १४	मूल	परिघार्ध,
वैशा. कृ. ६ बु.	अप्रै. १५	मूल	मृत्युबाण,
वैशा. कृ. ७ गु.	अप्रै. १६	उ.षा.	लग्नाभाव,
वैशा. कृ. ८ श.	अप्रै. १८	उ.षा.	लग्नाभाव,
वैशा. कृ. ८ श.	अप्रै. १८	श्रव.	राहुयुति,
वैशा. कृ. ९ र.	अप्रै. १९	श्रव.	राहुयुति,
वैशा. कृ. १० चं.	अप्रै. २०	धनि.	भद्रा, नक्षत्रान्त,
वैशा. कृ. १२ बु.	अप्रै. २२	उ.भा.	क्षीणचन्द्र, भौमयुति,
वैशा. शु. ३ चं.	अप्रै. २७	रोहि.	लग्नाभाव,
वैशा. शु. ४ मं.	अप्रै. २८	रोहि.	नक्षत्रान्त,
वैशा. शु. ८ श.	मई २	मघा	राहुवेध,
वैशा. शु. ९ र.	मई ३	मघा	राहुवेध,
वैशा. शु. १० चं.	मई ४	उ.फा.	भद्रा,
वैशा. शु. ११ मं.	मई ५	हस्त	भौमवेध,
वैशा. शु. १४ शु.	मई ८	स्वा.	भद्रा, व्यतीपात,
वैशा. शु. १५ श.	मई ९	अनु.	सूर्यवेध,
ज्ये. कृ. १ र.	मई १०	अनु.	सूर्यवेध,
ज्ये. कृ. ४ बु.	मई १३	मूल	मासान्त,
ज्ये. कृ. ५ गु.	मई १४	उ.षा.	संक्रान्ति,

तिथि-वार	तारीख २००९ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
ज्ये. कृ. ६ शु.	मई १५	उ.षा.	राहुयुति,
ज्ये. कृ. ७ श.	मई १६	श्रव.	मृत्युबाण,
ज्ये. कृ. ११ बु.	मई २०	रेव.	भौमयुति,
ज्ये. कृ. १२ गु.	मई २१	रेव.	भौमयुति,
ज्ये. कृ. १२ गु.	मई २१	अश्वि.	शनिवेध,
ज्ये. शु. १ चं.	मई २५	रोहि.	मृत्युबाण,
ज्ये. शु. १ चं.	मई २५	मृग.	राहुवेध,
ज्ये. शु. २ मं.	मई २६	मृग.	राहुवेध,
ज्ये. शु. ८ र.	मई ३१	उ.फा.	लग्नाभाव,
ज्ये. शु. ९ चं.	जून १	हस्त	लग्नाभाव,
ज्ये. शु. १० मं.	जून २	चित्रा	व्यतीपात,
ज्ये. शु. ११ बु.	जून ३	चित्रा	मृत्युबाण,
ज्ये. शु. १२ गु.	जून ४	स्वा.	लग्नाभाव, (१६/१२ तक मृत्युबाण)
ज्ये. शु. १३ शु.	जून ५	स्वा.	लग्नाभाव,
ज्ये. शु. १५ र.	जून ७	अनु.	भद्रा,
आषा. कृ. १ चं.	जून ८	मूल	सूर्यवेध,
आषा. कृ. २ मं.	जून ९	मूल	सूर्यवेध,
आषा. कृ. ३ बु.	जून १०	उ.षा.	भद्रा, राहुयुति,
आषा. कृ. ३ गु.	जून ११	उ.षा.	राहुयुति,

तिथि-वार	तारीख २००९ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
आषा. कृ. ४ शु.	जून १२	श्रव.	लग्नाभाव,
आषा. कृ. ४ शु.	जून १२	धनि.	मृत्युबाण, वैधृति,
आषा. कृ. ५ श.	जून १३	धनि.	मासान्त,
आषा. कृ. ८ मं.	जून १६	उ.भा.	मृत्युबाण,
आषा. कृ. ९ बु.	जून १७	उ.भा.	लग्नाभाव,
आषा. कृ. १० गु.	जून १८	रेव.	भद्रा,
आषा. कृ. १० गु.	जून १८	अश्वि.	शनिवेध,
आषा. कृ. ११ शु.	जून १९	अश्वि.	शनिवेध,
आषा. शु. ५ श.	जून २७	मघा	लग्नाभाव,
आषा. शु. ८ चं.	जून २९	उ.फा.	भद्रा,
आषा. शु. ९ मं.	जून ३०	हस्त	लग्नाभाव,
आषा. शु. १० बु.	जुला. १	चित्रा	लग्नाभाव,
आषा. शु. ११ गु.	जुला. २	स्वा.	लग्नाभाव,
आषा. शु. १३ र.	जुला. ५	मूल	मृत्युबाण,
आषा. शु. १४ चं.	जुला. ६	मूल	सूर्यवेध,
आषा. शु. १५ मं.	जुला. ७	उ.षा.	वैधृति, राहुयुति,
श्राव. कृ. १ बु.	जुला. ८	उ.षा.	राहुयुति,
श्राव. कृ. १ बु.	जुला. ८	श्रव.	लग्नाभाव,
श्राव. कृ. ३ शु.	जुला. १०	श्रव.	लग्नाभाव,
श्राव. कृ. ४ श.	जुला. ११	धनि.	लग्नाभाव,

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०६६ वि.)

तिथि-वार	तारीख २००६ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
श्राव. कृ. ७ मं.	जुला. १४	उ.भा.	भद्रा, नक्षत्रान्त,
श्राव. कृ. ७ मं.	जुला. १४	रेव.	मृत्युबाण,
श्राव. कृ. ८ बु.	जुला. १५	रेव.	मासान्त
श्राव. कृ. ८ बु.	जुला. १५	अश्वि.	मासान्त,
श्राव. कृ. ६ गु.	जुला. १६	अश्वि.	संक्रान्ति,
श्राव. कृ. १२ र.	जुला. १६	मृग.	राहुवेध,
श्राव. शु. ५ र.	जुला. २६	उ.फा.	लग्नाभाव,
श्राव. शु. ६ चं.	जुला. २७	हस्त	मृत्युबाण,
श्राव. शु. ७ मं.	जुला. २८	स्वा.	क्रान्तिसाम्य,
श्राव. शु. ११ श.	अग. १	मूल	लग्नाभाव,
श्राव. शु. १२ र.	अग. २	मूल	वैधृति,
श्राव. शु. १४ मं.	अग. ४	उ.षा.	राहुयुति,
श्राव. शु. १५ बु.	अग. ५	उ.षा.	भद्रा, राहुयुति,
श्राव. शु. १५ बु.	अग. ५	श्रव.	मृत्युबाण,
श्राव. शु. १५ गु.	अग. ६	श्रव.	मृत्युबाण,
श्राव. शु. १५ गु.	अग. ६	धनि.	सूर्यवेध,
भाद्र. कृ. १ शु.	अग. ७	धनि.	सूर्यवेध,
भाद्र. कृ. ५ मं.	अग. ११	अश्वि.	भुजंगपात, शनिवेध,
भाद्र. कृ. ६ बु.	अग. १२	अश्वि.	भुजंगपात, शनिवेध,
भाद्र. कृ. ८ शु.	अग. १४	रोहि.	मृत्युबाण,
भाद्र. कृ. ६ श.	अग. १५	रोहि.	मासान्त,
भाद्र. कृ. ६ श.	अग. १५	मृग.	मासान्त,
भाद्र. कृ. १० र.	अग. १६	मृग.	संक्रान्ति,
भाद्र. शु. १ शु.	अग. २१	उ.फा.	लग्नाभाव,
भाद्र. शु. २ श.	अग. २२	हस्त	लग्नाभाव,

तिथि-वार	तारीख २००६ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
भाद्र. शु. ३ र.	अग. २३	चित्रा	लग्नाभाव,
भाद्र. शु. ५ चं.	अग. २४	स्वा.	लग्नाभाव,
भाद्र. शु. ७ बु.	अग. २६	अनु.	लग्नाभाव,
भाद्र. शु. ८ गु.	अग. २७	अनु.	भद्रा, वैधृति,
भाद्र. शु. ११ चं.	अग. ३१	उ.षा.	राहुयुति,
भाद्र. शु. १२ मं.	सितं. १	उ.षा.	राहुयुति,
श्राद्धपक्ष-५ से १८ सितम्बर, २००६ ई. तक			
आश्वि. शु. १ श.	सितं. १६	उ.फा.	क्षीणचन्द्र,
आश्वि. शु. ३ चं.	सितं. २१	चित्रा	लग्नाभाव,
आश्वि. शु. ४ मं.	सितं. २२	स्वा.	वैधृति,
आश्वि. शु. ७ शु.	सितं. २५	मूल	भौमवेध, केतुवेध,
आश्वि. शु. ८ श.	सितं. २६	मूल	भौमवेध, केतुवेध,
आश्वि. शु. ६ र.	सितं. २७	उ.षा.	राहुयुति,
आश्वि. शु. १० चं.	सितं. २८	उ.षा.	राहुयुति,
आश्वि. शु. १० चं.	सितं. २८	श्रव.	लग्नाभाव,
आश्वि. शु. ११ मं.	सितं. २६	धनि.	भद्रा,
आश्वि. शु. १४ श.	अक्तू. ३	उ.भा.	सूर्यवेध,
आश्वि. शु. १५ र.	अक्तू. ४	उ.भा.	सूर्यवेध,
आश्वि. शु. १५ र.	अक्तू. ४	रेव.	शनिवेध,
कार्त्ति. कृ. १ चं.	अक्तू. ५	रेव.	शनिवेध,
कार्त्ति. कृ. ५ शु.	अक्तू. ६	रोहि.	व्यतीपात,
कार्त्ति. कृ. ५ शु.	अक्तू. ६	मृग.	राहुवेध,
कार्त्ति. कृ. ७ श.	अक्तू. १०	मृग.	भद्रा, राहुवेध,
कार्त्ति. कृ. १० मं.	अक्तू. १३	मघा	गुरुपादवेध,
कार्त्ति. कृ. ११ गु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]

तिथि-वार	तारीख २००६ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
कार्त्ति. शु. ४ गु.	अक्तू. २२	मूल	केतुवेध,
कार्त्ति. शु. ५ शु.	अक्तू. २३	मूल	केतुवेध,
कार्त्ति. शु. ६ श.	अक्तू. २४	उ.षा.	राहुयुति,
कार्त्ति. शु. ७ र.	अक्तू. २५	उ.षा.	राहुयुति,
कार्त्ति. शु. ८ चं.	अक्तू. २६	उ.षा.	राहुयुति,
कार्त्ति. शु. ८ चं.	अक्तू. २६	श्रव.	भुजंगपात,
कार्त्ति. शु. ६ मं.	अक्तू. २७	श्रव.	भुजंगपात,
कार्त्ति. शु. १० बु.	अक्तू. २८	धनि.	मृत्युबाण,
कार्त्ति. शु. १३ श.	अक्तू. ३१	रेव.	शनिवेध,
कार्त्ति. शु. १४ र.	नवं. १	रेव.	शनिवेध,
कार्त्ति. शु. १५ चं.	नवं. २	अश्वि.	लग्नाभाव,
मार्ग. कृ. ३ गु.	नवं. ५	मृग.	राहुवेध,
मार्ग. कृ. ४ शु.	नवं. ६	मृग.	राहुवेध,
मार्ग. कृ. १० बु.	नवं. ११	मघा	नक्षत्रान्त,
मार्ग. कृ. १० बु.	नवं. ११	उ.फा.	वैधृति,
मार्ग. कृ. ११ गु.	नवं. १२	हस्त	लग्नाभाव,
मार्ग. कृ. १२ शु.	नवं. १३	चित्रा	क्षीणचन्द्र,
मार्ग. शु. १ मं.	नवं. १७	अनु.	मृत्युबाण,
मार्ग. शु. २ बु.	नवं. १८	अनु.	नक्षत्रान्त,
मार्ग. शु. ३ गु.	नवं. १६	मूल	केतुवेध,
मार्ग. शु. ४ शु.	नवं. २०	मूल	केतुवेध,
मार्ग. शु. ५ श.	नवं. २१	उ.षा.	राहुयुति,
मार्ग. शु. ५ र.	नवं. २२	उ.षा.	राहुयुति,
मार्ग. शु. ६ चं.	नवं. २३	धनि.	भौमवेध,
मार्ग. शु. ७ मं.	नवं. २४	धनि.	भौमवेध,

अशुद्ध विवाह मुहूर्त (सं. २०६६ वि.)

तिथि-वार	तारीख २००६ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
मार्ग. शु. ६ गु.	नवं. २६	उ.भा.	मृत्युबाण,
मार्ग. शु. १० शु.	नवं. २७	रेव.	शनिवेध,
मार्ग. शु. ११ श.	नवं. २८	रेव.	भद्रा, व्यतीपात, शनिवेध,
मार्ग. शु. ११ श.	नवं. २८	अश्वि.	व्यतीपात,
मार्ग. शु. १४ मं.	दिसं. १	रोहि.	लग्नाभाव,
मार्ग. शु. १५ बु.	दिसं. २	मृग.	राहुवेध,
पौष कृ. १ गु.	दिसं. ३	मृग.	राहुवेध,
पौष कृ. ६ चं.	दिसं. ७	मघा	वैधृति, भद्रा,
पौष कृ. ७ मं.	दिसं. ८	मघा	लग्नाभाव,
पौष कृ. ६ गु.	दिसं. १०	उ.फा.	लग्नाभाव,

तिथि-वार	तारीख २००६-१० ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
पौष कृ. १० शु.	दिसं. ११	हस्त	भद्रा,
पौष कृ. ११ श.	दिसं. १२	चित्रा	लग्नाभाव,
पौष कृ. १२ र.	दिसं. १३	स्वा.	लग्नाभाव,

धनुःस्थ सूर्य :-१५ दिसंबर, २००६ ई. से १४ जनवरी, २०१० ई. तक।

शुक्रास्त :- पौष शु. १ गु. से फाल्गु. कृ. ५ बुध (१७ दिसं., २००६ से ३ फरवरी, २०१० ई.) तक।

तिथि-वार	तारीख	विवाह नक्षत्र	दोष
फाल्गु. कृ. १० चं.	फर. ८	मूल,	केतुवेध,
फाल्गु. कृ. ११ मं.	फर. ६	मूल,	केतुवेध,

गुरु अस्त :- फाल्गु. शु. ४ गु. (१८ फावरी, २०१० ई.) से संवत् के अन्त तक।

होलाष्टक :- २२ से २८ फरवरी, २०१० ई. तक।

मीनस्थ सूर्य :- चैत्र कृ. १४ र. (१४ मार्च, २०१० ई.) से संवत् के अन्त तक।

मुण्डनादि अन्य मुहूर्त्त (सं.२०६६ वि.) (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)

(मुण्डन, उपनयन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश आदि के शुद्ध मुहूर्त्त प्रतिवर्ष इतने कम क्यों होते हैं ?)

मुण्डनादि इन मुहूर्तों के शोधन में भी हम भद्रा, क्रूरग्रहयुति, क्रूरग्रहवेध, क्रान्तिसाम्य, कलशचक्रदोष, वृषवास्तुचक्रदोष, व्यतीपात, अतिगण्ड आदि योग तथा अन्य मुहूर्तशास्त्रोक्त निरवशेष निषिद्ध पदार्थों का पूरी तरह विचार कर शुद्धकाल का निर्णय करते हैं। जिससे कई बार तो इनके शुद्धमुहूर्त्त वर्ष में असह्यरूप से कम (एक-एक या दो-दो भी) हो जाते हैं। सर्वथा दोषमुक्त शास्त्रीय मुहूर्त्तसाधन के आग्रह के कारण इन मुहूर्तों की संख्या हमारे पंचांग में अन्य पंचांगों से, जिनके सम्पादक इन विचार्य-विषयों की उपेक्षा करके मुहूर्तों की संख्या बढ़ाने की शास्त्रविरुद्ध प्रवृत्ति लिए हैं, काफी कम होती है। विश्वास रखिए, हमारे 'मार्तण्ड पंचांग' में दिए गए शुद्ध मुहूर्त्तों के अतिरिक्त जो मुहूर्त्त अन्य पंचांगों में आपको मिलते हैं; उनकी मुहूर्तशास्त्रीय शुद्धता वस्तुतः विचारणीय है।

मुण्डन मुहूर्त्त (सन् २००६ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. १० चं.	वैशा. ८	अप्रै. २०	शत.	१२/४१ बाद,
वैशा. शु. १२ बु.	वैशा. २४	मई ६	हस्त	१४/५० बाद,
वैशा. शु. १३ गु.	वैशा. २५	मई ७	चित्रा	८/४६ तक,
आषा. कृ. ४ शु.	ज्ये. ३०	जून १२	श्रव.	६/२१ से १६/५१ तक,
आषा. कृ. ६ बु.	आषा. ४	जून १७	रेव.	१५/५८ बाद,
आषा. कृ. १० गु.	आषा. ५	जून १८	रेव.	१५/०५ बाद,

मुण्डन में विशेषः- किसी देवस्थल तीर्थ पर बिना मुहूर्त्त के भी मुण्डन करवाना शुभ माना गया है। नवरात्रों के दिनों में भी शक्तिपीठों (देवी-मन्दिरों) के समीप मुण्डन करवाने की पंजाब, हि.प्र. आदि प्रदेशों में पुरानी परम्परा है।

उपनयन मुहूर्त्त (सन् २००६ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
ज्ये. शु. १२ गु.	ज्ये. २२	जून ४	स्वा.	१२/०६ तक,

अक्षरारम्भ मुहूर्त्त (सन् २००६ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ५ बु.	वैशा. १७	अप्रै. २६	आर्द्रा	
वैशा. शु. ६ गु.	वैशा. १८	अप्रै. ३०	पुन.	
ज्ये. शु. १२ गु.	ज्ये. २२	जून ४	स्वा.	१२/०६ तक,
आषा. कृ. ४ शु.	ज्ये. ३०	जून १२	श्रव.	६/२१ बाद,

अक्षरारम्भ और विद्यारम्भ के मुहूर्तों का प्रयोगः- बच्चे को वर्णमाला का ज्ञान करवाने के लिए अक्षरारम्भ के और संस्कृत, अंग्रेजी, गणित, रसायन आदि विषयों का अध्ययन प्रारम्भ करने के लिए विद्यारम्भ के मुहूर्तों का प्रयोग करना चाहिए।

विद्यारम्भ मुहूर्त्त (सन् २००६ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. १२ बु.	वैशा. १०	अप्रै. २२	पू.भा.	१२/५६ तक,
वैशा. शु. ५ बु.	वैशा. १७	अप्रै. २६	आर्द्रा	
वैशा. शु. ६ गु.	वैशा. १८	अप्रै. ३०	पुन.	
ज्ये. कृ. ११ बु.	ज्ये. ७	मई २०	उ.भा.	
आषा. कृ. ३ बु.	ज्ये. २८	जून १०	पू.षा.	१२/०५ तक,

द्विरागमन मुहूर्त्त (सन् २००६ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. १२ बु.	वैशा. २४	मई ६	हस्त	१४/५० से २१/३६ तक,
वैशा. शु. १३ गु.	वैशा. २५	मई ७	चित्रा	८/४६ तक,
मार्ग. शु. १० शु.	मार्ग. १२	नवं. २७	उ.भा.	१६/०१ तक,
मार्ग. शु. १५ बु.	मार्ग. १७	दिसं. २	रोहि.	

द्विरागमन में विशेष- विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर द्विरागमन के उपरोक्त मुहूर्तों के बिना भी द्विरागमन हो सकता है। यदि नव-विवाहित वधू का द्विरागमन [illegible]

गृहारम्भ मुहूर्त्त (सन् २००६ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टैं.टा.)
::वैशा. शु.१० चं.	वैशा. ८	अप्रै. २०	धनि.	१२/०२ बाद,
वैशा. शु.१३ गु.	वैशा. २५	मई ७	चित्रा	८/४६ तक,
श्राव. कृ. ३ शु.	आषा.२७	जुला. १०	धनि.	७/४३ से ६/०६ तक,
::श्राव. कृ. ६ चं.	आषा.३०	जुला. १३	उ.भा.	१५/०१ बाद,
::श्राव. कृ. ११ श.	श्राव ३	जुला.१८	रोहि.	१४/५३ से १७/२८ तक,
::श्राव. शु. ६ चं.	श्राव १२	जुला.२७	हस्त	१६/०६ तक,
श्राव. शु. १० शु.	श्राव १६	जुला.३१	अनु.	
::कार्त्ति. शु. १ चं.	कार्त्ति. ३	अक्तू. १६	स्वा.	६/५७ से ११/३० तक,
::कार्त्ति. शु. ३ बु.	कार्त्ति. ५	अक्तू. २१	अनु.	६/३८ तक,
मार्ग. कृ. ३ गु.	कार्त्ति.२०	नवं. ५	रोहि.	८/०६ तक
::मार्ग. कृ.१२ शु.	कार्त्ति.२८	नवं. १३	हस्त	
मार्ग. शु. १० शु	मार्ग. १२	नवं. २७	उ.भा.	१२/२० तक,
मार्ग. शु. १५ बु	मार्ग. १७	दिसं. २	रोहि.	
::पौष. कृ. ६ गु.	मार्ग. २५	दिसं. १०	हस्त	१५/४३ बाद,
::पौष. कृ. १० शु.	मार्ग. २६	दिसं. ११	चित्रा	१४/५५ बाद,
::पौष. कृ. ११ श.	मार्ग. २७	दिसं. १२	चित्रा	१०/०२ तक,
::पौष. कृ. ११ श.	मार्ग. २७	दिसं. १२	स्वा.	११/१४ से १७/२६ तक,

[illegible] मुहूर्तों में केवल वृषवास्तुचक्र-शुद्धि का अभाव है।

नूतन-गृहप्रवेश मुहूर्त्त (सन् २००६ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टैं.टा.)
※वैशा. कृ. ७ गु	वैशा. ४	अप्रै. १६	उ.षा.	२८/५२ बाद,
※वैशा. कृ. ८ शु.	वैशा. ५	अप्रै. १७	उ.षा.	
※वैशा. कृ. ८ श.	वैशा. ६	अप्रै. १८	उ.षा.	६/४१ तक,
वैशा. शु. १२ बु.	वैशा. २४	मई ६	चित्रा	२२/५१बाद,
वैशा. शु. १३ गु.	वैशा. २५	मई ७	चित्रा	८/४६ तक,
ज्ये. कृ. ११ बु.	ज्ये. ७	मई २०	उ.भा.	२३/०६ तक,
ज्ये. कृ. ११ बु.	ज्ये. ७	मई २०	रेव.	२४/२१ बाद,
ज्ये. कृ. १२ गु.	ज्ये. ८	मई २१	रेव.	२२/३७ तक,
ज्ये. शु. ११ बु.	ज्ये. २१	जून ३	चित्रा	१६/०१ बाद,

※ तारांकित मुहूर्तों में केवल कलशचक्र-शुद्धि का अभाव है।

पुरातन गृहप्रवेश मुहूर्त्त (सन् २००६ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. शु. ३ चं.	वैशा. १५	अप्रै. २७	रोहि.	६/०८ से २५/०७ तक,
वैशा. शु. ६ गु.	वैशा. १८	अप्रै. ३०	पुष्य	२५/५३ बाद,
वैशा. शु. ७ शु.	वैशा. १६	मई १	पुष्य	१५/१२ तक,
वैशा. शु. १३ गु.	वैशा. २५	मई ७	चित्रा	८/४६ तक,
ज्ये. कृ. ६ शु.	ज्ये. २	मई १५	उ.षा.	१४/२६ तक,
ज्ये. कृ. ७ श.	ज्ये. ३	मई १६	धनि.	१८/३४ बाद,
ज्ये. कृ. ११ बु.	ज्ये. ७	मई २०	उ.भा.	२३/०६ तक,
ज्ये. कृ. ११ बु.	ज्ये. ७	मई २०	रेव.	२४/२१ बाद,
ज्ये. कृ. १२ गु.	ज्ये. ८	मई २१	रेव.	२२/३७ तक,
ज्ये. शु. १ चं.	ज्ये. १२	मई २५	रोहि.	१४/५२ तक,
ज्ये. शु. १ चं.	ज्ये. १२	मई २५	मृग.	१६/०४ बाद,
ज्ये. शु. ५ गु.	ज्ये. १५	मई २८	पुष्य	८/५० बाद,
ज्ये. शु. ६ चं.	ज्ये. १६	जून १	उ.फा.	१६/२० बाद,
ज्ये. शु. ११ बु.	ज्ये. २१	जून ३	चित्रा	१६/०१ बाद,
ज्ये. शु. १२ गु.	ज्ये. २२	जून ४	स्वा.	२४/०० बाद,
श्राव. कृ. १ बु.	आषा.२५	जुला. ८	उ.षा.	२४/२४ बाद,
श्राव. कृ. ३ शु.	आषा.२७	जुला.१०	धनि.	७/४३ से ६/०६ तक,

पुरातन-गृहप्रवेश मुहूर्त्त (सन् २००६-१० ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
श्राव. कृ. ४ श.	आषा. २८	जुला.११	शत.	२४/२२ बाद,
श्राव. कृ. ६ चं.	आषा. ३०	जुला.१३	उ.भा.	१५/०१ से २६/०४ तक,
श्राव. कृ. ११ श.	श्राव. ३	जुला.१८	रोहि.	१४/५३ बाद,
श्राव. शु. ६ चं.	श्राव. १२	जुला.२७	चित्रा	१७/२१ बाद,
श्राव. शु. ८ बु.	श्राव. १४	जुला.२६	स्वा.	१७/३० तक,
श्राव. शु. ६ गु.	श्राव. १५	जुला.३०	अनु.	२०/२६ बाद,
श्राव. शु. १० शु.	श्राव. १६	जुला.३१	अनु.	२१/३३ तक,
श्राव. शु. १५ गु.	श्राव. २२	अग. ६	धनि.	१३/४१ बाद,
कार्ति. कृ. १ चं.	आश्वि.२०	अक्तू. ५	रेव.	६/५६ तक,
कार्ति. कृ. ४ गु.	आश्वि.२३	अक्तू. ८	रोहि.	१०/१६ से १३/५६ तक,
कार्ति. कृ. ५ शु.	आश्वि.२४	अक्तू. ६	मृग.	११/३५ से २६/१५ तक,
कार्ति. कृ. ६ चं.	आश्वि.२७	अक्तू.१२	पुष्य	२३/१६ से २७/२५ तक,
कार्ति. शु. १ चं.	कार्ति. ३	अक्तू.१६	स्वा.	१६/४१ तक,
कार्ति. शु. ३ बु.	कार्ति. ५	अक्तू.२१	अनु.	६/३८ तक,
कार्ति. शु. ८ चं.	कार्ति. १०	अक्तू.२६	उ.षा.	७/३४ तक,
कार्ति. शु. १० बु.	कार्ति. १२	अक्तू.२८	धनि.	१३/२२ तक,
कार्ति. शु. १० बु.	कार्ति. १२	अक्तू.२८	शत.	१४/३४ बाद,
कार्ति. शु. ११ गु.	कार्ति. १३	अक्तू.२६	शत.	१२/५१ तक,
कार्ति. शु. १२ शु.	कार्ति. १४	अक्तू.३०	उ.भा.	१८/२४ बाद,
कार्ति. शु. १३ श.	कार्ति. १५	अक्तू.३१	उ.भा.	१८/०६ तक,
मार्ग. कृ. २ बु.	कार्ति. १६	नवं. ४	रोहि.	१७/१२ से २०/०४ तक,
मार्ग. कृ. ३ गु.	कार्ति. २०	नवं. ५	रोहि.	८/०६ तक,
मार्ग. कृ. ७ चं.	कार्ति. २४	नवं. ६	पुष्य	८/४७ तक,
मार्ग. कृ. ११ गु.	कार्ति. २७	नवं. १२	उ.फा.	२०/०४ से २८/३६ तक,
मार्ग. कृ. १२ शु.	कार्ति. २८	नवं. १३	चित्रा	२६/१६ बाद,
मार्ग. शु. ५ श.	मार्ग. ६	नवं. २१	उ.षा.	१३/४५ बाद,
मार्ग. शु. ६ चं.	मार्ग. ८	नवं. २३	धनि.	१६/५८ बाद,
मार्ग. शु. ८ बु.	मार्ग. १०	नवं. २५	शत.	१६/१५ तक,
मार्ग. शु. ६ गु.	मार्ग. ११	नवं. २६	उ.भा.	२७/३३ बाद,
मार्ग. शु. १० शु.	मार्ग. १२	नवं. २७	उ.भा.	२७/३७ तक,
मार्ग. शु. १० शु.	मार्ग. १२	नवं. २७	रेव.	२८/४६ बाद,
माघ कृ. १० श.	पौष २६	जन. ६	स्वा.	१५/३६ तक,
माघ कृ. १२ चं.	पौष २८	जन. ११	अनु.	१६/०६ तक,
माघ शु. ५ बु.	माघ ७	जन. २०	उ.भा.	१८/४६ बाद,
माघ शु. ६ गु.	माघ ८	जन. २१	उ.भा.	१६/५३ तक,
माघ शु. ६ गु.	माघ ८	जन. २१	रेव.	२१/०५ बाद,
माघ शु. ७ शु.	माघ ६	जन. २२	रेव.	२१/३६ तक,
माघ शु. १० चं.	माघ १२	जन. २५	रोहि.	२३/४० बाद,
माघ शु. १२ बु.	माघ १४	जन. २७	मृग.	१५/०८ तक,
फाल्गु. कृ. ५ बु.	माघ २१	फर. ३	चित्रा	२४/२१ से २८/२२ तक,
फाल्गु. कृ. ६ गु.	माघ २२	फर. ४	चित्रा	१८/१० तक,
फाल्गु. कृ. ७ शु.	माघ २३	फर. ५	स्वा.	२२/२७ तक,
फाल्गु. शु. १ चं.	फाल्गु. ४	फर. १५	शत.	२०/५४ तक,
फाल्गु. शु. ३ बु.	फाल्गु. ६	फर. १७	उ.भा.	१५/०७ तक,
फाल्गु. शु. ४ गु.	फाल्गु. ७	फर. १८	रेव.	१६/४२ से २७/४३ तक,
फाल्गु. शु. ११ गु.	फाल्गु.१४	फर. २५	पुष्य	२६/२० बाद,

नोट :- सरकारी या अन्य नौकरी वाले तथा दूसरे लोग भी ट्रांसफर आदि के कारण अक्सर किराये वाले पुराने मकानों में यदा-कदा प्रवेश करते रहते हैं। ऐसे लोगों के लिए ही ये पुरातन-गृहप्रवेश मुहूर्त हैं। इन मुहूर्तों में गुरु-शुक्र अस्त और अधिकमास का दोष नहीं माना जाता। सिंहस्थ गुरु का सिंहांशक भी यहां विचारा नहीं जाता, इसलिए इनका इन मुहूर्तों में विचार नहीं किया गया है। कलश-चक्र का विचार भी यहां नहीं किया जाता।

सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २००६ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. कृ. ८ शु.	वैशा. ५	अप्रै. १७	उ.षा.	
वैशा. कृ. ६ र.	वैशा. ७	अप्रै. १६	धनि.	१०/२८ बाद,
वैशा. शु. ६ गु.	वैशा. १८	अप्रै. ३०	पुन.	
वैशा. शु. १३ गु.	वैशा. २५	मई ७	चित्रा	
ज्ये. कृ. ८ र.	ज्ये. ४	मई १७	धनि.	
ज्ये. कृ. ११ बु.	ज्ये. ७	मई २०	उ.भा.	

सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २००६ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
ज्ये. कृ. १२ गु.	ज्ये. ८	मई २१	रेव.	
आषा. कृ. ४ शु.	ज्ये. ३०	जून १२	श्रव.	६/२१ बाद,

तामसदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २००६ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
आषा. शु. २ बु.	आषा. ११	जून २४	पुन.	
आषा. शु. १० बु.	आषा. १८	जुला. १	चित्रा	६/५१ तक,
आषा. शु. ११ गु.	आषा. १६	जुला. २	स्वा.	११/१७ तक,
मार्ग. कृ. ३ गु.	कार्त्ति.२०	नवं. ५	रोहि.	८/०६ तक,
मार्ग. कृ. ७ चं.	कार्त्ति.२४	नवं. ६	पुष्य	८/४७ तक,
मार्ग. कृ. १२ शु.	कार्त्ति.२८	नवं. १३	हस्त	
मार्ग. शु. ६ चं.	मार्ग. ८	नवं. २३	श्रव.	
मार्ग. शु. ८ बु.	मार्ग. १०	नवं. २५	शत.	
मार्ग. शु. १० शु.	मार्ग. १२	नवं. २७	उ.भा.	
मार्ग. शु. १५ बु.	मार्ग. १७	दिसं. २	रोहि.	
पौष कृ. १२ र.	मार्ग. २८	दिसं. १३	स्वा.	१०/३८ तक,

दशावतार प्रतिष्ठा

श्रीराम, कृष्ण आदि देवताओं की मूर्त्ति–प्रतिष्ठा इन देवताओं की अपनी –अपनी अवतार तिथियों (श्रीरामनवमी आदि) के दिन पूर्वाह्णकाल में बिना पंचांग–शुद्धि के भी की जा सकती है। अवतार की तिथि यदि गुरु–शुक्रास्तकाल में पड़े ,तब तो उस दिन मूर्ति–प्रतिष्ठा नहीं करनी चाहिए।

अभिजित् मुहूर्त्त

स्थानीय दिनमानार्ध के घं. मि. को स्थानीय सूर्योदय–काल में जोड़ने पर 'स्पष्ट दिनार्ध' होता है, दिनमान का 30वां भाग मुहूर्तार्ध कहलाता है। मुहूर्तार्ध को स्पष्ट दिनार्ध में घटाने और जोड़ने पर अभिजित् मुहूर्त्त का क्रमशः प्रारम्भ और समाप्तिकाल ज्ञात हो जाता है। इस काल में लगभग सभी दोषों को समाप्त कर डालने की अद्भुत शक्ति मानी गयी है। जब मुण्डन, अक्षरारम्भ आदि मुहूर्त्तों में शुद्ध लग्न न मिल रहा हो, तब अभिजित् मुहूर्त्तों को प्रयोग में लाना चाहिए।

श्रीगणेश प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २००६ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
ज्ये. कृ. ३ मं.	वैशा. ३०	मई १२		
आषा. कृ. ३ गु.	ज्ये. २६	जून ११		६/४७ बाद,

श्रीदुर्गा प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २००६–१० ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. शु. ६ र.	वैशा. २१	मई ३		
ज्ये. शु. ६ चं.	ज्ये. १६	जून १		
आषा. कृ. २ मं.	ज्ये. २७	जून ६	मूल	
आषा. शु. ६ मं.	आषा. १७	जून ३०		८/१२ बाद,
श्राव. शु. ६ गु.	श्राव. १५	जुला. ३०		
मार्ग. शु. ४ शु.	मार्ग. ५	नवं. २०	मूल	
मार्ग. शु. ६ गु.	मार्ग. ११	नवं. २६		
फाल्गु. कृ. ११ मं.	माघ २७	फर. ६	मूल	

श्रीगौरी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २००६ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. शु. ३ चं.	वैशा. १५	अप्रै. २७		
ज्ये. शु. ३ बु.	ज्ये. १४	मई २७		

श्रीशिव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २००६ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. शु. ५ बु.	वैशा. १७	अप्रै. २६	आर्द्रा	
ज्ये. कृ. १३ शु.	ज्ये. ६	मई २२		
ज्ये. शु. ३ बु.	ज्ये. १४	मई २७	आर्द्रा	

विपणि मुहूर्त्त (सन् २००६ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. कृ. १२ बु.	वैशा. १०	अप्रै. २२	उ.भा.	१४/४७ बाद,
वैशा. शु. ३ चं.	वैशा. १५	अप्रै. २७	रोहि.	६/०८ बाद,
वैशा. शु. ७ शु.	वैशा. १६	मई १	पुष्य	१५/१२ तक,
वैशा. शु. १२ बु.	वैशा. २४	मई ६	हस्त	७/०४ तक, ८/१६ बाद,
वैशा. शु. १३ गु.	वैशा. २५	मई ७	चित्रा	८/४६ तक,
ज्ये. कृ. १ र.	वैशा. २८	मई १०	अनु.	१६/३४ बाद,
ज्ये. कृ. १२ गु.	ज्ये. ८	मई २१	रेव.	
ज्ये. शु. १ चं.	ज्ये. १२	मई २५	रोहि.	१४/२४ से १४/५२ तक,
ज्ये. शु. १ चं.	ज्ये. १२	मई २५	मृग.	१६/०४ बाद,
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

विपणि मुहूर्त्त (सन् २००६ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टैं.टा.)
आषा. कृ. ६ बु.	आषा. ४	जून १७	रेव.	१५/५८ बाद,
आषा. शु. ३ गु.	आषा. १२	जून २५	पुष्य	
आषा. शु. १० बु.	आषा. १८	जुला. १	चित्रा	६/५१ तक,
आषा. शु. ११ शु.	आषा. २०	जुला. ३	अनु.	१४/२५ बाद,
आषा. शु. १२ श.	आषा. २१	जुला. ४	अनु.	१५/३६ तक,
श्राव. कृ. १२ र.	श्राव. ४	जुला. १६	रोहि.	११/४० तक,
श्राव. कृ. १२ र.	श्राव. ४	जुला. १६	मृग.	१२/५२ बाद,
श्राव. शु. ५ र.	श्राव. ११	जुला. २६	उ.फा.	१६/३८ तक,
श्राव. शु. १० शु.	श्राव. १६	जुला. ३१	अनु.	
भाद्र. कृ. ६ बु.	श्राव. २८	अग. १२	अश्वि.	१३/३२ तक,
भाद्र. शु. २ श.	भाद्र. ७	अग. २२	उ.फा.	
भाद्र. शु. ३ र.	भाद्र. ८	अग. २३	हस्त	६/५७ तक,
भाद्र. शु. ५ चं.	भाद्र. ६	अग. २४	चित्रा	
आश्वि.शु. २ र.	आश्वि. ५	सितं. २०	हस्त	११/०६ तक,
आश्वि.शु. २ र.	आश्वि. ५	सितं. २०	चित्रा	१२/१८ बाद,
आश्वि.शु. ५ बु.	आश्वि. ८	सितं. २३	अनु.	१२/१० बाद,
आश्वि.शु. १० चं.	आश्वि.१३	सितं. २८	उ.षा.	
कार्त्ति. कृ. १ चं.	आश्वि.२०	अक्तू. ५	अश्वि.	११/२६ बाद,
कार्त्ति. कृ. ४ गु.	आश्वि.२३	अक्तू. ८	रोह.	१०/१६ से १३/५६ तक,
कार्त्ति. शु. ३ बु.	कार्त्ति. ५	अक्तू.२१	अनु.	६/३८ तक,
कार्त्ति. शु. ७ र.	कार्त्ति. ६	अक्तू.२५	उ.षा.	१६/५२ तक,
कार्त्ति. शु. १३ श.	कार्त्ति. १५	अक्तू.३१	उ.भा.	
मार्ग. कृ. ३ गु.	कार्त्ति. २०	नवं. ५	रोहि.	८/०६ तक,
मार्ग. कृ. ७ चं.	कार्त्ति. २४	नवं. ६	पुष्य	८/४७ तक,
मार्ग. कृ. १२ शु.	कार्त्ति. २८	नवं. १३	हस्त	
मार्ग. शु. ५ श.	मार्ग. ६	नवं. २१	उ.षा.	१३/४५ बाद,
मार्ग. शु. ५ र.	मार्ग. ७	नवं. २२	उ.षा.	८/३४ तक,
मार्ग. शु. १० शु.	मार्ग. १२	नवं. २७	उ.भा.	
मार्ग. शु. १२ र.	मार्ग. १४	नवं. २६	अश्वि.	
पौष. कृ. १ गु.	मार्ग. १८	दिसं. ३	मृग.	१०/१७ बाद,
पौष. कृ. ५ र.	मार्ग. २१	दिसं. ६	पुष्य	१५/०१ तक,

सर्वार्थसिद्धि योग (सं. २०६६ वि.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त	
२००६ ई.	घं. मि.	२००६ ई.	घं. मि.	२००६ ई.	घं. मि.	२००६ ई.	घं. मि.	२००६ ई.	घं. मि.	२००६ ई.	घं. मि.	२००६ ई.	घं. मि.	२००६ ई.	घं. मि.
मार्च २७	५ ४१	मार्च २७	सू. उ.	जून १	४ ००	जून १	सू. उ.	अग. २७	४ ३६	अग. २७	सू. उ.	नवं. १०	सू. उ.	नवं. १०	८ ४३
(मार्च २७	सू. उ.	मार्च २८	५ ११) शु.	जून १२	सू. उ.	जून १३	१ ३४	अग. २७	सू. उ.	अग. २८	५ ३५	नवं. १५	५ ०५	नवं. १५	सू. उ.
मार्च २८	५ ११	मार्च २८	सू. उ.	जून १६	८ १८	जून १७	सू. उ.	अग. ३०	सू. उ.	अग. ३०	११ ०५	नवं. १७	५ ५२	नवं. १७	सू. उ.
मार्च ३१	१ ५२	मार्च ३१	सू. उ.	जून १८	सू. उ.	जून १९	सू. उ.	सितं. ६	सू. उ.	सितं. ७	३ ५५	(नवं. १८	सू. उ.	नवं. १८	७ ०२)बु.
अप्रै. १	सू. उ.	अप्रै. १	२३ ०७	जून १९	सू. उ.	जून १९	८ ३२	(सितं. ८	सू. उ.	सितं. ९	५ १०)मं.	नवं. २२	सू. उ.	नवं. २२	१६ ४९
अप्रै. २	२१ ४६	अप्रै. ३	सू. उ.	(जून २१	५ ०१	जून २१	सू. उ.)श.	सितं. १०	५ ११	सितं. १०	सू. उ.	नवं. २३	सू. उ.	नवं. २३	१९ ५८
अप्रै. ३	सू. उ.	अप्रै. ३	२० २८	(जून २२	सू. उ.	जून २२	२३ ४५)चं.	सितं. १४	२३ ४४	सितं. १५	सू. उ.	(नवं. २८	४ ४९	नवं. २८	सू. उ.)शु.
अप्रै. ८	१५ ५६	अप्रै. ९	सू. उ.	(जून २५	सू. उ.	जून २५	१५ २९)गु.	सितं. १५	२१ ४४	सितं. १६	सू. उ.	नवं. २९	सू. उ.	नवं. ३०	५ ०१
अप्रै. ११	सू. उ.	अप्रै. ११	१६ ५५	जून २८	१० २९	जून २९	सू. उ.	सितं. १८	सू. उ.	सितं. १८	१५ २४	दिसं. १	सू. उ.	दिसं. २	२ ३६
अप्रै. १३	सू. उ.	अप्रै. १३	२० २०	जुला. ५	१९ ३०	जुला. ६	सू. उ.	(सितं. २०	सू. उ.	सितं. २०	१२ १८)र.	दिसं. २	सू. उ.	दिसं. ३	सू. उ.
अप्रै. १८	७ ५३	अप्रै. १९	सू. उ.	जुला. १०	सू. उ.	जुला. १०	७ ४३	(सितं. २३	१२ १०	सितं. २४	सू. उ.)बु.	दिसं. ४	२० २३	दिसं. ५	सू. उ.
अप्रै. २३	१४ ४२	अप्रै. २४	सू. उ.	जुला. १४	सू. उ.	जुला. १४	१६ २४	सितं. २४	सू. उ.	सितं. २४	१३ ३९	दिसं. ६	सू. उ.	दिसं. ६	१६ १३
(अप्रै. २४	सू. उ.	अप्रै. २४	१३ ५८)शु.	जुला. १६	सू. उ.	जुला. १६	१७ ०४	सितं. २७	२१ ३७	सितं. २८	सू. उ.	दिसं. १२	११ १४	दिसं. १३	सू. उ.
अप्रै. २४	१३ ५८	अप्रै. २५	सू. उ.	जुला. १८	१४ ५३	जुला. १८	२१ ४९	सितं. २९	० ४४	सितं. २९	सू. उ.	दिसं. १४	१२ ५१	दिसं. १५	सू. उ.
अप्रै. २७	९ ०८	अप्रै. २८	सू. उ.	(जुला. १८	२१ ४९	जुला. १९	सू. उ.)श.	अक्तू. ४	सू. उ.	अक्तू. ४	१० ४५	दिसं. २०	० १६	दिसं. २०	सू. उ.
अप्रै. ३०	सू. उ.	मई १	१ ५३	(जुला. २०	सू. उ.	जुला. २०	१० २४)चं.	(अक्तू. ६	सू. उ.	अक्तू. ६	११ १२)मं.	(दिसं. २५	१३ ४७	दिसं. २६	सू. उ.)शु.
(मई १	१ ५३	मई १	सू.उ.)गु.	जुला. २४	२० ५०	जुला. २५	सू. उ.	अक्तू. ७	१० ५२	अक्तू. ८	सू. उ.	दिसं. २७	सू. उ.	दिसं. २७	१५ १२
मई ६	सू. उ.	मई ६	२२ ५१	जुला. २६	सू. उ.	जुला. २६	१७ ५०	अक्तू. १२	६ ००	अक्तू. १३	४ ३७	दिसं. २९	सू. उ.	दिसं. २९	१३ २९
मई १५	१५ ३८	मई १६	सू. उ.	(जुला. २६	१७ ५०	जुला. २७	सू. उ.)र.	अक्तू. १३	सू. उ.	अक्तू. १४	३ ०८	दिसं. ३०	सू. उ.	दिसं. ३१	सू. उ.
मई १६	सू. उ.	मई १६	१८ ३४	जुला. ३०	२० २९	जुला. ३१	सू. उ.	(अक्तू. २१	सू. उ.	अक्तू. २१	२२ २९)बु.	सन् २०१० ई.			
मई २०	० ०४	मई २०	सू. उ.	अग. २	सू. उ.	अग. ३	४ ३१	अक्तू. २५	सू. उ.	अक्तू. २६	सू. उ.	जन. १	सू. उ.	जन. २	३ ५६
मई २१	सू. उ.	मई २२	सू. उ.	अग. ९	२० ४४	अग. १०	सू. उ.	अक्तू. २६	८ ४६	अक्तू. २७	सू. उ.	जन. ६	१७ २१	जन. ७	सू. उ.
मई २२	सू. उ.	मई २२	२२ ३५	(अग. ११	२३ १५	अग. १२	सू. उ.)मं.	नवं. १	१९ ३१	नवं. २	सू. उ.	जन. ९	सू. उ.	जन. ९	१७ २१
मई २५	सू. उ.	मई २५	१६ ०४	(अग. १५	सू. उ.	अग. १५	२१ ३४)श.	नवं. ३	१८ २१	नवं. ४	सू. उ.	जन. ११	सू. उ.	जन. ११	२० १८
(मई २५	१६ ०४	मई २६	सू.उ.)चं.	अग. २१	७ २१	अग. २२	५ ०९	नवं. ४	सू. उ.	नवं. ५	सू. उ.	जन. १६	६ ५४	जन. १६	सू. उ.
मई २८	सू. उ.	मई २८	८ ५०	(अग. २३	सू. उ.	अग. २४	२ २०)र.	नवं. ८	११ २१	नवं. ९	सू. उ.	जन. १९	सू. उ.	जन. १७	सू. उ.
(मई २८	८ ५०	मई २९	सू.उ.)गु.	(अग. २७	३ ३७	अग. २७	४ ३६)बु.	नवं. ९	सू. उ.	नवं. ९	९ ५९				

सर्वार्थसिद्धि योग
(भा. स्टै. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२०१० ई.	घं. मि.	२०१० ई.	घं. मि.
जन. २१	२१ ०५	जन. २२	सू. उ.
(जन. २२	सू. उ.	जन. २२	२२ ४८)शु.
जन. २२	२२ ४८	जन. २३	सू. उ.
जन. २५	२३ ४०	जन. २६	सू. उ.
जन. २७	सू. उ.	जन. २७	२० ३७
जन. २८	१८ १४	जन. २६	सू. उ.
जन. २९	सू. उ.	जन. २९	१५ २७
फर. ३	सू. उ.	फर. ४	० २१
फर. १२	१३ ०३	फर. १३	सू. उ.
फर. १३	सू. उ.	फर. १३	१६ ११
फर. १७	० ४३	फर. १७	सू. उ.
फर. १८	सू. उ.	फर. १९	सू. उ.
फर. १९	सू. उ.	फर. २०	६ २१
फर. २२	७ ३०	फर. २३	सू. उ.
फर. २५	सू. उ.	फर. २६	२ २०
(फर. २६	२ २०	फर. २६	सू. उ.)गु.
मार्च २	सू. उ.	मार्च ३	१० २१
मार्च १२	सू. उ.	मार्च १२	२२ ३२

रवियोग (सन् २००९ ई.)

प्रारम्भ		समाप्त	
मार्च २९	४ १६	मार्च ३०	३ १०
मार्च ३१	१ ५२	मार्च ३१	११ २२
अप्रै. १	० ३०	अप्रै. १	२३ ०७
अप्रै. ३	२० २८	अप्रै. ५	१८ ०९
अप्रै. ७	१६ २६	अप्रै. ८	१५ ५६
अप्रै. १६	१ ४६	अप्रै. १७	४ ५२
अप्रै. २७	६ ०८	अप्रै. २७	१६ ३३

रवि योग (सं. २०६६ वि.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त	
२००९ ई.	घं. मि.	२००९ ई.	घं. मि.	२००९ ई.	घं. मि.	२००९ ई.	घं. मि.
अप्रै. २८	७ ०९	अप्रै. २९	५ १३	सितं. २१	११ ३२	सितं. २२	११ २८
अप्रै. ३०	३ २७	मई १	१ ५३	सितं. २३	१२ १०	सितं. २४	१३ ३९
मई २	२३ ३८	मई ४	२२ ३६	सितं. २६	१८ ३३	सितं. २७	४ ४३
मई ६	२२ ५१	मई ७	२३ ३१	सितं. २७	२१ ३७	सितं. ३०	३ ४०
मई १५	१५ ३८	मई १६	१८ ३४	अक्तू. २	८ १८	अक्तू. ३	९ ४८
मई २७	११ ०४	मई २८	८ ५०	अक्तू. ९	९ २६	अक्तू. १०	८ २६
मई २९	६ ५७	मई ३०	५ २६	अक्तू. १०	१७ ४९	अक्तू. ११	७ १७
जून १	४ ००	जून ३	४ ३१	अक्तू. २०	२१ २०	अक्तू. २१	२२ २९
जून ५	६ ५२	जून ६	८ ४०	अक्तू. २३	० १९	अक्तू. २४	२ ४५
जून १४	४ २१	जून १५	६ ३९	अक्तू. २४	४ १५	अक्तू. २५	५ ३९
जून २५	१५ २९	जून २६	१३ १८	अक्तू. २७	११ ४९	अक्तू. २९	१६ ४९
जून २७	११ ३६	जून २८	१० २९	अक्तू. ३१	१९ १८	नवं. १	१९ ३१
जून ३०	१० १३	जुला. २	१२ २९	नवं. ८	११ २१	नवं. ९	९ ५९
जुला. ४	१६ ४८	जुला. ५	१९ ३०	नवं. १९	८ ४५	नवं. १९	१८ २९
जुला. ६	३ २४	जुला. ६	२२ २७	नवं. २०	११ ०१	नवं. २१	१३ ४५
जुला. १३	१५ ०१	जुला. १४	१६ २४	नवं. २२	१६ ४९	नवं. २३	१९ ५८
जुला. २४	२० ५०	जुला. २५	१९ ०१	नवं. २६	१ ३४	नवं. २८	४ ४९
जुला. २६	१७ ५०	जुला. २७	१७ २१	नवं. ३०	५ ०१	दिसं. १	४ ०५
जुला. २९	१८ ४२	जुला. ३१	२२ ४५	दिसं. ७	१४ २८	दिसं. ८	१३ ०३
अग. ४	७ ३८	अग. ५	१० ४४	दिसं. २०	० १६	दिसं. २१	३ २५
अग. ११	२३ १५	अग. १२	२३ ४१	दिसं. २२	६ ३३	दिसं. २३	९ २८
अग. २३	३ २६	अग. २४	२ २०	दिसं. २५	१३ ४७	दिसं. २७	१५ १२
अग. २५	१ ५८	अग. २६	२ २३	दिसं. ३०	११ ३९	दिसं. ३१	९ २०
अग. २८	५ ३५	अग. ३०	११ ०५				
अग. ३०	१९ २२	अग. ३१	१४ १३				
सितं. २	२० १३	सितं. ३	२२ ४७				
सितं. १०	[illegible]	सितं. ११	[illegible]				

सन् २०१० ई.

प्रारम्भ		समाप्त	
जन. ५	१८ ३६	जन. ६	१७ २१
जन. १८	१३ [illegible]	जन. १९	१५ ०७
जन. २०	[illegible]	जन. २१	२१ ०५

प्रारम्भ		समाप्त	
२०१० ई.	घं. मि.	२०१० ई.	घं. मि.
जन. २३	२३ ५०	जन. २४	८ २२
जन. २५	० ०८	जन. २६	२२ २८
जन. २८	१८ १४	जन. २९	१५ २७
फर. ४	० २१	फर. ४	२३ ३६
फर. १७	० ४३	फर. १८	३ ०१
फर. १९	४ ५५	फर. १९	१६ ०२
फर. २०	६ २१	फर. २१	७ १३
फर. २३	७ ०८	फर. २५	४ २९
फर. २६	२३ ४५	फर. २७	२० ५४
मार्च ६	८ ११	मार्च ७	९ ०८

सिद्धियोग (सन् २००९ ई.)

प्रारम्भ		समाप्त	
अप्रै. २	२१ ४६	अप्रै. ३	सू. उ.
अप्रै. ११	सू. उ.	अप्रै. ११	१६ ५५
अप्रै. ३०	सू. उ.	मई १	१ ५३
मई २०	० ०४	मई २०	सू. उ.
मई २८	सू. उ.	मई २८	८ ५०
जून १६	८ १८	जून १७	सू. उ.
जुला. ५	१९ ३०	जुला. ६	सू. उ.
जुला. १४	सू. उ.	जुला. १४	१६ २४
जुला. २४	२० ५०	जुला. २५	सू. उ.
अग. २	सू. उ.	अग. ३	४ ३१
अग. २१	७ २१	अग. २२	५ ०९
अग. ३०	सू. उ.	अग. ३०	११ ०५
सितं. १०	५ ११	सितं. १०	सू. उ.
सितं. १८	सू. उ.	सितं. १८	१५ २४
सितं. २९	० ४४	सितं. २९	सू. उ.
अक्तू. ७	१० ५२	अक्तू. ८	सू. उ.

सिद्धियोग (सन् २००९ ई.)

प्रारम्भ २००९ ई.	घं. मि.	समाप्त २००९ ई.	घं. मि.
अक्तू. २६	८ ४६	अक्तू. २७	सू. उ.
नवं. ४	सू. उ.	नवं. ४	१७ १२
नवं. १५	५ ०५	नवं. १५	सू. उ.
नवं. २३	सू. उ.	नवं. २३	१६ ५८
दिसं. १२	११ १४	दिसं. १३	सू. उ.
सन् २०१० ई.			
जन. १	६ ४२	जन. १	सू. उ.
जन. ९	सू. उ.	जन. ९	१७ २१
जन. २८	१८ १४	जन. २९	सू. उ.
फर. १७	० ४३	फर. १७	सू. उ.
फर. २५	सू. उ.	फर. २६	२ २०

द्विपुष्कर योग (सन् २००९ ई.)

प्रारम्भ	घं. मि.	समाप्त	घं. मि.
मई १६	१८ ३४	मई १६	२३ ५७
मई २६	सू. उ.	मई २६	११ ०२
जुला. १९	१२ ५२	जुला. १९	१८ ५१
जुला. २८	सू. उ.	जुला. २८	१५ २७
सितं. २०	१२ १८	सितं. २०	१९ ५७
अक्तू. १०	सू. उ.	अक्तू. १०	८ २६
नवं. २४	सू. उ.	नवं. २४	१३ ५६
सन् २०१० ई.			
जन. १७	१० ०२	जन. १७	१८ ०४
जन. २७	० ४९	जन. २७	सू. उ.

त्रिपुष्कर योग (सन् २००९ ई.)

प्रारम्भ २००९ ई.	घं. मि.	समाप्त २००९ ई.	घं. मि.
अप्रै. ११	१६ ५५	अप्रै. ११	२० २६
अप्रै. २१	१४ ०७	अप्रै. २२	सू. उ.
अप्रै. २६	११ ०२	अप्रै. २७	३ ५२
मई ५	९ ३७	मई ५	२२ ३३
जून २०	७ ०४	जून २०	११ ०१
जून २३	२१ २२	जून २४	सू. उ.
जून २८	१० २९	जून २९	५ २४
अग. २२	सू. उ.	अग. २२	९ २१
अग. २६	३ ५९	अग. २६	सू. उ.
सितं. १	सू. उ.	सितं. १	१५ ३१
सितं. ५	२२ ४२	सितं. ६	२ ३८
अक्तू. २०	सू. उ.	अक्तू. २०	९ २७
अक्तू. २५	५ ३९	अक्तू. २५	सू. उ.
नवं. ३	२३ ०८	नवं. ४	सू. उ.
दिसं. १३	११ ५०	दिसं. १३	१४ ३६
दिसं. २९	सू. उ.	दिसं. २९	९ २२
सन् २०१० ई.			
जन. ६	६ २०	जन. ६	सू. उ.
फर. १६	सू. उ.	फर. १६	१३ ०९
फर. २१	७ १३	फर. २१	१८ २६
मार्च २	सू. उ.	मार्च २	१५ १४

अमृतसिद्धियोग (सन् २००९ ई.)

प्रारम्भ	घं. मि.	समाप्त	घं. मि.
(मार्च २७	सू. उ.	मार्च २८	५ ११)शु.
(अप्रै. २४	सू. उ.	अप्रै. २४	१३ ५८)शु.

अमृतसिद्धियोग (सन् २००९ ई.)

प्रारम्भ २००९ ई.	घं. मि.	समाप्त २००९ ई.	घं. मि.
(मई १	१ ५३	मई १	सू. उ.)गु.
(मई २५	१६ ०४	मई २६	सू. उ.)चं.
(मई २८	८ ५०	मई २९	सू. उ.)गु.
(जून २१	५ ०१	जून २१	सू. उ.)श.
(जून २२	सू. उ.	जून २२	२३ ४५)चं.
(जून २५	सू. उ.	जून २५	१५ २९)गु.
(जुला. १८	२१ ४९	जुला. १९	सू. उ.)श.
(जुला. २०	सू. उ.	जुला. २०	१० २४)चं.
(जुला. २६	१७ ५०	जुला. २७	सू. उ.)र.
(अग. ११	२३ १५	अग. १२	सू. उ.)मं.
(अग. १५	सू. उ.	अग. १५	२१ ३४)श.
(अग. २३	सू. उ.	अग. २४	२ २०)र.
(अग. २७	३ ३७	अग. २७	४ ३६)बु.
(सितं. ८	सू. उ.	सितं. ९	५ १०)मं.
(सितं. २०	सू. उ.	सितं. २०	१२ १८)र.
(सितं. २३	१२ १०	सितं. २४	सू. उ.)बु.
(अक्तू. ६	सू. उ.	अक्तू. ६	११ १२)मं.
(अक्तू. २१	सू. उ.	अक्तू. २१	२२ २९)बु.
(नवं. १८	सू. उ.	नवं. १८	७ ०२)बु.
(नवं. २८	४ ४९	नवं. २८	सू. उ.)शु.
(दिसं. २५	१३ ४७	दिसं. २६	सू. उ.)शु.
सन् २०१० ई.			
(जन. २२	सू. उ.	जन. २२	२२ ४८)शु.
(फर. २६	२ २०	फर. २६	सू. उ.)गु.

श्रीमार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग

के

जिज्ञासु पाठकों

के लिए

फलित एवं सिद्धान्त ज्योतिष तथा मुहूर्त्तादि विषयों से सम्बद्ध

शोधपूर्ण पाठ्य सामग्री

लेखक – प्रियव्रत शर्मा

(अस्वास्थ्य के कारण विगतवर्षों से चली आ रही विशेषांकपरम्परा को मैंने फिलहाल स्थगित कर दिया है। एतदर्थ पाठकों से मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। हाँ, मेरे अप्रकाशित लेखसंग्रह में पड़े लेखों में से कुछ लेख प्रतिवर्ष यहां अवश्य प्रकाशित किए जाएंगे। पाठक देखेंगे– ये लेख भी विशेषांक–सामग्री से किसी भी दृष्टि से कम रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक नहीं हैं– प्रियव्रत शर्मा।)

अगले वर्ष(सं. 2067 वि. में) दिए जाने वाले ज्ञानवर्धक एवम् शोधपूर्ण कुछ विशिष्ट लेख

(i) शनि की '**साढ़ेसाती व ढैय्या**' का पूरा काल अशुभ नहीं होता।
(ii) नाड़ीदोष के निर्णायक तीन परस्पर विरोधी मत।
(iii) मृत्यु आदि पंचबाणों के निर्णायक परस्पर विरोधी चार मत।
(iv) गण्डमूल नक्षत्रों का दोषपूर्णकाल कौन–सा व कितना माना जाए ?
(v) गोधूलि लग्न का वास्तविक काल एवं प्रयोगस्थल क्या है ?

एवम्

इसके अतिरिक्त ज्ञानवर्धक और भी अनेक लेख।

******

पाठकों से विनम्र निवेदन

'**आयुसाधन विशेषांक**' देने के लिए मुझे पाठकों के बहुत पत्र मिल रहे हैं। अस्वास्थ्यवश मैं अभी उनकी यह मांग पूरी नहीं कर पा रहा हूँ, इसका मुझे सचमुच खेद है। फलितज्योतिष के ऐसे उलझे विषयों को सुस्पष्ट कर पाठकों के समक्ष रखने में मुझे वस्तुतः आत्मिक आनन्द मिलता है, अतः अपेक्षित स्वास्थ्यलाभ होते ही मैं उनकी एतद्विषयक उग्र जिज्ञासा को अवश्य शान्त करूंगा– वे विश्वास करें।

–प्रियव्रत शर्मा

समस्याएं और समाधान

लेखक :– प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), पंचकूला–134 109

फलित एवं गणित (सिद्धांत) ज्योतिष से सम्बद्ध अपनी समस्याएं मुझे भेजिए। आवश्यक समझने पर डाक से उत्तर देने का भी मेरा पूरा प्रयास रहता है। लेकिन इसके लिए कृपया जवाबी पत्र न डालिए। यदि मुझे आपकी समस्या का उत्तर पत्र द्वारा देना होगा, मैं अपने व्यय पर ही दे दूंगा। मुझे प्रतिदिन अनेक पाठकों की समस्याएं पत्रों द्वारा प्राप्त होती हैं। सीमित समय आदि के कारण मैं प्रत्येक पाठक को पत्रद्वारा समस्याओं का समाधान भेजने के लिए किसी भी तरह बाधित नहीं होना चाहता ।

ध्यान दें– **मैं ज्योतिष का व्यवसाय नहीं करता हूँ। अतः अपनी ज्योतिषसम्बन्धी व्यक्तिगत समस्याओं के लिए मुझे कृपया पत्र न लिखें, और न ही इसके लिए मुझे कोई फीस वगैरह भेजिए। इस सम्बन्ध में मैं किसी से मिलता भी नहीं हूँ। कृपया कर्मकाण्डसम्बन्धी समस्याएं मुझे मत भेजिए। यह मेरा विषय नहीं है।**

–प्रियव्रत शर्मा

यहां इन समस्याओं के समाधान पढ़िए !

- क्या ग्रहण वाले दिन वार्षिक/चातुर्वार्षिक श्राद्ध किया जा सकता है ?
- ग्रहण वाले दिन 'जातकर्म' और 'नामकरण' संस्कार क्या किए जा सकते हैं ?
- वाराणसी के 'विश्व पंचांग' और 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' के तिथ्यादि में अन्तर क्यों ?
- काशीक्षेत्र का दायरा कहां से कहां तक है ?
- कुछ ज्योतिषियों के मत में राहु की तो दृष्टि है, केतु की नहीं। क्या यह ठीक है ?
- ग्रहणदिन से पूर्वापरवर्त्ती वर्ज्य दिनों की संख्या कितनी ?
- विवाहलग्न के समय पापीग्रहों की राशियों के नवांश का विचार पण्डित क्यों नहीं करते ?
- वि. संवत् 2064 में अधिकमास 'ज्येष्ठ' था या 'आषाढ़' ?
- ग्रह की भावगत राशि के मध्य और भावगत राशि की सन्धि में अथवा भाव के मध्य तथा भाव की सन्धि में स्थिति पर उसका फलनिर्णय कैसे किया जाए ?
- यदि स्पष्ट लग्न राशि के प्रारम्भिक अथवा अन्तिम अंशों में हो तो उसका जातक पर जातकग्रन्थोक्त फल क्या होगा ?
- भारतेतर देशों में उत्पन्न जातक के लिए 'विंशोत्तरी अथवा अष्टोत्तरी' दशाओं में से कौनसी प्रयोग में लाई जाए ?
- वार्षिक/चातुर्वार्षिक श्राद्ध अधिकमास में किया जाए अथवा शुद्ध में ?
- **गण्डमूलोत्पन्न बच्चे की गण्डमूलशान्ति कब की जाए ?**
- **'मृत्युबाण' क्या वधूप्रवेशमुहूर्त्त में भी वर्जित है ?**

- विवाहकालनिर्णय करते हुए क्या शनि–राहु–भौम और सूर्य की कन्या के नक्षत्र में स्थिति वर्जित नहीं है ?
- मुहूर्त्तग्रन्थोक्त लत्तादि दोषों के कुछ विशेष वर्ज्य जनपदों/प्रदेशों की भौगोलिक स्थितियां क्या हैं ?
- अवकहड़ाचक्र में 'ब' और 'व' में कोई अन्तर न होने पर भी इनके वर्गेश भिन्न क्यों ?
- अष्टकूटमिलान में परिहृत दुष्टकूटों के गुण कितने ?
- क्या कूटमिलान में 'द्विर्द्वादश' और 'नवम–पञ्चम' का परिहार न मिलने पर भी विवाहसम्बन्ध किया जा सकता है ?
- द्वादशभाव विषमविभागात्मक लिए जाएं या समानविभागात्मक ?
- लग्नकुण्डली में नीचादिस्थ ग्रह के नवांशकुण्डली में उच्चादिस्थ हो जाने और लग्न में उच्चादिस्थ ग्रह के नवांश में नीचादिस्थ हो जाने पर उसका फलनिर्धारण कैसे करें ?
- सामान्यतः प्रातःकालीन लग्न से दिन के 12 बजे का लग्न चौथा और रात्रि के 12 बजे का लग्न दसवां होता है, परन्तु कई बार ये लग्न थोड़ा–बहुत आगे–पीछे भी पाए जाते हैं–ऐसा क्यों ?
- राहु की स्वराशि कन्या है या मेष ?
- 'अष्टकवर्ग प्रकरण' में राहु, केतु को समाविष्ट क्यों नहीं किया गया ?
- धूम, व्यतिपात, परिवेष, इन्द्रधनुः और उपकेतु– इन उपग्रहों की परिकल्पना का आधार क्या है ?
- आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती– ये जलतत्त्वप्रधान राशियों के नक्षत्र हैं, जबकि इन नक्षत्रों का दशाधिप बुध पृथ्वीतत्त्वप्रधान ग्रह है। अन्य दशाधिपों में भी यह विपर्यय देखा जाता है। इसका कारण क्या है ?
- 'दिग्बल प्रकरण' में सूर्य को अपनी दिशा पूर्व में बली न मानकर दशमभाव में बली मानने का शास्त्रीय आधार क्या है ?
- प्रत्येक ग्रह का 'स्तम्भकाल' और 'युतिकाल' कितना होता है ?
- विंशोत्तरी महादशा ज्ञात करने का आधार जन्मकालीन नक्षत्र है और जन्मकालीन चन्द्रनक्षत्र के भयात, भभोग से ही दशा का भुक्त, भोग्य साधन किया जाता है, अतः दशाओं का वर्षमान 'नाक्षत्र/चान्द्र' होना चाहिए। यहां 'सौर या सावन' वर्षमान मानने का आधार क्या है ?
- वर्षप्रवेश में एक गतवर्ष का ध्रुवांक कितना होना चाहिए ?
- 'युञ्जा' किसे कहते हैं ?
- सूर्यग्रहण के समय भी सूर्य का 'दीप्तिबल' क्या 100 ही होता है ?
- 'स्त्रीदूर' और 'नृदूर' में क्या अन्तर है ?
- सूर्य की सूक्ष्म परमक्रान्ति वर्तमान में क्या है और यह किस अनुपात से घट या बढ़ रही है ?

समस्या–(i) क्या ग्रहण के दिन वार्षिक/चातुर्वार्षिक श्राद्ध किया जा सकता है ?

(ii) क्या ग्रहण के दिन 'जातकर्म' और 'नामकरण' संस्कार किए जा सकते हैं ?

पं. डिके राम शर्मा,
मु. तरौर, P.O. सेगली (मण्डी) हि.प्र.।

समाधान–(i) ग्रहण का काल पितरों की तृप्ति के लिए आदर्श माना जाता है। **'पितृश्राद्ध'** करने का इस दिन विशेष माहात्म्य माना गया है। अतः वार्षिक एवं चातुर्वार्षिक श्राद्ध इस दिन श्राद्धविहित पिण्ड–दानादि क्रियाओं सहित निःसन्देह किए जा सकते हैं। **किञ्च**–वार्षिक / चातुर्वार्षिक श्राद्धों को अपनी तिथि, पक्ष, मास से अलग नहीं किया जा सकता, अतः ये श्राद्ध नियतकाल हैं। नियतकाल वाले विधान को अन्यत्र नहीं ले जाया जा सकता। **तथा च**– इन्हें वर्जित भी नहीं किया जा सकता– यही शास्त्रनिर्देश है।

ग्रहण के दिन श्राद्ध करने से पहले स्नान कर लेना आवश्यक है।

(ii) **'जातकर्म'** और **'नामकरण'** संस्कार शिशु के जन्मकाल में ही करने का शास्त्रविधान है। इस स्थिति में ग्रहण, भद्रा आदि दोषों का विचार नहीं किया जाता। यदि किसी अपरिहार्य कारणवश उस समय ये संस्कार न किए जा सकें तो शास्त्रविधान है कि– इन्हें जननाशौच की समाप्ति के अनन्तर किसी शुभ (भद्रा, व्यतिपात, वैधृति,ग्रहण, गुरु–शुक्रास्त, बाल्य–वार्धक्यादि दोषरहित) काल में करना चाहिए–

"जन्मनोऽनन्तरं कार्यं जातकर्म यथाविधि।
दैवादतीतः कालश्चेदतीते सूतके भवेत्।।" –(*वैजवाप*)

यहां **'जातकर्म'** शब्द से **'नामकरण'** भी लेना चाहिए। आगे उद्धृत वचन से भी यह स्पष्ट है–

" एकादशेऽह्नि विप्राणां क्षत्रियाणां त्रयोदशे।
वैश्यानां षोडशे नाम मासान्ते शूद्रजन्मनः।।"–(*सारसंग्रह*)

ब्राह्मणों का सूतक जन्म से 10 दिन तक, क्षत्रियों का 12 दिन, वैश्यों का 15 दिन और शूद्रों का सूतक मास तक रहता है। इसलिए ब्राह्मण का जातकर्म और नामकरण 11वें दिन, क्षत्रिय का 13वें, वैश्य का 16वें और शूद्र का 31वें दिन करना चाहिए–

"देशकालोपघाताद्यैः कालातिक्रमणं यदि।
अनस्तगेज्येन्दुसिते तत्कार्यमुत्तरायणे।।"– (*नारद*)

नारद का यह वाक्य स्पष्ट कहता है कि– जातकर्म और नामकरण यदि किसी कारणवश यथासमय (जन्म के समय) न किए जा सकें तो इन्हें उत्तरायण में तब किया जाए, जब गुरु, शुक्र, चन्द्र अस्त न हों, अर्थात् जब सब प्रकार से शुभकाल हो।

वैसे, अन्य आचार्यों ने तो इन संस्कारों के लिए उत्तरायण का प्रतिबन्ध नहीं लगाया है। लेकिन इन संस्कारों को हो सके तो उत्तरायण में करना अधिक श्रेयस्कर है।

प्रसंगवश यहां यह भी बतलाना उचित है कि– यदि मृताशौच में पुत्रजन्म हो तो मृताशौच की निवृत्ति पर सूतक की समाप्ति हो जाने के बाद ये जातकर्म और नामकरण संस्कार करने चाहिएं–

"मृताशौचस्य मध्ये तु पुत्रजन्म यदा भवेत्।
आशौचापगमे कार्यं जातकर्म यथाविधि।।"–(*स्मृतिसंग्रह*)

(यहां 'जातकर्म' उपलक्षण है– इससे 'नामकरण' भी समझना चाहिए।)

प्रजापति का यह वाक्य तो कहता है कि–जातकर्म और नामकरण– दोनों को जननाशौच और मरणाशौच में भी कर लेना चाहिए–

"एतज्जननाशौचे मरणाशौचे चापि कार्यम्"। –(*प्रजापति*)

ध्यान रहे– यह वाक्य जन्मकाल में ही किए जाने वाले इन संस्कारों के विधान से सम्बन्ध रखता है। इस वाक्य का अभिप्राय है– यदि ये संस्कार (जातकर्म और नामकरण) जन्मकाल में ही किए जाएं तो वहां मृताशौच और जननाशौच –दोनों का विचार नहीं किया जाता।

समस्या– 14 अप्रैल, 2008 ई. को वाराणसी के *'विश्वपंचांग'* में नवमीतिथि–समाप्तिकाल 21 घटी 30 पल और आपके (चण्डीगढ़ के) *'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग'* में 11 घ. 37 प. लिखा है। इस तरह यहां नवमी के घट्यात्मक समाप्तिकालों का अन्तर दोनों पंचांगों में लगभग 10 घड़ी है, जबकि इस दिन वाराणसी और चण्डीगढ़ के सूर्योदयकालों में केवल 20 मि. का ही अन्तर है– ऐसा क्यों ?

डॉ. अखिलेश्वर तिवारी,
1812 लाईट रेजीमेण्ट, 56 A.P.O.

समाधान– वाराणसी का यह **'विश्वपंचांग'** प्राचीन (सूर्यसिद्धान्तीय) गणित से बनता है, जबकि **'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग'** नवीन दृक्सिद्ध (दृक्पक्ष) सूक्ष्म गणित से। इन दोनों पक्षों से साधित सूर्य–चन्द्रादि के भोगकालों में अनेकदा अक्षम्य अन्तर रहता है। नवमी के समाप्तिकाल में यह अन्तर इसी कारण से है।

भारत के अन्य दृक्सिद्ध (दृक्पक्षीय)सूक्ष्म गणितीय पंचांगों से **'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग'** के तिथ्यादि के समाप्तिकालों की आप तुलना करेंगे तो आपको कोई अन्तर नहीं मिलेगा। दृक्पक्षीय और सूर्यसिद्धांतीय गणनाओं में इस अन्तर के कारण **'विश्वपंचांग'** द्वारा निर्णीत व्रत–पर्वों की तिथियों का हमारी तिथियों से अनेकदा अन्तर रहता है।

ध्यान रहे– भारत में अब 99 % पंचांग दृक्पक्षीय पद्धति–अनुसार ही बनते हैं। प्राचीन सूर्यसिद्धांतादि–अनुसार बनने वाले पंचांगों में तो वाराणसी के **'विश्वपंचांग'** और **'हृषीकेश पंचांग'** तथा अन्य कुछ और गिने–चुने पंचांग ही हैं।

समस्या–(i) काशीक्षेत्र का दायरा कहां से कहां तक माना जाए ?

(ii) कुछ ज्योतिषी कहते हैं कि–राहु की तो दृष्टि है, केतु की नहीं– क्या यह ठीक है ?

श्री आर. पी. उपाध्याय,
5–A , शंकरघोष लेन, कोलकाता–6

समाधान–(i) इसके लिए पृ. **283** पर दिया गया लेख **'मुहूर्त्तशोधन में प्रादेशिकता'** पढ़िए।

(ii) केतुग्रह का कबन्ध(धड़) ही है, अतः नेत्रहीन कल्पित कर उसे ये दैवज्ञ दृग्व्यापारासमर्थ मानने लगे हैं। लेकिन यह गलत है। फलित ज्योतिषशास्त्र में सभी आकाशचारी ग्रहबिम्बों को सजीव एवं दिव्यशक्तिसम्पन्न मानकर फलादेश के सिद्धान्त स्थापित किए गए हैं। इन खगोलचारी गोलाकार निर्जीव ग्रहबिम्बों के न तो पैर हैं, न आंखें तथा न इनमें हृदय है और न चेतना ही। **पुनरपि–** इनके अद्भुत प्रभावों से जातक एवं विश्व के सभी जड़–चेतन पदार्थों को सर्वथा नियन्त्रित मानकर यह ज्योतिषशास्त्र प्रवृत्त हुआ है। केतु यद्यपि पौराणिक गाथानुसार छिन्नमस्त है, तथापि उसे ये पुराण एवं फलित शास्त्र दिव्यदृष्टिसम्पन्न मानते हैं। **देखिए–** सूर्य–चन्द्र को ग्रहणोपयुक्त स्थिति में देखकर ग्रस्त करने से वह (केतु) कभी चूकता नहीं है। वह यदि वस्तुतः दृष्टिहीन है तो निरन्तर चलते हुए क्रान्तिवृत्त से यत्किञ्चित् भी इधर–उधर क्यों नहीं भटकता ?– इस प्रश्न का ये दैवज्ञ क्या उत्तर देंगे।

किञ्च, ध्यान रहे–वैसे तो फलित के मूलभूत प्राचीन साहित्य (संहिता आदि) में तो राहु–केतु को ग्रह माना ही नहीं गया है, लेकिन जिन परवर्ती जातक ग्रन्थों में इनको ग्रहरूप में स्वीकारा गया है, उनमें इन (रा. के.) की सप्तम पर पूर्ण दृष्टि स्पष्ट लिखी है। **"लघुपाराशरी"** कार ने राहु–केतु को ग्रहों में स्वीकार किया है। ग्रहदृष्टि की चर्चा में पराशर ने **"पश्यन्ति सप्तमं सर्वे ...."**– कहकर राहु–केतु– दोनों की अन्य ग्रहों की भान्ति सप्तम में पूर्ण दृष्टि मानी है। यदि केतु की दृष्टि को वे नहीं मानते होते तो वे निश्चय ही यहां

सर्वे के स्थान पर 'केतुवर्जं सर्वे' लिखते।

अपि च– फलित ज्योतिष को आगम शास्त्र माना गया है। जो कुछ इसके मूलप्रवर्तक ऋषि–मुनियों ने लिख दिया है, तर्क–वितर्क बुद्धि से उसे निरस्त कर नए मत की स्थापना को सभी आचार्यों (वराह आदि) ने अनुपयुक्त माना है। केतु की सातवें दृष्टि रहती है– यह पराशर आदि ने लिखा है, उसे यथावत् मानने के लिए हम बाधित हैं।

समस्या–(i) ग्रहण वाला दिन तो सर्वसम्मति से शुभकार्यों में वर्जित है ही, लेकिन ग्रहणदिन से पूर्वापरवर्ती वर्ज्य दिनों की संख्या के बारे में मतभेद है। कुछ आचार्य ग्रहणदिन से पूर्ववर्ती केवल तीन दिनों को तथा कुछ ग्रहणदिन से परवर्ती सप्ताह को भी शुभकृत्यों में वर्ज्य बतलाते हैं। खग्रासग्रहण की स्थिति में तो त्याज्य दिनों की संख्या इससे भी अधिक है। लेकिन आपके 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' में दिए जा रहे विवाहादि मुहूर्तों में ग्रहण से पूर्ववर्ती केवल एक दिन और परवर्ती केवल तीन दिनों को ही वर्जित किया जाता है, भले ही ग्रहण खग्रास क्यों न हो। आप किस आचार्य को प्रमाण मानकर ऐसा करते हैं ?

(ii) पापी ग्रहों की राशियों के नवांश में विवाह नहीं करना चाहिए–ऐसा मुहूर्तशास्त्र का निर्देश है। लेकिन ज्योतिषी लोग पंचांग में दिए गए विवाहार्थ शुद्ध लग्न में विवाह करवाते हुए क्रूरग्रह–नवांश का विचार नहीं करते। क्या यह शास्त्रोल्लंघन नहीं है ?

पं. जगदीश चन्द्र शर्मा,
मु. म्यावण, पो. शालाघाट, ज़िला सोलन (हि.प्र.)।

समाधान– (i) आजकल के व्यस्त जीवन में ग्रहण से पूर्वापरवर्ती अधिक दिनों को शुभकृत्यों में अग्राह्य करना कठिन है। 'तत्त्वविवेक'कार के मतानुसार हम प्रत्येक स्थिति में (खग्रास ग्रहण की स्थिति में भी) ग्रहणदिन से पूर्वापरवर्ती क्रमशः एक और तीन दिन ही वर्जित करते हैं। इस विषय में 'तत्त्वविवेक' का वचन इस प्रकार है–

"प्रागेकाहस्त्र्यहं पश्चात्तद्दिनं ग्रहणस्य च।
त्यजेद्गत्यन्तराभावे सर्वग्रासेऽपि कर्मणाम्।।"

(ii) ध्यान रहे– विवाहलग्न में शुभग्रहों के सभी नवांश ग्राह्य नहीं हैं। केवल मिथुन, कन्या, तुला और धनु के नवांश ही यहां ग्राहय हैं, कुछेक के मतानुसार मीननवांश भी। कर्क एवं वृष तथा क्रूर ग्रहों के सभी नवांश वर्जित हैं, अर्थात् ये सभी कुनवांश हैं। अन्त्यनवांश तो सर्वथा वर्जित है ही। हां, यदि वह वर्गोत्तम नवांश है तो उसे अन्त्य या वर्ज्य होने पर भी ग्राहय माना गया है।

विवाहमुहूर्त्त में वर्ज्यनवांश का दोष तब नहीं रहता, जब विवाहलग्न से सप्तमहीन केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध पड़ा हो। लग्नेश अथवा लग्ननवांशेश यदि सप्तमहीन केन्द्र अथवा एकादश भाव में पड़ा हो, चन्द्र वर्गोत्तमगत हो, सूर्य अथवा चन्द्र की एकादश में स्थिति हो तब भी कुनवांश–दोष समाप्त हो जाता है। इसकी पुष्टि में प्रमाणवाक्य ये हैं–

"केन्द्रे कोणे जीव आये रवौ वा लग्ने चन्द्रे वापि वर्गोत्तमे वा।
सर्वे दोषाः नाशमायान्ति चन्द्रे लाभे तद्वद्दुर्मुहूर्तांशदोषः।।"–(*मुहूर्तचिन्तामणि*)

"त्रिकोणे केन्द्रे वा मदनरहिते दोषशतकम्
हरेत्सौम्यः शुक्रो द्विगुणमपि लक्षं सुरगुरुः।
भवेदाये केन्द्रेऽगप उत लवेशो यदि तदा
समूहं दोषाणां दहन इव तूलं शमयति।।" –(*मुहूर्तचिन्तामणि*)

"वर्गोत्तगते लग्ने वर्गदोषः लयं ययौ।"– (*कश्यप*)

"लग्नेट्लग्नांशनाथो वा चायगः केन्द्रगोऽपि वा।
राशिं निहन्ति दोषाणाम् इन्धनानीव पावकः।।" –(*नारद*)

ध्यान रहे– हमारे 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' में विवाहलग्न का निर्णय करते हुए उपरोक्त कुनवांश–परिहारों को दृष्टि में रखा जाता है, जिससे यहां दिए गए विवाहलग्नों में कुनवांशदोष कहीं भी नहीं होता। कहने का तात्पर्य है कि– हमारे पंचांग में दिए गए विवाहलग्नों में कुनवांश के काल के त्याग का विचार करने की दैवज्ञों को कोई जरूरत नहीं है।

समस्या– विक्रमी सं. 2064 (शक 1929) में आपके पंचांग में 'ज्येष्ठ' अधिक मास लिखा था, जबकि 'बृहज्ज्योतिष सार' में दी गई गणना से 'आषाढ़' अधिक मास आता है। यह अन्तर क्यों ?

श्रीकलमदेव शर्मा,
मु. कोटी (शिमला) हि.प्र.।

समाधान– सूर्यसंक्रान्तिरहित शुक्लादि चान्द्रमास अधिकमास माना जाता है। सं. 2064 वि. में शुक्लादि 'ज्येष्ठ' चान्द्रमास ही संक्रान्तिहीन होने से अधिकमास था। सूर्यसिद्धांतीय और दृक्पक्षीय सूर्यसंक्रान्तिकालों में हमेशा अन्तर रहता है, जिससे इन दो पक्षों से बने भिन्न–भिन्न पंचांगों में कभी–कभी अधिकमास भिन्न–भिन्न हो जाते हैं। लेकिन सं.2064 वि. में तो इन दोनों पक्षों से 'ज्येष्ठ' ही अधिकमास था। **ध्यान रहे–** 'बृहज्ज्योतिष सार' मे दी गई यह अधिकमास–गणनापद्धति स्थूल है। यह आसन्नमान से अधिकमास बतलाती है।

समस्या–(i) यदि कोई ग्रह भावगतराशि के मध्य में और भाव की सन्धि में अथवा यदि वह भावगतराशि की सन्धि में व भाव के मध्य में स्थित हो तो उसका फलनिर्णय कैसे करेंगे ?

(ii) यदि लग्न राशि के प्रारंभिक अंश में अथवा अन्तिमांश में हो तो जातक पर उस लग्न का जातकग्रन्थोक्त फल कैसा होगा ?

श्री इन्द्रमोहन थापर,
फिल्लौर (जालन्धर) पं.।

समाधान–(i) भाव और राशि– दोनों भिन्न–भिन्न पदार्थ हैं। ग्रह भावमध्य में होगा तो उस भाव का पूर्ण फल देगा और भावसन्धि में होने पर वह उसका अल्प फल देगा। ठीक, इसी प्रकार राशिमध्य में स्थित ग्रह उस राशि का पूर्ण तथा राशिसन्धि में स्थित ग्रह उसका अल्प फल देगा।

ध्यान रहे– जातक ग्रन्थों में ग्रहों की विभिन्न भावों एवं विभिन्न राशियों में स्थिति का फल अलग–अलग दिया रहता है।

(ii) राशि के प्रथमांश और अन्तिमांशगत लग्न का शास्त्रोक्त फल अत्यल्प होगा– यह स्पष्ट है।

(नोट– इन उपरोक्त दोनों समस्याओं के स्पष्ट समाधान के लिए मेरी पुस्तक 'विश्व लग्नसारणी' के पृष्ट 557–561 पर दिया गया 'भावफल मात्रा' पर लिखा विस्तृत लेख पढ़िए।)

समस्या– भारतेतर देशों में जन्मे जातक के लिए विंशोत्तरी तथा अष्टोत्तरी दशाओं में से कौन–सी दशा प्रयोग में लाई जाए ?

डॉ. यादवेन्द्र नाथ 'वत्स',
मु. गणेशपुर, पो. रुड़की, (हरिद्वार) उ.आं.।

समाधान— वैसे तो जातक शास्त्रकारों ने **विंशोत्तरी और अष्टोत्तरी** दशाओं के प्रवृत्तिक्षेत्र भारत में विन्ध्याचल से क्रमशः उत्तरी एवं दक्षिणी भाग बतलाए हैं। लेकिन पराशर ने तो स्वशास्त्र (लघुपाराशरी) के फलितनियमों का प्रयोग करने वाले दैवज्ञों को प्रत्येक स्थिति में सर्वत्र **'विंशोत्तरी दशा'** को ही प्रयुक्त करने का निर्देश दिया है–

''दशा विंशोत्तरी चात्र ग्राह्या नाष्टोत्तरी मता।।''

हां, जो **लघुपाराशरी** का प्रयोग नहीं करते, उन्हें विन्ध्य से केवल दक्षिण में अष्टोत्तरी दशा का ही प्रयोग करने का शास्त्रादेश है। इसका सारांश है कि– **लघुपाराशरी** के फलितनियमों का प्रयोग यदि न किया जाए तो केवल विन्ध्य के दक्षिण में अष्टोत्तरी दशा प्रयोग में लानी चाहिए, अन्यथा विश्व के शेष किसी भी भाग में रहने वाले किसी भी जातक के लिए प्रत्येक स्थिति में विंशोत्तरी दशा ही प्रयोज्य है।

समस्या— **वार्षिक/चातुर्वार्षिक श्राद्ध अधिकमास में किया जाए या शुद्ध में ?**

श्री अनूप शर्मा,
मु. पो. लोधवां (कांगड़ा)–(हि.प्र.)।

समाधान— शुद्धमास में दिवंगत व्यक्ति का वार्षिक/ चातुर्वार्षिक श्राद्ध शुद्धमास में ही करना चाहिए। लेकिन शुद्धमास में दिवंगत व्यक्ति का प्रथम वार्षिक श्राद्ध यदि अधिकमास में पड़ता हो तो उसे अधिकमास में ही किया जाता है। हां, उसके द्वितीय, तृतीय आदि सभी वार्षिक श्राद्ध तो शुद्धमास में ही किए जाएंगे–**यह ध्यान रहे**। यदि कोई व्यक्ति अधिकमास में मरता है तो भविष्य में जब कभी उसका मृत्युमास अधिक हो तब उसका वार्षिक श्राद्ध, चाहे वह प्रथम–द्वितीय–तृतीय आदि कोई भी हो, अधिकमास में ही करना होगा, शुद्ध में नहीं। इस बारे **धर्मसिन्धु** का वचन है–

''चैत्रादौ मलमासे मृतानां कदाचित् बहुकालेन तस्मिन्नेव चैत्रादौ मलमासे प्राप्ते मलमास एव प्रतिसांवत्सरिकं श्राद्धं कर्त्तव्यम्। चैत्रादौ शुद्धमासे मृतानान्तु प्रत्याब्दिकं श्राद्धं मलमासे न कर्त्तव्यम्, तत्शुद्ध एव चैत्रादौ कर्त्तव्यम्। शुद्धमासे मृतानान्तु प्रथममाब्दिकं मलमास एव कार्यं न शुद्धे। द्वितीयाद्याब्दिकं तु शुद्ध एव।''– (*धर्मसिन्धु*)

समस्या— **गण्डमूलोत्पन्न बच्चे की गण्डमूलशान्ति कब करनी चाहिए ?**

पं. सुरेश कुमार वाशिष्ठ,
राजपुरा टाऊन (पं.)।

समाधान— गण्डमूलशान्ति जननाशौचसमाप्ति के दूसरे ही दिन करनी चाहिए। यहां शुभ दिन, भद्रा, नक्षत्रादि का विचार नहीं किया जाता। यदि किसी कारणवश इस दिन शान्तिकार्य न हो सके तो आगामी गुरु–शुक्रास्त, भद्रा, व्यतीपात, वैधृति, ग्रहण आदि दोषरहित जन्मनक्षत्र में या तदनन्तर किसी अन्य गुरु–शुक्रास्तादि दोषरहित शुभ दिन में यह शान्तिकार्य करवाना चाहिए। **'मानवसंहिता'** का इस बारे यह वाक्य है–

''जातस्य द्वादशाहे तु शान्तिहोमं समाचरेत्।
असंभवे तु जन्मर्क्षेऽन्यस्मिन्वा शुभे दिने।।''

ध्यान रहे– 'गण्डमूलशान्ति' के बाद ही पिता को शिशु का मुख देखना चाहिए–इससे पूर्व नहीं।

समस्या–(i) क्या 'मृत्युबाण' वधूप्रवेशमुहूर्त में भी वर्जित है ?

(ii) विवाहकालनिर्णय में ''शनि–राहु–कुजादित्या यदा जन्मर्क्षसंस्थिताः। विवाहिता तदा कन्या निश्चितं विधवा भवेत्।।''– 'शीघ्रबोध' के इस वाक्य का पालन क्यों नहीं किया जाता ?

श्री उमाशंकर दीक्षित,
मु. रिवाड़ी, डा. दलाश, कुल्लू (हि.प्र.)।

समाधान–(i) 'मृत्युबाण' को विवाह में ही वर्जित किया जाता है, अन्यत्र नहीं–

"नृपाख्यं राजसेवायां गृहगोपेऽग्निपंचकम्।
याने चौरं व्रते रोगं त्यजेन्मृत्यं करग्रहे।।" –(*ज्योतिःप्रकाश*)

(ii) शीघ्रबोध के इस वाक्य का मूल ज्ञात नहीं है, अतः इसे भारत का कोई भी दैवज्ञ मान्यता नहीं देता। यदि इसे मान्यता दी भी जाए तो जन्मनक्षत्र में शनि होने पर अनेकदा लगभग 14–15 मास तक कन्या का विवाह नहीं हो पाएगा। यदि कभी दौर्भाग्यवश कन्या के जन्मनक्षत्र में शनि और राहु एक के बाद दूसरा निरन्तर संचरणशील हो तो लगभग दो वर्ष तक कन्या का विवाह कर पाना संभव नहीं होगा। **किञ्च–** यहां यह भी प्रश्न उठता है कि –कन्या के जन्मनक्षत्र में ही शनि–राहु–मंगल–सूर्य की स्थिति को दोषपूर्ण माना जा रहा है, वर के जन्मनक्षत्र से भी तो ऐसा ही विचार **'समान–न्यायेन'** किया जाना चाहिए। ऐसा करने पर तो बहुत्र वर–कन्या का विवाह तीन–तीन, चार–चार वर्षों तक कर पाना असंभव हो जाएगा। अतः यह वाक्य उक्त इन कारणों तथा अप्रामाणिक मूल के कारण ग्राह्य नहीं है। संहिताओं में उपलब्ध प्रामाणिक वाक्यों के अनुसार तो विवाहकाल के निर्धारण में केवल गुरु, चन्द्र और सूर्य की ही तात्कालिक गोचरस्थिति, जिसे **'त्रिबलशुद्धि'** कहा जाता है, विचारणीय मानी गई है।

इसके समर्थक प्रमाणवाक्य ये हैं–

"स्त्रीणां गुरुबलेनैव विवाहः शोभनः स्मृतः।
वरस्यार्कबलं ग्राह्यमैन्दवं तूभयोरपि।।" –(*गुरु*)

"सुरगुरुबलमबलानां पुरुषाणां तीक्ष्णरश्मिबलमेव।
चन्द्रबलं दम्पत्योरवलोक्य शोधयेल्लग्नम्।।" –(*वराह*)

समस्या– (i) मुहूर्त्तग्रन्थों में लत्ता आदि दोषों को कुछ विशेष मालव, जांगल, अमर, विद्रुम आदि जनपदों/प्रदेशों के लिए ही वर्ज्य लिखा है। इन जनपदों/प्रदेशों की भौगोलिक स्थितियां क्या स्पष्ट की जा सकती है। ?

(ii) 'अवकहड़ा चक्र' में 'व' और 'ब' में कोई भेद नहीं माना गया है, जबकि 'य' वर्गीय होने से 'व' का वर्गेश 'मृग' और 'प' वर्गीय होने से 'ब' का वर्गेश 'मूषक' है– यह असंगति क्यों ?

श्री रवीन्द्र कुमार शास्त्री,
मु. कुफ्टू, डा. दरभोग, शिमला (हि.प्र.)।

समाधान–(i) इसके लिए पृष्ठ **283** पर दिया गया **'मुहूर्त्तशोधन में प्रादेशिकता'** लेख पढ़ें।

(ii) 'अवकहड़ा चक्र' और 'वर्गमैत्री चक्र'– दोनों के प्रतिपाद्य विषय भिन्न–भिन्न हैं। इनके नियमों/निर्णयों की परस्पर तुलना नहीं हो सकती। 'अवकहड़ा चक्र' वर्णों के राशि–नक्षत्र बतलाता है, जबकि 'वर्गमैत्री चक्र' इनके वर्गेश। अवकहड़ा चक्रानुसार इन दोनों वर्णों (व, ब) के राशि–नक्षत्र अभिन्न और वर्गेश चक्रानुसार इनके वर्गेश भिन्न–भिन्न हैं। इस प्रकार स्पष्टतया परस्पर भिन्न विषयों वाले इन दोनों में असंगति, संगति का विमर्श बिल्कुल असम्भव है।

समस्या–(i) अष्टकूटमिलान में दोषपूर्ण कूट का परिहार हो जाने पर परिहृत कूटों के कम से कम आधे गुण प्राप्त मूल गुणसंख्या में मिला देने चाहिएं–ऐसा आपने अपनी 'ग्रहयोग एवम् दाम्पत्य जीवन' पुस्तक में लिखा है। लेकिन यहां के स्थानीय कुछ दैवज्ञ लोग इसे नहीं मानते। उनका कहना है कि– किसी भी शास्त्रवचन से इसका समर्थन प्राप्त नहीं है– आप इस बारे क्या कहते हैं ?

(ii) क्या कूटमिलान में 'द्विर्दादश' अथवा 'नवम–पंचम' का परिहार न मिलने पर विवाहसंबंध की अनुमति दी जा सकती है ?

(iii) द्वादशभाव विषमविभागात्मक लेने चाहिएं या समानविभागात्मक ?

प्रो. अशोक शर्मा,
अशोक नगर (म.प्र.)।

समाधान–(i) इसके लिए पृष्ठ **285** पर दिया गया **'परिहृत दुष्टकूटों के गुण'** लेख पढ़ें।

(ii) मिलान में गुणसंख्या यदि 16 या इससे अधिक है तो **'द्विर्द्वादश'** या **'नवम–पंचम'** के परिहार के बिना भी सम्बंध किया जा सकता है। यदि यहां **'नाड़ीदोष'** भी हो तब नाड़ीदोष के परिहार के बिना तो सम्बन्ध बिल्कुल नहीं किया जा सकता, क्योंकि नाड़ीदोष का परिहार सर्वत्र नितान्त आवश्यक है। शास्त्रकारों ने नाड़ीदोष वाले वर–कन्या के सम्बन्ध को सर्वथा त्याज्य लिखा है। अधिकतम गुणसंख्या होने पर (यानी शेष सातों कूटों की शुद्धि होने पर) भी नाड़ीदोष वाला मिलान सर्वथा त्याज्य माना गया है–

"एकनाड़ीविवाहश्च गुणैः सर्वैः समन्वितः।
वर्जनीयः प्रयत्नेन दम्पत्योर्निधनं यतः।।" –*(नारद)*

अपि च– 'विवाहपटल' कार भी इस बारे यही कहता है–

" सदा नाशयत्येक नाड़ी–समाजो।
भकूटादिकान्सप्तभेदान् प्रशस्तान्।।"

उपरोक्त विवेचन का सारांश है कि– जिस प्रकार विवाह के लिए शास्त्रकारों ने नाड़ीशुद्धि को दृढ़ता से अनिवार्य लिखा है, उस प्रकार भकूट या अन्य कूटों की शुद्धि को नहीं। अतः नाड़ीशुद्धि की स्थिति में अन्य किसी कूटदोष का परिहार न मिलने पर भी गुण पर्याप्त हों तो विवाहसम्बन्ध किया जा सकता है– यही शास्त्रनिर्णय है। हां, यदि सन्तानहीनता और दारिद्र्य आदि के हेतुभूत **'नवम–पंचम'** और **'द्विर्द्वादश'** जैसे भकूटों से संत्रस्त होकर जो इन कूटों को उपेक्षित नहीं करना चाहते (अर्थात् 16 गुणों से अधिक गुणों की प्राप्ति एवं नाड़ीशुद्धि होने पर भी इस भकूटदोष के कारण यदि मिलान को स्वीकार्य नहीं मानते) तो वे ऐसा करने के लिए स्वतन्त्र हैं। लेकिन, **ध्यान रहे–** इस प्रकार की स्वतन्त्रता सर्वत्र देने से पर्याप्त गुण एवं नाड़ीशुद्धि होने पर भी वर्ण आदि अन्य सात कूटों में से किसी एक की भी अशुद्धि से मिलान को अग्राह्य मानने का सिद्धान्त स्थापित हो जाएगा। क्योंकि, वर्ण आदि अन्य सात कूटों में से प्रत्येक की अशुद्धि को शास्त्रकारों ने तो वर–कन्या की मृत्यु तथा दौर्भाग्य का कारण लिखा है। संहिताएं एवं अन्य मुहूर्त्तग्रन्थ ऐसे प्रमाणवचनों से भरे पड़े हैं। अतः इस स्थिति में तो मिलान तभी ग्राह्य हो सकेगा, जबकि आठों कूट या तो सर्वथा शुद्ध होंगे या उनके दोषों के परिहार मिल रहे हों। क्योंकि, ऐसे सभी कूटदोषों से मुक्त मिलान अत्यन्त विरल होते हैं, जिसके परिणामस्वरूप लगभग शत–प्रतिशत वर–कन्याओं के सम्बन्धों पर दैवज्ञों को असहमत होने के लिए बाधित होना पड़ेगा। इसी समस्या के समाधान के लिए शास्त्रकारों ने सबसे भयावह कूट **'नाड़ी'** की शुद्धि को अनिवार्य बतलाते हुए, शेष सात कूटों की अशुद्धि के दोष को 16 से अधिक गुणों द्वारा यथासम्भव न्यूनीकृत समझते हुए मिलान को ग्राह्य मानने का परामर्श दिया है। इसके अतिरिक्त कोई विकल्प भी तो नहीं है।

किञ्च– गुणमिलान में कूटदोषों के कारण उत्पन्न सन्तत्यभाव, दारिद्र्य आदि दौर्भाग्य को दैवज्ञ सर्वथा अन्तिम न समझ बैठें, क्योंकि वर–कन्या की अपनी जन्मकुण्डलियों की ग्रहस्थितियां, सर्वथा त्रिबलशुद्ध लग्न का काल तथा विवाहलग्न–कुण्डली में केन्द्र–त्रिकोणादि गत गुरु, शुक्र, बुध आदि की प्रबल स्थितियों में इन दोषों को अपहृत करने की पर्याप्त क्षमता को मुहूर्त्तशास्त्र मानता है।

अपि च–किसी भी कूटदोष का प्रतिकार दान, जप, रत्नधारण आदि द्वारा भी किया जा सकता है।

(iii) इसके लिए मेरी पुस्तक **'विश्व लग्नसारणी'** के पृष्ठ 562–565 पर दिया गया **'विषम विभागात्मक भाव– एक समीक्षा'** लेख पढ़ें।

समस्या–(i) कई बार लग्नकुण्डली में नीचादिस्थ (कमजोर) ग्रह नवांश में उच्चादिस्थ हो जाता है, अथवा अनेकदा लग्नकुण्डली में उच्चादिस्थ ग्रह नवांश में नीचादिस्थ हो जाता है। ऐसी परस्पर विरोधी स्थितियों में उस ग्रह का फलनिर्देश किस तरह, क्या करें ?

(ii) सामान्यतः प्रातःकालिक लग्न से दिन के 12 बजे का लग्न चौथा एवम् रात्रि के 12 बजे का लग्न 10वां आता है। लेकिन कई बार ये लग्न थोड़ा बहुत आगे–पीछे भी पाए जाते हैं– इसका क्या कारण है ?

पं. सुरेशकुमार शर्मा,
मु. सुन्हाड़, पो. सौर, नालागढ़ (हि.प्र.)।

समाधान–(i) ग्रह द्वारा अधिष्ठित राशि और नवांशराशि में असमन्वय कुछ न कुछ रहता ही है। कई बार तो यह असमन्वय दैवज्ञ को बुरी तरह उलझा देता है। **जैसे**– नीचराशिस्थ ग्रह उच्चनवांश में, उच्चराशिस्थ नीचनवांश में, मित्रराशिस्थ शत्रुनवांश में, शत्रुराशिस्थ मित्रनवांश में ....आदि आदि परस्पर विरोधी स्थितियां। ऐसी स्थितियों में जातक शास्त्रकार कहते हैं–ग्रहफल दोनों असदृश फलों का मिश्रण होता है। वराहमिहिर ने **'बृहज्जातक'** के **'दशान्तर्दशा अध्याय'** में यही बात इस तरह लिखी है–

"नीचारिभांशे समवस्थितस्य शस्ते गृहे मिश्रफला प्रदिष्टा।"

अर्थात्– प्रशस्तगृह (अपने उच्च, मूलत्रिकोण, मित्रक्षेत्र) में स्थित ग्रह यदि नीच, शत्रु के नवांश में हो तो उस ग्रह की दशान्तर्दशा का फल शुभाशुभ फलों का मिश्रण होगा। इससे यह भी अर्थ निकलता है कि–नीच, शत्रु के क्षेत्र में स्थित ग्रह यदि अपने उच्च/मित्रक्षेत्र के नवांश में हो तो उसकी दशान्तर्दशा का फल भी शुभाशुभ फलों का ही मिश्रण होगा।

इस विषय में एक ऐसा श्लोक भी मिलता है, जो ग्रह के नवांश को उसकी राशि से अधिक महत्त्व देता है। वह कहता है– यदि ग्रह उच्चस्थ होकर नीचनवांश में हो तो वह नीचनवांश का फल देगा। इसी प्रकार यदि वह नीचस्थ होकर उच्चनवांश में हो तो वह उच्चनवांश का ही फल देगा। देखिए–

"नीचांशगास्तुंगगृहोपयाताः जातस्य नीचं फलमाशु दद्युः।
नीचंगतास्तुंगनवांशकस्थाः सौम्यं फलं व्योमचराः प्रकुर्युः।।"

लेकिन तर्कसंगत फलादेश–प्रणाली के विरुद्ध होने के कारण यह मत उपेक्ष्य है।

वैसे, केशव आदि **'जातकपद्धति'** कारों ने स्थान, दिक्, काल आदि षड्बलों के संकलन द्वारा ग्रह का बल निर्धारित कर उस ग्रह का उत्कृष्ट, अपकृष्ट या सामान्य फल निश्चित करने का निर्देश दिया है। ग्रह की केवल राशि, नवांश से निर्णीत ग्रहफल को उन्होंने अपूर्ण माना है।

(ii) स्थानीय स्पष्टकाल के अनुसार दिन के ठीक 12 बजे सूर्य **'ऊर्ध्व याम्योत्तरवृत्त'** (Upper Meridian) में रहता है, यानी तब वह **'दशमभाव'** में होता है। इसी प्रकार स्थानीय स्पष्टकालानुसार रात्रि के 12 बजे सूर्य **'अधःयाम्योत्तरवृत्त'** (Lower Meridian) में, यानी उस समय वह **'चतुर्थभाव'** में होता है। इस प्रकार स्पष्ट है– प्रश्नकर्ता प्रकारान्तर से यही जानना चाहता है कि– लग्न और दशमभाव तथा लग्न और चतुर्थभाव का अन्तर कभी 3 राशि (90 अंश) और कभी उससे कुछ कम और कभी ज्यादा क्यों होता रहता है ?– इसका उत्तर जो खगोलशास्त्र से सम्बद्ध रखता है, इस प्रकार है–

लग्न और दशमभाव तथा लग्न और चतुर्थभाव के मध्यवर्ती क्रान्तिवृत्तीय दोनों वृत्तखण्ड **'विषुवद्वृत्त'** **(Equator)** के पार्श्ववर्ती स्थलों पर लगभग 90–90 अंशों (यानी 3–3 राशियों) के होते हैं। भूभ्रमण के कारण इन वृत्तखण्डों की मध्यवर्ती राशियां प्रतिक्षण बदलती रहती हैं। राशियों के स्वोदयमान (स्वोदयकाल) भिन्न–भिन्न हैं। किसी राशि का स्वोदयकाल दो घण्टा और किसी का इससे न्यूनाधिक है। जब इन वृत्तखण्डों में कम स्वोदयकाल वाली राशियां होती हैं, तब इनमें 3 से अधिक और जब अधिक स्वोदय वाली

होती हैं, तब इनमें तीन से कम राशियां होती हैं।

ध्यान रहे– अधिक अक्षांश वाले (Equator से दूरवर्ती) स्थलों पर तो इन वृत्तखण्डों में कई बार केवल 10–10 या 11–11 अंश ही होते हैं और कई बार इनमें 5 से अधिक राशियां भी होती हैं।

समस्या–(i) राहु की स्वराशि कन्या है या मेष ?

(ii) 'अष्टकवर्ग प्रकरण' में राहु–केतु को सम्मिलित क्यों नहीं किया गया ?

(iii) धूम, व्यतीपात, परिवेष, इन्द्रधनुः और उपकेतु– इन उपग्रहों की परिकल्पना का आधार क्या है। ?

(iv) आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती– ये जलतत्त्वप्रधान राशियों के नक्षत्र हैं। 'विंशोत्तरी महादशा' में इन नक्षत्रों का दशाधिप पृथ्वीतत्त्वप्रधान ग्रह बुध है। यह विपर्यय अन्य दशाधिपों में भी पाया जाता है। इसको मानने का आधार क्या है ?

(v) 'दिग्बल प्रकरण' में सूर्य को पूर्व दिशा में बली न मानकर दशमभाव में बली मानने का शास्त्रीय आधार क्या है ?

(vi) प्रत्येक ग्रह का 'स्तम्भकाल' और 'युतिकाल' कितना होता है ?

(vii) 'विंशोत्तरी महादशा' ज्ञात करने का आधार जन्मकालीन नक्षत्र है। जन्मकालीन चन्द्रनक्षत्र के भयात–भभोग से दशा का भुक्त– भोग्य साधन किया जाता है। चन्द्रनक्षत्र में अशुद्धि के कारण दशा में मासात्मक/दिनात्मक आदि अन्तर आता है। इससे स्पष्ट होता है कि– दशाओं की गति नक्षत्रगति एवं चन्द्रगति पर आश्रित है, अतः दशाओं का वर्षमान 'नाक्षत्र/चान्द्र' होना चाहिए। यहां 'सौर या सावन वर्षमान' मानने का आधार क्या है ?

(viii) 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' 2055 वि. के पृष्ठ 60 पर दशासमाप्ति– कालिक वर्ष और स्पष्ट सूर्य के आधार पर दषासमाप्ति का दिन, तारीख और काल (घं. मि.) जानने के लिए गतवर्ष के दशासमाप्तिकालीन स्पष्ट सूर्य से गणना प्रारम्भ करने का कारण क्या है ? जिस वर्ष में दशा समाप्त होती है, वहां दशासमाप्तिकालीन स्पष्ट सूर्य का उसी वर्ष का दिन और काल सीधा ग्रहण कर लेने में क्या आपत्ति है ?

(ix) 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' 2055 वि. के पृष्ठ 60 पर ही 'दशा– समाप्तिकाल कोष्ठक' में एक वर्ष का ध्रुवांक 1 वार 6 घंटा 9 मिनट क्यों दिया गया है, जबकि सूर्य उसी राशि–अंश–कला पर 365 दिन 6 घंटा 14.5 मिनट (लगभग) के बाद आता है ?

(x) 'युञ्जा' किसे कहते हैं ?

(xi) सूर्यग्रहण के समय भी क्या सूर्य का 'दीप्तिबल' 100 ही होता है ?

श्री सतीश कुमार जैन,

ix–6602, नेहरु गली (गांधीनगर)दिल्ली–31,

समाधान–(i) राहु और केतु को किसी भी प्राचीन सिद्धान्त, संहिता एवम् प्राचीन जातक ग्रन्थ में ग्रह नहीं माना गया है। वराहमिहिर के **'बृहज्जातक'** जैसे मूल जातकग्रन्थ में भी इन ग्रहों का कोई फलादेश नहीं मिलता। **केशवार्क** दैवज्ञ ने तो धूमकेतु (Comet) को ही केतु ग्रह समझ लिया। नारद, वशिष्ठ आदि संहिताकारों ने भी राहु को ग्रह नहीं माना और उन्होंनें भी अपनी–अपनी संहिताओं के **'केतुचाराध्याय'** में धूमकेतु का ही विवेचन किया है। इससे स्पष्ट है– राहु, केतु मूलतः ग्रह नहीं माने गए। कारण स्पष्ट है– इनका कोई

बिम्ब नहीं है। ये सूर्य–चन्द्र के भ्रमणवृत्तों के ही दो सम्पात (Intersection) मात्र हैं। सिद्धान्तकारों ने भी मूलतः **राहुसम्पात** की ही गणित की है। केतु तो इस (राहु) से 180° पर स्थित दूसरा सम्पात है।

ध्यान रहे– राहु के मित्रादि ग्रह विभिन्न ग्रन्थों में भिन्न–भिन्न हैं। इसके मित्रादि के बारे में फलित ग्रन्थकारों के परस्पर विरोधी तीन–चार मत मिलते हैं। **'लघुपाराशरी'**कार ने राहु–केतु के फल का निर्धारण इनसे अधिष्ठित राशियों से नहीं, अपितु इनसे अधिष्ठित भावों तथा इनसे युत भावेशों द्वारा किया है। स्पष्ट है– पराशर भी इन तमोग्रहों की उच्च–नीच, मित्र–शत्रु आदि राशियों के बारे में अनिश्चय या अबोध का शिकार रहे हैं।

(ii) **अष्टकवर्ग** में राहु–केतु का असमावेश भी **अष्टकवर्ग पद्धति** के उद्‌गमकाल में इनके ग्रहत्व तथा इनके द्वारा जनितफल के अनिश्चय के कारण ही है।

(iii) इन उपग्रहों का निर्धारण किस आधार पर हुआ है, यह ज्ञात नहीं है। फलित में इस प्रकार के असंख्य पदार्थ, योग एवं सिद्धान्त हैं, जिनकी उपपत्ति हमें ज्ञात नहीं है। इनकी परिकल्पना किन्हीं दैवज्ञों की सादृश्यमूलक धारणाविशेष से हुई प्रतीत होती है।

(iv) **नक्षत्रों के जल आदि तत्त्वों एवं महादशा सिद्धान्त के निर्धारक दैवज्ञ भिन्न–भिन्न हैं**, जिससे इन दोनों में समन्वय नहीं है। फलित ज्योतिष के अनेक सिद्धान्तों/नियमों में इस तरह के भारी असमन्वय हमें पदे–पदे मिलते हैं। इसका स्पष्ट कारण है कि– इन विभिन्न सिद्धान्तों/नियमों के प्रवर्त्तक आचार्य अलग–अलग हैं और वे अलग–अलग काल के भी। एक ही विचारक ऐसी परस्पर विरोधी बातें नहीं लिख सकता।

(v) **'दिगीश'** और **'दिग्बल'** भी शायद दो भिन्न–भिन्न मस्तिष्कों की उपज है। क्योंकि, सूर्य की उदयदिशा **पूर्व** है, अतः उसे **पूर्वेश** मान लिया गया और इसकी परम तेजस्विता मध्याह्न के समय **'ऊर्ध्व याम्योत्तरवृत्त'** (दशम लग्नस्थान) पर इसकी स्थिति के समय होती है, अतः इसे दशमलग्न में बली माना गया है।

(vi) ग्रहों का **'स्तम्भकाल'** उनकी वक्रता या मार्गिता की समाप्ति/प्रारम्भ का वह अत्यन्त दुर्ज्ञेय क्षण है, जब वे सर्वथा गतिशून्य (Stationary) हो जाते हैं।

ग्रहों का **'युतिकाल'** कई प्रकार का है। राशियुति, अंशयुति, कलायुति, विकलायुति, भेदयुति........ आदि। जब दो ग्रह एक ही राशि में हों तो उनकी राशियुति होती है। इसी प्रकार अंशयुति, कलायुति, विकलायुति समझनी चाहिए। जब कोई ग्रह दूसरे ग्रह के बिम्ब में से गुजरता है तो उसे **'भेदयुति'** कहा जाता है। इन युतियों के अलावा **अंशुमर्दादि** अनेक और भी युतियां हैं, जिनके लिए **करण एवं सिद्धान्त** ग्रन्थों के **'युत्यधिकार'** देखने चाहिएं।

(vii) ''क्योंकि चन्द्रनक्षत्र के जन्मकालिक भुक्त एवं भोग (भयात एवं भभोग) काल में अन्तर (न्यूनाधिकता) होने से जन्मकालिक भुक्त या भोग्यदशा में अन्तर पड़ता है, अतः विंशोत्तरी दशा–वर्ष नाक्षत्र/चान्द्र होने चाहिएं'' –प्रश्नकर्त्ता की यह धारणा नितान्त भ्रान्तिपूर्ण है। **ध्यान रहे**– यहां जन्मकालिक भुक्तदशा–वर्षादि जानने के लिए भयात, भभोग एवं दशावर्ष (दशेश की दशा के पूर्ण वर्ष)– इन तीन राशियों से त्रैराशिक गणितप्रक्रिया की जाती है, जैसे– भभोग में पाते हैं दशावर्ष तो भयात में कितने भुक्त दशावर्ष ($= \frac{\text{दशावर्ष} \times \text{भयात}}{\text{भभोग}}$) ? इस त्रैराशिक प्रक्रिया से जो भुक्त–दशावर्षादि होंगे, वे त्रैराशिक सिद्धान्तानुसार (**''प्रमाणमिच्छा च समान जाती........''** इस भास्करोक्त सिद्धान्तानुसार) दशावर्ष की जाति (सौर मान) के ही होंगे। क्योंकि, त्रैराशिक सिद्धान्तानुसार **''इच्छाफल''** **''फल''** की जाति का ही होता है, अर्थात् **''फल''** और **''इच्छाफल''** दोनों समान जाति के होते हैं। स्पष्ट है, यहां **''फल''** दशावर्ष और **'इच्छा फल'** जन्मकालिक भुक्त दशावर्षादि हैं। क्योंकि, यहां दशावर्ष सौरमान के हैं, अतः भुक्त दशावर्षादि भी सौरमान के ही होंगे।

ध्यान दें–विंशोत्तरी दशा के ये 120 वर्ष जातक की परम आयु के वर्ष हैं, अतः ये सौर वर्ष हैं, क्योंकि आयु को सौर वर्षों (सूर्यभगणों) में ही मापा जाता है। वर्षफलसाधन में भी आयु के गताब्द सूर्य के क्रान्तिवृत्तीय

पूर्ण भ्रमण ही तो हैं। सिद्धान्त ग्रन्थों में भी युग, महायुग, मन्वन्तर, कल्प तथा ब्रह्मा की आयु सौर वर्षों में ही निर्दिष्ट है। अपि च– आयुसाधनप्रक्रिया द्वारा प्राप्त आयु के वर्षों को आचार्य **केशव** आदि ने अपनी **'जातक पद्धतियों'** में स्पष्टतः सौर ही बतलाया है– " **आयुः सौरमिदं यतोऽब्दगणना सौरात्**"– (***केशवीय जातकपद्धति***)। इससे सुस्पष्ट है– भयात, भभोग एवं दशावर्षों से त्रैराशिक द्वारा प्राप्त भुक्त दशावर्ष सौर ही हैं।

(viii) आप ठीक हैं। गतवर्ष से इसकी गणना प्रमादवश हुई है। वैसे, यहां परिणाम में तो कोई अन्तर नहीं है।

(ix) आजकल ज्योतिष में सौर वर्ष तीन प्रकार का प्रयोग में आ रहा है–

निरयण सूर्यसिद्धान्तीय (असंशोधित) सौर वर्ष; निरयण दृक्पक्षीय (संशोधित) सौर वर्ष तथा सायन सौर वर्ष।

निरयण सूर्यसिद्धान्तीय सौर वर्ष का मान 365 दिन 06 घण्टा 12.6 मिनट है और **निरयण दृक्पक्षीय सौर वर्ष** का 365 दिन 06 घण्टा 09 मिनट 09 सेकण्ड तथा **सायन सौर वर्ष** का मान 365 दिन 05 घण्टा 48 मिनट 46 सेकण्ड है।

भारतीय ज्योतिष में आजकल **निरयण दृक्पक्षीय सौर वर्ष** ही प्राधान्येन प्रयोग में आ रहा है।

आपने जो वर्षमान (365 दिन 06 घण्टा 14.5 मिनट) उद्धृत किया है, वह किसी भी श्रेणी में नहीं आता।

(x) नक्षत्रमेलापक में कूटों की कुल संख्या 23 है। जो इस प्रकार है– **वर्ण, वश्य, तारा, योनि, राशीशमैत्री, गण, भकूट, नाड़ी, महेन्द्र, दिन, रज्जु, वेध, स्त्रीदूर, गण्ड, लिंग, जाति, गोत्र, पक्षी, आय, योगिनी, वर्ग, चन्द्र** और **युञ्जा। वसिष्ठ** आदि कुछ आचार्यों ने मेलापक के लिए इनमें से 18 तथा कुछेक ने इससे कम 12, 11, 10, 9 या केवल 8 ही कूट स्वीकार किए हैं। 18 कूटों को मान्यता देने वाले **वसिष्ठ आदि ने तो 'युञ्जा'** को कूट माना है। लेकिन 18 से कम कूटों को मान्यता देने वाले अनेक आचार्यों ने मेलापकार्थ **'युञ्जा'** को स्वीकार नहीं किया है। जिनमें **'मुहूर्तचिंतामणि'** और **'मुहूर्त्त मार्त्तण्ड'** के रचयिता भी हैं। **'युञ्जा'** को अधिकतर आचार्यों ने सामान्य कोटि का कूट माना है, अतः इसे उन्होंने अत्यल्प गुण दिए हैं।

'युञ्जा' तीन प्रकार की है– रेवती से मृगशिरा तक के छः नक्षत्र प्रथम, आर्द्रा से अनुराधा तक के 12 नक्षत्र द्वितीय (मध्य) और ज्येष्ठा से उ.भा. तक के 9 नक्षत्र तृतीय (अन्तिम) **'युञ्जा'** कहलाती है।

ऐसा माना जाता है कि–यदि वर एवं कन्या–दोनों के जन्मनक्षत्र प्रथम 'युञ्जा' में पड़ते हों तो कन्या वर से ज्यादा प्रेम करती है; यदि तृतीय 'युञ्जा' में पड़ते हों तो वर कन्या से ज्यादा प्रेम करता है और यदि दोनों के नक्षत्र मध्य युञ्जा में हों तो दोनों की परस्पर प्रगाढ़ प्रीति होती है। इस बारे **'मुहूर्त गणपति'** का यह पद्य है–

"पूर्वभागस्तु रेवत्याः षड्भे आर्द्रादितस्तथा
द्वादशस्त्वपि मध्योऽयं ज्येष्ठातो नवकेऽन्त्यकः।
प्राग्भागे जन्मभं यस्य कन्यायाः वल्लभः पतिः
नृणामपरभागे तु पत्युः कन्या च वल्लभा।।
मध्ये भागे तु दम्पत्योः प्रीतिरुक्ता परस्परम्।"

'ज्योतिर्विदाभरण' आदि अन्य मुहूर्तग्रन्थ भी **'युञ्जा'** के भेदों व फल के बारे में यही मत रखते हैं। **'ज्योतिर्विदाभरण'** की **'मुनिभाव रत्न'** कृत टीका में उद्धृत यह श्लोक भी तीनों युञ्जाओं के फल यही बतलाता है–

**" पूर्वभागयुजिभे पतिःप्रियो योषितामपरभागवर्तिनि ।
सा प्रिया भवति मध्ययोगिनि प्रेम नूनमुभयोः परस्परम्।।"**

शीघ्रबोध का निम्न श्लोक तो इससे कुछ भिन्न अभिप्राय रखता है–

"पूर्वभागे पतिः श्रेष्ठः मध्यभागे च कन्यका।
परभागे च नक्षत्रे द्वयोः प्रीतिर्महीयसी।।"

इस श्लोकानुसार **पूर्व युञ्जा** में कन्या का वर से, **मध्ययुञ्जा** में वर का कन्या से और **अन्तिम युञ्जा** में दोनों का परस्पर प्रागाढ़ प्रेम होता है।

ऐसा लगता है– इस श्लोक में लेखक या पाठक के प्रमाद से यह पाठान्तर बन गया है। इसका वास्तविक रूप यह होना चाहिए–

"पूर्वभागे पतिः श्रेष्ठः परभागे च कन्यका।
मध्यभागे च नक्षत्रे द्वयोः प्रीतिर्महीयसी।।"

ऐसा पाठ स्वीकार करने पर अन्य **'मुहूर्त्त गणपति'**, **'ज्योतिर्विदाभरण'** कार आदि से इसका विरोध नहीं रहेगा।

अपि च–'मुहूर्त्तचिन्तामणि' की मूल लिखित प्रति में **युञ्जा** का उल्लेख नहीं है–ऐसा लिपिसंशोधकों का कहना है। लेकिन इसके मुद्रित कुछ संस्करणों में युञ्जा के बारे में यह पद्य मिलता है–

"पौष्णेश– शाक्रार्द्र– ससूर्यनन्दा पूर्वार्द्धमध्यापरभागयुग्मम्।
भर्ता प्रियः प्राग्युजिभे स्त्रियाः स्यान् मध्ये द्वयोः प्रेम परे प्रिया स्त्री।।"

यहां यह पद्य **युञ्जा** के बारे में यद्यपि **'ज्योतिर्विदाभरण'**कार आदि के मत का ही समर्थन करता है, तथापि इसे विद्वानों ने इस ग्रन्थ में प्रक्षिप्त माना है, क्योंकि हस्तलिखित मूललिपि में अलभ्य होने के साथ–साथ ग्रन्थ में यह अस्थान (कूटप्रसंग से भिन्न स्थान) पर भी समाविष्ट है। **किञ्च–** मुद्रितसंस्करण में इसे पद्यसंख्या भी नहीं दी गई है। इस पद्य की जो संस्कृतटीका हमें मुद्रित संस्करण में मिलती है, वह भी युञ्जा के फल के बारे में भ्रामक है। यहां भ्रान्त टीकाकार ने लिखा है कि– श्लोक में दिए गए तीनों युञ्जाओं के ये नक्षत्र स्त्री–पुरुष–समागमकालीन हैं। इस टीकाकार का यह व्याख्यान **'ज्योतिर्विदाभरण'**कार आदि सभी मुहूर्त्तशास्त्रियों के मत से सर्वथा भिन्न तथा तर्कच्युत होने से तिरस्कार्य है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है– एक ही 'युञ्जा' में उत्पन्न वर–कन्या में पारस्परिक अनुराग तो होता ही है, भले ही वह मात्रा में एक का ज्यादा अथवा दूसरे का कुछ कम किंवा दोनों में वह पर्याप्त (परम) हो। इससे यहं संकेत भी मिलता है कि– भिन्न–भिन्न युञ्जाओं वाले नक्षत्रों में जन्मे वर–कन्या का पारस्परिक अनुराग अन्यथा होगा।

'युञ्जा' को **युजि** और **योग** भी कहा जाता है।

(xi) हां, ग्रहणकाल में भी सूर्य का **दीप्तिबल** 100 ही रहता है, क्योंकि तब भी सूर्य पूर्ण दीप्तिमान् होता है। अन्तर केवल इतना है कि– उस समय वह चन्द्रबिम्ब की आड़ में आने से दिखलाई नहीं पड़ता।

यदि ग्रहण के समय दृगवरोध के कारण सूर्य का दीप्तिबल 100 % से न्यून या शून्य मानने का कोई आग्रह करे तो उसे रात्रि के समय सूर्य का दीप्तिबल हमेशा शून्य मानना होगा। **अपि च–** अन्य चं. मं. आदि ग्रह भी जितने समय तक क्षितिज से नीचे रहेंगे तब तक उनका दीप्तिबल भी हमेशा शून्य मानना होगा। लेकिन यह सिद्धान्त किसी भी दैवज्ञ या नक्षत्रविद् को मान्य नहीं हो सकता।

८. समस्या– 'स्त्रीदूर' और 'नृदूर' में क्या अन्तर है ?

आचार्य (प्रो.) केशवराम शर्मा,
M.A., दर्शनाचार्य, सोलन (हि.प्र.)।

समाधान– दोनों कूट मूलतः एक ही हैं। **'स्त्रीदूर'** कूट में कन्यानक्षत्र से 27 नक्षत्रों को 9–9

नक्षत्रों में विभाजित किया जाता है। यदि वरनक्षत्र कन्यानक्षत्र से प्रथम नौ नक्षत्रों में हो तो **'स्त्रीदूर'** दोष अधिक, यदि तत्परवर्ती नौ नक्षत्रों में हो तो **'स्त्रीदूर'** सामान्य माना जाता है। यदि वर का नक्षत्र शेष (अन्तिम) 9 नक्षत्रों में हो तो **'स्त्रीदूर दोष'** नहीं होता–

" स्त्रीधिष्ण्यतो भे नवके वरस्य चाद्ये तयोर्वैरमथ द्वितीये।
सामान्यमेतच्च वधूविदूरं तस्मात्तृतीये नवके विवाहः।।" –(*वसिष्ठ संहिता*)

अपि च–

" स्त्रीधिष्ण्यादाद्यनवके स्त्रीदूरमतिनिन्दितम्।"– (*नारद संहिता*)

'नृदूर' कूट तब होता है, जब वरनक्षत्र कन्या के नक्षत्र से परवर्त्ती यानी द्वितीय हो। **उदाहरण के लिए–** कन्यानक्षत्र **'भरणी'** और वरनक्षत्र **'कृत्तिका'** होने से **'नृदूर'** दोष होगा–

" भामिनी जन्मनक्षत्राद्द्वितीयं पतिजन्मभम्।
न शुभं भर्तृनाशाय कथितं ब्रह्मयामले।।" –(*डामरसंग्रह*)

ये उक्त दोनों ही कूट अष्टकूटों की परम्परा में नहीं लिए गए हैं। जबकि **नारद, वसिष्ठ, गर्ग** आदि ने इन्हें अपने कूटों में समाविष्ट किया है। **'मुहूर्त्तचिन्तामणि'** आदि ग्रन्थ भी इन्हें कूटों में समाविष्ट नहीं करते।

उपरोक्त **'स्त्रीदूर'** और **'नृदूर'** कूटों की परिभाषाओं से स्पष्ट है कि– वर का नक्षत्र कन्या के नक्षत्र से परवर्ती होना शुभ नहीं। यदि वरनक्षत्र कन्यानक्षत्र से सर्वथा निरन्तर आगे है तो वह सर्वाधिक अशुभ है। वह कन्यानक्षत्र से जितना अधिक दूर होगा, उतना ही यह दोष उत्तरोत्तर अल्प होता जाएगा। अतः हम कह सकते हैं कि– **"परम स्त्रीदूर"** दोष ही **'नृदूर दोष'** है।

'स्त्रीदूर' को **'स्त्रीदीर्घ'** भी कहते हैं।

समस्या– सूर्य की सूक्ष्म परमक्रान्ति वर्तमान में क्या है और यह किस अनुपात से घट या बढ़ रही है ?

श्री मुकेश कुमार जैन,
हिण्डौन सिटी (राज.)।

समाधान– इस वर्ष (सन् 2009 A.D.) में सूर्य की सूक्ष्म परमक्रान्ति 23° 26′ 17″.19 है। सूर्य की परमक्रान्ति इन दिनों प्रतिवर्ष 0″.4684 (=28 प्रतिविकला) कम हो रही है। इष्टवर्षीय सूक्ष्मतम सूर्य की परमक्रान्ति जानने का सूत्र यह है–

इष्टवर्षीय परमक्रान्ति = 23°-26′-21″·41– 0″·46845 व– 0″·000059 व² + 0″·0000181 व³

(यहां 23°-26′-21″·41 सन् 2000 A.D. की सूक्ष्म परमक्रान्ति और व = सन् 2000 A.D. से बीते वर्ष) ।

यदि 2000 A.D. से पूर्ववर्ती किसी वर्ष की सूर्य की सूक्ष्म परमक्रान्ति जाननी हो तो सूत्र इस प्रकार होगा–

इष्टवर्षीय परमक्रान्ति = 23°-26′-21″·41 + 0″·46845 व+ 0″·000059 व² – 0″·0000181 व³

(यहां 23°-26′-21″·41 सन् 2000 A.D. की सूक्ष्म परमक्रान्ति तथा व = सन् 2000 A.D. से पूर्ववर्ती वर्षसंख्या।)

प्रसंगवश यहां यह भी बतलाना आवश्यक है कि– सूर्यसिद्धान्त आदि हमारे प्राचीन सिद्धान्त एवं करणग्रन्थों में तो सूर्य की परमक्रान्ति स्थायी रूप से 24° ही मानी गई है, जो वर्तमान में वास्तविक परमक्रान्ति से लगभग 34′ अधिक है। अतः स्पष्ट है– इन ग्रन्थों से साधित सूर्योदयास्त, लग्न आदि पूर्णतः शुद्ध नहीं हो सकते।

[विस्तृत विवेचन के लिए पृ **287** पर दिया गया **सूर्य की परमक्रान्ति** लेख पढ़ें।]

****

एकादशी व्रत-निर्णय

एकादशी व्रत को यदि **'व्रतराज'** कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस व्रत के माहात्म्यवर्णन से हमारे **पुराण** एवं अन्य **धर्मग्रन्थ** भरे पड़े हैं। धर्मग्रन्थों में एकादशी के **उपवास** का भारी माहात्म्य लिखा है। एकादशी के दिन अन्नग्रहण करने वाले को **महापापी** बतलाया गया है। कहा गया है कि– इस दिन अन्न में सभी पाप निवास करते हैं, अतः एकादशी में भोजन करने वाला व्यक्ति महापापों का भोक्ता होता है। इस दिन भोजन करने वाले व्यक्ति को मातृहत्या, पितृहत्या, गुरुहत्या एवं भ्रातृहत्या का पाप लगता है। इस दिन व्रत न करने वाले व्यक्ति को **''रौरव''** नरक प्राप्त होता है।

इस व्रत को **'नित्य'** एवं **'काम्य'**– दोनों श्रेणियों में रखा गया है। इस व्रत के समान पापों से सर्वथा मुक्ति दिलाने वाला कोई दूसरा विधान नहीं है। यह व्रत स्वर्ग, अपवर्ग, राज्य, वैभव, पुत्र, स्त्री एवं आरोग्य–सब कुछ देता है। जो व्यक्ति **विष्णुसायुज्य** चाहता है, भवार्णव तैरना चाहता है, ऐहलौकिक और पारलौकिक किसी भी ईप्सा की पूर्ति चाहता है, उसे शास्त्रों ने दोनों (कृष्ण एवं शुक्ल) पक्षों की एकादशियों में उपवास रखने का परामर्श दिया है।

स्कन्द, विष्णु, कूर्म आदि पुराणों में इस व्रत का अनुपम माहात्म्य बार–बार दोहराया मिलता है। 8 वर्ष की आयु से अस्सी वर्ष की आयु तक इस व्रत को **'विष्णुप्रसादार्थ'** अनुष्ठित करने के लिए पुराणों का आदेश है। उनका कहना है– वयोजन्य शैथिल्य एवं रोग आदि के कारण असामर्थ्य होने पर भी इस व्रत को **'एकभक्त'** या **'नक्त'** के रूप में आचरण करते रहना चाहिए।

इस व्रत का माहात्म्य जितना विशाल है, इसकी तिथि के निर्धारण में शास्त्रकारों के मत –मतान्तर भी उससे कम नहीं हैं। **एकादशी व्रततिथि** के निर्णय के लिए **स्कन्द, कूर्म, पद्म** आदि पुराणों में तो भारी विचारविमर्श है ही, **कालमाधव, पुरुषार्थचिन्तामणि, निर्णयसिन्धु** आदि निबन्धग्रन्थों में भी इस व्रत की तिथि के ऐकमत्येन निर्धारण के लिए **तुमुल** शास्त्रार्थ हमें देखने को मिलता है, जिससे अन्य सभी व्रतों की अपेक्षा इस व्रत के प्रतिपादन नें इन ग्रन्थों के सर्वाधिक भाग को आत्मसात् किया हुआ है। यदि वर्ष के सभी व्रत–पर्वों के निर्धारणार्थ किसी निबन्धग्रन्थ में, मान लीजिए, 200 पृष्ठ हैं, तो समझ लीजिए उनमें से 30–40 पृष्ठ तो केवल एकादशी व्रत के ही निर्धारणार्थ होंगे। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि– इस व्रत की तिथि के निर्णय के बारे में हमारे पुराणों तथा धर्माचार्यों में मतभेद की कितनी विशाल परम्परा रही है। इस उलझी मतभेदपरम्परा को **माधव** आदि विद्वान् तार्किकों ने बुद्धिकौशल से न्यायेन समन्वित करते हुए सुलझाकर धार्मिकों का धर्ममार्ग प्रशस्त कर दिया है।

यहां मैं **'कालमाधव'** आदि निबन्धग्रन्थों में दिए गए लम्बे विकट वाद–विवादों को छोड़कर सारांश के रूप में **'एकादशी व्रत का निर्णयप्रकार'** अत्यन्त सरल, सुबोध शैली में पाठकों के लिए दे रहा हूं। मैं समझता हूं –एकादशी व्रत की तिथि के निर्णय का सामान्यजन के लिए भी इस जैसा सुबोध रूप आपको अ. ''त्र कहीं नहीं मिलेगा। यह मेरी पुस्तक **'व्रत–पर्व विवेक'** से उद्धृत है।

एकादशी–व्रततिथि–निर्णय का अत्यन्त सरल, सुगम प्रकार

एकादशी व्रत प्रत्येक पक्ष की एकादशी में **'स्मार्त्त'** एवं **'वैष्णव'** सम्प्रदाय के लोगों द्वारा अपने–अपने सम्प्रदायानुसारी सिद्धान्तों के आधार पर निर्णीत दिन में किया जाता है।

प्रत्येक पक्ष की एकादशी का नाम भिन्न-भिन्न है, जो इसप्रकार है-

24 पक्षों की एकादशियों के नाम							
चैत्र शु.	कामदा	आषा. शु.	देवशयनी	आश्वि.शु.	पापां (पाशा)कुशा	पौष शु.	पुत्रदा
वैशा. कृ.	वरुथिनी	श्राव. कृ.	कामदा (कामिका)	कार्त्ति.कृ.	रमा	माघ कृ.	षट्तिला
वैशा. शु.	मोहिनी	श्राव. शु.	पवित्रा	कार्त्ति.शु.	देवप्रबोधिनी	माघ शु.	जया
ज्ये. कृ.	अपरा	भाद्र. कृ.	अजा	मार्ग. कृ.	उत्पन्ना	फाल्गु.कृ.	विजया
ज्ये. शु.	निर्जला	भाद्र. शु.	पद्मा	मार्ग. शु.	मोक्षदा	फाल्गु.शु.	आमला (आमलकी)
आषा.कृ.	योगिनी	आश्वि. कृ.	इन्दिरा	पौष कृ.	सफला	चैत्र कृ.	पापमोचिनी

अधिकमास के दोनों (शुक्ल / कृष्ण) पक्षों की एकादशियों का नाम **'पुरुषोत्तमा'** होता है।

स्मार्त्त-वैष्णव एकादशी व्रत

स्मार्त्त एवं वैष्णव⊙ सम्प्रदायों के अनुसार एकादशी व्रत के तिथिनिर्णय-नियम पृथक्-पृथक् हैं, जिन्हें दो भागों में बांटा जा सकता है- प्रथम निर्णय-नियम, जिसे **'सामान्य नियम'**◈ कहा जा सकता है, वहां लागू होता है, जहां एकादशी या द्वादशी का क्षय या वृद्धि घटित न हो। इस 'सामान्य नियम' को इन तीन भागों में विभाजित किया गया है-

(i) 'अरुणोदये दशमीविद्धा एकादशी' नियम।

(ii) 'सूर्योदये दशमीविद्धा एकादशी' नियम।

(iii) 'शुद्धा (अरुणोदय और सूर्योदय-दोनों कालों में दशमी से अविद्धा) एकादशी' नियम।

द्वितीय निर्णय-नियम, जिसे **'विशेष नियम'** कहा जा सकता है, वहां लागू होता है, जहां एकादशी या द्वादशी का क्षय या वृद्धि घटित हो। इस **'विशेष नियम'**◈ को इन छः भागों में बांटा गया है-

(i) 'एकादशीवृद्धि-द्वादशीक्षय' नियम।

⊙ *'वैष्णव' शब्द का प्रयोग धर्मशास्त्रकारों ने यतियों, संन्यासियों के लिए किया है। जिन लोगों ने किसी वैष्णव संन्यासी गुरु से वैखानस, नारद, पंचरात्रादि आगमोक्त विधि से दीक्षा ली है, वे भी वैष्णव हैं। कुल-परम्परया जो स्वयं को वैष्णव सम्प्रदाय में दीक्षित मानते चले आ रहे हैं, वे भी वैष्णव माने जाते हैं।*

ध्यान रहे-वैष्णवों के एकादशी व्रत वाले दिन ही विधवाओं का भी एकादशी व्रत माना गया है, क्योंकि विधवाओं को शास्त्रकारों ने संन्यासियों की श्रेणी में माना है।

'स्मार्त' शब्द का प्रयोग शास्त्रकारों ने गृहस्थियों के लिए किया है। अतः सभी गृहस्थी लोग, जो वैष्णव सम्प्रदाय में दीक्षित नहीं हैं, वे स्मार्त कहलाते हैं। पश्चिमोत्तर भारत (पंजाब, जम्मू-कास्मीर, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान आदि) के लगभग सभी गृहस्थी स्मार्त हैं।

◈ *तीन 'सामान्य नियम' एवं छः विशेष नियमों में एकादशी-व्रतनिर्णय का यह विभाजन मेरी अपनी कल्पना है, जिसमें एकादशी-व्रतनिर्णय के विकट वाद-विवाद में उलझे मीमांसक धर्मशास्त्रियों के तर्क-वितर्कों के सिद्धान्त (अन्तिम निर्णय) का सार सरलरूप में संगृहीत है।*

(ii) 'द्वादशीवृद्धि' नियम।

(iii) 'एकादशीवृद्धि' नियम।

(iv) 'द्वादशीक्षय'' नियम।

(v) 'एकादशीक्षय– द्वादशीवृद्धि' नियम।

(vi) 'एकादशीक्षय' नियम।

ध्यान रहे– इन छः विशेष नियमों में से अनेक नियम उपरोक्त सामान्य नियमों के अनेकत्र अपवाद हैं।

इसप्रकार एकादशी–व्रतनिर्णय के ये **तीन सामान्य** और **छः विशेष**– इस तरह **कुल नौ नियम** हैं। इनका सोदाहरण सप्रमाण स्पष्टीकरण नीचे दिया जा रहा है।

पहिले सामान्य नियम लेते हैं–

(i) 'अरुणोदये दशमीविद्धा एकादशी' नियम -- यदि दशमी अरुणोदयकाल* को स्पर्श कर रही हो (यानी दशमी का समाप्तिकाल 56 घड़ी से अधिक हो) तो दशमी द्वारा अरुणोदयवेध माना जाता है। इस स्थिति में वैष्णव दूसरे दिन त्रयोदशीयुता द्वादशी के दिन व्रत करते हैं। स्मार्त्त तो उसी दिन द्वादशीयुता एकादशी में व्रत कर लेते हैं, अर्थात् दशमी द्वारा अरुणोदयवेध स्मार्त्तों को त्याज्य नहीं है, वैष्णवों को त्याज्य है।

उदाहरण–

वार	तिथि	घ.	प.	
शनि	10	56	05	
रवि	11	58	07	स्मार्त्त व्रत
चंद्र	12	59	00	वैष्णव व्रत

यहां प्रमाणार्थ **'गरुड़पुराण'** का यह वाक्य है–

दशमीशेषसंयुक्तो यदि स्यादरुणोदयः।
नैवोपोष्यं वैष्णवेन तद्दिनैकादशीव्रतम्।।

(ii) 'सूर्योदये दशमीविद्धा एकादशी' नियम-- यदि दशमी सूर्योदयानन्तर तनिक भी विद्यमान हो तो दशमी द्वारा सूर्योदयवेध माना जाता है। इस स्थिति में स्मार्त्त एवं वैष्णव-- दोनों उस दिन व्रत नहीं करते, तब वे दूसरे दिन द्वादशीयुता एकादशी में व्रत करते हैं, अर्थात् दशमी द्वारा सूर्योदयवेध दोनों सम्प्रदायों को अग्राह्य है।

उदाहरण–

वार	तिथि	घ.	प.	
चन्द्र	10	0	10	
मंगल	11	2	20	स्मार्त्त– वैष्णव व्रत
बुध	12	5	30	

---

* *सूर्योदय से पूर्ववर्त्ती 4 घड़ियों की कालावधि को 'अरुणोदयकाल' कहा जाता है।*

यहां **'कण्व'** का यह वचन प्रमाण है–

उदयोपरि विद्धा तु दशम्यैकादशी यदि।
दानवेभ्यःप्रीणनार्थं दत्तवान् पाकशासनः।।

(iii) 'शुद्धा एकादशी' नियम– यदि दशमी द्वारा अरुणोदय और सूर्योदय– दोनों का वेध न हो (यानी दशमी का समाप्तिकाल 56 घड़ी से ज्यादा न हो) तो एकादशी शुद्धा मानी जाती है। शुद्धा एकादशी की स्थिति में स्मार्त्त एवं वैष्णव दोनों उसी दिन(द्वादशीयुता एकादशी वाले दिन ही) व्रत करते हैं।

उदाहरण–

वार	तिथि	घ. प.	
गुरु	10	55 59	
शुक्र	11	57 00	स्मार्त्त– वैष्णव व्रत
शनि	12	58 30	

यहां दशमी द्वारा अरुणोदय एवं सूर्योदय–दोनों वेधों के अभाव में स्मार्त्त एवं वैष्णव–दोनों का उसी दिन व्रत उपरोक्त दो सामान्य नियमों में प्रदर्शित प्रमाणों से सिद्ध है।

यह तीन सामान्य नियमों का स्पष्टीकरण है। अब आगे छः **'विशेष नियमों'** का स्पष्टीकरण करते हैं–

(i) 'एकादशीवृद्धि–द्वादशीक्षय' नियम– एकादशी की वृद्धि होने के साथ ही द्वादशी का क्षय भी हो तो स्मार्त्त लोग 11, 12 और 13– इन तिथियों से युक्त दिन में व्रत नहीं करते। वे षष्टि– घट्यात्मक एकादशी के दिन व्रत करते हैं। लेकिन यहां वैष्णव लोग तो 11, 12 और 13 तिथियों से युक्त दिन में ही व्रत करते हैं।

ध्यान रहे– यह नियम दशमी द्वारा अरुणोदय के वेध और अवेध–दोनों स्थितियों में लागू होता है।

उदाहरण–

वार	तिथि	घ. प.	
शुक्र	10	55 40 / 56 40	
शनि	11	60 00	स्मार्त्त व्रत
रवि	11 12	1 00 59 30	वैष्णव व्रत

'कूर्मपुराण' का यह वचन स्पष्ट करता है कि– 11, 12 और 13 तिथियों से मिश्रित दिन में पुत्र–पौत्रों वाले गृहस्थी (स्मार्त्त) को व्रत नहीं करना चाहिए–

एकादशी द्वादशी च रात्रिशेषे त्रयोदशी।
उपवासं न कुर्वीत पुत्र–पौत्रसमन्वितः।।

यह वाक्य यहां स्मार्त्तों को षष्टिघट्यात्मक एकादशी तिथि वाले दिन और प्रकारान्तर से 11, 12,

13 तिथियों से मिश्रित दिन में वैष्णवों को व्रत करने का निर्देश करता है। इस स्थिति में 11, 12, 13 तिथियों से मिश्रित दिन में व्रत करने का निर्देश करने वाला यह वाक्य निबन्धकारों द्वारा उद्धृत किया जाता है, जिसे वैष्णवों के लिए माना गया है–

एकादशी द्वादशी च रात्रिशेषे त्रयोदशी।
त्रिभिः मिश्रा तिथिःप्रोक्ता सर्वपापहरा सदा।।

(ii) 'द्वादशी वृद्धि' नियम– द्वादशी की वृद्धि होने पर स्मार्त्त द्वादशीयुता एकादशी के दिन और वैष्णव षष्टिघट्यात्मक द्वादशी के दिन व्रत करते हैं। ध्यान रहे– दशमी द्वारा अरुणोदय के वेध और अवेध–दोनों स्थितियों में यह नियम भी समानरूपेण चरितार्थ होता है।

उदाहरण–

वार	तिथि	घ. प.	
मंगल	10	55 00 / 57 00	
बुध	11	59 00	स्मार्त्त व्रत
गुरु	12	60 00	वैष्णव व्रत
शुक्र	12	2 00	

इस स्थिति में **'माधव'** और **'हेमाद्रि'** एकमत नहीं हैं। यहां **माधव** के मतानुसार स्मार्त्तों का व्रत द्वादशीयुता एकादशी के दिन और वैष्णवों का षष्टिघट्यात्मक द्वादशी के दिन होना चाहिए, जबकि **हेमाद्रि** के मतानुसार स्मार्त्तों का व्रत भी वैष्णवों के व्रत के साथ षष्टिघट्यात्मक द्वादशी के दिन ही होना चाहिए। लेकिन यहां माधवमत ही बहुसम्मत है।

(iii) 'एकादशीवृद्धि' नियम– एकादशी की वृद्धि होने पर स्मार्त्त एवं वैष्णव– दोनों द्वादशीयुता एकादशी के दिन ही व्रत करते हैं। यह नियम भी दशमी द्वारा अरुणोदय का वेध एवं अवेध– दोनों स्थितियों में समान है।

उदाहरण–

वार	तिथि	घ. प.	
बुध	10	55 00 / 56 10	
गुरु	11	60 00	
शुक्र	11	2 00	स्मार्त्त–वैष्णव व्रत
शनि	12	7 00	

इस नियम का समर्थन **'नारद'** का यह वाक्य करता है–

सम्पूर्णैकादशी यत्र प्रभाते पुनरेव सा।
सर्वैरेवोत्तरा कार्या परतो द्वादशी यदि।।

अर्थात् पहिले दिन यदि षष्टिघट्यात्मक एकादशी हो और दूसरे दिन भी वह एकादशी विद्यमान हो, तब सभी (स्मार्त्तों और वैष्णवों) को दूसरे दिन व्रत करना चाहिए, बशर्ते कि वहां द्वादशी का क्षय न हुआ हो। लेकिन **'स्कन्द'** का मत है कि– यहां (एकादशी की वृद्धि होने पर) पहिले दिन षष्टिघट्यात्मक एकादशी

के दिन स्मार्त्तों एवं दूसरे दिन वैष्णवों को व्रत करना चाहिए। यहां उनका वचन यह है–

प्रथमेऽहनि सम्पूर्णा व्याप्याहोरात्र–संयुता।
द्वादश्यां च तथा तात दृश्यते पुनरेव च।।
पूर्वा कार्या गृहस्थैस्तु यतिभिश्चोत्तरा विभो।।

यहां **'नारद'** के मत को ही बहुमत प्राप्त है।

(iv) **'द्वादशीक्षय' नियम** :– द्वादशी का क्षय हो जाने पर स्मार्त्तों को दशमीयुता एवं वैष्णवों को द्वादशी–त्रयोदशीयुता एकादशी के दिन व्रत करना चाहिए।

उदाहरण–

वार	तिथि	घ. प.	
गुरु	10	5 00	स्मार्त्त व्रत
शुक्र	11	3 00	वैष्णव व्रत
	12	59 00	

यहां **'पद्मपुराण'** का वाक्य है–

एकादशी द्वादशी च रात्रिशेषे त्रयोदशी।
त्र्यहःस्पृक् तदहोरात्रं नोपोष्यं तत्सुतार्थिभिः।।

इस वाक्यानुसार 11, 12, 13 तिथियों से मिश्रित दिन में स्मार्त्तों (गृहस्थियों) के व्रत का निषेध और वैष्णवों के व्रत का विधान है। अतः यहां **पद्मपुराण** का यह वाक्य प्रकारान्तरेण स्मार्त्तों को सूर्योदयवेधवती दशमी के दिन एकादशीव्रत करने की ओर संकेत करता है। इसी स्थिति में दशमीमिश्रित एकादशी में व्रत करने का स्पष्ट निर्देश **वृद्धवसिष्ठ** के इस वाक्य में भी है–

द्वादशी स्वल्पमल्पापि यदि न स्यात्परेऽहनि।
दशमी–मिश्रिता कार्या महापातकनाशिनी।।

ध्यान दें– यहां **वृद्धवसिष्ठ** के इस विशेष वचनानुसार सूर्योदयवेधवती दशमी के दिन स्मार्त्तों का व्रत निर्धारित किया गया है, जोकि उपरोक्त **"उदयोपरि विद्धा तु............"**–इस सामान्य नियमानुसार निःसन्देह निषिद्ध है। लेकिन शास्त्रों द्वारा स्मार्त्तों के लिए त्रयोदशी में पारणा भी सर्वथा वर्जित मानी गई है। यदि इस (द्वादशीक्षय की) स्थिति में स्मार्त्तों का व्रत भी वैष्णवों के साथ कर दिया जाए तो स्मार्त्तों को व्रत की पारणा त्रयोदशी में करने की स्थिति आ पड़ेगी। अतः अन्य विकल्प के अभाव में स्मार्त्तों को दशमीमिश्रिता एकादशी में ही व्रत करने की अनुमति दी गई है। **किंच–** इस प्रकार की स्थिति में जब स्मार्त्तों को त्रयोदशी में पारणा करने की नौबत आ पड़े तब दशमीमिश्रिता एकादशी में ही व्रत करने की अनुमति **ऋष्यशृंग** ने भी इस वाक्य में स्पष्ट दी है–

पारणाहे न लभ्येत द्वादशी कलयापि चेत्।
तदानीं दशमीविद्धाऽप्युपोष्यैकादशी तिथिः।।

(v) **'एकादशीक्षय– द्वादशीवृद्धि' नियम** :– यदि एकादशी का क्षय और साथ ही द्वादशी की

वृद्धि भी हो तो स्मार्त्त और वैष्णव दोनों षष्टिघट्यात्मक द्वादशी के दिन व्रत करते हैं–

उदाहरण–

वार	तिथि	घ. प.	
शुक्र	10	1 00	
	11	58 00	
शनि	12	60 00	स्मार्त्त–वैष्णव व्रत
रवि	12	1 00	

यहां **व्यास** का यह वाक्य है–

एकादशी यदा लुप्ता परतो द्वादशी भवेत्।
उपोष्या द्वादशी तत्र यदीच्छेत्परमां गतिम्।।

वैसे, दशमी द्वारा सूर्योदयवेध के कारण उपरोक्त सामान्य नियमानुसार भी **व्यास** का यह निर्देश संगत है।

(vi) 'एकादशीक्षय' नियम :– यदि एकादशी का क्षय हुआ हो तो स्मार्त्त दशमीयुता एकादशी के दिन और वैष्णव त्रयोदशीयुता द्वादशी के दिन व्रत करते हैं।

उदाहरण–

वार	तिथि	घ. प.	
शनि	10	2 00	स्मार्त्त व्रत
	11	58 00	
रवि	12	55 00	वैष्णव व्रत

ध्यान दें– यहां स्मार्त्तों के व्रत को वैष्णवों के व्रत के साथ त्रयोदशीयुता द्वादशी के दिन नहीं किया जा सकता। क्योंकि, ऐसा करने पर उनकी पारणा त्रयोदशी में पड़ जाती है, जोकि सर्वथा निषिद्ध है। अतः इस स्थिति में स्मार्त्तव्रत दशमीमिश्रिता एकादशी में ही होगा। प्रमाणार्थ **ऋष्यश्रृंग** का उपरोक्त वाक्य **"पारणाहे न लभ्येत........ दशमीविद्धाऽप्युपोष्यैकादशी तिथिः।।"**– देखिए। **स्पष्ट है** – यहां उपरोक्त नियम **(iv)** वाली स्थिति है।

यह स्मार्त्तों, वैष्णवों के एकादशी व्रत की तिथि से सम्बद्ध मतमतान्तरों का मीमांसक धर्मशास्त्रियों द्वारा समन्वित निर्णय है, जिसे सुव्यवस्थित कर यथाशक्य सरलतम शैली में उपस्थापित किया गया है। मैं समझता हूं– एकादशीव्रत की तिथि के सरलतया सद्यःनिर्धारण में यह विवेचन पर्याप्त सक्षम है।

******

मुहूर्त्तशोधन में प्रादेशिकता

लेखक– प्रियव्रत शर्मा

[अनेक शुभकृत्यों के मुहूर्तों का निर्धारण हमारे मुहूर्त्तग्रन्थों में जनपदों (प्रान्तों, प्रदेशों) के आधार पर किया मिलता है। इन जनपदों के नाम, जो इन मुहूर्त्तग्रन्थों में मिलते हैं; अत्यन्त प्राचीनकालीन हैं, जिससे आजकल भूगोल पर इनकी यथार्थ स्थिति ढूंढ निकालना दैवज्ञों के लिए भारी समस्या है। क्या इस समस्या का कोई समाधान है ?– इस लेख में पढ़िए।]

मुहूर्त्तग्रन्थों में अनेक मूहूर्तों के विधि–निषेधों का प्रादेशिकता के आधार पर निर्णय मिलता है। ऐसे प्रसंगों में अनेक प्राचीन जनपदों (प्रदेशों) के नाम वहां हमें लिखे मिलते हैं। **जैसे**– अंग, बंग, कलिंग, उत्कल, मालवक, अहल्य, जांगल, यामुन, विद्रुम, गौड़, कुरु, वाल्हीक, पांचाल, अरिभीण, बलि,अर्बुद, मरु, विदर्भ, मगध, हूण, खश, त्रिपुष्कर .... आदि–आदि। उदाहरण के तौर पर नीचे कुछ ऐसे पद्य उद्धृत कर रहे हैं, जिनमें मुहूर्त्तविशेषों का विधान/निषेध ऐसे ही जनपदों के लिए किया गया है। देखिए–

"लत्तां मालवके देशे पातञ्च कुरु– जांगले।
एकार्गलञ्च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्।।
उपग्रहर्क्षं कुरु–वाल्हीकेषु कलिंग–बंगेषु च पातितं भम्।
सौराष्ट्र–शाल्वे च तु लत्तितं भं त्यजेत्तु विद्धं किल सर्वदेशे।।"

अपि च–

"तिथयो मासशून्याश्च शून्यलग्नानि यान्यपि।
मध्यदेशे विवर्ज्यानि न दूष्याणीतरेषु च।।
युतिदोषो भवेद् गौड़े जामित्रस्य च यामुने।
मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः।।"

इन श्लोकों में निर्दिष्ट जनपदों की ये मालवक, जांगल, वाल्हीक आदि संज्ञाएं शताब्दियों/सहस्राब्दियों पुरानी हैं। इनमें से अधिकतर जनपदों के आधुनिक नाम हमें ज्ञात नहीं हैं। इनकी यथार्थ सीमाएं तो **'इदमित्थम्'** निर्णीत करना बिल्कुल असम्भव है। अनेक राजनैतिक एवं अन्य कारणों से प्रत्येक प्रान्त/जनपद की सीमाएं बार–बार परिवर्तित, परिवर्धित और संकुचित होती रही हैं। इनमें से अनेक जनपद तो ऐसे हैं, जिनकी भूगोल पर लगभग स्थिति भी भूगोलशास्त्र के विशेषज्ञों को भी स्पष्ट नहीं हैं। संस्कृत के प्रामाणिक प्राचीन **'कोश'** भी इन जनपदों (प्रदेशों) को परिभाषित करने में सर्वथा असमर्थ सिद्ध हुए हैं। Monier Williams आदि द्वारा आधुनिक शोधपूर्ण संस्कृतमहाकोश भी इन जनपदों (प्रदेशों) की सीमाओं को पूरी तरह (स्पष्टता से) परिभाषित करने में सक्षम नहीं हैं। हमारे इन मुहूर्त–संहिता ग्रन्थों के प्राचीन एवं आधुनिक व्याख्याकार भी इन प्रान्तों/जनपदों की भूगोल पर यथार्थ स्थिति को स्पष्ट करने में सफल नहीं हो सके। **जैसे**– हूण, बंग, खश, त्रिपुष्कर प्रदेशों के बारे में **'पीयूषधारा'**कार ने " **हूण,–बंगौ प्राच्यदेशौ, खशो देश उत्तरस्यां, त्रिपुष्करः त्रिपुष्कराख्यो देशः**"– कहकर अपना पीछा छुड़ा लिया। इतने संकेतमात्र से पाठक इन प्रदेशों/ जनपदों की आधुनिक–भौगोलिक स्थिति के बारे में क्या–कुछ समझ सकेगा– यह स्पष्ट है। **'ज्योतिर्विदाभरण', 'पूर्वकालामृत', 'मुहूर्त्त मार्त्तण्ड'** आदि की टीकाओं से भी इन मुहूर्त्तग्रन्थों में चर्चित इन जनपदों का कुछ भी अता–पता हमें नहीं मिलता। वहां भी इन जनपदों के नामों को लगभग यथावत् उद्धृत कर श्लोकव्याख्या कर दी गई है। जहां कहीं भी इन जनपदों की स्थिति को कुछ संहिताकारों ने स्पष्ट करने का प्रयास किया है, वहां भी तात्कालिक (प्राचीन) जनपदों के सापेक्ष इन्हें स्पष्ट करने के प्रयत्न के कारण अस्पष्टताएं समाप्त नहीं हुई हैं। क्योंकि– जिन जनपद, उपजनपदों के सापेक्ष वे इन जनपदों की स्थिति–स्वरूप का स्पष्टीकरण करना चाहते हैं, वे जनपद, उपजनपद भी आज के सन्दर्भ में उतने ही अस्पष्ट हैं। **देखिए– 'वराहसंहिता'** में **'मध्यदेश'** इस प्रकार परिभाषित किया गया है–

**"मद्रारिमेद–माण्डव्य–शाल्वनीपोज्जिहान– संख्यानाः।
मरुवत्सघोष–यामुन– सारस्वत–मत्स्य–माध्यमिकाः।।**

माथुर– कोप– ज्योतिषधर्मारण्यानि सूरसेनाश्च।
गौर्ग्रीवौ– दैहिकपंचगुडाश्वत्थ पांचालाः।।
साकेतकंक–कुरु–कालकोटिकुकुराश्च पारियात्रनगः।
औदुम्बर– कापिष्ठक– गजाह्वयाश्चेति मध्यमिदम्।।''

देखिए– मध्यदेश की स्थिति बतलाते हुए **वराहमिहिर** ने जिन उपजनपदों के आधार पर **'मध्यदेश'** की स्थिति या स्वरूप को समझाने का प्रयास किया है, वे लगभग सभी आज के दैवज्ञ के लिए किसी भी प्रकार का अपेक्षित Clue(अता–पता) देने में सर्वथा असमर्थ हैं।

हां, इन जनपदों के अनेक नाम ऐसे भी हैं, जिनकी भौगोलिक स्थिति हमें ज्ञात अवश्य है, लेकिन वह भी आसन्नमान से। इनमें अंग, बंग, कलिंग, विदर्भ, उत्कल, सौराष्ट्र आदि आते हैं। लेकिन इनका केन्द्रस्थल तथा इनके केन्द्रस्थल से पूर्व, पश्चिम आदि दिशाओं में इनका **'क्रोश योजनात्मक'** विस्तार बिल्कुल भी ज्ञात नहीं है।

किञ्च– मुहूर्त्तग्रन्थों मे अनेकत्र नदियों के तटवर्ती प्रदेशों को भी कालविशेष में शुभकृत्यों के लिए ग्राह्य या निषिद्ध लिखा है। **जैसे**–

**''विपाशेरावती तीरे शुतुद्रयाश्च त्रिपुष्करे।
विवाहादि शुभं नेष्टं होलिका प्राग्दिनाष्टकम्।।''**– *(मुहूर्त्त चिन्तामणि)*

ऐसे निर्देशों का पालन भी मौहूर्त्तिकों के लिए समस्या है। क्योंकि, नदीतट कितने क्रोश या योजन तक माना जाए– यह भी इन ग्रन्थों में परिभाषित नहीं है। **अपि च**– इन नदियों के धारामुख यथेच्छ अनेक दिशाओं में समय–समय पर बदलते रहे हैं, जिससे इनके तटवर्ती प्रदेश अब वे नहीं रहे, जो इन मुहूर्त्तग्रन्थों के निर्माणकाल में शताब्दयों पूर्व थे। अतः मूलस्थान से पचासों योजन इधर–उधर विचलित इन नदीतटों के अनुसार शास्त्रोक्त इन विधि–निषेधों का पालन कहां तक संगत होगा ? इस अनिश्चय की स्थिति में प्रादेशिकता के आधार पर मुहूर्त्तनिर्णय कर पाना मुहूर्त्तकार के लिए भारी समस्या है।

ऐसे अज्ञातस्थिति विस्तार वाले प्राचीन जनपदों/नदी/नदों के आधार पर मुहूर्त्तसम्बन्धी विधि–निषेधों का दृढ़ता से पालन अब एक असमाधेय समस्या है। यह समस्या आधुनिक ही नहीं, अपितु यह पर्याप्त प्राचीनकाल से मुहूर्त्तशोधकों को परेशान करती चली आ रही है। इसका सीधा समाधान असम्भव जानकर कुशल दैवज्ञ विद्वानों ने इसका अन्यथा समाधान दैवज्ञों को समझाया है। उनका कहना है– क्योंकि, हूण, खश, अरिमीण, वाल्हीक आदि प्राचीन प्रदेशों की यथार्थ स्थिति और सीमाएं अब **'इदमित्थम्'** निर्धारित नहीं की जा सकतीं, अतः दैवज्ञ को तत्तत्स्थानीय परम्पराओं के अनुसार ही मुहूर्त्तशास्त्रगत विधि–निषेधों का यथाशक्य प्रयोग करते हुए शुभकृत्यों के मुहूर्त्तों का निर्णय करना चाहिए। उन्होंने तो यहां तक भी कहा है कि– यदि कभी शास्त्रनिर्णय देशाचार से विलग हो तो वहां देशाचार को ही महत्त्व दिया जाए। इस विषय में **'वराहमिहिर'** का यह वचन है–

**''देशाचारस्तावदादौ विचिन्त्यः देशे–देशे या स्थितिः सैव कार्या।
लोकद्विष्टं पण्डिताः वर्जयन्ति दैवज्ञोऽतो लोकमार्गेण यायात्।।''**

'ज्योतिर्विदामरण' कार तो लोक (परंपरा) धर्म को वेद, पुराण और स्मृतिप्रतिपादित धर्म से भी अधिक मान्य बतलाते हैं, क्योंकि लोकाचार शास्त्रीय आचार से अधिक बलवत्तर है–

**''पुराणवेदस्मृतिधर्मतो बहिः धर्मोऽयमत्र प्रतिपादनीयः।
शास्त्रप्रमाणादपि लोकधर्मः प्रमाणमेतद्बलवत्तदादरात्।।''**

इससे स्पष्ट है– 'ज्योतिर्विदामरण' कार आदि आचार्य देशाचार के विरुद्ध मुहूर्त्तसिद्धान्तों को मान्यता देने के पक्ष में कदापि नहीं हैं।

इस प्रकार मुहूर्त्तों के निर्धारण में उत्पन्न होने वाली प्रदेशानुसारी एवं अन्य सभी प्रकार की दैवज्ञों की दुविधा को वराह आदि आचार्यों का यह उपरोक्त परामर्श निरस्त जरूर करता है; लेकिन इससे यह भी प्रमाणित हो जाता है कि– मुहूर्त्तशास्त्रों के ये सभी नियम (बन्धन) तत्तत् प्रान्तों/जनपदों की लोकपरम्परा के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

****

परिहृत दुष्टकूटों के गुण

[क्या परिहार हो जाने पर दोषपूर्ण कूट के गुण प्राप्त मूल गुणसंख्या में मिलाए जाएं ?]

लेखक :- प्रियव्रत शर्मा

[मिलान पर लिखी मेरी पुस्तक *'ग्रहयोग एवम् दाम्पत्य जीवन'* में मैंने अष्टकूटों के विवेचन में यह प्रतिपादित किया है कि – जो दुष्टकूट परिहृत हो जाए, उसके पूरे नहीं तो कम से कम आधे गुण तो *'मूल गुणयोग' (सामान्य मेलापक द्वारा प्राप्त गुणयोग)* में मिलाना ज़रूरी है, जिससे वास्तविक गुणयोग प्राप्त होता है। क्योंकि दोषपरिहार का अर्थ यही है कि– दोष समाप्त हो गया है। अतः उस दोष से उत्पन्न गुणहानि भी समाप्त मानी जाए। लेकिन कई दैवज्ञ, जिन्होंने मेरी उक्त पुस्तक में दिया गया एतद्विषयक प्रतिपादन पढ़ा नहीं है, वे इस विषय पर आपत्ति करते हैं। उनकी यहां एकमात्र आपत्ति यह है कि– परिहृत सदोष कूट के गुणों को *'मूल गुणयोग'* में जोड़ने की बात किसी भी मुहूर्त्तग्रन्थ में नहीं लिखी है। इन आपत्तिकारी दैवज्ञों की शंका निवृत्त करने के लिए इस विषय पर यह लेख यहां सविवेचन दिया जा रहा है।]

दोषपरिहार का अर्थ है– दोष की समाप्ति। अतः जब कूट का दोष समाप्त होगा तब स्पष्ट है, उस कूट के गुण,जो सामान्य वाक्यद्वारा निर्दिष्ट दोष के कारण समाप्त (शून्य) अथवा कम कर दिए गए थे, पुनः प्राप्त हो जाएंगे और उन्हें **'मूल गुणयोग'** में जोड़ा जाएगा। तर्कशास्त्र का न्याय है– **" निमित्तापाये नैमित्तिकस्याप्यपायः"**, अर्थात् किसी कार्य (उत्पाद) का कारण (उत्पत्तिहेतु) ही समाप्त हो जाए तो वह कार्य भी समाप्त हो जाता है। **जैसे**– कमज़ोरी रोग का कारण हो तो कमज़ोरी समाप्त हो जाने पर रोग भी समाप्त हो जाएगा। इसी तरह जब दोष ही परिहृत (समाप्त) हो गया तब उससे उत्पन्न गुणाभाव/गुणन्यूनता भी समाप्त हो जानी चाहिए। यह शत–प्रतिशत तर्कसंगत है।

इस प्रकार स्पष्ट है– दुष्टकूटों के ये शास्त्रीय परिहारवाक्य प्रकारान्तर से यह भी बतलाते हैं कि– परिहृत दुष्टकूट के गुणों को **'मूल गुणयोग'** में जोड़ना आवश्यक है और इस तरह प्राप्त वास्तविक गुणसंख्या के आधार पर ही **"गुणैः षोडशभिर्निन्द्यम् ...."** नियमानुसार विवाहसम्बन्ध की शक्याशक्यता का निर्णय करना चाहिए। यदि शास्त्र–वाक्याभिप्राय को समझने में असमर्थ कोई दैवज्ञ परिहृत दुष्टकूट के गुणों को **'मूल गुणयोग'** में मिलाने का विरोध करता है, तब उसे 16 से कम **'मूल गुणयोग'** होने की स्थिति में दुष्टकूटों का परिहार हो जाने पर भी विवाहसम्बन्ध की अनुमति नहीं देनी चाहिए। यदि वह परिहृत दुष्टकूटों के गुणों को तिरस्कृत करते हुए 16 से कम **'मूल गुणयोग'** के कारण विवाहसम्बन्ध को अशास्त्रीय बतलाता है, तब स्पष्ट है– वह दुष्टकूटों के शास्त्रीय परिहार–वाक्यों को रद्दी की टोकरी में फेंक रहा है। ऐसे अतर्कशील दैवज्ञ को तो **संहिता** आदि ग्रन्थों में निर्दिष्ट कूटदोषों को अग्राहय बतलाने वाले वाक्यों को भी मानने का अधिकार तर्कशास्त्र नहीं देता। क्योंकि, जिन ऋषियों/आचार्यों ने कूटदोषों को अग्राहय लिखा है, कूटदोषों के परिहारवाक्य भी उन्होंने ही लिखे हैं। किसी ऋषि/आचार्य के मत के एकभाग को मान्यता देना और उसी के दूसरे भाग को अमान्य ठहराना न्यायसंगत कदापि नहीं है– **"नहि कुक्कुट्याः अर्द्धं प्रसवाय अर्द्धञ्च भक्षणाय कल्पते"** (अर्थात् आधी मुर्गी अण्डे देने और आधी खाने के लिए नहीं हो सकती)।

स्पष्ट है– दैवज्ञ को मिलानविचार में परिहारवाक्यों को मान्यता तो अनिवार्यतः देनी ही पड़ती है। जब परिहारवाक्य मानने के लिए वह शास्त्रानुसार बाधित है तब परिहृत दुष्टकूटों के गुणों को वह अस्वीकार नहीं कर सकता। **"परिहृत दुष्टकूट के गुणों को अस्वीकार करना"** प्रकारान्तर से **" दुष्टकूट के परिहार को अस्वीकार करना"** ही है। क्योंकि इन दोनों में परस्पर कारण–कार्य भाव सम्बन्ध है।

किञ्च– जो दैवज्ञ परिहृत दुष्टकूटों के गुणों को 16 से कम **'मूल गुणयोग'** में जोड़े बिना ही विवाहसम्बंध की अनुमति देने के पक्ष में हैं, वे भी प्रकारान्तरंण **(वधू–श्वश्रू–न्यायेन)** परिहृत दुष्टकूटों के

गुणों को **'मूल गुणयोग'** में जोड़ने का सिद्धान्त मनसा तो स्वीकारते ही हैं, अन्यथा 16 से कम गुणों वाले मिलान को ग्राह्य बतलाने वाले ये दैवज्ञ **''गुणैः षोडशभिर्निन्द्यम् ....''** शास्त्रवाक्य के उल्लंघन के अपराधी होंगे।

अन्त में मैं इन तर्कोपेक्षी दैवज्ञों का, जो शास्त्र के स्पष्ट वाचिक आदेश के बिना सुस्पष्ट, तर्कसंगत बात को भी स्वीकारने को तैयार नहीं हैं, **''काकदधिरक्षण'** न्याय की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। इस न्याय का आख्यान इस प्रकार है–

देवदत्त को दही के कटोरे के पास बैठाकर, उसकी मां बोली– 'देवदत्त! ध्यान रखना, कौओं से दही को बचाना, मैं मन्दिर जा रही हूँ'। माता जी पूजा करके जब मन्दिर से लौटी तो देखा– कटोरा बिल्कुल खाली है, उसमें दही कतई नहीं। उसने देवदत्त से पूछा–' दही कहां गया ? देवदत्त ने भोलेपन से कहा– 'उसे तो बिल्ली चाट गई। मैंने उसे रोका नहीं, क्योंकि आपने तो दही को कौओं से बचाने के लिए कहा था।'

सारांश यह है– सभी कुछ शास्त्र नहीं कहते। शास्त्रकार स्पष्टतया प्रतीयमान बात को वचसा उपस्थापित करना बहुशः अनपेक्षित समझते हैं, क्योंकि विमर्शशील व्यक्ति उसे स्वयं समझ जाता है–

''अनुक्तमप्यूहति पण्डितो जनः''।

सूर्य की परमक्रान्ति

(Obliquity of the ecliptic)

लेखक- प्रियव्रत शर्मा

[सूर्य की परमक्रान्ति (क्रान्तिवृत्त एवम् नाड़ीवृत्त के धरातलों से उत्पन्न कोण) जो आजकल (सन् 2009 ई. में) 23°-26′-17′′.19 है, धीरे--धीरे प्रतिवर्ष 28 प्रतिविकला की दर से कम होती जा रही है--ऐसा कुछ ज्योतिष एवम् भूगोलग्रन्थों से संकेत मिलता है। यदि कहीं इसी क्षयगति से परमक्रान्ति कम होती चली गई तो हमारी यह प्रिय धरा सुदूर भविष्य में आवासयोग्य नहीं रहेगी। क्या यह आशंका यथार्थ है ? इसे यह लेख स्पष्ट करता है।]

क्रान्तिवृत्त एवम् नाड़ीवृत्त (Equator) के धरातलों का मध्यवर्ती कोण, जिसे परमक्रान्ति कहा जाता है, पृथ्वी की आवास-योग्यता का एक प्रमुख कारण है। यदि कहीं यह कोण शून्य हो जाए, यानि क्रान्तिवृत्त और नाड़ीवृत्त दोनों अभिन्न हो जाएं तो यह हमारी स्वर्ग-सी सुरम्य, स्पृहणीय जन्मभूमि बिल्कुल अन्यथा ही हो जाएगी और तब इस पर आजकल उपलब्ध अधिकतर प्राणी एवम् अन्य पदार्थ शायद ही यहां उपलब्ध हों। नाड़ीवृत्त से सूर्य के उत्तरी एवं दक्षिणी अन्तर की न्यूनाधिकता पर हमारी ऋतुएं निर्भर करती हैं, क्रान्तिवृत्त एवम् नाड़ीवृत्त की अभिन्नता की स्थिति में स्पष्ट है सूर्य वर्षभर नाड़ीवृत्त में ही भ्रमण करेगा। जिससे विश्व के पृथक्-पृथक् स्थलों पर तब वर्षभर एक ही विलक्षण स्थानीय ऋतु रहेगी, जो न तो वसन्त ही होगी और न ही ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त या शिशिर ही। क्योंकि इन छः ऋतुओं में से प्रत्येक ऋतु अपनी पूर्वापरवर्ती दो ऋतुओं के वायुमण्डल आदि के मिश्रण से बनती है, किसी भी ऋतु का स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है। भूगोल पर आजकल उत्पन्न होने वाले विभिन्न ऋतुओं के फल फूल, धान्य-वनस्पति भी वर्षभर एकही अपरिवर्तित ऋतु के कारण सर्वथा लुप्त हो जाएंगे। ऐसी सर्वदा एकरूप ऋतु के वातावरण में मनुष्य एवम् अन्य जीव-जन्तुओं का अस्तित्व भी सम्भव नहीं होगा। परमक्रान्ति की शून्यता की स्थिति में भूगोल पर सर्वत्र दिन-रात बराबर होंगे। केवल उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव-स्थानों (उत्तरी एवम् दक्षिणी 90° अक्षांशीय बिन्दुस्थलों) को छोड़कर अन्यत्र सर्वत्र आजकल के उत्तरी एवम् दक्षिणी ध्रुव प्रदेशों (Arctic, Antarctic Regions) में भी प्रत्येक दिन सूर्य 12 घण्टा के लिए क्षितिज से ऊपर रहेगा। किञ्च उत्तरी-दक्षिणी ध्रुव स्थानों पर भी सूर्य वर्षभर किरणवक्रीभवन के कारण एक-दो अंश क्षितिज से ऊपर 24 घण्टे चारों दिशाओं में भ्रमण करता दीखेगा। इसके परिणामस्वरूप Arctic और Antarctic Regions के क्षेत्र ऐसे हिमाच्छादित नहीं रह सकेंगे, जैसे कि आजकल हैं। Tropic of Cancer और Tropic of Capricorn की धारणा अर्थहीन हो जाएगी। उष्णकटिबन्ध नाम का कोई प्रदेश पृथ्वी पर नहीं रहेगा।प्रकृति की इस भारी उथल-पुथल से भूगोल के अन्य सभी क्षेत्रों में अकल्प्य भारी प्रकृति-व्यत्यय होगा। परमक्रान्ति की शून्यता से उत्पन्न यह भारी प्रकृति-व्यत्यय इस भूगोल पर प्राणियों एवम् वनस्पतियों के जीवन के लिए असह्य समस्याएं पैदा करेगा।

क्या इस प्रकार उपरोक्त महान् प्रकृति-विक्षोभ की कारण परमक्रान्ति की ऐसी शून्यता कभी हो सकती है ? आइए, आधुनिक खगोल शास्त्रियों द्वारा साधित परमक्रान्ति की क्षयवृद्धि के प्रतिपादक सूत्र के विश्लेषण द्वारा हम इसका निर्णय करते हैं।

हमारे सिद्धान्तज्योतिष एवम् भूगोल के अधिकतर ग्रन्थों में यह सामान्य निर्देश मिलता है कि परमक्रान्ति (सूर्य की परमक्रान्ति), जो आजकल (सन् 2009 में) 23°-26′-17″.19 है, प्रतिवर्ष 28 प्रति विकला की दर से कम होती जा रही है। इस निर्देश को यदि यथार्थ मान लिया जाए तो सामान्य गुणन-प्रक्रिया से स्पष्ट हो जाता है कि-आजकल की इस परमक्रान्ति कों शून्य होने में लगभग 1,80,000 वर्ष लगेंगे, अर्थात् तब इतने वर्षो बाद क्रान्तिवृत और नाड़ीवृत्त की अभिन्नता हो जाने के कारण भूगोल पर उपरोक्त प्रकृति-विक्षोभ देखने को मिलेगा। लेकिन नाक्षत्रभौतिकी के सिद्धान्त हमें बतलाते हैं कि इन ग्रन्थों में निर्दिष्ट परमक्रान्ति के क्षय की यह वार्षिक दर आगामी लगभग दो-तीन हजार वर्षों के लिए तो सामान्यतः स्वीकार

की जा सकती है। लेकिन ध्यान रहे– यह क्षयदर स्थायी नहीं है। क्षय की यह दर उत्तरोत्तर बहुत धीरे–धीरे कम होती जा रही है और आगामी लगभग 16,000 वर्षों में (यानी 18,000 A.D. में) यह शून्य हो जाएगी और तब परमक्रान्ति की यह क्षय–प्रक्रिया रुक जाएगी। एतद्‌विषयक गणितसूत्र, जिसे अभी हम उद्धृत करने जा रहे हैं, हमें बतलाता है कि– आगामी लगभग 9,000 वर्षों में (यानि सन् 11,000 A.D. में) परमक्रान्ति का अधिकतम क्षय हो चुकेगा, जोकि 49′ से अधिक नहीं होगा, अर्थात् 11,000 A.D. में परमक्रान्ति आज की परमक्रान्ति से लगभग 49′ ही कम हो पाएगी। यानि तब यह 22°–37′ के लगभग होगी। इससे कम परमक्रान्ति कभी नहीं हो सकेगी। इसके अनन्तर परमक्रान्ति की क्षयदर उत्तरोत्तर घटती जाएगी। इस परमाल्प सीमा पर पहुंचने के बाद यानि 11,000 A.D. के बाद परमक्रान्ति पुनः धीरे–धीरे बढ़ने लगेगी। तदनन्तर इसका क्षय नहीं अपितु वृद्धि होगी। स्पष्टता के लिए लेख के अन्त में पृष्ठ 289 पर दिया गया कोष्ठक देखिए, जिसमें 2000 A.D. से 21,000 A.D. तक की सूक्ष्म परमक्रान्ति दी गई है। परमक्रान्ति की क्षयवृद्धि को इस निम्नांकित सूत्र से प्रकट किया गया है। इस सूत्र द्वारा आप किसी भी वर्ष की परमक्रान्ति अत्यन्त सूक्ष्मता से जान सकते हैं। सूत्र इस प्रकार है–

इष्टवर्षीय परमक्रान्ति = 23°–26′–21″.41 – 46″.845 श – 0″.0059 श² + 0″.00181 श³
(यहां 23°–26′–21″.41 ई. सन् 2000 A.D. की परमक्रान्ति है और श = 2000 A.D. के बाद बीती शताब्दी / शताब्दियां)

इस सूत्र के प्रयोग के लिए सन् 2000 A.D. के बाद बीते वर्षों को 100 से भाग देकर शताब्दियों में बदलना होगा। यदि यहां **श** (शताब्दी) के स्थान पर वर्षोंका ही प्रयोग करना अभीष्ट हो तो इस सूत्र को इस प्रकार लिखा जाएगा–

अभीष्टवर्षीय परमक्रान्ति = 23°-26′-21″.41–0″.46845 व–0″.000059 व² + 0″.0000181 व³
(यहां 23°-26′-21″.41 ई. सन् 2000 A.D. की परमक्रान्ति और व = 2000 ई. सन् के बाद बीते वर्षों की संख्या।)

उदाहरणार्थ :– 2010 ई. की परमक्रान्ति जानने के लिए हम इस सूत्र का प्रयोग इस प्रकार करेंगे–
(यहां 'व' = 10 होगा।)

सन् 2010 ई. की परमक्रान्ति = 23°-26′-21″.41–0″.46845 (10)– 0″.000059 (10)² + 0″.0000181 (10)³
= 23°-26′-21″.41 – 4″.6845 – 0″.0059 + 0″.0181
= 23°-26′-21″.41 – 4″.6904 + 0″.0181
= 23°-26′-21″.41 – 4″.6723
= **23°-26′-16″.74** (सन् 2010 ई. की परमक्रान्ति)

प्रसंगवश यहां यह भी बतलाना आवश्यक है कि– 'सूर्यसिद्धान्त' आदि हमारे सभी सिद्धान्त एवम् करणग्रन्थों में तो परमक्रान्ति स्थायी रूप से 24° ही मानी गई है, जो आजकल वास्तविक परमक्रान्ति से लगभग 34′ अधिक है। अतः स्पष्ट है, इन ग्रन्थों से साधित सूर्योदयास्तकाल एवम् लग्नादि पूर्णतः शुद्ध नहीं हो सकते।

ईस्वी सन् 2000 A.D. से 21,000 A.D. तक सूर्य की सूक्ष्म परमक्रान्ति तथा इसकी वार्षिक क्षय–वृद्धि-दर

ईस्वी सन् (A.D.)	अभीष्ट वर्षीय परमक्रान्ति अं. क. वि.	★ परमक्रान्ति में मध्यम-मानेन वार्षिक क्षयदर प्रति विकला	ईस्वी सन् (A.D.)	अभीष्ट वर्षीय परमक्रान्ति अं. क. वि.	★ परमक्रान्ति में मध्यम-मानेन वार्षिक क्षय–वृद्धिदर प्रति विकला
2000	23 26 21	– 28.1	12000	22 37 28	– 17.6
3000	23 18 34	– 28.0	13000	22 39 26	– 15.4
4000	23 10 57	– 27.7	14000	22 43 22	– 12.9
5000	23 03 39	– 27.2	15000	22 49 29	– 10.2
6000	22 56 54	– 26.5	16000	22 57 54	– 7.3
7000	22 50 51	– 25.6	17000	23 08 51	– 4.2
8000	22 45 40	– 24.4	18000	23 22 29	– 0.9
9000	22 41 34	– 23.0	19000	23 38 58	+ 2.7
10000	22 38 42	– 21.4	20000	23 58 34	+ 6.4
11000	22 37 17	– 19.7	21000	24 21 23	+ 10.4

★ परमक्रान्ति = 2000 **A.D.** की परमक्रान्ति।

ध्यान दें– अभीष्टवर्षीय परमक्रान्ति के ज्ञापक सूत्र द्वारा प्राप्त उपरोक्त परिणामों से स्पष्ट है कि– 12000 **A.D.** के बाद परमक्रान्ति उत्तरोत्तर द्रुतगति से बढ़ने लगती है। क्या इस बढोतरी (Acceleration) की कोई सीमा भी है ? इस पर फिर कभी विचार–विमर्श किया जाएगा।

सूर्योदयास्तकाल (भा. स्टैं. टा.)

नगर→	अमृतसर (पं.)		अहमदाबाद		कांगड़ा (हि.प्र.)		कुरुक्षेत्र (हरि.)		कोलकाता (बं.)		गुवाहाटी		ग्वालियर(म.प्र.)	
तारीख	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त
↓	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
दिसं. 31	7 34	17 36	7 24	18 03	7 29	17 27	7 23	17 29	6 20	16 59	6 14	16 40	7 08	17 33
जन. 4	7 34	17 38	7 25	18 05	7 30	17 29	7 24	17 32	6 21	17 02	6 15	16 42	7 09	17 36
8	7 35	17 42	7 26	18 07	7 30	17 33	7 24	17 35	6 22	17 05	6 15	16 45	7 10	17 39
12	7 35	17 45	7 26	18 10	7 30	17 36	7 24	17 39	6 23	17 07	6 15	16 48	7 10	17 41
16	7 34	17 49	7 26	18 13	7 30	17 40	7 24	17 42	6 23	17 10	6 15	16 51	7 10	17 44
20	7 33	17 52	7 26	18 16	7 29	17 43	7 23	17 45	6 23	17 13	6 15	16 54	7 09	17 48
24	7 32	17 55	7 25	18 19	7 27	17 47	7 21	17 49	6 22	17 16	6 14	16 57	7 09	17 51
28	7 29	17 59	7 24	18 21	7 25	17 51	7 20	17 52	6 21	17 18	6 12	17 00	7 07	17 54
फर. 1	7 27	18 02	7 23	18 24	7 23	17 55	7 18	17 56	6 20	17 21	6 11	17 03	7 05	17 57
5	7 26	18 06	7 21	18 .27	7 20	17 58	7 15	17 59	6 18	17 23	6 09	17 06	7 03	18 00
9	7 21	18 09	7 19	18 29	7 17	18 02	7 12	18 03	6 16	17 26	6 06	17 09	7 01	18 02
13	7 18	18 12	7 16	18 32	7 13	18 05	7 09	18 06	6 14	17 28	6 03	17 11	6 58	18 05
17	7 14	18 15	7 14	18 34	7 09	18 09	7 05	18 09	6 11	17 30	6 00	17 14	6 55	18 08
21	7 10	18 19	7 11	18 36	7 05	18 12	7 01	18 12	6 08	17 32	5 57	17 17	6 52	18 10
25	7 06	18 22	7 08	18 38	7 01	18 15	6 57	18 15	6 05	17 34	5 53	17 19	6 49	18 13
मार्च 1	7 02	18 25	7 04	18 40	6 57	18 18	6 53	18 18	6 02	17 36	5 50	17 21	6 45	18 15
5	6 57	18 28	7 01	18 42	6 52	18 21	6 49	18 20	5 59	17 38	5 46	17 23	6 41	18 17
9	6 52	18 30	6 57	18 43	6 47	18 24	6 44	18 23	5 55	17 40	5 42	17 26	6 37	18 19
13	6 48	18 33	6 54	18 45	6 42	18 27	6 40	18 26	5 51	17 41	5 38	17 28	6 33	18 21
17	6 42	18 35	6 50	18 46	6 37	18 30	6 35	18 28	5 48	17 43	5 33	17 30	6 29	18 23
21	6 37	18 38	6 46	18 48	6 32	18 33	6 30	18 31	5 44	17 44	5 29	17 32	6 24	18 25
25	6 32	18 41	6 42	18 49	6 27	18 35	6 25	18 33	5 40	17 45	5 25	17 33	6 20	18 27
29	6 27	18 43	6 38	18 51	6 21	18 38	6 20	18 35	5 36	17 47	5 21	17 35	6 16	18 29
अप्रै. 2	6 22	18 45	6 34	18 52	6 16	18 41	6 15	18 38	5 32	17 48	5 16	17 37	6 12	18 31
6	6 17	18 48	6 31	18 54	6 11	18 44	6 11	18 40	5 29	17 50	5 12	17 39	6 07	18 33
10	6 12	18 50	6 27	18 55	6 06	18 46	6 06	18 43	5 25	17 51	5 08	17 41	6 03	18 34
14	6 08	18 53	6 23	18 57	6 02	18 49	6 01	18 45	5 21	17 53	5 04	17 43	6 00	18 36
18	6 03	18 55	6 20	18 58	5 57	18 52	5 57	18 48	5 18	17 54	5 00	17 45	5 56	18 38
22	5 59	18 58	6 17	19 00	5 52	18 55	5 53	18 50	5 15	17 56	4 57	17 47	5 52	18 40
26	5 54	19 01	6 13	19 02	5 48	18 58	5 49	18 53	5 12	17 57	4 53	17 49	5 48	18 42
30	5 50	19 03	6 11	19 03	5 44	19 00	5 45	18 55	5 09	17 59	4 50	17 51	5 45	18 44
मई 4	5 47	19 06	6 08	19 05	5 40	19 03	5 42	18 58	5 06	18 01	4 47	17 53	5 42	18 46
8	5 43	19 09	6 05	19 07	5 37	19 06	5 39	19 00	5 04	18 02	4 44	17 55	5 39	18 48
12	5 40	19 11	6 03	19 09	5 34	19 09	5 36	19 03	5 02	18 04	4 42	17 57	5 37	18 51
16	5 38	19 14	6 01	19 11	5 31	19 12	5 33	19 06	5 00	18 06	4 39	18 00	5 35	18 53
20	5 35	19 16	6 00	19 13	5 29	19 14	5 31	19 08	4 58	18 08	4 38	18 02	5 33	18 55
24	5 33	19 19	5 59	19 15	5 27	19 17	5 29	19 10	4 57	18 10	4 36	18 04	5 31	18 57
28	5 32	19 21	5 58	19 16	5 25	19 19	5 27	19 13	4 56	18 12	4 35	18 06	5 30	18 59
जून 1	5 30	19 23	5 57	19 18	5 24	19 22	5 26	19 15	4 55	18 13	4 34	18 08	5 29	19 01
5	5 30	19 25	5 57	19 20	5 20	19 24	5 26	19 17	4 55	18 15	4 34	18 10	5 29	19 03
9	5 29	19 27	5 57	19 21	5 22	19 26	5 25	19 19	4 55	18 16	4 33	18 11	5 29	19 04
13	5 29	19 29	5 57	19 23	5 22	19 28	5 25	19 20	4 55	18 18	4 33	18 13	5 29	19 06
17	5 29	19 30	5 57	19 24	5 22	19 29	5 25	19 22	4 56	18 19	4 34	18 14	5 29	19 07
21	5 30	19 31	5 58	19 25	5 23	19 30	5 26	19 23	4 56	18 20	4 35	18 15	5 30	19 08
25	5 31	19 32	5 59	19 25	5 24	19 30	5 27	19 23	4 57	18 21	4 36	18 16	5 31	19 09
29	5 32	19 32	6 00	19 26	5 25	19 31	5 28	19 24	4 58	18 21	4 37	18 16	5 32	19 09

सूर्योदयास्तकाल (भा. स्टैं. टा.)

नगर→	अमृतसर (पं.)		अहमदाबाद		कांगड़ा (हि.प्र.)		कुरुक्षेत्र (हरि.)		कोलकाता (बं.)		गुवाहाटी		ग्वालियर(म.प्र.)	
तारीख	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त
↓	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जुला. 3	5 33	19 32	6 02	19 26	5 27	19 31	5 30	19 24	5 00	18 21	4 38	18 16	5 33	19 09
7	5 36	19 31	6 03	19 26	5 29	19 30	5 32	19 23	5 01	18 21	4 40	18 16	5 35	19 09
11	5 38	19 30	6 05	19 26	5 31	19 29	5 34	19 22	5 03	18 21	4 42	18 15	5 37	19 09
15	5 40	19 30	6 06	19 25	5 33	19 27	5 36	19 21	5 04	18 20	4 43	18 14	5 38	19 08
19	5 42	19 28	6 08	19 24	5 35	19 26	5 38	19 20	5 06	18 19	4 45	18 13	5 40	19 06
23	5 44	19 26	6 10	19 22	5 38	19 24	5 40	19 18	5 08	18 18	4 47	18 11	5 42	19 05
27	5 47	19 24	6 11	19 21	5 41	19 22	5 42	19 16	5 09	18 16	4 49	18 09	5 44	19 03
31	5 50	19 21	6 13	19 19	5 43	19 19	5 45	19 13	5 11	18 14	4 51	18 07	5 46	19 00
अग. 4	5 52	19 18	6 15	19 16	5 46	19 15	5 47	19 10	5 13	18 12	4 53	18 04	5 48	18 58
8	5 55	19 14	6 17	19 14	5 48	19 12	5 50	19 07	5 14	18 10	4 55	18 02	5 50	18 55
12	5 57	19 11	6 18	19 11	5 51	19 08	5 52	19 03	5 16	18 07	4 57	17 58	5 52	18 52
16	6 00	19 07	6 20	19 08	5 54	19 04	5 55	18 59	5 17	18 04	4 59	17 55	5 54	18 49
20	6 02	19 03	6 21	19 05	5 56	18 59	5 57	18 55	5 19	18 01	5 01	17 51	5 56	18 45
24	6 05	18 58	6 22	19 01	5 59	18 55	5 59	18 51	5 20	17 57	5 03	17 48	5 58	18 41
28	6 07	18 54	6 24	18 57	6 01	18 50	6 01	18 46	5 21	17 54	5 05	17 44	5 59	18 37
सितं. 1	6 10	18 49	6 25	18 54	6 04	18 45	6 04	18 42	5 23	17 50	5 06	17 39	6 01	18 33
5	6 12	18 45	6 26	18 50	6 06	18 40	6 06	18 37	5 24	17 46	5 08	17 35	6 03	18 29
9	6 14	18 40	6 28	18 46	6 09	18 35	6 08	18 32	5 25	17 42	5 10	17 31	6 04	18 25
13	6 17	18 35	6 29	18 42	6 11	18 30	6 10	18 27	5 26	17 38	5 11	17 26	6 06	18 20
17	6 19	18 30	6 30	18 38	6 14	18 24	6 12	18 22	5 27	17 34	5 13	17 22	6 07	18 16
21	6 22	18 24	6 31	18 34	6 16	18 19	6 14	18 17	5 29	17 30	5 14	17 17	6 09	18 11
25	6 24	18 19	6 32	18 30	6 19	18 14	6 17	18 12	5 30	17 26	5 16	17 13	6 11	18 07
29	6 27	18 14	6 34	18 26	6 21	18 09	6 19	18 07	5 31	17 22	5 18	17 09	6 13	18 02
अक्तू. 3	6 29	18 09	6 35	18 22	6 24	18 03	6 21	18 02	5 32	17 19	5 19	17 04	6 14	17 58
7	6 32	18 04	6 37	18 18	6 26	17 58	6 23	17 57	5 34	17 15	5 21	17 00	6 16	17 54
11	6 34	18 00	6 38	18 14	6 29	17 54	6 26	17 53	5 35	17 11	5 23	16 56	6 18	17 50
15	6 37	17 55	6 40	18 11	6 32	17 49	6 29	17 47	5 37	17 08	5 25	16 52	6 20	17 46
19	6 40	17 51	6 41	18 07	6 35	17 44	6 31	17 44	5 38	17 04	5 27	16 48	6 22	17 42
23	6 43	17 47	6 43	18 04	6 38	17 40	6 34	17 40	5 40	17 01	5 30	16 45	6 24	17 39
27	6 46	17 43	6 45	18 01	6 41	17 36	6 37	17 36	5 42	16 58	5 32	16 41	6 27	17 36
31	6 49	17 40	6 47	17 59	6 44	17 32	6 40	17 33	5 44	16 56	5 35	16 39	6 29	17 33
नवं. 4	6 53	17 36	6 50	17 57	6 48	17 29	6 43	17 30	5 46	16 54	5 37	16 36	6 32	17 30
8	6 56	17 34	6 52	17 55	6 51	17 26	6 46	17 27	5 49	16 52	5 40	16 34	6 34	17 28
12	6 59	17 31	6 54	17 53	6 55	17 23	6 49	17 24	5 51	16 50	5 43	16 32	6 37	17 26
16	7 03	17 28	6 57	17 52	6 58	17 21	6 53	17 22	5 54	16 49	5 46	16 30	6 40	17 24
20	7 06	17 27	7 00	17 51	7 02	17 19	6 56	17 21	5 56	16 48	5 48	16 29	6 43	17 23
24	7 10	17 26	7 02	17 50	7 05	17 17	6 59	17 20	5 59	16 47	5 51	16 28	6 46	17 22
28	7 13	17 25	7 05	17 50	7 09	17 16	7 03	17 19	6 02	16 47	5 54	16 28	6 49	17 22
दिसं. 2	7 16	17 25	7 08	17 50	7 12	17 16	7 06	17 19	6 04	16 47	5 57	16 28	6 52	17 22
6	7 20	17 25	7 11	17 51	7 15	17 16	7 09	17 19	6 07	16 48	6 00	16 28	6 55	17 22
10	7 23	17 26	7 13	17 52	7 18	17 17	7 12	17 19	6 10	16 49	6 03	16 29	6 57	17 23
14	7 26	17 27	7 16	17 53	7 21	17 18	7 14	17 20	6 12	16 50	6 05	16 30	7 00	17 24
18	7 28	17 28	7 18	17 55	7 23	17 19	7 17	17 22	6 14	16 52	6 08	16 32	7 02	17 26
22	7 30	17 30	7 20	17 57	7 26	17 21	7 19	17 24	6 16	16 54	6 10	16 33	7 04	17 27
26	7 32	17 32	7 22	17 59	7 28	17 23	7 21	17 26	6 18	16 56	6 12	16 36	7 06	17 30
30	7 33	17 35	7 23	18 01	7 29	17 26	7 22	17 28	6 20	16 58	6 13	16 38	7 08	17 32

सूर्योदयास्तकाल (भा. स्टै. टा.)

नगर→	चण्डीगढ़		चेन्नई (ता. ना.)		जम्मू (ज.का.)		जयपुर (राज.)		जालन्धर (पं.)		तिरुवनन्तपुरम्		दिल्ली	
तारीख ↓	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.
दिसं. 31	7 23	17 29	6 35	17 51	7 38	17 30	7 20	17 40	7 30	17 32	6 40	18 12	7 18	17 31
जन. 4	7 24	17 31	6 36	17 52	7 38	17 33	7 21	17 42	7 31	17 34	6 41	18 13	7 19	17 34
8	7 24	17 34	6 37	17 55	7 39	17 36	7 21	17 45	7 31	17 38	6 42	18 15	7 19	17 37
12	7 24	17 38	6 38	17 57	7 39	17 40	7 21	17 48	7 31	17 41	6 44	18 17	7 19	17 40
16	7 24	17 41	6 39	17 59	7 38	17 43	7 21	17 51	7 31	17 45	6 45	18 19	7 19	17 43
20	7 23	17 45	6 39	18 01	7 37	17 47	7 21	17 55	7 30	17 48	6 45	18 21	7 18	17 47
24	7 21	17 48	6 39	18 03	7 35	17 51	7 20	17 58	7 28	17 52	6 46	18 23	7 17	17 50
28	7 20	17 52	6 39	18 05	7 33	17 55	7 18	18 01	7 26	17 55	6 46	18 24	7 15	17 53
फर. 1	7 17	17 55	6 39	18 07	7 30	17 58	7 16	18 04	7 24	17 59	6 46	18 26	7 13	17 57
5	7 15	17 59	6 38	18 08	7 27	18 02	7 14	18 07	7 22	18 02	6 46	18 27	7 11	18 00
9	7 12	18 02	6 37	18 10	7 24	18 06	7 12	18 10	7 18	18 06	6 45	18 28	7 08	18 03
13	7 08	18 06	6 36	18 11	7 21	18 10	7 09	18 13	7 15	18 09	6 44	18 28	7 05	18 06
17	7 05	18 09	6 34	18 12	7 17	18 13	7 06	18 16	7 10	18 12	6 43	18 29	7 02	18 09
21	7 01	18 12	6 32	18 13	7 12	18 17	7 02	18 18	7 07	18 16	6 42	18 30	6 58	18 12
25	6 57	18 15	6 30	18 14	7 08	18 20	6 59	18 21	7 03	18 19	6 40	18 30	6 55	18 15
मार्च 1	6 52	18 18	6 28	18 15	7 03	18 24	6 55	18 23	6 59	18 22	6 39	18 30	6 51	18 17
5	6 48	18 21	6 26	18 15	6 58	18 26	6 51	18 26	6 54	18 25	6 37	18 30	6 46	18 20
9	6 43	18 23	6 24	18 16	6 53	18 30	6 47	18 28	6 49	18 27	6 35	18 30	6 42	18 22
13	6 38	18 26	6 21	18 16	6 48	18 33	6 42	18 30	6 45	18 30	6 33	18 30	6 38	18 24
17	6 33	18 29	6 18	18 17	6 43	18 36	6 38	18 32	6 40	18 33	6 31	18 30	6 33	18 27
21	6 28	18 31	6 16	18 17	6 38	18 38	6 34	18 34	6 35	18 35	6 29	18 30	6 28	18 29
25	6 23	18 34	6 13	18 17	6 33	18 41	6 29	18 36	6 30	18 38	6 27	18 29	6 24	18 31
29	6 19	18 36	6 10	18 17	6 27	18 44	6 25	18 38	6 25	18 40	6 25	18 29	6 19	18 33
अप्रै. 2	6 14	18 39	6 08	18 18	6 22	18 47	6 21	18 39	6 20	18 43	6 22	18 29	6 14	18 36
6	6 09	18 41	6 05	18 18	6 17	18 50	6 16	18 42	6 15	18 46	6 20	18 29	6 10	18 38
10	6 04	18 44	6 03	18 18	6 12	18 53	6 12	18 44	6 10	18 48	6 18	18 28	6 05	18 40
14	5 59	18 47	6 00	18 19	6 07	18 56	6 08	18 46	6 06	18 51	6 16	18 28	6 01	18 42
18	5 55	18 49	5 58	18 19	6 02	18 58	6 04	18 48	6 00	18 53	6 15	18 28	5 57	18 44
22	5 51	18 52	5 56	18 19	5 57	19 01	6 00	18 50	5 57	18 56	6 13	18 28	5 53	18 47
26	5 47	18 54	5 54	18 20	5 53	19 04	5 56	18 52	5 53	18 59	6 11	18 28	5 49	18 49
30	5 43	18 57	5 52	18 21	5 49	19 07	5 53	18 55	5 49	19 02	6 10	18 29	5 46	18 52
मई 4	5 39	19 00	5 50	18 22	5 45	19 11	5 50	18 57	5 45	19 04	6 09	18 29	5 42	18 54
8	5 36	19 02	5 49	18 22	5 41	19 13	5 47	18 59	5 42	19 07	6 08	18 29	5 39	18 56
12	5 33	19 05	5 48	18 23	5 38	19 16	5 44	19 01	5 39	19 10	6 07	18 30	5 36	18 59
16	5 30	19 08	5 47	18 24	5 35	19 19	5 42	19 03	5 36	19 12	6 06	18 31	5 34	19 01
20	5 28	19 10	5 46	18 26	5 32	19 22	5 40	19 06	5 34	19 15	6 06	18 32	5 32	19 04
24	5 26	19 13	5 45	18 27	5 30	19 25	5 39	19 08	5 32	19 17	6 05	18 32	5 30	19 06
28	5 25	19 15	5 45	18 28	5 28	19 27	5 37	19 10	5 30	19 20	6 05	18 33	5 29	19 08
जून 1	5 23	19 17	5 45	18 29	5 27	19 30	5 36	19 12	5 29	19 22	6 05	18 34	5 28	19 10
5	5 23	19 19	5 45	18 30	5 26	19 32	5 36	19 14	5 28	19 24	6 06	18 35	5 27	19 12
9	5 22	19 21	5 45	18 31	5 26	19 34	5 36	19 16	5 28	19 26	6 06	18 36	5 27	19 14
13	5 22	19 23	5 46	18 33	5 26	19 35	5 36	19 17	5 27	19 28	6 07	18 37	5 27	19 15
17	5 23	19 24	5 46	18 34	5 26	19 37	5 36	19 18	5 28	19 29	6 08	18 38	5 27	19 17
21	5 23	19 25	5 47	18 35	5 26	19 38	5 37	19 19	5 29	19 30	6 08	18 39	5 28	19 18
25	5 24	19 26	5 48	18 35	5 27	19 39	5 38	19 20	5 30	19 31	6 09	18 40	5 29	19 18
29	5 26	19 26	5 49	18 36	5 29	19 39	5 39	19 20	5 31	19 31	6 10	18 41	5 30	19 19

सूर्योदयास्तकाल (भा. स्टैं. टा.)

नगर→	चण्डीगढ़		चेन्नई		जम्मू (ज.का.)		जयपुर (राज.)		जालन्धर (पं.)		तिरुवनन्तपुरम्		दिल्ली	
तारीख	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त
↓	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जुला 3	5 27	19 26	5 50	18 36	5 30	19 39	5 41	19 21	5 32	19 31	6 11	18 41	5 32	19 19
7	5 29	19 26	5 51	18 37	5 32	19 38	5 43	19 20	5 34	19 30	6 12	18 42	5 33	19 18
11	5 31	19 25	5 52	18 37	5 34	19 37	5 44	19 20	5 36	19 29	6 13	18 42	5 35	19 18
15	5 33	19 23	5 54	18 36	5 37	19 36	5 46	19 19	5 38	19 28	6 14	18 42	5 37	19 17
19	5 35	19 22	5 55	18 36	5 39	19 34	5 48	19 17	5 41	19 27	6 15	18 42	5 39	19 15
23	5 38	19 20	5 56	18 35	5 42	19 32	5 50	19 16	5 43	19 25	6 16	18 41	5 41	19 13
27	5 40	19 17	5 57	18 34	5 44	19 29	5 52	19 14	5 46	19 22	6 16	18 41	5 44	19 11
31	5 43	19 15	5 57	18 33	5 47	19 26	5 54	19 11	5 48	19 19	6 17	18 40	5 46	19 09
अग. 4	5 45	19 11	5 58	18 32	5 50	19 23	5 56	19 09	5 51	19 16	6 17	18 39	5 48	19 06
8	5 48	19 08	5 59	18 30	5 53	19 19	5 58	19 06	5 53	19 13	6 17	18 38	5 50	19 03
12	5 50	19 04	6 00	18 28	5 56	19 15	6 00	19 02	5 56	19 09	6 18	18 36	5 53	18 59
16	5 53	19 00	6 00	18 26	5 58	19 11	6 02	18 59	5 58	19 05	6 18	18 35	5 55	18 56
20	5 55	18 56	6 00	18 24	6 01	19 06	6 04	18 55	6 01	19 01	6 18	18 33	5 57	18 52
24	5 57	18 52	6 01	18 22	6 04	19 02	6 06	18 51	6 03	18 57	6 17	18 31	5 59	18 48
28	6 00	18 47	6 01	18 19	6 06	18 57	6 08	18 47	6 05	18 52	6 17	18 29	6 01	18 43
सितं. 1	6 02	18 42	6 01	18 17	6 09	18 52	6 10	18 43	6 08	18 47	6 17	18 27	6 03	18 39
5	6 04	18 37	6 01	18 14	6 12	18 46	6 11	18 38	6 10	18 42	6 17	18 25	6 05	18 34
9	6 07	18 32	6 01	18 11	6 14	18 41	6 13	18 34	6 12	18 37	6 16	18 22	6 07	18 30
13	6 09	18 27	6 01	18 08	6 17	18 36	6 15	18 29	6 15	18 32	6 16	18 20	6 09	18 25
17	6 11	18 22	6 01	18 05	6 19	18 30	6 17	18 25	6 17	18 27	6 15	18 18	6 11	18 20
21	6 13	18 17	6 01	18 03	6 22	18 25	6 18	18 20	6 19	18 22	6 15	18 15	6 13	18 15
25	6 16	18 12	6 01	18 00	6 25	18 19	6 20	18 16	6 22	18 17	6 14	18 13	6 15	18 10
29	6 18	18 07	6 01	17 57	6 27	18 14	6 22	18 11	6 24	18 11	6 14	18 11	6 17	18 06
अक्तू. 3	6 20	18 02	6 02	17 54	6 30	18 08	6 24	18 07	6 26	18 07	6 13	18 09	6 19	18 01
7	6 23	17 57	6 02	17 52	6 33	18 03	6 26	18 03	6 29	18 01	6 13	18 06	6 21	17 57
11	6 26	17 52	6 02	17 49	6 36	17 58	6 28	17 58	6 31	17 57	6 13	18 05	6 23	17 52
15	6 28	17 48	6 03	17 47	6 39	17 53	6 30	17 54	6 34	17 52	6 13	18 03	6 26	17 48
19	6 31	17 44	6 03	17 45	6 42	17 49	6 32	17 50	6 37	17 48	6 13	18 01	6 28	17 44
23	6 34	17 39	6 04	17 43	6 45	17 44	6 35	17 47	6 40	17 44	6 13	17 59	6 31	17 40
27	6 37	17 36	6 05	17 41	6 48	17 40	6 37	17 43	6 43	17 40	6 13	17 58	6 33	17 36
31	6 40	17 32	6 06	17 39	6 52	17 36	6 40	17 40	6 46	17 36	6 14	17 57	6 36	17 33
नवं. 4	6 43	17 29	6 07	17 38	6 55	17 33	6 42	17 37	6 49	17 33	6 15	17 56	6 39	17 30
8	6 46	17 26	6 08	17 37	6 59	17 29	6 45	17 35	6 53	17 30	6 16	17 56	6 42	17 27
12	6 50	17 23	6 10	17 36	7 02	17 27	6 48	17 33	6 56	17 27	6 17	17 56	6 45	17 25
16	6 53	17 21	6 12	17 36	7 06	17 24	6 51	17 31	6 59	17 25	6 18	17 55	6 48	17 23
20	6 56	17 20	6 13	17 36	7 10	17 22	6 54	17 30	7 03	17 24	6 20	17 56	6 52	17 22
24	7 00	17 18	6 15	17 36	7 13	17 21	6 57	17 29	7 06	17 22	6 21	17 56	6 55	17 21
28	7 03	17 18	6 17	17 37	7 17	17 20	7 00	17 29	7 10	17 21	6 23	17 57	6 58	17 20
दिसं. 2	7 06	17 17	6 19	17 38	7 20	17 19	7 03	17 29	7 13	17 21	6 25	17 58	7 01	17 20
6	7 10	17 18	6 22	17 39	7 24	17 19	7 06	17 29	7 16	17 21	6 27	17 59	7 04	17 20
10	7 12	17 18	6 24	17 40	7 27	17 20	7 09	17 30	7 19	17 22	6 29	18 01	7 07	17 21
14	7 15	17 19	6 26	17 42	7 30	17 21	7 11	17 31	7 22	17 23	6 31	18 03	7 10	17 22
18	7 18	17 21	6 28	17 43	7 32	17 22	7 14	17 32	7 24	17 24	6 33	18 04	7 12	17 23
22	7 20	17 23	6 30	17 45	7 34	17 24	7 16	17 34	7 26	17 26	6 35	18 06	7 14	17 25
26	7 21	17 25	6 32	17 47	7 36	17 26	7 18	17 37	7 28	17 28	6 37	18 08	7 16	17 28
30	7 23	17 27	6 34	17 50	7 37	17 29	7 19	17 39	7 30	17 31	6 39	18 11	7 17	17 30

सूर्योदयास्तकाल (भा. स्टैं. टा.)

नगर→	नागपुर (महा.)		पटना (बि.)		पुरी (उ.)		बिलासपुर(म.प्र.)		बीकानेर (राज.)		बंगलोर (क.)		भोपाल (म.प्र.)	
तारीख ↓	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
दिसं. 31	6 54	17 40	6 39	17 07	6 25	17 16	6 44	17 25	7 32	17 47	6 45	18 02	7 05	17 42
जन. 4	6 55	17 42	6 40	17 09	6 26	17 18	6 45	17 27	7 33	17 50	6 46	18 03	7 06	17 45
8	6 56	17 45	6 41	17 12	6 27	17 21	6 46	17 30	7 33	17 53	6 47	18 05	7 07	17 47
12	6 57	17 48	6 41	17 15	6 27	17 23	6 46	17 33	7 33	17 56	6 48	18 08	7 07	17 50
16	6 57	17 50	6 41	17 18	6 28	17 26	6 46	17 36	7 33	18 00	6 49	18 10	7 07	17 53
20	6 57	17 53	6 40	17 21	6 27	17 28	6 46	17 38	7 32	18 03	6 50	18 12	7 07	17 56
24	6 56	17 56	6 39	17 24	6 27	17 31	6 46	17 41	7 31	18 06	6 50	18 14	7 06	17 59
28	6 55	17 58	6 38	17 27	6 26	17 33	6 45	17 44	7 30	18 09	6 50	18 16	7 05	18 01
फर. 1	6 54	18 01	6 36	17 30	6 25	17 36	6 43	17 46	7 28	18 13	6 49	18 18	7 04	18 04
5	6 52	18 03	6 34	17 33	6 24	17 38	6 42	17 48	7 26	18 16	6 48	18 19	7 02	18 07
9	6 51	18 05	6 32	17 36	6 22	17 40	6 40	17 51	7 23	18 19	6 47	18 21	7 00	18 09
13	6 48	18 08	6 29	17 39	6 20	17 42	6 38	17 53	7 20	18 22	6 46	18 22	6 58	18 12
17	6 46	18 10	6 26	17 41	6 18	17 44	6 35	17 56	7 17	18 25	6 45	18 23	6 55	18 14
21	6 43	18 12	6 23	17 44	6 15	17 46	6 32	17 58	7 13	18 28	6 43	18 24	6 52	18 16
25	6 40	18 13	6 20	17 46	6 13	17 47	6 29	17 59	7 10	18 30	6 41	18 25	6 49	18 18
मार्च 1	6 37	18 15	6 16	17 48	6 09	17 49	6 26	18 01	7 05	18 33	6 39	18 25	6 46	18 20
5	6 34	18 16	6 12	17 50	6 07	17 50	6 23	18 03	7 01	18 35	6 36	18 26	6 42	18 22
9	6 31	18 18	6 08	17 52	6 03	17 51	6 19	18 04	6 57	18 37	6 34	18 26	6 39	18 23
13	6 27	18 19	6 04	17 54	6 00	17 52	6 16	18 06	6 53	18 40	6 32	18 27	6 35	18 25
17	6 24	18 21	6 00	17 56	5 57	17 54	6 12	18 07	6 48	18 42	6 29	18 27	6 31	18 26
21	6 20	18 22	5 56	17 58	5 53	17 55	6 08	18 09	6 44	18 44	6 26	18 27	6 28	18 28
25	6 16	18 23	5 51	18 00	5 50	17 56	6 05	18 10	6 39	18 46	6 24	18 28	6 24	18 29
29	6 13	18 24	5 47	18 02	5 46	17 57	6 01	18 11	6 35	18 48	6 21	18 28	6 20	18 31
अप्रै. 2	6 09	18 26	5 43	18 03	5 43	17 58	5 57	18 13	6 30	18 51	6 18	18 28	6 16	18 32
6	6 06	18 27	5 39	18 05	5 39	17 59	5 54	18 14	6 26	18 53	6 16	18 28	6 13	18 34
10	6 02	18 28	5 35	18 07	5 36	18 00	5 50	18 15	6 21	18 55	6 13	18 29	6 08	18 35
14	5 59	18 29	5 31	18 09	5 33	18 01	5 46	18 17	6 17	18 57	6 11	18 29	6 05	18 37
18	5 56	18 31	5 27	18 11	5 30	18 02	5 43	18 18	6 13	18 59	6 09	18 29	6 01	18 38
22	5 53	18 32	5 24	18 13	5 27	18 04	5 40	18 20	6 09	19 01	6 06	18 30	5 58	18 40
26	5 50	18 34	5 20	18 15	5 24	18 05	5 37	18 21	6 05	19 04	6 04	18 31	5 55	18 42
30	5 47	18 35	5 17	18 17	5 22	18 06	5 34	18 23	6 02	19 06	6 03	18 31	5 52	18 43
मई 4	5 44	18 37	5 14	18 19	5 19	18 08	5 31	18 25	5 58	19 08	6 01	18 32	5 49	18 45
8	5 42	18 38	5 11	18 21	5 17	18 09	5 29	18 26	5 55	19 11	5 59	18 33	5 47	18 47
12	5 40	18 40	5 09	18 23	5 15	18 11	5 27	18 28	5 53	19 13	5 58	18 34	5 45	18 49
16	5 39	18 42	5 07	18 25	5 14	18 13	5 25	18 30	5 50	19 15	5 57	18 35	5 43	18 51
20	5 37	18 43	5 05	18 27	5 13	18 14	5 24	18 32	5 48	19 18	5 56	18 36	5 41	18 53
24	5 36	18 45	5 04	18 29	5 12	18 16	5 23	18 33	5 47	19 20	5 56	18 37	5 40	18 54
28	5 35	18 47	5 02	18 31	5 11	18 17	5 22	18 35	5 45	19 22	5 56	18 38	5 39	18 56
जून 1	5 35	18 48	5 02	18 36	5 10	18 19	5 21	18 37	5 44	19 24	5 55	18 39	5 38	18 58
5	5 34	18 50	5 01	18 35	5 10	18 20	5 21	18 38	5 44	19 26	5 56	18 41	5 38	19 00
9	5 34	18 51	5 01	18 37	5 10	18 22	5 21	18 40	5 44	19 28	5 56	18 42	5 38	19 01
13	5 35	18 53	5 01	18 38	5 11	18 23	5 21	18 41	5 43	19 29	5 56	18 43	5 38	19 03
17	5 35	18 54	5 02	18 39	5 11	18 24	5 21	18 42	5 44	19 31	5 57	18 44	5 38	19 04
21	5 36	18 55	5 02	18 40	5 12	18 25	5 22	18 43	5 44	19 32	5 58	18 45	5 39	19 05
25	5 37	18 56	5 03	18 41	5 13	18 26	5 23	18 44	5 45	19 32	5 59	18 46	5 40	19 05
29	5 38	18 56	5 05	18 41	5 14	18 26	5 24	18 45	5 47	19 33	6 00	18 46	5 41	19 06

सूर्योदयास्तकाल (भा. स्टैं. टा.)

नगर→	नागपुर (महा.)		पटना (बि.)		पुरी (उ.)		बिलासपुर (म.प्र.)		बीकानेर (राज.)		बंगलोर (क.)		भोपाल (म.प्र.)	
तारीख	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त
↓	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जुला. 3	5 39	18 56	5 06	18 41	5 15	18 27	5 25	18 45	5 48	19 33	6 01	18 47	5 43	19 06
7	5 41	18 56	5 08	18 41	5 16	18 27	5 27	18 45	5 50	19 33	6 02	18 47	5 44	19 06
11	5 42	18 56	5 09	18 41	5 18	18 26	5 28	18 44	5 52	19 32	6 03	18 47	5 45	19 05
15	5 44	18 55	5 11	18 40	5 19	18 26	5 30	18 44	5 54	19 31	6 04	18 47	5 47	19 05
19	5 45	18 54	5 13	18 38	5 21	18 25	5 32	18 43	5 56	19 29	6 05	18 46	5 49	19 04
23	5 47	18 53	5 15	18 37	5 22	18 24	5 33	18 41	5 58	19 28	6 06	18 46	5 51	19 02
27	5 49	18 52	5 17	18 35	5 24	18 22	5 35	18 40	6 00	19 25	6 07	18 45	5 53	19 01
31	5 50	18 50	5 19	18 33	5 25	18 21	5 37	18 38	6 02	19 23	6 08	18 44	5 54	18 59
अग. 4	5 52	18 48	5 21	8 30	5 27	18 19	5 38	18 36	6 04	19 20	6 09	18 42	5 56	18 56
8	5 53	18 45	5 23	18 27	5 28	18 16	5 40	18 33	6 07	19 17	6 10	18 41	5 58	18 54
12	5 55	18 43	5 25	18 24	5 29	18 14	5 41	18 31	6 09	19 14	6 10	18 39	5 59	18 51
16	5 56	18 40	5 26	18 21	5 30	18 11	5 43	18 28	6 11	19 10	6 11	18 37	6 01	18 48
20	5 57	18 37	5 28	18 17	5 32	18 08	5 44	18 25	6 13	19 06	6 11	18 35	6 02	18 45
24	5 58	18 33	5 30	18 13	5 33	18 05	5 45	18 21	6 15	19 02	6 11	18 32	6 04	18 41
28	5 59	18 30	5 31	18 09	5 33	18 02	5 47	18 18	6 17	18 58	6 12	18 30	6 05	18 38
सितं. 1	6 00	18 27	5 33	18 05	5 34	17 59	5 48	18 14	6 19	18 54	6 12	18 27	6 06	18 34
5	6 02	18 23	5 35	18 .01	5 35	17 55	5 49	18 10	6 21	18 49	6 12	18 25	6 07	18 30
9	6 03	18 19	5 36	17 57	5 36	17 52	5 50	18 07	6 23	18 44	6 12	18 22	6 09	18 26
13	6 03	18 15	5 38	17 53	5 37	17 48	5 51	18 03	6 24	18 40	6 12	18 19	6 10	18 22
17	6 04	18 12	5 39	17 48	5 38	17 44	5 52	17 59	6 26	18 35	6 12	18 16	6 11	18 18
21	6 05	18 08	5 41	17 44	5 39	17 41	5 53	17 55	6 28	18 30	6 12	18 13	6 12	18 14
25	6 06	18 04	5 42	17 39	5 39	17 37	5 54	17 51	6 30	18 26	6 12	18 10	6 14	18 10
29	6 07	18 00	5 44	17 35	5 40	17 33	5 56	17 47	6 32	18 21	6 12	18 08	6 15	18 06
अक्तू. 3	6 09	17 56	5 46	17 31	5 41	17 30	5 57	17 43	6 34	18 16	6 12	18 05	6 16	18 02
7	6 10	17 53	5 48	17 27	5 42	17 26	5 58	17 40	6 36	18 12	6 12	18 02	6 18	17 58
11	6 11	17 49	5 49	17 23	5 43	17 23	5 59	17 36	6 38	18 08	6 13	18 00	6 19	17 55
15	6 12	17 46	5 51	17 19	5 45	17 20	6 01	17 33	6 41	18 04	6 13	17 57	6 20	17 51
19	6 14	17 43	5 53	17 15	5 46	17 17	6 02	17 29	6 43	18 00	6 14	17 55	6 22	17 48
23	6 16	17 40	5 56	17 12	5 47	17 14	6 04	17 27	6 46	17 56	6 14	17 53	6 24	17 45
27	6 17	17 38	5 58	17 09	5 49	17 12	6 06	17 24	6 48	17 52	6 15	17 52	6 26	17 42
31	6 19	17 35	6 00	17 06	5 51	17 10	6 08	17 21	6 51	17 49	6 16	17 50	6 28	17 39
नवं. 4	6 21	17 33	6 03	17 03	5 53	7 08	6 10	17 19	6 54	17 46	6 17	17 49	6 31	17 37
8	6 23	17 31	6 05	17 01	5 55	17 06	6 12	17 17	6 57	17 44	6 19	17 48	6 33	17 35
12	6 26	17 30	6 08	16 59	5 57	17 05	6 15	17 16	7 00	17 41	6 20	17 47	6 35	17 33
16	6 28	17 29	6 11	16 57	5 59	17 04	6 17	17 14	7 03	17 39	6 22	17 47	6 38	17 32
20	6 31	17 28	6 14	16 56	6 01	17 03	6 20	17 14	7 06	17 38	6 24	17 47	6 41	17 31
24	6 33	17 28	6 17	16 55	6 04	17 03	6 22	17 13	7 09	17 37	6 26	17 47	6 43	17 30
28	6 36	17 28	6 20	16 55	6 06	17 03	6 25	17 13	7 12	17 37	6 28	17 47	6 46	17 30
दिसं. 2	6 38	17 28	6 23	16 55	6 09	17 03	6 28	17 13	7 15	17 36	6 30	17 48	6 49	7 30
6	6 41	17 29	6 25	16 56	6 11	17 04	6 30	17 14	7 18	17 37	6 32	17 49	6 52	17 31
10	6 43	17 30	6 28	16 56	6 14	17 05	6 33	17 15	7 21	17 37	6 34	17 51	6 54	17 32
14	6 46	17 31	6 31	16 58	6 16	17 07	6 35	17 16	7 24	17 39	6 36	17 52	6 57	17 33
18	6 48	17 33	6 33	16 59	6 18	17 08	6 38	17 18	7 26	17 40	6 39	17 54	6 59	17 35
22	6 50	17 35	6 35	17 01	6 20	17 10	6 40	17 20	7 28	17 42	6 41	17 56	7 01	17 37
26	6 52	17 37	6 37	17 03	6 22	17 12	6 42	17 22	7 30	17 44	6 42	17 58	7 03	17 39
30	6 54	17 39	6 38	17 06	6 24	17 15	6 43	17 24	7 31	17 47	6 45	18 00	7 04	17 41

सूर्योदयास्तकाल (भा. स्टैं. टा.)

नगर→	मुम्बई		रोहतक (हरि.)		वाराणसी (उ.प्र.)		शिमला (हि.प्र.)		श्रीनगर (ज.का.)		सागर (म.प्र.)		हैदराबाद (आं.)	
तारीख ↓	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
दिसं. 31	7 15	18 09	7 21	17 32	6 47	17 16	7 23	17 25	7 40	17 27	7 02	17 35	6 50	17 50
जन. 4	7 16	18 11	7 22	17 35	6 48	17 19	7 24	17 28	7 41	17 30	7 03	17 37	6 51	17 52
8	7 17	18 14	7 22	17 38	6 49	17 22	7 25	17 31	7 41	17 34	7 03	17 40	6 52	17 54
12	7 18	18 16	7 22	17 41	6 49	17 25	7 25	17 35	7 41	17 37	7 04	17 43	6 53	17 57
16	7 18	18 19	7 22	17 45	6 49	17 28	7 24	17 38	7 40	17 41	7 04	17 46	6 53	17 59
20	7 18	18 21	7 21	17 48	6 49	17 31	7 23	17 41	7 39	17 45	7 03	17 49	6 53	18 02
24	7 18	18 24	7 20	17 51	6 48	17 34	7 22	17 45	7 37	17 49	7 03	17 52	6 53	18 04
28	7 17	18 26	7 18	17 55	6 47	17 37	7 20	17 49	7 35	17 53	7 02	17 55	6 52	18 06
फर. 1	7 17	18 28	7 16	17 58	6 45	17 40	7 17	17 52	7 32	17 57	7 00	17 57	6 51	18 08
5	7 15	18 31	7 14	18 01	6 43	17 42	7 16	17 56	7 29	18 01	6 58	18 00	6 50	18 10
9	7 14	18 33	7 11	18 05	6 41	17 45	7 12	17 59	7 26	18 04	6 56	18 03	6 49	18 12
13	7 12	18 34	7 08	18 08	6 38	17 47	7 08	18 03	7 22	18 08	6 54	18 05	6 47	18 14
17	7 10	18 36	7 05	18 11	6 35	17 50	7 05	18 06	7 18	18 12	6 51	18 08	6 45	18 16
21	7 07	18 38	7 01	18 14	6 32	17 52	7 01	18 09	7 13	18 16	6 48	18 10	6 43	18 17
25	7 05	18 39	6 57	18 16	6 29	17 54	6 57	18 12	7 09	18 19	6 45	18 12	6 40	18 18
मार्च 1	7 02	18 41	6 53	18 19	6 25	17 56	6 52	18 15	7 04	18 23	6 41	18 14	6 38	18 20
5	6 59	18 42	6 49	18 22	6 21	17 59	6 48	18 18	6 59	18 26	6 38	18 16	6 35	18 21
9	6 56	18 43	6 44	18 24	6 17	18 00	6 43	18 21	6 54	18 29	6 34	18 18	6 32	18 22
13	6 53	18 44	6 40	18 27	6 13	18 02	6 38	18 24	6 48	18 32	6 30	18 19	6 29	18 23
17	6 49	18 45	6 35	18 29	6 09	18 04	6 33	18 26	6 43	18 35	6 26	18 21	6 26	18 23
21	6 46	18 46	6 30	18 31	6 05	18 06	6 28	18 29	6 38	18 38	6 22	18 23	6 23	18 24
25	6 43	18 47	6 25	18 33	6 01	18 07	6 23	18 31	6 32	18 42	6 18	18 24	6 20	18 25
29	6 39	18 48	6 21	18 36	5 57	18 09	6 18	18 34	6 27	18 45	6 14	18 26	6 16	18 26
अप्रै. 2	6 36	18 49	6 16	18 38	5 53	18 11	6 13	18 37	6 21	18 48	6 10	18 27	6 13	18 26
6	6 33	18 50	6 12	18 40	5 49	18 13	6 08	18 39	6 16	18 51	6 06	18 29	6 10	18 27
10	6 29	18 51	6 07	18 43	5 45	18 14	6 04	18 42	6 11	18 54	6 02	18 30	6 07	18 28
14	6 26	18 52	6 03	18 45	5 41	18 16	5 59	18 44	6 06	18 57	5 59	18 32	6 04	18 29
18	6 23	18 53	5 59	18 47	5 37	18 18	5 54	18 47	6 01	19 00	5 55	18 34	6 01	18 30
22	6 20	18 54	5 55	18 50	5 33	18 20	5 50	18 50	5 56	19 03	5 52	18 36	5 59	18 31
26	6 18	18 55	5 51	18 52	5 30	18 21	5 46	18 52	5 51	19 06	5 48	18 37	5 56	18 32
30	6 15	18 57	5 47	18 54	5 27	18 23	5 42	18 55	5 47	19 09	5 45	18 39	5 54	18 33
मई 4	6 13	18 58	5 44	18 57	5 24	18 25	5 38	18 58	5 43	19 12	5 43	18 41	5 52	18 34
8	6 11	18 59	5 41	18 59	5 21	18 27	5 35	19 00	5 39	19 15	5 40	18 43	5 50	18 36
12	6 09	19 01	5 38	19 02	5 19	18 29	5 32	19 03	5 36	19 18	5 38	18 45	5 48	18 37
16	6 08	19 02	5 36	19 04	5 16	18 31	5 29	19 06	5 33	19 21	5 36	18 47	5 47	18 38
20	6 07	19 04	5 33	19 07	5 15	18 33	5 27	19 08	5 30	19 24	5 34	18 49	5 46	18 40
24	6 06	19 05	5 32	19 09	5 13	18 35	5 25	19 11	5 28	19 27	5 33	18 51	5 45	18 41
28	6 05	19 07	5 30	19 11	5 12	18 37	5 23	19 13	5 26	19 30	5 32	18 53	5 44	18 43
जून 1	6 04	19 08	5 29	19 13	5 11	18 39	5 22	19 15	5 25	19 33	5 31	18 55	5 44	18 44
5	6 04	19 10	5 28	19 15	5 11	18 41	5 22	19 18	5 24	19 34	5 31	18 56	5 44	18 45
9	6 04	19 11	5 28	19 17	5 11	18 42	5 21	19 19	5 23	19 36	5 30	18 58	5 44	18 47
13	6 05	19 13	5 28	19 19	5 11	18 44	5 21	19 21	5 23	19 38	5 31	18 59	5 45	18 48
17	6 05	19 14	5 28	19 20	5 11	18 45	5 21	19 22	5 23	19 39	5 31	19 00	5 45	18 49
21	6 06	19 15	5 29	19 21	5 12	18 46	5 22	19 23	5 24	19 41	5 32	19 02	5 46	18 50
25	6 07	19 15	5 30	19 22	5 13	18 47	5 23	19 24	5 25	19 41	5 33	19 03	5 47	18 51
29	6 08	19 16	5 31	19 22	5 14	18 47	5 24	19 24	5 26	19 41	5 34	19 03	5 48	18 51

सूर्योदयास्तकाल (भा. स्टैं. टा.)

नगर→	मुम्बई		रोहतक (हरि.)		वाराणसी (उ.प्र.)		शिमला (हि.प्र.)		श्रीनगर (ज.का.)		सागर (म.प्र.)		हैदराबाद (आं.)	
तारीख	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त
↓	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जुला. 3	6 09	19 16	5 33	19 22	5 15	18 47	5 26	19 24	5 28	19 41	5 35	19 03	5 49	18 52
7	6 10	19 16	5 35	19 22	5 17	18 47	5 28	19 24	5 30	19 41	5 37	19 03	5 51	18 52
11	6 12	19 16	5 36	19 21	5 19	18 47	5 30	19 23	5 32	19 40	5 38	19 02	5 52	18 52
15	6 13	19 16	5 39	19 20	5 20	18 46	5 32	19 22	5 34	19 38	5 40	19 01	5 53	18 51
19	6 15	19 15	5 41	19 18	5 22	18 45	5 34	19 20	5 37	19 36	5 42	19 00	5 55	18 50
23	6 16	19 14	5 43	19 16	5 24	18 43	5 36	19 18	5 39	19 34	5 44	18 59	5 56	18 49
27	6 18	19 12	5 45	19 14	5 26	18 41	5 39	19 16	5 42	19 31	5 45	18 57	5 57	18 48
31	6 19	19 11	5 47	19 12	5 28	18 39	5 41	19 13	5 45	19 28	5 47	18 55	5 58	18 47
अग. 4	6 20	19 09	5 50	19 09	5 30	18 37	5 44	19 10	5 48	19 25	5 49	18 53	6 00	18 45
8	6 21	19 07	5 52	19 06	5 32	18 34	5 46	19 06	5 51	19 21	5 49	18 50	6 01	18 43
12	6 23	19 04	5 54	19 02	5 34	18 31	5 49	19 03	5 54	19 17	5 53	18 47	6 02	18 41
16	6 24	19 02	5 57	18 58	5 36	18 28	5 51	18 59	5 57	19 12	5 54	18 44	6 03	18 37
20	6 25	18 59	5 59	18 54	5 37	18 24	5 54	18 54	6 00	19 08	5 56	18 41	6 03	18 35
24	6 26	18 56	6 01	18 50	5 39	18 21	5 56	18 50	6 02	19 03	5 57	18 37	6 04	18 33
28	6 27	18 53	6 03	18 46	5 40	18 17	5 59	18 45	6 05	18 58	5 59	18 33	6 05	18 30
सितं. 1	6 27	18 50	6 05	18 41	5 42	18 13	6 01	18 41	6 08	18 52	6 00	18 29	6 06	18 27
5	6 28	18 46	6 07	18 37	5 44	18 09	6 03	18 36	6 11	18 47	6 02	18 25	6 06	18 23
9	6 29	18 44	6 09	18 32	5 45	18 05	6 06	18 31	6 14	18 42	6 03	18 21	6 07	18 20
13	6 30	18 39	6 11	18 27	5 47	18 01	6 08	18 26	6 16	18 36	6 04	18 17	6 07	18 17
17	6 30	18 36	6 13	18 22	5 48	17 56	6 10	18 20	6 19	18 30	6 06	18 13	6 08	18 13
21	6 31	18 32	6 15	18 18	5 50	17 52	6 13	18 15	6 22	18 25	6 07	18 09	6 08	18 10
25	6 32	18 29	6 17	18 13	5 51	17 48	6 15	18 10	6 25	18 19	6 08	18 05	6 09	18 07
29	6 32	18 25	6 19	18 08	5 53	17 43	6 17	18 05	6 28	18 14	6 10	18 01	6 09	18 03
अक्तू. 3	6 33	18 22	6 21	18 03	5 55	17 39	6 20	18 00	6 30	18 08	6 11	17 56	6 10	18 00
7	6 34	18 19	6 24	17 58	5 56	17 35	6 22	17 55	6 33	18 03	6 13	17 53	6 11	17 57
11	6 35	18 15	6 26	17 54	5 58	17 31	6 25	17 50	6 36	17 58	6 14	17 49	6 12	17 54
15	6 36	18 12	6 28	17 50	6 00	17 28	6 28	17 46	6 40	17 53	6 16	17 45	6 13	17 51
19	6 38	18 10	6 31	17 46	6 02	17 24	6 30	17 41	6 43	17 48	6 18	17 42	6 14	17 49
23	6 39	18 07	6 34	17 42	6 04	17 22	6 33	17 37	6 46	17 43	6 20	17 38	6 15	17 46
27	6 40	18 05	6 36	17 38	6 06	17 18	6 36	17 33	6 50	17 39	6 22	17 35	6 16	17 44
31	6 42	18 02	6 39	17 35	6 08	17 15	6 40	17 28	6 53	17 35	6 24	17 33	6 18	17 42
नवं. 4	6 44	18 00	6 42	17 32	6 11	17 12	6 43	17 26	6 57	17 31	6 27	17 30	6 19	17 40
8	6 46	17 59	6 45	17 29	6 14	17 10	6 46	17 24	7 01	17 28	6 29	17 28	6 21	17 39
12	6 48	17 58	6 48	17 27	6 17	17 08	6 49	17 21	7 04	17 25	6 32	17 26	6 23	17 38
16	6 50	17 57	6 51	17 25	6 19	17 07	6 53	17 19	7 08	17 22	6 34	17 25	6 25	17 37
20	6 52	17 56	6 55	17 23	6 22	17 06	6 56	17 17	7 12	17 20	6 37	17 24	6 27	17 36
24	6 55	17 56	6 58	17 22	6 25	17 05	7 00	17 16	7 16	17 19	6 40	17 23	6 29	17 36
28	6 57	17 56	7 02	17 22	6 28	17 05	7 03	17 15	7 19	17 18	6 43	17 23	6 32	17 37
दिसं. 2	7 00	17 57	7 04	17 21	6 31	17 05	7 06	17 15	7 23	17 17	6 45	17 23	6 34	17 37
6	7 02	17 57	7 07	17 21	6 33	17 05	7 09	17 15	7 26	17 17	6 48	17 24	6 37	17 38
10	7 04	17 58	7 10	17 22	6 36	17 06	7 12	17 15	7 29	17 17	6 51	17 25	6 39	17 39
14	7 07	18 00	7 13	17 23	6 39	17 07	7 15	17 16	7 32	17 18	6 53	17 26	6 41	17 41
18	7 09	18 01	7 15	17 25	6 41	17 09	7 18	17 18	7 35	17 20	6 56	17 27	6 43	17 42
22	7 11	18 03	7 17	17 27	6 44	17 11	7 20	17 20	7 37	17 21	6 58	17 29	6 45	17 44
26	7 13	18 06	7 19	17 29	6 45	17 13	7 22	17 22	7 39	17 24	7 00	17 32	6 47	17 46
30	7 15	18 08	7 21	17 31	6 47	17 15	7 23	17 24	7 40	17 26	7 01	17 34	6 49	17 49

पृष्ठ संख्या 271
चिरस्थायी बहुमूल्य काग़ज़ पर मुद्रित

व्रतपर्व–विवेक

साईज़-'मार्त्तण्ड पंचांग' के बराबर, सुदृढ़, आकर्षक टाईटल

[व्रतपर्वों की तिथियों (तारीखों) के निर्णायक नियमों पर सरल–सुबोध भाषा–शैली में लिखा एक प्रामाणिक अपूर्व प्रकाशन]

[सन् 2001 से 2050 ई. तक के रामनवमी, दशहरा, दीपावली आदि सभी हिन्दु व्रतपर्वों की तारीखों की तैयार लम्बी सूची।]

इस पुस्तक में हिन्दुओं के चैत्र आदि 12 मासों के व्रतपर्वों के निर्णय का विशद विवेचन निर्णयसिन्धु, धर्मसिन्धु आदि धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों के प्रमाण–वाक्यों के आधार पर ऐसी सरल भाषा–शैली में किया गया है कि– हिन्दी जानने वाला कोई भी इसे पढ़कर, रामनवमी आदि किसी भी व्रतपर्व की तारीख का निर्णय आसानी से कर सकता है। विभिन्न पंचांगों में किसी व्रतपर्व की तारीख के बारे में मतभेद होने पर इस पुस्तक में दिए गए नियमों के अनुसार यह निर्णय आप अधिकारपूर्वक कर सकते हैं कि– किस पंचांग की तारीख शुद्ध है।

व्रतपर्वों की तारीख का निर्णय पञ्चांङ्गकार किन नियमों के आधार पर करते हैं– यह सब शास्त्रीय प्रमाणों द्वारा विस्तारपूर्वक हिन्दी में समझाया गया है। व्रतपर्वों के निर्णायक धर्मशास्त्रीय सैकड़ों संस्कृतवाक्य, श्लोक हिन्दी–अनुवादसहित उद्धृत किए गए हैं। प्रातः, संगव, मध्याह्न, अपराह्ण, सायं, प्रदोष, अरुणोदय, निशीथ, पूर्वविद्धा–परविद्धा तिथि आदि सभी पारिभाषिक कठिन शब्दों की (जिनका प्रयोग व्रतपर्व–निर्णय के प्रसंग में बार–बार आता है) सुस्पष्ट व्याख्या की गई है और इन्हें जानने की गणितप्रक्रिया से मुक्ति दिलाने वाले अनेक कोष्ठक आपको यहां मिलेंगे।

इस पुस्तक में दिए गए अनेक महत्वपूर्ण विषयों में से कुछेक की ओर हम पाठकों का ध्यान यहां आकृष्ट करते हैं–

(i) हिन्दु व्रतपर्वों के निर्णायक नियमों–सिद्धान्तों की सरल व्याख्या दी गई है।

(ii) हिन्दु व्रतपर्वों में यदा–कदा पैदा होने वाले मतभेद के कारण और उनके प्रतिकार बतलाए गए हैं।

(iii) चैत्रादि 12 चान्द्रमासों के 24 पक्षों में मनाए जाने वाले नवरात्रारम्भ, श्रीरामनवमी, अक्षयतृतीया, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, श्राद्धारम्भ–समाप्ति, दीपावली आदि सभी व्रतपर्वो के निर्णायक नियमों का विस्तृत विवेचन तथा धर्मशास्त्रों के सभी अपेक्षित व्रतपर्वनिर्धारक संस्कृत–प्रमाणवाक्यों को उद्धृत कर, इन व्रतपर्वो की तिथि (तारीख) का निर्धारण–प्रकार सोदाहरण स्पष्ट किया गया है।

(iv) किस व्रतपर्व के मनाने का शास्त्रीय–विधान क्या है ? व्रतदिन की चर्या कैसी हो ? व्रतदिन में पूजा–पाठ कैसे किया जाए ? व्रतदेवता की पञ्चोपचार या षोडशोपचार पूजा कैसे, किस मन्त्र से, किन उपकरणों (सामग्री) से की जाए, व्रत में देवता का ध्यानमन्त्र क्या है ? व्रत में क्या खाएं, क्या न खाएं ? व्रती के लिए क्या विधि–निषेध है ? व्रतपारणा (व्रत के अन्त में किए जाने वाले भोजन) का समय क्या है ? पारणा में कौन–कौन से पदार्थ भक्ष्य और कौन से वर्ज्य हैं ? सूतक–पातक में व्रत कैसे किया जाए ? रजस्वला स्त्री व्रत के दिन क्या करे ? व्रतभंग होने पर क्या प्रायश्चित्त है ? सूर्य–चन्द्रग्रहण के समय स्नान–दान–जपादि का क्या विधान है ? – इत्यादि पचासों ज्ञातव्य विषयों पर सप्रमाण पूर्ण प्रकाश डाला गया है।

(v) आधुनिक युग के व्यस्त जीवन को दृष्टि में रखते हुए व्रतदेवता की पूजादि का सारगर्भ संक्षिप्त विधान दिया गया है, जिसे 10–15 मिनटों में ही कोई भी व्यक्ति स्वयं कर्मकाण्डी विद्वान् की सहायता के बिना ही कर सकता है। नवरात्र–घटस्थापन, रामनवमी–पूजा, श्राद्ध–तर्पण, दीपावली पर महालक्ष्मी पूजनादि सभी व्रतपर्वसम्बन्धी अनुष्ठानों को आप स्वयं कर सकें– ऐसी बालबोध शैली में समझाया गया है। लगभग सभी व्रतदेवताओं के संस्कृत–स्तोत्र भी दिए गए हैं।

(vi) करवाचौथ आदि व्रतपर्वों के उद्यापन की सरल प्रक्रिया बिना किसी विशेषज्ञ की मदद के कोई भी गृहिणी स्वयं कर सके–ऐसा सरल विधानसहित निर्देश है।

(vii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के नवरात्रारम्भ, प्रदोषव्रत, एकादशीव्रत, दशहरा, दीपावली आदि लगभग सभी हिन्दु–व्रतपर्वों की अंग्रेज़ी तारीखों की लम्बी सूची दी गई है।

(viii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के सूर्य–चन्द्रग्रहणों, हरिद्वार, प्रयाग, नासिक, उज्जैन के कुम्भपर्वों की तारीखें।

(ix) सन् 2001 से 2050 ई. तक के गुरु–शुक्रास्तकाल, गजच्छाया, अर्धोदय आदि पर्व।

(x) सन् 2001 से 2050 ई. तक के प्रमुख–प्रमुख जैन–पर्वों की तारीखें।

(xi) सन् 2001 से 2050 ई. तक के चैत्रादि मासों के चन्द्रदर्शन की तारीखें, तदनुसार मुहर्रम आदि मुस्लिम मासों की प्रारम्भ–तारीखें एवम् मुहर्रम, ईद–उल–फित्र आदि मुस्लिम त्योहारों की तारीखों का ज्ञानप्रकार।

(xii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के सिक्ख–गुरुपर्वों की तारीखें।

(xiii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के ईस्टर सण्डे, गुडफ्राईडे की तारीखें और तदनुसार अन्य क्रिश्चियन पर्वों की तारीखों का तुरन्त निर्णय करने वाली अद्भुत तालिका।

(xiv) सभी प्रमुख व्रतों की माहात्म्य कथाएं।

(xv) सभी प्रमुख व्रतों के देवी–देवताओं की आरतियां एवं स्तोत्र।

इन उपरोक्त विषयों के अलावा व्रतपर्वों से सम्बद्ध अन्य बीसों विषय आपको इस पुस्तक में मिलेंगे। इसे खरीद लीजिए। बस, आगामी 43 वर्षों तक (सन् 2050 ई. तक) व्रतपर्वों की तारीखें जानने के लिए पंचांग, डायरी या कैलेण्डर खरीदने की आपको ज़रुरत नहीं होगी।

हमारी पुस्तकें केवल "अभिजित् प्रकाशन, कोठी नं. 59/6, पंचकूला से ही मिलेंगी। इन्हें बेचने का अधिकार अन्य किसी भी बुकसेलर को नहीं दिया गया है।

मूल्य Rs. 400/– + Rs. 50/– डाकव्यय

सम्पर्कसूत्र– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर–6, P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303

सफलता की राह : कार्यस्थल – वास्तु

लेखिका- सुमन पंडित मूल्य : रुपये 125.00 (डाक व्यय अलग)

भवन निर्माण एक कला है और जिस भवन में आप रहते हैं या जहाँ से आपका कारोबार चलता है, आपके लिए सौभाग्यदायक भी हो सकता है और दुर्भाग्यपूर्ण भी। हममें से अधिकांश लोग प्रतिदिन कम-से-कम आठ घंटे अपने कार्यस्थल पर बिताते हैं। आप नौकरी पेशा हों, अपना व्यवसाय चलाते हों, कन्सल्टेंट हों या उद्योगपति, कार्यक्षेत्र में सफलता और समृद्धि की कामना सर्वोपरि होती है। वास्तुशास्त्र एक दक्ष एवम् तनाव मुक्त कार्यस्थल का निर्माण करता है। कार्यस्थल वास्तु का लक्ष्य एक स्फूर्तिदायक, उत्साहवर्धक और कार्य सक्षम परिवेश प्रदान करता है। *इस पुस्तक में वास्तुशास्त्र के शास्त्रीय रूप के साथ-साथ आधुनिक परिप्रेक्ष्य में :-*

- ❖ कार्यालय ❖ अस्पताल/नर्सिंग होम
- ❖ बहुमंजिला भवन ❖ शोरूम तथा दुकानें
- ❖ सिनेमा हाल / परिसर ❖ होटल/रिसार्ट
- ❖ उद्योग ❖ शापिंग सेंटर ❖ बैंक/ शिक्षा संस्थान

को अधिक लाभप्रद, उत्पादक और सफल बनाने के वास्तुसम्मत, सहज और सटीक उपाय, सुझाव और समाधान दिए गये हैं। इसमें व्यावसायिक भूखण्ड के चयन से लेकर बने हुए भवनों में विद्यमान वास्तु दोषों से मुक्ति के उपाय भी बताए गये हैं। इस प्रकार बिना तोड़-फोड़ और कम खर्च में किए गए परिवर्तनों द्वारा आप अपने कारोबार को सौभाग्य का प्रतीक बना सकते हैं। आप चाहे नौकरी पेशा हों या उद्योगपति, कार्यक्षेत्र में सफलता और समृद्धि की कामना करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह एक अत्यन्त उपयोगी और अनिवार्य पुस्तक है।

"सम्पूर्ण हिन्दू चिन्तन" (हिन्दी) एवं Complete Hindu Thought (English)

मूल्य- 35/-(हिन्दी), 40/- (English) (डाक व्यय अलग)

इस किताब में हिन्दू धर्म से सम्बन्धित हर पक्ष और कोण का समावेश है। यह पुस्तक न केवल हिन्दू धर्म के प्रत्येक जिज्ञासु के लिए बल्कि सर्वसाधारण के लिए भी बहुत उपयोगी है। विशिष्ट विषयों पर चर्चा छोटे-छोटे निबन्धों के रूप में की गई है। पुस्तक की भाषा बहुत ही सरस व सरल है।

प्रसन्न मन व स्वस्थ शरीर का रहस्य

-ले.: पण्डित रविन्द्र लाखोटिया

इस पुस्तक में कार्मिक ज्ञान, मन्त्र अराधना, दैनिक दिनचर्या में व्यवहार, ध्यान व योग (मुद्रा सहित), भारतीय आयुर्वेदिक मालिश (मुद्रा सहित), मुद्रा चिकित्सा, रेकी, क्रिस्टल हिलिंग, डाउसिंग एवं फूलो के द्वारा चिकित्सा सभी पूर्ण रुप से रंगीन चित्रों सहित दी गई है। मूल्य 80/- रुपये (डाक खर्च सहित)

सुख-समृद्धि की राह : गृह-वास्तु

लेखिका- सुमन पंडित

वास्तुशास्त्र मानवमात्र के अधिकतम शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक कल्याण के लिए है। एक वास्तु सम्मत घर आपकी सभी कामनाओं और लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक सिद्ध हो सकता है और आपको प्रदान कर सकता है :-

- ❖ सुख और समृद्धि ❖ उत्तम दाम्पत्य जीवन
- ❖ स्वास्थ्य और रोग से मुक्ति ❖ उत्तम शिक्षा और
- ❖ घर और व्यवसाय में सफलता
- ❖ एक बेहतर जीवन प्रणाली

इस पुस्तक में वास्तुशास्त्र के सिद्धांत एवम् व्यवहार दोनों पक्षों का आधुनिक संदर्भ में संश्लिष्ट रूप से विवेचन किया गया है। **भूखण्ड का चयन, भवन निर्माण प्रक्रिया, वास्तु नियोजन से लेकर आंतरिक साज-सज्जा** तक प्रयोग में आने वाले वास्तु नियमों का इस पुस्तक में एक व्यवहारिक, क्रमबद्ध और सहज सुगम रूप से प्रस्तुत किया गया है। **फ्लैट्स के चयन** और आंतरिक साज-सज्जा द्वारा उनमें अधिकतम ऊर्जा के संचार के लिए सरल सटीक उपाय भी इस पुस्तक में दिए गये हैं जो आधुनिक संदर्भ में अत्यन्त प्रासंगिक हैं। वास्तुशास्त्र के विद्यार्थियों, विद्वानों और सुखसमृद्धि की कामना करने वाले सामान्य व्यक्तियों-सभी के लिए यह अत्यन्त उपयोगी और अनिवार्य पुस्तक है। *मूल्य : रुपये 125.00 (डाक व्यय अलग)*

अनुभूत फलित सिद्धांत

लेखक – श्री सीताराम स्वामी ज्योतिषाचार्य

एम.ए., बी.एड., प्रभाकर, दैवज्ञभूषण, ज्योतिष शिरोमणि, ज्योतिष वाचस्पति

इस ग्रन्थ में राशि, ग्रह व भिन्न-भिन्न भावों के कारकों से उत्पन्न शुभाशुभ योग, धनयोग, विवाह योग आदि महत्वपूर्ण फलित सिद्धान्तों को सरल सरस एवं सुरुचिपूर्ण भाषा द्वारा लघु ग्रन्थ के रूप में पिरोकर ज्योतिष प्रेमी पाठकों के कर-कमलों में समर्पित किया है। ''हर्षल'' एवं ''नेपच्यून का मानव जीवन पर प्रभाव'' विषय पर अलग से संभवतया, प्रथम बार प्रकाश डालकर विद्वान् लेखक ने इस लघु ग्रन्थ की विशेषता को उजागर किया है। ''कालसर्प योग'' पर वर्गीकरण बड़े विस्तारेण कर लेखक ने संभवत: प्रथम बार प्रकाश में लाकर लघुग्रन्थ की विशेषता को चार चाँद लगाने जैसा कार्य कर अति श्रम का परिचय दिया है जो स्पष्टतया झलकता है।

ज्योतिष के विद्यार्थियों के लिए तो यह पुस्तक एक निधि से कम मूल्य नहीं रखती है। यहाँ पर ग्रहों, भावों, भावेश के कारकत्व के संबंध में ऐसी अनेकों सूचियाँ दी हैं कि अन्य ग्रन्थों से इसकी विशेषता का पृथक् आभास स्वयमेव हो जाता है।

मूल्य : 80/- + 30/- (डाक व्यय)

प्राप्ति स्थान:- अग्रवाल बुक डिपो 460, खारी बावली, दिल्ली - 110 006 ☎ 23943254

॥ श्री राम ॥
पन्ना हीरा मोती
पुखराज माणिक मूंगा
लहसुनिया नीलम गोमेद
राशि-रत्न + उपरत्न
EMERALD DIAMOND PEARL
YELLOW SAPPHIRE RUBY RED CORAL
CAT'S EYE BLUE SAPPHIRE GOMED
ज्योतिषाचार्यों के लिये विशेष
हमारे यहाँ हर प्रकार के राशि-रत्न + उपरत्न एवं नवरत्नों के ओपन सेट,
1 से 14 मुखी रूद्राक्ष, स्फटिक और रूद्राक्ष की मालाऐं इत्यादि
100% शुद्ध गारन्टी के साथ मिलने का विश्वसनीय स्थान।
मुफ्त रेट लिस्ट के लिये लिखें
अधिक जानकारी के लिये स्वयं मिले या पत्र-व्यवहार करें।
माल V.P.P. या बैंक द्वारा भी भेजा जाता है।
S. पूरणमल कमलकिशोर• ज्वैलर्स (रजि.)
दु. नं. 30-31, कानोता हाऊस, हल्दियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)
फोन : (दु.) 91-0141-2570540, टेलिफेक्स-2568446, निवास-2634889 मो. : 98290 63818
E-mail : info@astralsgems.com• Website : www.astralsgems.com
शताब्दी की सबसे महत्वपूर्ण विलक्षण घटना
लंकाधिपति दशानन रावण कृत ज्योतिष, औषधिविज्ञान,
रसायन शास्त्र, दार्शनिक विचारों और नीति शास्त्र के अनुपम ग्रन्थ
रावण संहिता
का हस्तलिखित रूप में प्रकाशन
महान् विद्वान रावण द्वारा रचित ज्योतिष, औषधि-विज्ञान और तंत्रशास्त्र का यह ज्ञान यद्यपि मूल रूप में रचित एक ग्रंथ के रूप में कहीं उपलब्ध नहीं, परन्तु ज्ञान की धारा दृष्टि से ओझल भले ही हो जाए वह विलुप्त नहीं होती। ज्ञान के यत्र-तत्र बिखरे इन बिन्दुओं, किरणों और मोतियों को एक स्थान पर संग्रहित किया गया है रावण संहिता नामक इस हस्तलिखित वृहद् ग्रंथ में। प्रस्तुत ग्रंथ पांच खण्डों में विभक्त है। प्रथम खण्ड में लंकाधिपति रावण के वंश का परिचय, जन्म की कथा, उनके महान् कार्यों और ज्ञानवान स्वरूप की झांकी प्रस्तुत की गई है। द्वितीय खण्ड में लंकेश द्वारा रचित माने जाने वाले चिकित्सा विज्ञान और औषधिशास्त्र से संबंधित एक हजार एक सौ श्लोकों का हिन्दी अनुवाद तथा अनेक जटिल रोगों के निदान से संबंधित जानकारियां संग्रहित हैं। तृतीय खण्ड में तंत्रशास्त्र एवं तांत्रिक क्रियाओं से संबंधित प्राचीनतम ज्ञान का संकलन है तो चतुर्थ खण्ड में हैं सहस्त्राधिक कुण्डलियां। पंचम खण्ड में कुण्डलियों के फलादेश दिए गए हैं जो लगभग साढ़े छः सौ पृष्ठों में हैं।
इस ग्रंथ की दक्षिणा मात्र 2500/- पच्चीस सौ रुपये रखी गई है, डाक व्यय 100/-रु. अलग। 500/-रु. (पाँच सौ रुपये) पेशगी भेजकर शेष 2100/- (इक्कीस सौ रुपये) की वी.पी. द्वारा यह ग्रंथ आप घर बैठे भी प्राप्त कर सकते हैं।
प्राप्ति स्थान:- अग्रवाल बुक डिपो 460, खारी बावली, दिल्ली - 110 006 ☎ 23943254
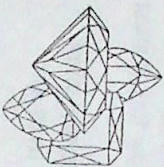
कुण्डली–मिलान की समस्या का समाधान

अब

'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग के सम्पादक तथा "ग्रहयोग एवम् दाम्पत्यजीवन" जैसे प्रामाणिक मिलान ग्रन्थ के यशस्वी लेखक– प्रो. प्रियव्रत शर्मा की विदुषी शिष्या सुपुत्री श्रीमती वीना चतुर्वेदी M.A., M.Phil करेंगी।

प्रो. प्रियव्रत शर्मा जी की एकमात्र सन्तति **श्रीमती वीना चतुर्वेदी** ने अपने पिताश्री के सान्निध्य में रहते हुए उनसे खगोल शास्त्र तथा फलितशास्त्र का गहन ज्ञान प्राप्त किया है। वे अब भी उन्हीं के पास रहती हुई ज्योतिष–अनुसन्धान कार्य में तीव्र रुचि से संलग्न हैं। मिलान पर आपको अद्वितीय विशेषज्ञता प्राप्त है। मिलान सम्बन्धी प्रामाणिक निर्णय के लिए आप इनका बहुमूल्य परामर्श डाक द्वारा प्राप्त कर सकते हैं।

मिलान के लिए वर–कन्या–दोनों के निम्नलिखित पदार्थ हमें भेजिए–

(i) नाम।
(ii) जन्मकुण्डलियां।
(iii) जन्मस्थान (देश, प्रान्त, ज़िला, नगर)।
(iv) जन्म तारीख (जन्मकालिक अंग्रेज़ी तारीख)।
(v) जन्मकालिक एवं उससे अगला वार।
(vi) जन्म समय (स्टैं. टा.)।
(vii) जन्मनक्षत्र एवं जन्मनक्षत्र का चरण।
(viii) जन्मकालिक स्पष्टग्रह।
(ix) जन्मकालिक स्पष्टलग्न (राशि, अंश, कला)।

मिलाननिर्णय हिन्दी या इंग्लिश–दोनों में से किसी भी भाषा में आप प्राप्त कर सकते हैं। अपनी अभीष्ट भाषा हमें बतलाइए।

मिलान का विस्तृत लिखित निर्णय संहिता, मुहूर्त्तग्रन्थों के उद्धरणों सहित भेजा जाएगा। मंगलीदोष तथा वर्ण, गण, नाड़ी आदि दोषों के सम्भव परिहार भी सप्रमाण पूरी तरह स्पष्ट किए जाएंगे। सभी संस्कृत के प्रमाणवाक्यों (श्लोकों) का सरल अनुवाद भी हिन्दी या इंग्लिश में दिया जाएगा, ताकि सर्वसाधारण भी समझ सके कि किन गुण, दोषों के कारण मिलान को स्वीकार या अस्वीकार किया गया है।

मिलाननिर्णय की फीस Rs. 1100/– है। पूरी फीस श्रीमती वीना चतुर्वेदी के नाम M.O. या D.D. द्वारा नीचे लिखे पते पर भेजिए। मिलाननिर्णय रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा भेजा जाएगा। V.P.P. से भेजने का नियम नहीं है।

अपना पता **Pin Code** सहित साफ–साफ अक्षरों में लिखिए। **T.Phone** या **Mobile** नम्बर अवश्य भेजिए।

नोटः– यदि वर या कन्या की जन्मकुण्डली आदि नहीं है, तो उसका/उनका जन्मस्थान, जन्मतारीख, जन्मसमय ही लिख भेजिए। ध्यान रहे– इस स्थिति में आपको अलग से **Rs. 500/–** और भेजने होंगे।

पताः– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil D/o प्रो. प्रियव्रत शर्मा,
कोठी नं. 59, सैक्टर- 6, P.O. पंचकूला-(हरियाणा) -Pin- 134 109
PHONE- 0172-2565303

श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय के नियम

हमारे यहा जन्मपत्र एवं वर्षफल शुद्ध गणित से बनाए जाते हैं, जिनमें आयु, रोग, सन्तान, स्त्री, धन एवं भाग्योदय, तरक्की आदि का निर्णय किया जाता है।

जन्मपत्र की फीस:– साधारण जन्मपत्र की फीस कम से कम 550 रु. और बड़े जन्मपत्र की फीस 750 रु. है। डाकव्यय अलग होगा। **विदेशी जन्मपत्र** कम्प्यूटर से तैयार की गई सारणियों से बड़ी सावधानी के साथ बनाए जाते हैं, गणित विशेष परिश्रम से करनी पड़ती है, अतः जिनका जन्म विदेश में हुआ हो, उनके साधारण जन्मपत्र की फीस कम से कम 750 रु. है। यदि आप वर्षफल बनवाना चाहते हैं, तो अपनी जन्मकुण्डली की नकल व पेशा लिखकर भेजें। जन्मपत्र बनवाने के लिए जन्म तारीख, मास, सन्, जन्मसंवत्, जन्मटाईम, जन्मस्थान, जाति, पेशा एवं विशेष विचारणीय विषय भी लिखना न भूलें। टेवा की फीस 51 रु. है।

भारतीय वर्षफल की फीस साधारणतया 200 रु. है। विस्तृत फलादेश वाले वर्षफल की फीस 301 रु. है। विदेशी साधारण वर्षफल की फीस 351 रु. एवं विस्तृत की फीस 501 रु. है। जिनकी कुण्डली न हो, वे व्यक्ति पत्र लिखने का समय, तारीख़ एवं अपनी अन्दाजन उम्र, पेशा, जाति अवश्य लिखें। वर्षफल का आर्डर देते समय यह लिखना जरुरी है, कि इस वर्ष आपके वर्षफल में किन बातों पर विशेष रूप से विचार किया जाए। शुद्ध विवाहमुहूर्त जानने की फीस 251 रु. है और वर–कन्या की कुण्डली मिलान की फीस 251 रु. है। जन्मपत्र एवं वर्षफल हिन्दी में सुन्दर और विस्तृत फलादेश सहित बनाए जाते हैं। आर्डर के साथ पूरी फीस पेशगी भेजे। **सर्वसाधारण प्रश्न की फीस 201 रु. है।**

नोट:– प्रत्येक काम की पूरी फीस आर्डर के साथ ही भेजें। वी.पी.पी. नहीं की जाएगी। बिना पेशगी के कोई भी कार्य नहीं किया जाएगा।

व्यापारियों के लिए चाँस

हम समय–समय पर रुई, बिनौला, सरसों, गुड़, खाण्ड एवं शेयर मार्कीट आदि के चास देते हैं। वर्षों से अनेकों व्यापारी हमारे परामर्श से लाभ उठाते आ रहे हैं। एक जिन्स की लिखित रिपोर्ट की अडवांस फीस 2500 + 50 रुपये डाकव्यय प्रतिमास एवम् वर्षभर की फीस 25000 + 500 रु. डाकव्यय के हिसाब से चार्ज किए जाते हैं। सोना, चान्दी, तांबा आदि धातुओं की दैनिक तेज़ी–मन्दी जानने एवम् लिखित Advance report प्राप्त करने की फीस 5000 (पांच हजार) रु. + 50 रु. डाकव्यय प्रतिमास एवम् वर्षभर की फीस 50,000 (पचास हजार) रु. + 500 रु. डाकव्यय भेजने होंगे। जिन्होंने Advance Fee लिखित Report के लिए भेजी होगी, वे Telephone के माध्यम से बिना फीस के ताजा मशवरा (एक मास तक) प्राप्त कर सकेंगे। विस्तृत विज्ञापन व्यापार विमर्श के अन्त में देखें।

जो व्यापारी साल में प्रमुख–प्रमुख केवल एक–दो हज़ार व्यापार के चास ही चाहते हैं, वे 5000 रु. भेजकर रजि. में नाम दर्ज करा सकते हैं। जिन व्यापारियों के नाम रजिस्टर में दर्ज होंगे, हम केवल उन्हें ही अपने विचार भेज सकेंगे।

पत्रव्यवहार करते समय साफ–साफ डाक पते के साथ PHONE No. लिखना न भूलें।

सर्दियों में – प्रातः 9 से 2 बजे तक।
गर्मियों में – प्रातः 8 से 2 बजे तक।

दूर से आने वाले सज्जन पत्र या टेलीफोन से पूज्य पण्डित जी से मिलने का दिन एवं समय पहले ही निश्चित कर लें।

पुंसवनी (अभीष्ट सन्तानप्राप्ति के लिए दिव्य औषधि)

इस ईश्वरप्रदत प्रभावयुक्त दिव्यौषधि को गर्भ के दूसरे मास के अन्त में सेवन करने से अभीष्ट (मनचाही) संतान ही उत्पन्न होती है। इस अद्भुत औषधि की प्रशंसा में असंख्य पत्र और ईनाम प्राप्त हुए हैं। मूल्य 700 रु. + 50 रु. पैकिंग एवं डाकव्यय, कुल राशि 750 रु. भेजें। वी.पी.पी. नहीं की जाएगी।

सिद्ध शनियन्त्र–विधिपूर्वक शुभमुहूर्त में बने इस यन्त्र को धारण करने से शनिजन्य अशुभफल, पीडा, चिन्ता आदि से मुक्ति मिलती है, अनुभव करें। भेंट– 251 रु., डाकव्यय अलग।

श्री लक्ष्मी यन्त्र– अष्टगन्धादि से विधिपूर्वक बनाए गए इस यंत्र को विधिवत् पूजास्थान या गल्ले में रखने से लक्ष्मी की कृपा रहती है, कोष में भारी बरकत रहती है। तुजुर्बा लें। भेंट– 551 रु., डाकव्यय अलग।

अठराहा नाशक यन्त्र– जिन औरतों के प्यारे बच्चे देवदोष, गर्भदोष व अठराहा, मसानदोष के कारण मर जाते हैं, उनके लिए यह यन्त्र वरदानरूप सिद्ध हो चुका है। विधिपूर्वक निर्मित इस यन्त्र के प्रभाव से बच्चे दीर्घायु होकर, सैंकड़ों माता–पिता को सुखी कर रहे हैं। तजुर्बा करके चमत्कार देखें। विधानपत्र साथ भेजा जाता है। भेंट– 251 रु., डाकव्यय अलग।

सिद्ध गोपाल यन्त्र– इस सिद्ध यन्त्र को विधिपूर्वक श्रद्धासहित स्त्री धारण करे, तो चिरंजीव पुत्र की प्राप्ति होती है। आर्डर देते समय स्त्री का नाम अवश्य लिखें। विधानपत्र साथ भेजा जाएगा। भेंट– 501 रु., डाकखर्च पृथक।

गुरुवार को कार्यालय में अवकाश रहता है।

पत्र व्यवहार के लिए पता–
पं. संयमी शर्मा, M.A., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,
सुपुत्र– पं. इन्दुशेखर शास्त्री, ज्योतिषाचार्य, M.A.,
श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, (नजदीक रेलवे स्टेशन),
मु. पो. कुराली (अजीत नगर–मोहाली), पंजाब, PIN– 140 103,
[PHONE– 0160-264 1277, FAX- 264 1577]

Laser Typesetting by : Gyani Kartar Singh Gadh, at Kanwal Video & Photostate, Kurali. Ph.: [illegible]

श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय के नियम

हमारे यहां जन्मपत्र एवं वर्षफल शुद्ध गणित से बनाए जाते हैं, जिनमें आयु, रोग, सन्तान, स्त्री, धन एवं भाग्योदय, तरक्की आदि का निर्णय किया जाता है।

जन्मपत्र की फीसः– साधारण जन्मपत्र की फीस कम से कम 550 रु. और बड़े जन्मपत्र की फीस 750 रु. है। डाकव्यय अलग होगा। विदेशी जन्मपत्र कम्प्यूटर से तैयार की गई सारणियों से बड़ी सावधानी के साथ बनाए जाते हैं, गणित विशेष परिश्रम से करनी पड़ती है, अतः जिनका जन्म विदेश में हुआ हो, उनके साधारण जन्मपत्र की फीस कम से कम 750 रु. है। यदि आप वर्षफल बनवाना चाहते हैं, तो अपनी जन्मकुण्डली की नकल व पेशा लिखकर भेजें। जन्मपत्र बनवाने के लिए जन्म तारीख, मास, सन्, जन्मसंवत्, जन्मटाईम, जन्मस्थान, जाति, पेशा एवं विशेष विचारणीय विषय भी लिखना न भूलें। टेवा की फीस 51 रु. है।

भारतीय वर्षफल की फीस साधारणतया 200 रु. है। विस्तृत फलादेश वाले वर्षफल की फीस 301 रु. है। विदेशी साधारण वर्षफल की फीस 351 रु. एवं विस्तृत की फीस 501 रु. है। जिनकी कुण्डली न हो, वे व्यक्ति पत्र लिखने का समय, तारीख़ एवं अपनी अन्दाजन उम्र, पेशा, जाति अवश्य लिखें। वर्षफल का आर्डर देते समय यह लिखना जरुरी है, कि इस वर्ष आपके वर्षफल में किन बातों पर विशेष रूप से विचार किया जाए। शुद्ध विवाहमुहूर्त जानने की फीस 251 रु. है और वर–कन्या की कुण्डली मिलान की फीस 251 रु. है। जन्मपत्र एवं वर्षफल हिन्दी में सुन्दर और विस्तृत फलादेश सहित बनाए जाते हैं। आर्डर के साथ पूरी फीस पेशगी भेजें। सर्वसाधारण प्रश्न की फीस 201 रु. है।

नोटः– प्रत्येक काम की पूरी फीस आर्डर के साथ ही भेजें। वी.पी.पी. नहीं की जाएगी। बिना पेशगी के कोई भी कार्य नहीं किया जाएगा।

व्यापारियों के लिए चाँस

हम समय–समय पर रुई, बिनौला, सरसों, गुड़, खाण्ड एवं शेयर मार्कीट आदि के चांस देते हैं। वर्षों से अनेकों व्यापारी हमारे परामर्श से लाभ उठाते आ रहे हैं। एक जिन्स की लिखित रिपोर्ट की अडवांस फीस 2500 + 50 रुपये डाकव्यय प्रतिमास एवम् वर्षभर की फीस 25000 + 500 रु. डाकव्यय के हिसाब से चार्ज किए जाते हैं। सोना, चान्दी, तांबा आदि धातुओं की दैनिक तेजी–मन्दी जानने एवम् लिखित Advance report प्राप्त करने की फीस 5000 (पांच हजार) रु. + 50 रु. डाकव्यय प्रतिमास एवम् वर्षभर की फीस 50,000 (पचास हजार) रु + 500 रु. डाकव्यय भेजने होंगे। जिन्होंने Advance Fee लिखित Report के लिए भेजी होगी, वे Telephone के माध्यम से बिना फीस के ताजा मशवरा (एक मास तक) प्राप्त कर सकेंगे। विस्तृत विज्ञापन व्यापार विमर्श के अन्त में देखें।

जो व्यापारी साल में प्रमुख–प्रमुख केवल एक–दो हाजर व्यापार के चांस ही चाहते हैं, वे 5000 रु. भेजकर रजि. में नाम दर्ज करा सकते हैं। जिन व्यापारियों के नाम रजिस्टर में दर्ज होंगे, हम केवल उन्हें ही अपने विचार भेज सकेंगे।

पत्रव्यवहार करते समय साफ–साफ डाक पते के साथ PHONE No. लिखना न भूलें।

सर्दियों में -- प्रातः 9 से 2 बजे तक।
गर्मियों में -- प्रातः 8 से 2 बजे तक।

दूर से आने वाले सज्जन पत्र या टेलीफोन से पूज्य पण्डित जी से मिलने का दिन एवं समय पहले ही निश्चित कर लें।

पुंसवनी (अभीष्ट सन्तानप्राप्ति के लिए दिव्य औषधि)

इस ईश्वरप्रदत प्रभावयुक्त दिव्यौषधि को गर्भ के दूसरे मास के अन्त में सेवन करने से अभीष्ट (मनचाही) संतान ही उत्पन्न होती है। इस अदभुत औषधि की प्रशंसा में असंख्य पत्र और ईनाम प्राप्त हुए हैं। मूल्य 700 रु. + 50 रु. पैकिंग एवं डाकव्यय, कुल राशि 750 रु. भेजें। वी.पी.पी. नहीं की जाएगी।

सिद्ध शनियन्त्र–विधिपूर्वक शुभमुहूर्त में बने इस यन्त्र को धारण करने से शनिजन्य अशुभफल, पीडा, चिन्ता आदि से मुक्ति मिलती है, अनुभव करें। भेंट– 251 रु., डाकव्यय अलग।

श्री लक्ष्मी यन्त्र– अष्टगन्धादि से विधिपूर्वक बनाए गए इस यंत्र को विधिवत् पूजास्थान या गल्ले में रखने से लक्ष्मी की कृपा रहती है, कोष में भारी बरकत रहती है। तुजुर्बा लें। भेंट– 551 रु., डाकव्यय अलग।

अठराहा नाशक यन्त्र– जिन औरतों के प्यारे बच्चे देवदोष, गर्भदोष व अठराहा, मसानदोष के कारण मर जाते हैं, उनके लिए यह यन्त्र वरदानरूप सिद्ध हो चुका है। विधिपूर्वक निर्मित इस यन्त्र के प्रभाव से बच्चे दीर्घायु होकर, सैंकड़ों माता–पिता को सुखी कर रहे हैं। तजुर्बा करके चमत्कार देखें। विधानपत्र साथ भेजा जाता है। भेंट– 251 रु., डाकव्यय अलग।

सिद्ध गोपाल यन्त्र– इस सिद्ध यन्त्र को विधिपूर्वक श्रद्धासहित सत्री धारण करे, तो चिरंजीव पुत्र की प्राप्ति होती है। आर्डर देते समय स्त्री का नाम अवश्य लिखें। विधानपत्र साथ भेजा जाएगा। भेंट– 501 रु., डाकखर्च पृथक।

गुरुवार को कार्यालय में अवकाश रहता है।

पत्र व्यवहार के लिए पता–

पं. संयमी शर्मा, M.A., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,
सुपुत्र– पं. इन्दुशेखर शास्त्री, ज्योतिषाचार्य, M.A.,
श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, (नजदीक रेलवे स्टेशन),
मु. पो. कुराली (अजीत नगर–मोहाली), पंजाब, PIN– 140 103,
[PHONE– 0160-264 1277, FAX- 264 1577]

Laser Typesetting by : Gyani Kartar Singh Gadh, at Kanwal Video & Photostate, Kurali, Ph. : 0160-2641274 Fax. : 0160-2645575